श्री कुलजम सरूप साहेब

सनन्ध

(टीका एवं भावार्थ सहित)

टीकाकर्ता
राजन स्वामी
एवं
नरेश टण्डन

प्रकाशक
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा
जिला-सहारनपुर (उ. प्र.), भारत

प्रकाशकः
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ ट्रस्ट
सरसावा, जिला-सहारनपुर (उ. प्र.)
सम्पर्क सूत्र : 91-7088120381
वेबसाइट : www.spjin.org

सर्वाधिकार :

© प्रकाशकाधीन इस पुस्तक में प्रकाशित समस्त सामग्री सत्वाधिकारी श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ ट्रस्ट, सरसावा के पास सुरक्षित है। अतः किसी भी व्यक्ति व संस्था के द्वारा इस पुस्तक का नाम, फोटो, कवर डिजाइन एवं प्रकाशित सामग्री इत्यादि को किसी भी तरह से तोड़-मरोड़कर आंशिक या पूर्ण रूप से किसी पुस्तक, पत्रिका, समाचार पत्र या वेबसाइट में प्रकाशित करने से पूर्व प्रकाशक की अनुमति लेना अनिवार्य है, अन्यथा समस्त कानूनी हर्जे खर्चे के जिम्मेदार होंगे। किसी भी प्रकार के मुकदमे के लिए न्याय क्षेत्र सरसावा, जिला-सहारनपुर ही होगा।

प्रथम संस्करण : १०००
बुद्ध जी शाका ३४३
विक्रम संवत् २०७८
ईस्वी सन् २०२१
ISBN : 978-93-85094-42-2

न्योछावर : रू. 300

मुद्रक :
ज्ञानपीठ मुद्रणालय
सरसावा, जिला-सहारनपुर

अनुभूमिका

प्राणाधार श्री सुन्दरसाथ जी! अक्षरातीत श्री राज जी के दिल में इल्म के अनन्त सागर हैं। उनकी एक बूंद महामति के धाम-हृदय में आयी, जो सागर का स्वरूप बन गई, इसलिये कहा गया **'नूर सागर सूर मारफत, सब दिलों करसी रोसन'** अर्थात् ज्ञान के सागर के रूप में यह तारतम वाणी है, जो मारिफत के ज्ञान का सूर्य है। यह ब्रह्मवाणी सबके हृदय में ब्रह्मज्ञान का उजाला करती है।

'हक इलम से होत है, अर्स बका दीदार' का कथन अक्षरशः सत्य है। इस ब्रह्मवाणी की अलौकिक ज्योति सुन्दरसाथ के हृदय में माया का अन्धकार कदापि नहीं रहने देगी। इस ब्रह्मवाणी की थोड़ी-सी अमृतमयी बूंदों का भी रसास्वादन करके जीव अपने लिये ब्रह्म साक्षात्कार एवं अखण्ड मुक्ति का दरवाजा खोल सकता है।

इस लक्ष्य की पूर्ति के लिये यह आवश्यक है कि अनेक भारतीय भाषाओं में अवतरित इस ब्रह्मवाणी की टीका सरल भाषा में प्रस्तुत हो। यद्यपि वर्तमान में अनेकों सम्माननीय मनीषियों की टीकायें प्रचलित हैं, किन्तु ऐसा अनुभव किया जा रहा था कि एक ऐसी भी टीका हो, जो विश्लेषणात्मक हो, सन्दर्भ, भावार्थ, स्पष्टीकरण एवं टिप्पणियों से युक्त हो।

मुझ जैसे अल्पज्ञ एवं अल्प बुद्धि वाले व्यक्ति के लिये यह कदापि सम्भव नहीं था, किन्तु मेरे मन में अचानक ही यह विचार आया कि यदि कबीर जी और ज्ञानेश्वर जी जैसे संत अपने योगबल से भैंसे से वेद मन्त्रों का उच्चारण करवा सकते हैं, तो मेरे प्राणवल्लभ अक्षरातीत मुझसे टीका की सेवा क्यों नहीं करवा सकते? इसी आशा के साथ मैंने अक्षरातीत श्री जी के चरणों में अन्तरात्मा से प्रार्थना की।

धामधनी श्री राजश्यामा जी एवं सद्गुरु महाराज श्री रामरतन दास जी की मेहर की छांव तले मैंने यह कार्य प्रारम्भ किया। सरकार श्री जगदीश चन्द्र जी की प्रेरणा ने मुझे इस कार्य में दृढ़तापूर्वक जुटे रहने के लिये प्रेरित किया। इन सबका प्रतिफल यह टीका है।

सभी सम्माननीय पूर्व टीकाकारों के प्रति श्रद्धा सुमन समर्पित करते हुए मैं आशा करता हूँ कि यह टीका आपको रुचिकर लगेगी। सभी सुन्दरसाथ से निवेदन है कि इसमें होने वाली त्रुटियों को सुधार कर मुझे भी सूचित करने की कृपा करें, जिससे मैं भी आपके अनमोल वचनों से लाभ उठा सकूं एवं अपने को धन्य-धन्य कर सकूं।

आप सबकी चरण-रज
राजन स्वामी
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा
जिला-सहारनपुर (उ० प्र०), भारत

अनुक्रमणिका

प्र. सं.	विषय	पृष्ठ
१.	अल्ला मुहबा मासूक	०८
२.	कलाम आरबी हक रसूल ना	२७
३.	भेख भाखा जिन रचो	३४
४.	सुनियो बानी मोमिनों	३८
५.	पिया मैं बिध बिध तोको ढूंढ़ियां	५५
६.	मै चाहत न स्वांत इन भांत	८५
७.	तलफे तारूनी रे	८६
८.	विरहा गत रे जाने सोई	९२
९.	इस्क बड़ा रे सबन में	९४
१०.	सनमंध मूल को	९६
११.	एह बात मैं तो कहूं	१०३
१२.	अब ढूंढों रूहें अर्स की	११६
१३.	अब निरखो नीके कर	१२६
१४.	गुझ बताऊं खेल का	१३६
१५.	अजूं देखाऊं नीके कर	१४७
१६.	ए खेल रच्यो हम खातिर	१५५
१७.	ए खेल देख्या ख्वाब	१६४
१८.	मोमिन यामें न रांचही	१८६
१९.	ए जो फरेब तुम देखिया	२०१
२०.	फुरमान ल्याया जो रसूल	२१६
२१.	सुनियो अब मोमिनो	२३६
२२.	गुझ तो तुमको कहूंगी	२५५
२३.	दिल हकीकी रूहें अर्स की	२७४
२४.	कहती हों मोमिन को	२९३
२५.	कही कजा जो रसूलें	३१६

अनुक्रमणिका

प्र. सं.	विषय	पृष्ठ
२६.	नेक कहूं दोजख की	३३५
२७.	अब नींद उड़ी सबन की	३४५
२८.	इत आए करी जो रसूलें	३५२
२९.	अब सो कहां है महंमद	३५९
३०.	खातिर प्यारी रूहें मोमिन	३७१
३१.	जिन मोमिन के कारने	३८२
३२.	प्रताप इमाम कहा कहूं	३९९
३३.	सुनियो दुनियां आखिरी	४१२
३४.	सम्मेन कलिम कलामी	४२२
३५.	कारण अरवा अर्स जी	४२८
३६.	इत ईसा मसी आए के	४३७
३७.	अब कहूं विध नूरियों	४६०
३८.	हुकमें परदा उड़ाइयां	४८९
३९.	कह्या जाहेर रसूले	५०६
४०.	लिख्या है कतेब में	५३०
४१.	तुमको देऊँ सुख जागनी	५४४
४२.	प्रीतम मेरे प्रान के	५७१

श्री कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिब जी, अनादि अछरातीत।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत।।

सनन्ध (सनद)

सत्य ही सृष्टि का आधार है। इस सम्बन्ध में अथर्ववेद १५/१/१ में कहा गया है कि "सत्येन उत्तभित्ता भूमिः" अर्थात् इस पृथ्वी का अस्तित्व सत्य से ही है। सर्वशक्तिमान, सकल गुण निधान सच्चिदानन्द परब्रह्म का पहला लक्षण सत्य है। भौतिक या आध्यात्मिक किसी भी क्षेत्र का अस्तित्व सत्य पर ही निर्भर करता है। इसलिये मुण्डको. के ऋषि ने कहा है –

सत्यमेव जयते नानृतं, सत्येन पन्था विततो देवयानः।
येन आक्रमन्ति ऋषयो हि,आप्तकामा यत्र तत् सत्यस्य परं निधानम्।।

सदा सत्य की ही विजय होती है, असत्य की नहीं। सत्य से ही मोक्ष मार्ग का विस्तार होता है। सत्य से ही ऋषि गण उस परमात्मा को प्राप्त कर सभी कामनाओं से रहित हो जाते है, जो सत्य का अनन्त स्रोत है।

प्रत्येक धर्म ग्रन्थ का आशय मनुष्य मात्र को सन्मार्ग दर्शाना होता है, किन्तु स्वार्थवश या पक्षपातपूर्ण मानसिकता से जब उसके अर्थ को विकृत कर जन सामान्य के सामने प्रस्तुत किया जाता है तो मानव समाज दुःखों से त्राहि-त्राहि करने लगता है। यह सर्वमान्य तथ्य है कि वेद अपौरूषेय ग्रन्थ हैं तथा सृष्टि के सर्वप्रथम ईश्वरीय ग्रन्थ।

किन्तु वाममार्गियो ने जब वेद के अर्थ को विकृत कर दिया तो शूद्र और स्त्री को उसके अध्ययन का अधिकार तो दूर रहा उसके श्रवण करने या उच्चारित करने पर भी दण्ड रूप में कान में पिघलाया हुआ शीशा भर देने जैसे अमानवीय कृत्य किये जाने लगे। गोमेध, अश्वमेध या नरमेध यज्ञों में गायों, घोड़ों तथा जीवित मनुष्यों की बलि दी जाने लगी। पति की मृत्यु के पश्चात् जीवित स्त्री को बल पूर्वक चिता में जलाया जाने लगा। ये सभी कार्य वेद की ही ओट में हो रहे थे किन्तु थे सभी वेद विरूद्ध।

इसी प्रकार, जिस कुर्आन का अवतरण अरब के लोगों को मानवता एवं शान्ति का पाठ पढ़ाने, बहुदेववाद तथा जड़ पूजा को छुड़ाकर एकेश्वरवाद की स्थापना के लिये हुआ था, उसी कुर्आन की आयतों का विकृत अर्थ कर ऐसी धारणा बना दी गयी कि तलवार के बल से सारे संसार में कुर्आन फैलाना एक धार्मिक कृत्य बन गया। मानवता का रूप दानवता में परिणित हो गया। इस्लाम को फैलाने के नाम पर मुहम्मद बिन कासिम, मुहम्मद गौरी, महमूद गजनवी, सिकन्दर लोदी, तैमूर लंग, बाबर, अकबर, औरंगजेब, अहमदशाह अब्दाली और नादिरशाह ने खून की नदियां बहायी।

उनका यह कार्य कुर्आन के मूल भूत सिद्धान्तों के पूर्णतया विपरीत था। कुर्आन सूरः बक्र पा. १ सू. २ आयत २५६ मे स्पष्ट कहा गया है कि – 'लाअिइकरा फिद्दीनि' अर्थात् धर्म में जबरजस्ती अनुचित है। 'इलल दीना भल वीनि' अर्थात् तुम्हें तुम्हारा धर्म मुबारक तथा मुझे मेरा धर्म मुबारक। किन्तु किसी भी हिंसक जिहादी ने न तो कुर्आन के वचनों को पहले माना, न अब मान रहे हैं। परिणाम स्वरूप आज सारा विश्व आतंकवाद की भेंट चढ रहा है और महाविनाश के ज्वालामुखी के मुख पर बैठा हुआ है।

इस सनद ग्रन्थ का अवतरण वि. सं. १७३६ में अनूपशहर में हुआ था। इसका अवतरण उस समय हुआ जब औरंगजेब अपनी इस्लामी शरिअत को कट्टरतापूर्वक सारे देश पर थोप कर बल पूर्वक इस्लाम का अनुयायी बनाना चाहता था। उस समय के प्रायः अधिकतर धर्माधिकारी काजी, मुफ्ती तथा मौलवी-मुल्ला आदि कुर्आन पाक की आयतों का विकृत अर्थ करके प्रशासनिक बल से समस्त हिन्दू समाज को या तो मत परिवर्तन करने के लिये बाध्य कर रहे थे या दुःखमय जीवन जीने के लिये विवश कर रहे थे।

'सनद' अरबी भाषा का शब्द है। इस (सनद) का अर्थ है प्रमाण पत्र या 'वास्तविकता' अर्थात् उस 'यथार्थ सत्य' का दर्शन कराना जो वेद और कुर्आन में निहित है। **'चतुर्दशी बुधवारी भई, सारी सनंधे बिहारी जी सो कही'** का कथन भी यही आशय प्रकट करता है। इस ग्रन्थ का मूल उद्देश्य है- वेद और कुर्आन में निहित वास्तविकता

को उजागर करना, जिससे समस्त मानव समाज में धार्मिक एकता स्थापित हो सके और सभी लोग एक सत्य का अवलम्बन कर अध्यात्म के शाश्वत लक्ष्य को प्राप्त कर सकें। सम्पूर्ण पृथ्वी पर शान्ति एवं प्रेम का साम्राज्य स्थापित करने के लिये परब्रह्म की कृपा से इस सनन्ध ग्रन्थ का अवतरण हुआ है। वेद - कतेब दोनों धाराओं का अनुयायी इसका अनुशीलन कर सहजता से यथार्थ सत्य को पा सकता है और अपने मानव जीवन को सफल बना सकता है।

इस 'सनद' ग्रन्थ में कुल ४२ प्रकरण और १६९१ चौपाईयां है, जिनमें प्र. ४ चौ. ३६ से प्र. १८ चौ.४६४ तक में कलश हिन्दुस्तानी के वेद-पक्ष को दर्शाया गया है। शेष प्रकरणों में कुर्आन के तीस सिपारों का भाव दर्शाया गया है। इस प्रकार यह ग्रन्थ वेद-कतेब की दोनों धाराओं को एक मंच पर लाकर प्रेम की सरिता प्रवाहित करने के लिये है।

यदि कोई भी साम्प्रदायिक या मजहबी कट्टरता से रहित होकर अपनी निष्पक्ष बुद्धि से विचार करेगा तो उसके हृदय से यही पुकार आयेगी कि श्री प्राणनाथ जी की यह वाणी सम्पूर्ण विश्व को धर्म का मर्म समझाकर परब्रह्म का साक्षात्कार कराने वाली है। निःसन्देह इस ग्रन्थ को अंगीकार कर सम्पूर्ण विश्व एक ऐसे आध्यात्मिक आंगन में समा सकता है जिसमें मत, वर्ग, जाति और भाषा - भेद की कट्टरता की कल्पना भी नहीं, हो सकती।

अब प्रस्तुत है- यथार्थ सत्य का उद्घोष करने वाले सनंध ग्रन्थ की अमृतमयी वाणी की वे चौपाईयां जो नगाधिराज हिमालय की हिमाच्छादित चोटियों के समान शान्ति का सन्देश दे रही है -

श्री सनन्ध ग्रन्थ प्रारम्भ

ढूंढें सबे मेयराज को, सबे मेयराज में सब।
सो सबे मेयराज जाहेर करी, सो सब मेयराज देखसी अब।।

आज सारा इस्लामी जगत दर्शन की उस रात्रि की वास्तविकता को जानना चाह रहा है, जिसमें मुहम्मद स. अ. व. को परब्रह्म का दर्शन हुआ था। उस दर्शन की रात्रि में परब्रह्म तथा मुहम्मद स. अ. व. के मध्य होने वाली नब्बे हजार (९०,०००) हरूफों की वार्ता में सारा आध्यात्मिक तत्व ज्ञान विद्यमान है। अब श्री प्राणनाथ जी (हजरत

आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिब्बुजमां) ने तारतम वाणी के द्वारा उस दर्शन की रात्रि की सम्पूर्ण वास्तविकता को प्रकाशित (उजागर) कर दिया है जिससे अब सम्पूर्ण विश्व (हिन्दू, मुस्लिम तथा क्रिश्चियन आदि) उस दर्शन की रात्रि की यथार्थता तथा उसमें निहित आध्यात्मिक तत्व ज्ञान को जान जायेगा

सनन्ध

श्री किताब कुरान माफक सनंधे असराफीलें आखिर में कुरान को गाया सो अपनी सरत पर जाहेर हुई है।

तिनकी ए सनंधे दुलहिन किताब आसमानी हम नाजी फिरके में, आखिर को महंमद मेहेंदी ले उतरें हैं, सो वास्ते रूहों के।

इस सनंद ग्रन्थ को आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिब्बुज्जमां श्री प्राणनाथ जी ने ब्रह्ममुनियों (मोमिनों) के लिए संसार में अवतरित किया है। इसे अस्राफिल (अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि) ने श्री महामति जी के धाम हृदय में विद्यमान होकर उच्चारित किया है।

सनन्ध पेहेली अल्लाह रसूल की

परब्रह्म तथा मुहम्मद स. अ. व. की वास्तविकता से सम्बन्धित पहली सनद। इस प्रकरण में यह दर्शाया गया है कि अक्षरातीत परब्रह्म तथा मुहम्मद स. अ. व. में क्या सम्बन्ध है?

अल्ला मुहबा मासूक, सो खासी खसम दिल।
तो नाम धराया रसूलें, आसिक अपना असल।।१।।

परब्रह्म श्री राज जी की अति प्रिया (माशूक) श्यामा जी हैं। वे प्रियतम परब्रह्म की विशेष (हृदय स्वरूपा) है। इस संसार की लीला में जब मुहम्मद स.अ.व. आये तो उन्होंने अपना वास्तविक नाम परिचय (पहचान) आशिक (प्रेमी) प्रियतम् के रूप में दर्शाया।

भावार्थ - पाक कुरआन मजीद के सिपारा ३० सू. सूरः इख्लास आयत १-५ में कहा गया है कि अल्लाह का न तो कोई पुत्र है न पत्नी और न कोई प्रियतम। इस प्रकार तारतम वाणी तथा कुरआन के इस विरोधाभास को दूर करने के लिये सूक्ष्म दृष्टि से चिन्तन करना आवश्यक है - खुलासा १६/८३ का कथन है कि

ना अर्स जिमिएं दूसरा, कोई और धरावे नाउं।
ए लिख्या वेद कतेब में, कोई नाहीं खुदा बिन काह।।

अर्थात् परमधाम में श्री राज जी के अतिरिक्त अन्य किसी का भी कोई अलग अस्तित्व नहीं है। भले ही वहां लीला रूप में श्री राज जी के अतिरिक्त श्यामा जी, ब्रह्मात्माओं, अक्षर ब्रह्म तथा पच्चीस पक्षों का अस्तित्व है, किन्तु आन्तरिक रूप से सभी एक ही सच्चिदानन्द परब्रह्म के अंग है। अंग और अंगी में कोई तात्विक भेद नहीं होता है। जैसे सागर और उसकी लहरों तथा सूर्य एवं उसकी किरणों में जो भेद दिखता है, वह मात्र लीला रूप में है आन्तरिक नहीं। यही कारण है कि श्यामा जी तथा ब्रह्मात्माओं का श्रृंगार जहां अंगना (प्रियतमा) के रूप में किया गया है। वहीं उन्हें पुरूष के रूप में भी दर्शाया गया है –

तो डर बड़ा मोहे लगत, तो गुनाह कहया इन पर।
माफक रूप अल्लाह के, कोई मर्द नहीं बराबर।।
ए खावन्द अर्स अजीम का, हादी हमारा सोए।
इस मानिन्द चौदे तबक में, हुआ न होसी कोए।। खि.४/ ७,८
साल नव सौ नब्बे मास नव, हुए रसूल को जब।
रूहअल्ला मिसल गाजियों, सैंया उतरे तब।। बी. सा. २/१५

यह ध्यान रखने योग्य तथ्य है कि हिन्दी भाषा में आत्मा को स्त्री लिंग में व्यक्त किया जाता है। अतः इस सनन्ध ग्रन्थ में चाहे अक्षर ब्रह्म की आत्मा हो या श्यामा जी की या इन्द्रावती जी (महामति जी) की सभी की आत्मा को स्त्रीलिंग में ही दर्शाया गया है।

उपरोक्त चौपाई का भ्रान्तिवश यह भी आशय निकाला जाता है कि परब्रह्म की जो आह्लादिनी शक्ति श्यामा जी हैं वे ही अरब में रसूल मुहम्मद स. अ. व. के रूप में आयीं। इस विचार धारा को नवरंग वाणी के ग्रन्थ रोसनामा चौ. ५६, ५७, ६, ६१, ६२ से बल मिलता है।

सूरत तीन महंमद की कही, सो ठकुरानी जी वासना भई।।५६।।
कहा सूरत महंमद बसरी, सो वासना स्यामा जी की खरी।।५७।।
कहा हबीब अल्लाह महंमद के ताई, यार्थे ठकुरानी जी आंही।।६१।।
अल्लाह ने मासूक को कह्या, याथे ठकुरानी महंमद भया।।६२।।

किन्तु हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि नवरंग वाणी परब्रह्म की आवेशित तारतम वाणी नहीं है। तारतम वाणी के कथन के विपरीत किसी का भी कथन मान्य नहीं हो सकता है। तारतम वाणी तथा बी. सा. ४५/१६ के इस कथन का अभिप्राय न समझने के कारण ही इस प्रकार की विचार धारा को बढ़ावा मिला –

ए तीनों सूरत हादीय की, आई जुदी जुदी हम कारन ।
आखिर खेल देखाए के सब समझाई रूहन ।। स. ३६/६४

उपरोक्त चौपाई में हादी शब्द का आशय श्यामा जी से न होकर श्री राज जी से है। श्री राज जी ने ही मुहम्मद के रूप में तीनों सूरतों को धारण किया है।

रसूल मुहम्मद, रूहुल्लाह और मेंहदी इमाम ।
ए चारों एकै तन है, ताको नाम इस्लाम ।।

अर्थात् अक्षरातीत श्री राज जी, मुहम्मद स. अ. व., सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी और श्री प्राणनाथ जी ये चारों एक ही स्वरूप हैं। इनके द्वारा परमधाम को पाने का दर्शाया हुआ मार्ग श्री निजानंद (इस्लाम) है।

यदि अरब में श्यामा जी का अवतरण मानें तो ये प्रश्न उपस्थित होते हैं –

१. परब्रह्म की आनन्द स्वरूपा श्यामा जी अपनी सखियों तथा परब्रह्म को परमधाम में छोड़कर यहां क्यों आएंगीं ? इस प्रकार तो एकत्व (वहदत) का सिद्धान्त ही नष्ट हो जायेगा। ऐसी स्थिति में 'पौढ़े भेले जागसी भेले' 'क. हि.' के कथनों का क्या अर्थ करेंगे?

२.**हुकम के अमल में, ना कोई उतरे मोमिन ।**
हकीकत मारफत की, किन आगे करें रोसन ।।

बी. सा. ३३ में स्पष्ट कहा गया है कि हुक्म के स्वरूप मुहम्मद स. अ. व. के समय में कोई भी ब्रह्मात्मा नहीं आयी थी। इस अवस्था में यह कैसे कहा जा सकता है कि अरब में श्यामा जी आयी थीं। क्या ब्रह्मात्माओं के बिना श्यामा जी आ सकती थी?

३.**रूहें गिरोह तब इत आई नहीं, तो यों करी सरत ।**
कहया खुदा हम इत आवसी, फरदा रोज कयामत ।। खु. २/२८

उपरोक्त चौपाई में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि अरब में कोई भी ब्रह्मसृष्टि नहीं आयी थी।

४. **नूर पार अर्स मोमिन, हुते ना तिन बखत ।**
तो महंमद मेंहदी मोमिन, आए अर्स से आखिरत ।। सनद २४/६७

अरब में जिस समय मुहम्मद स. आये थे, उस समय परमधाम की आत्मायें नही आयी थीं। अब वे ही आत्मायें कियामत के समय श्री प्राणनाथ जी के साथ आयी हुई हैं।

महंमद कहे मैं हुकमे, सब रूहें मुझ माहें।
मै चल्या अर्स मेयराज को, पर पोहोंच सक्या नाहें ।। स. ४१/६२

इस कथन को भावात्मक रुप से मात्र उतने ही समय के लिये मानना चाहिए, जब श्रीराज जी ने मुहम्मद स.अ.व. की आत्मा को इश्क देकर अपना ही स्वरुप बना लिया था और मूल मिलावे में बुलाया था। यदि अरब में भी श्यामा जी का अस्तित्व माने तो तीन जामों की बात हो जायेगी जो कदापि सम्भव नहीं है। ऐसा करने पर कुरआन ''अव्वल मा खल्कुल्लाह नूर'' ''अनामिन नूरल्लाह व कुल शैअ मिंनूरी'' अर्थात् मुहम्मद अल्लाह के नूर से हैं और फिर सर्वप्रथम श्यामा जी एवं तत्पश्चात् समस्त अंगनाएं है, एवं पुराण संहिता की भी बात मिथ्या हो जायेगी। पुराण संहिता का कथन है कि 'सहाय्यम् इन्दिरायाः लब्ध्वा कार्यं करिष्यति।' अर्थात् श्यामा जी की आत्मा इन्द्रावती (इन्दिरा) के साथ लीला करेगी।

५. **फुरमान ल्याए महंमद, किन खोली न इसारत।**
तब रूहें आयी न थीं, तो पीछे फेर करी सरत ।।
कहे महंमद मसी आवसी, ले कुंजी लाहुत से।
एक दीन सब करसी, सब कायम होसी कुंजिए ।। कि. १११/८, ९

उपरोक्त कथन में यह तथ्य दर्शाया गया है कि मुहम्मद स. अ. व. के समय अरब में आत्मायें नहीं आयी थीं। यदि मुहम्मद स. अ. व. के अन्दर श्यामा जी की आत्मा थी, तो वे स्वयं क्यों कहते कि तारतम ज्ञान के साथ श्यामा जी का आगमन होगा।

६. **अव्वलखूबी अल्लाह कलाम, दूजी खूबी गिरोह इस्लाम।**
तीसरी खूबी तीन हादी वजूद, आखिर आए बीच जहूद ।।
रसूल रूहअल्लाह और इमाम, ए तीनों एक कहे अल्लाह कलाम।
बसरी मलकी और हकी, तीनों तरफ साहेब के साकी।।

कि. ५/३६, ३७

उपरोक्त चौपाईयां यही दर्शा रही है कि अरब में अक्षर की आत्मा आयी थी। यदि श्यामा जी की आत्मा आयी होती तो दूसरी चौपाई के पहले चरण में 'रसूल, रूहअल्लाह और इमाम' का कथन नहीं होता।

७. खुलासा १३/३१ तथा ७५वीं चौपाई से सिद्ध होता है कि अरब में वही अक्षर

ब्रह्म की आत्मा थी, जो व्रज - रास में श्री कृष्ण जी के रूप में थी -

स्याम रास से बरारब, ल्याया साहेब का फुरमान।
हकीकत अखण्ड धाम की, तिन बांधी सब जहान।।
श्री कृष्ण जीएं वृज रास में, पूरे ब्रह्मसृष्टि मन काम।
सोई सरूप ल्याया फुरमान, तब रसूल केहेलाया स्याम।।

८. बीतक साहिब की ये चौपाइयां भी यही दर्शा रही है कि अरब में अक्षर ब्रह्म की आत्मा आयी थी न कि श्यामा जी की आत्मा -

रास लीला खेल के, आये बरारब स्याम।
सो कागद कलाम अल्लाह का , ल्याया महम्मद अलैह इस्लाम।। बी.स.५८/७८
वहां रास लीला करके, आए बरारब स्याम।
त्रेसठ बरस तहां रहे, वायदा किया इस ठाम।।
रूह अल्ला आए दसमी मिने, रहे बरस चौहत्तर।
ताए तीन सौ तेरह मिली, पाई कुरान में पटन्तर।। बी. सा. ७१/८४,८५
नूर स्वरूपें रसूल, हक आगे खड़ा हुकम।
मूल मेला महंमद रूहों का सब बैठियां कदम।। सनंध २४/७३/६६
९. **नूर के एक पल में, इत इंड चले कई जाए।**
ए भी मोमिनों खेल दिखाए के, देसी सबे उड़ाए।। सनद २४/७६,७७

सनद ग्रन्थ का अपरोक्त कथन यही सिद्ध कर रहा है जिस अक्षर ब्रह्म के एक पल में करोंड़ो ब्रह्माण्ड बनते हैं, उनकी ही आत्मा मेयराज में मूल मिलावे में पहूँची थी।

१०. महामति कृत बड़ी वृत १/३८ के कथन -

'महम्मद हक के नूर से, दुनिया भई महम्मद के नूर' से यह सिद्ध है कि अरब में बशरी सूरत के रूप में अक्षर ब्रह्म की ही आत्मा थी, क्योंकि यह ब्रह्माण्ड अक्षर ब्रह्म के मन का स्वाप्निक स्वरूप है, श्यामा जी के मन का नहीं। ऐसा ही कथन बी. सा. १९/८ का भी है -

११. मारिफत सागर ६/३५,३६ में कहा गया है कि एक बार मुहम्मद स. अ. व. ने अरब के लोगों से कहा कि कियामत के समय मेरे भाई आने वाले हैं। जब अबूबक्र आदि ने उनसे पूछा कि क्या हम आपके भाई नहीं है तो मुहम्मद स.अ.व. ने उत्तर दिया कि नहीं, तुमे मेरे यार हो।

रसूल कहे आखिर आवसी, कहया क्यों पेहेचानों तिन ।
कहे बड़ी सिफत है तिन की, बाकी पेसानी रोसन ।।
तब अबूबकर यारों कहया, क्या भाई न तुमारे हम ।
रसूल कहे भाई और हैं, यार हमारे तुम।। मा. सा. ६/३५,३६

उपरोक्त कथन का आशय यह है कि मुहम्मद स. अ. व. के अन्दर अक्षर ब्रह्म की आत्मा थी जो कह रही थी कि परब्रह्म के आनन्द अंग स्वरूप ब्रह्ममुनियों का आगमन होना है। परब्रह्म के सत् अंग अक्षर ब्रह्म के लिये आनन्द अंग के स्वरूप भाई समान ही हैं जबकि संसार के जीव स्नेह - सम्बन्धों के कारण यार (मित्र) ही कहलाने के अधिकारी हो सकते है।

१२. जब श्री राज जी ने मुहम्मद की रूह (आत्मा) को इश्क देकर मूल मिलावे में बुलाया तो दोनों के मध्य धनुष के दोनों कोनों के बराबर ही दूरी रह गयी। श्री राज जी की बायीं ओर विराजमान श्यामा जी को मुहम्मद स.अ.व. की आत्मा (रूह) ने अपने सामने दांयी और बैठे हुए देखा और पूछा कि यह कौन है? श्री राज जी ने उत्तर दिया कि यह तुम्हारी उम्मत है।

पुनः मुहम्मद की आत्मा ने पूछा कि इनके मुख बन्द क्यों है?इसके उत्तर में श्री राज जी ने कहा कि इन्हें माया का खेल मागंने का दोष (गुनाह) लगा है और यह फरामोशी तभी टूटेगी जब ये अपनी सभी आत्माओं के साथ जागृत होकर परमधाम में वापस आयें। इस प्रसंग को ब. क. ६/१२,१३ में इस प्रकार वर्णित किया गया है -

और कहया देख दाहिनी तरफ, मोमिन के मुहं पर कुलफ ।
पूछा रसूलें कुलफ क्यों दिखा, तेरी उमतें गुनाह कर लिया ।।
इनकी किल्ली तेरा दिल, खुले कुलफ जब आओ मिल ।
सब हकीकत बीच किताब, पर पावे सोई जिन पर होए खिताब ।।

यहां ध्यान देने योग्य विशेष तथ्य है कि यदि मुहम्मद स.अ.व. के अन्दर श्यामा जी की आत्मा होती तो वे अपने सामने दायीं ओर विराजमान श्यामा जी को देखकर क्यों पूछती कि ये कौन है और श्री राज जी भी ऐसा क्यों कहते कि इन्हें माया का खेल मांगने का गुनाह लगा है ? क्या श्यामा जी की आत्मा स्वयं के बारे में पूछेगी कि यह कौन है? अक्षर ब्रह्म ने तो परमधाम की लीला मांगी थी न कि माया का खेल। अक्षर ब्रह्म की आत्मा को इश्क देकर अक्षरातीत ने अपने समान ही कर लिया, इसलिये श्यामा जी को उनकी उम्मत कह दिया।

१३. नूर महंमद कह्या हक का, दुनी सब महंमद नूर।

जरा एक महंमद बिना, नहीं काहूं जहूर।। मा. सा. १४/८३

यह कथन भी अरब में अक्षर ब्रह्म की आत्मा का आना सिद्ध करता है क्योंकि सृष्टि का कर्ता अक्षर ब्रह्म है, श्यामा जी नहीं।

आसिक कह्या अल्लाह को, मासूक कह्या महंमद।
न जाए खोले मायने, बिना इमाम एक सब्द।।२।।

सच्चिदानन्द परब्रह्म श्री राज जी को प्रेमी (आशिक, प्रियतम) कहते है तथा उनकी आह्लादिनी शक्ति श्यामा जी को प्रियतमा (माशूक) कहते हैं। किन्तु आखरूल इमाम महदी साहिब्बुजमां श्री प्राणनाथ जी के अतिरिक्त आज तक कोई भी इस गुह्य रहस्य के सम्बन्ध में एक भी शब्द नहीं कह सका है।

भावार्थ – सामान्यतः प्रत्येक मतावलम्बी इस सत्य को जानता है कि परब्रह्म मात्र एक है। ऐसी स्थिति में प्रश्न यह खड़ा होता है कि जब वह अकेला है तो बिना प्रेम किए वह प्रेम का सागर कैसे कहला सकता है ? यदि वह रावण, कंस और यज़ीद जैसे पापियों से प्रेम करता है तो उन्हें बूरे कर्मो के अधीन कैसे होने दिया? क्या उसका सौन्दर्य एवं उसकी अनुपम लीला स्वयं के लिये है?

जिस प्रकार सूर्य से उसकी तेजस्विता, चन्द्रमा से शीतलता, सागर से लहरों, सौन्दर्य से कान्ति और हाथ से अंगुलियों को पृथक नहीं किया जा सकता, क्योंकि ये बाह्य रूप से दो अवश्य प्रतीत होते हैं किन्तु आन्तरिक रूप से एक हैं, उसी प्रकार सच्चिदानन्द परब्रह्म के प्रेममयी स्वरूप से उनके आनन्दमयी स्वरूप श्यामा जी को पृथक नहीं किया जा सकता।

एक ही जल के दो रूप है – १. घनीभूत २. द्रवीभूत। घनीभूत जल (मारिफत, परम सत्य) का स्वरूप है तो द्रवीभूत जल (हकीकत, सत्य) का स्वरूप है। अक्षरातीत परब्रह्म के हृदय में प्रेम का जो अनन्त सागर (मारिफत) उमड़ रहा है, वह ही उनकी आह्लादिनी शक्ति (आनन्दमयी स्वरूप) के रूप (हकीकत) में जब क्रीड़ा करने लगता है तो ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे दो स्वरूप क्रीड़ा कर रहे हैं।

सोभा स्यामाजीय की, निपट अति सुन्दर।
अन्तर पट खोल देखिए, दोउ आवत एक नजर।। सा. ६/३१

इस प्रकार उपरोक्त कथन से कुरान या वेदान्त के अद्वैत सिद्धान्त की कोई हानि नहीं होती।

आए रसूलें यों कह्या, काजी आवेगा खुद सोए।
पर फुरमान यों केहेवहीं, जिन कोई केहेवे दोए।।३।।

मुहम्मद स. अ. व. ने आकर संसार में बताया कि कियामत के समय सच्चिदानन्द परब्रह्म आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिब्बुजमां (श्री प्राणनाथ जी) के स्वरूप में आयेंगे। किन्तु कुरान का कथन है कि अल्लाह (परब्रह्म) तथा मुहम्मद स. अ. व. को दो नहीं समझना चाहिए।

भावार्थ - इस जागनी लीला में जब परमधाम में मूल स्वरूप श्री राज जी के अतिरिक्त अन्य सभी स्वरूपों (श्यामा जी, ब्रह्मात्माओं, अक्षर ब्रह्म तथा महालक्ष्मी) पर फरामोशी है तो प्रश्न यह है कि संदेश वाहक के रूप में अन्य कौन है जो इस संसार में आये? इस सम्बन्ध मे तारतम वाणी का यह कथन देखने योग्य है -

ले फुरमान जो हाथ में, केहेलाया मैं रसूल।
ए देखो अरवाहें अर्स की, जिन कोई जावे भूल।। सनंध १६/६

कुरान में सि. १५ सू. १७.बनी इस्राईल की आयत १-७ में कहा गया है कि ''सुबह्नल्जी असरा बिअब्दिह लैलम्मिनल् मस्जिदिल् हरामी इलल् मस्जिदिल् अक्सल्लजी बारक्ना हौलहु लिनुरियहु मिन आयातिना इन्नहु हुवस्समीअुल बसीरू''(१) ''इन् अहु सन्तुम् फलहा फइजा जाअ वऽदुल्आखिरति लियसुअ वुजूहकुम् व लियद्खुलुल् मसजीद कमा दखलुहू अब्बल मर्रतिव्व लियुतबिरू मा अलौ तब्तीरन्''(७)

अर्थात् वह पाक जात है जो अपने बन्दे मुहम्मद साहब को रातों रात मस्जिद हराम यानी काबे की मस्जिद से मस्जिद अक्सा यानी बैतुल मुकदस तक ले गया जिसके चारों तरफ हमने बरकतें रखी हैं और इस ले जाने से मतलब यह था कि हम उनको अपनी कुदरत के कुछ नमूने दिखलावें। ''तफसीर - ए - हुसैनी'' जिल्द अव्वल पेज न० ५३६-५३७ में वर्णन हैं कि पाकी और बोए वो उसके वास्ते है, जो बुर्जुगी की जहद से ले गया अपने बंदे का मुहम्मद सल्ल एक मेराज मंजिल से ऐसी मस्जिद के तरफ

अक्सा मस्जिद जो बहुत दुद है शाम की जमीन कि हमने उसे वही उतरने की जगह अंबिया कि इबादतगाह कि जगह वो जमीन मुबारिक दरख्तों और नहरों से घिरी हुई है। उस जगह हम मुहम्मद सल्ल को ले गए ताकि दिखावे हम उन्हें कुछ दलीलें अपने कुदरत की। थोड़ी ही देर में मक्का से मुल्क शाम को पहुँच गए और बैतुल मुकद्दस को देखा। और अंबिया को मतलाः हुए मेराज सिर्फ वाअस्त के बारहवें साल हुई।।

मेराज किस महीने में हुआ इसमें मतभेद है। मक्का से बैतुल मुकहदानी मुहम्मद सल्ल का तशरीफ ले जाना नाशुक्रानी से साबित है। उसके मुनकर काफिर है। अक्सर अहले इस्लाम का ऐतकाद इस बात पर है कि हजरत को अर्श में जिस्म और रूह के साथ जगाने में वाक्याफ हुआ। जो इसको नहीं मानते वो मुनकर हैं। इस सबब को हजरत जबराईल एक गिरोह के साथ हाजिर हुए। और रसूल को उनकी बीवी उमहानी के हुजरे से मस्जिद उल हराम ले गए। सीना मुबारिक साफ किया दिल हक मंजिल धोकर फिर अपनी जगह पर रखा। फिर बुर्राक पर सवार किया और थोड़ी देर में बैतुल मुकद्दस पहुँचा।

सही रिवायत यह हैं कि मुहम्मद सल्ल ने बैतुल मुकद्दस में मलायका और अंबिया को देखा और उनकी इमामत की फिर बैतुल मुकद्दस के पत्थर से मुराद पर या जबराईल पर सवार होकर मेराज पर गए। पहले तीसरे पर, हजरत युसूफ चौथे पर, हजरत याफिस पांचवे पर, हजरत हासन, छठे पर हजरत मूसा, सातंवे पर हजरत इब्रहिम को देखा, और उनको सलाम किया। सतकार के साथ सभी ने जवाब दिया सिद्रतुलमुंन्हा बैतुल मामूर हौज कौसर नहर-उन-रहमत देखी और हजरत जबराईल हिजाब नूर के करीब आपके साथ न जा सका और दुआ (प्रार्थना) की अगर जरा भी मैं बढू तो जल जांऊ।

वहां से नूर और जुलमत के हिजाब को लांघते हुए ऐसे मकान पर पहुचे के बुर्राक भी पलने से बाज रहा। फिर आप रफ-रफ पर सवार हुए और पाया अर्श के

करीब पर पहुंचे। और उज्र बार-ए-इलाही से खिताब सुना। करीब हो जा मुझसे और हर बार मुहम्मद सल्ल की और ही तरक्की हासिल हुई। यहां तक कि बिछौने पर कदम मुबारिक रखा और वहां से पैदल ही नजरगाह पहुंचे।

फिर था फर्क दो कमान कि खिलवते खास में दाखिल हुए, फिर वही पहुंचाई फेर मुहम्मद ने इन्हीं फरियाद से मालिक की स्तुती की। और सलाम तुझ पर ऐ नबी, और रहमत-अल्लाह की और उसकी बरकतें को खिताब से सम्मानित हुए और इस सलाम कि खिलवत में अपनी उम्मत को भी दाखिल फरमाया और सलाम हम पर और अल्लाह के नेक बंदों पर और फिरते वक्त उम्मत और उसके दर्जात के वास्ते मुहाईयन हुआ और आप बैतुल मुकद्दस में फिर आए। और मक्का मुअज्जमा कि तरफ मकजूबा हुए। राह में कुरैश के काफिले देखे, और इस सफर मेराज में तिन साईत या चार साईत की देर लगी। लिखा है कि तरफ जब रात गुजरी और सुबह हुई तो आपने मेराज का ही किस्सा बयान फरमाया।

मुसलमानों ने तसदीक की और काफिरों ने कहा कि ये बात अक्ल से बहुत बड़ी हैं। बैतुल मुकद्दस की निशानीयां न पूछो। फौरन वो मस्जिद नजरें अनवर के सामने सूरत पकड़े मौजूद थे। काफिरों ने अपने काफिलों की खबर आपने पूरे विस्तार से कह दिया तोफीक। हजरत मुहम्मद सल्ल को मेराज पर बुलाए ताकि आप खल्ल और खिलवत की निशानियां देखें और उनका हाल अहले उल्मां से कहे एक कौल के मुआफिक मुहम्मद सल्ल को अपना कलाम सुनाया और अपनी कुदरत लाजबाब की निशानियां दिखाई। जो हमारे जलाल और जमाल के साथ मजकूर है। बेशक सुनता है हमारे सुनाने को देखता है, हमें दिखाने को।

(मुहम्मद साहेब द्वारा परमधाम दर्शन वर्णन)

मेराज का बयान दो कमान का फर्क नहीं पहुंचाई जबराईल रास्ते में रूक गए। बुर्राक भी रूका फिर रफ-रफ के तख्त पर बहरूल हकाईक नफहात अलांस(अक्षरधाम

जबराईल का मुकाम हैं, इश्क-ए हकीकी केवल परमधाम में)

''तर्बिअत फी लैल तुल मेअराज'' अर्थात् मुझको मेअराज में प्रशिक्षित किया गया यद्यपि अर्श - ए - अजीम में वहदत उल वजूद है।

वास्तव में परमधाम में वहदत ''एकत्व'' का सिद्धान्त है। अतः सिद्ध है वहाँ राज जी एवं मुहम्मद स. अ. व. दो (भिन्न-२) नहीं है। ''अव्वल मा खल्कुल्लाह नूरी'' अर्थात् सर्वप्रथम मेरा (मुहम्मद) ही नूर है।

एक कह्या न जावहीं, दो भी कहिए क्यों कर।
भेले जुदे जुदे भेले, माएने मुसाफ इन पर।।४।।

लीला रूप में अलग - अलग होने के कारण इन्हें एक भी नहीं कहा जा सकता किन्तु प्रश्न यह है कि स्वलीला अद्वैत परमधाम में श्री राज जी से भिन्न कोई भी दूसरा कैसे हो सकता है?परमधाम में अक्षर ब्रह्म तथा अक्षरातीत एक अद्वैत स्वरूप में है किन्तु इस संसार में जब अक्षर ब्रह्म की आत्मा मुहम्मद स. अ. व. के स्वरूप में आती है तो वह स्वयं को अलग रूप में परब्रह्म का संदेश वाहक कहती है। परमधाम पहुचकर वह अपने मूल अद्वैत स्वरूप से एकाकार हो जाती है किन्तु कुरान का यह गुह्य रहस्य मात्र श्री प्राणनाथ जी (आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिब्बुज्जमां) को ही ज्ञात है।

भावार्थ - उपरोक्त चौपाई का भाव प्रायः व्रज एवं रास के प्रसंग से लिया जाता है, जो उचित नही है क्योंकि व्रज और रास में तो अक्षर ब्रह्म की आत्मा के साथ श्री राज जी का आवेश था जिसके कारणवश उन्हें इस खेल में भी परब्रह्म का ही स्वरूप माना गया। जब व्रज - रास में राधा और श्री कृष्ण के रूप में श्री राज श्यामा जी का स्वरूप साथ - साथ लीला कर रहा था तो उन्हें अलग - अलग कैसे माना जा सकता है? यदि हम 'माशूक' शब्द का तात्पर्य श्यामा जी से लें तो भी यह उचित नहीं है क्योंकि राधा - कृष्ण की प्रेममयी लीला में दोनों स्वरूप (श्री राज श्यामा जी) साथ - साथ ही रहे है।

माशूक शब्द का अर्थ है - जिस से प्रेम किया जाय। यद्यपि तारतम वाणी में माशूक श्यामा जी को अनेक स्थानों पर मुहम्मद कह कर वर्णित किया गया है जैसे-

ए खेल हुआ वास्तें महंमद, महंमद आया वास्ते रूहन। खु. ४/१६
एक खेल हुआ महंमद वास्ते, और अर्स उ मत।
आखिर जाहेर होए के, खोलसी हकीकत।। खु. १७/१८
महंमद क्यों लाये खासी उमत, इस बीच जिमी हैवान।। श्रृं. २३/३७

खेल किया महंमद वास्ते, महंमद आया वास्ते उमत ।

ताए एक दम न्यारी ना करे, मेहर कर धरी तीन सूरत ।। मा. सा. १६/३४

किन्तु अक्षर ब्रह्म की आत्मा ने संदेशवाहक के रूप में अरब की धरती पर जो लीला की उसे भी माशूक कह कर सम्बोधित किया गया है –

तब पावे रसूल की बुजरकी, जब पेहेचान होवे हक ।

हकें माशूक कह्या तो भी ना समझे, क्या करे आम खलक ।। खु. २/७१

जिस कोई कहे रसूल को, परदा खुद दरम्यान ।

आसिक ए मासूक कहया, सो बिन देखे मले क्यों तान ।। सनंध २४/६०

परमधाम के पांचो स्वरूप (श्री राज जी, श्यामा जी, सखियां अक्षर ब्रह्म तथा महालक्ष्मी) तत्वतः एक ही हैं किन्तु इस खेल में लीला रूप में उन्हें अलग मान लिया जाता है। इस सम्बन्ध में तारतम वाणी के सनन्ध ग्रन्थ का यह कथन बहुत ही महत्वपूर्ण है– हुकम लेकर आइया, तब नाम धराया गैन ।

हुकम बजाय पीछा फिरया, तब सोई ऐन का ऐन ।।

अर्थात् अक्षर ब्रह्म की आत्मा जब अरब में अवतरित हुई तो उन्होंने स्वयं को दूसरे (पराये) स्वरूप में दर्शाया और कहा कि मैं परब्रह्म (अल्लाह) का संदेशवाहक (रसूल) हूँ। किन्तु जब वही स्वरूप (अक्षर ब्रह्म की आत्मा) अपने धाम पहुंचा तो परमधाम के स्वलीला अद्वैत स्वरूप में एकाकार हो गया।

ऐसे माएने गुझ कई, तिन गुझों में भी गुझ ।
ए माएने अपने आप बिना, और न काहूं सुझ ।।५।।

इसी प्रकार कुरान के भिन्न भिन्न प्रसंगो में हकीकत (सत्य) के बहुत गुह्य रहस्य छिपे हुए हैं। उन रहस्यों में भी मारिफत (परम सत्य) के गुह्यतम रहस्य विद्यमान हैं जिनके भेद एक मात्र श्री प्राणनाथ जी ही जानते हैं। उनके अतिरिक्त अन्य किसी को भी वे रहस्य ज्ञात नहीं है।

फुरमान ल्याया रसूल, तिनमें अल्ला–कलाम ।
सो भेज्या मोमिनों पर, अंदर गुझ अलाम ।।६।।

मुहम्मद स. अ. व. परमधाम से कुरान का ज्ञान लेकर आये जिसमें प्रियतम अक्षरातीत के कहे हुए शब्द हैं। इस कुरान को ब्रह्मात्माओं को साक्षी देने के लिये भेजा

गया है। इसमें अति गुह्य आध्यात्मिक तत्व छिपे हुए हैं।

भावार्थ - खलीफा अबूबक्र से लेकर अब तक के सम्पूर्ण इस्लामी जगत का इतिहास रक्त रंजित रहा है। ऐसी स्थिति में यह संशय होता है कि यदि कुरान अल्लाहतआला (परब्रह्म) का कहा हुआ ज्ञान है तो कुरान के नाम पर संसार में इतना रक्तपात क्यों हुआ है? इस्लाम के अुनयायी दूसरे मतावलम्बियों के प्रति दया, करूणा एवं आत्मीयता का भाव क्यों नहीं रखते? इसका समाधान संक्षेप में इस प्रकार है -

मुहम्मद स. अ. व. ने अपने आध्यात्मिक ज्ञान की सम्पदा हजरत अली को सौंपी थी किन्तु दुर्भाग्यवश उनसे पहले अबूबक्र, उमर तथा उस्मान खलीफा बने, जिन्होने असहिष्णुता का बीजारोपण किया। हजरत अली ने अपने समय में कुरान के वास्तविक ज्ञान को प्रकट करने का प्रयोग किया। उनके अनुयायियों से सूफी सम्प्रदाय निकला जो रूहानी बन्दगी (प्रेममयी आत्मिक भक्ति), सहिष्णुता तथा विश्व बन्धुत्व के सिद्धान्तों पर आधारित है।

कालान्तर में मुआविया तथा यज़ीद ने अपनी क्रूरतापूर्ण हिंसा एवं कुरान की आयतों की व्याख्या में मिलावट करके उनके बाह्य अर्थो से इस्लामिक जगत को गहरे अन्धकार में डूबो दिया। इस क्रूर विचार-धारा ने ही कर्बला के प्रकरण की करूण कहानी लिखी तथा सारे संसार में दूसरे मतावलम्बियों के खून से वहां की धरती को सींचा।

महुम्मद बिन कासिम, महमूद गजनवी, मुहम्मद गोरी, अलाउद्दीन खिल्जी, बख़्तियार खिल्जी, सिकन्दर लोदी, फिरोज शाह तुगलक, तैमूर लंग, बाबर, अकबर औरंगजेब, नादिरशाह, अहमदशाह अब्दाली आदि सभी इसी विचार धारा के अनुयायी है। वहाबियत व हनफी (देवबंदी) मूलतः एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इनकी विचार धारा के प्रसार से ही सारे संसार में आतंकवाद, का प्रसार हो रहा है। ISIS जैसे आतंकवादी संगठन इसी की देन हैं। ये संगठन नाम तो कुरान और इस्लाम का लेते है किन्तु उसकी व्याख्या अपनी कट्टरवादी हिंसक मनोवृत्ति से करते है।

वास्तविक मुसलमान तो मलिक मुहम्मद जायसी, रहीम और रसखान जी है जिनके विषय में कभी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने कहा था कि ''ऐसे मुसलमान जनन पे , कोटिन हिन्दू वारिये।'' तारतम वाणी के शब्दों में इतना ही कहा जा सकता है कि

भली बुरी किनकी नहीं, डरता रहे सुभान ।
सोहोबत खूनी की ना करे, या दीन मुसलमान ।। सनंध. २१/२२

जो दुख देवे किन को, सो नाहीं मुसलमान ।
नबिएं मुसलमान का, नाम धरया मेहेरबान ।। सनंध. ४०/२४

इस्लाम धर्म के प्रर्वतक हजरत मुहम्मद मुस्तुफा (स. अ. व.) के संसार से प्रस्थान के कुछ समय पश्चात् ही उनकी प्रिय पुत्री हजरत फातिमा जहरा के घर को आग लगाकर जला दिया गया। इस घटना को प्रथम इस्लामी आतंकवाद माना गया है क्योंकि जो समुदाय अपने प्रवर्तक जिनका कल्मा ''ला इलाह इल्लल्लाह - मुहम्मर्दुरसूल्लाह'' दिन में पांच बार अजान में पुकारता है। उसी के खानदान पर जुल्म किया जाय। यह कैसा न्याय है? इस प्रकार की घटनाएं ही वास्तव में आतंक का पर्याय है। यथाः-

१. हजरत फातिमा सुपुत्री मुहम्मद स. अ. व. का घर जलाना।

२. इमाम अली को मस्जिद में नमाज के दौरान तलवार से शहीद करना।

३. इमाम हसन सुपुत्र अली मुर्तुजा को जहर दिलवाकर मरवाना।

४. इमाम हुसैन सुपुत्र अली को कर्बला के मैदान में शहीद करवाना।

उपरोक्त कथन के सन्दर्भ में कहा जा सकता है, कि इस्लाम अपने मूल उद्देश्य से विमुख हो गया है। अन्यथा अपने पैगम्बर की पुत्री एवं नातियों का दमन न करता। कुरान पाक का कथन है कि -

पा. १ सूर. २ आ. १७ ''सुम्मुम - बस्मुन - अम्यून फहुम ला यर्जिअून'' अर्थात् यह बहरे गूंगे अंधे है कि (सच में) लौट नहीं सकते है।

पा. १ सु. २ आ. १०/१३ '' फी कुलूबिहिम् मरजुन् फ जाद-हुमुल्लाहु मरजन् व लहुम् अजाबुन् अलीमुन बिमा कानू यक्जिबुन्'' (१०) '' व इजा कील लहुम् आमिनू कमा आमनन्नासु कालू अनुअ्मिनु कमा आमनस्सुफहाअु अला अिन्नहुम् हुमुस्सुफहाअु व लाकिल्ला यऽलमुन्'' (१३) अर्थात् उनके दिलों में रोग हैं, सो अल्लाह ने उनका मरज और भी बढ़ा दिया। और उनके झूठ बोलने के कारण उनको खुदाई अजाब (दण्ड) होगा। और जब उनसे कहा जाता है कि जिस तरह लोग ईमान लाये हैं, तुम भी कपट छोड़कर ईमान लाओ, तो कहते हैं कि हम भी ईमान ले आये, जिस तरह मूर्ख ईमान ले आये हैं! सुनो, यही लोग मुर्ख है परन्तु इसका इनको ज्ञान नही है।

और जिबरील कुर्आन पा. १ सु. २ आ. ८४-८५'' व इज् अखज्ना मीसाकुम् ला तस्फिकून दिमा अकुम व ला तुख्रिजून अन्फुसकुम मिन दियारिकुम् सम्म अक्रर्तुम व अन्तुम तश्हदून'' (८४)''सुम्म अन्तुम् हाअुलाइ तक्तुलून अन्फुसकुम व तुख्रिजून फरीकम् मिन्कुम मिन् दियाहिरिम तजाहरून अलैहिम् बिल् इसमि वल अुद्वानि व

अिय्यअ्तूकुम् अुसारा तुफादूहूम व हुव मुहर्रमुन् अलैकुम इख्राजुहुम अफतुअमिनून बिबऽजिल्-किताबी व तक्फुरून बिबऽजिन् फ मा जजाअु मंय्यफ्अलु जालिक मिन्कुम् इल्ला खिज्यिुन् फिल्-हयातिद्दुन्या व यौमल-कियामति बि गाफिलिन् अम्मा तऽमलुन (८५)।

अर्थात् और वह समय याद करो जब हमने तुमसे पक्की प्रतिज्ञा ली कि आपस में एक दूसरे का खून न बहाना और न अपने शहरों से अपने लोगों को देशनिकाला देना, फिर तुमने प्रतिज्ञा की और तुम इस बात के गवाह भी हो, फिर तुम वही हो कि अपनों का कत्ल भी करते हो ओर अपनों ही में से कुछ को देश निकाला भी करते हो और उन पर गुनाह और जुल्म के साथ चढ़ाई करके उन अपनों के विरोधियों का साथ देते हो।

और उन्हीं में से कोई अगर कैद होकर तुम तक पहुँचते हैं तो तुम फिदयः बदले में धन देकर उनको छुड़ा लेते हो। हालाँकि उनको देश निकाला कराना ही तुमको हराम (निशिद्ध) था। तो क्या किताब के एक हिस्से को मानते और दूसरे को नहीं मानते?तो जो तुममे से ऐसे करें, इसके सिवा उनकी कठिन सजा की तरफ लौटा दिया जाय। और जो कुछ भी तुम लोग करते हो, अल्लाह उससे बेखबर नहीं।

कुर्आन- १ अलिफ लाम मीम सुरः बकर २ आयत ८७ '' व लकद् आतैना मुस्लूकिताब व कप्फैना मिम्बऽदिह बिर्रूसुलि व आतैना ओसब्न मर्यमल्बय्यिनाति व अय्यद्नाहु बि रूहिल्कुदुसि अफकुल्लमा जा अकुम् रसुलुम्बिमा जा तह्वा अन्फुसुकुमुस्-तक्बर्तुम् व फरीकन् तक्तुलुन्। और हमने मूसाको किताब दी और उनके बाद एक के बाद एक रसूल पैगम्बर भेजे और मरियम के बेटें ईसा को भी खूले निशान दिये। उसके द्वारा उसकी पुष्टि की। जब जब तुम्हारे पास कोई रसूल तुम्हारी इच्छाओं के खिलाफ हिदायत लेकर आया, तुमने घमण्ड किया?नबियों के गिरोह को तो झुठलाते रहें और एक गिरोह का कत्ल करते रहें।

पा. ३ सु. २ आ. २५३ ''तिल्लकर्सुलु फजल्ना बऽजहुम् अला बऽजिन मिनहुम् मन् कल्लमल्लाहु व रफअ बऽजहुम् दरजातिन् व आतैना ओसब्न मर्यमल्-बय्यिनाति व अय्यद्नाहु बि रूहिल्कुदुसि व लौ शाअल्लाहु मक्ततलल्लजीन मिम्बऽदि-हिम मिम्बऽदि मा जाअत्-हुमुल्बय्यिनातु व लाकिनिख्तलफू फ मिन्हुम् मन् आमन व मिन्हुम मन् व कफर व लौ शाअल्लाहु मक्ततलू व लाकिन्नाल्लाह यफअलु मा युरीद''। इन रसूलों में से मैने जिसको भी भेजा हैं, उनमें से किसी न किसी को श्रेष्ठता दी हैं। इनमें कोई तो ऐसे ही है जिनके साथ अल्लाह ने बातचीत की, और किन्हीं के दर्जे

उंचें किये। और मर्यम के बेटे ईसा को हमने खुली खुली निशानियां दी और पाक रूह जिब्रील के द्वारा हमने उनका समर्थन किया। और अगर अल्लाह चाहाता तो जो लोग उन पैगम्बरों के बाद हुए उनके पास खुले हुए निशान आने के बाद वे एक दूसरे से न लड़ते, लेकिन लोग आपस में झगडें, फिर इनमें से बाज वह थे जो ईमान लाये और बाज वह थे जिन्होंने कुफ्र अपनाया। और अगर अल्लाह चाहता तो यह लोग आपस में न लड़ते मगर अल्लाह जो चाहता हैं, करता हैं।

पा.१ सु. २ आ. १२४ ''व इजिब्तला इबराहम रब्बुह् बिकलिमातिन् फ इतम्महुन्न काल इन्नी जाइलुक लिन्नासि इमामन् काल व मिन् जुर्रिय्यती काललला यनालु अहदिज्जालिमीन्'' अर्थात् और याद करों जब इब्राहीम को उसके पालनकर्ता ने चन्द बातों में अजमाया, और इब्राहीम ने उन बातों को पूरा कर दिखाया तो खुदा ने संतुष्ट होकर कहा कि मैं तुमको लोगों के इमाम यानी सरदार बनाउँगा। इब्राहीम ने निवेदन किया कि मेरी संतान में सें भी इमाम बना। खुदा ने कहा, मगर मेरे वचन में वह दाखिल नहीं हो सकते जो अवज्ञाकारी होंगे।

ए जिन भेज्या सो जानही, या जाने आया जिन पर।
ए गुझ खसम मोमिन की, बिना रसूल न कोई कादर।।७।।

इस कुर्आन के गुह्यतम रहस्यों को या तो वे अक्षरातीत ही जानते है, जिन्होनें इसे इस संसार में भेजा है या वे ब्रह्मात्मायें जानती हैं, जिनके लिये भेजा गया है। प्रियतम परब्रह्म तथा ब्रह्मात्माओं की गुह्यतम् बातें कुरान में छिपी हुई हैं जिन्हें मात्र मुहम्मद स. अ. व. ही जानते हैं। अन्य संसारिक विद्वान उसे जानने में असमर्थ है।

खसमें लिखी हकीकत, जोलों न पाइए सोए।
तोलों असलू मोमिन को, चैन जो कैसे होए।।८।।

प्रियतम् परब्रह्म ने वास्तविक सत्य ज्ञान का जो प्रकाश कुर्आन में किया है उसे जब तक ब्रह्मात्मायें (मोमिन) जान नहीं जाती तब तक उन्हें शान्ति नहीं मिल सकती।

भावार्थ - मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) होने का दावा तो प्रायः सभी मुसलमान करते हैं किन्तु वास्तविक मोमिन वहीं है जो परमधाम से कियामत के समय आये है। शान्ति का तात्पर्य मानसिक शान्ति (सकुन) मिलने से है।

माएने इन कुरानके, जोलों ना समझाए।
तोलों सो रूह आपको, मोमिन क्यों केहेलाए।।९।।

कोई भी व्यक्ति जब तक कुर्आन में छिपे हुए गुह्य भेदों को जान नहीं लेता, तब

तक उसे मोमिन (ब्रह्मात्मा) कहलाने का नैतिक अधिकार नहीं है।

भावार्थ - सामान्यतः कुरान के बाह्य शब्दार्थ तक ही स्वयं को सीमित रखने वाले कुछ उग्रपन्थी मुस्लिम स्वयं को मोमिन एवं धर्मात्मा तथा हिन्दुओं को काफिर मानते हैं। महमूद गजनवी, तैमूर लंग तथा वर्तमान समय के वहाबी विचार धारा वाले इसी श्रेणी में आते हैं किन्तु मोमिन तो वे हैं जो दसवीं सदी में श्यामा जी (रूहुल्लाह) के साथ परमधाम से आये हैं और मात्र उन्हें ही कुर्आन के गुह्यतम तथ्यों का ज्ञान है।

तो लिख्या आगूहीं थें, रसूलें अल्ला कलाम।
करसी जाहेर मोमिन, आखिर आए इमाम।।१०।।

इसलिये इनके अवतरण से लगभग ६६० वर्ष और नव माह पहले ही मुहम्मद स. अ. व. ने कुरान में लिख दिया था कि कियामत के समय आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिब्बुज्जमां ब्रह्मात्माओं (मोमिनों) के साथ प्रकट होंगे और कुरान के गुह्यतम रहस्यों को संसार में उजागर करेंगे

पा. ६ सू. ५ आ. १६ ''यहदी बिहिल्लाहु मनित्तबअ रिज्वानह सुबुलस्सलामि व युख्रिजुहुम् मिनज्जुलुमाति इलन्नुरि बि इज्निह व यह्दीहिम्इलासिरातिम मुस्तकीमीन्''। जो अल्लाह की मरजी पर चलते हैं, उनको अल्लाह उस कुर्आन के जरिए सलामती की राह दिखलाता है और अपने हुक्म से अंधेरे से निकालकर रोशनी में लाता है और उनको सीधी राह पर चलाता हैं।

पा. ६ सू. ५ आयत १२ ''ब लकद मीसक बनी इसराइल व बअस्ना मिन्हुमुस्नै असर नकीबन् च कालल्लाहु इन्नी मअकुम् लइन् अकम्तुमुस्सलात व आतैतुमुज्-जकात व आतन्तुम् बि रूसुली व अज्जर्तुमूहुम् व अक्रज्तुमुल्लाह कर्जन् हसनल्ल अुकप्रिफरन्न अन्कुम् सय्यिआतिकुम् व ल अुद्खिलन्नकुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारू फ मन् बऽद जालिक मिन्कुम् फ कद् जल्ल सवा अस्सबील''

और इस्राईल के बेटों से ले चुका है और हमने उन्हीं में से बारह सरदार मुकर्रर किये और अल्लाह ने बनी इसराईल ने यह भी कहा कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। अगर तुम नमाज कायम रखो तथा जकात देते रहो और मेरे पैगम्बरों को मानोगे तथा उनकी मदद करोगे और अच्छे तौर से अल्लाह को कर्ज देते रहोगे तो मैं जरूर तुम्हारे गुनाह दूर करूँगा और जरूर तुमको ऐसे बागों में दाखिल करूँगा जिनके नीचे नहर बह रही होगीं। फिर इसके बाद भी जो तुममें से फिरेगा तो बेशक यह सीधी राह से भटका होगा।

हकीकत फुरमान की, कहूं सुनो सब मिल।
नूर अकल आगे ल्याएके, साफ करूं तुम दिल।।११।।

श्री महामति जी कहते है कि अब मैं कुरान की गुह्य वास्तविकता को दर्शा रहा हूं। संसार के सभी लोग इसे मिल कर जानें (सुनें)। मैं अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि (इस्राफिल) के द्वारा इस महान ज्ञान को प्रकट कर रहा हूं। जिससे सभी के संशय समाप्त हो जायं और आपके हृदय में निर्मलता आ जाय।

अब सो आखिर आइया, उठ खड़े रहो मुस्लिम।
पाक करूं नूर अकलें, खबर देऊं खसम।१२।।

अब वक्त ए आखिरत (कियातम का समय) आ गया है। सच्चिदानन्द परब्रह्म के प्रति अटूट निष्ठा रखने वाले लोगों! वास्तविक सत्य ज्ञान के प्रकाश में आप सभी जागृत हो जाइये। मैं जागृत बुद्धि के अलौकिक ज्ञान के प्रकाश में आपके हृदय को पवित्र करूंगा तथा एक अद्वैत परब्रह्म की यथार्थ पहचान दूंगा।

सबको प्यारी अपनी, जो है कुल की भाख।
अब कहूं भाखा मैं किनकी, यामें भाखा तो कई लाख।।१३।।

अपने परिवार में बोली जाने वाली (मातृभाषा) सभी को प्यारी लगती है। इस संसार में लाखों भाषायें है। ऐसी स्थिति में प्रश्न होता है कि मैं किस भाषा में वह अलौकिक ज्ञान सुनाऊं?

भावार्थ - सम्पूर्ण पृथ्वी पर लगभग ६५०० भाषायें है। लाखों भाषाओं का कथन अतिश्योक्ति अलंकार में है।

बोली जुदी सबन की, और सबका जुदा चलन।
सब उरझे नाम जुदे धर, पर मेरे तो केहेना सबन।।१४।।

संसार के सभी मत-पन्थों के अनुयायियों की अलग-अलग भाषायें है तथा सबके पारम्परिक रीति-रिवाज भी अलग-अलग हैं। सभी ने परमात्मा के अलग-अलग नाम रख रखे हैं। किन्तु मुझे तो अखण्ड ज्ञान का द्वार सभी के लिये खोलना है।

भावार्थ - वैदिक संस्कृत विश्व की प्राचीनतम् भाषा है। हिन्दुओं के प्रायः सभी ग्रन्थ वैदिक एवं लौकिक संस्कृत में है। जबकि उनकी बोल चाल की भाषा हिन्दी (हिन्दुस्तानी) है। प्रान्त भेद के अनुसार देश में गुजराती, तमिल, मलयालम, कन्नड़, बंगाली, असमी, तथा नेपाली आदि भाषायें बोली जाती है। इसे हिन्दुओं के अतिरिक्त अन्य मत वाले भी बोलते हैं।

इसी प्रकार ग्रीक तथा लैटिन भी विश्व की प्राचीनतम् भाषायें है। कुर्आन अरबी भाषा में है तथा बाईबल मूलतः हिब्र भाषा में थी, जिसका अंग्रेजी में रूपान्तरण करने के पश्चात् विश्व की अधिकतर भाषाओं में अनुवाद किया गया है। बौद्धों तथा जैनियों के ग्रन्थ पाली, तिब्बती एवं प्राकृत भाषा में है तो गुरूग्रन्थ साहिब गुरूमुखी (पंजाबी) भाषा में है। सन्तों की वाणियां हिन्दुस्तानी भाषा में है। इसी प्रकार पारसियों के ग्रन्थ पारसी भाषा में है।

बिना हिसाबें बोलियां, मिने सकल जहान।
सबको सुगम जान के, कहूंगी हिंदुस्तान।।१५।।

इस संसार में बहुसंख्यक भाषाएं हैं, किन्तु मुझे ऐसा लगता है कि इनमें हिन्दुस्तानी भाषा सबसे सरल है। इसलिये सबकी सुविधा के लिये इसी भाषा में मेरी आत्मा इस ज्ञान को प्रकट करेगी।

भावार्थ - यद्यपि 'बेहिसाब' शब्द का अर्थ अनन्त होता है किन्तु यह कथन अतिश्योक्ति अलंकार की भाषा में है। इसका आशय बहुसंख्यक होने से है। 'कोस-कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बानी की कहावत' को यदि सत्य माना जाय तो भी पृथ्वी पर मानवीय भाषाओं की संख्या अनन्त नहीं मानी जा सकती।

बड़ी भाखा एही भली, सो सबमें जाहेर।
करने पाक सबन को, अंतर मांहें बाहेर।।१६।।

सबके लिये सुगम होने के कारण यह हिन्दुस्तानी भाषा सर्वश्रेष्ठ है। पिण्ड, ब्रह्माण्ड तथा इससे परे बेहद एवं परमधाम से सम्बन्धित संशयों को दूर कर सबके हृदय को ज्ञान द्वारा पवित्र करने के लिये ही भाषा सबसे अधिक उपयुक्त है।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। १६।।

(सनन्ध) सनद अरबी की

अरबी भाषा में प्रकट होने वाला प्रकरण। इस प्रकरण में अरबी भाषा में चौपाईयां कही गयी है -

कलाम आरबी हकर सूलना, फआल कसीदे कलम।
बोली आरबी सच है रसूल मेरे की, करके साखियाँ कहत हों।
लाकिन माय आरफो, मिन्हुम हिंद मुस्लिम।।१।।
लेकिन, नहीं समझेंगे, इनमें हिंद के मुस्लमान।

श्री मेहमत स्वरूप महामति जी कहते है कि मेरे मुहम्मद स. अ. व. ने जिस अरबी भाषा में कुरआन कहा है, वह सत्य है। मैं उसी अरबी भाषा में चौपाईयां कह रहा हूं किन्तु इसे भारतवर्ष के मुसलमान नहीं समझ पायेंगे, क्योंकि वे स्वाभाविक रूप से हिन्दुस्तानी भाषा ही जानते है।

यद्यपि 'साखी' शब्द का अर्थ साक्षी होता है किन्तु उपरोक्त चौपाई के दूसरे चरण में कथित 'साखी' शब्द का अर्थ 'चौपाई' ही होगा। ''सनंधे सनंधे साखियां, तिन साखी साखी पांव'' के कथन से यही स्पष्ट है। भारत में रहने वाले मुसलामानों की मातृभाषा हिन्दूस्तानी तथा अरब में रहने वाले मुसलमानों की मातृभाषा अरबी है। भारतीय मुसलमान बिना पढ़ाये जन्म से हिन्दूस्तानी भाषा जानते है, जबकि उन्हें अरबी या फारसी जानने के लिये उन्हें किसी से अध्ययन करना पड़ेगा।

इस्म्या हिंद मुस्लिम, अना कलम सिदक।
सुनो हिंद के मुस्लमानों, मैं कहुं सच।
मा कलिम अना किजब, मा कुंम इन्द कलिमा हक।।२।।
ना कहुंगी मैं झूठ जो, तुम पास कलमा सांच है।

श्री महामति जी की आत्मा कहती है कि हे भारतवर्ष के मुसलमानों ! मैं जो कुछ भी तुमसे कहूंगी, वह पूर्णतया सत्य ही होगा। मै किसी भी स्थिति में तुमसे मिथ्या बात नहीं कह सकती। इसलिये मेरे कथनों को सावधानी पूर्वक सुनों। मेरे कथनों की सत्यता की साक्षी अपने कुर्आन से कर लेना क्योंकि वह परब्रह्म की कही हुई सत्य वाणी है।

अल्लजी मुस्लिम असलू, अना हवा मरा कुंम।
जो कोई मुस्लिम असल हैं, मेरा प्यार बहुत तुम से।
अना हाकी हकाईयां असलू, लिना इमाम इलंम।।३।।
मैं कहूं बातें असल की, साथ मेरे इमाम का ग्यान है।

सच्चिदानन्द परब्रह्म के प्रति जो भी अटूट विश्वास रखने वाले सच्चे मुसलमान हैं, उनसे मेरा बहुत प्रेम है। मेरे पास अक्षरातीत परब्रह्म का दिया हुआ तारतम ज्ञान इल्म-ए-लुदुन्नी है, जिससे मैं परमधाम की बातें कहूंगी।

लागिल हिंद मुस्लिम, अना कलिमों हिंद कलाम।
खातर हिंद के मुसलमानों के, मैं कहूं हिंद की बोली।

अना कुल्ल सवा सवा, अना हुरम इमाम।।४।।
मुझ को सब बराबर-बराबर है, मैं हुं औरत ईमाम मेंहदी की।

मैं हिन्दुस्तान के मुसलमानों के लिये हिन्दुस्तानी भाषा में सारा ज्ञान बताउंगी। इस संसार में श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में आये हुए अक्षरातीत परब्रह्म की मैं आत्मा हूं। मेरे लिये हिन्दू-मुसलमान सभी समान रूप से प्रिय हैं।

भावार्थ - जिस प्रकार सागर से अनन्त लहरें उठती है और उसी में एकरूप हो जाती है, उसी प्रकार सच्चिदानन्द परब्रह्म के स्वलीला अद्वैत स्वरूप में अनन्त आत्मायें क्रीड़ा करती है। आलंकारिक भाषा में यही कहा जाता है कि लहरें सागर की प्रियतमा या अर्धांगिनी स्वरूपा है। यही भाव अक्षरातीत परब्रह्म (अल्लाहतआला) तथा उनकी अभिन्न स्वरूपा आत्माओं के सम्बन्ध में भी है।

श्री मिहिरराज जी के जिस तन से यह ब्रह्मवाणी का ज्ञान अवतरित हुआ है, वह तन पुरूष का है, किन्तु उसमें विद्यमान इन्द्रावती जी की आत्मा परमधाम की है। उसी आत्मा के धाम हृदय में परब्रह्म का आवेश स्वरूप लीला कर रहा है, जिसे इमाम कहा गया है। परब्रह्म के द्वारा इन्द्रावती की आत्मा को महदी, मेहमत साहिबुज्मां (महामति) की शोभा दी गयी है।

इन्द्रावती शब्द हिन्दुस्तानी भाषा का है। इस नाम से तात्पर्य मात्र परमधाम की उस आत्मा से है, जिसके हृदय में परब्रह्म लीला कर रहे हैं। जैसे अरब में मुस्तफा तन का नाम है, मुहम्मद शोभा का नाम है और फुरमान लेकर आने वाली आत्मा अक्षर ब्रह्म की है, वैसे ही हिन्दुस्तान में तन का नाम मिहिरराज है, आत्मा इन्द्रावती है, शोभा का नाम महदी है। तुर्की भाषा का मेहेमत या महमत (प्रशंसित) हिन्दू पक्ष में महामति कहा जायेगा जिसका तात्पर्य होगा, महानतम बुद्धि वाला स्वरूप।

इस स्वरूप से अधिक ज्ञान आज दिन तक किसी भी सृष्टि में नहीं आया है। अरब में परब्रह्म का जोश लीला करता है तो हिन्दुस्तान में इमाम महदी (श्री प्राणनाथ) के स्वरूप में पाचों शक्तियां लीला कर रही है - १. जोश जिब्रील २. श्यामा जी की आत्मा ३. अक्षरातीत परब्रह्म की आवेश शक्ति ४. अक्षर ब्रह्म की आत्मा ५. अक्षर ब्रह्म की

जागृत बुद्धि इस्राफिल। इस तथ्य को तफ्सीरे हुसैनी में कहा गया है कि अर्श से पाँच नहरें जिब्रील के परों पर उतरीं। वे पाँचों नहरें ही परब्रह्म की पाँच शक्तियों की प्रतीक है।

हिंद कलाम जिद हवा अना, लागिल हिंद मुस्लिम।
हिंद की बोली ज्यादे प्यारी है, मुझे खातर हिंद के मुस्लमानों के।
अल्लजी सिदक यकीन, हुब हक रसूल कदम।।५।।
जो कोई सच्चे यकीन वाले हैं, प्यार सांचा रसूल के कदमों पर।

हिन्दुस्तान के मुसलमान स्वाभाविक रूप से हिन्दुस्तानी भाषा ही जानते हैं, अतः उनके लिये सरल होने के कारण मुझे यह भाषा अरबी की अपेक्षा अधिक प्रिय है। मैने हिन्दुस्तानी भाषा में यह ज्ञान उन मुसलमानों के लिये कहा है जो सच्चिदानन्द परब्रह्म के प्रति अटूट विश्वास रखते हैं तथा मुहम्मद स. अ. व. के प्रति सच्चा प्रेम रखते हैं।

बेन कुरान मकतूब, अल्लजी रसूल कवल।
दरम्यान कुरान के लिखा है, जो कि रसूल ने आगे ही से।
जाया मेहेदी कलम, लिसान लुगाद बदल।।६।।
आए के मेहेदी कहेगा, जुबान बोल बदल कर।।

मुहम्मद स. अ. व. ने कुर्आन में पहले से ही यह लिख रखा है कि कियामत के समय जब आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिब्बुजमां (श्री प्राणनाथ जी) आयेंगे तो मेरे कहे हुए ज्ञान की व्याख्या अलग भाषा अर्थात् अरबी के स्थान पर हिन्दुस्तानी भाषा में कहेंगे।

भावार्थ - पा. ६ सूरः ५ आयत ६७ ''या अय्युहरर्सूलु वल्लिग मा अुन्जिल इलैक मिर्रब्बिक व इल्लम् तफ्अल् फ मा बल्लगत् रिसालतह वल्लाहु यऽ़सिमुक मिनन्नासि इन्नल्लाह ला यहदिल्-कौमल् काफिरीन'' अर्थात् - ऐ पैगम्बर! जो तुम्हारे पालनकर्ता की तरफ से कुर्आन के जरिए पैगाम उतरा है, उसे लोगों तक पहुँचा दो और अगर तुमने ऐसा न किया तो तुमने अल्लाह का पैगाम कुछ नहीं पहुँचाया और अल्लाह तुमको लोगों की शरारत से बचायेगा क्योंकि काफिरों की कौम को राह नहीं देता।

कुरान पारः ३ तिल्कर्लरसूल सूर आलेइम्रान ३ आयत ८१ ''व इज अखजल्लाहु मीसाकन्नाबिय्यन लमा आतैतुकुम् मिन किताबींव्व हिक्मतिन् सुम्म जाअकुम्

रसूलुम-मुसद्दिदकुल्लिमा मअकुम् ल तुअमिनुन्न बिह व ल तन्सुरून्नह काज अ अक्रर्तुम व अखज्तुम् अला जालिकुम् इस्री कालू अक्रर्ना काल फश्हदू व अना व मअकुम् मिनश्शाहिदीन''

अर्थात् और ए पैगम्बर! याद दिलाओ जबकि अल्लाह ने पैगम्बरों से वादा लिया कि मैं जो तुमको जो किताब और इल्म दूँ फिर कोई और पैगम्बर तुम्हारे पासा आये और जो तुम्हारे पास किताबें हैं उनकी तसदीक करे, तो देखो, जरूर उस पर ईमान लाना और जरूर उसकी मद्त करना। और वादा लेने के बाद अल्लाह ने पूछा क्या तुमने इकरार किया? और इन बातों में मेरी डाली जिम्मेदारी का बोझ कबूल किया? तो वे बोले हम इकरार करते है। अल्लाह ने फर्माया अच्छा तो गवाह रहना और गवाहों में मैं भी तुम्हारे साथ हूँ।

वाहिद लिसान वाहिद लुगद, अल्लजी सेसमा उलगवर।
एक जुबान एक बोल, जो कुछ आसमान जमीन में हैं।
बेन हिम इमाम लुकनत, लिसान लुगाद ला कादर।।७।।
दरम्यान इनों के इमाम मेहेंदी तोतला, जुबान बोलने से ना समरथ।।

इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी पृथिवी से लेकर परमधाम तक का स्पष्ट एवं पूर्ण सत्य ज्ञान सरल भाषा में देंगे। वे अरबी या संस्कृत की साहित्यिक भाषा न बोलकर जन सामान्य की हिन्दुस्तानी भाषा वैसे ही बोलेंगे जैसे शुद्ध हृदय वाला छोटा बालक तोतली भाषा में अपने हृदय की बात कहता है।

भावार्थ - पा. २० सू. २८ आ. ३२/३४ ''अस्लुक यदक फी जैबीक तख्रूज बैजाअ मिन् गैरी सुइन् वज्मुम् इलैक जनाहक मिनर्रहब्ि जानिक बुर्हानानि मिर्रब्बिक इला फिर्औन व मलइह इन्नहुम् कानू कौमन फासीकुम'' (३२) '' व अखी हारूनु हुव अपसहु मिन्नी लिसानन् फअ्र्सिलहु मइय रिद्अंय्युसद्दिकुनी इन्नी अखाफु अंय्युकज्जिबूनि'' अर्थात् अपना हाथ अपने गिरेबान के अन्दर रखों (और फिर निकालो तो वह) बिना किसी रोग के सफेद निकलेगा।

और डर दूर करने के लिए अपने बाजू अपनी तरफ सिकोड़ लो। सारांश (असा-लाठी और सफेद हाथ) यह दोनों निशानियां तेरे परवरदिगार की तरफ से हैं,

फिरौन और उसके सरदारों के लिए क्योंकि वे वेशक अवज्ञाकारी हैं। और मेरे भाई हारून जिसकी जबान मुझसे जियादः साफ है, सो उसको मेरी मदद के लिए साथ भेजो कि वह मेरी तस्दिक करे। क्योंकि मुझको डर है कि फिरौन के लोग मुझको झुठलायेंगे।

अर्थात् कुरान हदीस का कथानक है कि इमामा महदी अ. त. फ. श. की जुबान में हकलाहट है।

पा. २ सू. २ आयत २४७ - २४८ ''व कालु लहुम् नबिय्युहम् इन्नल्लाह कद् बअस लकुम् तालूत मलिकन् कालू अन्ना यकूनु लहुल्मुल्कु अलैना व नह्नु अहक्कु बिल्तुल्कि मिन्हु लम् युअ्त सअतम्-मिनल्मालि काल इन्नल्लाहस्तफाहु अलैकुम् व जादह् बस्ततन् फिल्इल्मि वलूजिस्मि वल्लाहु युअ्ती मुल्कहु मंय्यशाअु वल्लाहु वासिअुन् अलीमुन्''(४७) '' व काल लहुम् नबिय्युहुम् इन्न आयत मुल्किह अंय्यअ्तियकुमुत्ताबूतु फीहि सकीनतुम्- मिर्रब्बिकुम् बकिय्यतुम्-मिम्मा तरक आलु मूसा व आलु हारून तह्मिलुहुल्-मलाइकतु इन्न फी जालिक लआयतल्लकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन'' (४८)

अर्थात् और पैगम्बर ने उनसे कहा कि तुम पर तालूत को बादशाह मुर्कर्रर फरमाया है। और पैगम्बर ने कहा जो मूसा व हारून छोड़ गए हैं। तुम्हारे लिए एक बड़ी निशानी है। और उनके पैगम्बर ने उनसे कहा कि तालूत के बादशाह होने की यह निशानी है कि वह सन्दूक जिसमें तुम्हारे पालनेवाले की तरफ से तसल्ली की चीज है (यानी तौरेत है) और मूसा और हारून की औलाद जो छोड़ मरे है, उनकी बची हुई चीजें तुम्हारे पास आ जायँगी, फिरिश्ते उनको उठाये होंगे। बेशक अगर ईमान रखते हो तो यही तुम्हारे लिए निशानी (के लिए काफी) है।

कुल्ल आदम ओ कुल्ल गिरो, मा कुल सुर आ वाहिद।
सारे आदमी और सब उम्मत जो कोई, है सब की राह एक है।
लुगा तरीक मा मिसलहू, कमा फास काल महंमद।।८।।
बोलना राह नहीं है उन जैसा, ऐसे जाहेर कह्या मुहम्मद साहेब ने।

मुहम्मद स. अ. व. ने स्पष्ट कहा है कि संसार में जितने भी मनुष्य तथा अन्य

सृष्टि (ईश्वरीय एवं ब्रह्म सृष्टि) है उन सबका एक ही आराध्य परब्रह्म अल्लाहतआला है किन्तु जीव सृष्टि के सभी मत मतान्तरों के कहने का ढंग वैसा नहीं होगा जैसे आखरूल इमाम मुहम्मद महदी का होगा अर्थात् उनकी तरह कोई भी सरल भाषा में पूर्ण सत्य को प्रकट नही कर पायेगा।

भावार्थ - इस चौपाई के पहले चरण में कथित 'कुल्ल आदम और कुल गिरो' का तात्पर्य ५ तरह की पैदाइस से है। इसके अन्तर्गत समस्त ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीय सृष्टि, तातरम ज्ञान पर विश्वास करने वाली, कलमे पर विश्वास करने वाली एवं 'कुन्न' से उत्पन्न होने वाली समस्त जीवसृष्टि से है।

अल्लजी मकतूब हाकिमा, बेन कुरान कलाम।
जो कि लिख्या है ऐसा, दरम्यान कुरान के वचन।
हाला अना कएफ कलमो, लुगाद बदल इमाम।।९।।
अब मैं क्यों कर कहुं, एक बोल बिना इमाम मेंहदी।

कुर्आन के वचनों में ऐसा ही लिखा है। अब मैं आखरूल इमाम मुहम्मद महदी श्री प्राणनाथ जी के कथनों के अतिरिक्त अन्य कोई भी बात कैसे कह सकता हूं। अर्थात् मेरे कथन को श्री प्राणनाथ जी का ही कथन समझना।

हरफ कमा मकतूब, अल्लजी हक रसूल।
सब्द जैसा कोई लिख्या है, जो सांचे रसूल अल्लाह ने।
व ल इतरो मिन्हुंम लुगा, फआल इमाम कुल्ल कबूल।।१०।।
कदी न जाबे इनमें से एक बोल, किए इमाम ने सब कबूल।

परब्रह्म के सच्चे सन्देशवाहक मुहम्मद स. अ. व. ने कुर्आन में जो कुछ भी लिखा है उसे इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी ने पूर्ण रूप से स्वीकार किया है। उन्होंने कुर्आन के एक भी वचन को मानने से इन्कार नहीं किया है।

भावार्थ - कुर्आन के वास्तविक आशय को मात्र अल्लाहतआला, मुहम्मद स. अ. व. और इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी ही जानते हैं। वर्तमान समय में कुर्आन की जितनी भी टीकायें प्रचलित हैं, वे विद्वानों की व्यक्तिगत विचारधारा है तथा मानवीय बुद्धि पर आधारित होने के कारण उनके कथनों में परस्पर विरोध भी है। ऐसी स्थिति में किसी टीका के कथन को देखकर उसे कुर्आन का वास्तविक सिद्धान्त नहीं माना जा सकता।

अल्लजी इमाम अगबू, हुब हस्ना हिंद मकान।
जो इमाम मेहेंदी ने पसंद किया, प्यारी है वही हिंद की ठौर।
कुल्लू लाए जाया कलाम गैर, मिसल हिंद इलाने कफयान।।११।।
कही न आवे बोली और मानिंद, हिंद के नही ता बस है।

आखरूल इमाम मुहम्मद महदी ने भारत को अपनी लीला के लिये चयनित किया है। इसलिये मुझे यह हिन्दुस्तान बहुत ही प्रिय है। ऐसी स्थिति में हिन्दुस्तानी भाषा के अतिरिक्त अन्य किसी भाषा में अपनी बात कहना मेरे लिये सम्भव नहीं है।

लागिल मुस्लिम कुरब ना, अना फाआली कुंम इसहल।
खातर मुस्लिम कबीलें मेरे के, मैं कर देऊ तुम को सहल।
अना कलिम कलाम कुंम, जालिक यकून कुम दीन सुगल।।१२।।
मैं कहूं बोली तुम्हारी, ज्यों होवे तुम को दीन में सुख विलास।

परब्रह्म पर विश्वास रखने वाले मेरे मुस्लिम भाईयों का जो समाज है, उनकी सरलता के लिये इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी के वचनों को मै हिन्दुस्तानी भाषा में ही कह रहा हूं क्योंकि यह उनकी स्वाभाविक मातृभाषा है। मैं ऐसा इसलिये कर रहा हूं कि आप सभी मुसलमानों को कुर्आन में दर्शायें गये धर्म के वास्तविक स्वरूप का बोध हो और आपको सच्चा सुख मिले।

।।प्रकरण।।२।।चौपाई।।२८।।

हिंन्दुस्तानी भाखा में चौपाई शुरू

अब भारत वर्ष में बोली जाने वाली भाषा में सनन्ध ग्रन्थ की चौपाईयों का प्रारम्भ होता है।

द्रष्टव्य - हिन्दू और हिन्दुस्तान शब्द विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा सिन्धु नदी के आधार पर दिया गया है। इसका प्राचीनतम् नाम आर्यावर्त है। महाभारत में इसका नाम भारतवर्ष पड़ा। प्राचीन धर्म ग्रन्थों में हिन्दू शब्द नहीं है। भारत की प्राचीनतम् भाषा संस्कृत रही है। महाभारत के युद्ध के पश्चात् व्याकरण के अभाव में संस्कृत भाषा विकृत होकर पाली भाषा के रूप में प्रचलित हुई। इस पाली भाषा से विकृत रूप में भारत की सभी भाषायें हिन्दी, गुजराती, मराठी, नेपाली, बांग्ला, असमी, तमिल, मलयालम, कन्नड़

तथा तेलगू आदि उत्पन्न हुई। आज से तीन सौ वर्ष पूर्व हिन्दूस्तानी भाषा प्रचलित थी जिसमें ऊर्दू, फारसी, अरबी तथा हिन्दी के तद्भव शब्दों का मेल था। वर्तमान समय में साहित्य की भाषा हिन्दी है जिसमें संस्कृत के तत्सम् शब्दों की प्रधानता रहती है। यद्यपि बोलचाल की सामान्य हिन्दी भाषा में अंग्रजी, ऊर्दू, अरबी तथा फारसी के भी शब्द मिले रहते है।

भेख भाखा जिन रचो, रचियो माएने असल।
भई रोसन जोत रसूल की, अब खुले माएने सकल।।१।।

हे संसार के लोगों! तुम अपने-अपने समाज, सम्प्रदाय और राष्ट्र की भाषा तथा वेशभूषा के प्रति सम्मोहित मत होओ। धर्म के वास्तविक तत्वज्ञान को आत्मसात् करो। अब तारतम ज्ञान के प्रकाश में मुहम्मद स. अ. व. के कहे हुए कुर्आन का वास्तविक सत्य प्रकट हो गया है जिससे उसके सभी रहस्य स्पष्ट हो गये हैं।

भावार्थ - वेद-कतेब की दोनों धाराओं के लोग अपनी-अपनी वेशभूषा तथा भाषा की श्रेष्ठता का बखान करते है। वे दूसरों के धर्म ग्रन्थों को संशयात्मक और हीन दृष्टि से से देखते है, परिणाम स्वरूप वे परम सत्य से वंचित भी रह जाते हे। अपनी भाषा, वेश भूषा और साम्प्रदायिक मान्यताओं को दूसरों पर बलात थोपने के परिणाम स्वरूप ही वैमनस्य फैलता है और युद्ध की ज्वाला भड़कती है। तारतम ज्ञान के प्रकाश में वेद - कतेंब का एकीकरण होने पर संसार वेभभूषा एवं भाषायी विवादों से परे होकर एक परम सत्य का अनुयायी बन सकता है और सारे संसार में शान्ति का साम्राज्य स्थापित हो सकता है।

लिए माएने ऊपर के, एते दिन इन जहान।
मूल माएने पाए बिना, सुध ना पड़ी बिरिध हान।।२।।

आज दिन तक संसार के लोग वेद कतेब के कथनों का मात्र बाह्य शब्दार्थ ही लेते रहे हैं, जिसके परिणाम स्वरूप वे परम सत्य से वंचित रह जाते थे और कर्मकाण्ड (शरियत) के मार्ग का अनुसरण करने से उन्हें समझ में नहीं आता था कि उनका लाभ किसमें है तथा हानि किसमें है?

भावार्थ - अपने-अपने धर्मग्रन्थों का अर्थ करते समय संसार के विद्वानों ने इस तथ्य की ओर ध्यान नहीं दिया कि जब सम्पूर्ण सृष्टि का परमात्मा एक ही है तो उसके आदेश से अवतरित धर्मग्रन्थों के कथनों में विरोधाभास नहीं होना चाहिए। तारतम ज्ञान के अभाव में वे मात्र अपने ही धर्मग्रन्थ और भाषा को श्रेष्ठ कहते रहे तथा वास्तविक

तत्वज्ञान से दूर रहे। इसका परिणाम यह हुआ कि धर्म की ओट लेकर भयानक युद्ध हेाते रहे।

करना सारा एक रस, हिंदू मुसलमान।
धोखा सबका भान के, सब का कहूंगी ग्यान।।३।।

मेहमत साहिबुज्जमां स्वरूप श्रीजी का कथन है तारतम ज्ञान के प्रकाश में एक परम सत्य का बोध कराकर मुझे हिन्दू मुसलमान सभी को एक समान कर देना है। आध्यात्मिक तत्वज्ञान के सम्बन्ध में दोनों ही पक्षों की भ्रान्तियों को दर्शाना होगा तभी सत्य का प्रकाश होगा।

भावार्थ - हिन्दू-मुसलमान को एकरस करने का आशय है- अध्यात्म जगत में वैचारिक दृष्टि से एक समान कर देना। यहां भाषा, वेशभूषा एवं रीति रिवाजों की एकरसता का प्रंसग नहीं है। हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही परब्रह्म के धाम, स्वरूप एवं लीला के सम्बन्ध में यथार्थ रूप से नहीं जानते है। उनमें इस सम्बन्ध में तरह-तरह की भ्रान्तियां है। जब तक दोनों के धर्मग्रन्थों के उद्धरण देकर उनकी मिथ्या-धारणाओं को दर्शाया नहीं जायेगा और तारतम ज्ञान के उजाले में यथार्थता का बोध नहीं कराया जायेगा तब तक अनके हृदय में परम सत्य का प्रकाश नहीं हो सकेगा।

पैंडे सब देखाइए, ज्यों समझे सब कोए।
मत सबन की देखाइए, ज्यों एक रस सब होए।।४।।

वेद-कतेब के दार्शनिक सिद्धान्तों तथा परब्रह्म की प्राप्ति के लिये उसमें दर्शाये गये मार्गो को जब तारतम ज्ञान के प्रकाश में प्रकट किया जायेगा तो सभी को एक परम सत्य का बोध हो जायेगा और सभी एक रस हो जायेगे अर्थात् एक सत्य के अनुयायी बन जायेंगे।

भावार्थ- अध्यात्म जगत को दो भागों में बाटा जाता है- १. हैमेटिक २. सैमेटिक अर्थात् वैदिक ज्ञान धारा एवं कतेब पक्ष की विचारधारा। वैदिक ज्ञान के अन्तर्गत चारो वेदों एवं इनके व्याख्यान ग्रन्थों ११२७ शाखाओं, ब्राह्मण ग्रन्थों, आरण्यकों, उपनिषदों आदि का समावेश होता है। महाभारत काल के पश्चात् पौराणिक सिद्धान्त भी इसमें जुड़ गये जिनके कुछ सिद्धान्त वेदों के मूल सिद्धान्तों के विरूद्ध है।

इसी प्रकार भले ही जैन और बौद्ध विचार धारा बाह्य रूप से वेदों को स्वीकार न करे किन्तु इनके अनेक दार्शनिक सिद्धान्तों में साम्यता है। इन मतों के प्रवर्तक भी पहले वेदानुयायी ही रहे हैं। सिख पन्थ में कबीर, रविदास आदि अनेक सन्त महात्माओं तथा नव गुरूओं की वाणी का संकलन है। इस प्रकार भारत के सभी मत-पन्थों के मूल में

वैदिक ज्ञान धारा है। सैमेटक विचार धारा में चार ग्रन्थ आते है- १. तौरेत २. इन्जील ३. जंबूर और ४. कुर्आन। इन चारों ग्रन्थों को कतेब की संज्ञा दी जाती है।

मैं देखे सब खेल में, पंथ पैंडे दरसन।
देखी इस्क बंदगी सबकी, जैसा आकीन सबन।।५।।

श्री महामति (मेहमत) जी कहते है कि मुझे इस मायावी जगत में सभी मत मतान्तरों की शाखा-प्रशाखाओं के दार्शनिक सिद्धान्तों का अनुभव है। उनमें अपने धर्मग्रन्थों तथा परब्रह्म के प्रति जैसा विश्वास है, उसके अनुसार मैने उन्हें अपने आराध्य के प्रति प्रेम और भक्ति मार्ग का अनुसरण करते हुए देखा है।

भावार्थ - जिस प्रकार एक मार्ग से अनेक छोटी छोटी पगडंडिया निकलती है, उसी प्रकार एक ही धार्मिक सिद्धान्त का अनुसरण करने वाले लोग कालान्तर में मूल सिद्धान्त के आश्रय में अनेक अलग-अलग सिद्धान्तों का अनुसरण करने लगते है। इसी तथ्य को इस चौपाई के दूसरे चरण में पंथ-पैडे कहा गया है। उदाहरणार्थ वैष्णव सम्प्रदाय के दार्शनिक विद्वानों के अलग-अलग मत हैं-जैसे रामानुज का विशिष्टाद्वैत माध्वाचार्य का द्वैत, निम्बार्क का भेद-अभेद (द्वैत-अद्वैत) तथा वल्लभाचार्य का शुद्धाद्धैत। वैष्णवों में अपने आराध्य को लेकर दो शाखायें हो गयी- रामाश्रयी तथा कृष्णाश्रयी। इसी प्रकार इस्लाम धर्म में भी ७२ फिरके हो गये।

एती जिमी सब छोड़के, जित आए मेंहेदी महंमद।
सो भली जिमी भाखा भली, इत हद मेट होसी बेहद।।६।।

भारतवर्ष की वह धरती धन्य है जहां सारे संसार को छोड़कर परब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथ जी प्रगट हुए है। वह हिन्दुस्तानी भाषा भी धन्य है जिसमें उन्होंने अपने अमृत वचन कहे हैं। उनके अलौकिक ज्ञान से समस्त संसार जो अब तक बैकुण्ठ-निराकार से आगे अपनी दृष्टि नहीं कर पा रहा था, अब अनन्त परमधाम की शोभा एवं लीला-आनन्द में डूब जायेगा।

भावार्थ - मुहम्मद स. अ. व. ने कहा है कि कियामत के समय मैं अपने भाईयों अर्थात् ब्रह्ममुनियों (मोमिन) के साथ आऊंगा। इस प्रकार जागनी लीला में जो स्वरूप प्रकट हुआ है, उसे ही मुहम्मद महदी कहा गया है। हिन्दू पक्ष में इस स्वरूप को श्री प्राणनाथ जी एवं इस्लाम मत में आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिब्बुजमां कहा गया है। तारतम वाणी में स्पष्ट कहा गया है-

महंमद हुआ मेहदी, सैयद केहेलाया सही।
खिताब दिया जब खसमें, तब भेली इमाम भई।।

अर्थात् मुहम्मद, अहमद और महदी तीन सूरतों बसरी (अलिफ) मल्की (लाम) तथा हकी (मीम) के प्रतीक है। ये तीनों सूरतें जब एक स्वरूप में दृष्टिगोचर होती हैं। तो उस स्वरूप को श्री प्राणनाथ जी या आखरूल इमाम मुहम्मद महदी कहा जाता है। इसी स्वरूप को सच्चिदानन्द परब्रह्म का इस संसार में प्रकट होने वाला स्वरूप माना जाता है।

एते दिन इन हुकमें, जुदे जुदे खेलाए।
सो ए हुकम इमाम का, अब लेत सबों मिलाए।।७।।

परब्रह्म के आदेश से बनने वाले इस मायावी जगत में अब तक तरह-तरह की विचारधाराओं वाले मत पन्थों का साम्राज्य रहा है। अब आखरूल इमाम श्री प्राणनाथ जी की आदेश शक्ति तारतम ज्ञान के प्रकाश में संसार के सभी मतों का एकीकरण कर देगी और उन्हें एक शाश्वत सत्य के मार्ग पर चलायेगी।

।।प्रकरण।।३।।चौपाई।।३५।।

सनंध इमाम के स्वाल जवाब की

प्र. ४ से प्रकरण १८ तक का विषय हिन्दू पक्ष का है। शेष प्रकरणों में कुर्आन के तीस प्रकरणों का गुह्य भाव दर्शाया गया है।

परब्रह्म अक्षरातीत तथा श्री देवचन्द्र जी के तन में विराजमान श्यामा जी की आत्मा से प्रश्नोत्तर रूप संवाद का प्रकरण है। इस प्रकरण में यह दर्शाया गया है कि जब श्री देवचन्द्र जी (रूहअल्लाह) को सच्चिदानन्द परब्रह्म का साक्षात्कार हुआ तो उनसें क्या संवाद हुआ? यहां 'इमाम' शब्द से तात्पर्य इस नश्वर संसार में ब्रह्मात्माओं में जागनी लीला का नेतृत्व करने वाले अक्षरातीत परब्रह्म के उस आवेश स्वरूप से है, जिसने श्री देवचन्द्र जी को दर्शन दिया। कियामत के ११ इमामों अथवा मस्जिदों के इमाम से यहां कोई भी सम्बन्ध नहीं है। यह ग्रन्थ श्री महामति जी के तन से अवतरित हुआ है। अतः १-४ तक की चौपाईयों का कथन श्री महामति जी की ओर से है-

सुनियो बानी मोमिनो, हुती जो अगम अकथ।
सो बीतक कहूं तुमको, उड़ जासी गफलत।।१।।

श्री महामति जी (मेहमत साहिबुज्जमां) कहते हैं कि परब्रह्म के अंगस्वरूप ब्रह्ममुनियों! अब तुम वह अलौकिक ज्ञान सुनों जिसे आज दिन तक किसी ने भी नहीं कहा था। यह ज्ञान अब तक सभी के लिये अप्राप्य बना रहा। यदि तुम इसे आत्मसात्

कर लोगे तो तुम्हारें मन के सभी संशय समाप्त हो जायेंगें। इस ब्रह्मज्ञान का अवतरण कैसे हुआ, वह सम्पूर्ण घटनाक्रम मै तुम्हें बता रहा हूं।

हुकम हुआ इमाम का, उदया मूल अंकूर।
कलस होत सबन का, नूर पर नूर सिर नूर।।२।।

सच्चिदानन्द परब्रह्म के आदेश से परमधाम का मेरा मूल अंकूर जागृत हो गया अर्थात् मेरी आत्मिक दृष्टि शरीर और जीव भाव से परे होकर परमधाम में विद्यमान अपने मूल स्वरूप को देखने लगी है। यह सनन्ध ग्रन्थ वेद-पक्ष एवं कतेब पक्ष दोनों के लिये रास और प्रकाश ग्रन्थ के उपर मुकुट रूप कलश के समान है।

भावार्थ - सम्पूर्ण वैदिक ग्रन्थों का सार तत्व है- प्रेम एवं आनन्द के अनन्त रस के सागर अक्षरातीत परब्रह्म का अपनी अंगस्वरूपा आत्माओं के साथ दिव्य लीला में मग्न रहना, जिसे रास कहा जाता है।

श्री कुल्जुम स्वरूप के प्रथम ग्रन्थ रास में उस अभिन्न प्रेममयी लीला का मनोहर चित्रण किया गया है। उस रास ग्रन्थ का भी सार तत्व यह है कि वह अक्षरातीत परब्रह्म अपने आवेश स्वरूप श्री महामति जी के धाम हृदय में विराजमान होकर लीला कर रहे है। इस तथ्य को प्रकाश ग्रन्थ में व्यक्त किया गया है।

इस प्रकाश ग्रन्थ का भी सार तत्व यह है कि परमधाम में विराजमान मूल स्वरूप श्री राज जी (परब्रह्म) तथा श्री महामति जी के धाम हृदय में आवेश स्वरूप से विराजमान श्री राज जी में कोई अन्तर नहीं है। यह स्वरूप सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के कल्याण के लिये प्रकट हुआ है, और इसे सनद ग्रन्थ में दर्शाया गया है। कतेंब पक्ष के तीन ग्रन्थों तौरेत, जंबूर तथा इंजील का सार तत्व कुर्आन पाक के अन्दर दर्शाया गया है।

हरूफे मुक्तेआत आदि के जो रहस्य मुहम्मद स. अ. व. के मुख से व्यक्त नहीं हुए, उन्हें गुह्य भेदों के साथ इस सनन्ध ग्रन्थ में दर्शाया गया है। दूसरे शब्दों में हम ऐसा भी कह सकते हैं कि रास (इंजील) तथा प्रकाश (जंबूर) के सार तत्व रूप पहचान को कुर्आन के गुह्य भेदों के स्पष्टीकरण के साथ इस सनद ग्रन्थ में प्रकट किया गया है।

इस प्रकार यह सनद ग्रन्थ ऐसा वैश्विक धर्म ग्रन्थ है, जिसमें सम्पूर्ण वेद पक्ष तथा कतेब पक्ष (तौरेत, इंजील, जंबूर एवं कुर्आन) का सार तत्व विद्यमान है। इसमें उस सच्चिदानन्द स्वरूप श्री प्राणनाथ जी की पहचान है जिसे कुर्आन पाक में हजरत

आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिब्बुज्जमां, इंजील में सेकण्ड क्राइस्ट, तथा तौरेत में आखिरी मूसा कह कर सम्बोधित किया गया है।

कथियल तो कही सुनी, पर अकथ न एते दिन।
सो तो अब जाहेर हुई, जो मेंहेदी महंमद थें उतपन।।३।।

आज दिन तक इस संसार में क्षर जगत से सम्बन्धित ज्ञान को ही कहा सुना जाता रहा है। इसके परे शब्दातीत परमधाम तथा अक्षरातीत के स्वरूप एवं लीला के विषय में कुछ भी नहीं कहा जाता था। अब आखरूल इमाम मुहम्मद महदी श्री प्राणनाथ जी के द्वारा इस संसार में परमधाम का अलौकिक ज्ञान प्रकट हुआ है।

मुझे मेहेर मेहेबूबें करी, अंदर परदा खोल।
सो सुख निसबतियनसों, कहूं सो दो एक बोल।।४।।

श्री महामति जी (मेहमत साहिब्बुजमां) का कथन है कि मेरे प्रियतम अक्षरातीत श्री प्राणनाथ ने मेरे उपर अपार कृपा की तथा मेरे धाम हृदय में विराजमान होकर माया के परदे को हटा दिया। इसके परिणाम स्वरूप मेरे हृदय में आनन्द का सागर लहराने लगा है। उस सुख-सागर की लहर रूप कुछ बातों को मैं अपने परमधाम के मूल सम्बन्धियों से कह रहा हूं।

भावार्थ - 'एक-दो बात' का कथन आलंकारिक है। इसका तात्पर्य है- कुछ बातें। आत्मा में होने वाले अनन्त आनन्द को पूर्ण रूप से शब्द द्वारा कह पाना सम्भव नहीं है। इसे ही यहां एक दो बातों के रूप में कहकर दर्शाया गया है।

मासूकें मोहे मिलके, करी सो दिल दे गुझ।
कहे तूं दे पड़ उत्तर, जो मैं पूछत हों तुझ।।५।।

अब श्री देवचन्द्र जी के तन में विद्यमान श्यामा जी की आत्मा कहती हैं कि मेरे प्रेमास्पद (माशूक) श्री राज जी मुझे मिले और अपने असीम प्रेम में मुझसे एकाकार होकर (दिल देकर) अपने हृदय की गुह्यतम बातों को उजागर किये। वे कहने लगे कि मैं तुमसे जो कुछ भी पूछता हूं, उनका उत्तर दो।

भावार्थ - सद्गुरू श्री देवचन्द्र जी अपने प्रियतम परब्रह्म को पाने के लिये जगह-जगह पूछते फिरे और तरह-तरह की साधनायें किए, इसलिये उन्हें आशिक (प्रेमी) तथा परब्रह्म को माशूक (प्रेमास्पद) कहा गया।

प्रेम त्रिगुणातीत तथा शरीर के बन्धनों से परे पूर्णतया निर्विकार एवं भावात्मक होता है। इसलिये समपर्ण-भाव को दर्शाने हेतु आशिक-माशूक (प्रियतम-प्रिया) की भावना की जाती है। सूफी विचारधारा भी अल्लाह को माशूक तथा साधक को आशिक मानती है। यहां तक कि भावावेश में अपने गुरू (मुर्शिद) को भी अल्लाह की तरह प्रियतम (आशिक) मान लिया जाता है तथा स्वयं की समर्पण भावना को दर्शाने हेतु उसकी प्रियतमा (माशूक) माना जाता है। यह एक ऐतिहासिक कथन है कि अमीर खुसरो ने अपने गुरू हजरत निजामुद्दीन औलिया के देह त्याग पर उनकी मजार पर यह कहते हुए अपना शरीर छोड़ दिया कि -

गोरी सोवे सेज पर, मुख पर डारे केश।
चल खुसरो घर आपने, रैन भई चहु देश।।

यद्यपि अमीर खुसरों पुरूष थे, किन्तु आध्यात्मिक दृष्टि से उन्होंने अपनी आत्मा (रूह) को अल्लाह के प्रतीकात्मक स्वरूप अपने सदगुरू हजरत निजामुद्दीन की प्रियतमा (माशूक) माना। यही भाव सच्चिदानन्द परब्रह्म तथा श्री देवचन्द्र जी एवं श्री महामति जी तथा अन्य आत्माओं (ब्रह्ममुनियों) के भी सम्बन्ध में है।

तूं कौन आई इत क्यों कर, कहां है तेरा वतन।
नार तूं कौन खसम की, दृढ़ कर कहो वचन।।६।।

तुम कौन हो? इस संसार में क्यों आयी हो? तुम्हारा मूल घर कहां है? दृढ़तापूर्वक तुम यह बात बताओ कि तुम किस पुरूष की अर्धांगिनी (प्रियतमा) हो ?

भावार्थ - परमपुरूष तो एकमात्र अक्षरातीत परब्रह्म ही है किन्तु शास्त्रीय दृष्टि से अक्षरातीत के सत अंग अक्षर ब्रह्म को भी पुरुष कहा जाता है। उनके स्वाप्निक स्वरूप आदि नारायण भी क्षर पुरुष कहलाते है।

तूं जागत है के नींद में, करके देख विचार।
बिध सारी याकी कहे, इन जिमी के प्रकार।।७।।

तुम इस बात का विचार करो कि तुम इस समय जागृत अवस्था में हो या निद्रा अवस्था में। तुम जिस संसार में रह रही हो, उसकी सारी वास्तविकता मुझे बताओ।

तब मैं पियासों यों कह्या, जो तुम पूछी बात।
मैं मेरी मत माफक, कहूंगी तैसी भांत।।८।।

श्री श्यामा जी कहती है कि तब मैने अपने प्राणेश्वर अक्षरातीत से इस प्रकार कहा कि आपने मुझसे जो भी प्रश्न पूछा है, उसका उत्तर मैं अपनी बुद्धि के अनुसार जितना मैंने अनुभव किया है, देने का प्रयास करूंगी।

सुनो पिया अब मैं कहूं, तुम पूछी सुध मंडल।
ए कहूं मैं क्यों कर, छल बल वल अकल।।९।।

श्यामा जी कहती है कि हे प्रियतम! मै उत्तर दे रहीं हूं, उसे सुनिये। आपने मुझसे इस हद मण्डल की वास्तविकता पूछी है। मोहमयी बुद्धि के आकर्षण में फंसे हुए प्रपंचमयी शक्ति से भरपूर इस जगत की वास्तविकता के विषय में मैं क्या बताऊं?

मैं ना पेहेचानों आपको, ना सुध अपनों घर।
पिउ पेहेचान भी नींद में, मैं जागत हों या पर।।१०।।

न तो मैं आपको पहचान पा रही हूं और न अपने मूलघर को। मैं आपके विषय में जो कुछ भी जानती हूं निद्रावस्था में ही जानती हूं मैं यह भी नहीं जानती कि मैं जागृत हूं या नहीं?

भावार्थ - उपरोक्त चौपाई मे नींद का आशय शारीरिक नींद से नहीं अपितु अज्ञानमयी नींद से है। पूर्णज्ञान एवं पूर्ण साक्षात्कार के बिना प्रत्येक प्राणी निद्रावस्था में ही माना जाता है।

जल जिमी तेज वाए को, अवकास कियो है इंड।
चौदे तबक चारों तरफों, प्रपंच खड़ा प्रचंड।।११।।

यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड पृथ्वी, जल अग्नि वायु और आकाश से बना हुआ है। चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में चारों ओर सर्वत्र अति बलशाली मायावी प्रपंच दिखायी दे रहा है।

ए मोहोल रच्यो जो मंडप, सो अटक रह्यो अंत्रीख।
कर कर फिकर कई थके, पर पाई न काहूं रीत।।१२।।

मण्डप के समान शोभायमान, हमारा यह जो ब्रह्माण्ड है, वह आकाश में निराधार है तथा आकर्षण शक्ति से टिका हुआ है। इसके रहस्य को जानने के लिये बड़े-बड़े मनीषी सारे प्रयास करके थक गये, किन्तु कोई भी सफल नहीं हो सका।

भावार्थ - हमारे सौर मण्डल (चौदह लोक) जैसे असंख्यों सौर मण्डल इस सृष्टि में निरन्तर घूम रहे हैं। सभी ग्रह - नक्षत्र एक दूसरे के आकर्षण से आकाश में स्थित है।

यामें खेल कई होवहीं, सो केते कहूं विचित्र।
तिमर तेज रूत रंग फिरे, ससि सूर फिरे नखत्र।।१३।।

इस सृष्टि में प्रकृति की इतनी अद्‌भूत लीलायें होती है, जिनका वर्णन मैं कितना करूं? सूर्य, चन्द्रमा और नक्षत्र सर्वदा गतिशील तो रहते ही हैं, इन लोकों में कहीं अंधेरा रहता है तो कहीं उजाला। अलग - अलग ऋतुओं का भी परिवर्तन होता रहता है। इसके अतिरिक्त अनेक रंगों के दृश्य भी दिखायी पड़ते रहते है।

तबक चौदे इंड में, जिमी जोजन कोट पचास।
साढ़े तीन कोट ता बीच में, होत अंधेरी उजास।।१४।।

चौदह लोकों वाले इस ब्रह्माण्ड में पृथ्वी लोक का परिमाण ५० करोंड़ योजन है जिसके साढ़े तीन करोड़ योजन भाग में अंधेरे तथा उजाले (रात-दिन) की लीला होती है।

भावार्थ - उपरोक्त कथन श्री देवचन्द्र जी का है जो उन्होंने भागवत श्रवण से प्राप्त किया है। इसे अक्षरातीत का कथन नहीं समझना चाहिए। एक योजन में चार कोस होते हैं तथा एक कोस में तीन कि.मी. की माप होती है। इस प्रकार ५० करोड़ × ४ × ३ = ६०० करोड़ अथवा ६ अरब कि.मी.। इस माप को आधुनिक विज्ञान स्वीकार नहीं करेगा। विज्ञान के अुनसार पृथ्वी का क्षेत्रफल ५१ करोड़ ७२ हजार वर्ग कि. मी. है।

उजास सूर को कहावहीं, सो तो अंधेरी के तिमर।
तिनथें कछू ना सूझहीं, जिमी आप ना घर।।१५।।

यद्यपि सूर्य को उजाला करने वाला कहते है किन्तु वह तो माया के अन्धकार का रूप है। इस सूर्य के उदित हो जाने पर भी न तो अपनी पहचान होती है और न अपने मूल घर की।

भावार्थ - हृदय में ब्रह्मज्ञान रूपी सूर्य के उदित हुए बिना अपनी या अपने मूल घर की पहचान नहीं हो सकती है। संसार में उगने वाला सूर्य तो अग्नि तत्व का है, इससे तो मात्र भौतिक पदार्थो को देखने के लिये ही प्रकाश होता है।

जब थें सूरज देखिए, लेत अंधेरी घेर।
जीव पसु पंखी आदमी, सब फिरें याके फेर।।१६।।

जब से सूर्य उगता है, तब से सभी प्राणियों के अन्दर अज्ञानता का अन्धकार छा जाता है। सभी जीव चाहें वे पशु - पक्षी हो या मनुष्य सभी अपने लौकिक क्रिया कलापों

में इतने फंस जातें है कि कोई भी अन्तर्मुखी होकर अपने स्वरूप का चिन्तन ही नही कर पाता।

भावार्थ - इस भौतिक जगत से परे हुए बिना आध्यात्मिक तत्वों का साक्षात्कार हो ही नहीं सकता। सूर्य के प्रकाश में बाह्य नेत्रों के द्वारा बाह्य जगत को ही देखा जा सकता है, जबकि आत्म चक्षुओं के द्वारा इस जगत से परे होकर परब्रह्म का साक्षात्कार किया जा सकता है।।

काल न देखे इन फेरे, याही तिमर के फंद।
ए सूरज आंखों देखिए, पर इन फंद के बंध।।१७।।

इस भौतिक सूर्य के उदय होते ही अज्ञानता के अन्धकार का बन्धन इतना अधिक हो जाता है कि लोगों को अपनी मृत्यु की भी चिन्ता नहीं रहती। इस सूर्य के द्वारा आंखों से स्थूल एवं भौतिक पदार्थो को तो देखा जाता है। किन्तु इसी के मोहमयी बन्धन में सभी फंसे रहते हैं।

भावार्थ - सूर्य के प्रकाश में एक भौतिकवादी व्यक्ति भौतिक पदार्थों की उपलब्धि के लिये घोर परिश्रम करता है और उसी में दिन रात लगा रहता है। किन्तु यदि आध्यात्मिक ज्ञान का प्रकाश मिल जाय तो एक अध्यात्मवादी व्यक्ति सूर्य के प्रकाश में धर्म ग्रन्थों का स्वाध्याय कर सकता है तथा अपनी आंखें बन्द करके ध्यान भी कर सकता है। ध्यान की अवस्था में जब इस जगत का आभास ही नहीं रहता तब इस सूर्य के उदित होने या अस्त होने से उसकी आध्यात्मिक साधना पर कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता।

वाओ बादल बीज गाजहीं, जिमी जल ना समाए।
ए पांचों आप देखाए के, फेर न पैदा हो जाए।।१८।।

इस संसार में कभी तेज हवा बहने लगती है तो कभी चारों ओर बादल छा जाते है, विद्युत चमकने लगती है और इतनी अधिक वर्षा होती है कि ऐसा लगता है जैसे जल धरती में समा ही नहीं पायेगा अर्थात् सब कुछ डूब जायेगा, किन्तु थोड़ी ही देर में सब कुछ सामान्य सा हो जाता है और ऐसा प्रतीत होता है कि अभी थोड़ी देर पहले कुछ हुआ ही नहीं था। इस प्रकार का दृश्य पाचों तत्वों के द्वारा बार-बार दिखाया जाता है।

या बिध अनेक ब्रह्मांड में, देत देखाई दसो दिस।
ए मोहजल लेहेरां लेवही, सागर सबे एक रस।।२६।।

इस प्रकार ब्रह्माण्ड में दशों दिशाओं में अनेक प्रकार के प्राकृतिक दृश्य दिखायी देते है। सृष्टि में सर्वत्र माया (मोहसागर) का ही एकछत्र साम्राज्य फैला हुआ है जहां उसकी लहरें क्रीड़ा करती हुई दिखायी देती है।

ए कोहेड़ा काली रैन का, कोई न पावे कल मूल।
कहां कल किल्ली कुलफ, जो द्वार न पाइए सूल।।२०।।

काली रात्रि के समान अज्ञानता का गहन अन्धकार फैलाने वाली इस माया ने ही यह कुहासे (कोहरे) का धुन्ध फैला रखा है, जिससे बाहर निकलने का मार्ग कोई भी नहीं खोज पा रहा है। जब इससे बाहर निकलने का कोई द्वार ही किसी को दिखायी नहीं पड़ रहा है तो ज्ञान रूपी चाबी से उसके बन्द ताले को खोलने की कला की कल्पना ही कैसे की जा सकती है?

द्रष्टव्य - उपरोक्त चौपाई के तीसरे चरण में प्रयुक्त शब्द 'कुलफ' नहीं अपितु कुफ्ल है।

ए तीनों लोक तिमर के, लिए जो तिनहूं घेर।
ए निरखे मैं नीके कर, पर पाइए न काहूं सेर।।२१।।

सम्पूर्ण पृथ्वी लोक, स्वर्ग एवं वैकुण्ठ भी माया के अन्धकार से ही उत्पन्न हुए है और इन तीनों को माया ने चारों ओर से घेर रखा है अर्थात् इनमें अपना वर्चस्व बनाये हुए है। मैने अच्छी प्रकार से चिन्तन करके यही निष्कर्ष निकाला है कि संसार में किसी को भी इससे परे जाने का मार्ग नहीं मिल पा रहा है।

भावार्थ - पृथ्वी पर सत्व, रज एवं तम् तीनों का ही वर्चस्व है, जबकि बैकुण्ठ में सतोगुण अधिक है, रज और तम अत्यन्त न्यून मात्रा में है। स्वर्ग मध्यम परिमाण में है, फिर भी उसमें पृथ्वी की अपेक्षा सतोगुण की अधिकता है। यही कारण है कि बैकुण्ठ सहित सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को माया के अधीन कहा गया है। वस्तुतः ये माया से ही बने है।

ए अंधेरी इन भांत की, काहूं सांध ना सूझे सल।
ए सुध काहूं ना परी, कई गए कर कर बल।।२२।।

इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में माया का अन्धकार इस प्रकार फैला हुआ है कि किसी को भी अपने मूल लक्ष्य (ब्रह्म-साक्षात्कार) को पाने के मार्ग का पता नहीं चल पा रहा है।

बड़े-बड़े मनीषियों तथा योगी-यतियों ने बहुत प्रयास किया किन्तु किसी को भी माया के वास्तविक स्वरूप तथा उससे पार होने के मार्ग का पता नहीं चल सका है।

ग्यान लिया कर दीपक, अंधेर आप ना गम।
इत दीपक उजाला क्या करे, ए तो चौदे तबकों तम।।२३।।

संसार के प्रबुद्ध जनों ने अपने हाथों में ज्ञान का दीपक लेकर माया के अन्धकार को स्वयं पार करने का प्रयास किया किन्तु, न तो वे अपनी पहचान कर पाये और न माया के अन्धकार की ही। जब चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में सर्वत्र अन्धकार ही अन्धकार फैला हुआ है तो भला छोटा सा दीपक कितना उजाला कर सकता है?

भावार्थ - तारतम ज्ञान के अवतरण से पूर्व धर्मग्रन्थों का ज्ञान स्वप्नमयी बुद्धि का था, जिससे हमेशा संशय बना ही रहता था। यही कारण है कि उनके ज्ञान की तुलना एक छोटे से दीपक से की गयी है।

ए देख ही परिए दुख में, कोई व्याध को रचियो रोग।
छुटकायो छूटे नहीं, नहीं न देखन जोग।।२४।।

जिस प्रकार किसी असह्य रोग से ग्रसित रोगी के स्पर्श मात्र से वह पीड़ादायी रोग लग जाता है, उसी प्रकार यह ऐसा संसार है, जिसमें मोहक विषय भोगों को देखने मात्र से ही तरह-तरह के दुःखों में फंसना पड़ता है। विषय भोगों की यह तृष्णा छुड़ाने पर भी नहीं छोड़ती है। इस प्रकार तृष्णा के दुःखों से भरा हुआ यह जगत देखने योग्य नहीं है।

भावार्थ- जिस प्रकार अग्नि में घी डालने पर वह और अधिक प्रज्ज्वलित हो उठती है उसी प्रकार जीव विषय भोगों का जितना ही अधिक सेवन करता है, उतनी ही अधिक उसकी इच्छा भी बढ़ती जाती है। इस प्रकार विषय भोग और उसके परिणाम स्वरूप मिलने वाले दुःख का चक्र प्रारम्भ हो जाता है। चित्त में विषयों के संस्कार और ढृढ़ होते जाते है, जिससे विषय भोगों के दलदल में वह और अधिक फंसता ही जाता है। इस सम्बन्ध में एक मनीषी का कथन है -

दोषेण तीव्रो विषयः कृष्णः सर्प विषादपि।
विषं निहन्ति भोक्तारं द्रष्टारं चक्षुषाप्यहम्।।

अर्थात् विषय का विष काले सर्प से भी अधिक भयंकर होता है। काले सर्प का काटा हुआ तो एक बार ही मरता है किन्तु विषय रूपी सर्प से काटा हुआ बार-बार

जन्म-मरण के चक्र में पड़ता है और विषयों को देखने मात्र से भोग की असमर्थता पर दुःखी होता है।

टेढ़ी सकड़ी गलियां, तामें फिरे फेर फेर।
गुन पख अंग इंद्रियों, किया अंधेरी में अंधेर।।२५।।

अनेक प्रकार की कष्टमयी योनियों में जीव इस चाहत से भटकता रहता है कि उसे विषय सुख प्राप्त हो जाय। उसके साथ जुड़े हुए तीनों गुणों सत्व, रज, तम तथा दोनों पक्षों (बहिर्मुखी और अन्तर्मुखी स्वभाव) अन्तः करण (मन, चित्त, बुद्धि एवं अहंकार) और इन्द्रियों (५ ज्ञानेन्द्रिय व ५ कर्मेन्द्रिय) का बन्धन उसके मायावी अन्धकार में और अधिक वृद्धि कर देता है।

भावार्थ - टेढ़ी संकरी गलियों का तात्पर्य है- वे योनियां जिनमें जीव को बहुत अधिक कष्ट भोगना पड़ता है। जब रज तथा तम के बन्धन में बंधे हुए जीव के अन्तःकरण तथा इन्द्रियों के अन्दर विषय सुख की कामना प्रबल हो उठती है तो सुख की चाहत में वह और अधिक बढ़ती ही जाती है। इसका फल यह होता है कि वह माया में और अधिक फंसता जाता है। इसे ही अंधेरी में अंधेर करना कहा गया है। मानव योनि में पक्ष का तात्पर्य प्रवृत्ति पक्ष तथा निवृत्ति पक्ष भी हो सकता है। जीव अपने बहिर्मुखी स्वभाव में बाह्य विषयों का भोग तो करता ही है अन्तर्मुखी स्वभाव में वह आत्म केन्द्रित होकर विषय सुख चाहता है। यहां अन्तर्मुखता का तात्पर्य योग का 'प्रत्याहार' नहीं है।

तत्व पांचों जो देखिए, तो यामें ना कोई थिर।
प्रले होसी पलमें, वैराट सचराचर।।२६।।

इन पांच तत्वों के विषय में यदि देखा जाय तो ये सभी नश्वर है। महाप्रलय का समय आने पर पल-भर में ही चर- अचर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का नाश हो जायेगा।

ए उपजे पांचो मोह थें, और मोह को तो नाहीं पार।
नेत नेत केहे निगम फिरे, आगे सुधना परी निराकार।।२७।।

इन पांच तत्वों की उत्पत्ति मोहतत्व से होती है और मोह सागर की तो कोई सीमा ही नही है। वैदिक ग्रन्थों ने परब्रह्म को 'नेति - नेति' कहकर मौन धारण कर लिया। इनमें इस निराकार मण्डल (मोहसागर) से आगे का स्पष्ट ज्ञान नहीं है।

भावार्थ – वेदों की मूल सहिंता में कही भी 'नेति' शब्द नहीं है। वेदों के व्याख्यान ग्रन्थों ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद एवं दर्शन में 'नेति' शब्द का प्रयोग अवश्य हुआ है। इन्हें ही 'निगम' शब्द की संज्ञा दी गयी है। मनुस्मृति के कथन ''निगमाश्चैव वैदिकान्'' से भी यही सिद्ध होता है कि मूल संहिता भाग ही वेद है और उसके व्याख्यान् ग्रन्थ निगम हैं।

'नेति-नेति' का अर्थ होता है ऐसा नहीं, ऐसा नहीं। परब्रह्म का स्वरूप तमस् (प्रकृति) से परे अनन्त सूर्यो के समान प्रकाशमय है। उसके अलौकिक स्वरूप की तुलना किसी भी मायाजन्य पदार्थ से नहीं की जा सकती। इसलिये अपनी अनुभूति को मनीषियों ने 'नेति-नेति' ऐसा नहीं, ऐसा नहीं कहकर व्यक्त किया है।

शब्द की गति निराकार तक ही है। अतः निराकार से परे शब्दातीत परब्रह्म के विषय में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। अथर्ववेद के केन सूक्त में स्पष्ट रूप से ब्रह्मपुरी का वर्णन किया गया है। इसी प्रकार मुण्डकोपनिषद् का कथन है कि 'दिव्ये ब्रह्मपुरे हि एषः व्योम्नि आत्मा प्रतिष्ठितः'। यदि वेद में निराकार को ही परमात्मा का स्वरूप माना गया होता तो इस प्रकार के कथन ही नहीं होते।

मूल बिना ए मंडल, नहीं नेहेचल निरधार।
निकसन कोई न पावहीं, वार न काहूं पार।।२८।।

यह सम्पूर्ण क्षर (प्रकृति) मण्डल निश्चित रूप से बिना किसी मूल का है और नश्वर है। इसके साथ ही यह असीम है और कोई भी इसके परे नहीं जा पाता है।

भावार्थ – यद्यपि सम्पूर्ण सृष्टि ब्रह्म के आधार में स्थित है, तथापि जिस कारण प्रकृति से इसकी रचना हुई है, वह इतनी सूक्ष्म है कि उसकी सूक्ष्मता का आंकलन मन, बुद्धि के धरातल पर या किसी वैज्ञानिक यन्त्र की माप से नहीं किया जा सकता। यही कारण है कि सामान्यतः कारण प्रकृति से बने असंख्य लोकों वाले इस क्षर मण्डल को बिना मूल का ही कहा जाता है।

इसका आशय यह है कि जिस कारण प्रकृति से यह जगत बना है, उसके रूप का निर्धारण ही नहीं हो सकता। कारण प्रकृति की सूक्ष्मता को मात्र इस कथन से ही समझा जा सकता है कि उसमें विकृति से महत्तत्व की उत्पत्ति होती है। महत्तत्व से अहंकार, तन्मात्रा तत्पश्चात् आकाश आदि पंचभूतों की उत्पत्ति होती है। इसके बाद ही कार्य जगत

का रूप दिखायी पड़ता है।

गीता में इस संसार की स्थिति उस वृक्ष से की गयी है, जिसकी जड़ें तो उपर आकाश में है और शाखायें नीचे की ओर। इस संसार को बिना मूल का कहे जाने का यह आलंकारिक वर्णन है।

इत पंथ पैंडे कई चलहीं, कई भेख दरसन।
ता बीच अंधेरी ग्यान की, पावे न कोई निकसन।।२९।।

इस संसार में परब्रह्म की प्राप्ति का मार्ग दर्शाने का दावा करने वाले अनेकों प्रकार के दार्शनिक सिद्धान्त एवं वेश - भूषा वाले पन्थ प्रचलित हैं। इनका ज्ञान स्वप्नमयी बुद्धि का है, जिसके परिणाम स्वरूप इनके हृदय में अज्ञानता का अन्धकार बना ही रहता है और इनमें से कोई भी निराकार के परे जा नहीं पाता है।

भावार्थ - यद्यपि ज्ञान हृदय में सत्य का प्रकाश करने वाला होता है किन्तु स्वप्नमयी बुद्धि से परब्रह्म के धाम तथा स्वरूप आदि विषयों का वास्तविक निर्धारण नहीं हो पाता। इससे मन में सर्वदा ही संशय बना रहता है। इस अवस्था में मन, बुद्धि के धरातल पर आध्यात्मिक विषयों के सम्बन्ध में जो सिद्धान्त गढ़े जाते हैं, उनमें परस्पर विरोधाभास होता है, क्योंकि सबके मन-बुद्धि का धरातल अलग-अलग होता है। इस प्रकार, जिसे ज्ञान माना जाता है, वह एक प्रकार से संशयात्मक होने से अज्ञान के ही रूप में फलित होने लगता है।

ग्यान संग स्यानप मिली, तित क्यों कर आवे दरद।
ना आपे ना दरद किनें, सो होए जाए सब गरद।।३०।।

धर्मग्रन्थों के शाब्दिक ज्ञान के साथ जब बौद्धिक चातुर्य का मिश्रण हो जाता है तो उस व्यक्ति में विरह की पीड़ा का रस प्रवाहित नहीं हो पाता है। ऐसे गुरूजन न तो स्वयं विरह - प्रेम में डूब पाते हैं और न अपने किसी अनुयायी को ही डूबा पाते हैं। फलतः सभी का आध्यात्मिक जीवन निष्फल रह जाता है।

भावार्थ - रामायण, भागवत, गीता आदि के कथाकार एवं विद्वान जिन आध्यात्मिक तथ्यों को आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करते हैं, उनमें वे स्वयं आचरण की दृष्टि से पारंगत नहीं होते। वे शब्द ज्ञान को व्यक्त करने में ही अपनी सारी ऊर्जा लगा देते हैं। परब्रह्म के प्रेममयी ध्यान, समाधि तथा विरह से दूर होने के कारण ये लोग परब्रह्म के

साक्षात्कार से वंचित रह जाते हैं जिसे इस चौपाई के चौथे चरण में मिट्टी हो जाना अर्थात् महत्व हीन हो जाना कहा गया है।

दरदी दरदा जानहीं, ग्यानी जाने ग्यान।
ए राह दोऊ जुदी परी, मिले ना काहू तान।।३१।।

परब्रह्म के प्रेम मार्ग पर चलने वाला विरह की पीड़ा को समझता है जबकि वाचक ज्ञानी मात्र अपने शब्द ज्ञान से दूसरों को प्रभावित करता है। इस प्रकार दोनों का मार्ग अलग-अलग हो जाता है। दोनों के आचरण में समानता नहीं होती।

भावार्थ - सैद्धान्तिक रूप से ज्ञान और प्रेम एक दूसरे के पूरक हैं। ज्ञान का प्राण प्रेम है और प्रेम का प्राण ज्ञान है। जिस प्रकार एक ही वाहन या तराजू में दो पहियों अथवा पलडों का होना आवश्यक है, उसी प्रकार परब्रह्म के साक्षात्कार के लिये ज्ञान एवं प्रेम रूपी दोनों पहियों की नितान्त आवश्यकता है। एक के बिना दूसरा अधूरा है। ज्ञान सत्य को बौद्धिक रूप से दर्शाता है, प्राप्त नहीं कराता। इसी प्रकार सत्य को जाने बिना अर्थात् लक्ष्य का निर्धारण हुए बिना केवल प्रेम से ही उस परब्रह्म को कैसे प्राप्त किया जा सकता है? वस्तुतः यदि धर्मग्रन्थों का सामान्य ज्ञान भी हो और सत्संग तथा विवेक दृष्टि से लक्ष्य का निर्धारण हो जाय (एक परब्रह्म के धाम, स्वरूप का बौद्धिक ज्ञान हो जाय) तो प्रेम मार्ग द्वारा उसे अनायास ही प्राप्त किया जा सकता है। शुष्क हृदय वाले वाचक विद्वान भले ही अपने धर्मग्रन्थों के मर्मज्ञ ज्ञानी क्यों न कहलाते हो किन्तु परब्रह्म का साक्षात्कार नहीं कर पाते।

दिवाना मूरख मिले, स्यानप मिले सैतान।
दरद ग्यान दोऊ जुदे, मिले न पिंड पेहेचान।।३२।।

प्रियतम परब्रह्म के प्रेम में डूबा हुआ व्यक्ति मूर्ख जैसा प्रतीत होता है, जबकि वाचक ज्ञानी ज्ञान के अभिमान में रहने के कारण अपने हृदय में कलियुग (शैतान) का प्रवेश करा लेता है। इस प्रकार ज्ञान और प्रेम का मार्ग अलग-अलग दिखायी देता है। इनमें से किसी एक का अवलम्बन करने से परब्रह्म की यथार्थ पहचान नहीं हो पाती है।

भावार्थ - वाचक ज्ञानी अपने ज्ञान के अहंकार में दूसरों को तुच्छ समझता है। ज्ञान से मिलने वाला सम्मान उसे परब्रह्म के प्रेम में समर्पित नहीं होने देता। इस प्रकार

अहंकारी होने से न तो वह सच्चा ज्ञानी ही बन पाता है और न सच्चा प्रेमी। बौद्धिक ज्ञान तो यथार्थ में सत्व गुण में ही निवास करता है। इस प्रकरण में जिन ज्ञानियों का वर्णन है, वे रजोगुण और तमोगुण से ग्रस्त वाचक ज्ञानी हैं जो अपने ज्ञान के समक्ष सभी को तुच्छ समझते है। यदि संसार से सत्वमयी बौद्धिक ज्ञान का लोप कर दिया जाय तो मात्र विरह, प्रेम का अवलम्बन करने वाले सत्य मार्ग से भटक जायेंगे और उनके लिये भी परब्रह्म की प्राप्ति असम्भव हो जायेगी। शुद्ध सात्विक बुद्धि से धर्मग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त कर यदि श्रद्धा, सर्मपण, विश्वास, विरह तथा प्रेम का मार्ग अपनाया जाय तो परब्रह्म का साक्षात्कार हो सकता है और यह अवस्था त्रिगुणातीत कहलाती है। इसी अवस्था को प्राप्त करने वाला सच्चा ज्ञानी एवं सच्चा प्रेमी कहलाने का अधिकार रखता है।

कबूं मूढ़ दरदे मिले, पर दरद ना कबूं सैतान।
बीज अंकूर दोऊ जुदे, वैर सदाई जान।।३३।।

ऐसा तो सम्भव है कि अत्यन्त मूर्ख व्यक्ति में भी प्रियतम परब्रह्म के लिये विरह की पीड़ा झलक जाय, किन्तु अपने शाब्दिक ज्ञान के अहंकार में स्वयं को सर्वोपरि मानने वाले व्यक्ति में कभी भी विरह का रस नहीं आ सकता क्योंकि अहंकार ने उसे शैतान बना दिया होता है। शाब्दिक ज्ञान रूपी बीज से जो अहंकार का अंकूर फूटता है, उससे शैतान या कलियुग रूपी असुर का पौधा दृष्टिगोचर होता है। इसी प्रकार विरह-प्रेम रूपी बीज से जो समर्पण का अंकूर फूटता है, उससे साक्षात्कार की बेसुधी का पौधा खिलता है। इस तरह दोनों का मार्ग भिन्न भिन्न है।

भावार्थ - वस्तुतः ज्ञान का दोष नहीं, दोष उस रजोगुणी एवं तमोगुणी बुद्धि का है जो अल्पज्ञान से मुनष्य को अहंकारी बना देती है। सात्विक बुद्धि वाला ज्ञानी कभी अहंकार नहीं करता, अपितु विरह-प्रेम का मार्ग अपना कर अपने जीवन को सार्थक करता है। 'विद्या ददाति विनयं' का कथन यही सिद्ध करता है कि सच्चा विद्वान विनम्र होता है। विनम्रता ही ज्ञान का आभूषण है। तमोगुणी एवं रजोगुणी व्यक्ति अपने अल्पज्ञान, सौन्दर्य, पद और प्रतिष्ठा से अहंकार में पागल होकर दूसरों को तुच्छ समझने लगता है। इसी कारण इस चौपाई में उसे शैतान कहा गया है, जिसे हिन्दू धर्मग्रन्थों में कलियुगी अर्थात् अज्ञान से ग्रसित असुर माना गया है। रावण, दुर्योधन, शकुनि और महीधर जैसे वाममार्गी विद्वान इसी स्तर के जीव हैं। मर्यादा पुरूषोत्तम राम, युधिष्ठिर,

योगेश्वर श्री कृष्ण और महर्षि दयानन्द सात्विक ज्ञानी है। इनमें योगेश्वर श्री कृष्ण को त्रिगुणातीत अवस्था का ज्ञानी माना जायेगा।

ग्याने प्यारी स्यानप, दरदे सेती वैर।
दरदें प्यारी दिवानगी, स्यानप लगे जेहेर।।३४।।

वाचक ज्ञानी को स्वाभाविक रूप से उस बौद्धिक चातुर्यता से आसक्ति होती हैं जिससे प्रेमी वैर रखता है, क्योंकि चातुर्यता समर्पण एवं विश्वास में बाधक बना करती है। प्रेमी को प्रियतम के प्रेम में बेसुध होना बहुत अच्छा लगता है। यह बेसुधि उसे बहुत ही प्यारी लगती है। अपने इस प्रेम मार्ग में बौद्धिक चतुराई को वह विष के समान बाधक समझता है क्योंकि इसके बन्धन में पड़ जाने से वह समर्पण के मार्ग पर नहीं चल सकता और अनावश्यक तर्क - वितर्क का शिकार बन जाता है।

इत जुध किए कई सूरमों, पेहेन टोप सिल्हे पाखर।
वचन बड़े रण बोलके, उलट पड़े आखिर।।३५।।

इस संसार में माया से युद्ध करने के लिये बड़े-बड़े ज्ञानियों ने ज्ञान (टोप) एवं वैराग्य (पाखर) का कवच धारण किया और साधनाओं के अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होकर अपनी निश्चित विजय के सम्बन्ध में बड़ी-बड़ी बातें की किन्तु अन्ततोगत्वा उन्हें हार कर निराश होना पड़ा।

भावार्थ - शिर की रक्षा के लिये लोहे का टोप धारण किया जाता है जिसे 'शिरस्त्राण' कहते है। सिल्हे का शुद्ध शब्द सिलह होता है, जिसका तात्पर्य होता है अस्त्र-शस्त्र। यह अरबी भाषा का शब्द है। लोहे के तारों का बना हुआ रक्षा कवच पाखर कहलाता है। हाथी के शरीर पर डाला जाने वाला पाखर बड़ा होता है।

यामें ज्यों ज्यों खोजिए, त्यों त्यों बंध पड़ते जाए।
कई उदम जो करहीं, तो भी तिमर ना छोड़े ताए।।३६।।

इस संसार में परब्रह्म के विषय में जितनी ही खोज की जाती है, संशयात्मक ज्ञान होने के कारण उतनी ही उलझनों (बन्धनों) में फंसते जाते है। यदि कोई व्यक्ति अनेक प्रकार से प्रयास भी करता है तो भी अज्ञानता का संशय भरा अन्धकार उसका पीछा नहीं छोड़ता है।

ए सुध अजूं किन ना परी, बढ़त जात विवाद।
खेल तो है एक खिन का, पर ए जाने सदा अनाद।।३७।।

माया से परे सच्चिदानन्द परब्रह्म की सुधि आज तक किसी को भी नहीं हो सकी

थी। स्वप्न की बुद्धि के कारण धार्मिक विषयों में सभी मतों में विवाद बना ही रहता है। यह माया का खेल अक्षर ब्रह्म के मन के पल भर के स्वप्न का है, किन्तु संसार के लोगों को ऐसा लगता है कि यह अनादि काल से चला आ रहा है।

खेल खावंद जो त्रैगुन, जानों याथें जासी फेर।
ए निरखे मैं नीके कर, अजूं ए भी मिने अंधेर।।३८।।

इस मायावी खेल के प्रमुख व्यक्तित्व माने जाने वाले ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव हैं जो तीनों गुणों के विशिष्ट प्रतीक के रूप में माने जाते हैं। मैने सोचा था कि संभवतः इनके ज्ञान से संसार के आवागमन का चक्र मिट जायेगा किन्तु जब मैने अच्छी तरह से देखा तो मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि ये भी अभी माया के अन्धकार से बाहर नहीं निकल पाये हैं।

भावार्थ - सत्व, रज, तथा तम प्रत्येक प्राणी में कम या अधिक मात्रा में होते है। पौराणिक मान्यता में विष्णु भगवान को सतोगुण का, ब्रह्माजी को रजोगुणी का और शिव को तमोगुण का प्रतीक माना जाता है। इसी आधार पर इन्हें 'स्वरूप साहब' में त्रैगुण कहकर सम्बोधित किया गया है, किन्तु वैदिक मान्यता के अनुसार सत्व, रज तथा तम प्रत्येक प्राणी में अनिवार्य रूप से होते हैं। अन्तर केवल इतना ही होता है कि किसी में सतोगुण, किसी में रजोगुण तो एवं किसी में तमोगुण की मात्रा अधिक होती है। ब्रह्मा जी में रजोगुण की प्रबलता है और शिव जी में तमोगुण की। किन्तु यह कदापि नहीं कहा जा सकता कि विष्णु भगवान में अल्पांश में भी तमोगुण का अंश नहीं है या शिव जी में अल्प मात्रा में भी सतोगुण का अंश नहीं है।

चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड के विशिष्ट व्यक्ति होने से इन्हें ब्रह्माण्ड का स्वामी भी कहा जाता है किन्तु यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो ब्रह्मा, विष्णु तथा शिवजी का जन्म एवं साधना स्थान पृथ्वी लोक ही रहा है। भगवान शिव का कैलाशवासी होना तथा विष्णु भगवान का मान सरोवर (क्षीर सागर) वासी होना सर्वमान्य है।

इस सृष्टि के वास्तविक स्वामी अक्षर ब्रह्म है, जिनके मन का स्वाप्निक रूप (सांकल्पिक) रूप आदि नारायण है। इस पृथ्वी लोक पर ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव का वर्चस्व रहा है। इसलिये गौण रूप में इनको भी स्वामी कह दिया गया है।

ए द्वार कोई खोलके, कबहूं न निकस्या कोए।
ए बुजरक जो छल के, बैठे देखे बेसुध होए।।३९।।

माया के आवरण को पार करके आज तक कोई भी अखण्ड धाम में जा नहीं सका। इस खेल के बड़े बड़े अग्रगण्य महापुरूशों (ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी) को भी मैने माया में बेसुध हुए देखा है।

भावार्थ - शिव जी तथा विष्णु भगवान अक्षर ब्रह्म की वासना हैं, अतः ये निराकार से परे बेहद का कुछ रहस्य तो जानते ही हैं, किन्तु स्पष्ट रूप में वहां के विषय में बताने की सामर्थ्य नहीं रखते। यदि ऐसा कहा जाए कि भगवान शिव जी ने व्यास जी से पुराण संहिता में और माहेश्वर तंत्र में उमा से अखण्ड धाम की लीला का वर्णन कैसे कर दिया तो इसका समाधान यह है कि उन्होंने परब्रह्म की कृपादृष्टि से किया, अपनी शक्ति से नहीं।

ए जिन बांधे सो खोलहीं, तोलों ना छूटे बंध।
या बिध खेल खावंद की, तो औरों कहा सनंध।।४०।।

जिस अक्षरातीत के आदेश से यह माया का बन्धन हुआ है, एकमात्र वह ही इसे हटा सकते है। जब इस खेल के स्वामी कहे जाने वाले ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव भी इसके बन्धन में है तो शेष अन्यों के विषय में भला क्या कहा जा सकता है?

निज बुध आवे हुकमें, तोलों ना छूटे मोह।
आतम तो अंधेर में, सो बुध बिना बल ना होए।।४१।।

निजबुद्धि सच्चिदानन्द परब्रह्म के आदेश से प्राप्त होती है। जब तक उसकी प्राप्ति न हो जाय तब तक इस मोह का पर्दा नहीं हट सकता है। आत्मा तो इस मोहसागर में जीव के उपर बैठकर माया का खेल देख रही है। जब तक जीव को जाग्रत बुद्धि या निज बुद्धि का ज्ञान प्राप्त नहीं होता, तब तक आत्मा या स्वयं की जागृति के लिये वह बल नहीं कर सकता।

ए तो कही इन इंड की, पिया पूछ्यो जो प्रस्न।
कहूं और अजूं बोहोत है, वे भी सुनो वचन।।४२।।

मेरे प्राणेश्वर! आपने मुझसे जो कुछ भी प्रश्न पूछा है, उससे सम्बन्धित इस

संसार की ये सारी बातें मैनें आपसे कही है। अभी और भी बहुत सी बातें शेष है, जिन्हें आप सुनिए।

।।प्रकरण।।४।।चौपाई।।७७।।

सनंध खोज की
परब्रह्म की खोज का प्रकरण

इस प्रकरण में धनी श्री देवचन्द्र जी के द्वारा प्रियतम परब्रह्म की खोज के सम्बन्ध में प्रकाश डाला गया हैं।

पिया मैं विध विध तोकों ढूंढ़िया, छोड़ धंधा सब और।
पूछत फिरों सोहागनी, कोई बतावे पिया ठौर।।१।।

श्री देवचन्द्र जी के तन में विराजमान श्यामा जी की आत्मा कहती हैं कि मेरे प्राणवल्लभ! मैंने संसार के सभी लौकिक कार्यो को छोड़कर आपको अनेक प्रकार से ढूंढ़ा और एक सुहागिन के रूप में चारों और खोज करते हुए यह पूछती फिरी कि इस संसार में कोई तो मेरे आराध्य का धाम बतायें।

मैं नेक बात याकी कहूं, तुम कारन खोज्या खेल।
कोई ना कहे हम देखिया, जिन नीके कर खोजेल।।२।।

इस माया के खेल में मैने आपकी जो खोज की है उसके सम्बन्ध में मेरे द्वारा थोड़ा सा कुछ कहा जा रहा है। जिन्होंने अपने विशिष्ट ज्ञान, वैराग्य एवं कठोर साधनाओं से आपको खोजने का प्रयास किया था, उनमें से किसी ने भी यह नहीं कहा कि मैनें सच्चिदानन्द परब्रह्म का दर्शन किया है।

सास्त्र साधू जो साखियां, मैं देखी सबन की मत।
जोलों साहेब ना पाइए, तोलों कीजे कासों हेत।।३।।

मैने तर तरह के शास्त्रों तथा सन्तों की वाणियों का अवलोकन किया किन्तु मुझे ऐसा लगा कि इनमें से किसी को भी आपकी वास्तविक पहचान नहीं है, जब तक आपकी पहचान न हो जाय तब तक आपसे प्रेम कैसे किया जा सकता था ?

भावार्थ - अलग-अलग पन्थों के अलग-अलग इष्ट (आराध्य) होते हैं। यद्यपि वे

एक परब्रह्म को ही पाने का लक्ष्य लेते हैं किन्तु अज्ञानता के वशीभूत कोई त्रिदेवों को परब्रह्म मानता है तो कोई आदिनारायण, सदाशिव या निराकार को। अक्षर से परे अक्षरातीत की पहचान बिना तारतम ज्ञान के किसी को भी नहीं हो पाती है।

छोटे बड़े जिन खोजिया, न पाया करतार।
संसा सब कोई ले चल्या, पर छूटा नहीं विकार।।४।।

सामान्य से लेकर बड़े - बड़े ज्ञानियों एवं भक्तों ने आपको खोजा किन्तु कोई भी आपको पाने में सफल नहीं हुआ। सबके मन में अपने ज्ञान, अनूभुति एवं आपके धाम तथा स्वरूप के सम्बन्ध में संशय बना ही रहा। इस प्रकार सभी लोग स्वयं को मायावी विकारों से परे नहीं कर सके।

ए झूठा छल कठन, कांहूं न किसी की गम।
कहां वतन कहां खसम, कौन जिमी कौन हम।।५।।

यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड छल - प्रपंच से भरा हुआ मिथ्या (परिवर्तनशील) है। इसमें रहना बहुत दुःखदायी है। इस संसार में कही भी किसी को आपकी वास्तविक पहचान नहीं है। इस संसार में किसी को भी यह बोध नहीं है कि हमारा मूल घर कहां है, हमारा निज स्वरूप कैसा है तथा यह संसार कैसा है?

ए देखी बाजी छल की, छल की तो उलटी रीत।
इनमें सीधा दौड़ के, कोई ना निकस्या जीत।।६।।

मैने इस मायावी छल के खेल रूप ब्रह्माण्ड को देखा, जिसमें चाल-चलन ही उल्टा है अर्थात् यहां क्षण-भंगूर सुखों से ही तृप्ति मानी जाती है। जिस प्रकार नदी की धारा के विपरीत दिशा में तैरने पर उसको पार नहीं किया जा सकता, बल्कि तिरछी दिशा में तैरने पर ही पार किया जा सकता है, उसी प्रकार विषय भोगों के हठपूर्वक त्याग या सेवन से भी इस संसार से पार नहीं हुआ जा सकता, बल्कि विवेक पूर्ण एवं आसक्ति रहित होकर तिरछे मार्ग से ही पार किया जा सकता है।

मैं देख्या दिल विचार के, चित्तसों अर्थ लगाए।
इस मंडल में आतमा, चल्या न कोई जगाए॥७॥

मैने अपने हृदय में बहुत ही गम्भीरता पूर्वक विचार किया और अपने चित्त के चिन्तन से यही निश्कर्ष निकाला कि इस मायावी जगत में अब तक कोई भी अपनी आत्मा (अपने चैतन्य स्वरूप) को यथार्थ रूप में जागृत नहीं कर सका है।

मेहेनत तो बोहोतों करी, अहनिस खोज विचार।
तिन भी छल छूटा नहीं, गए हाथ पटक सिर मार॥८॥

आपका साक्षात्कार करने के लिये अनेकों ने बहुत अधिक परिश्रम किया। उन्होंने दिन रात तत्व ज्ञान के सम्बन्ध में विचार किया और साधनायें की परन्तु उनसे भी माया का बन्धन टूट नहीं सका। अन्ततोगत्वा वे निराश होकर हार गये।

भावार्थ - हाथ पटकना एक मुहाविरा है, जिसका अर्थ होता है- निराशा के भावों में छटपटाना। यह कथन उस अवस्था में कहा जाता है, जब सफलता की कोई भी सम्भावना नहीं रह जाती।

मोहादिक के आद लों, जेती उपजी सृष्ट।
तिन सारों ने यों कह्या, जो किनहूं न देख्या दृष्ट॥९॥

सृष्टि में सर्वप्रथम कारण रूप मोहतत्व की उत्पत्ति हुई। उससे महत्तत्व तथा अहंकार की रचना के साथ ही कार्य रूप में यह अनन्त सृष्टि दृष्टिगोचर होने लगी। इस सृष्टि में किसी भी लोक में उत्पन्न होने वाले प्राणी (मनुष्य, देवता आदि) ने आज दिन तक यह नहीं कहा है कि मैने सच्चिदानन्द परब्रह्म का साक्षात्कार कर लिया है।

विशेष - यद्यपि रामकृष्ण परमहंस जी ने यह अवश्य कहा है कि मैने परमात्मा को साक्षात्कार किया है, किन्तु उनका यह कथन आदिनारायण - अव्याकृत के लिये ही है, अक्षर - अक्षरातीत के लिये नहीं।

वरना वरनो खोजिया, जेती बनिआदम।
एता दृढ़ किने ना किया, कहां खसम कौन हम॥10॥

मानव समाज की जितनी भी जातियां है, उन सबनें आपकी खोज की है, किन्तु किसी ने भी इस प्रश्न का दृढ़तापूर्वक उत्तर नहीं दिया कि हम कौन हैं तथा हमारा प्रियतम कौन है?

भावार्थ – वर्ण एवं जाति में अन्तर होता है। गुण, कर्म एवं स्वभाव के अनुसार मात्र चार ही वर्ण होते है, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। इनके पारस्परिक मेल से १८ वर्णो की कल्पना की गयी है। जन्म के आधार पर पौराणिक हिन्दू समाज में लगभग १२०० जातियां बन गयी हैं।

किन्तु, उपरोक्त चौपाई में संसार की सभी जातियों की खोज को दर्शाया गया है। अतः यहां हिन्दू समाज की १२०० जातियों या ४ अथवा १८ वर्णो का प्रसंग नहीं है, अपितु सभी जातियों का तात्पर्य है – जैसे – हिन्दी, चीनी, तुर्क, मुगल, अफगान, यहूदी, अरबी, पठान, अंग्रेज, यूरोपीय, अमरीकी इत्यादि।

उपरोक्त चौपाई के चौथे चरण का अन्तिम शब्द 'हम' है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि इस चौपाई में श्री देवचन्द्र जी की खोज का प्रसंग नहीं है, बल्कि संसार के समस्त वर्गो (जातियों) के द्वारा परब्रह्म की खोज का प्रसंग है। 'जेती बनि आदम' से भी यही भाव प्रगट होता है। सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी ने संसार के सभी वर्गो (पारसी, यहूदी, तुर्क, अंग्रेज आदि) में कोई भी खोज नहीं की।

आद मध्य और अबलों, सब बोले या विध।
केवल विदेही होए गए, तिन भी न कही ए सुध।।११।।

इस सृष्टि में प्रारम्भ से लेकर मध्य काल तक और आज दिन तक सभी ने यही कहा है कि हमने न तो परब्रह्म को यथार्थ रूप से जाना है और न अपने स्वरूप को ही जाना है। कैवल्य की विदेहावस्था को प्राप्त होने वले राजा जनक जैसे अनेकों ज्ञानी हो चुके हैं किन्तु उन्होंने भी सच्चिदानन्द परब्रह्म के विशय में स्पश्ट रूप से नहीं कहा है।

भावार्थ – उपरोक्त चौपाई में वर्णित 'कैवल्य' शब्द योगदर्शन का कैवल्य है, जिसमें चेतना अपने निजस्वरूप में स्थित तो हो जाती है किन्तु परमगुहा की प्राप्ति न होने से ब्रह्म साक्षात्कार से वंचित रह जाती है इस अवस्था में स्वयं की प्रकृति से परे की शुद्धावस्था की प्राप्ति तो हो जाती है किन्तु ब्रह्म के साक्षात्कार के लिये परब्रह्म से एकात्म

प्रेम भाव की आवश्यकता होती है। इस अवस्था की प्रप्ति करने वाले जनक, वेद व्यास, गौतम बुद्ध आदि अनेकों मनीषी हो चुके हैं। जनश्रुति है कि मर्यादा पुरूषोत्तम राम का जन्म अब से लगभग १७ लाख वर्ष पूर्व हुआ था और शुकदेव जी का जन्म आज से लगभग ५ हजार वर्ष पूर्व किन्तु दोनों समय ही जनक की उपस्थिति मानी जाती है।

इसका कारण यह है कि जनक एक वैसी ही उपाधि है जैसे शंकराचार्य। आदि शंकराचार्य के पश्चात् उनके सभी शिष्य जिस प्रकार शंकराचार्य ही कहलाते हैं, उसी प्रकार सीता के पिता मिथिला नरेश जनक के पश्चात् वहां के राज सिंहासन पर बैठने वाले जो भी राजा अध्यात्म जगत की उस अवस्था (कैवल्य) को प्राप्त किये, उन्हें भी शोभा रूप में 'जनक' ही कहा गया। शुकदेव जी के भी गुरू जनक ही थे, किन्तु वे दूसरे व्यक्ति थे। विश्वामित्र, वशिष्ठ आदि व्यक्तियों के सम्बन्ध में भी ऐसा ही मानना चाहिये।

वेदों कथ कथ यों कथ्या, सब मिथ्या चौदे लोक।
बकते बकते यों बके, एक अनेक सब फोक।।१२।।

वैदिक ग्रन्थों ने कहते - कहते यह कहा अर्थात् कठिनता पूर्वक यह कह दिया कि चौदह लोकों का यह ब्रह्माण्ड परिवर्तनशील (मिथ्या) है। इस प्रकार अनावश्यक शब्द जाल के द्वारा उन्होने मात्र इतना ही दर्शाया कि उसी एक अद्वितीय ब्रह्म के द्वारा ही अनन्त (अनेक) प्रकार के प्राणियों की यह सृष्टि दृष्टिगोचर हो रही है। वस्तुतः यह सम्पूर्ण जगत मिथ्या है।

भावार्थ - उपरोक्त चौपाई में 'वेद' शब्द का तात्पर्य वेदों के व्याख्यान स्वरूप ११२७ शाखाओं, ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद् ग्रन्थों से है। पौराणिक मान्यता में ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद् ग्रन्थों को भी वेद ही कहा जाता है जो उचित नहीं है। संहिता भाग ही यथार्थ रूप में वेद है। और ईश्वरीय ज्ञान होने से अपौरूषेय है। ''ब्रह्माक्षर समुद्भवम्'' गीता का यह कथन इसी सन्दर्भ में है। यह सर्व मान्य सिद्धान्त है कि सच्चिदानन्द परब्रह्म मन, वाणी से सर्वथा परे है ऐसी अवस्था में उन्हें शब्दों के माध्यम से वास्तविक रूप में दर्शाया जाना सम्भव नहीं है। ब्रह्म के विषय में जो कुछ भी कहा जाता है, वह मात्र आधार रूप ही होता है, यथार्थ नहीं। मूल संहिता रूप में

उपस्थित वेदों का अनुपम ज्ञान इतने सूक्ष्म रूप में है कि बिना समाधिस्थ (ऋतम्भरा) प्रज्ञा के परम सत्य का साक्षात्कार नहीं हो सकता। यद्यपि वेदों की मूल संहिता में कई दर्जन मन्त्र ऐसे हैं, जो ब्रह्म के धाम एवं स्वरूप पर प्रकाश डालते हैं। अथर्ववेद का केन सूक्त मात्र इसी विषय से सम्बन्धित है किन्तु तारतम ज्ञान के प्रकाश में ही इस सत्य को यथार्थ रूप में जाना जा सकता है, सामान्य मानवीय बुद्धि से नहीं।

वेदों में निहित शाश्वत सत्य को तारतम ज्ञान के अभाव में ऋषि जन अपने व्याख्यान ग्रन्थों में यथार्थ रूप से प्रकट नहीं कर सके, जिसका परिणाम यह हुआ कि जन सामान्य परब्रह्म के धाम एवं स्वरूप के सम्बन्ध में वास्तविक रूप में जान नहीं सका और अनेक प्रकार की विरोधाभासी मान्यताओं का शिकार हो गया। वेदों के व्याख्यान स्वरूप इस विशाल साहित्य को ही व्यंग्यात्मक रूप में इस चौपाई में 'बकना' कहा गया है क्योंकि निरर्थक और निरूद्देश्य बोलते रहने को सामान्य जन - भाषा में 'बकना' कहते है। इसी तथ्य को कलश ग्रन्थ के 'वेद का कोहेड़ा' प्रकरण में दूसरे शब्दों में दर्शाया गया है। यहां भी वेद का आशय संहिता भाग से नहीं अपितु वेदों के व्याख्यान ग्रन्थों से है।

बुध तुरिया दृष्ट श्रवना, जहां लों पोहोंचे मन।
ए होसी उतपन सब फना, जो आवे मिने वचन।।१३।।

बुद्धि से जिसकी विवेचना हो सके, प्रकृति मण्डल की सम्प्रज्ञात समाधि में जो अनुभवगम्य हो, दृष्टि एवं श्रवण के कार्य क्षेत्र में जो आता हो, मन की जिसमें गति हो एवं वाणी से जिसका कथन हो सकता हो, वह निश्चित रूप से प्रकृति का ही कार्य-कारण रूप होता है। उसके विषय में यही मान लेना चाहिए कि यह अनुभूत तथ्य या तो कारण प्रकृति का है या उससे उत्पन्न होने वाले कार्य जगत का है, जो महाप्रलय में पूर्ण रूप से लय हो जाने वाला है।

भावार्थ - जाग्रत, स्वप्न तथा सुषुप्ति के पश्चात् जीव की जो चौथी अवस्था आती है, उसे तुरीयावस्था कहते है। यह अवस्था मात्र समाधि काल में ही प्राप्त होती है। सम्प्रज्ञात समाधि के अन्तर्गत वितर्क, विचार, आनन्द और अस्मिता अनुगत समाधियां होती है, जिनमें प्रकृति से सम्बन्ध बना रहता है। इस दशा में ब्रह्म के स्वरूप के सम्बन्ध में स्पष्ट निर्णय नहीं लिया जा सकता है।

यद्यपि, माण्डूक्योंपनिषद् में तुरीयावस्था को ही सर्वोपरि कह दिया गया है, किन्तु यह जाग्रत, स्वप्न तथा सुषुप्ति अवस्था की अपेक्षा में कहा गया है। सम्प्रज्ञात समाधि के पश्चात् असम्प्रज्ञात या निर्बीज समाधि की जो अवस्था आती है, उसे ही प्रकृति से परे कहा जाता हैं। इस स्थिति को ही माण्डूक्योपनिषद् में 'प्रपंचोपशमः शिवोऽद्वैतं' अर्थात् कल्याणकारी एवं सभी प्रपंचों से रहित अद्वैत कहा गया है।

वेदांती भी केहे थके, द्वैत खोजी पर पर।
अद्वैत सब्द जो बोलिए, तो सिर पड़े उतर।।१४।।

वेदान्ती भी परब्रह्म के विषय में बोलते बोलते थक गये। वे द्वैत (जीव. माया) के इस मायावी मण्डल में अद्वैत ब्रह्म को खोजते रहें, किन्तु पा न सके। अन्त में उन्होनें यही कहा कि यदि हम अद्वैत शब्द भी बोल दें तो हमारा शिर घड़ से अलग हो जायेगा अर्थात् अद्वैत ब्रह्म शब्दातीत है।

मन चित्त बुध श्रवना, पोहोंचे दृष्ट न सब्दा कोए।
खट प्रमान तें रहित है, सो दृढ़ कैसे होए।।१५।।

वेदान्तियों का कथन है कि मन, चित्त, बुद्धि, श्रवण, दृष्टि तथा शब्द में से कोई भी परब्रह्म तक नहीं पहुंच सकता है। इस प्रकार जो परब्रह्म इन छः प्रमाणों (मनन, चिन्तन, विवेचन, श्रवण, दृश्यता तथा शब्द) की पहुंच से परे है, उसके विषय में दृढ़तापूर्वक कुछ भी कैसे कहा जा सकता है?

भावार्थ - मन से मनन, चित्त से चिन्तन तथा ग्रन्थों के शब्द प्रमाण से उसको जानने का प्रयास किया जाता है। मन, चित्त, बुद्धि, नेत्र एवं श्रवण तो प्रमाण उपलब्ध कराने के साधन हैं, साध्य (प्रमाण) नहीं। छः प्रमाण तो मनन, चिन्तन, विवेचन, श्रवण, दृश्यता तथा शब्द को ही मानना पड़ेगा।

द्वैत आड़े अद्वैत के, सब द्वैतै को विस्तार।
छोड़ द्वैत आगे वचन, किने ना कियो निरधार।।१६।।

अद्वैत ब्रह्म के साक्षात्कार के लिये हमारी अन्तर्दृष्टि के सम्मुख यह द्वैत रूप जगत आड़े आ जाता है। इस ब्रह्माण्ड में सर्वत्र द्वैत (जीव. प्रकृति) का ही विस्तार है। आज तक इस सृष्टि में पंच वासनाओं को छोड़कर किसी ने भी इस द्वैत मण्डल से आगे जाकर अद्वैत धाम या परब्रह्म के विषय में कुछ भी नहीं कहा है।

ए अलख किने ना लखी, आदै थें अवल।
ऐसी निराकार निरंजन, व्याप रही सकल।।१७।।

यह माया ऐसी अलख (अगम्या अज्ञेय) है, जिसे सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज दिन तक कोई भी नहीं जान सका है। इसका न तो कोाई आकार (आकृति) है और न कोई अवयव है, किन्तु सम्पूर्ण सृष्टि में इसका ही विस्तार (साम्राज्य) है।

भावार्थ - उपरोक्त चौपाई के चौथे चरण में 'व्याप' शब्द से ऐसा भाव नहीं ग्रहण करना चाहिए कि यह सबमें व्यापक है, अपितु ऐसा मानना चाहिए कि जीव के अतिरिक्त इस सृष्टि के दृश्य - अदृश्य सभी पदार्थो के रूप में एक मात्र वह स्वयं है अर्थात् प्रत्येक कण के रूप में वह स्वयं विद्यमान है। व्यापक पदार्थ व्याप्य (जिसमें व्यापकता पायी जाय) से सर्वदा सूक्ष्म ही होना चाहिए। माया का जीव या ब्रह्म से अधिक सूक्ष्म होना सम्भव नहीं। इस सम्बन्ध में कठोपनिषद् का यह कथन बहुत ही महत्वपूर्ण है -

महतः परं अव्यक्तः अव्यक्तात् पुरूषः परः।
पुरूषान्न परं किंचित् सा काष्ठा सा परा गतिः।।

अर्थात् महत्तत्व से परे अव्यक्त कारण प्रकृति है। उससे भी परे वह पुरूष (ब्रह्म) है, जिसके परे अन्य कोई भी नहीं है।

चेतन व्यापी व्याप में, सो फेर आवे जाए।
जड़ को चेतन ए करे, चेतन को मुरछाए।।१८।।

शरीर में चैतन्य जीव की चैतन्यता व्यापक होती है। यह जीव भिन्न-भिन्न योनियों में एक शरीर से दूसरे शरीर में आता जाता है। यह माया जड़ को चेतन कर देती है अर्थात् मायावी सुखों के भोग की वासना से जब जीव एक जड़ शरीर (गर्भ) में प्रवेश करता है तो वह शरीर चेतन हो जाता है तथा माया के प्रभाव से उम्र के समाप्त हो जाने पर जब जीव शरीर का परित्याग करने लगता है तो उसमें संज्ञाहीनता (मूर्च्छा, बेहोशी) आने लगती है।

ऊपर तले मांहें बाहेर, दसो दिसा सब एह।
छोड़ याको कोई ना कहे, ठौर खसम का जेह।।१९।।

इस ब्रह्माण्ड में ऊपर नीचे, अन्दर बाहर, सर्वत्र माया की ही लीला है। इस प्रकार कोई भी ज्ञानी इस मायावी जगत से परे परब्रह्म के धाम (स्थान) के विशय में कुछ कहता ही नहीं है।

जो कछू कहिए वचने, सो सब मिने गफलत।
ना सरूप ना काहू वतन, तो क्यों कर जाइए तित।।२०।।

परब्रह्म के विषय में शब्दों में जो कुछ भी व्यक्त किया जाता है, वह इस नश्वर जगत के ही वर्णन से सम्बन्धित है। जब कोई परब्रह्म के अखण्ड स्वरूप एवं धाम का ही वर्णन नहीं करता है तो भला उसकी प्राप्ति ही कैसे हो सकती है?

पेड़ काली किन ना देखी, सब छायाही में रहे उरझाए।
गम छाया की भी ना पड़ी, तो पेड़ पार क्यों लखाए।।२१।।

आज तक किसी ने भी इस जगत के मूल अव्यक्त कारण - प्रकृति रूप वृक्ष को नहीं देखा है। सभी उस वृक्ष की छाया में ही उलझे रहे है। यहां तक कि बहुतों को तो उसकी छाया की भी पहचान नहीं हो सकी है। ऐसी अवस्था में यह कैसे सम्भव है कि उस वृक्ष रूप माया के परे कोई ब्रह्म की पहचान कर लेता?

भावार्थ - गीता तथा कठोपनिषद् में इस संसार रूपी वृक्षका वर्णन किया गया है

- उर्ध्वमूलमधः शाश्वतमश्वत्थं प्राहुरव्ययम्।
छान्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्।।
अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखा गुण प्रवृधा विषय प्रवालाः ।
अधश्च मूलान्यनुसंततानि कर्मानुबन्धीनि मनुष्य लोके ।। गीता १५/१,२

अर्थात् प्रवाह रूप से कभी भी नश्ट न होने वाला किन्तु परिवर्तनशील यह संसार एक अश्वत्थ (पीपल) का वृक्ष है। विज्ञान (परमसत्य) के नियम इसके पत्ते है। जो इसे जानता है, वही वेद वेत्ता कहा जा सकता है। यह ऐसा वृक्ष है जिसकी महा मूल तो ऊपर है, किन्तु इसके नीचे भी बहुत सी जड़े हैं। नीचे उपर चारों ओर सत्व, रज एवं तम आदि गुणों के विस्तार से इसकी अनन्त शाखायें फैली हुई है, जिनमें रूप, रस, गन्धादि कोपलें हैं, जिनका विकास उन नियमों में परिणत होता है जो इसके छन्द रूप पत्ते हैं। इसकी बहुत सी जड़ें मनुष्य लोक में भी फैली हुई हैं जिनका मूल कारण वे कर्म हैं जिनके

अनुसार नाना प्राणी बीज बोकर स्वयं नवीन जन्म रूप फल प्राप्त करते हैं।

इसी प्रकार श्वेताश्वतरोपनिषद् में 'अजामेंकां लोहित शुक्ल कृष्णां बह्वी प्रजाः सृजमानाः स्वरूपा' कहकर कारण प्रकृति को सत्व (श्वेत), रज (लाल) तथा तम (काली) अवस्था वाली अजन्मा कहा गया है। काला रंग तमोगुण का प्रतीक है जो अज्ञानता का अन्धकार उत्पन्न करता है। इसी श्वेता. में 'मायां तू प्रकृतिं विद्धि मायिनं तु महेश्वरम्' कहकर माया को ही स्पष्ट रूप से प्रकृति कहा है। उपरोक्त चौपाई में जिस माया का वर्णन है, वह सुमंगला शक्ति है जो अव्याकृत के महाकारण (सबलिक के स्थूल) में स्थित है। कि. ७/२ में कहा गया है कि –

तू कहा देखे इन खेल में, ए तो पड़यो सब प्रतिबिम्ब।

स्पष्ट है कि इस नश्वर संसार में जिसे कारण प्रकृति कहकर जगत का मूल कहा जा रहा है, वह सुमंगला शक्ति का सांकल्पिक रूप से प्रतिबिम्ब रूप है। क्योंकि कि. ६५/१० का यह कथन ध्यान देने योग्य है –

प्रकृति पैदा करे, ऐसे कई इंड आलम।
ए ठौर माया ब्रह्म सबलिक, त्रिगुण की परआतम ।।

यदि यह संशय किया जाय कि सुमंगला शक्ति तो चेतन है, उसका प्रतिबिम्ब कारण प्रकृति के रूप में कैसे हो सकता है? तो इसका समाधान यह है कि प्रतिबिम्ब का तात्पर्य मात्र वह लौकिक प्रतिबिम्ब नहीं जिसे हम स्थूल वस्तुओं के स्थूल प्रतिबिम्ब के रूप में देखा करते हैं, अपितु किसी शक्ति या पदार्थ के चिन्तन के परिणाम स्वरूप जो उसका प्रतिबिम्ब हृदय पटल पर उभरता है, वह भी प्रतिबिम्ब (सांकल्पिक) ही कहा जाता है।

अव्याकृत अक्षर ब्रह्म का मन स्वरूप है। उनके महाकारण स्वरूप में उनकी शक्ति सुमंगला है। यह वैसे ही है जैसे सूर्य की शक्ति दाहकता है। उसमें सृष्टि रचना का बीज चित्त स्वरूप सबलिक में स्थित चिदानन्द लहरी से प्रकट होता है। आनन्द शक्ति एवं चिद् शक्ति का आंशिक योग ही चिदानन्द लहरी है। वस्तुतः अहम् (सत्स्वरूप) के द्वारा निर्देशित होने पर आनन्द रस में डूबी बुद्धि (केवल) एवं सृष्टि की उत्पत्ति, पालन एवं संहार का संस्कार रखने वाले चित्त (सबलिक) की संयुक्त प्रक्रिया ही मन को सृष्टि

कार्य के लिये प्रेरित करती है जो सुमंगला के द्वारा सम्पादित होता है, किन्तु यह कार्य भी वह अपने स्थूल रूप प्रणव तथा रोधिनी शक्ति के द्वारा प्रकट करती है।

अव्याकृत चेतन और प्रकाशमयी (नूरमयी) है। उसमें विद्यमान सुमंगला शक्ति जब अनन्त नूरमयी (शुक्रमयी) स्वरूप को चिंतन रूपी स्वप्न में देखती है तो उसके हृदय पटल पर प्रकाशमयी (नूरमयी) स्वरूप का जो रूप अंकित होता है, वह ही मोह सागर के रूप में व्यक्त होता है जो कालान्तर में कारण प्रकृति के रूप में जाना जाता है। यही मोह सागर रोधिनी शक्ति के द्वारा व्यक्त किया गया माया का छाया रूप है। अथर्व वेद ८/६/५ में इसी तथ्य को ''माया ह जज्ञे माययां'' कहा गया है अर्थात् अनादि, चेतन माया से नश्वर माया की उत्पत्ति हुई है।

संक्षिप्त रूप में उपरोक्त चौपाई के आशय को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है कि उस सुमंगला शक्ति (अनादि चैतन्य माया) को कोई भी नहीं जानता है जिसकी छाया रूपी इस त्रिगुणात्मिका माया (कारण प्रकृति) से इस जगत की रचना होती है। सभी इस कारण प्रकृति को ही मूल कारण मान कर इसमें उलझ जाते है। अधिकतर तो इसको भी नहीं जान पाते अपितु अष्टावरण (पंचभूत तथा मन, बुद्धि एवं अहंकार) से भी आगे जाने का साहस नहीं कर पाते। ऐसी अवस्था में यह कैसे सम्भव है कि संसार के लोग सुमंगला पुरूष (अव्याकृत) परे सबलिक, केवल, सत्स्वरूप एवं उनसे परे अक्षर, अक्षरातीत के विषय में जानने के लिये प्रयासरत होंगे।

जाए ना उलंघी देखीती, ना कछु होए पेहेचान।
तो दुलहा कैसे पाइए, जाको नेकना सुन्यो निसान।।२२।।

इस माया के विषय में सामान्य रूप से सभी लोग जानते हैं किन्तु कोई भी न तो इसे पार कर पाता है और न यथार्थ रूप से इसकी पहचान ही कर पाता है। ऐसी स्थिति में जिस अक्षरातीत परब्रह्म के विषय में संसार के लोगों ने थोड़ा सा भी सांकेतिक ज्ञान नहीं सुना है, भला वे उन्हें कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

खसम जो न्यारा द्वैत से, और ठौरों सब द्वैत।
किने ना कह्यो ठौर नेहेचल, तो पाइए कैसी रीत।।२३।।

इस ब्रह्माण्ड में सर्वत्र द्वैत का ही विस्तार है। जबकि परब्रह्म द्वैत मण्डल से परे है। जब इस संसार में किसी को भी अखण्ड धाम के विशय में कुछ भी पता नहीं है तो वे उसका साक्षात्कार कैसे कर सकते हैं?

या विध ग्यान जो चरचहीं, सो मैं देख्या चित ल्याए।
ज्यों मनुआं सुपने मिने, बेसुध गोते खाए।।२४।।

मैने इस बात का बहुत अच्छी तरह से अनुभव किया है कि जिस प्रकार स्वप्न में मन बेसुध होकर इधर उधर भटकता रहता है, उसी प्रकार स्वप्न की बुद्धि वाले ज्ञानी जन भी इसी प्रकार के संशय भरे ज्ञान की चर्चा किया करते है।

खिनमें कहे सब ब्रह्म है, खिनमें बंझा पूत।
मदमाते मरकट ज्यों, करे सो अनेक रूप।।२५।।

ये नवीन वेदान्ती किसी क्षण तो कहते हैं कि यह सम्पूर्ण जगत ही ब्रह्मरूप है, किन्तु दूसरे ही क्षण वे यह भी कहते हैं कि जिस प्रकार बन्ध्या स्त्री का पुत्र नहीं होता उसी प्रकार यह जगत भी अस्तित्व में है ही नहीं। यह मात्र काल्पनिक रूप में ही भास (प्रतीत हो) रहा है। इन विद्वानों का कथन इसी प्रकार बदलता रहता है जैसे कोई बन्दर मंदिरा के नशे में तरह-तरह की अटपटी क्रीड़ायें करता है।

भावार्थ - वेदों एवं शास्त्रों के गुह्य रहस्यों को मात्र समाधिस्थ प्रज्ञा के द्वारा ही जाना जा सकता है, किन्तु ध्यान समाधि से कोसों दूर रहने वाले ये शुश्क हृदय विद्वान कठो. के कथन 'न एषा तर्केण मतिरापनेया' को झूठलाते हुए अपने तर्क जाल से ब्रह्मवाद की घोषणायें करते हैं तथा वाद-विवाद को ही ब्रह्मानन्द के अनुभव के समान मानते है। आध्यात्मिक अनुभूतियों से रहित इन वाचक विद्वानों की उपमा अति कठोर शब्दों में मदिरा पीने वाले बन्दर से की गयी है।

खिनमें कहे सत असत, माया कछुए कही न जाए।
यों संग संसा दृढ़ हुआ, सो धोखे रहे फिराए।।26।।

ये एक क्षण में कहते हैं कि उस ब्रह्म (सत्) से ही इस जगत (असत) का विस्तार

हुआ है, माया तो कुछ है ही नहीं। इस प्रकार इनकी संगति करने से संशय और अधिक बढ़ जाता है। इनकी बातों में फंसने वाले लोग धोखें में ही भटकते रहते है।

खिनमें कहे है आप में, खिनमें कहे बाहेर।
खिनमें माहें न बाहेर, यों सब्द न कोई निरधार।।२७।।

ये एक क्षण में कहते हैं कि ब्रह्म हमारे अन्दर विद्यमान है। दूसरे क्षण कहते हैं कि वह हमारे बाहर है। अगले क्षण कहते है कि वह न तो हमारे अन्दर है और न बाहर है। इस प्रकार इनके कथनों में किसी भी प्रकार की स्थिरता नहीं रहती।

खिनमें कछू और कहे, खिनमें और की और।
सो बात दृढ़ क्यों होवहीं, जाको वचन ना रेहेवे ठौर।।२८।।

ये एक क्षण में जो बात कहते हैं, अगले ही क्षण में उसका विरोधाभासी कथन भी कह देते हैं। इस प्रकार इन नवीन वेदान्तियों की संशय भरी बातों पर किसी को भी कैसे दृढ़ता हो सकती है? इन शुष्क हृदय वाले ज्ञानियों की संशय भरी बातों की स्थिरता का कोई आधार ही नहीं होता।

भावार्थ - महर्षि वेदव्यास जी ने वेद और येाग से जो कुछ भी आत्मसात् किया, उसे वेदान्त दर्शन के सूत्रों में लिपिबद्ध कर दिया। किन्तु वर्तमान समय के आधुनिक विद्वानों ने अपने शुष्क तर्को एवं साम्प्रदायिक पक्षपात के कारण वेदान्त दर्शन को विवादों के जाल में उलझा दिया है। यही कारण है कि आज उसी वेदान्त दर्शन के सूत्रों को आधार बनाकर द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, शुद्धाद्वैत तथा त्रैत आदि अनेकों मत हैं। इनमें ब्रह्म, जीव तथा प्रकृति के सम्बन्ध में प्रत्येक की विचारधारा दूसरे के विपरीत जाती है। ऐसी स्थिति में वास्तविक सत्य का निर्णय कैसे किया जा सकता है?

जैसे बालक बावरा, खेले हंसता रोए।
ऐसे साधू सास्त्र में, दृढ़ न सब्दा कोए।।२९।।

जिस प्रकार एक नादान बालक खेलते समय कभी हंसता है तो कभी रोने लगता है, उसी प्रकार समाधिस्थ बुद्धि एवं तारतम ज्ञान के अभाव में शास्त्रों का अनुसरण करने वाले साधु-सन्तों के कथनों में सत्यता के प्रति पूर्ण दृढ़ता नहीं होती।

ए सबे सींग ससक, बंझा पूत वैराट।
फूल गगन नाम धराए के, उड़ाए देवे सब ठाट।।३०।।

वर्तमान समय के नवीन वेदान्ती जो आदि शंकराचार्य जी के आधुनिक अद्वैत मत का अनुसरण करते हैं, वे इस संसार को बन्ध्या के पुत्र, खरगोश के सींग तथा आकाश के फूल के समान अस्तित्वविहीन घोशित कर देते हैं। इस प्रकार, वे ब्रह्म के आदेश से होने वाली सृष्टि की अनन्त लीला को ही नकार देते हैं।

आप होत फूल गगन, बढ़त जात गुमान।
देखीतां छल छेतरे, हाए हाए ऐसी नार सुजान।।३१।।

यदि सूक्ष्म दृश्टि से देखा जाय तो स्वयं को ब्रह्म घोषित करने वाले ये आधुनिक वेदान्ती भी तो आकाश के फूल के समान अस्तित्व विहीन है। क्योंकि जब ब्रह्म के अतिरिक्त दूसरा कोई है ही नहीं तो इनका भी अस्तित्व कैसे हो सकता है? शुष्क तर्को के द्वारा अपनी बात को थोंपते - थोंपते इनके ज्ञान का अहंकार बढ़ता ही जाता है। हाय! हाय! माया की ऐसी विचित्र लीला है कि सबके देखते - देखते माया के छल में ये विद्वान जन छले जाते है।

कोई ना परखे छल को, जिन छलमें हैं आप।
तो न्यारा खसम जो छल थें, सो क्यों पाइए साख्यात।।३२।।

इन नवीन वेदान्तियों में ऐसा कोई भी ज्ञानी नहीं है जो इस मायावी जगत की वास्तविकता को जान जाय, जिसमें वह स्वयं रह रहा है। ऐसी स्थिति में यह कैसे सम्भव है कि मायावी प्रपंच से सर्वथा पृथक रहने वाले उस सच्चिदानन्द परब्रह्म की ये साक्षात् प्राप्ति कर सकें।

अटक रहे सब इतहीं, आगे सब्द न पावे सेर।
ए खोजें सब द्वैत में, ओतो अद्वैत लों अंधेर।।३३।।

इस ब्रह्माण्ड के चारों ओर मोह सागर का अनन्त विस्तार हैं। सभी ज्ञानी जन इस मोहतत्व (निराकार) तक आकर रूक जाते हैं। इसके आगे जाने के मार्ग का उनके पास ज्ञान ही नहीं होता है। ये विद्वान ब्रह्म को जीव और प्रकृति के इस द्वैत मण्डल में ही खोजते रहते हैं। जिसमें केवल माया का अन्धकार ही अन्धकार है। ब्रह्म का अद्वैत मण्डल (बेहद और परमधाम) तो इसके सर्वथा ही परे है।

ए मत वेद वेदांत की, सास्त्र सबों ए ग्यान।
सो साधू लेकर दौड़हीं, आगे मोह न देवे जान।।३४।।

वेद - वेदान्त तथा शास्त्रों में इस प्रकार का ज्ञान दर्शाया गया है जिसका अनुसरण करते हुए साधु सन्त परमतत्व की खोज तो करते हैं किन्तु मोह तत्व का आवरण उन्हें अखण्ड धाम में जाने नहीं देता है।

भावार्थ - यद्यपि वेद-शास्त्रों मे सत्य ज्ञान है किन्तु अत्यन्त सूक्ष्म और सांकेतिक रूप में है। तारतम ज्ञान का प्रकाश न हाने से संसार के विद्वान परब्रह्म के विशय में यथार्थ रूप से नहीं जान पाये। वे धर्मग्रन्थों के बाह्य शब्दार्थ में ही उलझे रह गये।

ए खेल सारा कुदरती, फिराया फिरस्तों फेर।
ए इंड गोलक बीच में, गिरद गफलत की अंधेर।।३५।।

जगत का यह सम्पूर्ण खेल माया (प्रकृति) का है जिसने त्रिदेवों के भी मन को इसमें भ्रमित कर रखा है। चौदह लोकों का यह ब्रह्माण्ड माया के अन्दर है और इसके चारो ओर मोह सागर का अनन्त विस्तार वाला अन्धकार फैला हुआ है।

भावार्थ - मोह सागर के अन्दर मात्र यह ही चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड नहीं है अपितु इसकी स्थिति वैसे ही है जैसे समुद्र में दिखायी देने वाले अनन्त बुलबुलों मे से किसी एक की होती है।

कुदरत को माया कही, गफलत मोह अंधेर।
या विध चौदे तबकों, कह्या फिरस्ते का मन फेर।।३६।।

वेद पक्ष में जिसे माया और अज्ञान रूपी मोह तत्व कहते हैं, उसे ही कतेब पक्ष में कुदरत और गफलत कहते है। इस प्रकार चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड आदिनारायण (अजाजील फरिश्ते) के मन के स्वप्न का परिणाम है।

भावार्थ - आदि नारायण के स्वप्न में मात्र यह चौदह, लोकों का ही यह ब्रह्माण्ड नहीं है, बल्कि यह समस्त सृष्टि है जिसमें अनन्त चौदह लोकों का अस्तित्व है। उपरोक्त चौपाई में चौदह लोकों का यह कथन व्यष्टि (व्यक्ति गत अथवा हमारे इस लोक) के रूप में किया गया है।

ए खेल सारा सुन्य का, फिरे मने मन फेर।
ए इंड गोलक बीच में, याके मोह तत्व चौफेर।।३७।।

यह सम्पूर्ण मायावी जगत शून्य, निराकार (मोहसागर) से उत्पन्न हुआ है। इस

मोहसागर में अक्षर ब्रह्म का मन अव्याकृत स्वाप्निक रूप में स्वयं को आदिनारायण के रूप में देख रहा है और आदि नारायण का मन इसमें भूला हुआ है। चौदह लोकों का यह ब्रह्माण्ड मोहसागर के अन्दर है और इसके चारों ओर मोह सागर का अनन्त विस्तार है।

सब्द जो सारे मोह लों, एक लवा ना निकस्या पार।
खोज खोज ताही सब्द को, फेर फेर पड़े अंधार।।३८।।

महापुरूषों के सभी कथन निराकार तक का ही वर्णन करते है। उनका एक शब्द भी निराकार से परे अखण्ड धाम का वर्णन नहीं करता। संसार के लोग इन मनीषियों के कहे हुए शब्दों के आधार पर परब्रह्म को खोजने का प्रयास करते हैं और बार - बार निराकार में भटकते रहते हैं।

भावार्थ - बिना तारतम ज्ञान के परब्रह्म के धाम एवं स्वरूप का यथार्थ निर्धारण नहीं हो सकता। धर्म ग्रन्थों में सत्य इस प्रकार छिपा रहता है कि उसे पढ़ कर भी लोग न तो साकार - निराकार से परे हो पाते है और न इस मायावी जगत से परे अखण्ड परमधाम के बारे में कुछ जान पाते हैं।

केतेक बुजरक कहावहीं, सो याही सुन्य को चाहें।
सो गले सब इतहीं, आगे ना निकसे पाए।।३९।।

ज्ञान, वैराग्य तथा भक्ति के क्षेत्र में जो अग्रगण्य माने जाते हैं वे लोग भी परमात्मा को निराकार मानकर ही उपासना करते हैं। वे महाप्रलय में इसी निराकार में विलीन हो जाते है और इसको पार कर अखण्ड धाम में नहीं जा पातें

भावार्थ - जिस प्रकार बर्फ गलने के पश्चात् जल में परिवर्तित तो हो जाता है किन्तु उसका अस्तित्व नष्ट नहीं होता उसी प्रकार निराकार (मोह सागर) में गलने का आशय अपने स्थूल सूक्ष्म एवं कारण शरीर का परित्याग कर प्रलय में सुषुप्ति अवस्था में पड़े रहने से है। इसका दूसरा आशय यह भी है कि समाधि की अवस्था में जब तीनों शरीरों से जीव का सम्बन्ध टूट जाता है तो वह महाकारण अवस्था में निराकार मण्डल मे भटकता रहता है। तारतम ज्ञान का प्रकाश न होने या शुद्ध हंस अवस्था की प्राप्ति न होने पर जीव निराकार से परे की अनुभूति नहीं कर पाता। यह भी 'गलना' कहा जा सकता है।

निजानन्द दर्शन का सिद्धान्त है कि यह सम्पूर्ण जगत स्वप्नवत् है तथा जीव भी आदि नारायण की चेतना का सांकल्पिक प्रतिबिम्ब चेतन है ऐसी अवस्था में महाप्रलय में जब आदि नारायण अपने मूल स्वरूप (सुमंगला - पुरूष) को प्राप्त होंगे तो सभी जीवों का अस्तित्व विहीन हो जाना अनिवार्य है, क्योंकि उन्हें स्वप्नवत् कहा गया है।

सामंजस्य के रूप में ऐसा माना जा सकता है कि प्रकृति की सूक्ष्मतम् अवस्था अव्यक्त है जिसे बोल चाल की भाषा में लय हो जाना कहा जाता है। महाप्रलय में जीव अपने तीनों शरीरों से रहित होकर सुशुप्ति में पड़े रहते हैं तथा जब नवीन सृष्टि होती है तो आदि नारायण के संकल्प से उन्हें पुनः जिस कारण एवं सूक्ष्म शरीरों की प्राप्ति होती है, उसे ही जीवों का प्रकट होना कहा जाता है।

किन्तु 'उपज्यो मोह, सूरत संचरी। खेल हुआ, माया विस्तरी' के कथन से यह स्पष्ट होता है कि महाप्रलय की अवस्था में मोहतत्व (प्रकृति का सूक्ष्मतम् अव्यक्त स्वरूप) ही नहीं रहता। ऐसी अवस्था में सुषुप्ति में जीव का रहना भी सिद्ध नहीं हो पायेगा और प्रकृति तथा जीव का प्रवाह से नित्य किन्तु मूल रूप से अक्षर ब्रह्म के मन अव्याकृत (सुमंगला - पुरूष) के स्वाप्निक संकल्प का परिणाम मानना पड़ेगा। आदि शंकराचार्य का अद्वैत सिद्धान्त कुछ अंशों में निजानन्द दर्शन से मिलता हुआ प्रतीत होता है। उपरोक्त सन्दर्भ में कि. / का यह कथन देखने योग्य है -

प्रकृति पैदा करे, ऐसे कई इंड आलम।
ए ठौर माया ब्रह्म सबलिक, त्रिगुन की परआतम ।।

फिरे जहां थें नारायन, नाम धराया निगम।
सुन्य पार ना ले सके, हटके कह्या अगम।।४०।।

आदि नारायण इसी निराकार को पार नहीं कर सके, जिसका वर्णन वैदिक साहित्य में किया गया है। जब वे निराकार मण्डल को उलंघ नहीं सके तो उन्होनें स्पष्ट कह दिया कि इसे पार कर पाना सम्भव नहीं है।

भावार्थ - आदि नारायण के स्वप्न में यह सृष्टि है। यदि उन्हें निराकार से परे का बोध हो जाय तो स्वप्न के टूटने से इस सृष्टि का भी लय हो जायेगा। यही कारण है कि पांच वासनाओं ने तो निराकार को पार कर लिया किन्तु आदि नारायण ने नहीं।

सुन्य की बिध केती कहूं, ए इंड जाके आधार।
नेत नेत केहेके फिरे, निगम को अगम अपार।।४०।।

यह ब्रह्माण्ड जिस महाशून्य (निराकार) से उत्पन्न हुआ है, उसकी वास्तविकता को मैं कितना कहूँ? वैदिक साहित्य में इसे अनन्त कह कर ऐसा वर्णित किया गया है कि किसी के लिये भी इसे पार कर पाना सम्भव नहीं है। परब्रह्म की खोज करने वाले मनीषी जन जब निराकार को पार नहीं कर पाये तो उन्होंने हार कर परब्रह्म को नेति - नेति कहा अर्थात् (परब्रह्म ऐसा नहीं है, ऐसा नहीं है) इसका अभिप्राय यह है कि इस सम्पूर्ण प्रकृति मण्डल में ब्रह्म के स्वरूप की सादृश्यता में कोई भी पदार्थ नहीं है।

भावार्थ - पौराणिक मान्यता में ऐसा कहा जाता है कि जब वेदों ने परमात्मा को खोजने का प्रयास किया तो वे निराकार तक जाकर रूक गये और नेति-नेति (अनन्त - अनन्त) कहकर वापस लौट आये।

वस्तुतः इस प्रकार का कथन आलंकारिक है। ग्रन्थ जड़ पदार्थ है। वह स्वयं उड़कर कहीं जा नहीं सकता। वैदिक ग्रन्थों में निहित ज्ञान का आधार लेकर जब ऋषि मुनियों ने ध्यानावस्था में ब्रह्म की खोज करने का प्रयास किया तो उनकी आत्मिक दृष्टि निराकार में भटकने लगी। स्थूल पदार्थो से लेकर प्रकृति के इस सूक्ष्मतम स्वरूप (मोह सागर) में उन्हें जो कोई भी पदार्थ (सूर्य, विद्युत, चन्द्रमा, सागर आदि) मिला, उस की उपमा वे ब्रह्म से नहीं दे सकते थे, जैसा उन्होंने वेदों में पढ़ा था। उपमा से रहित होने और निराकार को पार कर ब्रह्म की प्रत्यक्ष अनुभूति न कर पाने की पीड़ा को उन्होनें 'नेति - नेति' कहकर व्यक्त किया जिसका अर्थ होता है-ब्रह्म ऐसा नहीं है, ऐसा नहीं है।

अब नेक तो भी कहूं, सुन्य मंडल की सुध।
जाको कोई ना उलंघे, अगम अगाध या बिध।।४२।।

फिर भी मैं इस निराकार मण्डल की थोड़ी सी वास्तविकता को दर्शाता हूं। यह इतना अनन्त और अगम्य है कि कोई भी इसे पार नहीं कर पाता।

इत नहीं तत्व गुन निरगुन, पख नहीं परमान।
अंग ना इंद्री जान ना आवन, लख नहीं निरमान।।४३।।

इस शून्य मण्डल में पांच तत्वों में से कोई भी तत्व नहीं। तीनों गुण सत्व, रज तथा तम भी नहीं है किन्तु इसे पूर्ण रूप से निगुर्णता वाला भी नहीं काह जा सकता। यथार्थतः न तो यहां जागृति है और न सुषप्ति। न तो यहां अन्तः करण (मन, चित्त,

बुद्धि और अहंकार) की प्रक्रिया है और न इन्द्रियों (ज्ञानेन्द्रियों तथा कर्मेन्द्रियों) की। यहां पर न तो कहीं जाया जा सकता है और न आया जा सकता है। निश्चित रूप से यहां किसी की भी पहचान नहीं हो सकती।

भावार्थ - यद्यपि प्रत्येक भौतिक पदार्थ में सत्व, रज एवं तम का होना अनिवार्य होता है किन्तु महाशून्य (मोहसागर) में ये तीनों गुण अव्यक्त दशा (साम्यावस्था) में होते है। यहीं कारण है कि इसे सगुण या निर्गुण से परे की अवस्था में वर्णित किया गया है। महाशून्य को जीव की जागृति एवं निद्रा से भी भिन्न स्वप्नावस्था में इसलिये वर्णित किया गया है कि स्वप्न में देखे गये पदार्थ कल्पित होते हैं। यह सारा जगत भी अक्षर के मन ब्रह्म (अव्याकृत) की कल्पना (स्वप्न) का स्वरूप है। अतः मोह सागर को भी ऐसा ही दर्शाया गया है।

इत आद अंत ना थिर चर, नर ना कोई नार।
अंधेर ना कछू उजाला, ना निराकार आकार।।४४।।

इस महाशून्य का न तो कोई आदि (प्रारम्भ) है और न कोई अन्त (समापन)। न तो इसे स्थिर कह सकते और न चलायमान। इसे न पुरूष कहा जा सकता है और न स्त्री। इसका रूप इतना विचित्र है कि इसे न तो अन्धकार मान सकते है और न ही प्रकाश। इसी प्रकार न इसे निराकार कह सकते है और न साकार।

भावार्थ - इसी महाशून्य से सम्पूर्ण सृष्टि उत्पन्न होती है जिसमें अनन्त प्राणियों के नर एवं मादा शरीरों का जन्म होता है। ऐसी स्थिति में यह न तो पुल्लिंग का वाचक हो पाता है और न स्त्रीलिंग का। स्वयं अन्धकारमय होते हुए भी यह उन करोड़ो आकाशगंगाओं (ग्लैक्सीज) को उत्पन्न करता है जिनके सूर्यो की गणना कर पाना मानवीय बुद्धि के लिये सम्भव नहीं है। इस प्रकार न तो इसे अन्धकारमयी कह सकते है और न प्रकाशमयी। स्वयं निराकार होते हुए भी यह साकार जगत को अपने अन्दर समाये हुए है। अतः इसे स्पष्ट रूप से न साकार कह सकते है और न निराकार।

जिमी जल ना वाए अगनी, ना सब्द सोहं आसमान।
ना कछू जोति रूप रंग, नहीं नाम ठाम कोई बान।।४५।।

यहां न तो पृथ्वी तत्व है और न जल, अग्नि, वायु तथा आकाश ही है। ध्यानवस्था में जिस 'सोऽहम्' शब्द की अनुभूति होती है, वह भी यहां नहीं है अर्थात्

जीव को यहां सामान्य अवस्था में अपने अस्तित्व का आभास नहीं होता। इस शून्य मण्डल में न तो किसी प्रकार की ज्योंति है, न कोई रूप या रंग ही है। यहां पर न तो किसी भाषा का अस्तित्व है, न किसी स्थान का और न किसी भी प्रकार के नाम का।

भावार्थ - कैवल्य की प्राप्ति करने वाले योगी निराकार मण्डल में स्वयं की अनूभुति तो करते हैं किन्तु उस अवस्था को प्राप्त न करने की स्थिति में वे स्वयं को भूल जाते हैं, क्योंकि यह घोर अज्ञान का क्षेत्र है। सभी शब्दों (भाषा आदि) की उत्पत्ति एवं विलीनीकरण भी इसी से होता है, इसलिए यहां किसी नाम के अस्तित्व का प्रश्न ही नहीं है।

ना जीव करम ना काल कोई, गंध नहीं बल ग्यान।
तीर्थंकर भी इत गले, जो कहावें सदा प्रवान।।४६।।

इस मण्डल में न तो जीव है और न उनके कर्म। यहां काल की भी सत्ता नहीं है। किसी भी प्रकार की गन्ध नहीं है। यहां न तो किसी शक्ति का अनुभव होता है और न ज्ञान का। सर्वदा सर्वज्ञ कहलाने वाले तीर्थकर भी इस महाशून्य में गल जातें है।

भावार्थ - निराकार से परे योगमाया का ज्ञान रखने वाले मनीषी जन यहीं मानते है कि कैवल्य पद की प्राप्ति हो जाने पर मुक्त जीव अनन्त सृष्टि में सर्वत्र इच्दानुसार भ्रमण करता है और ब्रह्मानन्द का रसपान करता है।

किन्तु तारतम ज्ञान के प्रकाश में यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो उन्हें जिस ब्रह्मानन्द की अनुभूति होती है, वह बेहद मण्डल (योगमाया) के ब्रह्मानन्द का प्रतिबिम्ब है जो निराकार मण्डल में अनुभव होता है। उपरोक्त चौपाई में इस निराकार मण्डल में तीर्थकरों के गलने का जो प्रसंग है, उसका आशय यह है कि तीर्थंकर इस निराकार मण्डल में मात्र प्रतिबिम्बत ब्रह्मानन्द का रस प्राप्त करके ही स्वयं को कृतकृत्य मान लेते हैं और उनके सूक्ष्म एवं कारण शरीर यहां अपना अस्तित्व खो चुके होते हैं।

वस्तुतः कैवल्य उपनिषद् में जिस मुक्ति सुख का वर्णन है, वह योगदर्शन कें वर्णित प्रकृति लीन योगियों के मुक्ति सुख का वर्णन है। अखण्ड मुक्ति तो प्रकृति से परे योगमाया के ब्रह्माण्ड में होनी चाहिये, जिसमें प्रकृति मण्डल में भ्रमण करने का प्रसंग ही नहीं होना चाहिए। यद्यपि काल और समय में अन्तर होता है क्योंकि समय का आधार सूर्य है किन्तु काल की प्रक्रिया महाप्रलय में भी बनी रहती है। महाशून्य में किसी स्थूल

वस्तु के न होने से उसके नष्ट होने का प्रश्न ही नहीं होता अतः वहां काल का न होना कहा गया है।

बीज बिरिख ना कमल फल, भंग ना कछू अभंग।
मोहादिक एही सुन्य, बीच सरूप या संग।।४७।।

यह मोह सागर ही वह महाशून्य है जिसमें न तो वृक्ष है और न बीज। न आकाश में दिखने वाला कमल पुष्प या फल है। यहां न तो कोई वस्तु नष्ट होती और न अखण्ड होती है। इसी मोह सागर में अव्याकृत स्वाप्निक रूप में स्वयं को नारायण रूप में देखता है तथा इसी मोह तत्व से जगत् की रचना करता है।

भावार्थ - उपरोक्त चौपाई में दार्शनिक तथ्यों पर प्रकाश डाला गया है। विद्वानों में इस बात पर बहस होती है कि पहले बीज हुआ या वृक्ष। यह संसार आकाश के कमल पुष्प और फल की भांति है जो दिख तो रहा है किन्तु यथार्थतः है नहीं। उपरोक्त पांचो चौपाइयों का सार तत्व यहीं है कि मोह तत्व का स्वरूप अव्यक्त है। उसे किसी भी प्रमाण या तर्क के द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता।

तबक चौदे ख्वाब के, याको पैड़े नींद निदान।
नींद के पार जो खसम, सो ए क्यों कर करे पेहेचान।।४८।।

चौदह लोकों का यह ब्रह्माण्ड स्वाप्निक है। इसका मूल यह निराकार मण्डल है। ऐसी स्थिति में निराकार के परे जो ब्रह्म का स्वरूप है, उसकी पहचान भला संसार के ये प्राणी कैसे कर सकते है?

ए ख्वाबी दम सब नींद लो, दम नींदै के आधार।
जो कदी आगे बल करे, तो गले नींदै में निराकार।।४९।।

हद की इस सृष्टि के सभी जीव निराकार तक ही जा पाते हैं। इनका अस्तित्व ही निराकार (मोहसागर) में प्रकट होने वाले आदि नारायण पर अवलम्बित रहता है। यदि वे अपनी ओर से प्रयास भी करतें है तो नींद स्वरूप निराकार (मोहसागर) में लय हो जाते है।

भावार्थ - गीता के 'नैनं छिन्दन्ति शास्त्राणि नैनम् दहति पावकः' के कथनानुसार जब चैतन्य जीव को किसी भी अस्त्र - शस्त्र से जब काटा नहीं जा सकता और न अग्नि से ही जलाया जा सकता है तो यहां प्रश्न होता है कि वह महाप्रलय में किस प्रकार

निराकार में लय हो जाता है?

इसका उत्तर इस प्रकार दिया जा सकता है - श्वे. उप. के कथनानुसार - 'बालाग्र शत भागस्य शतधा कल्पितस्य च' अर्थात् जीव बाल की नोक के दस हजारवें भाग से भी अधिक सूक्ष्म होता है। ऐसी स्थिति में उसे किसी भी अस्त्र - शस्त्र से काटने का प्रश्न ही नहीं होता। अग्नि तत्व पांच तत्वों के अन्तर्गत है। पंच सूक्ष्म भूत इनसे भी अधिक सूक्ष्म होते है। अहंकार महत्तत्व तथा मोहतत्व क्रमशः अधिक सूक्ष्म होते हैं। जब जीव की इन्द्रियों की उत्पत्ति तन्मात्राओं (सूक्ष्म भूतों) तथा अन्तः करण की उत्पत्ति महत्तत्व से होती है तो अन्तःकरण से भी अधिक सूक्ष्म जीव को जलाने की सामर्थ्य जड़ एवं स्थूल अग्नि तत्व में कहा से आ सकती है?

उपरोक्त चौपाई में जीव का नींद में गलना कहा गया है, लय होना या अस्तित्व विहीन होना नहीं। सूर्य या अग्नि की उष्णता के समक्ष घी, बर्फ और मोम आदि पदार्थ पिघल जाते है तथा द्रव रूप में परिणत हो जाते हैं किन्तु उनका अस्तित्व समाप्त नहीं होता। इसी प्रकार गल जाने का आशय यही लिया जा सकता है कि घी, बर्फ या मोम में उष्णता के समक्ष अपने स्थूल रूप को स्थिर रखने में असमर्थता का अनुभव हुआ और उन्हें द्रव रूप में परिवर्तित होना पड़ा। ठीक, इसी प्रकार जीव के निराकार (नींद) में गलने का भाव यह है कि पूर्णतः संज्ञा शून्य (आत्म बोध से रहित) होकर स्वयं को इस प्रकार भूला देना कि जैसे उसका कोई अस्तित्व ही न हो।

जीव का प्राकट्य आदि नारायण के सांकल्पिक प्रतिबिम्ब से होता है, इसलिये उसका अस्तित्व तब तक बना रहेगा जब तक आदि नारायण का अस्तित्व है। आदि नारायण के द्वारा अपने मूल स्वरूप का बोध होने से पहले उसे कभी भी अपनी अस्तित्व विहीनता का सामना नहीं करना पड़ा था। इस आधार पर हम ऐसा कह सकते है कि जब तक आदि नारायण का अस्तित्व है तब तक जीव को समाप्त करने की शक्ति जड़ निराकार (मोहतत्व) में नहीं है क्योंकि जीव और आदिनारायण दोनो ही समान धर्मी (चैतन्य) हैं। जीव महाप्रलय से पूर्व गल तो सकता है (संज्ञा शून्य हो सकता है), किन्तु समाप्त नहीं हो सकता।

जिनहूं जैसा खोजिया, सब बोले बुध माफक।
मैं देखे सबद सबन के, सो गए जाहेर मुख बक।।५०।।

परब्रह्म के विषय में जिसने जितनी खोज की, उसे उसी रूप में उसने अपनी बुद्धि के द्वारा व्यक्त किया। मैनें सभी पन्थों के धर्म ग्रन्थों को देखा। उन में विद्वानों का परब्रह्म के सम्बन्ध में निरर्थक शब्दजाल ही अधिक दिखायी देता है।

भावार्थ - शैव, वैष्णव, शाक्त, गाणपत्य आदि पौराणिक पन्थों के ग्रन्थों को यदि देखा जाय तो हजारों श्लोंको से युक्त उनकी विशालता तो दिखायी देती है, किन्तु कोई विशेष सार तत्व प्राप्त नहीं होता। परब्रह्म के धाम, स्वरूप एवं लीला के सम्बन्ध मे जहां उनमें मौनावस्था दिखायी देती है, वहीं नवग्रह पूजा, जड़ पूजा, काल्पनिक देवी-देवताओं की कथाओं एंव पशु-बलि आदि प्रपंचों तथा दूसरे मतवादियों के प्रति निन्दा की प्रवृत्ति अधिक दिखायी देती है। इसी तथ्य को इस चौपाई में बकना (निरर्थक बोलना) कहा गया है।

ए पुकार खोजी सुनके, हट रहे पीछे पाए।
पार सुध किन ना परी, सब इतहीं रहे उरझाए।।५१।।

इन महान तत्व ज्ञानियों के द्वारा निराकार को पार न कर पाने की असफलता की बात सुनकर परब्रह्म की खोज करने वाले अन्य मनीषियों ने भी निराकार को पार करने का विचार छोड़ दिया। इससे यह स्पष्ट होता है कि इस संसार में पंचवासनाओं (कबीर, शिव, विष्णु भगवान, शुकदेव तथा सनकादिक) को छोड़कर अन्य किसी को भी अखण्ड धाम की सुधि नहीं हो पायी। सभी क्षर जगत में ही भटकते रह गये।

यामें जो बुजरक हुए, सो सीतल भए इन भांत।
ना सुध छल ना पार की, यों गले सुन्य ले स्वांत।।५२।।

संसार में परब्रह्म की खोज करने वाले जो भी योगी, ऋषि-मुनि हुए, वे निराकार की शक्ति के सामने हतोत्साहित हो गये। उन्हें न तो माया की सुधि हो पायी और न अखण्ड धाम की। इस प्रकार निराकार की प्राप्ति करके ही उन्हें संतोष धारण करना पड़ा।

भावार्थ - 'शीतल होना' एक मुहाविरा है जिसका अर्थ होता है - संघर्ष करने से हार मान लेना। इसी का दूसरा आशय है - शान्त हो जाना।

या बिध तो भई नास्त, सो नास्त जानो जिन।
सार सब्द मैं देख के, लिए सो दृढ़ कर मन।।५३।।

उपरोक्त कथन से तो यही सिद्ध होता है कि सच्चिदानन्द परब्रह्म को पाया ही

नहीं जा सकता। किन्तु ऐसा नहीं मानना चाहिए। मैंने इस संसार के धर्मग्रन्थों के सार तत्व से दृढ़तापूर्वक यही निर्णय किया कि परब्रह्म को अवश्य ही पाया जा सकता है।

भावार्थ - केनोपनिषद् का कथन है कि 'न विद्मो न विजानीमः' अर्थात् परब्रह्म को न तो हम यथार्थ रूप से जानते हैं और न कभी जान सकेंगे। परन्तु यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो इस प्रकार का कथन ज्ञान एवं साधना की निरन्तरता को बनाये रखने और अहंकार की निवृत्ति के लिये किया गया है। उसी केनोपनिषद् में 'विद्यया विन्दते अमृतम्' तथा अथर्ववेद के केन सूक्त १०/२/३० में ब्रह्मपुरी का वर्णन है। यह सूक्त में 'पुरं यो वेद ब्रह्मणों यस्याः पुरूषः उच्यते' कहकर स्पष्ट रूप से ब्रह्म प्राप्ति का निर्देश दिया गया है ऋग्वेद में तो यहाँ तक कह दिया गया है कि उस परमात्मा का यदि तुम्हें साक्षात्कार नहीं हुआ तो मात्र ऋचाओं को पढ़ने से कोई लाभ नहीं है- 'यस्तत् न वेद किम् ऋचा करिश्यति।' यजुर्वेद ने तो एक पग और बढकर यह बात कही है कि उसको जाने बिना मृत्यु के बन्धन से छूटने का अन्य कोई मार्ग ही नहीं है -

तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।। यजु. ३१/१८

जिन जानो पाया नहीं, है पावन हार प्रवान।
सो छिपे इन छल थें, वाकी मिले ना कासों तान।।५४।।

किसी को ऐसा भी नहीं समझ लेना चाहिए कि आज तक उसे किसी ने पाया ही नहीं है। निश्चित रूप से परब्रह्म का साक्षात्कार करने वाले भी हैं किन्तु वे संसार के प्रपंचों से छिपे रहते हैं क्योंकि उनकी राह किसी से मिलती नहीं है।

भावार्थ - इस प्रकरण की चौ. ५२ तक श्री राज जी से श्यामा जी (देवचन्द्र जी) ने प्रत्युत्तर में कहा है। इसके आगे की चौपाइयों में श्री महामति जी के द्वारा सुन्दरसाथ एवं संसार को सम्बोधित किया गया है। अक्षरातीत परब्रह्म का साक्षात्कार मात्र ब्रह्ममुनि ही करते हैं। यह तथ्य चौपाई ५४-५७ में दर्शाया गया है। उपरोक्त चौपाई के चौथे चरण में कथित तान का तात्पर्य गुण, कर्म, स्वभाव एवं परब्रह्म को पाने के मार्ग से सम्बन्धित है।

सो तो प्रेमी छिप रहे, वाको होए गयो सब तुच्छ।
खेले पिया के प्रेम में, और भूल गए सब कुछ।।५५।।

परब्रह्म के सच्चे प्रेमी (ब्रह्ममुनि) तो सांसारिक आडम्बरों से अलग रहते हैं उन्हें

ब्रह्माण्ड का सारा सुख तुच्छ लगता है। अपने प्राणेश्वर के प्रेम में वे इतने डूबे रहते हैं कि वे संसार को प्रायः भूले से रहते है।

सुरत न वाकी छल में, वाही तरफ उजास।
प्रेमै में मगन भए, ताए होए गयो सब नास।।५६।।

उनकी सूरता इस मायावी जगत में नहीं, अपितु अखण्ड धाम में लगी रहती है। वे मात्र अपने आराध्य के प्रेम में सर्वदा मग्न रहते हैं और उनके लिये संसार का अस्तित्व एक प्रकार से मिट ही गया होता है।

प्रेमी तो नेहेचे छिपे, उन मुख बोल्यो न जाए।
सब्द कदी जो निकसे, सो ग्यानी क्यों समझाए।।५७।।

अक्षरातीत परब्रह्म के सच्चे प्रेमी तो निश्चित रूप से छिपे ही रहते हैं। उनके मुख से कभी भी वाद - विवाद की बातें नहीं निकलती। कदाचित् उनके मुख से आध्यात्मिक ज्ञान की अमृत धारा निकल भी जाती है तो इस संसार के ज्ञानीजन उसके वास्तविक आशय को समझने में असमर्थ रहते हैं।

सब्द जो सीधे प्रेम के, सास्त्र तो स्यानप छल।
या विध कोई न समझे, बात पड़ी है बल।।५८।।

प्रेम के शब्द सीधे और सरल होते है किन्तु शास्त्रों में विद्वानो का छल से भरा हुआ बौद्धिक चातुर्य छिपा रहता है। यह गहन रहस्य की बात है कि प्रेमी की बात ज्ञानी के हृदय में उतर नहीं पाती है और ज्ञानी की बात प्रेमी के हृदय को छू नहीं पाती। इस प्रकार दोनों ही एक दूसरे की बातों को समझ नहीं पाते है।

भावार्थ - उपरोक्त चौपाई के दूसरे चरण में शास्त्र. का आशय छः दर्शनों से नहीं अपितु भिन्न - भिन्न मतों के ग्रन्थों से है। छः दर्शनों की रचना तो ऋतम्भरा प्रज्ञा को प्राप्त करने वाले छः ऋषियों ने की है। महाभारत के पश्चात् आधुनिक विद्वानों के द्वारा पक्षपात पूर्ण बुद्धि के द्वारा जो ग्रन्थ बनाये गये हैं, उनमें बौद्धिक चतुराई का छल भरा हुआ है, जिसमें उलझकर कोई भी सत्य मार्ग से भटक सकता है जैसे - योगवशिष्ठ, पंचदशी, तर्कसंग्रह, एवं सिद्धान्त कौमुदी आदि सायण, महीधर, उव्वट आदि के वेद भाष्य तथा समस्त पौराणिक ग्रन्थ मिथ्या सिद्धान्तों से भरे हुए है। ऐसे ग्रन्थों को ही अनार्ष की संज्ञा दी जाती है।

ए जो साधू सास्त्र पुकारहीं, सो तो सुनता है संसार।
पर गुझ किनहूं न पाइया, सोई सबद हैं पार।।५६।।

समस्त संसार साधु - सन्तों तथा शास्त्रों के वचनों का अनुसरण करता है। वस्तुतः परब्रह्म को पाने का रहस्य गुह्य है, जिसे ब्रह्ममुनियों के अतिरिक्त अन्य किसी ने भी नहीं पाया है। यह अलौकिक गुह्य ज्ञान मायावी जगत से परे अखण्ड परमधाम का है।

देखे सारे सास्त्र, सो तो गोरख धंध।
मूल कड़ी पाए बिना, देखीते ही अंध।।६०।।

मैनें सभी शास्त्रों को देखा जिनमें अर्थ एवं सिद्धान्त को लेकर तरह - तरह की उलझनें बनी रहती हैं। तारतम ज्ञान के प्रकाश में जब तक मूल आशय का पता नहीं चलता तब तक इन ग्रन्थों का चिन्तन - मनन करने पर भी व्यक्ति अन्धा ही बना रहता है अर्थात् वास्तविक सत्य से बहुत दूर रहता है।

ऐसा तो कोई ना मिल्या, जो दोनों पार प्रकास।
मगन पिया के प्रेम में, भी स्यानप ग्यान उजास।।६१।।

मुझे आज दिन तक इस संसार में ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं मिला है जो हद का भी ज्ञान रखता हो तथा बेहद एवं परमधाम के भी विषय में जानता हो। प्रियतम के प्रेम में भी मग्न हो तथा बौद्धिक ज्ञान में भी पारंगत हो।

जो कोई ऐसा मिले, सो देवे सब सुध।
माएने गुझ बताए के, कहे वतन की बिध।। ६२।।

यदि कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाय जिसमें उपरोक्त गुण हों तो वह ही सारी सुधि दे सकता है। वह ही धर्मग्रन्थों के गुह्य कथनों को तारतम ज्ञान के प्रकाश में यथार्थ रूप में समझा सकता है और स्वलीला अद्वैत परमधाम की भी पहचान दे सकता है।

सबद सारे वैराट के, बोलत अगम अगम।
कोई न कहे रसूल बिना, जो खुद पें आए हम।।६३।।

इस ब्रह्माण्ड के सभी धर्मग्रन्थों का कथन है कि परब्रह्म मन, वाणी की पहुंच से पूर्णतया परे है। वहां तक जाया ही नहीं जा सकता। मुहम्मद स. अ. व. के अतिरिक्त अन्य किसी ने भी नहीं कहा है कि मैं परब्रह्म से साक्षात् मिलकर आया हूँ।

भावार्थ - वेदों का अवतरण अक्षर ब्रह्म के मन अव्याकृत से हुआ है, जो सर्वप्रथम आदि नारायण के हृदय में प्रकट हुआ। उसमें निराकार को पार करके बेहद (योगमाया) के साक्षात्कार का मार्ग है। इसी मार्ग का अवलम्बन करके अक्षर ब्रह्म की

पंचवासनायें बेहद मण्डल में पहुंची थी। किन्तु इसके रहस्य को कोई विरला ही जानता है। प्रायः सभी मनीषी ज्ञान के शब्द जाल या निराकार की साधनाओं में उलझ जाते है।

'निगमें गम कही ब्रह्म की, सो क्यों समझे ख्वाबी दम' खुलासा का कथन यही सिद्ध करता है। वैदिक उपासना पद्धति द्वारा 'त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरूषः' को प्राप्त करने का कोई विधान नहीं है। सैद्धान्तिक रूप से ब्रह्मसृष्टि के अतिरिक्त जीव या ईश्वरीय सृष्टि को उस अवस्था में पहुंचने की न तो सामर्थ्य है और न स्वीकृति। इसी प्रकार मुहम्मद स. अ. व. के दिये हुए कुर्आन को आधार बनाकर मात्र शरीयत का पालन करने वाले भी निराकार को पार नहीं कर सके। सूफी फकीर भी मलकूत और निराकार से आगे नहीं बढ़ सके। श्री कुल्जुम स्वरूप का अलौकिक ज्ञान ही सारे विश्व को निराकार से परे बेहद एवं परमधाम का साक्षात्कार कराने की सामर्थ्य रखता हैं। मुहम्मद स. अ. व. के अन्दर अक्षर ब्रह्म की वही आत्मा थी जो व्रज एवं रास में परब्रह्म के आवेश से युक्त होकर ब्रह्मात्माओं के साथ लीला कर चुकी थी। अतः अरब में अवतरित होने पर उन्होंने स्पष्ट कहा कि मैं परब्रह्म (अल्लाहतआला) से मिलकर आया हूँ।

न नबिएं जाहेर कह्या, मैं पार से आया रसूल।
खुद की सुध सब ल्याइया, निद्रा न मेरा मूल।।६४।।

मुहम्मद स. अ. व. ने स्पष्ट कहा कि मैं निराकार बेहद के परे परमधाम (में विद्यमान अक्षर धाम) से आया हूं। मेरा घर मोह सागर नही है। मैं परब्रह्म से मिलकर उनकी तथा अपनी वास्तविकता का सारा ज्ञान लेकर आया हूं।

मैं कारज खसम के, ले आया फुरमान।
आखिर इमाम आवसी, तब मैं भी संग सुभान।।६५।।

परब्रह्म ने ब्रह्ममुनियों (मोमिनों) को अपना सन्देश देने के लिये मुझे इस संसार में भेजा है। मैं उस सन्देश को कुर्आन के रूप में लेकर आया हूँ। जब कियामत के समय स्वयं परब्रह्म आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिब्बुजमां के रूप में आयेंगे तब मै भी उनके साथ रहूंगा।

कुर्आन पा. ४ सूरः ३ आयत १४४ ''वा मा मुहम्मदुन् इल्ला रसूलन कद् खलत् मिन् कब्लिहिर्रूसुलु अफइम्मात औ कुतिलन्-कलब्तुम् अला अड़्काबिकुम् व मंय्यन्कलिब अला अकिबैहि फ लंय्यजुर्रल्लाह व जिल्लाहुश्-शाकिरीन'' अर्थात् और

मुहम्मद (सल्ल.) तो सिर्फ पैगम्बर हैं। इनसे पहले और भी बहुत से रसूल हो गुजरे हैं। सो अगर उनकी मौत हो जाय या वे शहीद हो जायें तो क्या तुम लोग उलटे पैरों फिर जाओगे। और जो उल्टे पैरों लौट जायेगा तो अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा। हम शुक्रगुजार हैं। अल्लाह (बड़ा) सवाब देगा।

मैं आया हुकम हाकिम का, पर आवेगा हाकिम।
करसी कजा सबन की, सब संग आखिर हम।।६६।।

मैं परब्रह्म के आदेश का स्वरूप हूं किन्तु कियामत के समय स्वयं परब्रह्म इमाम महदी (श्री प्राणनाथ जी) के स्वरूप में आकर जब सबका न्याय करेंगे, उस समय में भी उनके साथ रहूंगा।

पा. ६ सु. ५ आ. १२ ''व लकद अखजल्लाहु मीसाक बनी इस्राइल व बअसना मिन्हुमुस्नै-अशर नकीबत् व कालल्लाहु इन्नी मअकुम नइन् अकम्तुमुस्सलात व आतैतुमुज्-जकात व आमन्तुम् बि रूसली व अज्जर्तुमूहुम् व अकरज्तुमुल्लाह कर्जन् हसनल्ल अुकफ्फिरन्न अन्कुम् सय्यिआतिकुम् व ल अुद्खिलन्नकुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारू फ मन् कफर बड़द जालिक मिन्कुम् फ कद् जल्ल सवाअस्सबील'' अर्थात् और अल्लाह इस्राईल के बेटों से वचन ले चुका है और हमने उन्हीं में के बारह सरदार मुकर्रर किये। और अल्लाह ने बनी इसराईल से यह भी कहा कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। अगर नमाज कायम रखो और जकात देते रहोगे और मेरे पैगम्बरों को मानोगे और उनकी मदद करोगे अच्छी तरह से अल्लाह को कर्ज देते रहोंगे तो मैं जरूर तुम्हारे गुनाह तुमसे दूर करूँगा और जरूर तुमको ऐसे बातों में दाखिल करूँगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। फिर इसके बाद भी जो तुममें से फिरेगा मो बेशक वह सीधी राह से भटक गया।

ए फुरमान तब बांचसी, इमाम आवसी जब।
लिखियां जो इसारतें, सब जाहेर होसी तब।।६७।।

जब आखरूल इमाम मुहम्मद महदी आयेंगे तो उस समय कुर्आन के गुह्य रहस्य प्रकट होंगे। कुर्आन में जो तथ्य संकेतों में कहे गये हैं वे सभी उस समय स्पष्ट रूप से

उजागर हो जायेंगे।

पा. २३ सु. ३६ आ. ५४/५८ '' फल्यौम ला तुज्लमु नफसुन् शैअव्व ला तुज्जौन इल्ला मा कुन्तुम् तऽमलून्'' (५४) ''सलामुन् कौलम्-मिर्रब्बिर्-रहीमिन्'' (५८) अर्थात् फिर उस दिन किसी आदमी पर जरा सा भी जुल्म (अन्याय) नहीं होगा और तुम लोंगों को उसी का बदला दिये जायेगा जो तुम दुनिया में करते रहें। परवरदिगार मेहेरबान की ओर से उनको सलाम भेजा जायेगा।

पा. २३ सु. ३६ आ. ५१/५२ ''व नुफिख फिस्सूरि फइजा हुम् मिनल-अज्दासी इला रब्बिहिम यन्सिलून्'' (५१) ''कालू यावैलना मम्बअसना मिम्-मर्कदिना हाजा मा वअदर्रह्मानु व सकदल्-मर्सलून'' (५२) अर्थात् और फिर दोबारा जब नरसिंहा फूंका जायेंगा तो कब्रों से एकदम निकल-निकलकर अपने परवरदिगार की और दौड़ पड़ेगें।(५१) कहेंगे कि हम हाय, हमारा अभाग्य! इसने हमारी नींद की जगहों (कब्रों) में से हमको उठा दिया? यही तो यह कियामत का वादा है जो रहमान ने किया था और पैगम्बर सच कहते थे (५२)।

काजी कजा कर के, देसी परदा उड़ाए।
परदा उड़े सब उड़सी, लेसी कयामत उठाए।।६८।।

परब्रह्म श्री प्राणनाथ जी (इमाम महदी) के स्वरूप में प्रकट होंगे तथा अज्ञानता के अन्धकार को दूर कर देंगे। इसके पश्चात् सारे ब्रह्माण्ड का प्रलय हो जायेगा और सभी जीवों को योगमाया के ब्रह्माण्ड में अखण्ड कर दिया जायेगा।

पा. २३ सू. ३७ आय. ४३-४८ ''फी जन्नातिन्नइम'' (४३) व इन्दहुम् कासिरातुत्तर्फि इनुन् (४८) यानि वे नेमत के बागों में और उनके पास नीची निगाह रखने वाली बड़ी-बड़ी आँखे वाली औरतें होंगी।

पा. २३ सू. ३७ आ. २०-२१ ''व कालू या बैलना हाजा यौमुद्दीनि'' (२०) हाजा यौमुल्-फस्लिल्लजी कुन्तुम् बिह तुकज्जिबून'' (२१) अर्थात् और बोल उठेंगे कि हाय! हमारा अहोभाग्य, यह तो न्याय का दिन आ पहुँचा। फरमाया जायेगा कि हाँ, यही फैसले का दिन है, जिसको तुम झुठलाया करते थे।

खसम सुध सब देवही, गुझ बतावे कुरान।
बातें कहे वतन की, पैगंमर प्रवान।।६६।।

परब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथ जी (इमाम महदी) कुर्आन के गुह्य रहस्यों को प्रकट करके सबको यथार्थ सत्य की पहचान करायेंगे। वे मुहम्मद स. अ. व. के द्वारा परमधाम के सम्बन्ध में संकेतों में कही गयी बातों को विस्तृत रूप में दर्शायेंगे।

ए सबद तो जाहेर कहे, पर आया न किनो आकीन।
तो लगे सब छल को, हिंदू या मुसलमीन।।७०।।

श्री जी (श्री प्राणनाथ जी) अखण्ड धाम की बातों को प्रत्यक्ष रूप से कह रहें है किन्तु उनके कथनों पर संसार के हिन्दू और मुसलमान दोनों ही विश्वास नहीं कर पा रहे हैं, जिसके परिणाम स्वरूप दोनों ही माया में लिप्त हो रहे हैं।

ए सबद मैं दृढ़ किए, पिया ना करें निरास।
रूह मेरी यों कहे, होसी दुलहेसों विलास।।७१।।

श्री महामति जी की आत्मा कहती हैं कि मैंने इस बात में दृढ़ता कर ली है कि मेरे प्राणेश्वर अक्षरातीत मुझे निराश नहीं करेंगे। मेरी अन्तरात्मा से यह पुकार आ रही है कि अवश्य ही प्रियतम से मिलने का मुझे आनन्द मिलेगा।

नबी सबद मोहे मद चढ़्यो, बढ़्यो बल महामत।
अब एक खिन ना रहे सकू, उड़ गई कहुंए स्वांत।।७२।।

श्री महामति जी कहते है कि मुहम्मद स. अ. व. के द्वारा कुर्आन में कहे हुए इन कथनों से कि कियामत के समय स्वयं परब्रह्म (अल्लाह तआला) इमाम महदी (श्री प्राणनाथ जी) के स्वरूप में आयेंगे, मुझे बहुत ही आनन्द हुआ है। उनसे मिलने के लिये मेरा आत्मिक बल भी बहुत अधिक बढ़ गया है। अब मेरी आत्मा उनसे मिले बिना एक क्षण के लिये भी रह नहीं सकती। उन से मिलने की चाहत में तो मेरे हृदय की शान्ति ही चली गयी है अर्थात् मेरे अन्दर बहुत ही व्याकुलता हो गयी है।

।।प्रकरण।।५।।चौपाई।।१४६।।

सनंध विरह तामस की

अपने प्राणवल्लभ की सानिध्यता को प्राप्त करने के लिये जल विहीन मछली की भांति इस प्रकार तड़पना कि मेरे प्राणेश्वर अभी आ गये, विरह कहलाता है। विरह की ९ अवस्थायें होती है। १. स्वयं के प्रति अवहेलना २. विषाद ३. दीनता ४. दुःख ५. स्मृति ६. चिन्ता ७. उन्माद ८. मोह और ९. प्रियतम को देखने की तीव्र उत्सुकता। सात्विक विरह प्रथम अवस्था है। इस अवस्था में आंसू भी बहते है तथा हृदय विरह की पीड़ा से चीत्कार कर रहा होता है, किन्तु बना रहता है।

इसके विपरीत तामस विरह में न तो आंसू बहते हैं और न रोना आता है। मन में केवल एक ही बात बैठ जाती है कि यदि इसी क्षण मेरे प्रियतम सम्मुख नहीं आये तो मेरा यह तन छूट जायेगा। इन दोनों की मध्यम अवस्था को राजस विरह कहते है। हब्शे में श्री मिहिरराज जी (श्री इन्द्रावती जी के जीव) का हृदय विरह की इन तीनों अवस्थाओं से होकर गुजरता है। विरह में तड़पते तड़पते छः मास व्यतीत हो जाते है। परिणाम स्वरूप तामस का विरह अपने प्रचण्ड रूप में प्रकट हो जाता है। स्थिति ऐसी हो जाती है कि–

जब आह भी सूकी अंग में, स्वांस भी छोड़यो संग ।
तब तुम परदा टाल के, दियो मोहे अपनो अंग ।। क. हि. ८/८

वस्तुतः यही तामस का विरह है। इसे श्री लालदास जी एवं श्री गोवर्धन दास जी के विवाद के कारण श्री प्राणनाथ जी की फटकार के घटनाक्रम के रूप में नहीं लेना चाहिए। उस समय श्री मिहिरराज जी ने कोई विरह नहीं किया, अपितु गोवर्धन जी को सूरत तथा मुकुन्द दास जी को उदयपुर भेजकर श्री जी खिन्न मन से अनूप शहर चल पड़े थे। फटकार की घटना के इतने अल्प समय में तामस के विरह में डूबना सम्भव नहीं लगता। यह प्रसंग बी. सा. में इस प्रकार वर्णित है –

मोह आगे बिजलीय के, चमकत लेहेरां दई।
तब श्री राज के मुख से, ए बातां पुकार कही।।
कारखाना कागद का, ए सौप्यां लालदास।
उदयपुर को जावहीं, भीम मुकुन्द मोमिन खास।।
बुध दई भीम को, गोवर्धन को सूरत।
मुकुन्द भीम उदयपुर, हम जात अनूपशहर इत।। बी. सा. ३९/१६,१७,२०

जबकि क. हि. ५/२,३, एवं ११ का कथन है -

सब तन विरहे खाइया, गल गया लोहूं मांस।
न आवे अंदर बाहेर, या विध सूकत स्वांस।।
हाड़ हुए सब लकड़ी, सिर श्रीफल अग्नि।
मांस मीज लोहूं रंगा, या विध होत हवन।।
आठों जाम विरहनी, स्वांस लिये हूक हूक।
पत्थर काले ढिग हुते, सो भी हुए टूक टूक।।

उपरोक्त चौपाईयां यही दर्शाती है कि तामस के विरह में डूबने का प्रसंग हब्शे का ही है।

मैं चाहत न स्वांत इन भांत,
अजू आउध अंग चले, इन नैनों दोनों नेक न आवे नीर।
दरद देहा जरद गरद रद करे, मैं क्यों धरूं धीर अस्थिर सरीर।।१।।

मेहमत साहिब्बुज्जमां स्वरूप श्री महामति जी की आत्मा कहती है - मेरे प्राणेश्वर अक्षरातीत! आपके विरह में तड़पते - तड़पते लगभग ६ मास व्यतीत हो गये हैं। समय का पक्षी उड़ता रहे और आपका मधुर दर्शन भी न हो, यह मुझे किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं है, अब मैं इसी प्रकार शान्त होकर बैठी नहीं रह सकती। आपको पाने के लिये मेरे हृदय रूपी शस्त्रागार में श्रद्धा, समर्पण एवं विरह के सभी आयुध पूर्ण रूप से सज्जित हैं। आपके विरह की अग्नि ने मेरे इन नेत्रों से बहने वाले आसुंओ की धारा को इस प्रकार सुखा दिया है कि अब तो एक बूंद भी आंसू नहीं टपकता। विरह की पीड़ा ने मेरे शरीर को धूल के समान इतना निर्बल कर दिया है कि वह पीला पड़ गया है। यह शरीर तो नश्वर है ही। अब मुझसे और अधिक धैर्य नहीं रखा जा सकता। अब तो केवल एक ही मार्ग बचा है कि आप को अभी, इसी क्षण मेरे सम्मुख आना ही होगा।

कठिन निपट विकट घाटी प्रेम की, त्रबंक बंको सूरों किने न अगमाए।
धार तरवार पर सचर सिनगार कर, सामी अंग सांगा रोम रोम भराए।।२।।

प्रेम की प्राप्ति का पथ बहुत ही कठिन और भयावह मार्गों से होकर गुजरता है।

इस मार्ग पर ज्ञान, कर्म एवं उपासना के बड़ें - बड़ें वीर भी पूरी तरह से नहीं चल पाते है। मेरी आत्मा! अब तूं तलवार की तीखी धार के समान कष्टकारी इस मार्ग पर चलने के लिये पूर्ण समर्पण का श्रृंगार कर ले। तेरे शरीर के रोम - रोम में विरह के भालों की चुभन पीड़ा दे रही है।

भावार्थ - पर्वतों के नीचे की समतल भूमि घाटी कहलाती है। इस पर मनोरम बस्ती बसी होती है किन्तु वहां तक पहुंचने का मार्ग दुर्गम होता है। इसी प्रकार त्रिगुणातीत प्रेम को पाने के लिये रज और तम के कष्टदायी मार्गो को पार करना पड़ता है। प्रेम-पथ को तलवार की धार के समान तीखा कहा गया है क्योंकि जिस प्रकार तलवार की धार पर पैर रखते ही वह कट जाता है उसी प्रकार प्रेम पथ में पल-पल भयानक कष्टों का सामना करना पड़ता है।

किन्तु, यदि हमने सर्वस्व समर्पण का मार्ग अपना लिया तो कष्टों से भय नहीं लगेगा। भय की उत्पत्ति तो अहंकार से होती है। प्रियतम के प्रेम में जब सारा अहंकार समाप्त हो जाता है तो संसार का अस्तित्व भी नहीं रह जाता है। ऐसी स्थिति में सुख और दुःख से परे की आनन्दमयी अवस्था प्राप्त हो जाती है।

सागर नीर खारे लेहेरें मार मारें फिरे, बेटों बीच बेसुध पछाड़ खावे।
खेले मच्छ मिले गले ले उछाले, संधों संध बंधे अन्धों यों जो भावे।।३।।

इस भवसागर का जल अत्यन्त खारा है अर्थात् तत्वहीन है। इसका किसी भी प्रयोजन (प्रेम, शान्ति एवं आनन्द) में उपभोग नहीं हो सकता। जीव इस संसार सागर की मोह रूपी भयानक लहरो की चोट से इतना आहत हो जाता है कि वह टापुओं के बीच भिन्न - भिन्न योनियों के शरीरों में मूर्च्छित होकर गिर जाता हैं। इस मायावी सागर में काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद एवं अहंकार रूपी बड़े - बड़े मगर मच्छ क्रीड़ा करते है। जो जीव के शरीर का मांस खाने के लिये उसका गला पकड़ कर उछालते रहते हैं (विकार घेरे रहते हैं)। उसके शरीर के अंगों की प्रत्येक सन्धि (जीव की प्रत्येक अवस्था) कर्म फल की रस्सियों से बंधी होती है। ज्ञान चक्षु न होने से वह अन्धा हो गया होता है। ऐसी

अवस्था में तो एकमात्र प्रियतम परब्रह्म की अनन्य कृपा का ही सहारा होता है, कि अब उनकी जो इच्छा हो, वही करें।

दाहो दसे दसो दिस सब धखे, लाल झाला चले इंड न झलाए।
फोर आसमान फिरे सिर सिखरों, ए फलंग उलंघ संग खसम मिलाए।।४।।

मेरी आत्मा! दशो दिशाओं में तृष्णा की भयंकर ज्वालायें धधक रही हैं जिसमें सभी प्राणी जल रहे हैं। ब्रह्माण्ड में उसकी लाल लपटें इतनी अधिक उठ रही है कि वे पकड़ में नहीं आ रही है। स्वर्ग-बैकुण्ठ आदि लोकों से होती हुई तूं निराकार मण्डल को पार कर और इस क्षर ब्रह्माण्ड से शीघ्रतापूर्वक (छलांग लगाकर) परे हो जा। ऐसा करके ही तूं अपने प्राणवल्लभ अक्षरातीत से मिलन कर सकेगी।

घाट अवघाट सिलपाट अति सलवली, तहां हाथ न टिके पपील पाए।
वाओ वाए बढ़े आग फैलाए चढ़े, जले पर अनल ना चले उड़ाए।।५।।

इस भवसागर के किनारे ज्ञान रूपी पत्थरों के बड़े-बड़े घाट बने हुए है जिन पर संशय की काई के उग जाने से इतनी अधिक चिकनाहट हो गयी है कि उस पर चींटी के भी पैर (हाथ) टिक नहीं पा रहे हैं। ऐसी अवस्था में उस पर चल पाना तो बहुत ही कठिन है। आलस्य और प्रमाद रूपी हवा के झोंकों से अग्नि की लपटें अशान्त और अधिक तेज होती जा रही हैं। जिसके परिणाम स्वरूप आत्मा रूपी पक्षी के दोनों पंख अटूट विश्वास तथा प्रेम (ईमान एवं इश्क) जल जाते है। फलतः परमधाम की ओर उड़ान भरना असम्भव सा हो जाता है।

पेहेन पाखर गज घंट बजाए चल, पैठ सकोड़ सुई नाके समाए।
डार आकार संभार जिन ओसरे, दौड़ चढ़ पहाड़ सिर झांप खाए।।६।।

जिस प्रकार युद्ध - क्षेत्र में हाथी पर सवार योद्धा उस पर लोहे के तारों से बने हुए जाल का आवरण डाल देता है तथा उसके दोनों ओर बड़े-बड़े घण्टे लगा देता है, उसी प्रकार मेरी आत्मा! तू भी माया के साथ होने वाले इस युद्ध में अपने ऊपर धैर्य का लौह-वस्त्र डाल तथा सहनशीलता के घण्टे धारण कर ले। सुई में धागा डालते समय जिस प्रकार अपने मन को एकाग्र कर लिया जाता है, उसी प्रकार तूं भी सारे संसार से अपनी चित्त

वृत्तियों को हटाकर एकमात्र युगल स्वरूप में केन्द्रित कर दे। अब तू इस बात को अच्छी तरह से याद रख कि अपने प्राणवल्लभ को पाने के लिये अपने शरीर को न्योछावर करने में जरा भी पीछे नहीं हटना है। जिस प्रकार अपने आराध्य को पाने की कामना से दौड़ते हुये पहाड़ पर चढकर छलांग लगायी जाती है, उसी प्रकार तूं भी आत्म समर्पण रूपी पहाड़ पर चढ़कर प्रेम की छलांग लगा जा।

बहुत बंध फंद धंध अजूं कई बीच में, सो देखे अलेखे मुख भाख न आवे।
निराकार सुन्य पार के पार पिउ वतन, इत हुकम हाकिम बिना कौन आवे।।७।।

मैंने इस बात का बहुत गहराई से अनुभव किया है कि मेरे द्वारा प्रियतम के मुधर दर्शन रूप इस महान कार्य में माया के इतने बड़े - बड़े बन्धन और उलझनें हैं कि उनका वर्णन इस मुख से नहीं हो सकता। निराकार और बेहद के परे प्रियतम अक्षरातीत का वह लीला धाम, जहां उनकी इच्छा (आदेश) के बिना भला किसी की अर्न्तदृष्टि पहुंच ही कैसे सकती है, कदापि नहीं?

मन तन वचन लगे तिन उतपन, आस पिया पास बांध्यो विस्वास।
कहे महामती इन भांत तो रंग रती, दई पियाऐं अग्या जाग करूं विलास।।८।।

श्री महामति जी की आत्मा कहती है कि अब मैं अपने तन, मन एवं वाणी से अपने प्राणवल्लभ को पाने में तत्पर हो गयी हूं। मुझे इस बात की पूर्ण आशा है और विश्वास भी है कि अपने प्राणेश्वर से मेरा मिलन अवश्य होगा। इस प्रकर एकनिष्ठ प्रेम की स्वर्णिम राह पर चलकर प्रियतम के प्रेम और आनन्द का रस मुझे मिलना ही है। मुझे तो अब प्रियतम का आदेश भी प्राप्त हो चुका है कि मैं जागृत होकर उनके आनन्द सागर में विहार करूं।

।।प्रकरण।।६।।चौपाई।।१५७।।

सनंध विरह इस्क वृध की

तलफे तारूनी रे, दुलही को दिल दे।
सनमंध मूल जानके , सेज सुरंगी पर ले।।१।।

श्री महामति जी की आत्मा कहती है कि मेरे प्राणेश्वर! आप को अपना हृदय सौंपकर आपके प्रेम भरे दर्शन के लिये मैं तड़प रही हूँ। परमधाम के मूल सम्बन्ध से अपने हृदय की सुन्दर शय्या पर आपके विराजमान होने की मैं प्रतीक्षा कर रही हूँ।

विशेष- उपरोक्त चौपाई में 'दुलही' के स्थान पर यदि 'दुल्हे' हो तो अधिक उपयुक्त होगा, क्योंकि तारूणी (तरूणी) और दुल्हिन शब्द एकार्थवाची हैं। हृदय की वह शय्या है, जिस पर प्रियतम अपनी प्रियतमा को प्रेम का उपहार देता है।

सब तन विरहे खाइया, गल गया लोहू मांस।
न आवे अंदर बाहेर, या विध सूकत स्वांस।।२।।

आपके विरह ने मेरे इस सम्पूर्ण शरीर को ही जर्जर कर दिया है। विरह की अग्नि ने मेरे रक्त एवं मांस को सुखा दिया है। श्वांस की भी ऐसी अवस्था हो गयी है कि न तो वह सरलता पूर्वक बाहर से अंदर आ रही है और न अन्दर से बाहर निकल पा रही है।

हाड हुए सब लकड़ी, सिर श्रीफल विरह अगिन।
मांस मीज लोहू रंगा, या विध होत हवन।।३।।

विरह की अग्नि ने मेरी अस्थिओं को सुखाकर लकड़ी के समान कर दिया है। मेरा सिर भी अब सूखे नारियल की भांति दृष्टिगोचर हो रहा है। विरह की अग्नि में मेरे शरीर का मांस, मज्जा और नाड़ियों (नसों) में बहता हुआ रक्त यज्ञ की आहुति के समान जल रहा है।

रोम रोम सूली सुगम, खंड खंड खांडा धार।
पूछ पिया दुख तिनको, जो तेरी विरहिन नार।।४।।

मेरे प्राणेश्वर! आपके विरह में ऐसा लग रहा है कि जैसे मेरे शरीर के रोम-रोम मे बर्छियां चुभ रही हैं तथा तलवार से मेरे शरीर के टुकड़े-टुकड़े किये जा रहे हैं। आप तो मेरे सर्वस्व हैं। कृपा करके इतना तो पूछ लीजिए कि आपके विरह में मुझ अर्धांगिनी की क्या स्थिति है?

ए दरद जाने सोई, जिन लगे कलेजे घाव।
ना दारू इन दरद का,फेर फेर करे फैलाव।।५।।

विरह की मेरी पीड़ा का अनुभव मात्र उसी को हो सकता है जिसके हृदय में स्वयं विरह की चोट लगी हो। विरह की इस पीड़ा को समाप्त करने की कोई दवा नहीं होती। यह तो नित्य-निरन्तर बढ़ती ही रहती है।

ए दरद तेरा कठिन, भूखन लगे ज्यों दाग।
हेम हीरा सेज पसमी, अंग लगावे आग।।६।।

आप के विरह की पीड़ा असह्य है। इस अवस्था में सुन्दर आभूषण भी शरीर को जला देने वाले प्रतीत होते हैं तथा सोने और हीरे से जड़ी हुई मखमली शय्या भी स्पर्श मात्र से शरीर को अग्नि के समान जला देने वाली लगती है।

विरहिन होवे पिउ की, वाको कोई ना उपाए।
अंग अपने वैरी हुए, सब तन लियो है खाए।।७।।

जिसे अपने प्रियतम के विरह में तड़पने का रोग लग जाता है, उसे उसकी पीड़ा से मुक्त होने का कोई उपाय नहीं सूझता है। उसे अपने ही शरीर के अंग शत्रु के समान कष्टकारी प्रतीत होते हैं। वस्तुतः उसके शरीर को विरह ने निगल लिया होता है।

ए लछन तेरे दरद के, ताए गृह आँगन न सुहाए।
रतन जड़ित जो मंदिर, सो उठ उठ खाने धाए।।८।।

प्राणवल्लभ! आपके विरह की पीड़ा से तड़पने का यही लक्षण है कि अपना घर-आंगन तनिक भी अच्छा ही नहीं लगता। हीरे-मोतियों से बना हुआ अपना निवास भी श्मशान की तरह भयावह लगता है (खाने को दौड़ता है।)

भावार्थ- 'खाने को दौड़ना' एक मुहावरा है, जिसका अर्थ होता है-'बहुत बुरा लगना'।

ना बैठ सके विरहनी, सोए सके ना रोए।
राजप्रथी पाँउ दाब के, निकसी या विध होए।।९।।

प्रियतम के विरह में तड़पने वाली आत्मा न तो शान्ति से बैठ पाती है, न सो सकती है और न खुल कर रो ही सकती है। उसकी ऐसी अवस्था हो जाती है कि वह सम्पूर्ण पृथ्वी के राज्य को भी ठोकर मार कर एकान्तवास के लिये निकल सकती है।

विरहा ना देवे बैठने, उठने भी ना दे।
लोट पोट भी ना कर सके, हूक हूक स्वांस ले।।१०।।

प्रियतम का विरह न तो बैठने देता है और न उठने देता है। इस अवस्था में तो जी भर कर (लोट-पोट कर) रोना भी सम्भव नहीं हो पाता। केवल आहें भरने के अतिरिक्त कोई भी चारा नहीं रह जाता।

आठों जाम विरहनी, स्वांस लिए हूक हूक।
पत्थर काले ढिग हुते, सो भी हुए टूक टूक।।११।।

मेरे प्राण प्रियतम! जब मैं छः मास तक आठों प्रहर (दिन-रात) आपके विरह में गर्म-गर्म सांसे लेती रही अर्थात् हाय प्रियतम! हाय प्रियतम! की आहें भरती रही तो आपने प्रत्यक्ष दर्शन दिया। यह दृश्य देखकर जो मेरे साथ बड़े भाई श्यामल जी थे,वे भी मेरे प्रति समर्पित हो गये।

भावार्थ- श्यामल जी को काला पत्थर इसलिये कहा गया है, क्योंकि वे मिहिरराज जी के प्रति रूखा व्यवहार करते थे, तथा उनके स्वरूप के सम्बन्ध में भी उन्हें कोई पहचान नहीं थी। उनमें परमधाम का अंकूर भी नहीं था।

एह विध मोहे तुम दई, अपनी अंगना जान।
परदा बीच टालने, ताथें विरहा परवान।।१२।।

हे धाम धनी! इस प्रकार मेरे और आपके मध्य में माया का जो आवरण (पर्दा) था, उसे हटाने के लिये आपने अपनी अर्धांगिनी जानकर मुझे विरह के रस में डुबोया और मेरे धाम हृदय में अपना स्वरूप दिया अर्थात् विराजमान हो गये।

।।प्रकरण।।७।।चौपाई।।१६९।।

इस प्रकरण में विरह पर मनोरम प्रकाश डाला गया है-

विरहा गतरे जाने सोई, जो मिल के बिछुरी होए, मेरे दुलहा,
ज्यों मीन बिछुरी जलथें, या गत जाने सोए, मेरे दुलहा।
विरहनी विलखे तलफे तारूनी, तारूनी तलफे कलपे कामनी।।१।।

श्री महामति जी की आत्मा कहती है- मेरे प्राणेश! विरह की पीड़ा का अनुभव मात्र उसे ही हो सकता है जो स्वयं प्रियतम से मिलने के पश्चात् बिछुड़ गयी हो। मछली का जीवन जल है। एकमात्र उसी को पता होता है कि उसे जल से अलग होने के पश्चात् जीवित रहने के लिये कितना तड़पना पड़ता है? मेरे आराध्य! मैं आपकी अर्धांगिनी हूं। आपके वियोग में मैं विलख रही हूँ, तड़प रही हूँ तथा दुःख के आंसू बहाते हुए आर्त

स्वरों में रो रही हूँ।

बिछरो तेरो वल्लभा, सो क्यों सहे सुहागिन।
तुम बिना पिंड ब्रह्मांड, हो गई सब अगिन।।२।।

मेरे प्राणवल्लभ! मैं आपकी अंगना हूँ, सुहागिन हूँ। भला आपके वियोग को मैं कैसे सहन कर सकती हूँ? आपके बिना मेरा शरीर तथा समस्त संसार अग्नि की लपटों में जलता हुआ सा दिखायी दे रहा है।

विरहा जाने विरहनी, वाके आग ना अंदर समाए।
सो झालां बाहेर पड़ी, तिन दियो वैराट लगाए।।३।।

विरह की पीड़ा को मात्र विरहिनी ही जानती है। उसके अन्दर विरह की इतनी प्रचण्ड ज्वाला धधक रही होती है कि वह उसके शरीर में रह नहीं पाती। यदि उसकी एक लपट भी बाहर आ जाये तो उससे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में आग लग जाती है।

भावार्थ – 'सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में आग लग जाने' का कथन आलंकारिक है। इसका आशय यह है कि विरहिनी को सारा संसार सूना, रसहीन और निरर्थक लगता है। उसे ऐसा लगता है कि अब एक पल के लिये भी वह अपने प्रियतम के बिना रह नहीं पायेगी। केवल प्रियतम की याद में डूबे रहने से उसे संसार का अस्तित्व नगण्य सा लगता है। इसे ही ब्रह्माण्ड में आग लगना कहते हैं।

विरहा ना छूटे वल्लभा, जो पड़े विघन अनेक।
पिंड ना देखों ब्रह्मांड, देखों दुलहा अपनो एक।।४।।

मेरे प्राणप्रियतम! भले ही मेरे समक्ष माया के बहुत से लुभावने सुख क्यों न आयें, किन्तु वे नाममात्र भी आपके विरह से मुझे डिगा नहीं सकते (विचलित नहीं कर सकते)। मैं तो केवल आपको ही देख रही हूँ। न तो अब मुझे अपना शरीर दिखायी दे रहा है और न यह स्वप्नवत् संसार।

विरहनी विरहा बीच में, कियो सो अपनों घर।
चौदे तबक की साहेबी, सो वारूं तेरे विरहा पर।।५।।

मैंने तो विरह के सागर में ही अपना निवास बना लिया है। मेरे सर्वस्व! यदि आपके विरह के बदले मुझे चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड का भी स्वामित्व मिले, तो भी मैं उसे छोड़ने के लिये सर्वदा तत्पर हूँ।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में उन सुन्दरसाथ के लिये एक बहुत बड़ी सीख दी गयी है जो धाम धनी की चितवनि करने से बचने के लिये छोटे-छोटे कामों में व्यस्त होने का बहाना बनाया करते हैं।

आंधी आई विरह की, तिन दियो ब्रह्मांड उड़ाए।
विरहिन गिरी सो उठ ना सकी, मूल अंकूर रही भराए।।६।।

मेरे हृदय में प्रियतम के विरह की ऐसी आंधी आयी कि उसने मेरे हृदय में विद्यमान इस संसार के अस्तित्व को ही समाप्त कर दिया। विरह में मैं इतनी डूब गयी कि बेसुध हो गयी। मुझमें पुनः उठने (पूर्व स्थिति में आने) की सामर्थ्य ही नहीं रही। केवल परमधाम के मूल सम्बन्ध ने मेरे अन्दर यह आशा बनाए रखी कि प्रियतम अवश्य मिलेंगे। इसी कारण मैं देह त्याग से बच गयी।

विरहा सागर होए रह्या, बीच मीन विरहनी नार।
दौड़त हों निसवासर, कहूं बेट ना पाऊं पार।।७।।

मेरे श्री राज! आपका विरह एक अथाह सागर है, जिसमें मैं एक मछली की भांति तड़प रही हूँ। मैं दिन-रात तैर रही हूँ किन्तु इस अथाह सागर में न तो मुझे कहीं कोई ओर-छोर या किनारा दिखायी दे रहा है और न कोई टापू (द्वीप) ही।

।।प्रकरण।।८।।चौपाई।।१७६।

राग सोख मलार

इस प्रकरण में परमधाम के प्रेम (इश्क) का वर्णन किया गया है। प्रेम और इश्क को अलग-अलग मानने की भ्रान्ति चल पड़ी है। वस्तुतः इन में केवल भाषा भेद है। परिक्रमा ग्रन्थ के कथन 'याके प्रेमैं के वस्तर, याके प्रेमैं के भूखन', 'प्रेम धनी को आउध, प्रेम बसे पिया के चित्त' आदि के कथनों से स्पष्ट है कि प्रेम को केवल योगमाया तक ही सीमित नहीं किया जा सकता, बल्कि धाम धनी के हृदय में भी इसका विद्यमान होना मानना पड़ेगा।

इस्क बड़ा रे सबन में, ना कोई इस्क समान।
एक तेरे इस्क बिना, उड़ गई सब जहान।।१।।

श्री महामति जी की आत्मा कहती है- निःसन्देह परमधाम का ज्ञान एवं धनी के लिये विरह का होना अनमोल सम्पदायें हैं, किन्तु प्रेम की महिमा इन सबसे बड़ी हैं। प्रेम के समान कुछ भी नहीं है। यदि इस संसार में आने के पश्चात् आपका प्रेम नहीं मिलता

है तो मेरे लिये इस संसार का कोई अस्तित्व ही नहीं है अर्थात इस ससांर में मेरा रहना निरर्थक है।

चौदे तबक हिसाब में, हिसाब निरंजन सुंन।
न्यारा इस्क हिसाब थें, जिन देख्या पिउ वतन।।२।।

मेरे सर्वस्व! चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड की माप की जा सकती है। अनन्त कहे जाने वाले निराकार मण्डल को भी मापा जा सकता है, किन्तु जिस प्रेम से परमधाम को प्रत्यक्ष देखा जाता है, उस प्रेम को मापा जाना किसी भी स्थिति में सम्भव नहीं हैं।

लोक अलोक हिसाब में, हिसाब जो हद बेहद।
न्यारा इस्क जो पिउ का, जिन किया आद लों रद।।३।।

पृथ्वी, सूर्य आदि सभी स्थूल लोकों एवं असीम सूक्ष्म आकाश सहित इस अनंत सृष्टि (हद) को नापा जा सकता है, सीमातीत कहे जाने वाले बेहद मण्डल की भी माप की जा सकती है, किन्तु मेरे प्राणेश! आपका प्रेम तो इन सबसे न्यारा ही है क्योंकि इसके हृदय में विद्यमान हो जाने पर अब तक की सारी गणनायें निरर्थक लगती हैं।

भावार्थ- मानवीय बुद्धि के लिये आकाश या निराकार का मण्डल अनन्त है किन्तु ईश्वरीय सृष्टि के लिये नहीं। इसी प्रकार ईश्वरीय सृष्टि भी बेहद से परे की कोई बात नहीं जानती। ब्रह्मसृष्टि बेहद से परे परमधाम की तो बात जानती है किन्तु प्रेम (इश्क) की पूर्ण पहचान उन्हें अब तक नहीं थी।

एक अनेक हिसाब में, और निराकार निरगुन।
न्यारा इस्क हिसाब थें, जो कछू ना देखे तुम बिन।।४।।

आदि नारायण एवं उनके संकल्प 'एकोऽहम् बहुस्याम्' से उत्पन्न होने वाली जीव सृष्टि तथा निराकार-निर्गुण को भी सीमाबद्ध किया जा सकता है किन्तु आपका प्रेम सीमाबद्ध गणना से परे है। जब वह हृदय में आ जाता है, तो आपके अतिरिक्त अन्य कोई भी नहीं दिखायी देता है।

और इस्क कोई जिन कथो, इस्कें ना पोहोंच्या कोए।
इस्क तहां जाए पोहोंचिया, जहां सुन्य सब्द ना होए।।५।।

इस संसार का कोई भी व्यक्ति प्रेम (इश्क) की व्याख्या करने का प्रयास न करे, क्योंकि आज दिन तक इस ब्रह्माण्ड के किसी भी व्यक्ति ने प्रेम के वास्तविक स्वरूप को

जाना ही नहीं है। प्रेम का यथार्थ स्वरूप उस स्वलीला अद्वैत परमधाम में हैं जहाँ न तो जड़ शून्य है और न नश्वर जगत के शब्द हैं।

नाहीं कथनी इस्क की, और कोई कथियो जिन।
इस्क तो आगे चल गया, सब्द समाना सुंन।।६।।

प्रेम (इश्क) को शब्दों के माध्यम से व्यक्त नहीं किया जा सकता है। इस सृष्टि के किसी भी मनीषी को इश्क (प्रेम) की व्याख्या करने का अनुचित प्रयास नहीं करना चाहिए। क्योंकि किसी के भी द्वारा कहे गये शब्द शून्य में ही लीन हो जाते हैं जबकि प्रेम की गति तो शून्य से परे परमधाम में रहती है।

सब्द जो सूकया अंग में, हले नहीं हाथ पाए।
इस्क बेसुध न करे, रही अंदर बिलखाए।।७।।

मेरे प्राणवल्लभ! आपके प्रेम में मेरी ऐसी अवस्था हो गयी है कि मेरे हृदय से निकलने वाले शब्द हलकों (होंठों) तक आते-आते सूखे जा रहे हैं (समाप्त हो जा रहे हैं)। मेरे हाथ-पैर भी हिलने-डुलने की स्थिति में नहीं रहते। आपके प्रेम में बेहोशी जैसी बेसुधि तो नहीं आती किन्तु आन्तरिक रूप से बिलखना पड़ता है।

भावार्थ- शब्द की उत्पत्ति मूलाधार चक्र में होती है, उसे 'परा वाणी' कहते हैं। हृदय में आकर वही शब्द 'पश्यन्ती' कहा जाता हैं। कण्ठ में उसे 'मध्यमा' तथा मुख से निकलने पर 'बैखरी' वाणी कहा जाता है। विरह को कुछ अंशों में व्यक्त किया भी जा सकता है किन्तु प्रेम को तो नाममात्र भी नहीं, क्योंकि वह शब्दातीत है। यही कारण है कि उपरोक्त चौपाई के प्रथम चरण में प्रेम के शब्दों को होठों में सूख जाने वाला कहा गया है।

पांपण पल ना लेवही, दसो दिस नैन फिराऊं।
देह बिना दौड़ों अन्दर, पिया कित मिलसी कहां जाऊं।।८।।

आपके प्रेम भरे मधुर दर्शन (शरबत - ए - दीदार) की चाहत में पल भर के लिये भी मेरी आंखों की पलकें झपकती नहीं हैं। मैं दसों दिशाओं में आप को खोजती

फिर रही हूँ। यद्यपि मेरा शरीर तो एक ही स्थान पर स्थिर है किन्तु सांकल्पिक रूप से मैं दसों दिशाओं में आपको ही ढूंढ रहीं हूँ। मेरे मन में केवल एक ही विचार है कि मेरे प्राणेश्वर! आप मुझे कहाँ मिलेंगे कि मैं आकर आपसे मिल लूं।

भावार्थ- दस दिशायें इस प्रकार हैं- पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य, ईशान, ऊपर, तथा नीचे। हृदय में प्रेम के प्रस्फुटित होने पर प्रेम की तरंगें मन के साथ संयुक्त होकर एक भावमय (संकल्पमय) शरीर की रचना करती हैं जो अपने प्रेमास्पद की खोज में सर्वत्र घूमता रहता है। चौ. ६-९ में प्रेम की मनोरम स्थिति का वर्णन किया गया है।

इस्क को ए लछन, जो नैनों पलक ना ले।
दौड़े फिरे न मिल सके, अन्दर नजर पिया में दे।।९।।

प्रेम का यही लक्षण है कि पल भर के लिये भी आंखों की पलकें झपकती नहीं हैं। जब चारों ओर भावमय (संकल्पमय) शरीर से दौड़ने पर भी प्रियतम के दर्शन नहीं होते हैं, तो वह अपनी अन्तर्दृष्टि को अपनी आत्मा में ही इस भावना के साथ केन्द्रित कर देती हैं कि मेरा प्रियतम मेरी आत्मा के धाम हृदय में बसता है।

भावार्थ- उपरोक्त कथन के आधार पर चितवनि के दो रूप स्पष्ट होते हैं। पहला स्वरूप वह है जिसमें विरह के भावों के साथ ज्ञान दृष्टि से कालमाया एवं योगमाया को पार कर परमधाम में प्रवेश किया जाता है तथा नख से शिख तक युगल स्वरूप की शोभा में स्वयं को डूबोया जाता है। इसे ही संकल्पमय शरीर से दौड़ना कहा जाता है। इस स्थिति में विचरण करते-करते ज्ञान की अवस्था समाप्त हो जाती है तथा विरह की अवस्था गहराने लगती है।

यहाँ यह तथ्य ध्यान में रखने योग्य है कि अपनी परात्म की भावना से कालमाया एवं योगमाया को पार कर हमने अब तक जो भी परमधाम में विचरण किया होता है, वह भावमय (संकल्पमय) ही होता है और वह ज्ञान एवं हमारे अटूट विश्वास पर आधारित होता है जिसे हमने तारतम वाणी और ब्रह्मात्माओं के चरणों में बैठकर प्राप्त किया होता

है। किन्तु इस अवस्था में हमारे जीव का अन्तःकरण क्रियाशील होता है जिसके परिणाम स्वरूप शरीर एवं संसार से हमारी पूर्ण निवृत्ति नहीं हुई होती है। इस प्रकार की चितवनि से मानसिक आनन्द प्राप्त होता है। विरह की परिपक्व अवस्था में सुरता शरीर, संसार तथा मन-बुद्धि के द्वन्दों से परे हो जाती है।

इसके पश्चात् प्रेम की रस धारा बहने लगती है जिसमें आत्मा को यह विदित होने लगता है कि उसका प्राणेश्वर तो उसकी अन्तरात्मा में है। सागर की लहरों की तरह वह भी उसकी प्राणेश्वरी है। उससे न तो पल भर के लिये भी कभी अलग हुई थी और न कभी हो सकेगी।

इस अवस्था में आत्मा एवं परब्रह्म में ऐक्य भाव स्थापित हो जाता है, जिसका परिणाम यह होता है कि उसे अपनी आत्मा के धाम हृदय में सम्पूर्ण परमधाम सहित युगल स्वरूप के प्रत्यक्ष दर्शन होने लगते हैं। इसे ही अगली चौपाई के तीसरे चरण में 'अंदर तो न्यारा नहीं' तथा किरतंन १३२/४ में 'तो अधखिन पिऊ न्यारा नहीं, मांहें रहे हिल मिल कहा' गया है। भ्रान्तिवश उपरोक्त कथन का आशय यह कदापि नहीं लेना चाहिए कि इसमें अस्थि-मांस के इस स्थूल शरीर की छाती में चितवनि करने के लिये कहा जा रहा है।

प्रारम्भिक अवस्था में विरह की अग्नि को प्रज्ज्वलित करने के लिये मेरी छाती दिल की कोमल, तिनसे तुम्हारे पाँऊ कोमल।' इतही सेज बिछाए देऊँ,जुदे करो जिन दम' जैसे भावों का आश्रय लेकर अवश्य स्थूल शरीर के हृदय में भावना कर सकते हैं। इसके पश्चात् ज्ञानमयी चितवनि (कालमाया एवं योगमाया से होते हुए परमधाम में) का ही आधार लेना पड़ेगा। विरह की परिपक्व अवस्था में स्वतः ही आत्मा के धाम हृदय में प्रियतम का दर्शन होगा। उस अवस्था में इस स्थूल शरीर या संसार का जरा भी आभास नहीं रहेगा।

नजरों निमख न छूटहीं, तो नाहीं लागत पल।
अन्दर तो न्यारा नहीं, पर जाए न दाह बिना मिल।।१०।।

उस अवस्था में क्षण भर के लिये भी प्रियतम की छवि ओझल नहीं होती है। यही कारण है कि पलकें भी झपकने का नाम नहीं लेती हैं। यद्यपि प्रियतम मुझसे पल भर के लिये भी आन्तरिक रूप से अलग नहीं हैं किन्तु जब तक बाह्य रूप से मिलन (साक्षात्कार) नहीं होता है, तब तक प्रियतम से मिलन की अग्नि (बल/इच्छा) शान्त नहीं होती।

भावार्थ-उपरोक्त चौपाई के कथन से यह संशय होता है कि यहां किस अवस्था का वर्णन है जिसमें आंखों की पलकें झपकती नहीं हैं? चितवनि की अवस्था में तो आंखे बन्द रहती हैं। उस स्थिति में तो झपकने का प्रश्न ही नहीं है। इसके समाधान में यही कहा जा सकता है कि आंखों के झपकने का तात्पर्य है-यदि खुली हो तो बन्द न हों और यदि बन्द हों तो खुलें नहीं। रात्रि के अन्धेरे या गहन एकान्त में जहां कोई भी अन्य न हों, वहां खुली आंखों से भी विरह में तड़पा जा सकता है। उस समय आंखों के खुले रहने पर भी संसार का आभास नगण्य सा होता है। प्रेम की प्रारम्भिक अवस्था में आंखे अध खुली हो सकती हैं परन्तु इसके पश्चात् वे बन्द तो हो सकती है, किन्तु खुलना नहीं चाहेंगी। चितवनि की गहन अवस्था या प्रेम की परिपक्वावस्था में आंखें पूर्णतया बन्द हो जाती हैं। इस अवस्था में उनके आन्तरिक नेत्र खुल जाते हैं जिनसे प्रियतम का दर्शन होता रहता है। उसमें निरन्तरता बनी रहती है अर्थात् पलभर के लिये भी दर्शन में व्यवधान नहीं होता, उसे ही पलकों (आन्तरिक पलकों) का न झपकना कहते हैं।

जो दुख तुमहीं बिछुरे, मोहे लाग्यो जो तासों प्यार।
एता सुख तेरे विरह में, तो कौन सुख होसी विहार।।११।।

मेरे प्राणप्रियतम! आपके वियोग में मेरे हृदय में जो पीड़ा हो रही है, मुझे उससे ही गहरा लगाव हो गया है, क्योंकि उससे भी मुझे एक मधुर सामीप्यता (मीठे अहसास) की प्राप्ति होती है। जब आपके विरह में तड़पने पर इतना सुख मिलता है, तो आपके साथ प्रत्यक्ष दर्शन रूप लीला विहार का आनन्द कितना होगा? अनन्त! अनन्त! अनन्त।

।।प्रकरण।।९।।चौपाई।।१८७।।

मूल सम्बन्ध के कारण विरह एवं प्रेम किस प्रकार फलीभूत होते है, इस प्रकरण में इस तथ्य को दर्शाया गया है।

सनमंध मूल को, मैं तो पाउ पल छोड़्यो न जाए।
अब छल बल मोहे कहा करे, मोह आद थें दियो उड़ाए।।१।।

श्री महामति जी की आत्मा कहती है- मेरे जीवन के आधार स्वरूप श्रीराज जी! आपसे मेरा परमधाम का जो मूल सम्बन्ध है, उसे मैं किसी भी स्थिति में मन, वाणी एवं कर्म से नहीं छोड़ सकती। जब आपने तारतम ज्ञान से अपनी पहचान देकर प्रारम्भ में ही मेरे मोह रूप अज्ञान को नष्ट कर दिया, तो अब इस छलरूपी माया का बल मेरा क्या अहित कर लेगा?

भावार्थ- एक ही अक्षरातीत ने अपने आवेश स्वरूप से श्री कृष्ण, श्री देवचन्द्र जी एवं श्री मिहिरराज जी के तन में विराजमान होकर लीला की है, किन्तु भ्रान्तिवश इन तनों में लीला करने वाले स्वरूप की पहचान न करके तनों के नाम एवं उनके जन्म स्थान, गोत्र आदि की पहचान की जा रही है। जब इस जागनी लीला में मूल स्वरूप ने अपनी सारी शोभा इन्द्रावती जी को दे रखी है, तो उनके धाम हृदय में विराजमान श्री प्राणनाथ जी को संत, कवि एवं महापुरूष कहना तथा मात्र श्री कृष्ण नाम की महिमा गाना मूल स्वरूप श्री राज जी एवं अपने मूल सम्बन्ध का अपमान करना है।

दरद जो तेरे दुलहा, कर डास्यो सब नास।
पर आस न छोड़े जीव को, करने तुम विलास।।२।।

मेरे प्राणवल्लभ! आपके विरह की पीड़ा ने मेरे इस शरीर को जर्जर (नष्ट प्राय) कर दिया है, किन्तु इसमें रहने वाले जीव को अभी भी यह आशा बनी हुई है कि आपके साथ निश्चित रूप से मेरा मिलन होगा और आपकी प्रेमभरी लीला का रस पान करने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

विरहा न छोड़े जीव को, जीव आस भी पिउ मिलन।
पिया संग इन अंगे करूं, तो मैं सुहागिन।।३।।

न तो आपका विरह मेरे जीव को छोड़ पा रहा है और न जीव आपसे मिलने की आशा को छोड़ रहा है। मैं अपने सुहागिन कहलाने के गौरव की रक्षा तभी कर पाऊंगी जब मैं अपने हृदय को आपकी सानिध्यता की अनुभूति करा दूं।

लागी लड़ाई आप में, एक विरहा दूजी आस।
ए भी विरहा पिउ का, आस भी पिउ विलास।।४।।

मेरे अन्दर प्रियतम को पाने का विरह है तो उनके साथ होने वाली आनन्दमयी

लीला का रस पान करने की आशा है। इस समय इन दोनों में ही इस बात के लिये संघर्ष हो रहा है कि कौन महत्वपूर्ण है- प्रियतम का विरह या उनके प्रेम की आशा।

भावार्थ- कालमाया में प्रियतम के विलास का तात्पर्य है प्रियतम की सानिध्यता में उनका दर्शन तथा उनकी प्रेम भरी बातों का श्रवण एवं अपने हृदय की भावनाओं को उनके सामने व्यक्त करना। परमधाम में प्रियतम के साथ विलास का आशय है अष्ट प्रहर की लीला में रसमग्न होना। मूल सम्बन्ध (निसबत) से ही विरह और मूल सम्बन्ध से ही आशा है।

इस प्रकार निस्बत के अंग होने से विरह और आशा एक समान है। इनमें कोई बड़ा - छोटा नहीं है। ये दोनों एक दूसरे के विरोधी नहीं अपितु पूरक हैं। विरह से ही प्रेम आता है, जिससे धनी का मिलन होता है एवं विरह से ही प्रियतम को पाने की आशा भी जागृत होती है। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि मूलसम्बन्ध के प्रति अटूट विश्वास के कारण ही आशा उत्पन्न होती है। तभी विरह के प्रति हृदय उत्तरोत्तर आगे बढ़ता है। अन्यथा निराशावाद की इस नकारात्मक सोच के कारण कोई विरह की राह पर चल ही नहीं सकता।

मैं कहावत हों सुहागनी, जो विरहा न देऊं जिउ।
तो पीछे वतन जाए के, क्यों देखाऊ मुख पिउ।।५।।

मैं इस संसार में अक्षरातीत की सुहागिन आत्मा कहलाती हूँ। ऐसी अवस्था में यदि मैं अपने जीव को विरह के रस में न डुबोऊँ, तो परमधाम में जागृत होने पर अपने प्रियतम को अपना मुख कैसे दिखाऊंगी? अर्थात् मुझे बहुत अधिक लज्जा का अनुभव होगा।

भावार्थ- 'मुख न दिखाना' एक मुहावरा है जिसका आशय होता है - अत्यधिक लज्जा का अनुभव करना।

जो जीव देते सकुचों, तो क्यों रहे मेरा धरम।
विरहा आगे कहा जीव, ए केहेत लगत मोहे सरम।।६।।

यदि मैं इस विरह में अपने जीव को समर्पित करते समय संकोच करती हूं, तो मेरा धर्म कैसे सुरक्षित रह सकता है? अर्थात् मैं अपने कर्त्तव्य पथ से भटकी हुई कही जाऊंगी। प्रियतम के प्रेम में भला जीव के शरीर के अस्तित्व की क्या चिंता की जाय? अपने इस नश्वर तन की चिंता की बात कहने में भी मुझे लज्जा का अनुभव होता है।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई के द्वितीय चरण में 'धर्म' का अभिप्राय अपने कर्त्तव्य पथ से है।

माया काया जीवसों, भान भून टूक कर।
विरहा तेरा जिन दिसा, मैं वारूं तिन दिस पर।।७।।

मेरे प्राणवल्लभ! माया के इस शरीर तथा जीव को तोड़कर तथा टुकड़े-टुकड़े कर मैं उस दिशा पर न्योछावर कर दूं, जिस दिशा से मुझे आपका विरह प्राप्त होता है।

भावार्थ- 'जीव' सूक्ष्म होने से तोड़ा तो नहीं जा सकता, किन्तु यहां जीव को तोड़ने का भाव यह है कि इसे कठिन साधना की कसौटी से गुजारना।

जब आह सूकी अंग में, स्वांस भी छोड़्यो संग।
तब तुम परदा टालके, दियो मोहे अपनो अंग।।८।।

जब हब्से में आपके विरह में निकलने वाली आहें भी होठों में सूख गयीं, तो मेरी सांस (प्राणवायु) भी निकल गयी, अर्थात् मेरे जीव ने अपने तन का परित्याग कर दिया। तब आपने माया का पर्दा हटा दिया और मुझे अपना हृदय ही दे दिया अर्थात् मेरे धाम हृदय में आकर विराजमान हो गये।

भावार्थ- हब्से में जाने से पूर्व श्री इन्द्रावती जी को यह बोध ही नहीं था कि मेरे धाम हृदय में अक्षरातीत विराजमान हैं। हब्से में प्रियतम के मिलन की घटना ने श्री मिहिरराज जी के सारे संशयों को दूर कर दिया।

मैं तो अपना दे रही, पर तुम ही राख्यो जिउ।
बल दे आप खड़ी करी, कारज अपने पिउ।।९।।

मेरे प्रियतम! लम्बे समय तक प्रतीक्षा के पश्चात् भी जब आपने मुझे दर्शन नहीं दिया, तो मैंने निराश होकर विरह में अपना तन छोड़ दिया। किन्तु मेरे तन से जागनी कार्य की सेवा लेने के लिये आपने मेरे जीव के इस तन को सुरक्षित रखा तथा मुझे अपनी शक्ति देकर जागनी कार्य के लिये खड़ा (तैयार) कर दिया।

जीवरा भी मेरा रख्या, तुम कारज भी कारन।
आस भी पूरी सुहागनी, और व्रध भी राख्यो विरहिन।।१०।।

हे धाम धनी! आपने जागनी कार्य की सेवा के लिये मेरे जीव के इस तन को जीवित रखा। मेरे मन में आपके साथ आनन्दमयी लीला की जो आशा थी, उसको भी

आपने पूर्ण किया और मेरी लाज भी रख ली।

तुम आए सब आइया, दुख गया सब दूर।
कहे महामती ए सुख क्यों कहूं, जो उदया मूल अंकूर।।११।।

श्री महामति' जी की आत्मा कहती है कि हे मेरे प्राणवल्लभ! मेरे धाम हृदय में आपके विराजमान होते ही परमधाम की सभी निधियां मेरे अन्दर आ गयी। इसके अतिरिक्त मेरे विरह का सम्पूर्ण दुःख भी समाप्त हो गया। परमधाम का मूल अंकूर जागृत होने पर मुझे इतना आनन्द हुआ कि उसका वर्णन करना सम्भव नहीं है।

भावार्थ- तारतम वाणी के प्रकाश में जब आत्मा ज्ञानदृष्टि से प्रियतम की पहचान कर लेती है, तो उसका हृदय विरह में तड़पने लगता है। विरह के परिपक्व होने पर जब उसके हृदय में प्रेम का रस प्रवाहित होता है, तो वह अपनी परात्म, युगल स्वरूप एवं परमधाम को प्रत्यक्ष देखने लगती है। उस स्थिति में उसे अपने शरीर और संसार का कोई बोध नहीं रहता। इसे ही परमधाम के मूल अंकूर का जागृत होना कहते हैं।

।।प्रकरण।।१०।।चौपाई।।१६८।।

सनंध विरह के प्रकास की

एह बात मैं तो कहूं, जो केहने की होए।
एह इमामें रीझ के, दया करी अति मोहे।।१।।

प्रियतम के विरह को शब्दों में व्यक्त करना बहुत कठिन है, इसलिये इस सम्बन्ध में मेरा कुछ भी कहना उचित नहीं है किन्तु मेरे प्राणेश्वर अक्षरातीत ने मेरे उपर प्रेम विह्वल होकर अति प्रेम भरी दया की और मेरे द्वारा विरह की वास्तविकता का वर्णन करवाया।

भावार्थ - क. हि. में कथित इस चौपाई में 'इमाम' के स्थान पर 'खसम' शब्द प्रयुक्त है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि इस नश्वर जगत में परब्रह्म का जो आवेश स्वरूप प्रकट हुआ उसे हिन्दू पक्ष में श्री प्राणनाथ जी और कतेब पक्ष में 'इमाम' कहा गया है। यह सर्वमान्य तथ्य है कि परमधाम में मात्र अल्लाहतआला (परब्रह्म) है। वहां पर इमाम

महदी का यह भौतिक स्वरूप नहीं है जो आंखों से दिखायी देता है किन्तु उनके हृदय में विराजमान आवेश स्वरूप परब्रह्म का है जो परमधाम में अपने नूरमयी स्वरूप से विराजमान है।

सुनियो बानी मोमिनों, दीदार दिया हकें जब।
परदा सारा उड़ गया, हुआ उजाला सब।।२।।

हे ब्रह्ममुनियों! प्रियतम ने मेरे तन से जो कुछ भी कहलवाया है, उसे आप सुनें। जब प्राणेश्वर अक्षरातीत ने मुझे हब्से में दर्शन दिया तथा मेरे धाम हृदय में विराजमान हुए तो मेरे अन्दर परमधाम के अलौकिक ज्ञान का प्रकाश हो गया, जिसके परिणाम स्वरूप मेरे सभी संशय समाप्त हो गये।

कह्या जो नबिऐं इमाम, तिन खुद खोले द्वार।
दरवाजे सब खोज के, मोहे देखाया पार।।३।।

मुहम्मद स. अ. व. ने कुर्आन में कहा है कि कियामत के समय परब्रह्म इमाम महदी के स्वरूप में आयेंगे। उसी कथनानुसार स्वयं परब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथ जी (इमाम महदी) मेरे धाम हृदय में आकर विराजमान हो गये हैं और उन्होंने ही मेरी आत्मिक दृश्टि को निराकार - बेहद से परे ले जाकर परमधाम का प्रत्यक्ष साक्षात्कार कराया है।

भावार्थ - दरवाजा खोलना एक मुहाविरा है, जिसका तात्पर्य है - बाधा दूर करना। निराकार बेहद को पार किये बिना परमधाम को नहीं देखा जा सकता। इसे ही इस चौपाई में बन्द दरवाजे के रूप में दर्शाया गया है।

कर पकर बैठाए के, आवेस दियो मोहे अंग।
ता दिन थें मेहेर पसरी, पल पल चढ़ते रंग।।४।।

प्रियतम ने हाथ पकड़कर (प्रेमपूर्वक) मुझे अपने पास बैठाया और मेरे हृदय में अपना आवेश दिया अर्थात् अत्यधिक प्रेम में भरकर मुझे दर्शन दिया तथा मेरे धाम हृदय में विराजमान हो गये। उस दिन से उनकी कृपा बढ़ती ही गयी और पल-पल मेरे आनन्द में वृद्धि होती गयी।

मिलाप हुआ जब मेहेंदी से, तब कह्या महामती नाम।
अब मैं हुई जाहेर, देख्या वतन बका धाम।।५।।

जब मेरी आत्मा का मिलन श्री राज जी से हुआ तो मुझे 'महामति' (मेहमत साहिब्बुज्जमां) की शोभा मिली। उस समय मैनें अपने मूल अखण्ड घर परमधाम को देखा तथा उसी महामति के नाम से प्रियतम ने मुझे संसार में उजागर किया।

भावार्थ - इस चौपाई के प्रथम चरण में महदी शब्द है, जो संक्षिप्त शब्द है। इसका वास्तविक आशय इमाम महदी से है, जिसका अर्थ इस संसार में अ. त. फ. स. में जागनी लीला करने वाले परब्रह्म के आवेश स्वरूप श्री प्राणनाथ जी से है। महदी शोभा का नाम है तो इमाम शोभा देने वाले अक्षरातीत का नाम है।

महंमद हुआ मेहदी, सैयद केहेलाया सही।
खिताब दिया जब खसमें, तब भेली इमाम भई।।सनंद ४२/१२

अर्थात् अव्वल का मुहम्मद ही आखिरी में मुहम्मद महदी कहलाया। मल्की सूरत में वह अहमद कहलाया। इस तथ्य को खुलासा / के इस कथन से समझा जा सकता है-

महंमद आया इसे मिने, तब अहमद हुआ स्याम।
अहमद मिल्या मेहेदी मिने, ए तीनों मिल भये इमाम।।

इमाम के स्वरूप में तीनों सूरतें बशरी, मल्की, तथा हकी समाहित हैं। बशरी सूरत में परब्रह्म के सत् अंग अक्षर ब्रह्म की आत्मा थी, मल्की सूरत में आनन्द अंग श्यामा जी की आत्मा तथा हकी सूरत में पहले की दोनों सूरतों के साथ इन्द्रावती आत्मा में चिद्घन स्वरूप परब्रह्म का आवेश स्वरूप विराजमान हुआ, जिसे इमाम महदी एवं तीनों सूरतों को अलिफ लाम मीम अथवा सत् आनन्द और चिद्घन स्वरूप कहते है।

मुहम्मद का अर्थ होता है अनन्त महिमा वाला। इसी प्रकार मेहमत का अर्थ होता है - महिमावान एवं महानतम्। महामति का तात्पर्य है - अनन्त बुद्धि वाला अर्थात् अनन्त ज्ञान का ऐसा स्वामी जो आज दिन तक न हुआ हो। मुहम्मद और महदी अरबी भाषा के शब्द हैं और एकार्थवाची है। तुर्की भाषा में इसी का समानार्थक शब्द मेहेमत है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि मुहम्मद, महदी, महामति और मेहेमत का एक ही भाव है, भाषायें अलग-अलग हैं।सनंध ११/१५ में कथित 'जो चाहे मेहेदी महंमद को' से भी यही निश्कर्ष निकलता है। अनामिन मेहेमत अजल्लाह तआला अजल अल्लाह तआला फरज अल शरीफ फर्जहू शरीफ अर्थात् मैं (महामति) मेहेमत, महदी, मुहम्मद परब्रह्म का ही स्वरूप हूं।

बात कही सब वतन की, सो निरखे मैं निसान।
नजरों सब जाहेर हुआ, उड़ गया उनमान।।६।।

परब्रह्म ने मेरे धाम हृदय में विराजमान होकर परमधाम की शोभा एवं लीला का वर्णन किया जिसे मैंने अपने अन्तः श्रवणों से सुना तथा आत्म चक्षुओं से प्रत्यक्ष देखा। अब तक मेरा ज्ञान अनुमान पर आधारित था किन्तु प्रियतम अक्षरतीत के द्वारा प्रत्यक्ष दिखाये जाने पर 'ज्ञान' में पूर्ण दृढ़ता हो गयी।

भावार्थ - श्री मिहिरराज जी ने श्री देवचन्द्र जी के मुखारबिन्द से परमधाम की जिस शोभा एवं लीला को विषय में सुना था, उसको अब तक प्रत्यक्ष अनुभव नहीं किया था। इसलिये अब तक का ज्ञान अनुमान पर आधारित था। किन्तु अक्षरातीत श्री राज जी के हृदय में विराजमान हो जाने पर अखण्ड परमधाम तथा व्रज - रास की लीला प्रत्यक्ष दिखायी देने लगी जिससे उनके मन में परमधाम के प्रति पूर्ण दृढ़ता आ गयी।

आपा मैं पेहेचानिया, सनमंध हुआ सत।
ए मेहेर जुबां क्यों कर कहूं, गई मूल से गफलत।।७।।

श्री राज जी की यह अनन्त कृपा भला शब्दों में कैसे वर्णित की जा सकती है? उनकी प्रेम भरी कृपा की छत्रछाया में मैने अपनी परात्म (मूल-तन) को देखा जिससे मुझे यह अनुभव होने लगा कि मेरा और परब्रह्म का अटूट सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध में मेरे सभी संशयों का जड़ से नाश हो गया?

ए झूठी अबलों न जानती, क्या है क्यों उतपत।
सो अब सब विध समझी, यों होसी फना कुदरत।।८।।

मुझे आज तक यह स्पष्ट रूप से ज्ञात नहीं था कि यह माया क्या है तथा क्यों प्रकट प्रकट होती है? अब श्री राज जी की कृपा से मुझे यथार्थ रूप से बोध हो गया है कि माया से यह संसार कैसे बनता है और प्रलय में लीन हो जाता है।

मुझे जगाई जुगतसों, सुख दियो अंग आप।
कं ठ लगाई कंठसों, या बिध कियो मिलाप।।९।।

प्रियतम परब्रह्म ने मुझे युक्ति पूर्वक हब्शे में भेजकर विरह में तड़पाया और प्रत्यक्ष दर्शन देकर मुझे जागृत किया। मेरे धाम हृदय में स्थित होकर उन्होंने परमधाम का अपार सुख दिया। हब्से में उन्होंने मुझे प्रत्यक्ष दर्शन देकर गले लगाया।

भावार्थ - गले लगाना एक मुहाविरा है और इसका आशय अक्षरातीत के द्वारा श्री महामति जी की आत्मा को अत्यन्त प्रेम भरी दृश्टि से देखना और वार्ता करना है। आलिंगन स्थूल शरीरों से ही होता है, सूक्ष्म शरीरों से नहीं। जिस परमसुख का अनुभव आलिंगन से हो सकता है, उसे धाम धनी ने अपनी दृष्टि मात्र से दे दिया, इसलिये इस चौपाई के तीसरे चरण में 'कण्ठ लगाई कण्ठ सों' कहा गया है। ऐसा कथन यद्यपि बौद्धिक दृष्टि से ही है, आध्यात्मिक अनुभव को किसी नियम या मर्यादा के बन्धन में नहीं बाधा जा सकता।

खासी जान खेड़ी जिमी, जल सींचिया खसम।
बोया बीज वतन का, सो ऊग्या वाही रसम।।१०।।

मुझे परमधाम की विशिष्ट आत्मा जानकर प्रियतम परब्रह्म ने मेरी आत्मा रूपी उर्वरा धरती को प्रेम के जल से सिंचित किया और उसमें परमधाम के तारतम ज्ञान का बीज बोया। वह बीज हब्शे में वाणी (श्री कुल्जम) के अवतरण के रूप में प्रकट हो गया।

भावार्थ - महारास की लीला के समय विरह के प्रसंग में श्री इन्द्रावती (महामति) जी की आत्मा ने श्री कृष्ण जी का अभिनय किया। इसलिये इस जागनी लीला में प्राणेश्वर अक्षरतीत ने उन्हें अपने रूप में शोभा देने के लिये चयनित कर लिया था। हब्शे में विरह में तड़पाकर श्री इन्द्रावती जी ने स्वयं को समर्पण की पराकाश्ठा पर पहुंचा दिया जिससे उनका हृदय उस आध्यात्मिक स्तर पर पहुंच गया - जिसमें सच्चिदानन्द परब्रह्म का साक्षात्कार अवश्य हेाता है।

बीज रूह संग निज बुध, सो ले उठिया अंकूर।
या जुबां इन अंकूर को, क्यों कर कहूं सो नूर।।११।।

प्राणेश्वर अक्षरातीत के द्वारा मेरी आत्मा में बोया गया ज्ञान का बीज निजबुद्धि की संगति पाकर अंकुरित हो उठा। अब इस नश्वर संसार की जिह्वा से उस अनुपम ज्ञान के प्रकाश का वर्णन नहीं हो सकता।

नातो एह बात जो गुझ की, सो क्यों होवे जाहेर।
पर मोमिन प्यारे मुझ को, सो कर ना सकूं अंतर।।१२।।

अन्यथा हब्शा में घटित होने वाली सभी बातें जैसे - अपने प्रियतम के विरह में मेरा तड़पना, उनका प्रत्यक्ष साक्षात्कार होना, एवं तारतम वाणी का उतरना परम गोपनीय है किन्तु परमधाम के ब्रह्ममुनि मुझे बहुत ही प्रिय है। अतः इनसे किसी भी प्रकार का छिपाव नहीं किया जा सकता।

तो भी कहूं नेक नूर की, कछुक इसारत अब।
पीछे तो जाहेर होएसी, तब दुनी मिलसी सब।।१३।।

फिर भी हब्शे में मेरे तन से परमधाम के ज्ञान के अवतरण का जो क्रम शुरू हुआ उसके विशय में थोड़ा सा सांकेतिक रूप में ही मेरे द्वारा कहा जा रहा है। आने वाले समय में जब परमधाम का सम्पूर्ण ज्ञान अवतरित हो जायेगा तब जागनी लीला के समाप्त हो जाने के पश्चात् योगमाया के ब्रह्माण्ड में सारे संसार को मेरे विषय में कुछ विदित हो पायेगा।

ए जो विरहा बीतक कही, इमाम मिले जिन सूल।
अब फेर कहूं निज नूर की, जासों पाइए माएने मूल।।१४।।

उपरोक्त कथनों में मैने हब्शे के उस विरह का घटनाक्रम वर्णित किया है, जिसमें प्राणेश्वर अक्षरातीत से मेरा मिलन हुआ। अब मेरे द्वारा पुनः तारतम ज्ञान के प्रकाश में उस विरह के वास्तविक रहस्य को उजागर किया जा रहा है जिससे आध्यत्मिक जीवन के वास्तविक अभिप्राय को जाना जा सकता है।

सुनियो रूहें मोमिनों, जो इन मासूक की विरहिन।
जो चाहे मेंहेंदी महंमद को, मैं ताए कहूं वचन।।१५।।

प्रियतम परब्रह्म के विरह में तड़पने वाले परमधाम के ब्रह्ममुनियों! मेरी बात सुनिए। मेरा कथन मात्र उन्हीं के लिये हैं जो श्री प्राणनाथ जी (मुहम्मद महदी साहिबुज्जमां) से प्रेम करते है।

ए विरहा लछन मैं कहे, पर नाहीं विरहा ताए।
या विध विरहा उद्दम की, जो कोई किया चाहे।।१६।।

पूर्व के प्रकरणों ७ एवं ८ मे मैंने विरह के लक्षणों का वर्णन अवश्य किया है किन्तु वह विरह का वास्तविक स्वरूप नहीं है क्योंकि 'विरह' शब्दों की परिधि में नहीं आता। परन्तु यदि कोई सुन्दरसाथ विरह की राह अपनाना चाहता है तो उन प्रकरणों (७,८) में विरह का सरल मार्ग दर्शाया गया है।

ज्यों ए विरहा उपज्या, ए नहीं हमारो धरम।
विरहिन कबूं ना करे, यों विरहा अनूकरम।।१७।।

उन प्रकरणों में कथित तथ्यों की कसौटी पर स्वयं को खरा सिद्ध करने से यदि

किसी सुन्दरसाथ के हृदय में विरह प्रकट होता है तो वह हमारा मूल मार्ग (कर्तव्य) नहीं है। परमधाम की ब्रह्मात्मा इस प्रकार किसी से सीखकर विरह का मार्ग नहीं अपनाती है।

भावार्थ - विरह ब्रह्मात्मा के हृदय का स्वाभाविक गुण है। इसके लिये उसे किसी से कुछ सीखना नहीं पड़ता। इस चौपाई में श्री महामति जी ने प्रेम-विरह के मार्ग पर चलने वाले सुन्दरसाथ को इस बात से सावचेत किया है कि वे हब्शे की घटना की नकल न करें, अपितु प्रत्येक सुन्दरसाथ अपने शुद्ध हृदय से विरह के मार्ग पर चले।

जिस प्रकार हब्शे में श्री मिहिरराज जी ने भोजन की मात्रा इतनी कम कर दी कि मात्र छः माह में ही उनका शरीर हड्डियों का ढ़ांचा रह गया, उसी प्रकार यदि कोई सुन्दरसाथ हब्शे की नकल करना प्रारम्भ कर दे तो उसके लिये उचित नहीं होगा। इसके निम्नलिखित कारण है -

१. उसका जीव राजा मरू के जीव की तरह निर्मल नहीं होगा।

२. यदि चित्त में विषय - विकारों की प्रबलता हो तो भोजन का पूर्णतया परित्याग कर देने मात्र से ही न तो हृदय निर्मल होगा और न विरह प्रेम ही आयेगा। पूर्व में राज कुमार सिद्धार्थ ने यह भूल की थी तथा वि. स. १७०३ से पूर्व श्री मिहिरराज जी ने भी इस भूल को दुहराया। वस्तुतः युक्त आहार - विहार के द्वारा ही अपने चित्त को निर्मल बनाकर विरह - प्रेम के मार्ग पर चला जा सकता है, हठपूर्वक नहीं।

३. मूल स्वरूप श्री राज जी ने हब्शे की उस घटना को पहले से ही अपने हृदय में ले लिया था, इसलिये वैसा हुआ। वैसी लीला अब प्रत्येक सुन्दरसाथ के साथ नहीं हो सकती।

विरहा सुनते मासूक का, आह ना उड़ गई जिन।
ताए वतन रूहें यों कहे, नाहीं न ए विरहिन।।१८।।

प्रियतम के विरह की बातें सुनकर जिसके हृदय से विरह की पीड़ा की आह नहीं निकलती हैं, वह परमधाम की ब्रह्मात्माओं की दृष्टि में विरहिणी कहलाने की शोभा को कदापि प्राप्त नहीं कर सकती है।

जो होए आपे विरहनी, सो क्यों कहे विरहा सुध।
सुन विरहा जीव ना रहे, तो विरहिन कहां से बुध।।१९।।

जो आत्मा स्वयं धाम के विरह मे डूबी होती है, वह विरह की अवस्था का वर्णन

नहीं कर सकती है। प्रियतम परब्रह्म की बातें सुनकर जब जीव का हृदय गहन विरह में डूब जाता है तो वह अपने शरीर को इस संसार में रखना ही नहीं चाहता। ऐसी अवस्था में उसकी बुद्धि भला कहां से सक्रिय रह सकती है?

भावार्थ - विरह की बातें सुनने मात्र से कोई अपना तन नहीं त्याग सकता। व्यवहार में प्रायः यही देखा जाता है कि विरह की बातें प्रतिदिन सुनने पर भी अनेकों को विरह नहीं आता है। वस्तुतः जब ज्ञान द्वारा विवेक जागृत होता है तभी प्रियतम का विरह आता है।

पतंग कहे पतंग को, कहां रह्या तूं सोए।
मैं देख्या है दीपक, चल देखाऊं तोहे।।२०।।

यदि एक पतिंगा दूसरे पतिंगे से ऐसा कहता है कि तूं अब तक कहां सो रहा था?मैं एक जलते हुए दीपक को देखकर आया हूं मेरे साथ चल। मैं तुझे भी उस दीपक को दिखाता हूं।

या तो ओ दीपक नहीं, या तूं पतंग नाहें।
पतंग कहिए तिनको, जो दीपक देख झंपाए।।२१।।

यह सुनकर दूसरा पतिंगा उत्तर देता है कि या तो तुमने दीपक को देखा ही नहीं है या तुम वास्तव में पतिंगा ही नहीं हो। पतिंगा मात्र वही कहला सकता है जो दीपक को देखते ही उसे झांप मारकर बुझाने का प्रयास करे।

भावार्थ - दीपक को देखते ही पतिंगा उस पर टूट पड़ता है तथा अपने पंखों से उसे झपट्टा मारकर बुझा देने का प्रयास करता है। इसे ही झाप मारना कहते हैं इस प्रयास में या तो वह दीपक को बुझा देता हूं या स्वयं जलकर मर जाता है।

पतंग और पतंग को, जो सुध दीपक दे।
तो होवे हांसी तिन पर, कहे नाहीं पतंग ए।।२२।।

एक पतिंगा यदि दूसरे पतिंगे को दीपक की पहचान देता है तो उसकी हांसी होती है कि यह वास्तविक पतिंगा ही नहीं है, बल्कि कोई नकली कीड़ा है जो पतिंगे का भेष बनाये हुए है।

दीपक देख पीछा फिरे, साबित राख के अंग।
आए देवे सुध और को, ताए क्यों कहिए पतंग।।२३।।

जो दीपक को देखने के पश्चात् भी अपने अंगों को जलाये बिना ही लौटकर आ जाता है तथा दूसरे पतिंगें को दीपक की पहचान बताने लगता है, तो वास्तव में उसे पतिंगा कहलाने का कोई अधिकार ही नहीं है।

भावार्थ - जब दीपक जलता है, तो अन्धेरे को नष्ट कर देता है। अन्धेरे को ही अपने जीवन का सर्वस्व मानने वाला पतिंगा इसे सहन नहीं कर पाता है तथा उसे झांप मारकर बुझाने का प्रयास करता है। उपरोक्त चौपाईयो में पतिंगे के दृष्टान्त से ब्रह्ममुनियों के लिये यह सन्देश है कि माया का जीव (कीड़ा) यदि अपने सुहाग अन्धेरे के लिये स्वयं को न्योछावर करने में जरा भी झिझक नहीं करता तो परमधाम के ब्रह्ममुनियों का भी नैतिक उत्तरदायित्व है कि वे विरह - प्रेम को केवल शब्द जाल का ही विषय न समझें अपितु अपने जीवन का अभिन्न अंग बना लें।

मैं तो बीतक तब कही, जब लई मासूकें उठाए।
जब मैं हुती विरह में, तब क्यों मुख बोल्यो जाए।।२४।।

अपने साथ हब्शे में घटित होने वाले विरह के इस घटनाक्रम को मैनें सुन्दरसाथ के समझ तब कहा, जब प्रितमय परब्रह्म ने मुझे जागृत किया तथा अन्य ब्रह्मात्माओं के अतिरिक्त लाभ के लिये इसे प्रकट करने का निर्देश दिया, अन्यथा जब मेरा हृदय विरह के सागर में डूबा हुआ था, उस समय मुझसे इसके सम्बन्ध में कुछ भी कहा जाना सम्भव नहीं था।

ए तो विरहा उपज्या ख्वाब में, चढ़ते चढ़ते पाए।
जब विरहा तामस बढ्या, तब नींद दई उड़ाए।।२५।।

अपने प्राणेश्वर को पाने के लिये इस नश्वर संसार में मेरे हृदय में विरह उत्पन्न हुआ जो, क्रमशः पल - पल बढ़ता ही गया। जब तामस का विरह उत्पन्न हुआ अर्थात् मैनें जब यह निर्णय ले लिया कि प्रियतम के दर्शन के बिना इस शरीर का अस्तित्व

निरर्थक है तो उन्होंने मुझे प्रत्यक्ष दर्शन दिया तथा मेरी मायावी निद्रा को समाप्त कर मुझे जागृत किया।

विरहा नहीं ब्रह्मांड में, बिना सोहागिन नार।
सोहागिन अंग इमाम को, वतन पार के पार।।२६।।

इस नश्वर जगत में ब्रह्ममुनियों के अतिरिक्त अन्य किसी को विरह की वास्तविक अवस्था प्राप्त ही नहीं होती है। ये ब्रह्ममुनि साक्षात् परब्रह्म के अंग स्वरूप हैं, और इनका मूलघर परमधाम है जो निराकार तथा बेहद से भी परे है।

भावार्थ - जीव सृष्टि का मार्ग कर्मकाण्ड का है तथा ईश्वरीय सृश्टि का मार्ग उपासना का है। मात्र ब्रह्मसृष्टि ही विरह की अग्नि में स्वंय को जलाती है तथा प्रेम में डूबकर अपने प्राणेश्वर को अपने हृदय धाम में बसाती है।

अब कहूं मोमिन की, जाए कहिए सोहागिन।
ए विरहिन ब्रह्मांड में, हुती ना एते दिन।।२७।।

अब मेरे द्वारा परमधाम के उन ब्रह्ममुनियों के विशय में कुछ कहा जा रहा है। इन्हें ही सच्चिदानन्द परब्रह्म की अंगस्वरूप आत्मायें कहा जाता है। परब्रह्म के विरह - प्रेम में गोता लगाने वाली ये ब्रह्मात्मायें आज दिन तक (ब्रज को छोड़कर) इस संसार मे कभी भी नहीं आयी थी।

सो सोहागिन जेतियां, इमाम की विरहिन।
सो अन्तर हकें पकड़ी, ना तो रहे ना तन।।२८।।

माया का खेल देखने के लिये परमधाम की आत्मायें इस संसार में आयी हैं। इन्हें ही प्रियतम परब्रह्म के विरह में तड़पने की शोभा है। सच्चिदानन्द परब्रह्म ने अपनी प्रेमभरी कृपा से इन्हें आन्तरिक रूप से संभाला होता है अन्यथा ये अपने प्राणेश्वर की पहचान होने के पश्चात् विरह में अपना तन छोड़ देती।

भावार्थ - 'इमाम' शब्द का अर्थ पथ प्रदर्शक, निर्देशक या सन्मार्ग दर्शाने वाला होता है। परब्रह्म के अगं स्वरूप ब्रह्ममुनियों (मोमिनों) के पक्ष प्रदर्शक एक मात्र परब्रह्म ही हैं जो इस संसार में इमाम महदी (श्री प्राणनाथ जी) के स्वरूप में प्रकट हुए हैं। उपरोक्त २६ तथा २८वीं चौपाई के अतिरिक्त अनेकों ऐसी चौपाइयां है जिनमें 'इमाम' का अर्थ परब्रह्म ही होता है -

महामति जोए इमाम जी, जाहेर क्याउं फुरमान। सनंध ३५/३०

मैं अंग इमाम को, मोमिन मेरे अंग। सनंध ११/४६

ए सुध दई इमामें, मोहे गुझ कियो प्रकास।
तो ए जाहेर होत है, गयो तिमर सब नास।।२६।।

प्रियतम परब्रह्म ने मुझे विरह का रस पान कराया (सुधि दी) और मेरे धाम हृदय में विराजमान होकर परमधाम के गुह्यतम ज्ञान का प्रकाश किया। इसके परिणाम स्वरूप मेरे हृदय से माया का अन्धकार समाप्त हो गया तथा उन्हीं की प्रेरणा से अब वह अलौकिक ज्ञान प्रकट हो रहा है।

मेंहेंदी महंमद प्यारे मोमिनो, सो जुबां कह्यो ना जाए।
पर हुआ है मुझे हुकम, सो कैसे कर ढंपाए।।३०।।

श्री प्राणनाथ जी (मुहम्मद महदी) को ब्रह्ममुनि इतने अधिक प्रिय हैं कि उसका वर्णन इस जिह्वा से नहीं हो सकता, किन्तु उनका (श्री जी का) आदेश है कि मैं उसे प्रकट करूं। ऐसी स्थिति में उसे छिपाये रखना मेरे लिये भला कैसे सम्भव हो सकता है?

अनेक करहीं बंदगी, अनेक विरहा लेत।
ए सुख तिन सुपने नहीं, जो हमको जगाए देत।।३१।।

यद्यपि, इस संसार में परब्रह्म की भक्ति अनेकों लोग करते हैं, विरह की राह पर भी चलने का प्रयास करते हैं, किन्तु प्राणवल्लभ अक्षरातीत हमें जागृत करके जो सुख दे रहे हैं, वह उन्हें स्वप्न में भी नहीं प्राप्त हो सकता।

छल तें मोहे छुड़ाए के, कछु दिया विरहा संग।
सो भी विरहा छुड़ाइया, देकर अपनो अंग।।३२।।

अक्षरतीत श्री राज जी ने पहले मुझे लौकिक प्रपंच रूप माया से छुड़ाकर विरह के रस में कुछ (थोड़ा सा) डूबो दिया। पुनः अपना हृदय देकर अर्थात् मेरे धाम हृदय में विराजमान होकर उन्होनें मुझे विरह से भी अलग कर दिया।

भावार्थ - उपरोक्त चौपाई का प्रसंग उस समय का है, जब श्री मिहिरराज जी जामनगर के मन्त्री के सचिव पद को सम्भाल रहे थे। उन्हे इस प्रपंच से मुक्त करने के लिये परब्रह्म ने हब्शे में भिजवाया, जहां विरह में तड़प - तड़प कर उन्होंने अपने

आराध्य प्राणेश्वर को पा लिया। यद्यपि अंग का अर्थ हृदय होता है, किन्तु यहां आवेश स्वरूप से आशय है। परमधाम में विराजमान श्री राज जी का जो नूरमयी स्वरूप है, वह इस नश्वर जगत में नहीं आ सकता। ऐसी स्थिति में उनकी इच्छा शक्ति से प्रकट हुआ स्वरूप ही परब्रह्म की भूमिका निभाता है, जिसे आवेश स्वरूप या हुक्म का स्वरूप कहते हैं। इसे ही उपरोक्त चौपाई में अंग कहा गया है।

अंग नूर बुध देय के, कहे तूं प्यारी मुझ।
देने सुख सबन को, हुकम करत हूं तुझ।।३३।।

मेरे हृदय में जागृत बुद्धि का प्रकाश देकर उन्होने स्पष्ट कहा कि तुम मुझे बहुत प्रिय हो। सब सुन्दरसाथ को जागनी लीला का सुख देने के लिये में तुम्हें आदेश देता हूं।

भावार्थ - अपनी आत्मा के धाम हृदय में श्री राज श्यामा जी की शोभा को बसा लेना ही आत्म-जागृति है। इस कार्य को श्री महामति जी के तन के द्वारा सम्पादित करना ही उनके द्वारा सबको सुख देना है।

तुम दुख पाया मुझे सालहीं, अब सब सुख तुम हस्तक।
दिया तुमारा पावहीं, दुनियां चौदे तबक।।३४।।

श्री राज जी श्री महामति जी से कहते है कि तुमने इस मायावी जगत में जो दुःख देखा है, वह मेरे हृदय में चुभता है। अब मैं परमधाम का सारा सुख तुम्हारे हाथ में सौपंता हूं। चौदह लोकों का यह ब्रह्माण्ड तुम्हारे ही माध्यम से बेहद मण्डल के अखण्ड सुख का रसपान करेगा।

दुख पावत हैं मोमिन, सो हम सह्यो न जाए।
हम भी होसी जाहेर , पेहेले सोहागनियां जगाए।।३५।।

इस मायावी जगत में ब्रह्ममुनि (मोमिन) दुःखी हो रहे हैं। उनका दुःखी होना मुझसे सहा नहीं जाता है। मैं उचित समय पर अपनी पहचान और गरिमा से उजागर (प्रकट) हो जाउंगा, किन्तु तुम पहले परमधाम की आत्माओं को जागृत करो

द्रष्टव्य - परब्रह्म मानवीय सुख - दुःख की परिधि से सर्वथा परे है। उनका दुःखी

होना लीला रूप में ही है।

सिर ले आप खड़ी रहो, कहे तूं सब सैयन।
प्रकास होसी तुझ से, दृढ़ कर देख मन।।३६।।

तूं मेरे इस कथन को शिरोधार्य कर और जागनी कार्य में दृढ़तापूर्वक लग जा। सब सुन्दरसाथ (ब्रह्मात्माओं) को मेरी पहचान कराओ। तुम अपने मन में दृढ़तापूर्वक इस बात पर विचार करके देख लो कि परमधाम के ज्ञान का प्रकाश तुझसे ही होना है।

तोसों ना कछू अंतर, तूं है सोहागिन नार।
माएने गुझ बताए के, खोल दे पार द्वार।।३७।।

तुम्हारे और मेरे बीच किसी भी प्रकार का अन्तर नहीं है क्योकि तुम मेरी अंगस्वरूप ब्रह्मात्मा हो। तूं तारतम ज्ञान के प्रकाश में सभी धर्मग्रन्थों में परमधाम सम्बन्धी छिपे हुए रहस्यों को प्रकट कर और निराकार - बेहद से परे परमधाम की पहचान करा।

जो कबूं जाहेर ना हुई, सो ए करी तुझे सुध।
अब थें आद अनाद लों, जाहेर होसी निज बुध।।३८।।

अनादि काल से सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय का चक्र चलता आ रहा है किन्तु आज दिन तक किसी भी सृष्टि में परमधाम की शोभा तथा लीला का ज्ञान अवतरित नहीं हुआ था। मैनें वह सारा ज्ञान तुम्हारे धाम हृदय में प्रकट कर दिया है। निजबुद्धि के प्रकाश में वह ज्ञान तुम्हारें द्वारा ही चारों ओर फैलेगा।

भावार्थ - अक्षर ब्रह्म की निजबुद्धि जागृत बुद्धि (इस्राफिल) है। परमधाम में अक्षरातीत, श्यामा जी एंव ब्रह्मात्माओं में प्रेममयी निजबुद्धि है।

जिस चौपाई में निजबुद्धि शब्द का प्रयोग हो, वहां दोनों बुद्धियों का समावेश समझ लेना चाहिए।

तोहे तो सब सुध परी, कहूं अटके नहीं निरधार।
आगे होए सोहागनी, कराओ सबों दीदार।।३९।।

हे महामति ! तुझे अब इस ब्रह्माण्ड से लेकर परमधाम तक का सारा ज्ञान हो गया है। निश्चित रूप से तुम्हें इसमें कहीं भी अटकना नहीं पड़ेगा। तुम सभी ब्रह्मात्माओं का पथ - प्रदर्शक बनकर मेरी तथा परमधाम की शोभा का दर्शन कराओ।

चौदे तबक कायम होएसी, सब हुकम के प्रताप।
ए सोभा तुझे सोहागनी, जिन जुदी जाने आप।।४०।।

चौदह लोकों का यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड तुम्हारे आदेश से योगमाया में अखण्ड होगा। ऐसी अलौकिक लीला करने की शोभा मैने तुम्हें दी है। तुम मुझसे अपने को अलग न समझो।

भावार्थ - कबीर, शुकदेव एवं नानक जी से श्री प्राणनाथ जी की तुलना करने वालों को यह आत्म मन्थन करना चाहिए कि वे किस अन्धकार में भटक रहे हैं? क्या श्री महामति जी के अतिरिक्त इस सृष्टि में अन्य किसी भी व्यक्तित्व को यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है कि वह समस्त ब्रह्माण्ड को अखण्ड मुक्ति दे सके।

जो कोई सब्द संसारमें, ना खुले माएने कब।
सो सब खातिर मोमिनों, तूं खोलसी माएने अब।।४१।।

संसार में जितने भी धर्मग्रन्थ है, उनके गुह्य रहस्यों को आज तक किसी ने भी नहीं जाना है। किन्तु ब्रह्ममुनियों को सुख देने के लिये हे महामति! तुम सभी धर्मग्रन्थों (वेद, कुर्आन, बाइबल) के वास्तविक अभिप्राय को स्पष्ट करो।

तूं देख दिल विचार के, उड़ जासी असत।
सारों के सुख कारने, तूं जाहेर भई महामत।।४२।।

हे महामति ! तुम अपने हृदय में इस बात का अच्छी तरह से विचार करके देख लो। तुम्हारे तन से अवतरित होने वाले अनुपम ज्ञान से अज्ञानता का अन्धकार नश्ट हो जायेगा। इस संसार में तुम्हारा अवतरण ही सबको (ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीय तथा जीवसृष्टि) को सुख देने के लिये हुआ है।

भावार्थ - जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश का लाभ सभी को प्राप्त होता है, उसी प्रकार अनुपम तारतम ज्ञान से अपने - अपने अंकूर एवं आचरण के अनुसार तीनों सृष्टियों को सुख मिलेगा। ब्रह्मसृष्टियों को परमधाम का सुख मिलेगा तो ईश्वरीय सृष्टि को परमधाम की सुधि (पहचान) मिलेगी और जीव सृष्टि योग माया के ब्रह्माण्ड में अखण्ड मुक्ति को प्राप्त करेगी।

खेल किया तुम खातिर, सो तूं कहो आगे मोमिन।
पेहेले खेल देखाए के, पीछे मूल वतन।।४३।।

जिन ब्रह्मसृष्टियों को माया का खेल दिखाने के लिये यह मायावी जगत बनाया

गया है, उनके पास जाकर तुम तारतम ज्ञान का प्रकाश करना। पहले ब्रह्मात्माओं को माया का खेल दिखाना है, तत्पश्चात् उन्हें परमधाम ले चलना है।

अंतर रूहोंसों जिन करो, जो मोमिन हैं अर्स घर।
पीछे चौदे तबक में, जाहेर होसी आखिर।।४४।।

जो परमधाम के ब्रह्ममुनि हैं, उनसे तुम किसी भी प्रकार का भेद या छिपाव नही करना। महाप्रलय के पश्चात् योगमाया के ब्रह्माण्ड में मेरी पहचान देने वाला यह अलौकिक ज्ञान चौदह लोकों के सभी प्राणियों में फैल जायेगा।

भावार्थ - सुन्दरसाथ से भेद न करने का तात्पर्य है - प्रान्त, वर्ग, रूप, कुल, धन, प्रतिष्ठा आदि के आधार पर किसी भी प्रकार का भेद न करना। 'अन्तर' शब्द का अर्थ छिपाव रखना भी होता है। इस प्रकार पहले चरण का आशय है - सुन्दरसाथ से ज्ञान की कोई भी बात न छिपाना।

वर्तमान समय में मात्र पृथ्वी लोक में ही तारतम ज्ञान का प्रकाश है, स्वर्ग, बैकुण्ठ, में नही। इस आधार पर यही कहा जा सकता है कि सभी लोक के प्राणी तारतम ज्ञान के प्रकाश को बेहद मण्डल सें ही प्राप्त कर सकेंगे। पृथ्वी लोकों के कुछ भागों में भी तारतम ज्ञान का फैल जाना चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में तारतम ज्ञान का प्रकट (जाहिर) होना है। जाहिर (प्रकट) होने तथा फैल जाने में अन्तर होता है। सीमित क्षेत्र में ज्ञान के अस्तित्व के होने को भी प्रकट होना माना जा सकता है किन्तु फैलने का तात्पर्य है - सबके या अधिंकाश लोगों के द्वारा ग्रहण कर लिया जाना।

बड़ा सुख आगे मोमिन, पीछे सुख संसार।
एक दीन सब होएसी, घर घर सुख अपार।।४५।।

तारतम ज्ञान से परमधाम तथा अक्षरातीत की पहचान का सबसे अधिक सुख ब्रह्ममुनियों को होगा। इसके पश्चात् संसार के लोगों को उसका सुख प्राप्त होगा। इस अलौकिक ज्ञान के प्रभाव से संसार के सभी लोग एक सत्य के अनुयायी हो जायेगे और घर - घर में अखण्ड सुख की अनूभुति होगी

भावार्थ - श्री प्राणनाथ जी के साथ पन्ना जी पहुचने वाले ५००० सुन्दरसाथ में ५०० ब्रह्म सृष्टि, १५०० ईश्वरीय सृष्टि तथा ३००० जीव सृष्टि थी। उत्तम जीव भी ब्रह्ममुनियों की सानिध्यता में तारतम ज्ञान का अनुशीलन करके अवश्य सुख प्राप्त करेंगे,

किन्तु सम्पूर्ण जीव सृष्टि योगमाया के ब्रह्माण्ड में ही पूर्ण रूप से परब्रह्म के चरणों में आयेगी। उपरोक्त चौपाई में दूसरे चरण का यही आशय है। चौपाई के चौथे चरण का भाव यह है कि परमधाम के ज्ञान को ग्रहण करके उस पर आचरण करने वालों के ही घर - घर अखण्ड सुख का अनुभव होगा, सभी को नहीं। सम्पूर्ण जीव सृष्टि अपने अपराधों का प्रायश्चित् करने के पश्चात् योगमाया में ही अखण्ड सुख को प्राप्त कर पायेगी।

तें वचन कहे जो मुख थें, होसी तिनसे बड़ो प्रकास।
असत उड़सी तूल ज्यों, होसी कुफर सब नास।।४६।।

हे महामति! तुम्हारे मुख से ब्रह्मवाणी का अवतरण होगा, जिससे अखण्ड परमधाम के अलौकिक ज्ञान का प्रकाश इस प्रकार फैलेगा कि अज्ञानता का सम्पूर्ण अन्धकार हवा के झोकों से उड़ जाने वाले आक (मदार) के फुए की भांति नष्ट हो जायेगा।

भावार्थ - असत्य या अज्ञानता का अन्धकार प्राणियों के हृदय में निवास करता है। हृदय में ब्रह्मज्ञान का प्रकाश आते ही अज्ञान रूपी माया का अन्धकार अति सरलता से नष्ट हो जाता है, जिसे आक के फुए से उड़ने के दृष्टान्त से दर्शाया गया है।

तूं लीजे नीके माएने, तेरे मुख के बोल।
जो साख देवे रूह अपनी, तो लीजे सिर कौल।।४७।।

मेरा ज्ञान तुम्हारे मुख से ही अवतरित होगा। तुम इसके अभिप्राय को अच्छी प्रकार से ग्रहण करना। तुम्हारी अन्तरात्मा जिस सत्य की साक्षी दे, उसे मेरा ही कथन मानकर शिरोधार्य करना अर्थात् उसे परम सत्य मानकर आचरण में उतारना।

देत हों बल सबन को, जो हैं असलू मोमिन।
तूं पूछ देख दिल अपना, कर कारज दृढ़ मन।।४८।।

इस संसार में जो भी यथार्थ रूप में परमधाम के ब्रह्ममुनि हैं, मैं उन्हें आध्यात्मिक बल (ज्ञान, प्रेम, समर्पण, श्रद्धा आदि) प्रदान करता हूं। तूं अपने हृदय से पूछ कर देख कि क्या मैं ही तुम्हारे अन्दर विराजमान नहीं हूं। मुझे अपने हृदय में विद्यमान मान कर तूं जागनी कार्य की सेवा के लिये अपने मन में दृढ़ता ला।

मैं अंग इमाम को, मोमिन मेरे अंग।
बीच आए तिन वास्ते, करूं सब एक संग।।४९।।

श्री मेहमत साहिबुज्जमां स्वरूप महामति जी के हृदय में विराजमान श्यामा जी की आत्मा कहती है कि मैं परब्रह्म अक्षरातीत की अंग रूपा हूं तथा सभी ब्रह्ममुनि मेरे ही अंग हैं। सभी माया का खेल देखने इस संसार में आए हैं। अब मैं तारतम ज्ञान के प्रकाश

में सबको परब्रह्म की पहचान कराकर एकत्रित करूंगी।

।।प्रकरण।।११।।चापाई।।२४७।।

सनंध-मोमिन को ढूंढ़ने की

इस प्रकरण में तारतम ज्ञान के प्रकाश में ब्रह्ममुनियों को जागृत करने का प्रसंग है।

अब ढूंढों रूहें अर्स की, जो हैं मूल अंकूर।
सो निज वतनी मोमिन, खसम अंग निज नूर।।१।।

श्री महामति जी कहते हैं कि अब मैं परमधाम की उन ब्रह्मात्माओं को खोजूंगा जिनका परमधाम से अनादि काल से अखण्ड सम्बन्ध है अर्थात् उनके मूल नूरमयी तन वहां पर हैं। उनका मूल निवास ही परमधाम हैं तथा सच्चिदानन्द परब्रह्म की अंग स्वरूपा हैं, और उन्हीं का नूर है।

भावार्थ - अक्षरातीत श्री राज जी के अनुपम स्वरूप में अलौकिक आभा, तेज, सौन्दर्य, ओजस्विता, कान्ति, ज्योति और प्रेम है। वह प्रत्येक ब्रह्मात्मा में एकत्व (वहदत) की दृष्टि से है। इसी तथ्य को उपरोक्त चौपाई के चौथे चरण में 'निजनूर' कहा गया है अर्थात् श्री राज जी का नूर ही ब्रह्मात्माओं के रूप में क्रीड़ा करता है।

नूर पार पिउ एक खुद हैं, और न दूजा कोए।
और नार सब माया, यामें भी रूह दोए।।२।।

अक्षर ब्रह्म से परे स्वलीला अद्वैत परमधाम में एकमात्र प्रियतम अक्षरातीत हैं। उनके अतिरिक्त वहां अन्य कोई भी दूसरा नहीं है। इस कालामाया के ब्रह्माण्ड में केवल माया का ही साम्राज्य है। जो अक्षर ब्रह्म के मन अव्याकृत के स्वाप्निक रूप आदिनारायण की अर्द्धांगिनी के रूप में है, इस खेल में ब्रह्मसृष्टियों के अतिरिक्त दो अन्य सृष्टियां भी है।

भावार्थ - 'स्वरूप एक है लीला दोए' परि. ३/८ के कथनानुसार अक्षर तथा अक्षरातीत को दो स्वरूप नहीं माना जा सकता। श्यामा जी, ब्रह्मसृश्टिया तथा अक्षर की आहलादिनी शक्ति भी श्री राज जी की ही अंग रूपा है। इस प्रकार लीला रूप में पांच स्वरूपों के होते हुए भी मात्र एक ही स्वरूप अक्षरतीत परब्रह्म का माना जायेगा।

इत असलू रूह विश्णु की, दूजी रूह कुफरान।
इन दोऊ से न्यारे मोमिन, सो आगे कहूंगी पेहेचान।।३।।

इस संसार मे भगवान विष्णु के समान अन्य ईश्वरीय सृष्टि है जो वास्तविक है। दूसरी जीव सृष्टि है जो स्वाप्निक है और परब्रह्म की यथार्थ पहचान से दूर रहती है।

ब्रह्मसृष्टि इन दोनों से ही अलग है, जिनकी पहचान आगे बतायी जायेगी

भावार्थ - भगवान विष्णु की गिनती अक्षर ब्रह्म की पंचवासनाओं में होती है। यद्यपि व्रज, रास एवं जागनी ब्रह्माण्ड में आने वाली ईश्वरीय सृष्टि अक्षर ब्रह्म की पंचवासनाओं से अलग हैं किन्तु आत्मिक दृष्टि से दोनों अक्षर की ही सूरता है।

जो नहीं विष्णु महाविष्णु को, बुध जी पोहोंचे तित।

प्र. हि. के इस कथन से स्पष्ट है कि विष्णु और महाविष्णु (आदिनारायण) अलग-अलग है। इस अनन्त सृष्टि का संचालक अक्षर ब्रह्म के मन (अव्याकृत) का स्वाप्निक रूप आदि नारायण है जिसके संकल्प (कुन्न) से सम्पूर्ण जीव सृष्टि उत्पन्न होती है। इसे ही उक्त चौपाई में 'कुफरान' कहा गया है। यद्यपि इस सृष्टि में भी बड़े बड़े योगी, यति, तपस्वी, और पैगम्बर हो चुके हैं किन्तु तारतम ज्ञान के अभाव में परब्रह्म की वास्तविक पहचान न होने से इन्हें स्वाप्निक (कुफरान) मान लिया गया।

इस प्रकरण की चौ. ३ और ४ में विष्णु शब्द से आशय कहीं पांचवासना में एक विष्णु भगवान से है, जो इस चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड से जुड़े हैं तो कही विष्णु शब्द का आशय महाविष्णु (आदिनारायण) से है, जो सम्पूर्ण जीव सृष्टि के ईश्वर हैं। जिस प्रकार प्रकट वाणी में कथित 'या समें श्री बैकुण्ठ नाथ, इच्छा दरसन करने साथ' में बैकुण्ठनाथ का अर्थ अक्षर ब्रह्म है, जबकि बैकुण्ठ नाथ का अर्थ 'भगवान विष्णु' होता है जैसे 'बैकुण्ठ नाथ को कैसी खबर।'

इसी प्रकार इस प्रकरण की उपरोक्त दोनों (३व४) चौपाईयों में विष्णु शब्द का आशय समझना चाहिए। कुर्आन में महाविष्णु को अजाजील तथा अव्याकृत के महाकारण में स्थित सुमंगला - पुरूष को नूरी अजाजील कह कर वर्णित किया गया हैं। कुर्आन में इन तीनों सृष्टियों को अंगूर, खजूर तथा घास कहकर दर्शाया गया है।

मोमिन सुख असल वतनी, विष्णु का सुख और।
दुनी विष्णु कायम होएसी, कजा कहूंगी तिन ठौर।।४।।

ब्रह्ममुनियों का सुख अखण्ड परमधाम का है। विष्णु भगवान जैसी ईश्वरीय सृष्टि का सुख बेहद मण्डल में है। आदिनारायण के स्वप्न में बने हुए इस ब्रह्माण्ड की जीव सृष्टि न्याय के दिन योगमाया के ब्रह्माण्ड में अखण्ड हो जायेगी। इस न्याय की शोभा भी मेरे द्वारा योगमाया के ब्रह्माण्ड (सत्स्वरूप की पहली बहिश्त) में होगी।

भावार्थ - न्याय के दिन श्री मिहिरराज जी का जीव परब्रह्म की नकल का रूप

(प्रतिबिम्ब) बनकर संसार के समस्त जीवों का न्याय करेगा और उन्हें अखण्ड मुक्ति प्रदान करेगा।

अब लछन देखो मोमिन के, जो अरवाहें अर्स घर।
ए वतनी वचन सुन के, आवत हैं तत्पर।।५।।

जिन ब्रह्ममुनियों का मूल घर परमधाम है, उनके लक्षणों का विचार कीजिए। उनका एक लक्षण तो यह है कि तारतम ज्ञान के इन अनमोल वचनों को सुनकर ब्रह्मात्मायें शीघ्रातिशीघ्र परब्रह्म के चरणों में आ जाती है।

अटक रह्या साथ आधा, जिन खेल देखन का प्यार।
ए किया मूल इन खातिर, जो हैं तामसियां नार।।६।।

व्रज में लगभग आधे सुन्दरसाथ (तामसी सखियो) की मायावी खेल देखने की इच्छा पूर्ण नहीं हो सकी थी क्योंकि प्रियतम के प्रेम में निरन्तर डूबी रहने के कारण वे माया का दुःख नहीं देख सकी थी। उनकी इस इच्छा को पूर्ण करने के लिये ही यह माया का खेल बनाया गया है।

भूल गइयां खेल में, जो मोमिन हैं समरथ।
नूर इमाम को मुझ पे, केहे समझाऊं अर्थ।।७।।

अनुपम सामर्थ्य वाले ब्रह्ममुनि भी इस मायावी जगत में आकर स्वयं को अपने मूल घर को तथा अपने प्राणेश्वर अक्षरातीत को भूल गये हैं। मेरे पास प्रियतम परब्रह्म का दिया हुआ अलौकिक तारतम ज्ञान है, जिसके द्वारा वास्तविक सत्य को दर्शाकर मुझे इन्हें जागृत करना है।

सबों को भेली करूं, दृढ़ कर देऊं मन।
खेल देखाऊं खोल के, जिन बिध ए उतपन।।८।।

मुझे तारतम ज्ञान के प्रकाश में सभी ब्रह्मसृष्टियों को एकत्रित करना है और उनके मन में प्रियतम परब्रह्म तथा परमधाम के प्रति दृढ़ता स्थापित करनी है। यह मायावी संसार क्यों और किस प्रकार उत्पन्न हुआ है, इस रहस्य को भी मुझे सबके समक्ष बताना है।

ए खेल है जोरावर, बड़ो ते रचियो छल।
ए तब जाहेर होएसी, जब काढ़ देखाऊँ बल।।९।।

माया का यह खेल बहुत ही शक्तिशाली है। इसकी रचना में चारों ओर छल ही छल का साम्राज्य दृष्टिगोचर होता है। जब मेरे हृदय द्वारा तारतम ज्ञान के प्रकाश में सब के हृदय से माया का प्रभाव हटा दिया जायेगा तभी प्राणेश्वर परब्रह्म का परमधाम की पहचान कराने वाला ज्ञान उजागर हो सकेगा।

भावार्थ - तारतम वाणी से माया का विष समाप्त हो जाता है। इसलिये प्र. हि. ३१/१३ में कहा गया है कि-

तारतम रस वाणी कर, पिलाइये जाको।
जेहेर चढ़या होए जिमी का, सुख होवे ताको।।

हृदय मे तारतम ज्ञान के प्रवेश करते ही माया का अन्धकार हटने लगता है और परब्रह्म तथा उनकी वाणी के प्रति अटूट निष्ठा तथा विश्वास पैदा होता है। इस स्थिति में ही ज्ञान का प्रकाश फैल सकता है। इस प्रकार यह बात स्पष्ट होती है कि मलिन हृदय में भी तारतम ज्ञान से निर्मलता आती है तथा संसार में तारतम का प्रकाश फैलाने के लिये लोगों के हृदय का शुद्ध होना भी आवश्यक है, तभी वे इसे आत्मसात् कर सकेंगे।

तुम नाहीं इन छल के, और छल को जोर अमल।
सांची को झूठी लगी, ऐसो छल को बल।।१०।।

हे साथ जी! आप इस मायावी जगत के नहीं हैं। इस संसार में माया के विषय सुखों की ही प्रबलता है। इस माया की ऐसी शक्ति है कि इसने सच्ची ब्रह्मसृष्टियों को भी अपने जाल में उलझा लिया है।

भावार्थ - शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध ये माया के विषय सुख है। इन्हें ही माया का नशा कहा गया है। जो भी इनके बन्धन में फंस जाता है, उसका निकल पाना कठिन हो जाता है।

तुम आइयां छल देखने, भिल गैयां मांहे छल।
छल को छल न लागहीं, ओ लेहेरी ओ जल।।११।।

हे साथ जी! आप माया का खेल देखने मात्र के लिये आये थे किन्तु इस समय पूरी तरह माया में मिल गये हैं। अपने मन को सन्तोष देने के लिये माया के जीवों से आप अपनी तुलना न करें कि वे भी तो माया में लिप्त हैं। वे तो मोह सागर की लहरों के रूप में उत्पन्न हुए हैं। उनके ऊपर भला माया अपना क्या प्रभाव डालेगी?

भावार्थ – काले वस्त्रों को काले रंग से रंगने पर कुछ भी पता नहीं चलता क्योंकि दोनों का रग एक ही होता है किन्तु यदि श्वेत वस्त्र पर काले रंग का एक भी छींटा पड़ जाय तो सबकी दृष्टि बार – बार उसी पर जाती है कि यहां कालापन है। यही स्थिति जीव सृष्टि तथा ब्रह्म सृष्टि के माया में लिप्त होने के सन्दर्भ मे है। जीव सृष्टि का बड़ा सा योगी निराकार को पार नहीं कर पाता, जबकि ब्रह्मसृष्टि उसी निराकार (मोहसागर) से बने हुए इस मायावी खेल को देखने के लिये आयी है। वह तो निराकार – बेहद से परे परमधाम की रहने वाली है।

ए झूठी तुम को लग रही, तुम रहे झूठी लाग।
ए झूठी अब उड़ जाएसी, दे जासी झूठा दाग।।१२।।

इस स्वप्नवत् जगत के मिथ्या प्रपंचों ने आपको पकड़ रखा है और आपने इस संसार को। यद्यपि तारतम ज्ञान के प्रकाश एवं परब्रह्म के प्रेम में यह मायावी प्रपंच तो आपके हृदय से अवश्य निकल जायेगा किन्तु आपके ऊपर यह कलंक निश्चित रूप से बना रहेगा कि आप भी इसमें लिप्त हेा गये थे।

हांसी होसी अति बड़ी, जिन मोहे देओ दोस।
कमी कहे मैं ना करूं, पर तुम छल हुआ सिरपोस।।१३।।

आपकी इस भूल की परमधाम में बहुत अधिक हांसी होगी। आपको समझाने में मैंने किसी भी प्रकार की कमी नहीं की है। अतः आप मुझे दोषी नहीं बनाना कि हमें तो सावचेत किया ही नहीं गया था। मुझे विदित है कि माया का जल आपके शिर के ऊपर से बह रहा है अर्थात् मोह सागर में आप पूरी तरह से डूब गये हैं।

मांग लिया खसम पें, ए छल तुम देखन।
जो कदी भूली छल में, तो फेर न आवे ए दिन।।१४।।

आपने अपने प्राणेश्वर अक्षरातीत से माया का खेल देखने की इच्छा की थी किन्तु इस समय भी यदि आप मिथ्या मायावी प्रपंचों में ही भूले रहते हैं तो पुनः आपको जागृत होने का इस प्रकार का सुनहरा अवसर नहीं मिलेगा।

भावार्थ – श्री महामति जी के तन से होने वाली जागनी लीला का सुख अनुपम है। यद्यपि जब तक आत्मा जागृत नहीं होगी, तब तक वह जागनी लीला में अनेक तनों में बारी – बारी से विद्यमान होकर इस खेल को देखती रहेगी। सम्भवतः तारतम ज्ञान के

प्रकाश में वह जागृत भी हो जायेगी, किन्तु श्री महामति जी के साथ जागनी लीला में जागृत होकर सुख लेने का स्वर्णिम अवसर उसे पुनः नहीं मिल सकेगा।

तुम मुख नीचा होएसी, आगूं सब मोमिन।
ए हांसी सत वतन की, कोई मोमिन कराओ जिन।।१५।।

हे साथ जी! यदि आप माया की नींद को छोडकर जागृत नहीं हुए तो परमधाम में जागृत होने पर सभी ब्रह्मात्माओं के समक्ष आपका सिर लज्जा से झुक जायेगा। मेरी यही इच्छा है कि कोई भी सुन्दरसाथ माया में लिप्त होने की ऐसी भूल न करे जिससे कि परमधाम में उसकी हंसी हो।

भावार्थ – इन चौपाईयों को पढ़कर उन सुन्दरसाथ को आत्ममन्थन करना चाहिए जो आलस्य एवं मोह के वशीभूत होकर यही कहते रहते है, कि अभी चितवनी की क्या जल्दी है, बुढ़ापे में कर लेंगे? अभी तो इस संसार में सुख लेने का समय है।

दुख ले चलसी इत थें, नहीं आवन दुजी बेर।
तिन क्यों मुख ऊंचा होएसी, जो खसम सों बैठी मुख फेर।।१६।।

यदि आप माया में इसी प्रकर लिप्त रहे तो यहां से चलते समय आपको हांसी का दुःख लेकर चलना पड़ेगा। आपको इस खेल में पुनः दूसरी बार आने का भी अवसर नहीं मिलेगा जिससे कि आप अपनी पहले वाली भूलों को सुधार सकें। इस समय जो सुन्दरसाथ प्रियतम परब्रह्म से मुख मोड़कर बैठे हैं अर्थात् माया में लिप्त है, परमधाम में जागृत होने पर उनका मुख ऊंचा कैसे हो सकता है?

तुमें सुध छल ना अपनी, ना सुध हक वतन।
बताए देऊं या विध, ज्यों दृढ़ होवे आप मन।।१७।।

आप इस मायावी जगत में इतने अधिक भटक गये हैं कि इस समय न तो आपको इस संसार की ही पहचान है, न अपनी और न अपने प्राणेश्वर अक्षरातीत तथा परमधाम की ही पहचान है। अब मैं तारतम ज्ञान के प्रकाश में इनकी वास्तविकता बता रहा हूं जिससे आपके मन में दृढ़ता आ जाय।

ए छल पेड़ थें देखाए बिना, ना छूटे याको बल।
उड़ाए देऊं जड़ पेड़ से, ज्यों उतर जाए अमल।।१८।।

जब तक इस स्वप्नमयी जगत के मूल कारण की पहचान नहीं होती तब तक इसकी शक्ति (अज्ञान) को परास्त कर इससे छूटकारा नहीं पाया जा सकता। मैं तारतम

ज्ञान के प्रकाश में इस प्रपंचमयी जगत को कारण सहित समाप्त कर देता हूं, जिससे मोहमयी जगत का नशा समाप्त हो जाय।

भावार्थ - ब्रह्मात्माओं को खेल दिखाने के लिये ही यह मोहमयी जगत बनाया गया है। जब तारतम ज्ञान के प्रकाश में कोई ब्रह्मात्मा अपने धाम हृदय में युगल स्वरूप की छवि बसा लेती है तो यह संसार उसके लिये रहते हुए भी नहीं रहता है। इसी तथ्य को कि. / में कहा गया है कि 'लगी वाली कुछ और न देखे, पिण्ड ब्रह्माण्ड वाको है री नाहीं।' इसे ही जीते जी संसार का प्रलय कर देना कहते है।

अब देखो इन छल को, जो देखन आइयां तुम।
नूर जोस देऊं अंग में, जो कोई मोमिन मुस्लिम।।१६।।

हे साथ जी! अब आप इस मायावी खेल को द्रष्टाभाव से देखिए जिसके लिये आप इस नश्वर जगत में आए है। आप में जो भी ब्रह्मसृष्टि या ईश्वरीय सृष्टि है, उसके हृदय में मैं तारतम ज्ञान का प्रकाश करके परब्रह्म का जोश दूगां।

भावार्थ - जब सत्य ज्ञान से परब्रह्म की पहचान हो जाती हैं और आत्मा अटूट विश्वास के साथ परब्रह्म के लिये अपने हृदय में विरह - प्रेम का सिंहासन सजा देती है। तो स्वाभाविक रूप से उसके साथ परब्रह्म का जोश लीला करने लगता हैं। उपरोक्त चौपाई में यही बात दर्शायी गयी है।

मोमिन मांग्या मोले पें, सो भूल गैयां बातें मूल।
सो खेल देखाए पीछे याद देऊं, देखाए फुरमान रसूल।।२०।।

परमधाम में ब्रह्ममुनियों ने परब्रह्म से माया का खेल देखने की इच्छा की थी किन्तु इस संसार में आकर वे उन बातों को पूर्णतया भूल चुके है। मैं मुहम्मद स. अ. व. के द्वारा लाये हुए कुर्आन की साक्षी देकर उन्हें इस बात की याद दिलाउंगा कि परमधाम में अपने प्राणेश्वर अक्षरातीत से तुमने माया का खेल देखने की कैसे इच्छा व्यक्त की थी और यह भी कहा था कि हम किसी भी स्थिति में आप को नहीं भूलेंगे, किन्तु वास्तविकता यह है कि इस मायावी जगत में सभी उस बात को भूल चुके है।

भावार्थ - कुर्आन के पा. ९ सू. ७ आ. १७२ ''व इज् अखज रब्बुक मिम्बनी आदम मिन् जुहूरिहिम् जुर्रिय्यतहुम् व अख्हदहुम् अला अन्फुसिहिम् अलस्तु बिरब्बिकुम् कालू बला शहिद्ना अन् तकूलू यौमल-कियामति इन्ना कुन्ना अन् हाजा गाफिलीन'' अर्थात् और याद दिलाओ उस समय जब तुम्हारे परवरदिगार ने आदम के बेटों की पीठों से उनकी औलाद को निकाला था और उनके मुकाबले में (अल्लाह ने)

उन्हीं को गवाह बनाया (और पूछा) ''क्या मैं तुम्हारा परवरदिगार नहीं हूँ?'' सब बोले हाँ हम मानते हैं। यह गवाही हमने इसलिये ली कि कियामत के दिन कहीं (यह) न कहने लगो कि हमको इस बात की खबर न थी।

या छल में अनेक छल हैं, सो करूं सब जाहेर।
खोलूं कमाड कल कुलफ, अंतर मांहें बाहेर।।२१।।

अब मैं आगे के प्रकरणों मे निहित ज्ञान के द्वारा आपके उन सभी संशयों को दूर करूंगा जो इस छल भरे संसार में दिखने वाले अनेक प्रपंचों से उत्पन्न हुए हैं। मैं तारतम ज्ञान के प्रकाश में निराकार रूपी दरवाजे में लगे ताले (मोह, अज्ञान) को खोल दूंगा जिससे आपको इस संसार (मांहे) की, इससे परे बेहद मण्डल (बाहर) तथा उससे भी परे स्वलीला अद्वैत परमधाम (अन्तर) की स्पष्ट पहचान हो जायेगी।

।।प्रकरण।।१२।।चौपाई।।२६८।।

सनंध-खेल के मोहोरों की

इस प्रकरण में यह दर्शाया गया है कि इस नश्वर जगत में लोग क्या क्या प्रपंच किया करते हैं? जिस प्रकार अनेक प्रकार के मोहरों से शतरंज का खेल खेला जाता है, उसी प्रकर इस माया के खेल में अग्रगण्य घटकों को मोहरा कहते है। इनका वर्णन इस प्रकरण में दिया गया है -

अब निरखो नीके कर, ए जो देखन आइयां तुम।
मांग्या खेल हिरस का, सो देखलावें खसम।।१।।

हे साथ जी! आप माया के जिस खेल को देखने के लिये आये हैं, उसे अपनी विवेक दृष्टि से अच्छी प्रकार से समझिए (देखिए)। आपने धाम धनी से तृष्णा से भरे जिस मायावी खेल को देखने की इच्छा की थी, प्रियतम उसे ही आप को दिखा रहे हैं।

भोम भली भरतखंड की, जहां आई निध नेहेचल।
और सारी जिमी खारी, खारे जल मोह जल।।२।।

भारत वर्ष की यह धरती बहुत ही पवित्र है, जहाँ परमधाम की अखण्ड ब्रह्मवाणी अवतरित हुई है। इसके अतिरिक्त संसार के अन्य सभी देशों की धरती मोह-अहंकार के विकारों से ग्रसित होकर खारे जल के समान निरर्थक है और अध्यात्म पथ के लिये उपयुक्त नहीं है।

भावार्थ- जिस प्रकार समुद्र का खारा जल न तो पीने के काम में आता है और न

नहाने या सिंचाई आदि के लिये, उसी प्रकार भारतवर्ष के अतिरिक्त अन्य देशों में भौतिक ऐश्वर्य एवं बाह्य सौन्दर्य आदि का बोलबाला तो अवश्य है किन्तु सच्ची आध्यात्मिकता से वे कोसों दूर हैं। इन देशों में धर्म के नाम पर कर्म काण्ड तो मिल सकता है, किन्तु किसी समाधिस्थ योगी का दर्शन मिलना असम्भव सा है। गोमांस का प्रतिदिन भक्षण एवं शराब का सेवन ही जिनकी प्रवृत्ति है, उनसे गहन आध्यात्मिक चिन्तन की अपेक्षा कैसे की जा सकती है?

इत बोए बिरिख होत है, ताको फल पावे सब कोए।
बीज जैसा फल तैसा, किया जो अपना सोए।।३।।

यह पृथ्वी लोक कर्म भूमि है। जिस प्रकार कोई पौधा लगाने पर वह वृक्ष बन जाता है तथा उसके फल को सभी लोग प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार प्रकृति के सुख को भोगने की वासना रूपी बीज से जीव जन्म ग्रहण करता है। पुनः शुभ-अशुभ कर्मों के फलस्वरूप सुख और दुःख का भोग करता है। इस प्रकार जैसा बीज (वासना) होता है, वैसा ही कर्म और वैसा ही फल सब को भोगना पड़ता है।

इनमें जो ठौर अच्छी, जाको नाम नौतन।
जहां आए उदै हुई, नेहेचल बात वतन।।४।।

इस भारतवर्ष में सर्वश्रेष्ठ स्थान नवतनपुरी है जहां सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी के मुखारविन्द से अखण्ड परमधाम के अनुपम ज्ञान का अवतरण हुआ।

तिन अच्छी थें भी ठौर अच्छी, जाए कहिए हिंदुस्तान।
जहां मेंहदी महंमद आए के, जाहेर किया फुरमान।।५।।

उस नवतनपुरी से भी श्री ५ पद्मावती पुरी धाम श्रेष्ठ है, जहां श्री प्राणनाथ जी ने आकर परब्रह्म के आदेश से अवतरित धर्मग्रन्थों के गुह्यतम रहस्यों को प्रकट किया।

भावार्थ - परब्रह्म के आदेश से अवतरित ग्रन्थों को फुरमान कहते है। इसके अन्तर्गत कुर्आन, वेद तथा श्रीमद्भागवत के दशम् स्कन्ध का पंचध्यायी रास है। श्री प्राणनाथ जी ने इन सभी धर्मग्रन्थों के उन अनसुलझे रहस्यों को प्रकाशित किया जो आज तक किसी को भी ज्ञात नहीं थें।

पा. २७ सु. ५३ आ. १-८ "वन्नज्मि अिजा हवा"(१) "सुम्म दना फतदल्ला"(८) अर्थात् तारे (नक्षत्र) की कसम जब यह नीचे आये,तुम्हारा साथी (यह

मुहम्मद स० रास्ते स०) न तो बहका और न बेहरा चला। और वह अपनी मनमानी बातें नहीं कहता। यह तो हुक्म है जो उसे (अल्लाह की ओर से वह्य होता यानी) भेजा जाता हैं,निहायत ताकतवर (फिरिश्तः जिब्रील अ०) ने उसे सिखलाया है, यानी बड़े जोर वाले ने,फिर वह (रसुल स० को) प्रत्यक्ष भी नजर आये, और वह आसमान के ऊँचे किनारे पर था। फिर वह नजदीक हुआ और करीब बढ़ा।

मारिफत के ३० हजार हरूफ मुहम्मद स. अ. व. के द्वारा कहे ही नहीं गये थे जिनका अवतरण सागर, श्रृंगार में हुआ। इसी प्रकर खुलासा, मारिफत सागर तथा कियामतनाना में कुर्आन की हकीकत मारिफत को दर्शाया गया। ये सभी ग्रन्थ श्री पद्मावती पुरी धाम में ही उतरे। यद्यपि श्री कुल्जुम स्वरूप का अवतरण कई प्रान्तों गुजरात, उत्तर प्रदेश, राजस्थान तथा मध्य प्रदेश में हुआ किन्तु लगभग आठ ग्रन्थों खुलासा, खिल्वत, परिक्रमा, सागर और श्रृंगार, सिन्धी, मारिफत सागर तथा छोटा कियामतनामा का अवतरण श्री पद्मावती पुरी (पन्ना) धाम में हुआ। इसलिये पन्ना जी को तारतम ज्ञान के अवतरण की दृष्टि से विशिष्ट स्थान प्राप्त हुआ। श्री कुल्जुम स्वरूप में वेद एवं रास के सम्बन्ध में भी उन रहस्यों का स्पष्टीकरण हुआ जिन्हें आज तक कोई भी नहीं जान सका था।

तारतम ज्ञान से अनभिज्ञ कोई भी विद्वान न तो अथर्ववेद के केन सूक्त जिसमें ब्रह्मपुरी का वर्णन है और न स्कम्भ सूक्त का रहस्य जानता है और न रास लीला के स्थान योगमाया के विषय में कुछ जानता है। इसी प्रकार कुर्आन का सबसे बड़ा विद्वान भी अलिफ, लाम मीम, ऐन, गैन, साद जैसे हरूफे मुक्तेआतों, सब ए मेयराज, अलस्तो बिरब्ब कुम्म' आदि के विषय में कुछ भी यथार्थ रूप से नहीं जानता। स्पष्ट है कि जिस पावन धरती पर श्री प्राणनाथ जी के द्वारा इस अनुपम ज्ञान के अवतरण के साथ साथ हजारों सुन्दरसाथ को परमधाम एवं परब्रह्म के प्रत्यक्ष दर्शन का सौभाग्य प्राप्त कराया गया, वह इस सृष्टि का पवित्रतम् स्थान है।

जोलों फुरमान ना जाहेर, तोलों मुख से ना निकसे दम।
अब इमाम के निज नूर से, देखाऊं खेल मुस्लिम।।६।।

जब तक परब्रह्म के आदेश से अवतरित इन धर्मग्रन्थों के वास्तविक रहस्य प्रकाशित नहीं हुए थे, तब तक कोई भी व्यक्ति अखण्ड परमधाम तथा अक्षरातीत के

सम्बन्ध में एक शब्द भी बोल नहीं पाता था। श्री महामति जी कहते हैं कि अब मैं श्री प्राणनाथ जी के तारतम ज्ञान के प्रकाश में परब्रह्म पर अटूट निष्ठा रखने वालों को इस मायावी जगत की वास्तविकता बताउंगा।

ए खेल तुम मांगिया, सो किया तुम कारन।
ए विध सब देखाए के, देखाऊं खसम वतन।।७।।

हे साथ जी! आपने धाम धनी से माया का खेल देखने की इच्छा की थी, जिस के परिणाम स्वरूप यह मायावी ब्रह्माण्ड बना। आप को इस मिथ्या संसार की सारी वास्तविकता को बताकर अन्ततोगत्वा मैं परमधाम के विषय में बताऊंगा।

मोहोरे सब जुदे जुदे, जुदी जुदी मुख बान।
खेलें मन के भावते, सब आप अपनी तान।।८।।

लोक व्यवहार रूपी इस खेल में भौतिक तथा आध्यात्मिक क्षेत्र के अलग-अलग मोहरें (घटक, अग्रगण्य) हैं। इनमें प्रत्येक के मुख से अलग-अलग प्रकार की बातें निकलती हैं। सभी अपने-अपने मन के भावों के अनुसार क्रीड़ा करते हैं अर्थात् लोक व्यवहार को क्रियान्वित करते हैं। सबकी अपनी अपनी दार्शनिकता (जीवन-पद्धति) होती है।

स्वांग काछे जुदे जुदे, और जुदे जुदे रूप रंग।
चले आप चित चाहते, और रहे भेले संग।।९।।

इस संसार में अलग-अलग रूप-रंग वाले मनुष्य रहते हैं जो अलग अलग रीति-रिवाजों के पालन रूप नाटक का अभिनय किया करते हैं। वे अपने समाज या मत-पन्थ के अनुयायियों के साथ अपने हृदय के भावों के अनुसार सामाजिक एवं धार्मिक व्यवहार क्रियान्वित करते हैं।

भावार्थ-कुछ लोग नाटे होते हैं, तो कुछ लम्बे। कुछ दुबले-पतले होते हैं और कुछ गोल-मटोल। इसी प्रकार काले, गोरे, श्वेत भूरे एवं पीले आदि अनेक रगों के मनुश्य होते हैं। अलग-अलग भाशाओं तथा रीति-रिवाजों से मनुश्य बंधा होता है।

कई दुकान बाजार सेहेर, चौक चौवटे अनेक।
अनेक कसबी कसब करते, हाट पीठ बसेक।।१०।।

इस संसार में अनेकों नगर बसे हुए हैं, जिन में चारों ओर दुकानें सजी हुई हैं। बहुत से बाजार जगमगाते रहते हैं। इन नगरों में ऐसे भी स्थान होते हैं, जहां से चारों

दिशाओं में मार्ग जाते हैं और वहां पर चौकोर चबूतरे (चौराहे) बने होते हैं। इन में बहुत से कारीगर (शिल्पी) अपनी शिल्प कला का व्यवसाय करते हैं। यहां छोटे-छोटे बाजार एवं सुन्दर-सुन्दर शिक्षा केन्द्र भी होते हैं।

भावार्थ-वह चौकोर बाजार जिसमें चारों ओर दुकानें सजी रहती हैं, चौहट्टा कहलाता है। चौकोर चबूतरे को चौबटा कहते हैं। जिस चौकोर स्थान से चारों दिशाओं में मार्ग जाते हैं, उसे चौक (चौराहा) कहा जाता है। बाजार का छोटा रूप हाट कहलाता है। बहुत छोटे से नगरों (उपनगरों या बड़े गांवों) में हाट लगा करते हैं। उपरोक्त चौपाई का आध्यात्मिक अर्थ इस प्रकार होगा-संसार में अनेकों तीर्थ स्थान हैं, जिनमें अनेकों सम्प्रदायों मत-पन्थों के बड़े-बड़े मन्दिर, आश्रम, मस्जिद, चर्च आदि बने होते हैं। ये स्थान धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पदार्थों को देने का दावा करते हैं। इसलिये यहां लोगों की बड़ी भीड़ लगी रहती है। इनमें साधू, महन्त, पण्डे, पुजारी, मौलवी और पादरी आदि धार्मिक शिक्षा देते हैं तथा पूजा-पाठ करते हैं। दर्शनार्थी एवं धर्म प्रेमी लोगों का हमेशा ही इन स्थानों में आवागमन बना रहता है।

भेख सारे बनाए के, करें हो हो कार।
कोई मिने आहार खाए, कोई खाए अहंकार।।११।।

सभी मत-पन्थों के अनुयायी तरह-तरह की वेश-भूषा धारण करते हैं तथा अपने आध्यात्मिक ज्ञान की श्रेष्ठता का डंका पीटते हैं (कोलाहल करते हैं)। इनमें कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो अपनी उच्च स्तर की साधना को दर्शाने के लिये अति अल्पाहार करते हैं। तो कुछ लोग अहंकार को जीतने के नाम पर अत्यधिक विनम्र होने का दिखावा करते हैं।

भावार्थ- अहंकार को जीतने वाला प्रेम में डूबकर निराकार को पार कर लेता है और बेहद या परमधाम के आनन्द का रस भागी होता है। इसके लिये गहन स्तर की चैतन्य समाधि में डूबना पड़ता हैं। केवल वाणी की विनम्रता या व्यवहारिक विनम्रता अहंकार जीतने का प्रतीक नहीं है। यह तो बाह्य रूप से अहंकार जीतने का केवल प्राथमिक स्तर है। ऐसे लोगों के हृदय में अहंकार की जड़ें अदृश्य रूप से बहुत गहराई तक विद्यमान होती हैं जो मात्र परब्रह्म के प्रेम एवं उनकी कृपा दृष्टि से ही समाप्त हो

सकती हैं।

विध विध के भेख काछें, सारे जान प्रवीन।
वरन चारों खेलें चित दे, नाही न कोई मत हीन।।१२।।

इस प्रकार भिन्न भिन्न प्रकार की वेश-भूषा धारण करने वाले ये लोग स्वयं को बहुत ही पारंगत ज्ञानी माना करते हैं। चारों वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र) के लोगों का चित्त पूरी तरह से मायावी प्रपंचों में फंसा होता है, किन्तु उनमें से कोई भी स्वयं को कम बुद्धि का नहीं मानता।

पढ़े चारों विद्या चौदे, हुए वरन विस्तार।
आप चंगी सब दुनियां, खेलत हैं नर नार।।१३।।

चारों वर्णों के लोग चौदह विद्याओं का अध्ययन करने पर भी अनेक जातियों में बंट गये। इस संसार के सभी स्त्री-पुरूष भौतिक सुखों के भोग में ही प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं।

भावार्थ- वर्तमान समय में पौराणिक हिन्दू समाज में लगभग १२०० जातियां है। जबसे कर्म का आधार छोड़कर जन्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था निर्धारित की जाने लगी, तभी से भिन्न भिन्न जातियों की उत्पत्ति होनी प्रारम्भ हो गयी। इस प्रकार वर्ण और जाति में अन्तर है। वर्ण व्यवस्था कर्म के आधार पर है, तो जाति व्यवस्था जन्म के आधार पर। चौदह विद्यायें इस प्रकार हैं - ४ वेद ४ उपवेद (अर्थवेद धनुर्वेद, गान्धर्ववेद और आयुर्वेद) छः अंग (शिक्षा,कल्प, निरूक्त, छन्द, ज्योतिष और व्याकरण)।

वरन सारे पसरे, लगे लोभें करें उपाए।
बिना अगनी पर जले, अंग काम क्रोध न माए।।१४।।

सभी वर्ण जातियों में परिवर्तित हो गये हैं। लोग लोभ के वशीभूत होकर मात्र अर्थ (धन) के लिये ही तरह-तरह के उपाय किया करते हैं। उनके हृदय में काम और क्रोध इतना अधिक भरा हुआ है कि बिना अग्नि के ही उनके श्रद्धा और विश्वास रूपी पंख जल जाते है।

नहीं जासों पेहेचान कबहूं, तासों करे सनमंध।
सगे सहोदरे मिलके, ले देवें मन के बंध।।१५।।

जिसके विषय में पहले से कुछ भी पता नहीं होता है, उसके साथ विवाह सम्बन्ध स्थापित करते हैं। इस कार्य में सगे सम्बन्धी तथा भाई बन्धु मिलकर उसे विवाह के रूप में मन के बन्धनों में बांध देते हैं।

सनमंध करते आप में, खुसाल हाल मगन।
केसर कसूंबे पेहेर के, देखलावें लोकन।।१६।।

जब विवाहोत्सव होता है तो इतने प्रसन्न होते हैं कि उनके हृदय में अपार उमंग भर जाती है। केसरिया अथवा गहरे लाल रंग के वस्त्र पहन कर प्रसन्नता पूर्वक नगर में घूमते रहते हैं।

सिनगार करके तुरी चढ़े, कोई करे छाया छत्र।
कोई आगे नाटारंभ करे, कोई बजावे बाजंत्र।।१७।।

विवाह करने वाला वर (दुल्हा) अपना श्रृंगार करके घोड़े पर बैठता है। उसके ऊपर छाया करने के लिये कोई छत्र लेकर चलता है। उसके आगे आगे भी कुछ लोग तरह-तरह के वाद्य बजाते हुए चलते हैं, तो कुछ लोग तरह-तरह की नाट्य लीला (स्वांग) करते हुए चलते हैं।

कोई बांध सीढ़ी आवे सामी, करे पोक पुकार।
विरह वेदना अंग न माए, पीटे मांहें बाजार।।१८।।

दूसरा दृश्य इसके विपरीत होता है, जिसमें सामने से लोग किसी मरे हुए व्यक्ति की अर्थी लेकर आ रहे होते हैं। वे करूण स्वर में रो रहे होते हैं। उनके हृदय में मृतक के वियोग से अपार दुःख भरा होता है और वे नगर की सड़कों पर छाती पीट-पीटकर अपना दुःख व्यक्त कर रहे होते हैं।

भावार्थ- संसार का यही कटु सत्य है कि कहीं शहनाई बजती है तो कहीं मातम होता है, किन्तु इसके रहस्य को कोई विरला ही समझ पाता है।

गाड़े जालें हाथ अपने, रूदन करे जल धार।
सनमंधी सब मिलके, टल वले नर नार।।१९।।

मुस्लिम, क्रिश्चियन आदि मरे हुए व्यक्ति के शरीर को अपने ही हाथों से धरती

से गाड़ देते हैं तथा हिन्दू लोग आग में जला देते हैं। सभी उसके वियोग में इतना रोते है कि उनकी आंखों से आंसुओं की धारा बहती है। उसके सभी सगे सम्बन्धी स्त्री पुरूष मिलकर मृत्यु का शोक मनाते हैं।

जनम होवे काहू के, काहू के होए मरन।
हांसी हिरदे काहू के, काहू के सोक रूदन।।२०।।

इस मायावी संसार में यही देखने में आता है कि कहीं पर किसी का जन्म होता है, तो किसी की मृत्यु होती है। कोई अपने हृदय में इतनी प्रसन्नता का अनुभव करता है कि हंसता रहता है और कोई ऐसा भी होता है कि वह शोक के कारण सदा रोता ही रहता है।

जर खरचें खाए गफलतें, करें बड़े दिमाक।
कीरत अपनी कराए के, पीछे होवें हलाक।।२१।।

कुछ लोग अज्ञानतावश विवाह आदि उत्सवों में दिखावे के लिये बहुत अधिक धन खर्च करते है और इसका अत्यधिक अभिमान भी करते है कि मैने इतना अधिक खर्च कर दिया। इस प्रकार मात्र कुछ दिनों के लिये अपनी मिथ्या कीर्ति फैलाकर धन के अभाव में व्यथित (दुःखी) होते है।

भावार्थ - वस्तुतः हमारे द्वारा उपार्जित धन पर वास्तविक अधिकार केवल परमात्मा का ही है। हमें धन को अपना न मानकर परमात्मा एवं राष्ट्र का मानना चाहिए और उसे मानवता एवं राष्ट्र के कल्याण में खर्च करना चाहिए न कि अपने वैभव प्रदर्शन में। विवाह आदि में तड़क-भड़क पर धन खर्च करना गरीबों के घावों पर नमक छिड़कना है।

कोई किरपी कोई दाता, कोई मंगन केहेलाए।
किसी के अवगुन बोलें, किसी के गुन गाए।।२२।।

संसार में कोई कृपण (कंजूस) है, तो कोई दानी है और कोई भीख मांगने वाला भी है। कहीं पर किसी के अवगुणों (दोषों) की निन्दा होती है, तो किसी के गुणों की महिमा गायी जाती है।

कोई मिने वेहेवारिए, कोई राने राज।
कई मिने रांक रलझलें, रोते फिरें अकाज।।२३।।

संसार के विशाल मानव समूह में कोई व्यवहार कुशल है, तो कोई राणा और कोई राजा भी है। कोई बहुत दुःखी एवं गरीब भी हैं जो रोते हुये निष्प्रयोजन घूमते रहते हैं।

कई सोवें सोने के पलंग, कई ऊपर ढोलें वाए।
रहे खड़े आगे जी जी करें, ए खेल यों सोभाए।।२४।।

कोई सोने के पलंग पर सोता है, तो कोई उसके ऊपर पंखे से हवा झलता है और उससे बातें करते समय उसकी प्रशंसा में अनावश्यक रूप से प्रत्येक बात में 'हाँ जी' 'हाँ जी' करता रहता है। इस प्रकार इस खेल की विचित्रता है।

कई बैठें सुखपाल में, कई दौड़े उचाए।
जलेब आगे जोर चले, ए खेल यों खेलाए।।२५।।

यह माया का खेल ऐसा है जिसमें कोई तो पालकी में आराम से बैठा होता है और कुछ लोग उसे उठाकर दौड़ते हुए (तीव्रगति से) चलते हैं। इनके आगे-आगे सेना अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हुए चला करती है।

कोई बैठे तखतरवा, आगे तुरी गज पाएदल।
अति बड़े बाजंत्र बाजहीं, जाने राज नेहेचल।।२६।।

कोई महाराजा के रूप में बड़े रथ पर बैठा होता है। उसके आगे आगे पैदल एवं हाथी,घोड़े पर सवार सैनिक चला करते हैं। साथ में बड़े-बड़े बाजे बजा करते हैं। ये ऐसा दर्शाते हैं कि जैसे इनका राज्य कभी नष्ट होगा ही नहीं।

साम सामी करें फौजें, लरावें लोह अंग।
जिमी खांवद नाम धरावने, कई लर मरे अभंग।।२७।।

स्वयं को पृथ्वीपति अर्थात् राजा कहलाने के लिये कुछ लोग आमने सामने सेनायें खड़ी कर लेते है तथा लोहे के अस्त्र - शस्त्रों से उनमें युद्ध कराते हैं। इस प्रकार वे हमेशा लड़कर मरते रहते हैं।

कोई मिने होए कायर, छोड़ सरम भाग जाए।
कोई मारे कोई पकरे, कोई जावे आप बचाए।।२८।।

इनमें जो कायर होता है, वह वीर कहलाने की लज्जा को छोड़ देता है तथा युद्ध से भाग जाता है। युद्ध में कोई किसी को मार डालता है, तो कोई बन्दी के रूप में पकड़ा

जाता है। कोई ऐसा भी योद्धा होता है जो अपनी रक्षा कर लेता है।

कोई जीते कोई हारे, काहू हरख काहू सोक।
जो तरफ सारी जीते आवे, ताए कहें पृथीपत लोक।।२९।।

युद्ध के क्षेत्र में कोई जीतता है, तो कोई हारता है। कोई अपनी विजय से हर्षित होता है, तो कोई अपनी हार से दुःखी होता है। जो चारों दिशाओं में विजय प्राप्त कर लेता है, उसे लोग चक्रवर्ती सम्राट या पृथ्वीपति कहते हैं।

कई करत ले कैद में, बांधत उलटे बंध।
मारते अरवाह काढहीं, ए खेल या सनंध।।३०।।

यह मायावी खेल इस प्रकार का है कि कोई किसी को कैद कर लेता है तथा उसके हाथों को उल्टी दिशा में बांध कर तलवार से मार देता है और उसके प्राण ले लेता है।

जीते हरखे पौरसे, उमंग अंग न माए।
हारे सारे सोक पावें, तोबा तोबा करें जुबांए।।३१।।

जो अपनी वीरता तथा पुरूषार्थ से विजयी होते है, वे इतने प्रसन्न होते है कि उनका हृदय उसे सम्भाल नहीं पाता। हार जाने वाले इतने दुःखी होते हैं कि वे अपने मुख से 'तोबा - तोबा ' कहते है।

भावार्थ - तोबा का अर्थ है - यह प्रायश्चित करना कि अब ऐसा काम मैं पुनः कभी भी नहीं करूंगा।

कई फिरत हैं रोगिए, कई लूले टूटे अपंग।
कई मिने आंधले, यों होत खेलमें रंग।।३२।।

इस खेल में इस प्रकार का दृश्य दिखायी दे रहा है कि कई लोग रोगी होकर स्वास्थ्य की कामना से चारों ओर घूमते फिरते हैं। कई लोग लूले, लंगड़े और टूटे अंगों वाले हैं। कुछ लोग दोनों आंखों से अन्धे भी हैं।

कई उदर कारने, फिरत होत फजीत।
पवाड़े कई बिना हिसाबें, खेल होत या रीत।।३३।।

माया का यह खेल इस प्रकार चल रहा है कि कई लोग तो अपने उदर-पोषण (पेट भरने) के लिये परेशान होकर चारों ओर घूमते रहते हैं और कई कुटिल बुद्धि वाले लोग तरह-तरह के विवाद खड़े करते रहते हैं।

।।प्रकरण।।१३।।चौपाई।।३०१।।

सनंध-खेल में खेल की

अक्षर ब्रह्म ने अपने मन अव्याकृत के द्वारा सृष्टि रूपी यह खेल बनाया है। इसका नियन्त्रक आदि नारायण है जिसकी चेतना के सांकल्पिक प्रतिबिम्ब रूप जीवों ने मिलकर इस खेल में अलग - अलग भूमिकाओं का निर्वहन किया है। इसे ही खेल में खेल कहते है इस प्रकरण में जीव सृष्टि की आध्यात्मिक क्षेत्र में की गयी विशेष भूमिकाओं को चित्रित किया गया है -

अब गुझ बताऊं खेल का, झूठे खेले कर सांच।
ए नीके देखो मोमिनों, ए जो रहे मजहबों रांच।।१।।

श्री महामति जी कहते है कि अब मैं इस मायावी जगत का गुह्य रहस्य स्पष्ट कर रहा हूं। इस संसार के स्वाप्निक जीव स्वंय को अखण्ड, अनादि मानकर इसमें संलग्न हैं। हे ब्रह्ममुनियों ! संसार के भिन्न - भिन्न पन्थों एवं सम्प्रदायों में फंसे हुए लोगों के भटकाव को आप अच्छीं प्रकार से समझिए (देखिए)।

मैं बताऊं या बिध, जासों जाहेर सब होए।
नहीं पटंतर दीन पैंडे, सो जुदे कर देऊं दोए।।२।।

मैं तुम्हें इस प्रकार बताउंगा कि उससे सत्य और झूठ का अलग-अलग स्पष्टीकरण हो जायेगा। यद्यपि बाह्य रूप से देखने पर ऐसा लगता है कि हिन्दू धर्म के ये भिन्न-भिन्न सम्प्रदाय एक ही परमात्मा को पाने की राह पर चल रहे हैं। किन्तु वास्तविकता कुछ और ही है। इनके दार्शनिक सिद्धान्तों में घोर विरोध है, जिसें मैं अलग-अलग करके दर्शा रहा हूं।

इन खेल में जो खेल हैं, सो केहेत न आवे पार।
इन भेखों में भेख सोभहीं, सो कहूं नेक विचार।।३।।

इस मायावी जगत में जीवों के द्वारा जो खेल खेला जा रहा है, उसका पूर्ण रूप से वर्णन कर पाना सम्भव नहीं है। इस संसार में अनेक प्रकार के रूप-रंग और वेश-भूषा वाले मनुष्य तो हैं ही, आध्यात्मिक क्षेत्र में भी एक ही स्थान में रहने वाले लोग जो वेश - भूषा तथा रूप-रंग में समान होते हैं। सम्प्रदाय भेद से अनेकों प्रकार की वेश-भूषा धारण कर लेते हैं और अपनी उपासना पद्धति भी अलग-अलग बना लेते हैं। इसके सम्बन्ध में मैं अपने कुछ विचार बता रहा हूं।

भावार्थ - एक ही वाराणसी नगरी या किसी भी स्थान में अनेक पन्थों के महात्मा रहते हैं जिनकी वेश-भूषा, उपासना पद्धति एवं दार्शनिक सिद्धान्त सम्प्रदाय के अनुसार निश्चित किये जाते हैं। उपरोक्त चौपाई में इसी तथ्य को दर्शाया गया है।

कई बिना हिसाबे द्योहरे, जुदे जुदे अपने मजहब।
कई भांतों कई जिनसों, करत बंदगी सब।।४।।

इस संसार में अनगिनत धर्मस्थान हैं और लोगों के अलग-अलग पन्थ, सम्प्रदाय हैं। सभी लोग अलग-अलग प्रकार से अनेक साधनों (माला, भोज्य पदार्थों आदि) से भक्ति का मार्ग अपनाते है।

भावार्थ - परम सत्य ही धर्म है और वह एक है, किन्तु मानवीय बुद्धि में भिन्नता के कारण वह शाश्वत मानव धर्म से दूर हो जाता है और धर्म के कुछ अंशों को आत्मसात् कर अपनी मान्यताओं (राजनीति, भाषा, रहन-सहन, वेश-भूषा आदि) को उससे जोड़कर उसे धर्म की संज्ञा तेा देता है किन्तु उसे धर्म नहीं अपितु मजहब या सम्प्रदाय (पन्थ) कहते है। इस प्रकार यहूदी, पारसी, इस्लाम, शैव, सिख, वैष्णव, जैन, बौद्ध आदि सभी मत-पन्थ सम्प्रदाय या मजहब ही कहलायेंगे, धर्म नहीं।

खोजे कोई न पावहीं, वार ना पाइए पार।
ले बुत बैठावें द्योहरे, कहें हमारा करतार।।५।।

इस संसार के लोग परमात्मा की खोज तो करते हैं, किन्तु जब निराकार से पार नही हो पाते और किसी भी प्रकार से परमात्मा की प्राप्ति नहीं कर पाते तो धर्म स्थान में जड़ मूर्ति की स्थापना करके कहते है कि यह ही हमारा सर्वशक्तिमान परमेश्वर है।

कई सराए अपासरे, कई ताल कुंड बिरबाव।
कई विध बांधे बेरखे, कई साल पोसाल टिकाव।।६।।

विभिन्न धार्मिक आस्थाओं से जुड़े लोगों ने जनकल्याण की भावना से अनेक प्रकार की सराय (मुस्लिम यात्री निवास), अपासरों (जैन मुनि निवास), तालाबों, कुण्डों तथा बावड़ियों का निर्माण किया है। इसी प्रकार अनेकों धर्मशालायें, औषधालय, तथा रैन बसेरे भी दिखायी देते हैं। इन सबके उपर उन पन्थों के झण्डे भी फहराते हुए दिखते हैं।

कई अंन नीर सबीले, कई करें दया दान।
कई तरपन तीरथ, कई करे नित अस्नान।।७।।

कुछ लोग सबकी सुविधा के लिये भोजन हेतु अन्न क्षेत्र खोलते हैं तो कुछ लोग जल के लिये 'प्याऊ' खुलवाते हैं। बहुत से लोग दूसरों के प्रति दया की भावना से दान

करते हैं। कई लोग तीर्थो में जाकर तर्पण करते हैं तो स्वयं को शुद्ध करने की भावना से बहुत से व्यक्ति प्रतिदिन स्नान करते हैं।

भावार्थ - जीवित माता - पिता एवं भद्र जन ही पितर (पालन करने वाले) हैं। मरे हुए का तो पुनर्जन्म हो जाता है। इस प्रकार जीवित पूज्य जनों की श्रद्धा पूर्वक सेवा ही श्राद्ध करना है तथा अपनी सेवा से उन्हें तृप्त करना तर्पण है। मरे हुए व्यक्तियों का श्राद्ध और तर्पण करना वेद - शास्त्र के पूर्णतया विरूद्ध है।

कई भेख जो साध कहावहीं, कई पंडित पुरान।
कई भेख जो जालिम, कई मूरख अजान।।८।।

साधू महात्माओं की अनेक प्रकार की वेशभूषा है। इसी प्रकार, अत्याचारी डकैतों की भी अनकों वेश भूषा है। पण्डित लोग जहां - तहां पुराणों की कथा करते हुए दिखायी देते हैं, वहीं मूर्ख तथा अज्ञानी लोग निरर्थक घूमा करते हैं।

कई कहावें दरसनी, धरें जुदे जुदे भेख।
सुध आप ना पार की, हिरदे अन्धेरी विसेख।।९।।

कुछ लोग दर्शन शास्त्र के ज्ञाता कहलाते हैं। वे अलग अलग प्रकार की वेश-भूषा धारण करते हैं। उनके हृदय में अज्ञानता का अन्धकार भरा होता है। न तो उन्हें अपनी पहचान होती है और न निराकार के पार की।

भावार्थ- छः दर्शनों में सृष्टि के छः कारणों की व्याख्या है। दर्शनों के सूक्ष्म रहस्यों को जानने के लिये समाधिस्थ प्रज्ञा की आवश्यकता होती है। वर्तमान समय में दर्शनों के विद्वान मात्र शब्द-जाल और वाद विवाद में उलझे रहते हैं। मूल वेदों के ज्ञानी तारतम एवं योग से दूर होने के कारण वे वास्तविक सत्य को जानने से वंचित रह जाते है। उपरोक्त चौपाई में दर्शन के विद्वानों को अज्ञान में लिप्त कहने का यही आशय है।

कई लोचें कई मूडें, कई बढ़ावें केस।
कई काले कई उजले, कई धरें भगुए भेस।।१०।।

जैन मत के अनुयायी अपने बालों को नुचवा देते हैं। सन्यासी अपने शिर के बालों को मुड़वा देते हैं तथा वैष्णवों के वैरागी या ब्रह्मचारी अपने सिर के बालों को बहुत अधिक लम्बा कर लेते हैं। तान्त्रिक लोग काले वस्त्र पहनते हैं, तो सन्तमत (कबीर, दादू आदि) के अनुयायी श्वेत वस्त्र पहनते हैं। इसी प्रकार संन्यास मत के अनुयायी भगवा वस्त्रों को धारण करते हैं।

कई नेक छेदें कई न छेदें, कई बहुत फारें कान।
कई माला तिलक धोती, कई धरे बैठे ध्यान।।११।।

कुछ पन्थों के अनुयायी महात्मा अपने कानों को थोड़ा सा छेदते हैं, तो कुछ ऐसे भी होते हैं जो बिल्कुल भी नहीं छेदते। कुछ ऐसे (नाथ) पन्थ वाले महात्मा होते हैं जो अपने कानों को बहुत अधिक फाड़ (छेद) देते हैं। वैष्णव पन्थ के महात्मा माला, तिलक एवं धोती का विशेष प्रयोग करते हैं। इनके विपरीत योगियों का समूह ऐसा भी होता है जो केवल ध्यान में ही रूचि लेता है।

कई लंगरी बोदले, कई सेख दुरवेस।
कई इलम कई आलम, कई पढ़े हुए पेस।।१२।।

मुसलमानों के धार्मिक स्थानों में भोजन बनाने की सेवा करने वाले कुछ लांगरी है। कुर्आन - हदीसों का ज्ञान ग्रहण कर कई लोग बोदरे, कहलाते है। कुछ लोग शेख कहलाते है तेा कुछ फकीरी वेश-भूषा धारण कर स्वयं को दरवेस कहलाते है। ज्ञान में प्रवीण होकर कुछ लोग आलिम कहलाते है तो कुछ ज्ञान दृष्टि से स्वयं को सबसे अग्रगण्य 'पेश' मानते हैं।

कई जिंदे गोस कुतब, कई मलंग मीर पीर।
कई औलिए कई अंबिए, कई मिने फकीर।।१३।।

कुछ लोग जीते जी ही सांसारिक सुखों का परित्याग कर देने वाले मलंग है तो कुछ गौस और कुतुब कहलाते है। कुछ लोग अल्लाह की इबादत में लगकर मीर, पीर और फकीर कहलाते है। कुछ लोग अपनी साधना से औलिया या अंबिया कहलाते है।

भावार्थ- जिस प्रकार हिन्दू समाज में साधू, सन्त, महन्त, योगी, यति, ऋषि, मुनि आदि उपाधियां हैं, उसी प्रकार इस्लाम मत के अनुयायियों में गौस, कुतुब, औलिया, अंबिया, मीर, पीर, और फकीर आदि अलग-अलग उपाधियां है। सन्तवाणी का कथन है- हद लखे सो मीर, बेहद लखे सो पीर।
हद बेहद दोनों लखे, ताको नाम फकीर।।

कई पैगंमर आदम, कई फिरे फिरस्ते फेर।
तबक चौदे देखिए, किन ठौर न छोड़ी अन्धेर।।१४।।

आदि आदम से लेकर अब तक अनेकों (एक लाख बीस हजार) पैगम्बर हो चुके हैं। चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में ऐसा कोई भी स्थान नहीं हैं, जहां माया का साम्राज्य (अन्धकार) नहीं है। इसके अन्धकार में बड़े - बड़े फरिस्ते भी भटकते रहते है।

कई सीलवंती सती कहावहीं, कई आरजा अरधांग।
जती वरती पोसांगरी, ए अति सोभावें स्वांग।।१५।।

कई स्त्रियां सती शीलवन्ती कहलाती हैं, तो कई आर्या अर्धांगिनी। इसी प्रकार पुरूषों में कुछ यति हैं, तो कुछ व्रतों का पालन करने वाले व्रती हैं और कुछ कठोर तप करने वाले जैन महात्मा हैं। ये अपने आचरण एवं तप से बहुत प्रसिद्ध होते हैं।

भावार्थ- एकमात्र अपने पति से ही प्रेम करने वाली स्त्री सती कहलाती है। माधुर्य गुण वाली स्त्री शीलवन्ती कहलाती है। श्रेष्ठ गुण, कर्म और स्वभाव वाली स्त्री आर्या कहलाती है। विषयों का त्याग करके तपोमय जीवन बिताने वाले योगी को यति कहते है। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह आदि महाव्रतों का पालन करने वाले व्रती कहे जाते हैं।

कई जुगते जोगी जंगम, कई जुगते सन्यास।
कई जुगते देह दमें, पर छूटे नहीं जम फांस।।१६।।

कई लोग सदा चलते रहने वाले योगी के आचरण का विधिवत् पालन करते हैं, तो कई संन्यास के नियमों का कठोरतापूर्वक पालन करते हैं। कई समाधि की प्राप्ति के लिये शरीर को अति कष्ट साध्य साधनाओं से होकर गुजारते हैं, फिर भी मृत्यु के बन्धन से ये मुक्त नहीं हो पाते हैं।

भावार्थ-कुछ योगी एक स्थान पर एक या तीन रात्रि से अधिक नहीं ठहरते। इन्हें जंगम (विचरणशील) योगी कहते हैं। ब्रह्म के साक्षात्कार से ही जन्म मृत्यु के बन्धन से छुटकारा मिलता है, हठयोग की कष्ट साध्य साधनाओं से नहीं।

कई सिवी कई वैष्णवी, कई साखी समरथ।
लिए जो सारे गुमाने, सब खेलें छल अनरथ।।१७।।

कुछ शैव हैं, तो कुछ वैष्णव हैं। कुछ लोग साखियों की रचना करने में प्रवीण हैं। इस प्रकार सभी लोग अहंकार में मग्न होकर माया के निरर्थक खेल में मग्न हैं।

कई श्रीपात ब्रह्मचारी, कई वेदिए वेदांत।
कई गए पुस्तक पढ़ते, परमहंस सिधांत।।१८।।

कई पूज्यपाद ब्रह्मचारी के रूप में प्रसिद्ध हैं, तो कई वेद वेदान्त के ज्ञाता माने जाते हैं। परमहंसों के सिद्धान्तों पर प्रकाश डालने वाले ग्रन्थों को पढ़ते-पढ़ते बहुत से लोग इस संसार से चले गये, किन्तु कोई भी (ब्रह्ममुनियों के अतिरिक्त) वास्तविक

परमहंस नहीं बन सका।

अनेक अवतार तीर्थंकर, कई देव दानव बड़े बल।
बुजरक नाम धराइया, पर छोड़े न काहूं छल।।१६।।

संसार में भगवान विष्णु के २४ अवतार एवं २४ तीर्थंकर हो चुके हैं। बहुत शक्ति रखने वाले अनेकों देवता और दानव भी हो चुके हैं। इन अवतारों, तीर्थकरों तथा देव पुरूषों का नाम महान व्यक्तित्व के रूप में लिया जाता है, किन्तु माया के छल से इनमें कोई भी अलग नहीं हो सका अर्थात् ये भी निराकार से परे नहीं जा सके।

कई होदी बोदी पादरी, कई चंडिका चामंड।
बिना हिसाबे खेलहीं, जाहेर छल पाखंड।।२०।।

कोई जैन महात्मा हैं तो कोई बौद्ध। किसी ने पादरी का भी भेष धारण का रखा है। कुछ लोग चामुण्ड राक्षस का वध करने वाली काली जी (चण्डी) के भक्त हैं। स्पष्ट रूप से ये लोग माया के आडम्बरों में इतना अधिक फंसे हुए हैं कि उसकी कोई सीमा ही नहीं हैं।

भावार्थ-जैन मत अनादि परमात्मा की सत्ता को नहीं मानता है। बौद्ध मत में तो न आत्मा का अस्तित्व है और न परमात्मा का। इसी प्रकार, पादरी लोग भी मद्य-मांस एवं भौतिकता से स्वयं को दूर नहीं कर पाते। काली देवी के भक्त तामसिक कार्यों (मांस, शराब आदि) में लिप्त रहते हैं। ये सच्चिदानन्द परब्रह्म की प्रेम लक्षणा भक्ति से कोसों दूर रहते हैं। इसलिये इन्हें उपरोक्त चौपाई में विशेष रूप से माया में लिप्त कहा गया है।

कई डिंभ करामात, कई जंत्र मंत्र मसान।
कई जड़ी मूली औखदी, कई गुटका धात रसान।।२१।।

कुछ लोग आडम्बर पूर्ण चमत्कारिक क्रियाओं के प्रदर्शन में लगे रहते हैं, तो कुछ लोग मानव-खोपड़ी लेकर श्मशान में तरह-तरह के मन्त्रों से तान्त्रिक क्रियाओं (यन्त्रों) की सिद्धि करते हैं। कुछ साधू वन में मिलने वाली जड़ी-बूटियों को औषधि के रूप में प्रयोग करके चमत्कारिक उपचार का प्रयास करते हैं। कुछ लोग तरह तरह की धातुओं (स्वर्ण, चांदी, लौह आदि) से भस्मों (रसों) की गोलियां (औषधियां) बनाने में ही स्वयं को धन्य-धन्य मानते हैं।

भावार्थ-वाम मार्गी तान्त्रिक मत वेद-विरूद्ध ऐसा मत है जिसमें मद्य, मांस, मछली तथा भोग विलास से ही मुक्ति की प्राप्ति मानी जाती है। यह मत शाक्त सम्प्रदाय का विकृत रूप है। मृतक मनुष्य के शिर (मसान) को श्मशान में तान्त्रिक लोग लेकर

मन्त्रों का जप किया करते हैं। वे एक कागज पर किसी भी देवी-देवता का नाम तथा विशेश प्रकार की आकृति (त्रिभुज, अष्टभुज, चतुर्भुज जैसी आदि) बनाकर उसमें कुछ विशेष अंक लिखते है। इसे वे मन्त्र कहा करते हैं। किसी निश्चित तिथि को यन्त्रों के जप द्वारा यन्त्र की सिद्धि करते हैं।

कई जुगतें सिध साधक, कई व्रत धारी मुन।
कई मठ वाले पिंड पाले, कई फिरे होए नगन।।२२।।

कोई साधक अवस्था में युक्ति पूर्वक साधना करके सिद्ध बनने के प्रयास में लगा रहता है, तो कोई तपस्या के कठोर व्रतों का पालन करके मुनि कहलाना चाहता है। मठों में रहने वाले साधु प्रायः ज्ञान-वैराग्य से उदासीन होकर शरीर-पोषण में ही अधिक रूचि लेते हैं। कुछ अपने को पूर्ण त्यागी सिद्ध करने के लिये अवधूत वेश में नग्न होकर ही घूमा करते हैं।

कई खट चक्र नाड़ी पवन, कई अजपा अनहद।
कई त्रिवेनी त्रिकुटी, जोती सोहं राते सब्द।।२३।।

कुछ लोग छः चक्रों, नाड़ियों के शोधन, प्राणायाम, अजपा शब्दों तथा अनहद की मधुर ध्वनियों को सुनने की साधना करते हैं। कुछ लोग इड़ा, पिंगला एवं सुषुम्ना के मिलन स्थान में धारणा करके ज्योति के दर्शन और सोऽहम् आदि शब्दों को सुनने के अनुभव में लगे रहते हैं।

भावार्थ- मानव शरीर में आठ चक्र होते हैं। किन्तु साधना में विशेषकर छः चक्रों का प्रयोग होने से यहां छः ही चक्रों का वर्णन हैं। इड़ा, पिंगला तथा सुषुम्ना नाड़ियां ललाट के भाग में जिस बिन्दु पर मिलती हैं, उसे त्रिकुटी या त्रिवेणी कहते है। जो शब्द बिना जपे ध्यान में सुनायी पड़े, उसे अजपा जप कहते हैं। सुरति-शब्द योग के अनुसार पांचों ब्रह्माण्डी शब्द (निरंजन,ओऽम्, सोऽहम्, शक्ति तथा ररं) ध्यान में निरन्तर गूंजते रहते हैं, इसलिये इन्हें अजपा जप कहते हैं क्योंकि बिना वाणी से जपे ही ये ध्यान में सुनायी पड़ते हैं। किन्तु इन पांचों में विशेषकर ओऽम् और सोऽहम् शब्द का ही अजपा शब्द के रूप में प्रचलन है।

कई संत जो महंत, कई देखीते दिगंमर।
पर छल ना छोड़े काहूं को, कई कापड़ी कलंदर।।२४।।

कई सन्त आश्रमों में महन्त बनकर वैभवशाली एवं प्रतिष्ठित जीवन जीते हैं। इनके विपरीत कुछ महात्मा (दिगम्बर जैनी या दिगम्बरी अखाड़े के) पूर्णतया नग्न ही

रहते हैं। उनकी कमर में लंगोट तक नहीं होती। कुछ मुस्लिम फकीर ऐसे होते हैं जो संसार से विरक्त रहते हैं और काले कपड़े पहनते हैं। किन्तु माया का छल इन्हें भी नहीं छोड़ता है।

भावार्थ-कलंदर सूफी फकीरों का ऐसा वर्ग है जो काले वस्त्र धारण करता है। ये काली गुदड़ी रखते हैं, जिसमें अपनी सारी सामग्री रखा करते हैं। काले कपड़ों का प्रयोग करने से इन्हें कापड़ी कहते हैं।

कई आचारी अप्रसी, कई करे कीरंतन।
यों खेलें जुदे जुदे, बस परे सब मन।।२५।।

कई लोग शुद्धता के कठोर नियमों (छूतछात) का पालन करने वाले हैं। कई कीर्तन-भजन में गहरी रूचि रखने वाले है। किन्तु ये सभी लोग मन के वशीभूत हैं तथा माया के बन्धनों में बधं कर तरह-तरह के खेल कर रहे हैं।

कई कीरंतन करें बैठे, कई जाग जगन।
कई कथें ब्रह्म ग्यान, कई तपे पंच अगिन।।२६।।

कुछ लोग शांति पूर्वक बैठे-बैठे परमात्मा का कीर्तन करने में संलग्न हैं, तो कई ऐसे भी हैं जो पूरी रात जागकर अपने आराध्य को याद करने में ही अपना गौरव मानते हैं। कई ब्रह्मज्ञान की चर्चा करते हैं और कई तो गर्मी में पांच स्थानों पर आग जलाकर उनके मध्य में बैठने को ही सबसे बड़ा तप मानते हैं।

भावार्थ-परमात्मा की स्तुति संगीत के मधुर स्वरों में करना ठीक है, किन्तु इसी को मोक्ष का साधन मान लेना तथा ध्वनि विस्तारक यन्त्र लगाकर दूसरों का ध्यान भंग करना उचित नहीं। यदि आग तापना ही तप है, तो चूल्हा जलाने वाले सभी ही तपस्वी बन जायें। वस्तुतः तप का अभिप्राय है- **'ऋतं तपः दमः तपः सत्यं तपः स्वाध्याय तपः** अर्थात् यथार्थ सत्य को मानना, इन्द्रियों को विषयों में न जाने देना, मन-वाणी एवं कर्म से सत्य का आचरण करना, धर्मग्रन्थों का स्वाध्याय करना तथा ब्रह्मचर्य का पालन करना ही वास्तविक तप है।

कई इंद्री करे निग्रह, मन ल्याए कश्ट मोह।
कई ऊर्ध ठाड़ेस्वरी, कई बैठे खुद होए।।२७।।

कई लोग इन्द्रियों को उनके विषयों से रोकने का प्रयास तो करते हैं किन्तु मोह

के बन्धन में होने से ऐसा करने पर उनके मन को बहुत ही कष्ट का अनुभव होता है। कई लोग अपने हाथों को ऊपर करके खड़े होकर तप करते हैं। आधुनिक वेदान्ती तो स्वयं को ब्रह्मस्वरूप मानकर बाह्यरूप से शान्त होकर बैठे रहते हैं

भावार्थ- किसी भी आर्ष ग्रन्थ में खड़े होकर तथा अपनी भुजाओं को ऊपर करके तप करने का कोई भी विधान नहीं है। वस्तुतः यह तामसिक कर्म है। पौराणिक लोगों ने तप की उल्टी व्याख्या की है। योगदर्शन में कहा गया है कि स्थिर सुखम् आसनम् अर्थात् जिससे स्थिरतापूर्वक सुख से बैठा जा सके, वही आसन है। केवल वेदान्त के सूत्रों को पढ़ने मात्र से ही कोई ब्रह्मज्ञानी नहीं हो सकता है। अपितु ध्यान समाधि का आश्रय लेकर प्रियतम का साक्षात् करने पर ही कोई सच्चे अर्थों में ब्रह्मज्ञानी कहला सकता हैं।

कई फिरे देस देसांतर, कई करें काओस।
कई कपाली अघोरी, कई लेवें ठंढ पाओस।।२८।।

कई महात्मा देश-देशान्तर में घूमते रहते हैं। कई शीत ऋतु में भी भयानक ठण्डक में ओस में साधना करते हैं, तो कई दिन रात शीतल जल में खड़े रह कर आराधना करते हैं। कई कापालिक तान्त्रिक हैं, तो कई अघोरी हैं।

भावार्थ-कापालिक अपने हाथ में मृतक मनुष्य का सिर (कपाल) लिये रहते हैं तथा श्मशान में रहकर तान्त्रिक साधना करते हैं। ये मद्य-मांस का सेवन करते हैं। अघोरी भी श्मशान आदि भयानक स्थानों में साधना करते हैं। इनके लिये भक्ष्य-अभक्ष्य का कोई नियम नहीं होता है। ये सर्वभक्षी होते हैं।

कई पवन दूध आहारी, कई ले बैठत हैं नेम।
कई कैद ना करे कछुए, ए सब छल के चेन।।२९।।

कुछ लोग मात्र वायु का ही आहार करते हैं तो कुछ केवल दूध ही पीते हैं। कुछ लोग साधना के कठोर नियमों का पालन करते हैं। कुछ ऐसे भी होते हैं जो किसी भी नियम से नहीं बंधते हैं। इस प्रकार तारतम ज्ञान से रहित होने के कारण इतनी ऊँची तपस्या करने वाले भी माया के छल के शिकार हो जाते हैं।

कई फल फूल पत्र भखी, कई आहार अलप।
कई करें काल की साधना, जिया चाहें कलप।।३०।।

कुछ साधक फल, फूल तथा पत्ते खाकर ही अपना गुजारा करते हैं, तो कुछ अति

अल्पाहार करते हैं। कुछ लोग अपनी उम्र को बढ़ाने के लिये साधना करते हैं। उनकी एक कल्प तक जीवित रहने की इच्छा होती है।

भावार्थ-एक कल्प में ४ अरब ३२ करोड़ वर्ष होते हैं। जब योगी पंचभूतों पर विजय प्राप्त कर लेता है, तो वह एक कल्प तक अपने तन को रख सकता है। उसका शरीर योगाग्निमय हो जाता है। इसका सांकेतिक वर्णन श्वेता. उप. में किया गया है।

कई धारा गुफा झांपा, कई जो गालें तन।
कई सूकें बिना खाए, कई करें पिंड पतन।।३१।।

कुछ साधक नदियों की धारा के पास, तो कुछ गुफाओं में साधना करते है। कई पर्वत की चोटी से छलांग लगा देते हैं या बर्फ में अपने शरीर को गला देते है। कई भोजन न करके अपने शरीर को सुखा देते हैं और कई अन्य क्रियाओं से अपने शरीर को समाप्त कर देते है।

यों वैराग जो साधना, कई जुदे जुदे उपचार।
यों चलें सब पंथ पैंडे, खेले सब संसार।।३२।।

इस प्रकार वैराग्य एवं साधना के मार्ग का अनुसरण करते हुए अलग-अलग पद्धतियों से लोग अपने भवरोग का उपचार करने का प्रयास करते हैं। सभी मत-पन्थों की राह इसी के ऊपर केन्द्रित होती है। इस प्रकार सारा संसार शरीर, मन तथा बुद्धि के द्वारा होने वाली साधना पर ही निर्भर रहता है। कोई भी आत्मिक दृश्टि से चलने का मार्ग नहीं अपना पाता।

खेले सब देखा देखी, ज्यों चले चींटी हार।
यों जो अंधे गफलती, बांधे जाए कतार।।३३।।

जिस प्रकार चींटियां एक दूसरे के पीछे आंख मूंद कर चला करती हैं जिससे उनकी पंक्ति वद्धता दिखायी पड़ती है, उसी प्रकार अज्ञानता और संशय में डूबे हुए लोग एक दूसरे की देखा देखी राह अपनाते हैं, जिसका परिणाम यह होता है कि ये अपने-अपने सम्प्रदायों के अनुयायियों की पंक्ति लगाकर चलने के लिये विवश हो जाते हैं।

भावार्थ- तारतम ज्ञान से रहित होने पर संशय नहीं मिटते और परमधाम का लक्ष्य न होने से आत्मिक दृष्टि का मार्ग भी नहीं मिलता। परिणाम स्वरूप निराकार को कोई भी पार नहीं कर पाता है। आगे की चौपाई में यही बात दर्शायी गयी है-

कोई ना चीन्हें आप को, ना सुध अपनो घर।
जिमी न पैंडा सूझे काहू, जात चले या पर।।३४।।

इस संसार में तारतम ज्ञान से रहित होने के कारण किसी को भी न तो अपनी पहचान है और न अपने मूल घर की। किसी को भी यह समझ में नहीं आता है कि यह संसार कैसा है और इससे परे जाने का मार्ग क्या है? वे आंख मूंद कर बैकुण्ठ-निराकार के ही मार्ग पर चलते जा रहे हैं।

बाजीगर न्यारा रह्या, ए खेलत कबूतर।
तो कबूतर जो खेल के, सो क्यों पावें बाजीगर।।३५।।

इस खेल का नियन्त्रक (बाजीगर) अक्षर ब्रह्म का मन है। सभी जीव इस खेल के कबूतर है अर्थात् उनके स्वाप्निक मन के सांकल्पिक प्रतिबिम्ब रूप हैं। ऐसी अवस्था में यह कैसे सम्भव है कि स्वप्न के जीव निराकार से परे उस अक्षर ब्रह्म या उनके मन स्वरूप अव्याकृत को पा सकें।

आपे नाम जुदे जुदे, खुदा के धरे अनेक।
अनेक रंगे संगे ढ़ंगे, बादे करे विवेक।।३६।।

संसार के लोगों ने अपनी - अपनी भाषा में अपनी बुद्धि के अुनसार परब्रह्म के अनेक नामों की कल्पना कर ली है। अपनी बौद्धिक चातुर्यता से वे धार्मिक विषयों पर आपस में अनेक प्रकार से वाद - विवाद करते रहते हैं।

सुध इनको तो परे, जो ए आप सांचे होए।
तो कुरान के माएने, इत खोल ना सके कोए।।३७।।

संसार के इन स्वाप्निक जीवों को अखण्ड धाम तथा परब्रह्म का ज्ञान तो तब होता जब ये बेहद के रहने वाले होते। यही कारण है कि संसार का कोई भी व्यक्ति (जीव) आज दिन तक कुर्आन के गुह्य अर्थो को नहीं जान सका। सभी बाह्य शब्दार्थ में ही उलझे रहे।

ए देखो तुम मोमिनों, खेल बिना हिसाब।
ए खेल तुम खातिर, खसमें रचिया ख्वाब।।३८।।

हे ब्रह्ममुनियों! तुम इस बात का विचार करो कि मात्र तुम्हारी खेल देखने की इच्छा को पूर्ण करने के लिये ही प्रियतम परब्रह्म ने इस अनन्त मायावी संसार की रचना

की है।

मोमिनों के मेले मिने, कोई आए न सके रूह ख्वाब।
ए ख्वाब नीके पेहेचानियो, ज्यों होवे दीन सवाब।।३६।।

ब्रह्ममुनियों के समूह में कोई सपने का जीव नहीं आ सकता अर्थात् वह उनकी तरह विशुद्ध ज्ञान, पूर्ण समर्पण, विरह तथा प्रेम के मार्ग का अनुगमन नहीं कर सकता। हे साथ जी ! इस स्वप्नमयी खेल की अच्छी तरह से पहचान कीजिए जिससे आपको आध्यात्मिकता का वास्तविक लाभ मिल सके।

।।प्रकरण।।१४।।चौपाई।।३४०।।

सनंध जुदे जुदे फिरकों की

इस प्रकरण में यह बात दर्शायी गयी है कि किस प्रकार सभी मत-पन्थों के दार्शनिक सिद्धान्तों में विरोध है। तारतम ज्ञान का प्रकाश न होने से ये वास्तविक सत्य का निर्णय करने में असमर्थ है -

अजूं देखाऊं नीके कर, ए जो खैंचा खैंच करत।
ए झूठे झूठा राचहीं, पर सुध न काहूं परत।।१।।

श्री महामति जी कहते है कि हे ब्रह्ममुनियों! संसार के विभिन्न मतों के अनुयायी जिस प्रकार आपस में वाद - विवाद करते हैं, उसकी अब मैं अच्छी तरह से पहचान कराता हूं। इन स्वाप्निक जीवों को सत्य की पहचान नहीं हो पाती, इसलिये ये झूठ को ही सत्य मानकर उसका अनुसरण करते हैं।

खेल खेलें और रब्दें, मिनो मिने करें क्रोध।
जैसे मछ गलागल, छोड़े ना कोई व्रोध।।२।।

संसार के ये जीव धार्मिक विषयों पर आपस में एक दूसरे के प्रति प्रपंच रचते है और विवाद बढ़ाते रहते हैं। जिस प्रकार मगरमच्छ अन्य जीवों को निगलने के लिये सर्वदा तत्पर रहता है, उसी प्रकार ये भी एक दूसरे के प्रति क्रोध करते हैं तथा विरोध में उसे नष्ट करने का प्रयत्न करते रहते है।

कोई कहे दान बड़ा, कोई कहे ग्यान।
कोई कहे विग्यान बड़ा, यों लरे सब उनमान।।३।।

कोई कहता है कि दान बड़ा है और कोई कहता है कि ज्ञान। किसी का यह भी कहना है कि विज्ञान इससे भी महान है। इस प्रकार सभी विद्वान अपने अनुमान के ज्ञान के आधार पर विवाद करते हैं।

भावार्थ-धन के दान की अपेक्षा ज्ञान श्रेष्ठ है किन्तु ज्ञान का दान ज्ञान से भी श्रेष्ठ है क्योंकि यदि ज्ञान का दान करने (प्रसार करने की) की प्रवृत्ति न हो तो ज्ञान का लोप हो जायेगा। विज्ञान (मारिफत) से ही ज्ञान प्रकट होता है, इसलिये वह महान है।

कोई कहे करम बड़ा, कोई केहेवे काल।
कोई कहे साधन बड़ा, यों लरें सब पंपाल।।४।।

कोई कहता है कि कर्म बड़ा है, किन्तु कोई कहता है कि काल बड़ा है। कोई साधना को बड़ा कहता है। इस प्रकार सभी व्यर्थ में लड़ा करते हैं।

भावार्थ-'मोह अग्यान भरमना, करम काल और सुंन'के कथन के आधार पर कर्म और काल एकार्थवाची हैं। यदि व्यवहारिक रूप में देखा जाय, तो कोई भी कर्म काल (अवधि) के बिना नहीं हो सकता। निष्काम कर्म मोक्ष की प्राप्ति कराकर काल के बन्धन से छुड़ा सकता है।

इसी प्रकार योग साधना के द्वारा निर्बीज समाधि की प्राप्ति करके कर्म और काल के बन्धन से छूटा जा सकता है, किन्तु योग साधना में भी प्रारम्भिक अवस्था में कर्म (आसन, प्राणायाम, धारणा आदि) एवं अवधि का योग होता है। इस प्रकार ये तीनों एक दूसरे के पूरक है। योग समाधि के द्वारा प्राप्त होने वाली निर्बीज समाधि की अवस्था त्रिगुणातीत होने से सर्वोपरि कही जा सकती हैं।

कोई कहे बड़ा तीरथ, कोई कहे बड़ा तप।
कोई कहे सील बड़ा, कोई केहेवे सत।।५।।

कोई तीर्थ को श्रेष्ठ कहता है तो कोई तप को। किसी के मतानुसार शील सर्वोपरि है, तो कोई सत्य को ही सर्वश्रेष्ठ मानता है।

भावार्थ-**'नहि सत्यात् परो धर्मः'** के कथनानुसार सत्य से परे कुछ भी नहीं है। अथर्ववेद के कथन **'सत्येन उत्तभिता भूमिः'** के आधार पर यही कह सकते हैं कि सत्य से ही पृथ्वी टिकी है। वही सत्य तीर्थ एवं तप के अन्तर्गत आता है। सत्य का पालन, स्वाध्याय, ध्यान आदि तीर्थ है, क्योंकि इनसे भवसागर से तरा जाता है। इसी प्रकार

'ऋतं तपः दमः तपः सत्यं तपः स्वाध्याय तपः' भी तप को तीर्थ के समानान्तर घोषित करते हैं। ये सभी गुण शील में समाहित हो जाते हैं।

जिस प्रकार, किसी व्यक्ति के दोनों नेत्रों या दोनों कानों में यह निर्णय करना कठिन है कि बांया नेत्र श्रेष्ठ है या दाहिना। बांया कान श्रेष्ठ है अथवा दाहिना? तो इसका उत्तर यही है कि दोनों की महत्ता अपने अपने स्तर पर समान है। उसी प्रकार इस प्रकरण के अधिकतर प्रसंगों में यही स्थिति है।

कोई कहे विचार बड़ा, कोई कहे बड़ा व्रत।
कोई केहेवे मत बड़ी, या विध कई जुगत।।६।।

कुछ लोग विचार को बड़ा कहते है तो कुछ व्रत को। किसी के मतानुसार सिद्धान्त बड़ा है। इस प्रकार लोग अनेक प्रकार की राहों पर चलते हैं।

भावार्थ- विचारों के आधार पर ही व्रत का पालन होता है किन्तु विचार के मूल बीज के रूप में सिद्धान्त ही निहित होता है। क्योंकि जिसका जैसा सिद्धान्त होता है, वैसा ही वह विचार करता है। उदाहरणार्थ एक पौराणिक व्यक्ति अपने सिद्धान्तों के अनुसार ही विचार करता है और उससे विपरीत विचार धारा वाला वैदिक विद्वान अपने सिद्धान्तों के अनुसार विचार करता है। किन्तु यह भी तथ्य है कि श्रेष्ठ विचार ही (स्वमत अनुसार) सिद्धान्त के रूप में परिभाषित होते हैं।

कोई कहे बड़ी करनी, कोई कहे मुगत।
कोई कहे भाव बड़ा, कोई कहे भगत।।७।।

किसी का कथन है कि आचरण ही श्रेष्ठ है, तो कोई मुक्ति को श्रेष्ठ मानता है। कोई भाव को बड़ा कहता है, तो कोई भक्ति को।

भावार्थ- श्रेष्ठ आचरण (ज्ञान, वैराग्य ध्यान आदि) के बिना मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती। इसी प्रकार बिना भाव के भक्ति भी नहीं हो सकती। आचरण एवं भाव को कारण या बीज माना जा सकता है और मुक्ति तथा भक्ति को उसका कार्य रूप फल या वृक्ष माना जा सकता है। किन्तु यह भी ध्यान रखने योग्य तथ्य है कि जिस बीज से वृक्ष उत्पन्न होता है, वही वृक्ष पूर्व के बीज जैसे सैकड़ों-हजारों बीजों को उत्पन्न करने का कारण बनता है।

यदि आम के छोटे से पौधे को जड़ से ही उखाड़ दिया जाय, तो वह बड़ा होकर नये बीज उत्पन्न नहीं कर सकेगा। ऐसी स्थिति में वह कारण प्रतीत होने लगता है। इसी प्रकार मुक्ति की कामना से ही श्रेष्ठाचरण किया जाता है तथा भक्ति में लगने पर ही शुद्ध भाव परिपक्व होता है। ऐसी स्थिति में यही कहा जा सकता है कि दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।

कोई कहे कीरंतन बड़ा, कोई कहे श्रवन।
कोई कहे बड़ी वंदनी, कोई कहे अरचन।।८।।

कोई कहता है कि कीर्तन करना श्रेष्ठ है, तो कोई कहता है कि श्रवण करना। किसी के मतानुसार वन्दना करना श्रेष्ठ है, तो कोई अर्चना (पूजा) को सर्वोपरि मानता है।

भावार्थ-कीर्तन, श्रवण, वन्दन एवं अर्चन सभी नवधा भक्ति के अंग हैं और एक दूसरे के पूरक हैं। यदि कीर्तन किया जाय और उसे कोई सुनने वाला ही न हो, तो उसकी प्रासंगिकता ही क्या है? यदि यह कहा जाय कि वह आत्म कल्याणार्थ है, तो कीर्तन करने वाले ने भी तो पहले कभी श्रवण किया ही होगा, तभी उसके अन्दर कीर्तन करने का भाव जागृत हुआ है। वन्दन से रहित अर्चन निष्प्रयोजन है। वन्दन का भाव ही अर्चन को वैसे ही सार्थक बनाता है जैसे-प्राण शरीर को। किन्तु यदि शरीर न रहे तो प्राण की क्रिया कैसे होगी और यदि प्राण ही न रहे तो शरीर भी निर्जीव हो जायेगा।

कोई कहे ध्यान बड़ा, कोई कहे धारन।
कोई कहे सेवा बड़ी, कोई कहे अरपन।।९।।

कोई ध्यान को बड़ा कहता है तो कोई धारणा को। किसी का कथन है कि सेवा बड़ी है तो कोई आत्मसमर्पण को ही सर्वोपरि मानता है।

भावार्थ- सृष्टि में किसी भी पदार्थ के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। किसी सुन्दर महल के शिखर को देखकर उसकी नींव की महत्ता को समाप्त नहीं किया जा सकता। वस्तुतः संसार की प्रवृत्ति ही परिणाम को देखने की होती है। वह लक्ष्य-प्राप्ति के साधन को उतनी महत्ता नहीं देता जितना लक्ष्य को। निःसन्देह ध्यान ब्रह्म का साक्षात्कार कराने वाला है, किन्तु धारणा के बिना उसका अस्तित्व ही कैसे हो सकता है? धारणा का

परिपक्व रूप ही तो ध्यान है। सेवा धर्म बहुत बड़ा है किन्तु स्वयं को समर्पित किये बिना की गयी सेवा वास्तविक सेवा नहीं हो सकती।

कोई कहे संगत बड़ी, कोई कहे बड़ा दास।
कोई कहे विवेक बड़ा, कोई कहे विस्वास।।१०।।

किसी का कहना है कि सत्संगति सबसे बड़ी है, तो कोई दास भावना (सेवा के लिये) को सर्वोपरि मानता है। कोई विवेक को श्रेष्ठ मानता है, तो कोई विश्वास को।

भावार्थ–'सत्संगतिः कथय किम् न करोति पुंसाम्' अर्थात् 'सत्संगति मनुष्यों का कौन सा काम सिद्ध नहीं करती' के कथन से यह सिद्ध है कि सत्संगति की महिमा बहुत अधिक है, सम्भवतः दास भावना से भी अधिक। सच्चे हृदय की दासत्व भावना से की गयी सेवा निश्चित रूप से किसी महान व्यक्तित्व को प्रसन्न कर सकती है, किन्तु सत्संगति जीवन में निर्णायक मोड़ ला देती है।

विवेक दृष्टि से किया गया विश्वास ही आध्यात्मिक जीवन को सफल बनाता है। अविवेक से किया गया विश्वास अन्धविश्वास के रूप में परिवर्तित हो जाता है, जो पतन का कारण बनता है। इस प्रकार विवेक की श्रेष्ठता परिलक्षित होती है।

कोई कहे स्वांत बड़ी, कोई कहे तामस।
कोई कहेवे पन बड़ा, यों खेलें परे परबस।।११।।

कोई कहता है कि शान्ति सबसे बड़ी है, तो कोई तामस को सबसे बड़ा मानता है। किसी के मतानुसार प्रण करना सबसे बड़ा है। इस प्रकार संसार के लोग माया के अधीन होकर भवसागर में भटकते रहते हैं।

भावार्थ– प्रकाश, क्रिया एवं स्थिति सत्व, रज तथा तमस् के गुण हैं। सतोगुण में ही शान्ति है किन्तु तमस गुण के न रहने पर अस्तित्व पर ही प्रश्न खड़ा हो जाता है। निःसन्देह तमस का त्याग करके ही अध्यात्म के चरम पर पहुँचा जा सकता है, किन्तु सृष्टि में इसके अस्तित्व को नकारा भी नहीं जा सकता है।

कोई कहे सदा सिव बड़ा, कोई कहे आद नारायन।
कोई कहे आदें आद माता, यों लरें तानों तान।।१२।।

कोई कहता है कि सदाशिव बड़े हैं, तो कोई आदिनारायण को बड़ा कहता है। कोई आदि शक्ति (महामाया) को बड़ा मानता है। इस प्रकार आपस में अपनी ही बात को

सत्य सिद्ध करने के लिये सभी मतों के अनुयायी विवाद करते हैं।

भावार्थ-शैवों के इष्ट सदाशिव हैं, वैष्णवों के आराध्य आदिनारायण हैं तथा शाक्तों की इष्ट आदि शक्ति हैं। इस प्रकार सभी पक्षपात पूर्ण तरीकों से अपने ही उपास्य को बड़ा कहते हैं जो उचित नहीं है। उपरोक्त चौपाई में आदिनारायण को ही सर्वोपरि मानना पड़ेगा क्योंकि सृष्टि के वे ही प्रथम पुरूष हैं। सदाशिव की उत्पत्ति उनके बाद ही होती है।

कोई कहे आतम बड़ी, कोई कहे परआतम।
कोई कहे अहंकार बड़ा, जो आद का उतपन।।१३।।

किसी का कथन है कि आत्मा सर्वोपरि है, तो कोई परात्म को सर्वश्रेष्ठ मानता है। कोई सृष्टि के प्रारम्भ में ही उत्पन्न होने वाले अहंकार को सर्वोपरि बताता है।

भावार्थ-लौकिक कार्य के लिये अहंकार का होना अनिवार्य है, क्योंकि इसके बिना जीव (आत्मा) से कोई भी कार्य नहीं हो सकता। किन्तु यदि आत्मा का ही अस्तित्व न हो तो मात्र अहंकार ही क्या कर लेगा? अहंकार जड़ है उसमें चेतना जीव के द्वारा ही आती है। इसी प्रकार, समष्टि रूप में आदिनारायण के द्वारा ही महत्तत्व से अहंकार की उत्पत्ति होती है।

कोई कहे सकल व्यापी, देखी तां सब ब्रह्म।
कोई कहे ए न लह्या, यों लरें भूले भरम।।१४।।

किसी का कथन है कि ब्रह्म सर्वव्यापक है। वह आत्मिक दृष्टि से कण-कण में दृष्टिगोचर हो सकता है। किसी का मत है कि इस संसार में उसे पाया ही नहीं जा सकता। इस प्रकार संसार के लोग भ्रम के शिकार होकर आपस में लड़ते ही रहते हैं।

कोई कहे सुन्य बड़ी, कोई कहे निरंजन।
कोई कहे निरगुन बड़ा, यों लरें वेद वचन।।१५।।

कोई शून्य को बड़ा कहता है तो कोई निरंजन को और कोई निर्गुण को। इस प्रकार धर्मग्रन्थों के वचनों को लेकर संसार के लोग विवाद करते हैं।

भावार्थ- निरंजन का अर्थ होता है- हाथ, पैर आदि अवयवों से रहित। इसी प्रकार निर्गुण का तात्पर्य है-शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध से रहित। महत्तत्व तथा

अहंकार को भी निरंजन या निर्गुण तो कह सकते हैं, किन्तु शून्य नहीं। यद्यपि ये शून्य जैसे ही प्रतीत होते हैं। मोहतत्व को ही शून्य कहते हैं, उसे ही निरंजन या निर्गुण भी कहते हैं। इसी प्रकार माया के गुणों से रहित ब्रह्म को भी निर्गुण कहा जाता है। एक ही शब्द अलग-अलग प्रसंगों में अलग-अलग नामों में प्रयुक्त होता है, जिससे विवाद की उत्पत्ति होती है।

कोई कहे आकार बड़ा, कोई कहे निराकार।
कोई केहेवे तेज बड़ा, यों लरें लिए विकार।।१६।।

कोई परमात्मा को साकार मानना उचित मानता है, तो किसी के लिये परमात्मा केवल निराकार ही है। किसी के मतानुसार वह तेज स्वरूप है। इस प्रकार लोग अज्ञानता का विकार लेकर लड़ते रहते हैं।

कोई कहे पारब्रह्म बड़ा, कोई कहे पुरसोतम।
यों वेद के वाद अंधकारे, करें लडाई धरम।।१७।।

किसी की दृष्टि में परब्रह्म सर्वोपरि है, तो किसी के मत में पुरूषोत्तम। इस प्रकार धर्मग्रन्थों के आशयों को न समझने के कारण जो सिद्धान्त निरूपित किये जाते हैं, उनमें अज्ञानता का अन्धकार भरा होता है जिससे धर्म के नाम पर विवाद खड़ा होता है।

भावार्थ- तारतम ज्ञान की दृष्टि से क्षर-अक्षर से परे उत्तम पुरूष ही सच्चिदानन्द अक्षरातीत परब्रह्म है। इस प्रकार परब्रह्म और पुरूषोत्तम एकार्थवाची सिद्ध होते हैं। किन्तु पौराणिक मान्यता में श्रीरामचन्द्र जी को मर्यादा पुरूषोत्तम और श्रीकृष्ण जी को लीला पुरूषोत्तम कहकर विवाद किया जाता है। तारतम ज्ञान के अभाव में इस प्रकार के मतभेदों का उत्पन्न होना स्वाभाविक है।

जाहिर झूठा खेलहीं, हिरदे अति अंधेर।
कहें हम सांचे और झूठे, यों फिरें उलटे फेर।।१८।।

ये सांसारिक लोग प्रत्यक्ष रूप से झूठे मार्ग का अनुसरण कर रहे हैं। इनके अन्दर बहुत अधिक अज्ञानता का अन्धकार छाया रहता है। ये कहते हैं कि केवल हम ही सच्चे हैं। हमारे अतिरिक्त अन्य सभी झूठे हैं। इस प्रकार वे जन्म-मरण के चक्र में भटकते रहते हैं।

पंथ सारों की एह मजल, अनेक विध वैराट।
ए जो विगत खेल की, सब रच्यो छल को ठाट।।१९।।

इस संसार में अनेक भ्रमपूर्ण सिद्धान्तों का अनुसरण करने वाले मत पन्थों की यही स्थिति है। संसार का यह सम्पूर्ण वैभव माया द्वारा रचा गया है। यही इस संसार की वास्तविकता हैं।

कोई हेम गले अगनी जले, कोई भैरव करवत ले।
खसम को पावे नहीं, जो तिल तिल काटे देह।।२०।।

भले ही कोई बर्फ में गल जाय, अपने शरीर को आग में जला डाले, पर्वत से छलांग लगा ले अथवा अपने शरीर को आरे से चिरवाकर बहुत छोटे-छोटे टुकड़े करा ले, फिर भी तारतम ज्ञान के प्रकाश एवं प्रियतम की कृपा के बिना कोई भी अक्षरातीत का साक्षात्कार नहीं कर सकता है।

भेख जुदे जुदे खेल हीं, जाने खेल अखंड।
ए देत देखाई सब फना, मूल बिना ब्रह्मांड।।२१।।

सभी मत पन्थों के अनुयायी अपनी अलग-अलग वेशभूषा को धारण कर संसार के सुखों में मग्न हैं। वे ऐसा मान बैठे हैं कि यह संसार ऐसे ही चलता रहेगा, यह कभी भी नष्ट होने वाला नहीं हैं जबकि सच्चाई यह है कि यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड स्वप्नवत् है। इसका कोई मूल आधार नहीं है। संसार के रूप में जो कुछ भी दिखायी पड़ रहा है, वह नश्वर है।

भावार्थ- त्रैतवाद के अनुयायी इस संसार को अनादि कारण प्रकृति से उत्पन्न हुआ मानते हैं। अथर्ववेद में स्पष्ट लिखा है कि 'माया ह जज्ञे मायया' अर्थात् अनादि कारण प्रकृति, जिसे किसी भी स्थूल प्रमाण एवं शब्द प्रमाण से नहीं जाना जा सकता है, वह भी ब्रह्म की अनादि चैतन्य माया से प्रकट हुई है। ऐसी स्थिति में इस संसार को बिना मूल का अर्थात् स्वाप्निक प्रकृति से उत्पन्न हुआ मानना पड़ेगा।

खसम एक सबन का, नाहीं न दूसरा कोए।
ए विचार तो करे, जो आप सांचे होए।।२२।।

यह निर्विवाद सत्य है कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का परमात्मा एक ही है, अक्षरातीत। उसके अतिरिक्त अन्य किसी को भी परमात्मा कहलाने की शोभा नहीं है। किन्तु इस प्रकार का विचार तो उनके मन में तभी आ सकता था, यदि वे मोह से उत्पन्न नहीं हुए होते (स्वाप्निक नहीं होते)।

खेलें सब बेसुध में, कोई बोल काढ़े विसाल।
उतपन सारी मोह की, सो होए जाए पंपाल।।२३।।

सृष्टि के सभी प्राणी अज्ञानता की नींद में भटक रहे हैं। इनमें कोई-कोई सौभाग्य वश आध्यात्मिक तत्व ज्ञान की बहुत ऊँची बातें भी कर देता है, किन्तु इनकी उत्पत्ति मोह से हुई है, इसलिये इनका कहा हुआ वचन निरर्थक हो जाता है, क्योंकि ये उसे प्रत्यक्ष अनुभव में नहीं ला पाते।

भावार्थ- संसार के विद्वान परब्रह्म की महिमा से सम्बन्धित बहुत श्रेष्ठ बातें कह देते हैं किन्तु तारतम ज्ञान से रहित होने के कारण वे परब्रह्म के धाम,स्वरूप एवं लीला के सम्बन्ध में न तो कुछ जान पाते हैं न और न साक्षात्कार ही कर पाते हैं।

बिना दिवालें लिखिए, अनेक चित्रामन।
सो क्यों पावे खुद को, जाको मूल मोह सुंन।।२४।।

जिस प्रकार बिना किसी दिवाल के हवा में अनेकों प्रकार के कितने भी चित्र क्यों न बना लिये जांय, किन्तु उनका अस्तित्व नहीं होता है क्योंकि उनका आधार (दिवाल, कागज आदि) नहीं होता, उसी प्रकार संसार के सभी जीव मोह तत्व (निराकार) से उत्पन्न हुए हैं, इसलिये न तो ये अपने स्वरूप की वास्तविकता को जान पाते हैं और न परब्रह्म को।

अनेक किव इत उपजे, वैराट सचराचर।
ए छल मोहोरे छल को, खेलत हैं सत कर।।२५।।

इस चराचर जगत में धर्म ग्रन्थों की रचना करने वाले अनेकों कवि रूप विद्वान हुए हैं किन्तु तारतम ज्ञान से रहित होने के कारण ये परिवर्तनशील नश्वर संसार को ही अखण्ड मानकर अपना ज्ञान फैलाते हैं।

।।प्रकरण।।१५।।चौपाई।।३६५।।

सनंध–वैराट की जाली

जाली का अर्थ होता है- बन्धन। यद्यपि ब्रह्माण्ड की रचना जीवों के कर्म - फल - भोग एवं साधना द्वारा मोक्ष प्राप्त करने के लिये की जाती है किन्तु इसमें अनेक प्रकार के अज्ञान रूप बन्धन हैं जिनका दिग्दर्शन इस प्रकरण में कराया गया है।

ए खेल रच्यो हम खातिर, सो देखन आइयां हम।
ए जो प्यारे मेंहेदी महंमद, जेती रूह मुस्लिम।।१।।

माया का यह खेल हमारे लिये ही बनाया गया है जिसे देखने के लिये हम ब्रह्मसृष्टियां तथा ईश्वरीय सृष्टि प्रियतम प्राणनाथ (मुहम्मद साहिबुज्जमां महदी) के साथ आयी हैं।

ए खेल को कौन देखावहीं, कौन कहे याकी सुध।
इमाम आप आए बिना, क्यों आवे वतनी बुध।।२।।

प्राणेश्वर अक्षरातीत के अतिरिक्त और कौन है जो हमें माया का यह खेल दिखाये तथा उसकी पहचान भी दे। स्वयं परब्रह्म जब तक इस संसार में श्री प्राणनाथ जी (इमाम महदी) के स्वरूप में नही आते तब तक परमधाम की निजबुद्धि का यहां पर आना कैसे सम्भव था?

आई बुध वतन की, तब खुले माएने कुरान।
भी नेक बताऊं खेल या बिध, ज्यों होवे सब पेहेचान।।३।।

अब मेरे धाम हृदय में परमधाम की निज बुद्धि विद्यमान हो गयी है, जिसके परिणाम स्वरूप कुर्आन की हकीकत एंव मारिफत (ज्ञान एवं विज्ञान) के सभी भेद स्पष्ट हो गये हैं। अब मैं इस मायावी जगत की थोड़ी सी वास्तविकता को दर्शा रहा हूं, जिससे सबको विदित हो जाय।

भावार्थ - निजबुद्धि का तात्पर्य अक्षर ब्रह्म तथा अक्षरातीत की निजबुद्धि से है। मारिफत के जो ३० हजार हरूफ मुहम्मद स. अ. व. के द्वारा वर्णित नहीं हो सके, वे सागर, श्रृंगार ग्रन्थ में प्रकट किये गये हैं। इनका वर्णन अक्षरातीत की निजबुद्धि के बिना नहीं हो सकता। अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि (इस्राफिल) तो यह प्रतीक्षा कर रही थी कि कब परमधाम का ज्ञान (खिल्वत, परिक्रमा, सागर और श्रृंगार) अवतरित है। इस सम्बन्ध में श्री कुल्जुम स्वरूप की ये चौपाईयां देखने योग्य है -

धनी जी ध्यान तुम्हारे रे, बैठे बुध जी, बरस सहस्र चार।
चार हजार छे सौ साठ समै बीता, दुनिया को भयो आचार।। कि. ५३/१
मेरी संगते ऐसी सुधरी, बुध बड़ी हुई अछर।
तारतमें सब सुध परी, लीला अन्दर की घर ।। क. हि. ३३/१०३
जो नहीं विष्णु महाविष्णु को, बुध जी पोहोच तित।
मेरे हिरदे चरन धनी के, इने ए फल पाया इत।। प्र. हि २०/१५

यदि यह कहा जाय कि जागृत बुद्धि ही निजबुद्धि है और परमधाम में अन्य किसी बुद्धि के होने तथा उसके यहां आने का प्रश्न ही नहीं है तो उसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि अक्षर ब्रह्म की निजबुद्धि को जागृत बुद्धि कहते है जिससे सत्य को जाना जाता है किन्तु परमधाम की प्रेम, आनन्द एवं एकत्व की लीला में जिस बुद्धि का

प्रयोग होता है, वह परमधाम की निजबुद्धि है, जिसे खिल्वत की इस चौपाई से जाना जा सकता है –

तुम कूदत हो अर्स में, अपने इस्क के बद।
तब सुध एह ना रहे, ना रेहेसी एक अकल।। खि. १५/१७

अक्षरातीत के आवेश में निजबुद्धि आदि उनकी सभी शक्तियां समाहित रहती हैं। वे पूर्णात् पूर्ण हैं, अतः लीला में आवश्यकतानुसार वे कभी भी सक्रिय हो सकती हैं। अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि द्वारा परमधाम में प्रेममयी लीला का रसपान नहीं हो सकता।

वैराट का फेर उलटा, मूल है आकास।
डारें पसरी पाताल में, यों कहे वेद प्रकास।।४।।

इस ब्रह्माण्ड रूपी वृक्ष की रचना उल्टी है। कठोपनिषद तथा गीता १५/१,२ में इसके ऊपर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला गया है। इन ग्रन्थों में यह बताया गया है कि किस प्रकार से विराट रूपी वृक्ष की जड़े आकाश में हैं तथा इसकी डालियां पाताल में फैली हुई हैं।

भावार्थ-क. हि. २/२१ की व्याख्या में इस विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। उपरोक्त चौपाई में वेद का आशय केवल चारों वेदों से नहीं, अपितु वैदिक ग्रन्थों से है।

फल डारें अगोचर, आड़ी अंतराए पाताल।
वैराट वेद दोऊ कोहेड़ा, गूंथी सो छल की जाल।।५।।

इस ब्रह्माण्ड रूपी वृक्ष के फल एवं इसकी डालियां दिखायी नहीं देती हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे वे पाताल में छिप गयी हों। ब्रह्माण्ड और वेद दोनों ही धुन्ध के समान है। इनके रूप में माया की जाल गुंथी हुई प्रतीत होती है।

विध दोऊ देखिए, एक नाभ दूजा मुख।
गूंथी जालें दोऊ जुगतें, मान लिए दुख सुख।।६।।

इन दोनों की वास्तविकता देखिये। ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति नारायण के नाभिकमल से हुई है तथा वेद की उत्पत्ति उनके मुख से। इन दोनों ने मिलकर बहुत ही युक्तिपूर्वक अन्धकार की ऐसी जाली गूंथी है जिसमें फंसकर जीव कर्म बन्धन में फंसा रहता है तथा सुख और दुःख को भोगना ही अपनी नियति (भाग्य) मान लेता है।

भावार्थ- शरीर में स्थित नाभि सम्पूर्ण शरीर का केन्द्र होती है। जिस प्रकार मुख, हाथ, चरण आदि अंगों के सम्बोधन में कमल शब्द का प्रयोग किया जाता है, जैसे-मुखकमल, हस्तकमल, चरणकमल, उसी प्रकार नाभि के साथ भी नाभिकमल शब्द का प्रयोग किया गया है। इसे स्थूल कमल कदापि नहीं मानना चाहिये।

भाव यह है कि यह सम्पूर्ण सृष्टि अक्षरब्रह्म के मन अव्याकृत के स्वाप्निक स्वरूप आदिनारायण के निर्देशन (केन्द्रीकरण) में हुई अर्थात् आदिनारायण ही सृष्टि के केन्द्र में हैं। बृहदारण्यकोपनिषद् में वर्णित है कि जिस प्रकार कोई व्यक्ति सरलतापूर्वक श्वास लेता है, उसी प्रकार ब्रह्म के स्वाप्निक (सांकल्पिक) रूप आदि नारायण ने अति सरलतापूर्वक वेदों का अथाह ज्ञान भी सृष्टि में प्रकट कर दिया।

कोहेड़े दोऊ दो भांत के, एक वैराट दूजा वेद।
जीव जालों जाली बांधे, कोई जाने न छल भेद।।७।।

विराट (ब्रह्माण्ड) और वेद दोनों ही दो प्रकार के कोहरे के समान हैं। जीव इनके बन्धन में बंध जाता है। इस प्रकार माया के इस छलपूर्ण भेद को कोई भी समझ नहीं पाता है।

भावार्थ- इस विराट (सृष्टि) में जो अविद्या रूपी धुन्ध है, जिसके कारण मानव की अन्तर्दृष्टि खुल नहीं पाती है, उसका परिचय इस प्रकरण में दिया गया है। योग दर्शन के अनुसार अनित्य को नित्य, अपवित्र को पवित्र, अनात्मा को आत्मा तथा दुःख को सुख मानना ही अविद्या है। अपौरूषेय वेदों के ज्ञान को भी धुन्ध क्यों कहा गया है-इसका विवरण अगले प्रकरण 'वेद का कोहेड़ा' में दिया गया है।

देखलावने तुम को, कोहेड़े किए ए।
बताए देऊं आंकड़ी, छल बल की है जेह।।८।।

हे साथ जी! आपको दिखाने के लिये ही माया के ये दोनों कोहरे बनाये गये हैं। ये दोनों माया के ही छल की शक्ति के स्वरूप हैं। अब मैं इस गुत्थी (रहस्य) को स्पष्ट करता हूँ।

आंकड़ी एक इन भांत की, बांधी जोर सों ले।
आतम झूठी देखहीं, सांची देखें देह।।९।।

अब मैं उस रहस्य को उजागर करता हूँ जिसके बन्धन में सारा संसार बंधा हुआ है। संसार के लोगों को आत्मा झूठी दिखायी देती है तथा शरीर ही सत्य दिखायी देता है।

भावार्थ- स्थूल शरीर आंखों से दिखायी देता है, इसलिये यह सत्य प्रतीत होता है, किन्तु आत्मा सूक्ष्म होने से दिखायी नहीं देती। फलतः उसके अस्तित्व पर ही प्रश्न

खड़ा कर दिया जाता है। यह एक प्रकार की अविद्या (धुन्ध, कोहरा) है।

करें सगाई देह सों, नहीं आतमसों पेहेचान।
सनमंध पाले इनसों, ए लई सबों मान।।१०।।

संसार के लोगों को आत्म तत्व की पहचान नहीं होती है। वे अपना सारा ध्यान शरीर के ऊपर ही केन्द्रित किये रहते हैं। सभी ऐसा मान लेते हैं कि हमें अपने इस शरीर से ही सारा सम्बन्ध रखना है।

भावार्थ- शरीर धर्म का साधन है, साध्य नहीं। साध्य मात्र आत्मा है, जिसको जानने के लिये ही साधन रूप में शरीर का उपयोग किया जाता है। इस दृष्टि से इसका पोषण एवं संरक्षण तो ठीक है, किन्तु अनावश्यक मोह कदापि उचित नहीं। जब तक शरीर के प्रति आसक्ति बनी रहेगी, तब तक समाधि की अवस्था प्राप्त नहीं हो सकती है।

नहवाए चरचे अरगजे, प्रीतें जिमावें पाक।
सनेह करके सेवहीं, पर नजर बांधी खाक।।११।।

लोग शरीर को सुगन्धित तेल से मालिश करके स्नान कराते हैं तथा प्रेमपूर्वक भोजन कराते हैं। बहुत स्नेह से उसकी सेवा भी करते हैं, किन्तु उनकी दृष्टि अपने नश्वर तन से हटकर अन्य (आत्मा) की ओर नहीं जाती।

जीव गया जब अंग थें, तब अंग हाथों जालें।
सेवा जो करते सनेह सों, सो सनमंध ऐसा पालें।।१२।।

जो सगे सम्बन्धी इतने प्रेम से शरीर की सेवा किया करते थे, वे ही जीव के शरीर छोड़ देने के पश्चात् उसे अपने हाथों से जलाकर राख कर देते हैं। उनका शरीर से मात्र इतना ही सम्बन्ध होता है।

हाथ पांऊं मुख नेत्र नासिका, सब सोई अंग के अंग।
तिन छूत लगाई घर को, प्यार था जिन संग।।१३।।

शरीर के हाथ, पैर, मुख, नेत्र, नासिका, आदि जिन अंगों से पहले सबको बहुत प्रेम रहा करता था, मृत्यु के पश्चात् भी वे अंग यद्यपि वैसे ही रहते हैं, किन्तु अब उन्हीं अंगों से सबको छूत लगने लगती है।

अंग सारे प्यारे लगते, खिन एक रह्यो न जाए।
चेतन चले पीछे सो अंग, उठ उठ खाने धाए।।१४।।

सगे सम्बन्धियों को शरीर के जो अंग बहुत ही प्रिय लगते थे, जिनको देखे बिना वे एक क्षण भी रह नहीं पाते थे, जीव के निकल जाने के पश्चात् अब वे ही अंग वैरी की भांति बूरे लगने लगते हैं।

भावार्थ-'खाने को दौड़ना' एक मुहाविरा है, जिसका अर्थ होता है- शत्रु की तरह बहुत बुरा लगना या वैर भाव से व्यवहार करना।

सनमंधी जब चल गया, अंग वैर उपज्या ताए।
सो तबहीं जलाए के, लियो सो घर बटाए।।१५।।

जब जीव अपने शरीर का परित्याग कर देता है, तो सगे सम्बन्धियों को उसके अंगों से वैर उत्पन्न हो जाता है। वे उन अंगों सहित सम्पूर्ण शरीर को जला देते हैं और उसकी सम्पत्ति का बंटवारा कर लेते हैं।

छोड़ सगाई आतम की, करें सगाई आकार।
वैराट कोहेड़ा या विध, उलटा सो कई प्रकार।।१६।।

अन्धकार में भटकने वाले इस संसार की यही वास्तविकता है कि सगे सम्बन्धी आत्मा से सम्बन्ध न जोड़कर मात्र शरीर से ही अपना सम्बन्ध रखते हैं। इस प्रकार इस जगत का व्यवहार सत्य के प्रति कई तरह से विपरीत ही है।

कई बिध यों उलटा, वैराट नेत्रों अंध।
चेतन बिना कहे छूत लागे, फेर तासों करे सनमंध।।१७।।

इस संसार के प्राणियों की सामान्यतः बाह्य दृष्टि ही होती है, अन्तर्दृष्टि नहीं, जिसके परिणाम स्वरूप वे मात्र स्थूल शरीर तक ही सीमित हो जाते हैं और अनेक प्रकार से सत्य के विपरीत उल्टी राह अपनाते हैं। शरीर से जीव के निकल जाने पर कहने लगते हैं कि इस शरीर को बाहर निकालो। अब तो यह अछूत हो गया है। यदि इस शरीर से इतनी ही घृणा थी, तो पहले प्रेम का दिखावा क्यों करते थे?

एक भेख जो विप्र का, दूजा भेख चंडाल।
जाके छुए छूत लागे, ताके संग कौन हवाल।।१८।।

एक कर्मकाण्डी ब्राह्मण का सुन्दर भेष होता है। दूसरी ओर वह चण्डाल होता है, जिसको छूने मात्र से छूत लग जाती है। ऐसी अवस्था में इस संसार में उस अछूत चाण्डाल के साथ कोई मधुर व्यवहार कैसे कर सकता है?

चंडाल हिरदे निरमल, खेले संग भगवान।
देखलावे नहीं काहू को, गोप राखे नाम।।१९।।

चाण्डाल का शरीर भले ही अपवित्र दिखता है, किन्तु उसका हृदय निर्मल होता है। वह अपने आराध्य (भगवान, परमात्मा) के साथ प्रेम में मग्न रहता है। वह किसी के भी सामने अपनी भक्ति का प्रदर्शन नहीं करता, बल्कि उसे गोपनीय ही रखता है।

अंतराए नहीं खिन की, सनेह सांचे रंग।
अहनिस दृष्ट आतम की, नहीं देहसों संग ।।२०।।

चाण्डाल अपने कुरूप शरीर से कोई आसक्ति नहीं रखता, अपितु पवित्र हृदय के कारण उसकी आत्मिक दृष्टि दिन-रात खुली होती है। वह अपने आराध्य के सच्चे प्रेम में डूबा होता है और क्षण भर के लिये भी स्वयं को उनसे अलग नहीं पाता।

भावार्थ- इस चौपाई के उपरोक्त कथन का यह आशय कदापि नहीं लेना चाहिये कि सभी चाण्डाल ब्रह्मज्ञानी ही होते हैं और सभी ब्राह्मण ढोंगी एवं आडम्बरी। अध्यात्म किसी वर्ग विशेष से बंधा नहीं होता है। उसके लिये विश्व के सभी प्राणी समान ही होते हैं। जो भी साक्षात्कार की पात्रता प्राप्त कर लेता है, वह उसे पा लेता है, चाहे वह चाण्डाल हो या ब्राह्मण। भारतीय संस्कृति का मूल वेदों में है।

पौराणिक मान्यता जन्म के आधार पर वर्ण का निर्धारण करती है, जबकि वैदिक मान्यता के अनुसार वर्ण का आधार मात्र कर्म है, जन्म नहीं। एक ब्राह्मण अपने अशुभ कर्म से चाण्डाल बन सकता है और एक चाण्डाल अपने शुभ कर्म से ब्राह्मण। जो चाण्डाल मांस और शराब के सेवन में लगा रहे, वह ब्रह्म का साक्षात्कार तब तक नहीं कर सकता, जब तक वह सात्विक जीवन पद्धति अपनाकर भक्ति भाव में न लगे।

इस प्रकरण में इस प्रकार का कथन उन कर्मकाण्डी ब्राह्मणों की उस मान्यता की प्रतिक्रिया में है जो मात्र जन्म से ही ब्राह्मणत्व मानते हैं। ये वास्तविक ब्राह्मण के आचरण से बहुत दूर रहते हुए भी अपने को सर्वश्रेष्ठ समझते हैं तथा चाण्डाल की छाया से भी घृणा करते है। वे यजुर्वेद वेद का यह कथन भूल जाते हैं कि 'तत्र कः मोहः कः शोकः यो एकत्वमनुपश्यत्' अर्थात् जो सबमें एक ही चेतन तत्व को देखता है, वह मोह और शोक से रहित हो जाता है।

विप्र भेख बाहेर दृष्टी, खट कर्म पाले वेद।
स्याम खिन सुपने नहीं, जाने नहीं ब्रह्म भेद।।२१।।

जन्मना ब्राह्मण का मात्र भेष ही सुन्दर होता है। उसकी दृष्टि बहिर्मुखी होती है। वह वैदिक मान्यता के अनुसार- वेद पढ़ना, तथा पढ़ाना, यज्ञ करना और कराना तथा दान देना और दान लेना-इन छः कर्मों का पालन करता है। शुद्ध भक्ति से रहित शुष्क हृदय वाला होने से उसे स्वप्न में भी परमात्मा के दर्शन नहीं होते और न हीं उसे ब्रह्म तत्व के गुह्य रहस्यों का बोध होता है।

उदर कुटम कारने, उत्तमाई देखावे अंग।
व्याकरण वाद विवाद के, अर्थ करें कई रंग।।२२।।

अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिये वह अपनी शारीरिक पवित्रता एवं जन्म आधारित जातिगत श्रेष्ठता का प्रदर्शन करता है। अपनी मिथ्या बात को भी सिद्ध करने के लिये वह व्याकरण का सहारा लेता है तथा धर्मग्रन्थों के कथनों को तोड़-मोड़कर अनेक प्रकार से अर्थ करता है और विवाद उत्पन्न करता है।

अब कहो काके छुए, अंग लागे छोत।
अधम तम विप्र अंगे, चंडाल अंग उद्दोत।।२३।।

अब आप ही बताइये कि इन दोनों में कौन पवित्र है और किसको छूने से छूत लगती है? निश्चित रूप से खोटे कर्म करने से जन्मना ब्राह्मण के अंग-अंग में माया का अन्धकार विद्यमान है तथा चाण्डाल के हृदय में सच्चाई का प्रकाश है।

पेहेचान सबों को देह की, आतम की नहीं दृष्ट।
वैराट का फेर उलटा, इन बिध सारी सृष्ट।।२४।।

संसार में प्रायः शरीर को ही देखा जाता है। आत्मिक स्वरूप की ओर कोई ध्यान ही नहीं देता। सृष्टि के इस ब्रह्माण्ड की स्थिति ही सत्य के विपरीत है जिसमे शरीर की प्रमुखता के समक्ष आत्म तत्व नगण्य हो जाता है।

एक देखो ए अचंभा, चाल चले संसार।
जाहेर है ए उलटा, जो देखिए कर विचार।।२५।।

हे साथ जी! आप एक महान आश्चर्य देखिए कि यह संसार किस मार्ग पर चल रहा है? यदि आप विचार कर के देखें तो आपको यह स्पष्ट होगा कि यह संसार प्रत्यक्ष रूप में सत्य (धर्म) विपरीत आचरण कर रहा है।

सांचे को झूठा कहें, और झूठे को कहें सांच।
सो भी देखाऊं जाहेर, सब रहे झूठे रांच।।२६।।

संसार के लोग सत्य आत्मा को स्थूल आंखों से न दिखायी देने के कारण कहते हैं कि वह तो है ही नहीं जबकि अपने नश्वर (झूठे) तन को सत्य कहते हैं। मैं यह बात भी स्पष्ट रूप से कह रहा हूं कि संसार के सभी लोग झूठी माया के जाल में फंसे हुए हैं।

भावार्थ- शून्यवादी बौद्ध तथा चार्वाक के अनुयायी शरीर से पृथक चेतन तत्व का अस्तित्व ही नहीं मानते। उनके अनुसार मात्र शून्य ही परम तत्व है।

आकार को निराकार कहें, निराकार को आकार।
आप फिरे सब देखें फिरते, असत यों निरधार।।२७।।

इस संसार के लोग अखण्ड स्वरूप वाले परमात्मा को निराकार कहते हैं तथा लय होकर रूप से रहित हो जाने वाले शरीर को आकार वाला कहते हैं। उपरोक्त कथन करने वाले स्वयं जन्म-मरण रूप चक्र में भटकते फिरते हैं तथा दूसरे सभी लोगों को भी भटकते हुए देखने के लिये विवश है। इस प्रकार यह जगत पूर्णतया मिथ्या (परिवर्तनशील) है।

मूल बिना वैराट खड़ा, यों कहे सब संसार।
तो ख्वाब के जो दम आपे, ताए क्यों कहिए आकार।।२८।।

समस्त संसार के विद्वानों का यही कथन है कि यह ब्रह्माण्ड बिना किसी मूल के स्थित है अर्थात् यह सब स्वाप्निक है। ऐसी स्थिति में जो स्वप्न के जीव हैं, उनके द्वारा धारण किये गये नश्वर तन को भला आकार वाला कैसे कहा जा सकता है?

आकार न कहिए तिनको, काल को जो ग्रास।
काल सो निराकार है, आकार सदा अविनास।। २९।।

जो शरीर काल के अधीन है, उसको साकार कहा ही नहीं जा सकता। मरने वाले शरीर को निराकार ही कहना चाहिये क्योंकि वह पंचभूतों से बना होता है और पंचभूतों में ही विलीन हो जाता है। इसके विपरीत भिन्न-भिन्न योनियों के शरीर में जाने वाला चैतन्य स्वरूप सर्वदा एक समान अविनाशी रूप से रहता है। इसलिये उसे ही शुद्ध साकार कहना उचित है।

जिन राचो मृग जल दृष्टे, जाको नाम प्रपंच।
ए छल मायाऐं किया, ऐसे रचे उलटे संच।।३०।।

हे साथ जी! यह सम्पूर्ण प्रपंचमयी जगत् मृगतृष्णा के समान स्वप्नवत् मिथ्या (परिवर्तनशील) है। आप इसके लुभावने आकर्षण में न फंसिये। इस अज्ञानमयी अन्धकार की उत्पत्ति माया ने ही की है। इसी मोह रूप अज्ञान से ऐसे असंख्यों लोक बने हैं।

।।प्रकरण।।१६।।चौपाई।।३६५।।

सनंध–वेद के कोहेड़े की

भारतीय संस्कृति मे वेदों का सर्वोच्च स्थान है। भगवान श्री कृष्ण ने 'ब्रह्मक्षर समुद्भवम्' अर्थात् वेद को अविनाशी ब्रह्म से उत्पन्न हुआ कहकर वेदों की महत्ता दर्शायी है। इतना कुछ होने पर भी वेद जन सामान्य को परब्रह्म की वास्तविक पहचान कराने में जिस कारण से सफल नहीं हो सके, उसे ही कुहरा कहा गया है। उसी की पहचान इस प्रकरण में करायी गयी है। यह विशेष ध्यान देने योग्य तथ्य है कि इस प्रकरण में वेद का तात्पर्य सभी वैदिक ग्रन्थों से हैं, केवल मूल संहिता से नहीं, किन्तु वैदिक सिद्धान्त यह है कि केवल मूल संहिता ही वेद है, उसके व्याख्यान ग्रन्थ नहीं।

ए खेल देख्या ख्वाब का, ए जो लरे लोक विवाद।
पर लराए इनको जिने, नेक कहूं तिनकी आद।।१।।

श्री महामति जी कहते है कि हमने यह स्वप्नमयी संसार देखा है जिसमें संसार के लोग तरह - तरह के विवादों में लड़ते रहते हैं किन्तु जो इन्हें लड़ाता है उसकी मूल वास्तविकता के विषय में मैं बता रहा हूं।

भावार्थ - वर्तमान समय में हिन्दू धर्म में लगभग १००० सम्प्रदाय हैं जो मात्र अपने ही सिद्धान्तों को सत्य सिद्ध करने और दूसरों के सिद्धान्तों को मिथ्या सिद्ध कहने में लगे रहते हैं, जिसके कारण विवाद पैदा होता है। ये सभी सम्प्रदाय अपने सिद्धान्तों का मूल वैदिक ग्रन्थों को मानते हैं किन्तु यथार्थतः ऐसा नहीं है।

वेदों के मूल आशय जानने के लिये पूर्णतया सात्विक बुद्धि और समाधिजन्य ऋतम्भरा प्रज्ञा का होना आवश्यक है। रजोगुणी और तमोगुणी बुद्धि वाले लोग वैदिक कथनों को पक्षपात पूर्ण तरीके से अपने सिद्धान्तों की पुष्टि के लिये जब प्रयोग करते हैं तो सामान्य रूप से यही माना जाता है कि वैदिक ग्रन्थ ही विवाद की जड़ है, जो वास्तविकता के विपरीत है। जिस प्रकार श्वेत होने पर भी चांदी और हीरे का मूल्य अलग - अलग होता है तथा समान धनराशि से समान मात्रा में दोनों को नहीं खरीदा जा सकता, उसी प्रकार अपौरूषेय वेदों का रहस्य समझने के लिये ऋतम्भरा प्रज्ञा चाहिए, अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो जाता है। उपरोक्त चौपाई में यही तथ्य प्रस्तुत किया गया है।

जिन बंधे हुए अंधे, फिरे सो उलटे फेर।
सो नेक बताए पीछे, उडाए देऊं अन्धेर।।२।।

जिन ग्रन्थों से बंधने के कारण संसार (हिन्दू धर्म) के लोग अन्धानुकरण करने से विवेक से रहित हो जाते है। और उल्टे मार्ग पर चल पड़ते है, उसके विषय में मैं थोड़ा सा प्रकाश डालता हूं और तारतम ज्ञान के प्रकाश में अज्ञानता का अन्धकार समाप्त कर देता हूं।

भावार्थ - सही वेदार्थ के अभाव में जब साम्प्रदायिक विचार धारायें प्रबल हो जाती हैं तो विद्वान अपने अहम् की रक्षा में असत्य को सत्य और सत्य को असत्य सिद्ध करने में अपनी सारी शक्ति लगा देते हैं। इसे ही उपरोक्त चौपाई में अन्धा होना कहा गया है। वेदों के मूल आशय के विपरीत उल्टी धारणा पर चलना समाज को पतन की राह पर ले जाता है। यह बात वैसे ही है जैसे यदि किसी दिव्य औषधि के प्रयोग का उचित ज्ञान न हो तो वह विश बन जाती है। किन्तु इसमें दोश औषधि का नहीं अपितु प्रयोगकर्ता का है। यही स्थिति कुर्आन तथा बाईबल के भी सन्दर्भ में है।

अब कहूं कोहेड़ा वेद का, जाकी मिहीं गूंथी जाल।
याकी भी नेक केहेके, देऊं सो आंकड़ी टाल।।३।।

अब मैं वैदिक ग्रन्थों के उस कोहरे के सम्बन्ध में बता रहा हूँ, जिन्होंने बहुत ही बारीक धागे से अपनी जाल बना रखी है। इसके विषय में थोड़ी सी वास्तविकता बताकर कुहासे के रहस्य को स्पष्ट कर देती हूँ।

भावार्थ- वेदों में जो भी ज्ञान है-वह अति सूक्ष्म रूप से बीज रूप में ही है। उसे जानने के लिये समाधि प्राप्त ऋतम्भरा प्रज्ञा की आवश्यकता होती है। मात्र बुद्धि बल से वेदमन्त्रों का शब्दार्थ तो हो सकता है, किन्तु उनके वास्तविक रहस्य का बोध नहीं हो सकता। यही कारण है कि तमोगुण एवं रजोगुण से ग्रस्त महीधर और सायण जैसे आचार्यों ने वेदमन्त्रों का अर्थ विकृत एवं अश्लील कर दिया।

सात्विक बुद्धि वाले विद्वानों के लिये भी यह कठिन हो जाता है कि वे वेदमन्त्रों का अर्थ त्रिविध प्रक्रिया अधिभूत, अधिदैव एवं अध्यात्म में किस पक्ष में करें? ऐसी स्थिति में वेद ज्ञान को वास्तविक रूप में आत्मसात् कर पाना सामान्य लोगों के लिये बहुत ही कठिन रहा है इस कठिनता को ही धुन्ध या कुहरा कहा जाता है। दूसरे शब्दों मे इसे ही महीन जाली से उपमा दी गयी है, जिसे पार कर कोई विरला ही बाहर निकल पाता है। इसे पार करने के लिये महान तप, योगाभ्यास, स्वाध्याय एवं परब्रह्म की कृपा की आवश्यकता होती है।

सत्य वेदार्थ प्राप्त हो जाने पर उस पर किसी भी प्रकार का संशय नहीं किया जा सकता, इसलिये तो किरंतन में कहा गया है कि-

सत वाणी छे वेद तणी, जो ते कोई जुए विचारी । कि./१२६/९६
कोई दोषमा देजो रे वेद ने, ए तो बोले छे सत । कि./१२६/९७

वैराट आकार ख्वाब का, ब्रह्मा सो तिनकी बुध।
मन नारद फिरे दसों दिसा, वेदें बांध किए बेसुध।।४।।

यह सारा ब्रह्माण्ड स्वप्नमयी है। इसमें स्थित प्राणियों की बुद्धि ही ब्रह्मा है। इनका मन नारद जी की तरह दसों दिशाओं में घूमता रहता है। इस प्रकार वैदिक कर्मकाण्डों के बन्धनों में बंधा हुआ व्यक्ति बेसुध हो जाता है।

भावार्थ- पौराणिक मान्यता के अनुसार यह मानना कदापि उचित नहीं है कि सृष्टि के प्रत्येक प्राणी की बुद्धि के स्वामी ब्रह्मा जी हैं। वस्तुतः ब्रह्मा जी इस पृथ्वी (सौर मण्डल, चौदह लोक) पर उत्पन्न होने वाली सांकल्पिक सृष्टि के प्रथम पुरूषों में से एक हैं जिन्होंने अन्य चार ऋषियों (अग्नि,वायु, आदित्य तथा अंगिरा) से वेद ज्ञान प्राप्त कर चतुर्वेदज्ञ होने की शोभा प्राप्त की।

जिस प्रकार निरन्तर भ्रमणशील नारद जी की उपमा मन से दी गयी है, उसी प्रकार चारों वेदों के ज्ञाता ब्रह्माजी को भी आलंकारिक रूप से बुद्धि कहा गया हैं। व्यष्टि को समष्टि में व्यापक एवं समष्टि को व्यष्टि में विद्यमान मानना हमारी सांस्कृतिक विरासत रही हैं। गीता में इसी तथ्य की ओर संकेत करते हुए कहा गया है कि

सर्व भूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि ।
ईक्षते योग भुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शिनः ।। गीता ६/१८

अर्थात् योग युक्त समदर्शी पुरूष सभी प्राणियों में स्वयं को तथा अपने में सभी प्राणियों को देखता है।

दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि ब्रह्मा जी रजोगुण के प्रतीक हैं। सत्व, रजस तथा तंमस् के परमाणुओं में क्रमशः प्रकाश, गति एवं स्थिति का गुण होता है। आदि नारायण के संकल्प से शान्त परमाणुओं में जो गति उत्पन्न होती है, उससे प्रकृति की साम्यावस्था भंग होती है, परिणाम स्वरूप महत्तत्व की उत्पत्ति होती है। यही महत्तत्व सृष्टि का प्रथम पदार्थ है और इसी का अंश सभी प्राणियों में बुद्धि के रूप में है। इसी आधार पर यदि आलंकारिक रूप में ऐसा कहा जाय कि बुद्धि स्वरूप (महत्तत्व) सभी प्राणियों की बुद्धि के रूप में है, तो कोई आश्चर्य नहीं। मन रूप नारद को भी इसी रूप में देखना उचित होगा।

आज के भौतिक वादी युग में विशाल परिवार का उत्तरदायित्व संभालने वाला गृहस्थ सभी प्रकार के यज्ञों, संस्कारों तथा अन्य कर्म काण्डों को भी पूर्ण करते हुए ब्रह्मतत्व की खोज करने का प्रयास करे, तो वह थक जायेगा एवं निराश होकर यही कहेगा कि मैं थक चुका हूँ। अब मुझसे आगे कुछ भी नहीं होगा। इसे ही चौपाई के चौथे चरण में आलंकारिक भाषा में बेसुध होना कहा गया है।

लगाए सब रब्दें, व्याकरण वाद अंधकार।
या बुधें बेसुध हुए, विवेक खाली विचार।।५।।

ऋतम्भरा प्रज्ञा से रहित सामान्य बुद्धि वाले विद्वान जब धर्मग्रन्थों का आशय जानने के लिये व्याकरण का आधार लेते हैं, तो निष्पक्षता एवं तप के अभाव तथा तमो गुण की प्रबलता के कारण वाद विवाद करने लगते हैं और अज्ञानता के अन्धकार में भटक जाते हैं। इस प्रकार उनके विचारों में विवेक शून्यता हो जाती है।

भावार्थ- त्रिगुणातीत ब्रह्म का उपदेश देने वाले वेदों के आशय को रजोगुण और तमोगुण के कीचड़ में धंसा हुआ व्यक्ति कैसे जान सकता है?इसके लिये तो समाधि से प्राप्त होने वाली ऋतम्भरा प्रज्ञा ही चाहिये। साम्प्रदायिक संकीर्णता से भरा हुआ व्यक्ति कभी भी वेदार्थ का अधिकारी नहीं हो सकता। यही कारण है कि व्याकरण की ओट में विद्वानों ने जानबूझ कर धर्मग्रन्थों के आशय को इस उद्देश्य से विवादास्पद बना दिया है कि मात्र उनके ही सिद्धान्तों की पुश्टि हो सके।

बंध बांधे या विध, हर वस्त के बारे नाम।
सो बानी ले बड़ी कीनी, ए सब छल के काम।।६।।

बारह स्वरों के मेल से प्रत्येक शब्द के १२ प्रकार के नाम रख कर तथा कथित पौराणिक विद्वानों ने इस प्रकार के बन्धन खड़े कर दिये हैं कि वास्तविक सत्य का प्रकाश ही नहीं हो सकता इन्होंने बहुत ही छलपूर्ण तरीके से वेद की ओट में अपने-अपने मिथ्या ग्रन्थों का विस्तार कर लिया है।

भावार्थ- आकाश में शीघ्रता से गमन करने के कारण चन्द्रमा को गोतम कहते हैं। पौराणिक विद्वानों ने गोतम का रूप विकृत कर 'गौतम' बना दिया तथा एक काल्पनिक कहानी गढ़ ली कि इन्द्र ने गौतम का रूप धारण कर अहिल्या का पातिव्रत्य धर्म नष्ट किया था। इसका शुद्ध वैदिक रूप इस प्रकार है।

इन्द्रागच्छेति। गौरावस्कन्दिन्नहल्यायै जारेति।
तद्यान्येवास्य चरणानि तैरेवैनमेतत् प्रमुमोदयिषति।।

शत. कां. ३/ अ. ३/ ब्रा. ४/ कं १८

जार आ भगम् जार इव भगम्। आदित्योऽत्र जार उच्यते, रात्रेर्जरयित।।

निरू. अ. ३/खं. १६

अर्थात् उनमें इस रीति से है- सूर्य का नाम इन्द्र, रात्रि का अहिल्या तथा चन्द्रमा का नाम गोतम है। यहां रात्रि और चन्द्रमा का स्त्री-पुरूष के समान रूपकालंकार है। चन्द्रमा अपनी स्त्री रात्रि से सब प्राणियों को आनन्द कराता है और उस रात्रि का जार आदित्य है, अर्थात् जिसके उदय होने से रात्रि अन्तर्धान हो जाती है और जार अर्थात् यह सूर्य ही रात्रि के वर्त्तमान रूप श्रृंगार को बिगाड़ने वाला है। इसलिये यह स्त्री-पुरूष

का रूपकालंकार बांधा है, कि जैसे स्त्री पुरूष मिलकर रहते हैं, वैसे ही चन्द्रमा और रात्रि भी साथ साथ रहते हैं। चन्द्रमा का नाम 'गोतम' इसलिये है कि वह अत्यन्त वेग से चलता है और रात्रि को 'अहल्या' इसलिये कहते हैं कि उसमें दिन लय हो जाता है तथा सूर्य रात्रि को निवृत्त कर देता है, इसलिये वह उसका 'जार' कहाता है। इसी प्रकार वेद में 'मास' शब्द का प्रयोग हुआ है, जिसका अर्थ उड़द होता है। मास में 'म' के ऊपर एक बिन्दु रख देने से मांस बन जाता है। इस प्रकार छल पूर्वक वेद की ओट में उड़द् का सेवन हटा कर मांस का सेवन करने का प्रमाण दिया जाता है।

इसी प्रकार 'अग्रे कृतम्' का आशय है- पति की मृत्यु के पश्चात् पत्नी को अग्रे अर्थात् आगे (स्वामित्व प्रदान) कर दिया किन्तु स्वार्थी विद्वानों ने अग्रे को अग्ने कर दिया और यह अर्थ निकाला कि वेद में विधवा स्त्री के द्वारा आग में जलकर सती होने का वर्णन है।

उपरोक्त चौपाई में १२ स्वरों (अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं तथा अः) का वर्णन है। प्रत्येक अक्षर में इनके परिवर्तन से अर्थ में अन्तर आ जाता है। इनके अतिरिक्त चार स्वर (ऋ, ॠ, ऌ, तथा दीर्घ ऌ) और हैं। पौराणिक विद्वानों ने अपने दुराग्रह एवं अल्पज्ञता से वैदिक शब्दों में हेर-फेर किया तथा काल्पनिक कहानियों का सृजन कर नये-नये मिथ्या ग्रन्थों की रचना की।

लुगे लुगे के जुदे माएने, द्वादस के प्रकार।
उलटाए मूल माएने, बांधे अटकलें अपार।।७।।

इस प्रकार अलग-अलग अक्षरों में १२ स्वरों के मेल से १२ प्रकार के अलग-अलग अर्थ निकलते हैं। विद्वानों ने अपने क्षुद्राशय से धर्मग्रन्थों के मूल कथनों को ही उल्टा कर दिया तथा अनुमान से कहानियां गढ़कर बहुत अधिक (अपार) पौराणिक साहित्य की रचना कर दी।

भावार्थ- स्वरों के मेल से इस प्रकार अर्थ बदलते हैं-

क्+अ= क सुखस्वरूप	क+ए= के= कौन(द्विवचन स्त्रीलिंग)
क्+आ= का कौन (स्त्रीलिंग)	क+ऐ= कै= के द्वारा (बहुवचन)
क+इ+म्= किम्-क्या, कौन	क+ओ= को= कौन यथा कोऽपि
क+ई= की= कुत्सित	क+औ= कौ= कौन (द्विवचन पु.)
क+उ =कु= बड़बडाना, पृथ्वी,	क+अं= कं= किसको

क+ऊ= कू= ध्वनि करना, क्रन्दन करना, क्+अः= कः= कौन (एकवचन) पु.

क+ऋ= कृ प्रहार करना, करना, रचना करना, प्रकाशित करना
क्+लृ= क्लृप्= योग्य होना, पूर्ण करना, सफल होना, तैयार होना,
अनुकूल होना।

अर्थ को डालने उलटा, अनेक तरफों ताने।
मूढों को समझावने, रेहेस बीच में आने।।८।।

संकीर्ण सोच वाले ये विद्वान धर्मग्रन्थों के मूल आशय के विपरीत अपनी मान्यता के अनुसार अर्थ करने के लिये अनेक प्रकार से खींचतान करते हैं। अति मूर्ख लोगों को समझाने के लिये वे बीच में मनोरंजक कहानियां जोड़ देते हैं।

भावार्थ- सभी पुराणों, उपपुराणों तथा महाभारत के प्रक्षिप्त भागों में इसी प्रकार वेद-विरुद्ध सिद्धान्तों का जाल बिछाकर मनगढ़न्त कहानियां जोड़ी गयी हैं, जिनमें कहीं-कहीं तो अश्लील प्रसंगों का वर्णन मर्यादा की सीमा लांघ गया है। भागवत के रचना कार बोपदेव ने भी यजुर्वेद के व्याख्या ग्रन्थ शतपथ ब्राह्मण और निरुक्त के इस प्रसंग को न समझने के कारण भा. ३/१२/१८-३३ में यह मनगढ़न्त कहानी बना ली कि ब्रह्मा जी अपनी पुत्री सरस्वती के प्रति विकारग्रस्त हो गये थे। शतपथ ब्राह्मण तथा निरुक्त में यह प्रसंग इस प्रकार है-

प्रजापर्ति वै सुपर्णो गरूत्मानेष सविता। श. १०/२/२१/४
तत्र पिता दुहितुर्गर्भं दधाति पर्जन्यः पृथिव्यः। निरु ४/२१

अर्थात् प्रजापति और सविता ये शतपथ में सूर्य के नाम हैं। निरूक्त में भी रूपक अलंकार की कथा लिखी है कि पिता के समान पर्जन्य अर्थात् जलरूप जो मेघ है, पृथ्वी उसकी दुहिता (कन्या) है क्योंकि पृथ्वी की उत्पत्ति जल से ही है। जब वह उस कन्या में दृष्टि द्वारा जल रूप शुक्र को धारण करता है, तब उससे गर्भ रहकर औषधि आदि अनेक पुत्र उत्पन्न होते हैं।

ऐसी कई आकंडियों मिने, बोलें बारे तरफ।
रेहेस रंचक धरें बीचमें, समझाए ना किन हरफ।।९।।

उपरोक्त कथन के समान ही ऐसी कई गुत्थियां होती हैं, जिसमें १२ प्रकार से अर्थ बदल जाते हैं। वे बीच-बीच में थोड़ा सा मनोरंजक प्रसंग जोड़ देते हैं। इस प्रकार वे किसी को यथार्थ सत्य का बोध नहीं करा पाते।

बारे तरफों बोलत, एक अखर एक मात्र।
ऐसे बांध बतीस स्लोक में, बडा छल किया है सास्त्र।।१०।।

व्यंजन के एक अक्षर में अलग-अलग १२ स्वर लगाने पर अर्थ के १२ भेद हो

जाते है। इस प्रकार ३२ व्यंजनों वाले श्लोक में अर्थ की भिन्नता कितनी हो सकती है, इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। इस प्रकार शास्त्रों (पौराणिक ग्रन्थों) में अर्थ के सम्बन्ध में बहुत ही छल भरा पड़ा है।

भावार्थ- यद्यपि व्यंजन ३६ होते हैं, किन्तु गुजरात की परम्परा के अनुसार यहां ३२ का ही वर्णन किया गया है। वे ३६ व्यंजन इस प्रकार हैं- क, ख, ग, घ, ङ, च , छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व श, ष, स, ह, क्ष, त्र, ज्ञ। ऐसा नहीं मानना चाहिये कि प्रत्येक श्लोक में ३२ ही अक्षर होते हैं। अलग-अलग छन्दों में श्लोकों या मन्त्रों में अक्षरों की संख्या घटती-बढ़ती रहती है।

भाव यह है कि १२ अथवा १६ स्वर और ३६ (३२) व्यंजन मिलकर वर्णमाला के ५२ अक्षर होते हैं। इनमें ही सम्पूर्ण सहित्य की रचना होती है तथा स्वर एवं व्यंजन के अलग-अलग संयोग, या प्रसंग के अनुसार अर्थ में परिवर्तन होता रहता है। उपरोक्त चौपाई में शास्त्र शब्द से आशय छः दर्शनों के अतिरिक्त पौराणिक ग्रन्थों से भी है। एक ही वेदान्त दर्शन में द्वैत, अद्वैत, शुद्धाद्वैत, विशिष्टाद्वैत, त्रैत आदि भिन्न-भिन्न मतों के विद्वानों में अर्थ के सम्बन्ध में बहुत ही मतभेद दिखाई पड़ते हैं।

बारे मात्र एक अखर, अखर स्लोक बतीस।
छल एते आडे अर्थके, और खोज करें जगदीस।।११।।

किसी भी श्लोक के अर्थ करने में १२ स्वरों एवं ३२ व्यंजनों के परस्पर मेल से जिस प्रकार छलपूर्ण तरीके से परिवर्तन होता है, उससे मुक्त हुए बिना संसार के लोग शास्त्रों के अर्थ द्वारा परमात्मा की खोज करने का जो प्रयास करते हैं, वह एक आश्चर्य ही है।

अर्थ आडे कई छल किए, तिन अर्थों में कई छल।
अखरा अर्थ भी ना होवहीं, किया भाव अर्थ अटकल।।१२।।

एक श्लोक के अर्थ करने में कई छल करने पड़ते हैं। इस प्रकार उस श्लोक के एक-एक शब्द के अर्थ करने में अनेकों छल करते हैं। कभी-कभी तो ऐसी स्थिति आ जाती है कि श्लोक के एक अक्षर का भी अर्थ करना कठिन हो जाता है। ऐसी स्थिति में अनुमान से ही भावार्थ करना पड़ता है।

भावार्थ- वर्तमान समय में साम्प्रदायिकता की आंधी चल रही है। प्रत्येक सम्प्रदाय का विद्वान अपने सिद्धान्तों की पुष्टि करने के लिये जान-बूझकर अर्थ में खींच-तान करता है। कहीं-कहीं पक्षपात् और दुराग्रह से भी अर्थ किया जाता है। इसी को छलपूर्ण

तरीके से अर्थ करना कहते हैं। संस्कृत में उच्चारण के अनुसार तीन प्रकार के स्वर होते है उदात्त, अनुदात्त, स्वरित। इनके अलग-अलग प्रयोग से मंत्रों के अर्थ बदल जाते हैं। उदाहरण के लिए वृत्रासुर ने जब इन्द्र की पराजय के लिए यज्ञ कराया तो पुरोहितों ने मंत्र के एक अंश 'इन्द्रशत्रुः वर्धस्व' में स्वर भेद कर दिया। यदि अन्तोदात् (बाद में उदात्) लगाया जाता तो इसका अर्थ होता इन्द्र के शत्रु अर्थात् वृत्रासुर का बल बढ़े, लेकिन आद्योदात् (प्रारम्भ में उदात्) लगाने से इसका अर्थ हुआ इन्द्र का बल बढ़े, परिणाम स्वरूप वृत्रासुर मारा गया।

जाको नामै संस्कृत, सो तो संसे ही की कृत।
सो अर्थ दृढ़ क्यों होवही, जो एती तरफ फिरत।।१३।।

जिस भाषा का नाम ही संस्कृत है, वह तो संशय की ही कृति (भाषा) है। जब एक ही श्लोक के इतने अर्थ होते हैं, तो वास्तविक अर्थ का पता कैसे चल सकता है जिसमें सत्य के लिये दृढ़ता की जाये।

भावार्थ- वस्तुतः संस्कृत का अर्थ होता है 'सम्यक् कृतः इति संस्कृतः' अर्थात् श्रेष्ठ वास्तविक कृति। संस्कृत भाषा में कुछ ऐसी विशेषताएं हैं जो संसार की किसी अन्य भाषा में नहीं है। ये संक्षिप्त रूप से इस प्रकार हैं-

१. इस पृथ्वी लोक में संस्कृति से प्राचीन भाषा और कोई नहीं है।

२. विश्व की सभी भाषायें वैदिक संस्कृति से ही प्रकट हुई हैं।

३. भारत की सभी क्षेत्रीय भाषायें पाली भाषा से निकली हैं, जबकि पाली भाषा का उद्भव लौकिक संस्कृत से हैं और लौकिक संस्कृत वैदिक संस्कृत से प्रकट हुई है।

४. संस्कृत के अतिरिक्त संसार में ऐसी अन्य कोई भी भाषा नहीं है जिसका व्याकरण मात्र १४ सूत्रों के आधार पर सृजित हुआ हो। विदित हो कि पाणिनी का अष्टाध्यायी व्याकरण मात्र १४ सूत्रों पर ही आधारित है।

५. अन्य भाषाओं की तरह संस्कृत भाषा को रटने की आवश्यकता नहीं है। अष्टाध्यायी व्याकरण के आधार पर नवीन शब्द की रचना करके उसका अर्थ भी स्वतः निकाला जा सकता है।

६. संस्कृत विश्व की सबसे अधिक वैज्ञानिक भाषा है, जिसमें एक बिन्दु के लिये भी उचित नियम है।

७. वैदिक शब्दकोश निघण्टु में पृथ्वी के एक सौ एक (१०१) पयार्यवाची शब्द दिये गये हैं। यही स्थिति अन्य शब्दों की भी है। इस प्रकार की शाब्दिक समृद्धि संसार की अन्य किसी भी भाषा में नहीं है।

८. इस पृथ्वी लोक पर सृष्टि की उत्पत्ति को १,९६,०८,५३,११५ वर्ष हो चुके है। इतने समय से लेकर आज तक जो भी साहित्य के रूप में ज्ञान-विज्ञान उपलब्ध है, वह संस्कृत में ही है।

९. संस्कृत भारत की आत्मा है। संस्कृत के समाप्त होते ही भारतीय संस्कृत एवं आध्यात्मिकता का विनाश हो जाएगा।

१०. संस्कृत साहित्य में दर्शन, अध्यात्म, संगीत एवं अन्य विद्याओं की जो निधि छिपी है, वह संसार की किसी अन्य भाषा में नहीं है।

अब प्रश्न यह होता है कि यदि संस्कृत इतनी उत्तम भाषा है, तो अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी ने इसको संशय की भाषा क्यों कहा?

इसके उत्तर में यही कहना उचित होगा कि श्री जी का यह कथन उन रुढ़िवादी, कर्मकाण्डी और आध्यात्मिक तत्व ज्ञान से दूर रहने वाले विद्याभिमानी पण्डितों के प्रति है, जो संस्कृत को जन भाषा के रूप में नहीं चाहते और अपने वर्ग विशेष की भाशा बनाकर अपने अहं के वृक्ष की छाया में सबको रखना चाहते हैं।

यह ध्यान देने योग्य तथ्य है कि इस प्रकरण में कहीं भी वेद को झूठा नहीं कहा गया है अपितु अर्थ करने वाले उन विद्वानों की क्षुद्र मानसिकता को दर्शाया गया है, जो जान-बूझकर अर्थ करने में छल करते है तथा मिथ्या ग्रन्थों की रचना करते हैं। यही लोग असत्य को सत्य और सत्य को असत्य सिद्ध करने में अपनी सारी ऊर्जा लगा देते हैं। ये कूपमण्डूक लोग जान-बूझकर संस्कृत भाषा को इतना कठिन बनाने का प्रयास करते हैं कि वह जनभाषा न बनने पाये।

किसी भी भाषा में संशयात्मकता क्षुद्र मानसिकता से पैदा होती है। जिस हिन्दुस्तानी भाषा को स्वयं श्री जी ने 'सबको सुगम जान के कहूंगी हिन्दुस्तान' कहा है और जिस तारतम वाणी को सभी संशयों को नष्ट करने वाली अनमोल निधि के रूप में दर्शाया गया है, उसकी एक सरल चौपाई के अर्थ करने में भी संशय किया जा सकता है।

उदाहरणार्थ- 'लौकिक नाम दोउ मेट के, करसी नयो ठाट। कि. ५२/२६ इसका भिन्न-भिन्न व्यक्तियों द्वारा भिन्न-भिन्न अर्थ किया जाता है। एक वर्ग कहता है कि दो लौकिक नाम अर्थात् श्री देवचन्द्र जी एवं श्री कृष्ण जी, दूसरा वर्ग कहता है कि हिन्दू और मुसलमान। तीसरा समूह कहता है कि यहां दो नाम का तात्पर्य स्वर्ग एवं नरक से हैं।

अब प्रश्न यह है कि इन तीनों कथनों में किसको सत्य माना जाय? यदि तीनों वर्ग यह कहें कि केवल हमारा ही मत सत्य है तथा अन्य दो गलत हैं, तो इस आधार पर तारतम वाणी की हिन्दुस्तानी भाषा भी संशय उत्पन्न करने वाली कही जा सकती है।

सो पढ़े पंडित जुध करें, एक काने को टुकड़े होए।
आपस में जो लड़ मरें, एक मात्र ना छोड़ें कोए।।१४।।

शब्दों के अर्थ करने में विद्वतगण इस प्रकार झगड़ा करते है कि 'अ' की मात्रा के भी टुकड़े कर देते हैं। उनमें से कोई भी एक मात्रा को छोड़ने के लिये तैयार नहीं होता भले ही उसके लिये अपने प्राण गंवाने क्यों न पड़े।

भावार्थ- व्याकरण के नाम पर निरर्थक विवाद को किस प्रकार हवा दी जाती है, उसका एक उपयुक्त उदाहरण इस प्रकार है-यजु. २१/२ में कहा गया है कि 'न तस्य प्रतिमा अस्ति' इस का अत्यन्त सीधा सा उपयुक्त अर्थ है-उ स परमात्मा की कोई उपमा (स्थूल आकृति, तुल्यता) नहीं है। किन्तु इसी मन्त्र से परमात्मा को साकार सिद्ध करने के लिये पौराणिक विद्वान इस प्रकार का छल करते है-'नतस्य प्रतिमा अस्ति' अर्थात् नत्+अस्य प्रतिमा। वे इसका अर्थ करते हैं-इस परमात्मा की प्रतिमा है, इसे प्रणाम है। सामान्य संस्कृत जानने वाला भी यह समझता है कि नमः योगे चतुर्थी। ऐसी अवस्था में 'अस्य नत' कैसे हो सकता है?इसी प्रकार की पक्षपात पूर्ण मानसिकता ने समाज को सत्य से कोसों दूर कर दिया है। यही स्थिति कुरआन में भी देखने को मिलती है-अर्थात्

''मन कुनतो मौला, फाहाजा अली उन मौला''(जिसका मैं (मुहम्मद) मौला (स्वामी) हूं उसका यह अली भी स्वामी हैं)।

''रब्बे का यख्लक मा यशाअ व यख्तारा मा का ना लहम अल खैरतः सुब्हानल्लाह तआला अम्मा यशकसन'' कुरान पाराः २०/१०

(तुम्हारा रब ही पैदा करता है, जिसको चाहता है, नबूबत खिलाफत के लिए चुनता है। याद रहे कि इन्सान को न चुनने का हक है और न वह इसमें खुदा के शरीक हो सकते हैं।)

तारीख जिकादा २५ हिजरी १० मकाम हुज्ज तुल विदा मैदान ए गदीर

ए वाद बानी सिर लेवहीं, सुध बुध जावे सान।
त्रास स्वांत न होवे सुपने, ऐसा व्याकरण ग्यान।।१५।।

व्याकरण की ओट में विवाद खड़े करने वाली इस भाषा को अपनाने वालों की सुधि-बुद्धि समाप्त हो जाती है। संस्कृत भाषा के व्याकरण का ज्ञान इस तरह विवादों में उलझाने वाला है कि इससे सपने में भी शान्ति नहीं आती।

भावार्थ-किसी मन्त्र, सूत्र या श्लोक के अर्थ करने में विद्वानों के द्वारा जान बूझकर पक्षपात पूर्ण तरीके से अर्थ किया जाता है। इसमें व्याकरण के आधार पर सभी अपने कथन को सत्य सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। परिणाम स्वरूप विवादों में फंसे सभी लोग मानसिक शान्ति से रहित हो जाते हैं।

ए बानी ले बड़ी कीनी, दियो सो छल को मान।
सो खेंचा खेंच ना छूटहीं, लिए क्रोध गुमान।।१६।।

संस्कृत भाषा को देववाणी कहकर पण्डितजन सम्मानित करते हैं और उसका अध्ययन करके स्वयं को सर्वोपरि मानते हैं। रज और तम से ग्रसित ये विद्वान अपने क्रोध और विद्या के अभिमान के कारण लड़ते रहते हैं और इनमें हमेशा ही खींचतान बनी रहती है।

भावार्थ- वास्तविक ज्ञान तो ऋतम्भरा प्रज्ञा (समाधि से प्राप्त होने वाली बुद्धि) से प्राप्त होता है। भक्ति भाव से रहित रजोगुणी एवं तमोगुणी स्वभाव वाले विद्वान अपने अल्पज्ञान के कारण ही विवाद उत्पन्न करते हैं। गीता १०/३८ में योगेश्वर श्री कृष्ण कहते हैं कि

'मौनं चैवास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम्'अर्थात् मैं गुह्य ज्ञान जानने वालों में मौन स्वरूप है।

ए छल पंडित पढ़हीं, ताए मान देवें मूढ़।
बड़े होए खोले माएने, एह चली छल रूढ़।।१७।।

पण्डित जन इस छलमयी भाषा को पढ़ते हैं और अति मूर्ख लोग उन्हें श्रद्धावश सम्मानित करते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि पण्डित वर्ग स्वयं को समाज में सर्वोपरि मानता है। छल भरी यह रीति लम्बे अन्तराल से चल रही है।

भावार्थ- कुछ क्षुद्राशय विद्वान ऐसे होते हें जिनकी यही मानसिकता होती है कि इतनी कठिन रचना की जाय कि हमारे (जन्मना ब्राह्मण वर्ग के) अतिरिक्त अन्य किसी

को भी संस्कृत भाषा का ज्ञान न होने पाये। सम्पूर्णानन्द विश्व विद्यालय का पाठयक्रम भी इसी मानसिकता के आधार पर तैयार किया गया है। महाभारत काल से पूर्व सम्पूर्ण देश की जनभाषा संस्कृत ही थी। उस समय किसी के लिये भी संस्कृत कठिन भाषा नहीं थी। अब से लगभग ८०० वर्श पूर्व राजा भोज ने संस्कृत भाषा का इतना प्रचार किया कि उनके राज्य का प्रत्येक व्यक्ति संस्कृत भाषा में निपुण था।

संस्कृत को कठिन और एक वर्ग विशेष की भाषा बनाये रखने की मान्यता ने इस देश का बहुत ही अहित किया है। कुछ समय पूर्व पुरी के शंकराचार्य निरंजनदेव तीर्थ ने एक बहुत ही विवादास्पद बयान दिया था कि जन्मना ब्राह्मण के अतिरिक्त अन्य किसी को भी संस्कृत भाशा के अध्ययन करने का अधिकार नहीं है। सम्भवतः उन्होंने यजुर्वेद के २६/२ के उस मन्त्र

"यथा इमां वाचं कल्याणीं आवदामि जनेभ्यः।

ब्रह्मराजान्याभ्यां शूद्राय च स्वाय च चारणाय च।।" का अवलोकन नहीं किया होगा। इस विकृत सोच का ही परिणाम है कि आज भी कई पौराणिक संस्कृत विद्यालयों में मात्र जन्मना ब्राह्मणों को ही प्रवेश दिया जाता है। इस प्रकार की क्षुद्र भावना ने ही संस्कृत जैसी श्रेष्ठ, सम्यक् (शुद्ध) एवं देवत्व की ओर ले जाने वाली भाषा का इतना पतन कर दिया कि श्री जी को विवश होकर इसे छलमयी भाषा कहना पड़ा।

सीधी इन भाखा मिने, माएने पाइए जित।
जो सब्द सब समझहीं, सो पकड़ें नही पंडित।।१८।।

हिन्दुस्तानी भाषा बहुत ही सरल और स्पष्ट है जिसके आशय (अर्थ) को समझने में कोई कठिनाई नहीं होती। जिस भाषा के शब्दों को सभी समझ लेते हैं, उसे पण्डित लोग ग्रहण करना नहीं चाहते।

भावार्थ- किसी भी भाषा को सरल या कठिन (दुरूह) बनाना विद्वानों के ऊपर निर्भर करता है। हिन्दुस्तानी भाषा में भी कबीर जी की उलटवासियों का अर्थ करना बहुत ही कठिन होता है। इसी प्रकार केशवदास जी की रचनायें भी बहुत क्लिष्ट हैं। जबकि शुद्ध वाल्मीकिय रामायण एवं शुद्ध महाभारत के आर्ष श्लोक बहुत ही सरल भाषा में है। संस्कृत को सरल एवं सर्व ग्राह्य बनने के लिये वर्तमान समय के विद्वानों को अपनी क्षुद्र मानसिकता का परित्याग करना होगा।

एक अर्थ न कहें सीधा, ए जाहेर हिंदुस्तान।
अर्थ को डालने उलटा, जाए पढ़ें छल बान।।१६।।

यह बात तो प्रसिद्ध ही है कि ये तथा कथित विद्वान किसी भी मन्त्र, सूत्र, या श्लोक का स्पष्ट एवं सरल अर्थ नहीं करते। अर्थ में जानबूझकर विकृति करने के लिये ही ये संस्कृत भाषा का अध्ययन करते हैं।

भावार्थ-स्वयं को विशिष्ट विद्वान सिद्ध करने एवं अपनी मान्यताओं को दूसरों पर थोपने के लिये ही संस्कृत भाषा का दुरुपयोग किया जाता है। इसके लिये संस्कृत भाषा दोषी नहीं है, बल्कि विद्वानों की वह क्षुद्र मानसिकता दोषी है, जिसके वशीभूत होकर वे जन सामान्य की संस्कृत से अनभिज्ञता का लाभ उठाते हैं।

ए छल देखो मोमिनों, और है सब छल।
रूह छल न छूटे छल थें, जो देखो करते बल।।२०।।

हे साथ जी! इस मायावी प्रपंच की लीला को देखिए। संसार में इसी तरह सर्वत्र छल ही छल का वर्चस्व है। माया के जीव भले ही कितनी ही शक्ति क्यों न लगायें किन्तु वे माया के छल से मुक्त नहीं हो पाते है।

एक उरझन वैराट की, दूजी वेद की उरझन।
ए नेक कही मैं तुमको, पर ए छल है अति घन।।२१।।

मैंने तो आपको इस ब्रह्माण्ड और इसमें ज्ञान का प्रकाश करने वाले वेदों की उलझनों की एक छोटी सी झांकी ही दिखायी है, जबकि वास्तविकता यह है कि वह बहुत है।

मुख उदर के कोहेडे, रचे मिने सुपन।
ए सुध काहू न परी, मिने झीलें मोह के जन।।२२।।

अक्षरब्रह्म के मन के स्वप्न में आदि नारायण के मुख से सांसों की भांति वेदों का प्रकटन हुआ तथा उनकी नाभि कमल से ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति हुई। सृष्टि और वेद के यथार्थ रहस्य को कोई भी जा नहीं पाता। संसार के जीव स्वप्न की बुद्धि वाले हैं। वे इसी मोह सागर में स्नान करते हुए आनन्दित होते रहते हैं।

भावार्थ-अक्षरब्रह्म के द्वारा सृष्टि रचना का संकल्प ही स्वप्न है, जिसके अनुसार उनके मन स्वरूप अव्याकृत में स्थित सुमंगला पुरूष के द्वारा मोह सागर एवं आदि नारायण की उत्पत्ति होती है। नाभि से ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति का कथन आलंकारिक है, यथार्थ नहीं। नाभि सम्पूर्ण शरीर का केन्द्र स्थान है। सभी नाड़ियां यहीं से जुड़ी होती हैं। अक्षर ब्रह्म की अनन्त महिमा (ज्ञान, सृष्टि कर्तृत्व, लीला आदि) को दर्शाने की भावना से

अर्थात् केन्द्र में रखकर इस सृष्टि की रचना की गयी है। इस लिये इसे नाभि कमल से उत्पन्न हुआ कहा गया है। यहां जल में उत्पन्न होने वाले पंचभूतात्मक स्थूल कमल का भाव नहीं लेना चाहिये। जब पंचभूत ही नहीं थे तो कमल कैसे बन गया?

वैराट वेदों देख के, बूझ करी सेवा एह।
देव जैसी पातरी, ए चलत दुनियां जेह।।२३।।

इस स्वप्नवत संसार तथा अथाह ज्ञान वाले वेदों को आदि नारायण की रचना मानकर इस जगत के लोगों ने वेदों के प्रति अपनी अपार श्रद्वा रखी। 'जैसा देवता वैसा ही पूजन' के आधार पर इस संसार के लोग व्यवहार करते हैं।

भावार्थ- 'जैसा देवता वैसा ही पूजा' एक मुहावरा है। इस का आशय यह है कि इस स्वप्नमयी ब्रह्माण्ड में स्वप्न की बुद्धि में प्रकट होने वाले वैदिक ज्ञान को स्वप्न की बुद्धि वाले मानव जितना समझ पाते हैं, उतना ही आत्मसात् कर पाते हैं। यद्यपि वेदों में सत्य ज्ञान का भण्डार है, किन्तु उसके वास्तविक अभिप्राय को समझ पाना जन साधारण के लिये बहुत ही कठिन होता है। यही कारण है कि स्वार्थी विद्वानों के द्वारा वेदों की ओट में छलपूर्वक अनेक वेद विरुद्ध सिद्धान्तों (मृतक श्राद्ध, जड़, पूजा मांसाहार, जन्मना वर्ण व्यवस्था, बहुदेववाद आदि) का पोषण किया जाता है।

ए जो बोले साधू सास्त्र, जिनकी जैसी मत।
ए मोहोरे उपजे मोहके, तिनको ए सब सत।।२४।।

शासत्रों के ज्ञान एवं अपनी साधना के अनुभव के आधार पर सन्त जन अपनी बुद्धि के अनुसार सत्य को जितना समझ पाते हैं, उतना ही व्यक्त करते हैं। मोह सागर से उत्पन्न होने वाले इन जीवों को तो यह सारा जगत ही सत्य एवं अनादि प्रतीत होता है।

तबक चौदे देखे वेदों, निराकार लों वचन।
उनमान आगे केहेके, फेर पड़े मांहें सुंन।।२५।।

वेदों का अध्ययन करने वाले विद्वानों ने चौदह लोकों के त्रिगुणात्मक ब्रह्माण्ड तथा निराकार मण्डल तक का वर्णन किया। इसके परे शब्दातीत अद्वैत मण्डल का कथन करने में वे अपने को असहज अनुभव करने लगे तथा अनुमान से ज्योति स्वरूप कह कर पुनः शून्य के ही कथन में लग गये।

भावार्थ- जिस प्रकार किसी ग्राम के लोग आमोद-प्रमोद में मग्न होकर बहुत

अधिक हंस रहे हों, तो आलंकारिक रूप में यही कहा जाता है कि आज सारा ग्राम हंस रहा है। विशेष तथ्य यह है कि ग्राम के निवासी ही हंस सकते हैं, उस ग्राम के भवन, मार्ग या सरोवर आदि नहीं।

ठीक इसी प्रकार वेदों का अध्ययन करने वाले विद्वानों ने प्रकृति मण्डल (स्थूल लोक तथा कारण प्रकृति) तक का ज्ञान तो सरलता से प्राप्त कर लिया किन्तु त्रिगुणातीत एवं शब्दातीत परब्रह्म को न तो यथार्थ रूप से समझ पाये और न व्यक्त कर पाये। वेदों में परब्रह्म के स्वरूप वर्णन में आये हुए शब्दों 'आदित्य वर्ण, भर्गः, शुक्र, चित्र ज्योतिः' आदि को देखकर उन्होंने अनुमान पूर्वक ज्योति स्वरूप ही मान लिया।

यद्यपि वे इतना अवश्य जानते थे कि ब्रह्म का स्वरुप त्रिगुणात्मक सूर्य, चन्द्रमा, विद्युत आदि के प्रकाश से भिन्न है। ब्रह्मको सर्वज्ञ एवं अविनाशी सिद्ध करने के प्रयास में उन्होंने उसे प्रकृति मण्डल में सर्वत्र व्यापक और सूक्ष्म से सूक्ष्म कहा। परिणाम स्वरूप उन्हें विवश होकर निराकार कहना पड़ा, जबकि कटु सत्य तो यह है कि चारों वेदों में कहीं भी निराकार शब्द नहीं है। बिना तारतम ज्ञान के ब्रह्म के धाम एवं स्वरूप को यथार्थ रूप से जान पाना सम्भव नहीं है।

ए देखो तुम मोमिनों, पांचो उपजे तत्व।
ए गफलत में रूह खेलहीं, सब रूहों की उतपत।।२६।।

हे साथ जी! आप इस बात को प्रत्यक्ष देखिये कि इन पांच तत्वों की उत्पत्ति मोह तत्व से ही हुई है। इसी मोह तत्व (महाशून्य) के अन्दर अव्याकृत का मन स्वप्न में आदि नारायण के रूप में क्रीड़ा करता है। इसी स्वाप्निक मन से सम्पूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति होती है।

रूह सबों में पसरी, थावर और जंगम।
पेड़ याको जुलमत, मलकूत में खसम।।२७।।

चर-अचर सभी प्राणियों में आदि नारायण का सांकल्पिक चेतन ही प्रतिबिम्बत हो रहा है। इन सभी प्राणियों का मूल निराकार है, जिसमें बैकुण्ठ में स्थित आदि नारायण ही सबके ईश्वर है।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में बैकुण्ठ का तात्पर्य चौदह लोकों वाला बैकुण्ठ नहीं है, क्योंकि बेहद वाणी में स्पष्ट कहा गया है कि इस ब्रह्माण्ड जैसे असंख्यों ब्रह्माण्ड निराकार के अन्दर हैं -

फेर पूछे सिव विष्णु को, कहे ब्रह्माण्ड और।
और ब्रह्माण्ड की वारता, क्यों पाइए इन ठौर।। प्र. हि.

चौदह लोकों का यह ब्रह्माण्ड सृष्टि के स्थूल - सूक्ष्म भाग में आता है, जबकि आदि नारायण का प्रकटन मोहसागर है जो सृष्टि में प्रकृति का महाकारण स्वरूप है। यदि यह कहा जाय कि चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड के जीवों के मूल बैकुण्ठ वासी विष्णु है तो यह उचित नहीं होगा, क्योंकि जब अनन्त ब्रह्माण्डों के अनन्त विष्णु होंगे तो एक ही क्षर पुरूष (आदिनारायण) से सभी प्राणियों के अस्तित्व में आने का कथन मिथ्या हो जायेगा।

अतः स्पष्ट है कि उपरोक्त चौपाई में आदिनारायण का मोहसागर में स्थित निवास ही बैकुण्ठ कहलायेगा, जिसका वर्णन श्रीमद्भागवत एवं बी. सा. में हरजी व्यास से वार्ता के सम्बन्ध में है। सुमंगला पुरूष के रूप में आदि नारायण का अखण्ड स्थान अव्याकृत के महाकारण में है। उसी का प्रतिबिम्बत रूप मोह सागर में है, जिसे बैकुण्ठ की संज्ञा दी गयी है। यह चौदह लोकों वाले विष्णु के बैकुण्ठ से अलग है। यह कथन वैसे ही है, जैसे प्रकट वाणी में अक्षर ब्रह्म को भी बैकुण्ठ नाथ कहकर सम्बोधित किया गया है- 'या समें श्री बैकुण्ठनाथ, इच्छा दरसन करने साथ।'

महाविष्णु सुनं प्रकृति, निराकार निरंजन ।
ए काल द्वैत को है, ए भी सुध नहीं त्रिगुन ।। कि. ७४/२४

यह चौपाई यही दर्शा रही है कि आदिनारायण तथा मोह सागर के सम्बन्ध में ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव भी स्पष्ट रूप से नहीं जानते है।

दसो दिसा भवसागर, देखत एह सुपन।
गिरदवाए आवरण गफलत, निराकार कहावे सुंन।।२८।।

दसों दिशाओं में सर्वत्र ही स्वप्नमयी भवसागर लहराता हुआ दिखायी दे रहा है। इस ब्रह्माण्ड के चारों ओर मोह तत्व का आवरण है जिसे निराकार या महाशून्य कहते हैं।

तबक चौदे कोहेड़ा, ए सबे कुदरत।
सुर असुर कई अनेक विध, खेलें ख्वाबी दम गफलत।।२९।।

चौदह लोकों का यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड मायाजन्य है। इसमें सर्वत्र प्रपंच ही प्रपंच दिखायी दे रहा है। इसमें अज्ञानता की धुन्ध चारों ओर फैली हुई है। इसमें देवता भी हैं तथा राक्षस भी हैं जो स्वाप्निक जीव है और अज्ञान में भटकते हुए संसार चक्र में बने रहते है।

वनस्पति पसु पंखी, आदमी जीव जंत।
मछ कछ सब सागर, रच्यो एह प्रपंच।।३०।।

यह सम्पूर्ण मायावी प्रपंच इस प्रकार का बना हुआ है कि इसमें स्थल भाग पर अनेक प्रकार की वनस्पतियां, पशु-पक्षी, मनुष्य तथा सागर में रहने वाले घड़ियाल और कछुए आदि अनेक प्रकार के जीव - जन्तु दृष्टिगोचर होते है।

रूह मिने जुदी जिनसों, कहियत चारों खान।
जड़ चलें पेट पांउ परे, लाख चौरासी निरमान।।३१।।

इस संसार में चार प्रकार से जीवों के तन उत्पन्न होते हैं १. अण्डे से २. गर्भ से ३. पसीने से ४. भूमि से अंकुरित होकर। इनमें वृक्ष आदि अपनी जड़ के सहारे खड़े रहते है। सर्प आदि पेट के बल सरक कर चलते है तथा मुनष्य आदि अपने पैरों से चलते है। इस प्रकार इन जीवों की चौरासी लाख योनियां है।

द्रष्टव्य - योनियां तो अनन्त है। चौरासी लाख कहने का एक आधार मात्र (परिणाम) है।

कोई बैकुंठ कोई जमपुरी, कोई स्वर्ग पाताल।
सब खेलें ख्वाबी पुतले, आड़ी मोह सागर पाल।।३२।।

चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में पृथ्वी लोक के अतिरिक्त कोई बैकुण्ठ में रहता है, तो कोई नरक (यमपुरी) में। कोई स्वर्ग में रहता है, तो कोई पाताल में (पृथ्वी स्थित) सभी प्राणियों के शरीर स्वप्नमयी नश्वर ही होते हैं और इस ब्रह्माण्ड के चारों ओर मोह सागर का घेरा (आवरण) होता है।

जो बनजारे खेल के, तिन सिर जम को डंड।
कोइक दिन स्वर्ग मिने, पीछे नरक के कुंड।।३३।।

इस पृथ्वी लोक में जो भी प्राणी जन्म लेते हैं, उन्हें मरने के पश्चात् यमराज के दण्ड को भोगना पड़ता है। इसमें अपने शुभ कर्मों के अनुसार जीव कुछ दिनों तक तो स्वर्ग का सुख भोगते हैं और बुरे कर्मों के अनुसार नरक का दुःख भोगना पड़ता है।

भावार्थ- पौराणिक मान्यता के अनुसार यमराज मृत्यु के देवता हैं, जो सभी प्राणियों को उनके कर्मों के अनुसार सुख या दुःख देते हैं। चित्रगुप्त उनका मन्त्री है जो

प्रत्येक प्राणी के शुभ-अशुभ कर्मों का लेखा रखते हैं। किन्तु वैदिक मान्याता के अनुसार 'यम' का अर्थ समस्त सृष्टि पर शासन करने वाला एक अविनाशी ब्रह्म ही है। सबके चित्त में शुभ-अशुभ कर्मों का सम्पूर्ण विवरण विद्यमान रहता है। इस प्रकार चित्त ही चित्रगुप्त है। वस्तुत वैदिक दृष्टि से स्वर्ग और नरक सुख और दुःख की अवस्था विशेष है, स्थान विशेष नहीं।

लाठी तेरे लोक पर, संजमपुरी सिरदार।
जो जाने नहीं जगदीस को, तिन सिर जम की मार।।३४।।

बैकुण्ठ के अतिरिक्त अन्य तेरह लोकों में यमपुरी के स्वामी यमराज का शासन चलता है। जो जीव विष्णु भगवान की भक्ति नहीं करते हैं उन्हें यमराज का दण्ड भुगतना पड़ता हैं

भावार्थ- यमराज की पुरी को यमपुरी कहते हैं। बैकुण्ठ के अतिरिकत अन्य सभी लोकों में कर्मफल का भोग होता है। जीवों का मुक्ति धाम होने से बैकुण्ठ में यमराज का शासन नहीं होता है।

ए छल बनज छोड़ के, करे बैकुंठ वेपार।
ए सत लोक इनका, कोई गले निराकार।।३५।।

इस पृथ्वी लोक में जो मनुश्य छल-कपट का मार्ग छोड़ कर बैकुण्ठ-बिहारी विष्णु भगवान की भक्ति करते हैं, वे सत्यलोक अर्थात् बैकुण्ठ को प्राप्त होते हैं। अन्य लोग निराकार में लय हो जाते हैं।

भावार्थ- बैकुण्ठ त्रिगुणात्मक है, इसलिये जीव का अन्तःकरण वहां भी सुरक्षित रहता है। ब्रह्म को निराकार मानने वाले प्रकृति मण्डल में इच्छानुसार भ्रमण करते हुए मुक्ति सुख का उपभोग करते हैं किन्तु प्रलय की अवस्था में उनका अन्तःकरण कारण प्रकृति में विलीन हो जाता है और जीव भी आदिनारायण का सांकल्पिक प्रतिबिम्बित चैतन्य होने से अपने मूल स्वरूप को प्राप्त हो जाता है (अस्तित्व विहीन हो जाता है)।

इसे ही लीन हो जाना कहते हैं। बोलचाल की भाषा में इसे ही ब्रह्मलीन होना कहा जाता है, किन्तु अखण्ड ब्रह्म में किसी का भी लीन होना सम्भव नहीं है। वस्तुतः विलीनवाद का यह सिद्धान्त मात्र आदि नारायण (शबल ब्रह्म, ईश्वर) के साथ ही घटित

हो सकता है।

तबक चौदे इंड में, जिमी जोजन कोट पचास।
पहाड़ कुली अष्ट जोजन, लाख चौसठ बास।।३६।।

इस ब्रह्माण्ड में चौदह लोक हैं। इसमें श्रीमद्भागवत् के अनुसार पृथ्वी लोक का परिमाण ५० करोड़ योजन है। आठ लाख योजन में सभी पर्वत हैं तथा ६४ लाख योजन में मनुश्यों की बस्ती है।

पांच तत्व छठी आतमा, सास्त्र सबों ए मत।
यों निरमान बांध के, ले सुपन किया सत।।३७।।

सभी शास्त्रों का ऐसा मत है कि पांच तत्वों के इस शरीर में छठा पदार्थ आत्म चैतन्य (जीव) है। इस प्रकार की धारणा बनाकर शास्त्रों के मर्मज्ञों ने इस स्वप्नमयी जगत को ही सत्य सिद्ध कर दिया है।

भावार्थ-विद्वानों का कथन है कि प्रकृति अनादि तत्व है। भले ही यह कारण रूप में हो या कार्य रूप में। इस प्रकार से यह जगत सत्य है, किन्तु आदि शंकराचार्य जी ने इसे स्वप्न के समान परिवर्तनशील होने से मिथ्या माना है।

देखे सातों सागर, और देखे सातों लोक।
पाताल सातों देखिया, जागे पीछे सब फोक।।३८।।

मैंने सातों सागरों सहित इस पृथ्वी लोक का निरीक्षण किया। इसके अतिरिक्त ऊपर के अन्य छः लोकों और सात पाताल लोकों को भी मैंने देखा। किन्तु तारतम वाणी के प्रकाश में जागृत होकर देखने पर तो ऐसा लगता है कि चौदह लोकों का यह ब्रह्माण्ड है ही नहीं।

भावार्थ-सात सागर इस प्रकार है- १-हिन्द महासागर २ प्रशान्त महासागर ३-आन्ध्र महासागर ४- दक्षिण महासागर ५-उत्तर महासागर ६- भूमध्य सागर ७-अरब सागर। इन सातों सागरों के किनारे की भूमि ही सात पाताल लोक कहलाती है। पृथ्वी के अन्दर या पृथ्वी लोक से दूर सात पाताल लोकों की कल्पना उचित नहीं है।

ए छल बल देखिया, धखत आग को कूप।
ए नख सिख लों देखिया, बड़ा दज्जाल का रूप।।३९।।

मैने पाताल (नख) से लेकर बैकुण्ठ (शिख) तक प्रपंच रूप इस ब्रह्माण्ड और इसकी शक्ति को देखा। ऐसा लगता है कि यह ब्रह्माण्ड जलते हुए आग के किसी कुंए की तरह है। निश्चित ही यह बहुत बड़े दज्जाल (अज्ञान) का स्वरूप है।

ताए नारायन कर सेवहीं, ऐसी ए कुफरान।
पीर जैसे मुरीद तैसे, एक रस ए निरवान।।४०।।

यह ऐसी जीव सृष्टि है जो उसे नारायण का स्वरूप मानकर भक्ति करती है। करे भी क्या जैसा गुरू वैसा ही शिष्य। वस्तुतः यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ही सर्वत्र अज्ञानता के अन्धकार से भरा हुआ है।

प्रश्न - उपरोक्त चौपाईयों में आदिनारायण के लिये दज्जाल शब्द का प्रयोग क्यों हुआ है? क्या यह हिन्दुओं का अपमान नहीं है? क्या ब्रह्मवाणी में इस प्रकार की भाषा का प्रयोग उचित है?

उत्तर - तारतम वाणी तथा बी. सा. में अनेक प्रसंगों में सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी और श्री प्राणनाथ जी के द्वारा दज्जाल का वध (कत्ल) किये जाने का वर्णन है -

लिख्या है फुरमान मे, मेहेदी आवेग अखिर।
उड़ाए मारसी दज्जाल को, राह देसी सीधी कर।। सनध ३१/४१

कुरान मजीद पारः २३ सूरः ३८ आयत ७९-८३ "काल रब्बि फअन्जिर्नी इला यौमि युब्असून काल फइन्नक मिनल्-मुन्जरीन इला यौमिल-वक्तिल्-मऽलूमी काल फबिइज्जतिक लअुग्बियन्नहुम् अज्मइन इल्ला इबादक मिन्हुमुल्-मुखलसीन" अर्थात् बोला ऐ मेरे परवरदिगार! मुझको उस दिन यानी कियामत तक की मुहलत दे जबकी मुर्दे दुबारा उठाकर खड़े किये जायेंगे। अल्लाह ने फर्माया तुझको मुहलत है उस वक्त के दिन तक जो मुकर्रर (नियत) हैं। इब्लीस बोला तेरी इज्जत की कसम! मैं इन सबको गुमराह करता रहूँगा। मगर जो तेरे चुने बन्दे हैं, उनमें मेरी पैठ नहीं।

प्रश्न यह है कि जिस दज्जाल को मारने का प्रसंग बार-बार तारतम वाणी में आया है, यदि वह नारायण ही है तो क्या नारायण को मनुष्य की तरह मार पाना सम्भव है? क्या नारायण के मारे जाने पर इस सृष्टि के अस्तित्व का रह पाना

सम्भव हो सकेगा?इसका उत्तर 'नहीं' में ही होगा।

दज्जाल किसे कहते है, इसकी विवेचना श्री कुल्जम स्वरूप में इस प्रकार की गयी है –

कुदरत रूप दज्जाल को, किनहूं न जान्या जाए ।
तब सबों को सुधी परी, जब ईसे दिया उड़ाए ।। सनंध ३१/४३
मन चित्त बुध अहंकार, काम क्रोध गफलत ।
आउध ए दज्जाल के, स्यानप ग्यान असत ।
ए दज्जाल बड़ा जोरावर, मूल गफलत याके साथ ।
मनसा वाचा करमना, ए सब इनके हाथ ।। सनंध ३१/८,११

उपरोक्त चौपाईयों से यह स्पष्ट है दज्जाल या शैतान कोई चेतन प्राणी नहीं है, जिसे मारा जाय। वस्तुतः रजोगुण एवं तमोगुण के प्रभाव से मन, चित्त, बुद्धि तथा अहम् में जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, अज्ञान आदि विकार उत्पन्न होते हैं, उसे ही शैतान कहा जाता है। वेद में इसे 'स्तेन' कहा जाता है। स्तेनं राय सारमेय व पुनः सर। ऋ. ७ मं. ७ सू. ५६/३ स्तेनानां पतये नमो नमः। यजु. १६/२० न मे स्तेनो जनपदे छा. उ. ५/११/१५ श. वा. ११/५ तथा यजुर्वेद १/१ मा वस्तेनऽईशत' इसी प्रकार हिन्दू धर्मग्रन्थों में इसे कलियुग की भी संज्ञा दी गयी है –

मारेगा कलियुग को, ए जो चौदे तबक अंधेर।
तिन को काट कासी, टालसी उलटो फेर ।।
दज्जाल सरूप अंधेर को, आखिर ईढ़ मारसी ताए ।
पेहले निरमल करके, लेसी कदमों सूरत लगाए ।। कि. ६६/ २८,२६

जिस प्रकार पौराणिक हिन्दुओं ने कलियुग (अज्ञान) की कल्पना एक व्यक्ति के रूप में की है जो राजा परीक्षित के समक्ष प्रकट हो जाता है, उसी प्रकार मुसलमानों ने भी दज्जाल या शैतान (अज्ञान) के रूप में एक ऐसे मायावी व्यक्ति की कल्पना की है जो सबको अल्लाहतआला (परब्रह्म) की भक्ति से दूर करता है। 'हुई जाहेर सब में, काढ़या कुली दज्जाल। बी. सा. ६२/६० । इस तथ्य को कुर्आन के इस कथानक द्वारा सरलता से समझा जा सकता है –

कहया सिजदा आदम पर, अजाजीलें फेरया फुरमान ।
सो लिखी लानत सबन को, जो औलाद आदम जहान ।। खु. १/२०

अल्लाहतआला ने अजाजील फरिश्ते को आदम पर सिज्दा (प्रणाम) करने के लिये कहा, किन्तु उसने वैसा करने से मना कर दिया। इस प्रकार अल्लाह की ओर से दण्डित किये जाने पर बदले की भावना से इब्लीश ने आदम से उत्पन्न होने वाले सभी मानव समाज को भटकाने के लिये उनके हृदय पर अधिकार पाने का वर प्राप्त कर लिया। इस प्रकार का वर्णन कुर्आन के ८वें पारे में किया गया है।

आदिनारायण का मूल स्थान अव्याकृत के महाकारण (सबलिक के स्थूल) में स्थित सुमंगला पुरूष है, जिसे कुर्आन में नूरी अजाजील कहा गया है। इस स्थान को कुर्आन में बहिश्त माना गया है। मोह (अज्ञान) के कारण ही वह उस आदम को प्रणाम नहीं करता है जिसमें अल्लाह ने अपनी रूह डाली थी। अहंकार मन में होता है और वह अज्ञान से उत्पन्न होता है। यही कारण है कि अजाजील के अहंकार युक्त मन (इब्लीश) को शैतान या दज्जाल की संज्ञा दी गयी है।

मिट्टी से बना होने पर भी आदम को इसलिये पूज्य माना गया है क्योंकि एक मात्र मानव तन में ही परब्रह्म का साक्षात्कार हो सकता है, फरिश्ते (अजाजील) के तन में नहीं। यह स्पष्ट तभी तक अस्तित्व में है जब तक आदिनारायण का स्वप्न चल रहा है। आदि नारायण की नीदं के समाप्त होते ही यह सृष्टि समाप्त हो जायेगी। इस प्रकार आदिनारायण (अजाजील) को परब्रह्म के साक्षात्कार के योग्य नहीं माना गया है, जबकि आदम को यह सौभाग्य सहजता से प्राप्त है। यही कारण है कि अजाजील अपने मन की शक्ति इब्लीश से सभी प्राणियों को भटकाता रहता है।

बहिश्त के द्वार पर पहरा देने वाले मोर तथा सर्प रजोगुण एंव तमोगुण के प्रतीक हैं जिनकी सहायता से मन रूपी इब्लीश सम्पूर्ण मानव जाति को भटकाकर परब्रह्म के ज्ञान एवं प्रेम से दूर कर देता है तथा संसार सागर में भटकाता रहता है।

गुनाह किया अजाजीलें, दुनी दिल लगी लानत ।
ढूढ़ें दज्जाल को बाहेर, पावे ना लिखी इसारत ।। खु. १/२२

आदम को प्रणाम न करने का अपराध अजाजील ने किया किन्तु उसका दण्ड संसार के सभी प्राणियों के दिल को भोगना पड़ रहा है।

लोग दज्जाल को बाहर ढूढंते रहते हैं किन्तु वे इस सम्बन्ध में कुर्आन में संकेतों में लिखी हुई बात को समझ नहीं पाते हैं।

मोह सागर में अक्षर ब्रह्म के मन अव्याकृत का प्रतिबिम्बत होना अपराध की तरह है, किन्तु जब नारायण ही नींद में रहेगा तो उसके चिदाभास के स्वरूप जीवों में

जागृति कैसे रह सकती है? उनके हृदय में छाये रहने वाले अज्ञान रूपी अन्धकार को ही कतेब परम्परा मे दज्जाल कहा गया है, जो मन रूप से सबके अन्दर है, बाहर नहीं।

चौदे तबक के तखत, बैठा मलकूत अजाजील ।
राह मारत दूनी सब दिलों, अबलीश इनों वकील ।। खु. १/२४

अजाजील फरिश्ता (आदिनारायण) चौदह लोकों के सिंहासन के रूप में मलकूत (बैकुण्ठ) में विद्यमान है। उसका वकील इब्लीश है जो सबके दिल में बैठकर परब्रह्म के मार्ग से भटकाकर माया में ही डूबोये रखता है।

इस चौपाई में आलंकारिक रूप से यह बात दर्शायी गयी है कि सुमंगला (रोधिनी) शक्ति से उत्पन्न होने वाले मोह से बनने वाले मन में जब अज्ञान रूपी अन्धकार रहेगा तो भला जीव माया से पार कैसे जा सकेंगे?सम्पूर्ण क्षर ब्रह्माण्ड के नियन्त्रक आदिनारयण हैं और सभी प्राणी उनकी ही चेतना के सांकल्पिक प्रतिभास स्वरूप हैं। इसी कारण व्यंग्यात्मक भाषा में अज्ञानमयी मन रूप इब्लीश को अजाजील का वकील अर्थात् उनकी भावनाओं का समर्थन करने वाला कहा गया है।

यह विशेष तथ्य है कि आदि नारायण (नूरी अजाजील) का अखण्ड स्थान अव्याकृत के महाकारण में है। उनका प्रतिबिम्ब स्वरूप मोह सागर में आदिनारायण (अजाजील) है। उस मोहसागर को ही वास्तविक मलकूत कहा जा सकता है। चौदह लोकों के जिस बैकुण्ठ (मलकूत) में विष्णु भगवान (नारायण) का निवास माना जाता है, वह सृष्टि के इस व्यष्टि ब्रह्माण्ड को समझाने के लिये है।

यथार्थतः अनन्त चौदह लोक (मलकूत सहित) उस मोह सागर मे लीन हो जाते है, जिसमें आदि नारायण का निवास है। इस सम्बन्ध में खु. १६/३१ की यह चौपाई देखने योग्य है –

दरिया ला मकान का, तिन की लेहर मलकूत ।
तिन से लेहेर उठत है, सो जानो नासूत ।।
भया निकाह आदम हवा, दुनी निकाह अबलीस ।
ए जाहेर लिख्या फुरमान में, पूजे हवा अपनी खाहिस ए ।। ख. १/१५

आदि नारायण का सम्बन्ध हव्वा से हुआ और संसार के जीवों का विवाह इब्लीश अर्थात् मन रूपी शैतान से हुआ। यह बात कुर्आन में स्पष्ट रूप से लिखी हुई है कि सांसारिक जीव अपनी लौकिक तृष्णाओं की पूर्ति के लिये शून्य – निराकार को ही परमात्मा मानकर पूजा करते हैं।

यह सर्वमान्य तथ्य है कि पौराणिक हिन्दू परमात्मा को साकार तथा निराकार

दोनों रूपों में मानते हैं। साकार रूप में वे बैकुण्ठवासी विष्णु या मोह सागर (आपः) में आदिनारायण का अस्तित्व मानते हैं। निराकारवादी प्रकृति के सूक्ष्मतम् स्वरूप उस मोहसागर को ही परमात्मा मानकर भक्ति करने लगते हैं जो अज्ञान, शून्य, काल, नींद या अविद्या रूप जड़ प्रकृति कहा जाता है। इसकी उपासना का निषेध तो यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के मन्त्र ९ में किया गया है –

अन्धंतमः प्रविशन्ति ये असम्भूतिमुपासते ।

अर्थात् जो प्रवाह से अनादि कारण रूप निराकार जड़ प्रकृति है, उसकी उपासना करने वाले घोर अन्धकार रूपी दुःखों में पड़ते है। मनु. ने भी यही माना है कि उस मोहसागर में निवास करने वाला अव्याकृत का मन ही नारायण कहलाता है –

आपो नाराः इति प्रोक्ता आपो वै नर सूनवः ।
ता यदस्यायनं नारायणं इति स्मृतः।।

जब उपनिषदों में परब्रह्म को अक्षरात् पतः परतः कहा गया है तथा अथर्ववेद के केन सूक्त तथा मु. उ. में दिव्ये ब्रह्मपुरे हि एषः व्योम्नि आत्मा प्रतिष्ठितः कहा गया है तो मोह सागर में स्थित स्वाप्निक स्वरूप नारायण को परब्रह्म मानना क्या वेदों की अवज्ञा करना नहीं है? यजुर्वेद के व्याख्या ग्रन्थ शतपथ ब्राह्मण में ऐसे ही लोगों के लिये कहा गया है कि 'यो अन्यां देवतामुपासते स न वेद यथा पशुभिः एव देवानाम्' अर्थात् जो एक सच्चिदानन्द परब्रह्म को छोड़कर अन्य किसी की उपासना करता है, वह मनुष्यों में पशु के समान अज्ञानी है।

शालिग्राम, शिवलिंग जैसे पत्थरों, तुलसी, केले आदि पेड़ – पौधों, नदियों तथा तालाबों की भक्ति करने वाले पौराणिक हिन्दू यदि निराकार जड़ प्रकृति को ही नारायण मानकर भक्ति करें तो यह उनकी सैद्धान्तिक भूल है। जो शालिग्राम तथा शिवलिंग को साक्षात् विष्णु और शिव मानें उनके लिये निराकार रूप जड़ प्रकृति को आदि नारायण कहना स्वाभाविक है।

सनंध की इस ४०वीं चौपाई में मोहसागर को ही अज्ञान रूप दज्जाल कहा गया है, जो किसी भी योगी, यति, मनुष्य को प्रकृति से परे होकर अखण्ड धाम में जाने नहीं देता। ऐसी स्थिति में यह आरोप निराधार है कि तारतम वाणी में नारायण को दज्जाल कहा गया है।

सच तो यह है कि तारतम वाणी या कुर्आन में दज्जाल या शैतान वह अज्ञान, मोह, निराकार है जो जीव को परब्रह्म से मिलने नहीं देता। अतिश्योक्ति अलंकार की भाषा में कुर्आन में दज्जाल या शैतान शब्दों का प्रयोग है, किन्तु हिन्दू धर्म ग्रन्थों में ऐसे शब्द नहीं है। श्री मुखवाणी में अक्षर ब्रह्म के मन के स्वाप्निक रूप आदिनारायण को सर्वदा आदर सूचक 'जी' के साथ सम्बोधित किया गया है –

बैकुण्ठ मिने नारायन जी, जिन मुख स्वांसा वेद । सनंध चौ. २५/२६
नारायन जी की रात को, कोईक पावे पार ।। वे. वा. चौ. ६६

ए झूठे झूठा खेलहीं, नहीं सांच की सुध।
ए पीर मुरीद देखिए, कही दोऊ की बिध।।४१।।

संसार के ये स्वाप्निक जीव इस स्वप्नवत् संसार में मग्न हैं। इन्हें अखण्ड धाम बेहद या परमधाम का कोई भी ज्ञान नहीं है। मैनें मोहसागर में स्वयं के स्वरूप को भूले हुए आदिनारायण तथा उनके चिदाभास रूप जीवों की वास्तविकता बता दी है। इसे आप समझिए।

।।प्रकरण।।१७।।चौपाई।।४३६।।

सनंध–हांसी की

इस प्रकरण में यह बात दर्शायी गयी है कि ब्रह्ममुनियों से इस मायावी खेल में किस प्रकार की भूल हो रही है और उसके परिणाम स्वरूप परमधाम में किस प्रकार हंसी की लीला होनी है –

मोमिन यामें न रांचहीं, जाको सांचसों सनेह।
निपट ए कछुए नहीं, भी देखो नेक बिध एह।।१।।

श्री महामति जी कहते है कि जिन ब्रह्ममुनियों को अपने प्राणेश्वर अक्षरातीत तथा अखण्ड परमधाम से प्रेम है वे इस मायावी संसार में मग्न नहीं होंगे। वास्तव में यह कुछ है ही नहीं, मात्र स्वप्नवत् है। फिर भी इसकी थोड़ी सी वास्तविकता देखिए।

ए जो पीर मुरीद दोऊ कहे, कुफरान या दज्जाल।
अर्स रूहों को देखाए के, उड़ाए देसी ए ताल।।२।।

इस संसार में गुरू – शिष्य के रूप में दो प्रकार के चेतन हैं। गुरू है आदि नारायण तथा उनका अनुसरण करने वाले संसार के जीव हैं। इन जीवों का स्वभाव काफिरों या नास्तिकों जैसा है। परमधाम के ब्रह्ममुनियों को यह स्वाप्निक खेल दिखाकर

इसका लय कर दिया जायेगा।

भावार्थ - काफिर का अर्थ नास्तिक या परब्रह्म के निर्देशों को न मानने वाला होता है। इसी प्रकार दज्जाल का तात्पर्य ऐसे व्यक्ति या पदार्थ से है जो जीव और परमात्मा के मध्य बाधक बनता है। इसी संनध ग्रन्थ के २५६/२६ में जब आदिनारायण से वेदों का प्रकटन कहा गया है तो उन्हें नास्तिक या काफिर कैसे कहा जा सकता है?

चारो वेद अपौरूषेय है अर्थात् इनमें मानवीय बुद्धि से परे ईश्वरीय ज्ञान निहित है। इनका मूल स्थान अक्षर ब्रह्म के मन स्वरूप अव्याकृत में है। ये प्रत्येक सृष्टि में नारायण के हृदय में प्रकट हो जाते है। इन वेदों में अ़क्षर-अक्षरातीत के अतिरिक्त अन्य किसी की भी न तो भक्ति है, और न उनका वर्णन है। ऋग्वेद के नासदीय सूक्त, अथर्ववेद के प्राण सूक्त, ऋषभ सूक्त, स्कम्भ सूक्त, चारों वेदों में वर्णित पुरूष सूक्त तथा सम्पूर्ण सामवेद में मात्र अक्षर-अक्षरातीत की ही विवेचना है। कठोपनिषद् तथा गीता का भी यही कथन है कि 'यदक्षरं वेद विदो वदन्ति।' अर्थात् वेद के

जानने वाले जिस अक्षर ब्रह्म का वर्णन करते है।

'सरूप एक है लीला दोई' परि. के कथन से यह स्पष्ट है कि अक्षर एवं अक्षरातीत का स्वरूप एक ही है। ऐसी स्थिति में वेदों का कथन करने वाले आदिनारायण के लिये नास्तिक या दज्जाल शब्द का प्रयोग कैसे किया जा सकता है।?

चारो वेदों के २०४१४ मन्त्रों में एक भी मन्त्र ऐसा नहीं है जिसमें कहा गया है कि आदि नारायण परमात्मा है और उनकी भक्ति करनी चाहिए। ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र 'अग्निम् ईडे पुरोहितं यज्ञस्य ऋत्विजं' से लेकर अथर्ववेद के अन्तिम मन्त्र **'पनाय्यं तदश्विना कृतं वा'** में कही भी एक भी वाक्य ऐसा नहीं है, जिसमें लिखा हो कि आदि नारायण ही परब्रह्म है और उनकी भक्ति करनी चाहिए।

यदि कोई योगी (विवेकानन्द आदि) समाधि अवस्था में अव्याकृत (ऊं) का आदि नारायण के रूप में साक्षात्कार कर ले तो इसमें नारायण का क्या दोष है? इसमें उन योगियों तथा भक्तों की अयोग्यता का दोष है। वेद में तो 'पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्य अमृतं दिवि' तथा त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरूषः' कहकर निराकार (मोहसागर) से परे होकर एकादश द्वार रूप परमगुहा में बेहद मण्डल का साक्षात्कार करने का निर्देश दिया

गया है। पुनः इस बेहद मण्डल (चतुष्पाद विभूति) से परे ही परब्रह्म है, ऐसा कहा गया है। इतना उच्च ज्ञान देने के बाद भी आदि नारायण को दोषी ठहराना उचित नहीं है।

पौराणिक ग्रन्थों में ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं जिनके आधार पर यह कुतर्क किया जाता है कि ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा आदिनारायण सारे संसार को अपनी भक्ति करने के लिये प्रेरित करते हैं। इस प्रकार यदि इन्हें परब्रह्म की भक्ति में बाधा खड़ी करने वाला दज्जाल कहा जा सकता है, तो यह कदापि मान्य नहीं हो सकता।

पौराणिक ग्रन्थों की रचना अल्पज्ञ विद्वानों ने की है। उन्होंने न तो सांगोपांग वेदों का अध्ययन किया और न ध्यान-समाधि की उच्च अवस्था को ही प्राप्त किया। वेदों में विष्णु, शिव, इन्द्र आदि शब्द अवश्य हैं, किन्तु ये ब्रह्म के गुणवाचक शब्द हैं। वेद में वर्णित ये शब्द उन देवों के लिये नहीं है, जो कैलाश, क्षीर सागर या स्वर्ग में रहते हैं, अपितु अपनी अनन्त सत्ता से सर्वव्यापक, सम्पूर्ण प्राणिमात्र का कल्याण करने वाले और अनन्त ऐश्वर्य वाले उस ब्रह्म के विशेषणात्मक वाचक शब्द है।

इस नाम से ऋषि, मुनि और योगी अवश्य हुए जिन्होंनें वेद मे वर्णित ब्रह्म के इन वाचक शब्दों को अपने नाम के रूप में भी प्रयुक्त किया और परब्रह्म की आराधना की। विष्णु भगवान ने मान सरोवर को, शिव जी ने कैलाश को तथा इन्द्र ने गंगोत्री से आगे के भाग को अपना निवास स्थान एवं ध्यानस्थल बनाया।

यदि कोई मनुष्य इनके ऐश्वर्य से मोहित होकर इनकी महिमा में कोई ग्रन्थ रच दे तो इसमें इन देवों का या आदि नारायण का क्या दोष है? स्वयं शिव जी माहेश्वर तन्त्र तथा पुराण संहिता में मात्र अक्षरतीत की ही भक्ति का निर्देश देते है तो विष्णु भगवान अपने कृष्णावतार में गीता - प्रवचन में **'तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत' तथा 'पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभस्त्वनन्या'** कहकर एक परब्रह्म की अव्यभिचारिणी भक्ति का ही उपदेश देते हैं।

यथार्थता यह है कि काफिर या दज्जाल शब्द वर्तमान युग के उन जीवों के लिये प्रयुक्त हुए हैं, जो परब्रह्म को या तो मानते नहीं हैं या दूसरों की भक्ति में बाधायें खड़ी करते हैं। बी. सा. २६/३१ यही सिद्ध करता है -

बेटा जोरू बाप महतारी, और कुटुम्ब परिवार।
सो सब लगे लड़ने, ले दज्जाल हथियार।।

सनंध १८/२ में पहले चरण में मुरीद कहा गया है जिसमें होगा द्वन्द्व समास किन्तु दूसरे चरण में स्पष्ट रूप से कुफरान या दज्जाल कहा गया है, जिसका तात्पर्य जीवों को काफिर या दज्जाल कहने से है। यह मात्र एक (जीव सृष्टि) के लिये है। यदि 'कुफरान और दज्जाल' लिखा होता तो यहां आदि नारायण का प्रसंग हो सकता था, किन्तु ऐसा नहीं है।

ए छल ऐसा तो रच्या, जो तुम मांग्या देखन।
जिन तुम बांधो आप को, अर्स के मोमिन।।३।।

हे साथ जी! आपने माया का जैसा खेल देखने की इच्छा की थी, वैसा ही यह बनाया गया है। आप परमधाम के ब्रह्ममुनि हैं, इसलिये इसमें आसक्ति रखकर फसंने की भूल मत किजिए।

जो कोई रूहें निसबती, ए हांसी को है ठौर।
खसम वतन आप भूल के, कहां देखत हो और।।४।।

यह स्वप्नमयी ब्रह्माण्ड हंसी के लिये ही बनाया गया है। इस संसार में परमधाम के जो भी ब्रह्ममुनि हैं, उन्हें चाहिए कि वे न तो अपने प्राणवल्लभ अक्षरातीत को भूलें, न अपने मूल स्वरूप को और न अपने मूल घर परमधाम को। उन्हें भूलकर आप क्या देख रहे हैं। इस मायावी ब्रह्माण्ड को देखना अर्थात् इसमें मग्न हो जाना तो हंसी को निमन्त्रण देना है।

मोमिनों तुम को उपज्या, खेल देखन का ख्याल।
जाको मूल नहीं बांधे तिन, ए तो हांसी का हवाल।।५।।

हे साथ जी! परमधाम में आपके मन में माया का खेल देखने की इच्छा हुई थी जिसके कारण यह ब्रह्माण्ड बना। इस स्वाप्निक ब्रह्माण्ड का कोई मूल नहीं है अर्थात् यह पूर्णतया नश्वर है, फिर भी आपको इसने बांध लिया है। ऐसी स्थिति में तो आपकी हंसी होनी ही है।

मांग्या खेल खुसाली का, तिन फेरे तुमारे मन।
सो सब तुमको बिसरे, जो कहे मूल वचन।।६।।

आपने हंसी के लिये माया का खेल मांगा था, किन्तु इस माया ने आपके मन को धामधनी से विमुख कर दिया है। आपने परमधाम में प्रियतम से जो बातें कही थीं कि हम किसी भी स्थिति में आपको नहीं भूलेंगे, उन सब बातों को आपने भूला ही दिया है।

गूंथो जालें दोरी बिना, आप बांधत हो अंग।
अंग बिना तलफत हो, ए ऐसे खेल के रंग।।७।।

यह मायावी खेल इतना विचित्र है कि आप बिना रस्सी के ही जाल बना रहे हैं तथा अपने हृदय को उससे बांध रहे हैं। आपके शरीर के वास्तविक अंग तो परमधाम में ही हैं किन्तु यहाँ का स्वाप्निक तन पाकर आप दुःखों. से तड़प रहे हैं।

भावार्थ - पारिवारिक सम्बन्ध ही वे रस्सी हैं जो यथार्थ में होते ही नहीं, किन्तु मोह वश ऐसा लगता है कि हम इनके बिना जी ही नहीं सकते। अपने पूर्व जन्मों के संस्कारों के अनुसार वर्तमान के सभी सम्बन्ध बनते हैं और अपना स्वार्थ पूरा कर के टूट जाया करते हैं। यह कैसी विडम्बना है कि जिस परब्रह्म से अनादिकाल से अखण्ड सम्बन्ध चला आ रहा है, उसे हम गौण कर देते हैं तथा स्वाप्निक सम्बन्धों को वास्तविक एवं सर्वोपरि मान लेते हैं। इसे ही बिना रस्सी के जाल बनाना कहते हैं।

आप बंधाने आप से, इन कोहेड़े अंधेर।
चढ़्या अमल जानों जेहेर का, फिरत वाही के फेर।।८।।

हे साथ जी! ऐसा लगता है जैसे आपके ऊपर माया के विष का इतना प्रभाव पड़ गया है कि आप स्वयं ही जानते हुए भी पारिवारिक सम्बन्धों के इस मिथ्या अन्धकार में फंसते जा रहे हैं और बार - बार उसी में भटक रहे हैं।

अमल चढ़या क्यों जानिए, कोई फिसलत कोई गिरत।
कोई सावचेत होए के, हाथ पकर सीढ़ी चढ़त।।९।।

यह कैसे समझा जाय कि सुन्दरसाथ के ऊपर माया का नशा चढ़ा हुआ है ?यदि अक्षरातीत के प्रति निष्ठा डगमगाती है तो उसे फिसलना कहते हैं और यदि धाम धनी को छोड़कर अन्य देवी-देवताओं को अपना आराध्य बनाकर लौकिक सुखों में डूबा जाता है, तो उसे गिर जाना कहते हैं। ऐसा माया के नशे के प्रभाव से ही होता है। कुछ सुन्दरसाथ ऐसे भी होते हैं जो तारतम ज्ञान के प्रकाश में जाग्रत हो जाते हैं और अपने विवेक रूपी हाथों से जागनी की सीढ़ी पकड़ कर ऊपर चढ़ने का प्रयास करते हैं।

ना सीढ़ी ना पावड़ी, ए चढ़त पड़त क्यों कर।
ए देखन जैसी हांसी है, देखो मोमिनों दिल धर।।१०।।

हे साथ जी! आप अपने हृदय में यह बात बसा लीजिए कि इस संसार में परब्रह्म को पाने का जो मार्ग (सीढ़ी) बताया गया है, उसमें पैर रखने का आधार पगथी (पावड़ी) ही नहीं है, फिर भी न जाने क्यों लोग चढ़ने का प्रयास करते है और गिरते रहते हैं? इस प्रकार हंसी का यह खेल देखने योग्य है।

भावार्थ - संसार के लोग जिस परब्रह्म का साक्षात्कार करने के लिये ध्यान रूपी सीढ़ी का प्रयोग करना चाहते हैं, उसमें उन्हें परब्रह्म के धाम एंव स्वरूप के ज्ञान तथा प्रेम में लीन होने जैसी कोई पगथी ही नहीं है। ऐसी अवस्था में वे अनुमान के आधार पर शून्य - निराकार में समाधि लगाते हैं और लक्ष्य से भटक जाते (गिर जाते) हैं।

एक पड़त बिना पावड़ी, वाको दूजी पकड़े कर।
सो खाए दोनों गड़थले, ए हांसी है इन पर।।११।।

एक ब्रह्मसृष्टि बिना सीढ़ी के ही पांव रख देने के कारण गिर जाती है। उसे गिरा हुआ देखकर दूसरी आत्मा उठाने के लिये जाती है, किन्तु दोनों ही लड़खड़ा कर गिर जाती हैं। इस स्थिति में दोनों ही हंसी की पात्र बन जाती हैं।

भावार्थ - यह चौपाई उन सुन्दरसाथ पर घटित होती है जो न तो तारतम वाणी का गम्भीर ज्ञान रखते हैं और न धनी की पूर्ण पहचान ही रखते हैं, किन्तु अति भावुकता में स्वयं की कल्पना परमहंसों के रूप में करने लगते हैं। माया का कष्ट मिलते ही बालू की दीवाल से बना हुआ उनकी आस्था का महल भरभरा कर गिर जाता है। उन्हें सान्त्वना देकर समझाने की भावना से जो अन्य सखी (आत्मा) आती है, वह भी कुछ समय के बाद माया के कष्टों से विचलित होकर गिर पड़ती है। इस प्रकार अपनी आस्था एवं विश्वास (ईमान) की कमी से दोनों ही अपनी हंसी कराती हैं।

एक पड़ी जिमी जान के, वाको दूजी उठावन जाए।
उलट पड़ी सो उलटी, ए हांसी यों हंसाए।।१२।।

यह मायावी खेल इतना विचित्र है कि एक को धरती पर गिरी हुई जान कर (विश्वास छोड़ दिये जाने पर) दूसरी उसे उठाने अर्थात् अपने ज्ञान द्वारा समझाकर उसे धनी पर विश्वास दिलाने के लिये जाती है, किन्तु वह भी पहली की तरह ही गिर जाती

है।

ओठो लेवे जिमी बिना, पांव बिना दौड़ी जाए।
जल बिना भवसागर, तिनमें गोते यों खाए।।१३।।

यह मायावी खेल इस प्रकार का है कि वह बिना धरती के ही उसे आधार बनाये हुए है अर्थात् यह संसार है ही नहीं, फिर भी इसमें रह रही हैं। पैर नहीं है फिर भी दौड़ी जा रही है। ये पैर भी पंच भूतात्मक और स्वप्नवत् हैं जो मृत्यु के पश्चात् समाप्त हो जाने वाले हैं। वह ऐसे भवसागर में गोते खा रही है जिसमें पानी है ही नहीं।

भावार्थ - संसार स्वप्नवत् है। इसलिये इसे बिना जल का कहा गया है। गोते खाने का आशय है दुःखी होना। संसार में जो भी सुख दुःख है, तत्व ज्ञान की दृष्टि से वे यथार्थतः नहीं हैं। चौ.१३ एवं १४ में ब्रह्मसृष्टियों को बिना हाथ, पैर वाला तथा संसार को अस्तित्व हीन कहने का आशय इनकी नश्वरता से है।

अमलक देखो खड़ियां, हाथ बिना हथियार।
नींद बड़ी है जागते, पिंड बिना आकार।।१४।।

हे साथ जी! देखिये कि आप आकाश में खड़े हैं अर्थात् आप जिस ब्रह्माण्ड में आये हैं, वह आकाश (निराकार)से बना हुआ है। बिना हाथ के ही आप सारा कार्य कर रहे हैं। स्वप्नवत् होने से आपके हाथ हैं नहीं, किन्तु बाह्य रूप से दिखायी पड़ रहे हैं। ज्ञान दृष्टि से जागृत हो जाने पर भी हृदय में अभी माया की गहरी नींद बनी हुई हैं। आपका यह शरीर भी निराकार से ही बना हुआ है जो अन्त में (मृत्यु के पश्चात्) पहले जैसा ही हो जायेगा। आपके वास्तविक तन तो परमधाम के मूल मिलावे में ही विद्यमान हैं।

एक नई कोई आवत, सो कहावत आप अबूझ।
दूजी ताए समझावने, ले बैठत सब सूझ।।१५।।

सुन्दरसाथ के समूह में जब कोई ब्रह्मसृष्टि (मोमिन) आती है तो वह स्वयं को अज्ञानी जैसा समझती है। दूसरी ब्रह्मात्मा स्वयं को ज्ञान का भण्डार मानकर उसे समझाने बैठ जाती है अर्थात् उसे परमधाम और अक्षरातीत की पहचान देने लगती है।

वचन करड़े कोई कहे, किनसों सहेन जाए।
पीछे कलपे दोऊ कलकले, वाको अमल यों ले जाए।।१६।।

सुन्दरसाथ में कोई दूसरे को सिखापन (शिक्षा) देने के लिये जब कठोर शब्दों का प्रयोग करता है, तो अपनी खण्डनी सुनकर वह सहन नहीं कर पाता है। फलतः दोनों ही रो रोकर दुःखी होते हैं। इस प्रकार माया का नशा उन दोनों को अपने प्रभाव में ले लेता है।

भावार्थ - खण्डनी के कठोर वचनों से कोई मर्माहत (व्यथित) तो हो सकता है, किन्तु जागृत नहीं हो सकता। जागृत होने के लिये ज्ञान के ऐसे शब्द होने चाहिए जो उसके हृदय में चोट कर सके। इसी प्रकार किसी के कठोर वचनों को सुनकर सहन करना महानता होती है। महाभारत के शान्तिपर्व में लिखा है कि जब कोई व्यक्ति किसी को कठोर शब्दों से सम्बोधित करता है और सुनने वाला निर्विकार भाव से अर्थात् बिना उत्तेजित हुए उसे सहन कर लेता है, तो उसकी चरण धूलि पाने के लिये देवता भी तरसा करते हैं।

लर खीज रोए रोलावहीं, दुख देखे दोऊ जन।
जागे पीछे जो देखिए, तो कमी न मांहें किन।।१७।।

इस मायावी जगत में सुन्दरसाथ आपस में एक दूसरे से क्रोधपूर्वक लड़ते है, स्वयं रोते है तथा दूसरे को भी रूलाते है। इस प्रकार दोनों ही दुःखी होते हैं। किन्तु यदि जागृत होकर देखें तो इसमें किसी का दोष नहीं होता है, माया के प्रभाव से सभी ऐसा करते हैं।

भावार्थ - आत्मा या जीव का शुद्ध स्वरूप सुख - दुःख, मान - अपमान, प्रसन्नता या खिन्नता से अलग अलौकिक है। रजोगुण या तमोगुण के प्रभाव से ही कोई किसी को कठोर शब्दों से सम्बोधित करता है और दूसरे को दुःखी करके स्वंय भी दुःखी होता है। त्रिगुणातीत अवस्था में इस प्रकार की भूलें नहीं हो सकती।

हांसी होसी मोमिनों, इन खेल के रस रंग।
पूर बिना बहे जात हैं कोई खैंच निकाले अभंग।।१८।।

इस खेल में इस प्रकार की जो आनन्दप्रद लीलायें हो रही हैं, परमधाम में जागृत होने पर सब सुन्दरसाथ के समक्ष प्रियतम परब्रह्म के द्वारा इनकी स्मृति दिलाकर बहुत

हंसी होगी। यद्यपि, इस मोह सागर में न तो जल है और न लहरें ही, फिर भी सभी लोग इसकी तृष्णा रूपी लहरों में बहे जा रहे हैं। स्वयं अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में सबको माया से निरन्तर निकाल रहे हैं और उन्हें जागृत कर रहे है।

ना जल ना कछू पूर है, कौन बहे कौन आड़ी होए।
ए अमल इन जिमी का, तुमें देखावत विध दोए।।१६।।

हे साथ जी! इस स्वाप्निक जगत में माया का ऐसा नशा है जिसमें कोई जल नहीं है और लहरें भी नहीं है। फिर भी मोहसागर के जल की लहरों की विकट लीला है। प्रियतम परब्रह्म दोनों प्रकार की यह लीला दर्शा रहे है कि इसमें कौन बहता जा रहा है और कौन अपने प्राणेश्वर से अपने प्रेम की अखण्डता को दर्शाने के लिये लहरों से जूझ रहा है?

होसी खुसाली मोमिनों, करसी मिल कलोल।
ए हांसी या बिध की, कोई नाहीं खेल या तोल।।२०।।

परमधाम में जागृत होने पर सुन्दरसाथ हांसी की इस लीला को देखकर बहुत अधिक आनन्दित होंगे तथा प्रेम में भरकर आनन्दमयी क्रीड़ा करेंगे। परमधाम में होने वाली हंसी की लीला ऐसी होगी जिसके समान अन्य कोई भी खेल आनन्दमयी नहीं होगा।

प्रश्न - श्री कुल्जुम स्वरूप में कथित और हांसी सब सोहेली, पर ए हांसी सही न जाय, ए हांसी सत वतन की, कोई मोमिन करावे जिन' के इन कथनों से उपरोक्त चौपाई के कथन के प्रति क्या विरोधाभास दृश्टिगोचर नहीं होता है?

उत्तर - ब्रह्मसृष्टि कही वेद ने, ब्रह्म जैसी तदोगत। श्रृं. ७/३४ की शोभा को धारण करने वाली ब्रह्मात्माओं के तन से होने वाले अपराध हंसी का कारण बनेंगे, जिससे अक्षरतीत की गरिमा कलंकित होगी, क्योंकि ये अपराध (गुनाह) अमिट होने के कारण अनन्त काल तक परमधाम में हांसी का कारण बने रहेंगे।

यद्यपि ब्रह्मसृष्टियों से होने वाली भूलों और उसके परिणाम स्वरूप परमधाम में होने वाली हांसी को मात्र परमधाम तक ही सीमित रखा जायेगा। इसका ज्ञान अक्षर ब्रह्म, बेहद मण्डल या हद मण्डल के किसी भी व्यक्ति को नहीं होगा, क्योंकि खिल्वत के भेद जानने का अधिकार इन्हें नहीं है। जब एक लौकिक पति भी अपनी पत्नी को सार्वजनिक

रूप से नग्न (बदनाम) नहीं कर सकता तो ब्रह्मात्माओं को अपनी प्राणेश्वरी मानने वाले अक्षरातीत दूसरों के सामने उन्हें अपराधी की मुद्रा में कैसे खड़ी करेंगे? वह भी उस अवस्था में जब उनके जीवों को भी सत्स्वरूप की पहली बहिश्त में ब्रह्मसृष्टियों का रूप देकर उन्हें अपार शोभा देने वाले हैं। ऐसी अवस्था में इन चौपाइयों का क्या अर्थ रह जायेगा?

आगे हुई न होसी कबहूं, हमें धनिएं ऐसा शोभा दई ।
सब पूजे प्रतिबिम्ब हमारे, सो भी अखण्ड में ऐसी भई ।। कि. ८१/३
सबके खुदा तुमको किए, बीच सरभर लाहूत सुभान । कि. २६/१२६

ए खेल देखो हांसी का, आसमान लों पाताल।
फल फूल पात न दरखत, काष्ट तुचा मूल न डाल।।२१।।

हे ब्रह्ममुनियों! आप हंसी के इस स्वप्नमयी ब्रह्माण्ड रूपी खेल को देखिए, जिसमें पाताल से लेकर बैकुण्ठ तक सर्वत्र माया का ही साम्राज्य है। यदि विवेक दृष्टि से देखें तो संसार रूपी न तो कोई अनादि वृक्ष है। और न उसकी जड़ें, तना, छाल एवं डालियां ही हैं। यहां तक कि उस पर फूल एवं फल भी नहीं है।

प्रश्न – क्या इस प्रकार का कथन आदि शंकराचार्य जी का नहीं है, जिन्होनें जीव ब्रह्म की एकता का सिद्धान्त प्रतिपादित कर अपना नवीन वेदान्त मत (अद्वैतवाद) प्रचारित किया?

उत्तर – उत्पत्ति, विनाश एवं परिवर्तनशीलता से युक्त पदार्थ सत्य नहीं कहा जा सकता। यही कारण है कि ब्रह्म को जहां सत्य और अखण्ड कहा गया है, वही इस संसार को स्वप्नवत् एवं मिथ्या कहा गया है। शंकराचार्य जी ने स्वाप्निक जीव की अविनाशी ब्रह्म से एकता की, जो उचित नहीं है। अतः तारतम वाणी के उपरोक्त कथन को आदि शंकराचार्य जी के सिद्धान्त से लिया हुआ कहना बहुत बड़ी भूल है।

ए बिरिख तो या बिध का, ताको फल चाहे सब कोए।
फेर फेर लेने दौड़हीं, ए हांसी या बिध होए।।२२।।

यह संसार रूपी स्वाप्निक वृक्ष ऐसा है, जिसका फल पाने की इच्छा सभी प्राणियों में रहती है। वे इस प्रयास में बार-बार दौड़ते हैं। प्रयास करते हैं और हांसी के पात्र बनते

हैं।

बंध ना खुले बिना बंधे, जो खोले फेर फेर।
ए बुत कुदरत देख के, गैयां आप खसम बिसर।।२३।।

मोह माया के बन्धन बार - बार खोलने का बहुत प्रयास करने पर भी किसी से खुल नहीं पाते हैं, जबकि उन्हें किसी ने बांधां नहीं होता है। माया तथा उसमें फंसे हुए जीवों की विचित्र लीला को देखकर ब्रह्ममुनि भी स्वयं को तथा अपने प्राणेश्वर अक्षरातीत को भूल गये हैं।

अब याद करो खसम को, छोड़ो नींद विकार।
पेहेचान कराए इमामसों, सुफल करूं अवतार।।२४।।

हे साथ जी! आप माया की नींद को छोड़कर जागृत हो जाइए तथा अपने अन्तर्मन से अपने प्राणवल्लभ अक्षरातीत को याद कीजिए। मैं इस संसार में प्रकट हुए परब्रह्म के स्वरूप श्री प्राणनाथ जी इमाम मेहदी की आपको पहचान कराता हूं, जिससे मेरा भी इस संसार में आना सार्थक हो जाय।

वतन खसम देखाए के, और अपनी असल पेहेचान।
इमाम नूर रोसन करके, उड़ाए देऊँ उनमान।।२५।।

श्री महामति जी कहते हैं कि मैं अक्षरातीत श्री प्राणनाथ तारतम के ज्ञान के उजाले में आपको आपके मूल स्वरूप (परात्म), श्री राज जी तथा परमधाम की स्पष्ट पहचान कराकर सभी संशयों से मुक्त कर दूंगा।

कुरान पारः ७ सूरः ६ आयत ९३ व मन् अज्लमु मिम्मनिफ्तरा अलल्लाहि कजिबन् औ काल उह्रिया इलय्य व लम् यूह इलैहि शैअुंव्व मन् काल सअुन्जिलु मिस्ल मा अन्जल्लाहु म लौ तरा इजिज्जालिमुन फी गमरातिल्-मौति वत्मलाइकतु बासितू अैदीहिम् अख्रिजू अन्फुसकुम अल्यौम तुज्जौन अजाबल्हूनि बिमा कुन्तुम् तकूलून अलल्लाहि गैरल्हक्कि व कुन्तुम् अन् आयातिह तस्तक्बिरून" अर्थात् और उससे बड़ा जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे, या दावा करे कि मुझ पर अल्लाह का पैगाम आया है, हालांकि उसकी तरफ कुछ भी अल्लाह का पैगाम न आया हो, और (उससे बढ़कर जालिम कौन) जो कहे कि जैसे अल्लाह ने कुर्आन उतारा है, वैसा ही मैं

भी दिखा सकता हूँ। चुनाँचे (ए रसूल!) कभी तुम देखते कि अपनी जानें जब मौत की बेहोशियों में पड़े होगें और फरिश्ते हाथ फैला रहे होंगे कि अपनी जानें निकालो, आज तुमको जिल्लत की मार की सजा दी जायेगी, इसलीए कि तुम अल्लाह (के नाम) पर व्यर्थ झूठ गढ़ते थे, और उसकी आयतों से अकड़ा करते थे।

द्रष्टव्य - 'प्राणनाथ' शब्द का अर्थ होता है- आत्माओं के जीवन के आधार अर्थात् अक्षरातीत, जबकि 'महामति' इन्द्रावती आत्मा की शोभा का नाम है, जिनके धाम हृदय में विराजमान होकर श्री राज जी ने लीला की है। **महामति खेले अपने लाल सों, जो अक्षरातीत कह्यो'** कि. १६/१२ का कथन यही सिद्ध करता है।

हकें कह्या अरवाहों उतरते, हम बैठे बीच लाहूत।
तुम अर्स भूलो आप हमको, देखो नहीं बीच नासूत।।२६।।

जब परमधाम से ब्रह्मात्मायें इस नश्वर जगत में अवतरित हो रही थी, उस समय अक्षरातीत श्री राज जी ने उनसे कहा था कि मैं यही मूल मिलावे में बैठा हूं। तुम मायावी संसार में जाकर मुझे देख नहीं पाओगी। तुम अपने परमधाम तथा स्वयं को भी भूल जाओगी।

विशेष - तारतम ज्ञान का प्रकाश निजघर की, निजस्वरूप की तथा प्रियतम अक्षरातीत की पहचान कराता है तथा चितवनी के द्वारा इन का (परात्म, प्रियतम तथा परमधाम) का प्रत्यक्ष दर्शन होता है। यही जागनी का स्वरूप है।

हम अर्स रूहें आसिक, हक मासूक भूलें क्यों कर।
क्या चले खेल फरेब का, तुम आगूं देत हो खबर।।२७।।

यह सुनकर ब्रह्मात्माओं ने कहा कि हम आत्मायें आप से अनन्त प्रेम करती हैं। जब आप पहले ही हमें उस मायावी जगत के विषय में बता दे रहे हैं, तो भला उसका हमारे ऊपर क्या वश चल पायेगा?

भावार्थ - कुर्आन पाक के तीसवें पारें की सूरः कद्र इन्ना इन्जुलना आयत में कहा गया है कि उस महिमावान् रात्रि में रूहों और फरिश्तों का अपने परवरदिगार के हुक्म से इस माया का खेल देखने के लिये नश्वर जगत में अवतरण हुआ।

ए जिमी हांसी देख के, मोमिन हूजो सावचेत।
इमाम को सुख महामती, तुमको जगाए के देत।।२८।।

श्री महामति जी कहते है कि हे साथ जी! यह मायावी खेल हमारी हंसी कराने के लिये बना है। इसमें माया से आपको सतर्क रहना है। मैं तारतम ज्ञान के प्रकाश में आपको जागृत करूंगा तथा प्रियतम प्राणनाथ के अखण्ड सुख की अनुभूति भी कराउंगा।

।।प्रकरण।।१८।।चौपाई।।४६४।।

सनंध–कलमें की

'कल्मा' शब्द अरबी के 'कल्मात्' का अपभ्रंश है जिसका अर्थ 'वचन' होता है। यद्यपि सम्पूर्ण कुर्आन 'कलामुल्लाह' है अर्थात् अल्लाह के वचनों का संग्रह है किन्तु कल्मा को बैत के रूप में माना जाता है। जिस प्रकार तारतम में ६ चौपाइयां है, उसी प्रकार कल्मा में भी ६ आयते हैं।

वैदिक मान्यता में गायत्री छन्द में लिखे हुए गायत्री मन्त्र को दीक्षा मन्त्र माना जाता है। जिस प्रकार, कल्मा में क्षर (ला) अक्षर (इलाह) से परे अक्षरातीत (अल्लाह तआला) की पहचान करायी गयी है, उसी प्रकार गायत्री मन्त्र में वर्णित भूः भुवः स्वः का अर्थ सच्चिदानन्द होता है।

'धनी आए वेद कतेब छुडावने' खु. १३/६३ के कथनानुसार इस जागनी ब्रह्माण्ड में तारतम ज्ञान के द्वारा ही सच्चिदानन्द परब्रह्म की यथार्थ पहचान होती है। यद्यपि संसार में वेद एवं कुर्आन के लाखों उच्च स्तरीय विद्वान हैं किन्तु तारतम ज्ञान के अभाव में वे परब्रह्म के धाम, स्वरूप, लीला आदि विषयों पर मौन हो जाते है। इस प्रकरण में इन्हीं तथ्यों पर प्रकाश डाला गया है।

जो फरेब तुम देखिया, और देखे फरेब के मजहब।
ए तो सब तुम समझे, गुझ जाहेर करहूं अब।।१।।

श्री महामति जी कहते है कि हे साथ जी! आपने पूर्व के प्रकरणों में इस मायावी संसार तथा इसमें प्रचलित भिन्न - भिन्न मत - मतान्तरों की कल्पना जन्य मान्यताओं को जाना। अब मैं आध्यात्मिक तत्व ज्ञान की गुह्य बातों का स्पष्टीकरण करूंगा।

विशेष – देखने का आशय ज्ञान दृष्टि से भी देखना होता है अर्थात् बौद्धिक दृष्टि से समझना।

ऐसा था फरेब अंधेर का, कहूं हाथ न सूझे हाथ।
बंध पड़े नजर देखते, तामें आई रूहें जमात।।२।।

माया के अन्धकार से परिपूर्ण यह ब्रह्माण्ड ऐसा है जिसमें किसी को कुछ भी दिखायी नही पड़ रहा था अर्थात् किसी को भी कुछ भी आध्यात्मिक तत्व ज्ञान नहीं था। परमधाम की आत्मायें ऐसे संसार में आयी हैं। जिसमें देखने मात्र से (थोड़ी सी आसक्ति मात्र से) माया का बन्धन जकड़ लेता है।

भावार्थ – 'हाथ को हाथ न सूझना' एक मुहाविरा है जिसका अर्थ होता है – बहुत पास की भी वस्तु का दिखायी न पड़ना अर्थात् ज्ञान से पूर्णतया रहित होना।

खेल देखन कारने, करी उमेद एह।
ए माप्या तुम वास्ते, कोई राखों नहीं संदेह।।३।।

हे साथ जी! आपने प्रियतम अक्षरातीत से माया का खेल देखने की इच्छा की थी इसलिये आपकी उस इच्छा को पूर्ण करने के लिये ही माया का यह संसार बनाया गया है। ऐसी स्थिति में मैं आपके मन में किसी भी प्रकार का कोई सन्देह नहीं रहने दूंगा।

ए खेल किया रूहों वास्ते, ए मोमिन आए जेह।
खेल देख जाए वतन, बातें करसीं एह।।४।।

ब्रह्ममुनियों ने परमधाम में माया का खेल देखने की इच्छा की थी, अतः उनके लिये ही यह स्वप्नवत् संसार बनाया गया है। इस खेल की समाप्ति पर सभी ब्रह्ममुनि जब परमधाम वापस जायेंगे तो इसकी बातें करेंगे।

मोमिन बातें वतन की, देऊंगी आगे बताए।
पर अब कहूं नेक दीन की, जो रसूलें राह चलाए।।५।।

ब्रह्ममुनि जिस परमधाम में अनादि काल से रहते हैं, उसकी बातें मैं आगे बताउंगा किन्तु अब मैं थोड़ा सा उस सत्य धर्म के विषय में बताऊंगा, जिसे मुहम्मद स. अ. व. ने इस संसार में प्रचारित किया।

जो अलहा किनहूं न लह्या, मैं तिनका कासद।
अर्स रूहों वास्ते आइया, मेरे हाथ कागद।।६।।

मुहम्मद स. अ. व. कहते हैं कि जिस सच्चिदानन्द परब्रह्म को आज दिन तक किसी ने भी नहीं पाया, मैं उनका संदेश वाहक बनकर आया हूं। मैं परमधाम की ब्रह्मसृष्टियों के लिये परब्रह्म का संदेश लाया हूं। मेरे पास उनका दिया हुआ संदेश कुर्आन के रूप में है।

कह्या रसूलें जाहेर, खबर खुद की मुझ।
कोई और होवे तो पोहोंचही, अब जाहेर करहों गुझ।।७।।

मुहम्मद स. अ. व. ने स्पष्ट रूप से कहा कि मैं परब्रह्म (अल्लाहतआला) को यथार्थ रूप से जानता हूं। यदि मेरे अतिरिक्त परमधाम का कोई होगा तो वहीं परमधाम जा सकता है, अन्य नहीं। अब मैं परब्रह्म तथा परमधाम से सम्बन्धित गुह्य बातों को प्रकट करूंगा।

जो चौदे तबकों में नहीं, वार न काहूं पार।
सो अलहा हम आवसी, खातिर सोहागिन नार।।८।।

जो परब्रह्म इस चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में नहीं है, जिनके ज्ञान, शक्ति, सौन्दर्य एवं ऐश्वर्य आदि की कोई सीमा नहीं है, वह स्वयं कियामत के समय हम आत्माओं के लिये इस संसार में आयेंगे।

भावार्थ - इस चौपाई के तीसरे चरण में 'हम' शब्द को प्रयोग हुआ है जिसका आशय यह है कि यहां मुहम्मद स. अ. व. के रूप में विद्यमान अक्षर ब्रह्म की आत्मा कह रही है। जिस प्रकार श्यामा जी परब्रह्म के आनन्द अंग हैं उसी प्रकार अक्षर ब्रह्म भी परब्रह्म के सत् अंग है। बी. सा. / के कथन

तहां रास लीला खेल के, आए बरारब स्याम।
त्रिसठ बरस तहां रहे, वायदा किया इस ठाम।।

से भी यही सिद्ध होता है।

ले फुरमान जो हाथ में, केहेलाया मैं रसूल।
ए देखो अरवाहें अर्स की, जिन कोई जावें भूल।।९।।

परब्रह्म के द्वारा दिया हुआ आदेश पत्र (कुरआन) लाने के कारण ही मैं रसूल

कहलाता हूँ। परमधाम की ब्रह्मात्माओं! तुम इस बात को भूलना नहीं कि यह आदेश पत्र तुम्हें साक्षी देने के लिये तुम्हारे प्रियतम परब्रह्म ने ही भेजा है।

भावार्थ - यह कहना उचित नहीं है कि परमधाम में अक्षर ब्रह्म तथा ब्रह्मात्माओं पर फरामोशी है, इसलिये स्वयं श्री राज जी ही कुर्आन लेकर अवतरित हुए। यह तो ठीक है कि बशरी, मल्की तथा हकी तीनों सूरतें श्री राज जी की ही हैं। किन्तु अरब में यदि अक्षर ब्रह्म की आत्मा नहीं थी तो मेयराज के समय किसने श्री राज जी से ६०,००० हरूफ बातें की? क्या श्री राज जी ने श्री राज जी से वार्ता की और श्री राज जी ने श्री राज जी को ही संदेशवाहक बनाकर भेजा? यह कथन किस सन्दर्भ में है, 'इनकी किल्ली तेरा दिल, खुले क्लफ जब आओ मिल' मा. सा. ६/१३ यह पूर्णतया सत्य है कि स्वलीला अद्वैत परमधाम में अक्षर ब्रह्म और श्री राज जी दो नहीं है किन्तु लीला रूप में यह तो मानना ही पड़ेगा कि अरब में अक्षर ब्रह्म की आत्मा आयी थी।

काफर मुस्लिम मोमिन की, सोई करसी पेहेचान।
हकीकत मारफत के, खोलसी द्वार कुरान।।१०।।

आखरूल इमाम मुहम्मद महदी श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में आने वाले परब्रह्म ही पहचान करेंगे कि जीव सृष्टि, ईश्वरीय सृष्टि तथा ब्रह्मसृष्टि कौन है? वे ही कुर्आन की हकीकत (सत्य) एवं मारिफत (परमसत्य) का ज्ञान संसार में प्रकट करेंगे।

अबलों बेवरा ना हुआ, कई चली गई जहान।
एक दीन जब होवहीं, तब होसी सबों पेहेचान।।११।।

सृष्टि - प्रलय का यह प्रवाह अनादि काल से चलता आ रहा है और अब तक न जाने कितनी बार सृष्टि की उत्पत्ति तथा प्रलय की प्रक्रिया हो चुकी है। जब तारतम ज्ञान के प्रकाश में एक सत्य पर सबकी आस्था होगी तब सबको इन तीनों सृष्टियों की पहचान होगी।

भावार्थ - 'नहि सत्यात् परो धर्मः' सत्य से बढकर कोई धर्म नहीं है। सत्य ज्ञान को फैलाकर सबके द्वारा आत्मसात् कर लिया जाना ही एक धर्म की स्थापना करना है। इसे हिन्दू या इस्लाम धर्म की दृष्टि से नहीं देखना चाहिए। कट्टरपन्थी आतंकवादी इस्लाम की शरीयत, वेश भूषा एवं भाषा को सारे संसार के द्वारा मनवा लेना ही एक दीन (धर्म) की स्थापना समझते हैं। जो कभी भी सम्भव नहीं है। उनकी इस विकृत सोच ने ही

संसार में आतंकवाद को फलने-फूलने का अवसर दिया है।

जो माएने न पाए बातून, तो हुए जुदे जुदे मांहें दीन।
फिरके हुए तिहत्तर, एक नाजी में कह्या आकीन।।१२।।

धर्मग्रन्थों के वास्तविक गुह्य आशय को न समझने के कारण ही धर्म में अलग - अलग ७३ पन्थ हो गये जिनमें एकमात्र एक में ही परब्रह्म के प्रति सच्चा विश्वास रहना संभव है और एकमात्र वही अखण्ड मुक्ति का अधिकारी है।

और बहत्तर नारी कहे, करी एक को हकें हिदायत।
कुरान माजजा नबी नबुवत, सो नाजी करसी साबित।।१३।।

शेष बहत्तर फिरको को नारी अर्थात् दोजख में जाने वाला कहा गया है। एकमात्र तिहत्तरवें फिरके (पन्थ) को ही परब्रह्म अपने अलौकिक तारतम ज्ञान से मार्गदर्शन करेंगे। कुर्आन के सत्य ज्ञान के प्रकाश तथा मुहम्मद साहब की नबुवत को प्रमाणित करने का चमत्कार संसार में यह तिहत्तरवां फिरका करेगा।

भावार्थ - संसार के सभी मतानुयायिओं को ७२ पन्थों (फिरकों) में बाँटा गया है, जिसमें हामी हिन्दू परम्परा के १७ फिरके हैं जो भारत और ईरान आदि में रहते हैं। सामी परम्परा के १९ फिरके अरब आदि देशों के हैं तथा शेष ३६ फिरके याफिस परम्परा के हैं जो तुर्की, मंगोलिया यूरोप आदि में हैं। इस प्रकार कुल ७२ फिरके हैं। ७३ वां फिरका वह होगा जो तारतम ज्ञान के प्रकाश में संसार के सभी धर्मग्रन्थों का रहस्य जानेगा और अखण्ड सुख का अधिकारी होगा।

सो साबित तब होवहीं, जब सब होवे दीन एक।
पेहेलें कह्या रसूल ने, एही उमत नाजी नेक।।१४।।

जब संसार के सभी लोग एक सत्य को मानने वाले होंगें तभी कुर्आन की सत्यता तथा नबी की नबूवत प्रमाणित होगी। मुहम्मद स. अ. व. ने कुर्आन में पहले से ही यह कह दिया है कि तारतम ज्ञान के प्रकाश में परब्रह्म की राह पर चलने वाले ब्रह्ममुनियों तथा ईश्वरीय सृष्टि का समूह ही अखण्ड सुख को प्राप्त करने वाला होगा।

भावार्थ - यद्यपि संसार के प्रायः सभी मतावलम्बी एक परब्रह्म की बात तो करते हैं किन्तु उसे जानते नहीं मुहम्मद साहब ने कुर्आन के द्वारा एकमात्र अद्वैत परब्रह्म की ही उपासना का निर्देश दिया। इसी प्रकार वेद का भी यही कथन है। तारतम ज्ञान के उजाले

में ब्रह्ममुनि वेद - कतेब की साक्षियों को जानकर एक सत्य पर अवलम्बित होंगे। इसे ही एक धर्म (सत्य) की स्थापना करना कहा गया है।

सब कोई बुजरक कहावते, आप अपने मजहब।
तिन सबों समझावहीं, एक दीन होसी तब।।१५।।

अपने - अपने पन्थ में सभी अग्रगण्य (पण्डित, मौलवी, पादरी आदि) कहलाकर पूज्य माने जाते थें किन्तु उन्हें यथार्थ सत्य का बोध नहीं था। तारतम ज्ञान के द्वारा ब्रह्ममुनियों का समूह जब उन अग्रगण्य लोगों को प्रबोधित करेगा तो संसार में एक सत्य धर्म की स्थापना हो जायेगी।

भावार्थ - उपरोक्त चौपाई को पढ़कर उन सुन्दरसाथ को यह आत्ममंथन करना चाहिए कि तारतम ज्ञान को एक सम्प्रदाय विशेष की परिधि मे बांधकर उन्होंने कितनी बडी भूल की।

झूठ सबे उड़ जाएसी, ना चले तिन बखत।
हक हादी के प्रताप थें, क्यों रेहेवे गफलत।।१६।।

उस समय अज्ञानता का सम्पूर्ण अन्धकार नष्ट हो जायेगा और वह किसी भी रूप में सक्रिय नहीं रह पायेगा। ज्ञान के अखण्ड सूर्य श्री प्राणनाथ जी (इमाम महदी) के प्रकट हो जाने पर भी भला अज्ञान रूपी अन्धकार का साम्राज्य कैसे रह सकता हैं?

भावार्थ - श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में ही परब्रह्म का युगल स्वरूप (श्री राज श्यामा जी) विराजमान हैं। उपरोक्त कथन उनके लिये है, जिनके हृदय में तारतम ज्ञान का प्रकाश आ गया है। तारतम ज्ञान से रहित संसार आज भी अन्धकार में भटकने के लिये विवष है। यह उत्तरदायित्व ब्रह्ममुनियों का है कि वे श्री कुल्जुम स्वरूप के अनुपम ज्ञान को सारे संसार में फैलाकर सबका कल्याण करें।

तब लों रसमें लरत हैं, जब लों है उरझन।
रूहअल्ला कुंजी ल्याइया, तब जोरा न चलसी किन।।१७।।

संसार के सभी मत - पन्थों के लोग आपस में कर्मकाण्ड (शरीयत) आधारित रस्म - रिवाज (पारम्परिक पूजा - पाठ की गतिविधियों) के नाम पर तभी तक लड़ रहे हैं, जब तक उन्हें परमसत्य का ज्ञान नही है । जब सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी के तन से तारतम ज्ञान का अवतरण होगा तो उस समय किसी भी अज्ञान जनित विवाद का अस्तित्व नहीं रहेगा।

जब सांच उठ खड़ा हुआ, तब कुफर रेहेवे क्यों कर।
जोलों कायम दिन ऊग्या नहीं, है तोलों रात कुफर।।१८।।

जब सत्य प्रकाशित हो जायेगा तो संसार में परब्रह्म के प्रति कृत्घनता एवं नास्तिकता की प्रवृत्ति भला कैसे रह पायेगी?अज्ञानता के अन्धकार की यह काली रात्रि तभी तक है जब तक परमधाम के ज्ञान का अखण्ड सूर्य उदय होकर अपना प्रकाश फैला नहीं देता हैं।

ए खेल हुआ जिन खातिर, सो गए खेल में मिल।
जब जाहेर साहेब हुआ, तब सबों नजर आवे दिल।।१९।।

जिन ब्रह्ममुनियों को दिखाने के लिये स्वाप्निक संसार रूपी यह खेल बनाया गया है, वे स्वयं इसमें हिल - मिल (भूल) गये हैं। जब तारतम ज्ञान का प्रकाश फैलेगा और वे अपने प्राणेश्वर अक्षरातीत की पहचान कर लेंगे तो इसी संसार में उन्हें सच्चिदानन्द परब्रह्म का अपने हृदय - धाम में साक्षात्कार कर लेने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त होगा।

भावार्थ - इस चौपाई को पढ़कर उन सुन्दरसाथ को अपनी इस भूल का सुधार करना चाहिए जो यह मानते है कि इस संसार में श्री राज जी का दर्शन ही नहीं हो सकता, इसलिये चितवनी करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

महंमद पेहेलें आए के, बरसाया हक का नूर।
कई बिध करी मेहेरबानगी, पर किने ना किया सहूर।।२०।।

मुहम्मद स. अ. व. ने कियामत से ११०० वर्ष पहले आकर संसार को प्रियतम परब्रह्म की पहचान दी थी और उनकी बन्दगी का मार्ग बताकर अनेक प्रकार की कृपा की किन्तु किसी ने भी उनके कथनों का न तो निष्पक्ष रूप से चिन्तन किया और न ही आत्मसात् किया।

भावार्थ - इस चौपाई के दूसरे चरण में कथित 'हक के नूर' का आशय परब्रह्म के धाम, स्वरूप एवं लीला का ज्ञान देने से है।

ए सहूर तो करे, जो होए अर्स अरवाहें।
जिन उमत के खातिर, आवसी इत खुदाए।।२१।।

यदि उस समय अरब की धरती पर परमधाम के ब्रह्ममुनि अवतरित हुए होते तब तो वे मुहम्मद साहब के कथनों का चिन्तन भी करते और उन्हें हृदयंगम भी करते। मुहम्मद स. अ. व. ने स्पष्ट रूप से कह दिया था कि मात्र कियामत के समय ही

परमधाम की ब्रह्मात्मायें अवतरित होंगी। उनके लिये ही परब्रह्म को श्री प्राणनाथ जी (इमाम महदी) के स्वरूप में आना पड़ेगा।

भावार्थ- हदीस में बयान है कि कियामत के समय तुम अल्लाह का दीदार करोगे। अल्लाह नुरूल अला नूर हैं। वह संसार में प्रत्यक्ष नहीं आ सकता, इसलिए इमाम मुहम्मद अल महदी अजल अल्लाह तआला फर्जहु अल शरीफ के रूप में प्रगट होने को कहा।

पा. ४ सू. ३ आ. १५८ में स्पष्ट कहा गया है कि ''व लइम्-मुत्तुम औ कुतिल्तुम् ल इल्ललाहि तुह्शरून'' अर्थात् और अगर तुम मर जाओ या मारे जाऐ तो भी खुदा के नूर में इकठ्ठे किऐ जाओगे।

कुरान पारः ५ सूरः ४ आयत ८७ ''अल्लाहु ला इलाह इल्ला हुव ल यज्मअन्नकुम् इला यौमिल्कियामति ला रैब फीहि व मन् अस्दकु मिनल्लाहि हदीसन्'' यानि खुदा सच्चा माशूक है। उसके सिवा कोई इबादत के लायक नहीं वह कियामत के दिन तुम सब को जरूर जमा करेगा और खुदा से बढ़कर किसकी बात सच्ची है?

जो अर्स रूहें आईं होती, तो काहे को कौल करत।
सो कह्या पीछे आवसी, ए सोई लेसी हकीकत।।२२।।

यदि उस समय परमधाम की ब्रह्मात्मायें आयी होती तो मुहम्मद स. अ. व. कियामत के समय स्वयं की तथा परब्रह्म के आने की बात क्यों करते? इसलिये उन्होंने कहा कि उस समय जो ब्रह्मात्मायें आयेंगी वे ही कुर्आन की वास्तविकता को समझेंगी।

अर्स रूहें होए सो मानियो, अंदर आन आकीन।
ए कलमा जो समझहीं, सोई महंमद दीन।।२३।।

परमधाम की जो भी ब्रह्मसृष्टि होगी, वह मेरे कथन के ऊपर विश्वास करेगी। जो भी व्यक्ति मेरे द्वारा कहे गये कलमे के आशय को समझकर आत्मसात् करेगा, वही मेरे द्वारा दर्शाये हुए मार्ग का सच्चा अनुयायी होगा।

भावार्थ - यद्यपि कलमा पढ़ने वाले करोड़ो की संख्या में हैं किन्तु क्षर (ला) अक्षर (इल्लाह) से परे अक्षरातीत परब्रह्म की पहचान करके उनसे सच्चा प्रेम करने वाले कितने मुसलमान है? इसी प्रकार तारतम वाणी (श्री कुल्जुम स्वरूप) तथा तारतम की छः

चौपाइयों का नियमित पाठ करने वाले लाखों सुन्दरसाथ हैं किन्तु ब्रह्ममुनि तो वही है जिसे श्री प्राणनाथ जी पर अटूट आस्था है और जिसने अपने धाम हृदय में युगल स्वरूप (परब्रह्म) को बसा रखा है।

ए कलमा मुख लाखों कहे, पर माएने न समझे कोए।
इन कलमें मगज सो समझहीं, जो अर्स अजीम कीहोए।।२४।।

यद्यपि, इस कलमें को मुख से नियमित रूप से कहने वाले लाखों मुसलमान है किन्तु उनमें से कोई भी इसका गूढार्थ नहीं जानता। जो परमधाम की ब्रह्मात्मा होगी, वह ही इसके गुह्य भेदों को समझेगी।

भावार्थ - तारतम की छः चौपाईयां परब्रह्म के धाम, स्वरूप और लीला पर प्रकाश डालती है। ब्रह्मसृष्टियां इसके द्वारा अपने प्रियतम की पहचान करके उनसे प्रेम करती हैं किन्तु जीव सृष्टि मात्र इसे मन्त्र के रूप में मानती है और इसका जप करके लौकिक सुख की प्राप्ति के साथ मुक्ति प्राप्त करना ही अपना परम ध्येय मानती है।

जो लों रेहेमान न जाहेर, रहो बंदे बाब पकर।
मैं हुकम छोड़ चलसी, फेर आवसी भेले आखिर।।२५।।

मुहम्मद स. अ. व. ने उस समय मुसलमानों से कहा था कि जब तक कियामत का समय नहीं आ जाता है और स्वयं परब्रह्म इस संसार में इमाम महदी (श्री प्राणनाथ जी) के स्वरूप में प्रकट नहीं हो जाते हैं, तब तक तुम मेरे द्वारा दर्शाई गयी शरिअत एवं तरीकत की बन्दगी का निर्वाह करते रहो। जिन कार्यो को करने के लिये परब्रह्म ने मुझे आदेश दिया है, उसे पूरा करके मैं निजधाम चला जाउंगा। पुनः वक्त - ए - आखिरत में कियामत के समय परब्रह्म (अल्लाह तआला) के साथ आउंगा।

भावार्थ - कुर्आन के पा. २४ सू. ३९ आ. ६९ "व अश्रकतिल्- अरजु बिनुरी रब्बिहा व वुजिअल्-किताबु वजीय बिन्नबिय्यन वश्शुहदाइ व कुजिय बैनहुम् बिल्हक्कि व हुम ला यज्लमुन्" अर्थात् और जमीन अपने परवरदिगार के नूर से चमक उठेगी और किताब (आमालनामा खोलकर) रख दिया जायगा और पैगम्बर व गवाह हाजिर किये जायेंगे। और उनमें इन्साफ के साथ फैसला किया जायगा और उन पर (रत्ति भर भी)

जुल्म (अन्याय) न होगा।और उनमें इंसाफ के साथ फैसला किया जाऐगा और बेईन्साफी नहीं की जाएगी।

एक ए भी रसूलें कह्या, करी आगे की सरत।
साथ आवसी इमाम के, रूह मोमिन बड़ी मत।।२६।।

मुहम्मद साहब ने भविष्य के सम्बन्ध में एक और विशेष बात कही कि आखरूल इमाम मुहम्मद महदी के साथ ब्रह्मात्माओं तथा जागृत बुद्धि (इस्राफिल) का भी प्रकटन होगा।

भावार्थ- पा. १८ सू. २३ आ. १६ ''सुमम यौमिल कियामति तवअसून'' अर्थात् तुम्हें कियामत के दिन उठाकर खड़ा किया जायेगा।

पा. १६ सु. २५ आ. ३५ ''व लकद् आतैना मुसल-किताब व जअल्ना मअहू अखाहु हारून बजीरन्'' और हमने मूसा को किताब (तौरात) दी और काम बनाने को उनके भाई हारून को उनका मददगार बनाकर उनके साथ मिला दिया।

नूर मत जाहेर होएसी, तब जानो हुई आखिर।
तब मौला हम आवसी, इन मोमिनों की खातिर।।२७।।

जब संसार में जागृत बुद्धि का ज्ञान प्रकट हो जाय तब समझ लेना कि अब वक्त ए आखिरत अर्थात् कियामत का समय आ गया है। उस समय ब्रह्मात्माओं को परमधाम की निधियां (नेमतें) देने के लिये परब्रह्म के साथ मैं भी आउंगा।

भावार्थ - कुर्आन पारः २५ सूरः ४३ आयत ६१ ''व - इन्नह ल इल्मुल-लिस्साअति फ ला तम्तरून्न बिहा वत्तबिअुनी हाजा सिरातुम-मुस्तकीमुन्'' और वह कियामत की निशानी है तो इसमें शक न करों और मेरे पीछे चलो। यही सीधा रास्ता है।

पारः २६ सूरः ४८ आयत १७ '' लैस अलल्-अड़मा हरजुव्व ला अलल्-अड़रजि हरजुव्व ला अलल्मरीजि हरजुन् व मंय्युतिइल्लाह व रसुलह युद्खिलहु जन्नातिन् तजरी मिन् तह्तिहल्-अन्हारू व मंय्यतवल्ल युअज्जिबहु अजाबन् अलीमन्'' अर्थात् न तो और जो शख्श खुदा और उसके पैगम्बर के फरमान पर चलेगा, खुदा उसे बहिश्त में दाखिल करेगा, जिसके नीचे नहरें बह रही हैं और जो मुंह मोड़ेगा उसे बूरे दुख की सजा है।

पा. २६ सु. ५१ आ. ५ ''इन्नमा तअदून्न लसादिक'' कि जिसका तुमसे वायदा किया जाता हो सच्चा हो।

पा. २७ सु. ५२ आ.१७ इन्नल् मुत्तकी न फी जन्नातीव-व नइम'' जो जो परहेजगार होंगे वे बागों और नेमतों में होंगे।

इत कजा जो करने बैठसी, तब हम काजी संग।
वरन बदलसी दुनियां, पर ए दीन कायम रंग।।२८।।

जब परब्रह्म संसार में इमाम महदी के रूप में ज्ञान दृष्टि से सबका न्याय करेंगें, उस समय मैं भी उनके साथ रहूंगा। उनके अलौकिक तारतम ज्ञान से संसार के लोग अपनी मान्यताओं में परिवर्तन लायेंगे, किन्तु तारतम द्वारा निर्देशित मार्ग में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं हो पायेगा क्योंकि वह परम सत्य है।

भावार्थ - संसार में ज्ञान दृष्टि से न्याय होगा अर्थात् तारतम ज्ञान के प्रकाश में परब्रह्म द्वारा इमाम महदी के रूप में अन्य मत - मतान्तरों की निष्पक्ष समीक्षा के साथ यथार्थ सत्य प्रस्तुत किया जायेगा। यह सत्य तारतम वाणी में विद्यमान है। दूसरा न्याय योगमाया के ब्रह्माण्ड में होगा, जिसमें परब्रह्म के स्वरूप की नकल के स्वरूप में जागृत बुद्धि (इस्राफिल) विद्यमान होगी और सबके कर्मो के अनुसार बहिश्तों का सुख प्रदान किया जायेगा।

इमाम इत आवसी, सो भी मोमिनों के कारन।
देसी सुख मोमिन को, कजा होसी सबन।।२९।।

ब्रह्ममुनियों की आत्म जागृति के लिये स्वयं परब्रह्म इमाम महदी (श्री प्राणनाथ जी) के स्वरूप में प्रकट होंगे और संसार के सभी मत - पन्थों के बीच परम सत्य का मार्ग दर्शायेंगे (न्याय करेंगे) और ब्रह्ममुनियों को परमधाम की अनुभूति कराकर अखण्ड सुख देंगे।

एता भी रसूलें कह्या, मोमिनों में आकीन।
बिना आकीन सब उड़सी, एक रेहेसी हमारा दीन।।३०।।

मुहम्मद सल्ल ने यह भी कहा कि ब्रह्ममुनियों में ही परब्रह्म के प्रति अटूट विश्वास रहेगा। जिनके पास सच्चा विश्वास नहीं होगा वे अज्ञानता के अन्धकार में भटकते रहेंगे। उस समय तारतम ज्ञान (इल्मे लदुन्नी) द्वारा निर्देशित मार्ग ही परम सत्य का मार्ग होगा।

भावार्थ - कट्टरवादी मानसिकता वाले लोग मात्र शरीयत, तरीकत को ही सर्वोपरि समझते हैं। इसी प्रकार हिन्दू भी कर्मकाण्ड के जाल से बाहर आकर वैदिक तत्व ज्ञान को पाने के लिये तारतम ज्ञान के सागर में डूबकी नहीं लगाते। यदि संसार के सभी

मतों के लोग निष्पक्ष बुद्धि से विचार करें तो उन्हें तारतम ज्ञान के प्रकाश में परम सत्य का मार्ग मिल जायेगा।

जिन सिर लई बात रसूल की, कदम पर धरे कदम।
इन कलमें के हक से, न्यारा नहीं खसम।।३१।।

जिन लोगों ने मुहम्मद साहब के द्वारा कियामत के समय इमाम महदी और ब्रह्ममुनियों के प्रकटन की बातों पर विश्वास किया तथा तारतम ज्ञान के प्रकाश में वास्तविक सत्य को जानकर उसके अनुकूल अपना आचरण किया, उनसे परब्रह्म अक्षरातीत कभी भी अलग नहीं है।

भावार्थ - उपरोक्त चौपाई से लेकर ३७वीं चौपाई तक 'कलमा' का तात्पर्य तारतम ज्ञान से है। कलमें के द्वारा परब्रह्म की सांकेतिक पहचान ही होती है, यथार्थ नही। मुआविया, यजीद, सिकन्दर लोदी, बाबर, तैमूर लंग, अलाउदीन खिलजी आदि के पास भी तो कल्मा था किन्तु उन्होंने परमधाम या अक्षरातीत की ओर कौन सा कदम बढ़ाया? कलमे जितनी पहचान तो गायत्री मन्त्र से भी मिल जाती है। पुनः तारतम ज्ञान की आवश्यकता ही क्या थी?

यह स्पष्ट है कि मुहम्मद स. अ. व. के अवतरण से पूर्व अरब की धरती पर अज्ञानता पशुता एवं नृशसता का साम्राज्य था। वहां के लोगों को कुर्आन के ज्ञान से एक परब्रह्म की शरीअत की बन्दगी कराकर मानवता का पाठ पढ़ाना था। उन्हें यह निर्देश था कि कियामत के समय में प्रकट होने वाले इमाम महदी की पहचान करके उनके निर्देशों का पालन अवश्य किया जाय।

जिन ए कलमा हक किया, मैं तिनका जामिन।
सो आपे अपने दिल में, साख जो देसी तिन।।३२।।

श्री महामति जी कहते हैं कि कियामत के समय जो भी व्यक्ति तारतम ज्ञान का प्रकाश लेकर परब्रह्म की पहचान करेगा मैं उसके लिये बहिश्तों के अखण्ड सुख दिलाने की जमानत (उत्तरदायित्व) लेता हूँ। उसे तारतम ज्ञान से अपने हृदय में यह स्वयं ही साक्षी मिलेगी कि उसने परम सत्य का मार्ग चुना है।

इन कलमें के माएने, लेकर भरसी पाए।
तिन मोमिन को खसम, सुख जो देसी ताए।।३३।।

जो भी ब्रह्ममुनि (मोमिन) तारतम वाणी के यथार्थ आशय को जानकर अक्षरातीत

के प्रेम मार्ग पर चलेगा, उसे स्वयं सच्चिदानन्द परब्रह्म परमधाम के सुखों का अनुभव करायेंगे।

कहा कहूं इन कलमें की, मोमिनों में पेहेचान।
अब ए कलमा पसरया, तब साफ हुई सब जहान।।३४।।

मैं तारतम ज्ञान की महिमा का कितना वर्णन करूं? इसका वास्तविक बोध तो मात्र ब्रह्ममुनियों को ही होगा। जब सारे संसार में तारतम ज्ञान का प्रकाश फैल जायेगा तो संसार के सभी प्राणी एक परब्रह्म की पहचान कर प्रेम - मार्ग (हकीकत - मारिफत) से निर्मल हो जायेंगे।

भावार्थ - बहाबी विचारधारा के लोग यही मानते है कि एक दिन सारे संसार में कुर्आन और शरीयत का इस्लाम फैल जायेगा।

कुर्आन पा १० सू. ६ आ. ३३ से देते है। ''हुवल्लजी अर्सल रसूलह बिलहुदा व दीनीनूहक्कि लियुज़्हिरह अलद्दीनि कुल्लिह व लौ करिहल्-मुश्रिकून'' अर्थात् वही है जिसने पैगम्बर को हिदायत और दीने हक देकर भेजा ताकि उसको हर दीन से ऊपर करे, और भले ही मुश्रिकों को बूरा ही क्यों न लगे।

पा. १६ सू. १६ आ. ११० ''कट्टरपन्थी विचारधारा के लोग यह भूल जाते है कि जब कुर्आन कलामुल्लाह है, तो इसका ज्ञान सारे संसार के लोगों के कल्याण के लिये है न कि उन पर अरबी भाषा और शरीअत थोपने के लिये अल्लाह ने आदेश दिया है। निर्भान्त सत्य ज्ञान किसी भी भाषा में हो, उसे ग्रहण करना श्रेयस्कर है, किन्तु भाषा, वेश भूषा एवं शरीअत के नाम पर निर्दोषो का खून बहाना धर्म की मर्यादा एवं कुर्आन के मूल सिद्धान्तों के विपरीत है। ''ल इकारा फिद्दीनि''' अर्थात् धर्म में दबाव नहीं है। कुरान पारः २ सूरः २ आ. २२५ ''ला युआखिजुकुमुल्लाहु बिल्लग्वि फी अैमानिकुम् व लाकिय्युआखिजुकुम् बिमा कसबत् कुलूबुकुम् वल्लाहु गफूरून् हलीमुन्'' अर्थात् तुम्हारी फिजूल कसमों पर अल्लाह तुमको नहीं पकड़ेगा लेकिन उन (झूठी कसम खाने) पर तुमको पकड़ेगा जो तुमने दिली इरादे से की हों, और अल्लाह बेहद बख्शनेवाला (क्षमाशील और बड़ा) बरदाश्त करनेवाला हैं।

इमाम महदी (श्री प्राणनाथ जी) द्वारा प्रणीत कुल्जुम स्वरूप में वेद - कतेब दोनो पक्षों के तत्वज्ञान को दर्शाया गया है। उसका अनुशीलन करके सबको एक परब्रह्म (अल्लाह तआला) की पहचान करायी जा सकती है तथा सम्पूर्ण विश्व को शान्ति की शीतल हवा के झोंको से आनन्दित किया जा सकता है।

पा. ३ सु. ३ आ. १९ "इन्नद्दीन इन्दलाहील्-इस्लामु व मख्तलफल्जीन अूतुलकिताब इल्ला मिम्बऽ़दि मा जाअ हुमुल्इल्मु बग्यम्बैनहुम् व मंय्यक्फुर् बि आयातिल्हाहि फ इन् इन्नल्लहा सरीअुल्हहिसाबि" अर्थात् बेशक दीन (धर्म) तो अल्लाह के नजदीक (यही) इस्लाम (आत्म-समर्पण) है। और किताबवालों (यानी यहूदी और नसरानियों) ने प्रमाण पाने के बाद भी इस्लाम से इख्तिलाफ (वैमनस्य) किया तो यह सिर्फ बढ़ा-चढ़ी (आपस की जिद) से विरोध किया। (और जान लो कि) जो शख्स अल्लाह की आयतों से विमुख हुआ तो अल्लाह को हिसाब लेते कुछ देर नहीं लगती।

जिन ए मेरा कलमा, लिया न मांहें बाहेर।
सो दुनियां आखिर दिनों, जलसी आग जाहेर।।३५।।

मेरे द्वारा कहे गये कल्मे का वास्तविक आशय आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिब्बुजमां (श्री प्राणनाथ जी) के द्वारा कहे गये तारतम में निहित है। जो भी उसे आन्तरिक या बाह्य रूप से स्वीकार नहीं करेगा, वह न्याय के दिन सबके सामने पश्चाताप (दोजख) की आग में जलेगा।

भावार्थ - बाह्य रूप से तारतम को स्वीकार करने का तात्पर्य है - कर्मकाण्ड (शरीयत) एवं उपासना (तरीकत) के मार्ग पर चलना। इसी प्रकार आन्तरिक रूप से तारतम को ग्रहण करने का आशय है कि ज्ञान (हकीकत) एव विज्ञान (मारिफत) के मार्ग पर चलकर प्रियतम परब्रह्म को प्रत्यक्ष पा लेना। यद्यपि 'आखिरत' का तात्पर्य कियामत के समय से है, किन्तु उपरोक्त चौपाई में आखिरत का तात्पर्य योगमाया के ब्रह्माण्ड में होने वाली न्याय की लीला के समय से है, जिसे बड़ी कियामत (कुब्रा) कहते हैं। इस संसार में ज्ञान दृष्टि से कियामत होनी है जिसे कियामतुल (सुग्रा) कहते है।

तब ए होसी आजिज, और मौला तो मेहेरबान।
तब लेसी सबों को भिस्त में, देकर अपनों ईमान।।३६।।

सच्चिदानन्द परब्रह्म श्री राज जी तो अनन्त कृपा के सागर हैं। जब समस्त संसार के लोग प्रायश्चित रूपी दोजख की आग में जलकर स्वयं को असहाय अवस्था में अनुभव करेगें तब कृपा के सागर परब्रह्म उनके मन में अपने प्रति विश्वास पैदा करके बेहद मण्डल की अखण्ड बहिश्तों का सुख देंगे।

कछुक करके आकीन, कलमा सुनसी कान।
तिन भी सिर कजा समें, लगसी जाए आसमान।।३७।।

यदि कोई व्यक्ति थोड़ा भी विश्वास करके तारतम ज्ञान को सुनेगा तो न्याय के दिन वह अपने शिर को सबसे उंचा उठाये रखेगा अर्थात् प्रायश्चित करने वालों में वह अतिशय सम्मान की दृष्टि से देखा जायेगा।

भावार्थ – तारतम के श्रवण करने का तात्पर्य जप, चिन्तन, मनन एवं चर्चा सुनने से है। इस चौपाई को पढ़कर सुन्दरसाथ को तारतम ज्ञान के प्रसार के प्रति जागरूक होना चाहिए। उन्हें यह समझना होगा कि मन्दिरों को राजमहलों की तरह सजाने की अपेक्षा तारतम ज्ञान का प्रसार करना अधिक कल्याणकारी और श्रेयस्कर है।

एह बात तेहेकीक है, मोमिनों दिल साबित।
सब्द जो सारे मुझ पें, एक जरा नहीं असत।।३८।।

यह बात तो निश्चित है कि ब्रह्ममुनियों के हृदय में परब्रह्म के प्रति अटूट श्रद्धा और विश्वास भरा होगा मैं जो कुछ भी कह रहा हूँ, उसमें एक भी शब्द झूठ नहीं होगा।

देखन मोमिन खातिर, रचिया खेल सुभान।
अब मोमिन क्यों भूलहीं, पाई हकीकत फुरमान।।३९।।

ब्रह्मात्माओं को माया का खेल दिखाने के लिये ही तो परब्रह्म ने यह ब्रह्माण्ड बनाया है। अब तारतम ज्ञान का प्रकाश पाकर ब्रह्ममुनि कभी भी अपने प्राणेश्वर अक्षरातीत को नहीं भूलेंगे।

भावार्थ – कुर्आन की हकीकत और मारिफत का ज्ञान श्री कुल्जुम स्वरूप में विद्यमान है। अतः उपरोक्त चौपाई में फुरमान का तात्पर्य तारतम वाणी (श्री कुल्जम स्वरूप) से है।

जो सबों का अगम, सो सब रसूल नजर।
तो रसूल मुस्लिम को, फिरे सों फुरमाए कर।।४०।।

जिस बेहद एवं परमधाम को कोई भी जान नहीं पाया उसे मुहम्मद स. अ. व. ने प्रत्यक्ष देखा। अतः जिन लोगों ने उनके कथनों पर अटूट निष्ठा के साथ विश्वास किया, उन्हें इमाम महदी की प्रतीक्षा के साथ सत्य के पथ पर चलने का निर्देश देकर मुहम्मद साहब पुनः अपने धाम चले गये।

।।प्रकरण।।१६।।चौपाई।।५०४।।

सनंध–फुरमान की

फुरमान का शुद्ध शब्द फर्मान है, जिसका तात्पर्य होता है - आदेश पत्र। परब्रह्म के आदेश से अवतरित ग्रन्थों को फर्मान कहते हैं। तारतम वाणी के अनुसार कुर्आन तथा श्री मद्भागवत् के दसवें स्कन्ध को फर्मान के अन्तर्गत माना गया है। इस दृष्टि से देखा जाय तो अपौरूषेय वेद को भी फर्मान के अर्न्तगत माना जा सकता है।

इस प्रकरण की चौपाई ४-५६ तक में यही बात दर्शायी गयी है कि कुर्आन के गुह्य भेदों को किस प्रकार श्री प्राणनाथ जी (आखरूल इमाम मुहम्मद महदी) के द्वारा श्री कुल्जम स्वरूप में स्पष्ट किया गया है।

फुरमान ल्याया जो रसूल, पर समझया नाहीं कोए।
जिन खातिर ले आइया, ए समझेगी रूह सोए।।१।।

इस संसार में मुहम्मद स. अ. व. जो कुर्आन लेकर आये, उसका वास्तविक आशय कोई भी नहीं जान सका। जिन ब्रह्ममुनियों को साक्षी देकर प्रबोधित करने के लिये यह कुर्आन अवतरित हुआ, एकमात्र वे ही इसके अभिप्राय को जानने में सक्षम हैं।

कछुक नबिऐं जाहेर किए, ए सो बंदगी सरियान।
केतेक हरफ रखे गुझ, सो करसी मेंहेदी बयान।।२।।

मुहम्मद साहब ने मेयराज में परब्रह्म श्री राज जी से ६०,००० हरूफ सुने जिसमें शरीयत तथा तरीकत की बन्दगी के शब्दों को उन्होनें प्रकट किया। हरूफे मुक्तेआत के रूप में उन्होंने हकीकत के शब्दों को छिपाकर रखा कि जब कियामत के समय आखरूल इमाम मुहम्मद महदी श्री प्राणनाथ जी प्रकट होंगे तो वे ही इसके छिपे हुए गुह्य रहस्यों को प्रकट करेंगे।

भावार्थ - तरीकत की बन्दगी भी कुर्आन में गुह्य रूप में ही है। इसका रहस्य मुहम्मद साहब ने केवल हजरत अली को ही बताया था। सूफी विचारधारा हजरत अली की ही देन है, जिसमें शरीयत का कोई महत्व नहीं होता।

और भी केतेक सुने रसूलें, पर सो चढ़े नहीं फुरमान।
सो मेंहेदी अब खोलसी, इमाम एही पेहेचान।।३।।

मुहम्मद स. अ. व. (साहब) ने मारिफत के तीस हजार हरूफों को सुना अवश्य किन्तु वे कुर्आन में नही लिखे गये। उन्हें अब स्वयं इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी आकर स्पष्ट करेंगे। उनकी यही यथार्थ पहचान है।

भावार्थ - खु. १२/११, १२ में कहा गया है कि-

कहया सुभाने मुझको, हरफ नब्बे हजार।
तीस तुम जाहेर कीजियो, और तीस तुम पर अखत्यार।
बाकी जो तीस रहे, सो राखियो छिपाए।
बका दरवाजा खोलसी, आखिर को हम आए।।

उपरोक्त कथन से यह स्पष्ट है कि कुर्आन में शरिअत, तरीकत तथा हकीकत के कुल ६०,००० हरूफ ही होने चाहिए, किन्तु वर्तमान समय में कुर्आन में कुल ७७७९७ शब्द हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि १७७९७ शब्द बाद में जोड़े गये है। २२००० हरुफें तो आयशा के घर से पहले ही गुम हो गये थे।

(कुरान) कुर्आन मजीद के नाजिल होने में एक यह भी हिंमत थी कि कुछ आयतें वे थीं जिनका किसी समय रद कर देना अल्लाह तआला को मंजूर (स्वीकार) था। दुआ - ए कुश्त भी कुरआन की दो सूरः, थी कुछ वह है। जिनकी तिलावत (उच्चारण) मंसूख (रद) हो गई, मगर हुकुम बाकी रहा, जैसे कि आयते रजम कि इसका हुकुम बाकी है, मगर तिलावत (पाठ) नही होता। यह दोनों किस्म को आयतें कलाम मजीद से निकाल दी गई हैं। इनका लिखना भी उचित नहीं है। कुछ वह आयतें हैं, जिनकी तिलावत (पाठ) बाकी है, मगर हुकुम मंसूख हो गया। यह कुरआन मजीद में दाखिल है। इसकी बहुत सी मिसालें है।

माएने इन मुसाफ के, कोई खोल न सके और।
कह्या रसूलें इमाम थें, जाहेर होसी सब ठौर।।४।।

कुर्आन की हकीकत एवं मारिफत के रहस्यों को संसार का अन्य कोई भी व्यक्ति खोल नहीं सकता है। मुहम्मद स. अ. व. ने पहले ही कह दिया था कि कुर्आन की हकीकत और मारिफत के भेद एकमात्र श्री प्राणनाथ जी (इमाम महदी) उजागर करेंगे।

मगज माएने मुसाफ के, सो होए न इमाम बिन।
सो इत बोहोतों देखिया, पर सुध ना परी काहू जन।।५।।

कुर्आन के गुह्य अर्थ श्री प्राणनाथ जी के अतिरिक्त अन्य कोई भी नहीं जानता। बहुत से लोगों ने कुर्आन के रहस्यों को जानने का प्रयास किया है, किन्तु किसी को भी इसमें सफलता नहीं मिली।

गुझ का गुझ कौन पावहीं, बिना मेंहेदी इमाम।
ए रूह अल्ला जानहीं, मेरे अल्ला के कलाम।।६।।

इमाम मेहमत साहिब्बुजमां स्वरूप श्री महामति जी की आत्मा कहती है कि आज दिन तक परमधाम संसार के लिये एक गुह्यतम रहस्य रहा है। उसका भी गुह्य रहस्य वहां की खिल्वत - वहदत (रंगमहल की प्रेममयी एकत्व की लीला) है। इसे श्री प्राणनाथ जी के अतिरिक्त भला और कौन जान सकता है? मेरे प्रियतम अक्षरातीत के द्वारा कथित कुर्आन में संकेतों में दर्शाये गये इन गुह्यतम बातों को ज्ञान मात्र परब्रह्म की आनन्द स्वरूप श्यामा जी को ही है।

भावार्थ - इमाम महदी अ. त. फ. श. श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में बशरी सूरत के साथ मल्की सूरत श्यामा जी भी विराजमान हैं, जिन्हें कुर्आन की भाषा में रूहुल्लाह कहते हैं। परब्रह्म की आनन्द स्वरूपा होने से इन्हें ही वहां की गुह्यतम लीलाओं का ज्ञान है। इस तथ्य को मानवीय बुद्धि से नहीं जाना जा सकता है।

ए क्यों उपज्या है क्या, क्यों कयामत संग सुभान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।७।।

यह संसार क्या है और क्यों बना है? कियामत के समय स्वयं परब्रह्म (अल्लाह तआला) इस संसार में क्यों आयेंगे?कुर्आन में सांकेतिक रूप में दर्शाये गये इन तथ्यों के भेद श्री प्राणनाथ जी ही स्पष्ट करेंगे।

क्यों फरेब से न्यारे रहिए, क्यों चलिए सरियान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।८।।

इस प्रपंचमयी जगत से अलग रहने की क्या आवश्यकता है? शरीयत की बन्दगी क्यों करनी हैं? कुर्आन में छिपे हुए इस रहस्य को इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी स्पश्ट करेंगे।

रूह कौन मोमिन कौन मुस्लिम, कौन रूह कुफरान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।६।।

कुर्आन के गुह्य रहस्यों को उजागर करते हुए एक मात्र श्री प्राणनाथ जी ही यह बतायेंगे कि ब्रह्मसृष्टि कौन हैं, ईश्वरीय सृष्टि कौन है तथा जीव सृष्टि कौन है?

तीन रूहों की तफावत, कौन कौन ठौर निदान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।१०।।

श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में तारतम ज्ञान के द्वारा ही कुर्आन के इन छिपे हुए भेदों का स्पष्टीकरण होगा कि जीव सृष्टि ईश्वरीय सृष्टि तथा ब्रह्म सृष्टि में क्या भेद है तथा इनका मूल घर (धाम) कहां है?

क्यों इस्क क्यों बंदगी, क्यों गफलत गलतान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।११।।

ब्रह्मसृष्टि परब्रह्म के प्रेम (इश्क) तथा ईश्वरीय सृष्टि भक्ति के मार्ग पर क्यों चलती है? जीव सृष्टि अज्ञानता में ही क्यों भटकती रहती है? कुर्आन में वर्णित इस तथ्य को श्री प्राणनाथ जी ही स्पष्ट करेंगे?

भावार्थ - अनन्त प्रेम के सागर परब्रह्म की अंग रूपा होने से ब्रह्मसृष्टि प्रेम मार्ग पर चलती हैं ईश्वरीय सृष्टि सत् अंग अक्षर ब्रह्म की अंगरूपा है, इसलिये वह भक्ति का मार्ग अपनाती है। मोहसागर में प्रकट होने वाले आदिनारायण की सांकल्पिक प्रतिबिम्ब स्वरूपा होने से जीव सृष्टि सदैव अज्ञानता के अन्धकार में भटकती रहती है। वह कर्मकाण्ड छोडकर भक्ति या प्रेम के मार्ग पर नहीं चल पाती है।

क्यों पाक ना पाक क्यों, क्यों रेहेनी फुरमान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।१२।।

अपने हृदय को पवित्र क्यों रखना चाहिये? मनुष्य का हृदय अपवित्र क्यों हो जाता है? कुर्आन में जैसा वर्णन किया गया है, वैसा आचरण क्यों रखना चाहिए?इन सभी भेदों को श्री प्राणनाथ बतायेंगे और कुर्आन के वास्तविक अभिप्राय को स्पष्ट करेंगे।

भावार्थ - हृदय को पवित्र किये बिना परब्रह्म का साक्षात्कार असम्भव है।

अज्ञानता तथा विषय - भोगों के प्रति आकर्षण के कारण हृदय में अपवित्रता आ जाती है। कुर्आन में दर्शाये गये निर्देशों का पालन करने से ही पवित्रता आयेगी।

क्यों उजू निमाज क्यों, क्यों कर बांग बयान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।१३।।

वुजू क्यों करनी चाहिए? नमाज क्यों पढ़नी चाहिए? नमाज के समय कल्मे को जोर से बोल कर क्येां पढना चाहिए? इन सारे भेदों को श्री प्राणनाथ जी ही स्पष्ट करेंगे और कुर्आन के गुह्य अर्थ बतायेंगे।

भावार्थ - नमाज से पहले पवित्रता आवश्यक है, इसलिये वुजू किया जाता है। शरीर को पवित्र करने के लिये जल तथा मन को पवित्र करने के लिये स्वयं को ज्ञान दृष्टि से कालमाया (ला) तथा योगमाया (इलाह) से परे परमधाम (लाहूत) में जाना होगा। कल्में को जोर से बोलने पर वह व्यक्ति भी परब्रह्म के चरणों में आ सकता है, जिसे अध्यात्म का कुछ भी ज्ञान नहीं है।

क्यों कसौटी अंग की, क्यों रोजे रमजान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।१४।।

रमजान के महीने में उपवास क्यों रखा जाता है तथा हृदय को पवित्र करने की साधना क्यों की जाती है? कुर्आन के इन भेदो को श्री प्राणनाथ जी ही स्पष्ट करेंगे?

भावार्थ - उपवास रखने से मन की पवित्रता होती है तथा शारीरिक अंगो की साधना करने से शरीर उच्च स्तर की साधना के योग्य बनता है।

क्यों सुंनत क्यों इंद्रियां, क्यों राखे कैद आन।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।१५।।

सुन्नत क्यों की जाती है? इन्द्रियों को वश में क्यों रखा जाता है? कुर्आन में वर्णित इन सभी तथ्यों का भेद श्री प्राणनाथ जी दर्शायेंगे।

भावर्थ - इब्राहीम पैगम्बर के अपराध की स्मृति में सुन्नत का प्रचलन हुआ जिससे पुनः कोई वैसी भूल करने की कोशिश न करे। इन्द्रियों को वश में किये बिना भक्ति के सागर में प्रवेश करना असम्भव है।

क्यों तसबी क्यों फेरनी, क्यों कर नाम लेहेलान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।१६।।

माला क्यों फेरनी चाहिए और उसके साथ खुदा का नाम कैसे लेना चाहिए?इन सारे भेदों को श्री जी ही स्पष्ट करेंगे और कुर्आन के रहस्यों को उजागर करेंगे।

भावार्थ - बन्दगी की प्रारम्भिक अवस्था में माला फेरी जाती है। माला के साथ जप करते समय परब्रह्म का नाम मौन होकर हृदय से लेना चाहिए।

क्यों डर क्यों बेडर, क्यों खूंनी मेहेरबान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।१७।।

क्यों डरना चाहिए? क्यों निडर होना चाहिए? मनुष्य किसी का खून क्यों बहाता है और किसी पर दया क्यों करता है?ये सारे भेद इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी बतायेंगे और कुर्आन के रहस्यों को स्पष्ट करेंगे।

भावार्थ - बूरे कार्य करने से डरना चाहिए अन्यथा उसका फल अवश्य भोगना पड़ता है। अन्याय से कभी भी भयभीत नही होना चाहिए नहीं तो वह संसार में और फैलकर लोगों को दुःखी करेगा। तमोगुण से ग्रसित होकर मनुष्य क्रूर बन जाता है और दूसरे की हत्या कर देता है। सतोगुणी बनकर वह कोमल हृदय वाला हो जाता है और असहाय, दीन-दुःखियों पर दया करके दयालु (मेहरबान) कहलाता है।

क्या खाना क्या पीवना, क्या जो सुनना कान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।१८।।

क्या खाना चाहिये और क्या पीना चाहिये?अपने कानों से क्या सुनना चाहिए?श्री प्राणनाथ जी कुर्आन के गुह्य रहस्यों को प्रकट करते हुए उपरोक्त भेदों को भी समझायेंगे।

भावार्थ - वनस्पतियों से उत्पन्न होने वाला ही भोजन करना चाहिये। शराब तथा रक्त को छोड़कर सभी पीने योग्य पदार्थो (दूध, रस शहद आदि) पीना चाहिए। अपने कानों से परब्रह्म के ज्ञान की चर्चा एवं महापुरूषों के जीवन चरित्र को सुनना चाहिए। उपरोक्त चौपाई का आध्यात्मिक भाव यह होगा - परब्रह्म का दर्शन ही भोजन है। उनसे प्रेममयी मित्रता करना पानी पीना है। हमेशा अपनी अन्तरात्मा की पुकार सुननी चाहिए।

क्या लेना क्या छोड़ना, क्या इलम क्या ग्यान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।१९।।

क्या ग्रहण करना चाहिए और क्या छोड़ना चाहिए? ज्ञान (इल्म) क्या हैं? इसके रहस्य श्री जी ही बतायेंगे और कुर्आन के सभी छिपे भेदों को सबके लिये ग्राह्य बनायेंगे।

भावार्थ - दूसरों के गुणों को ग्रहण करना चाहिए और अवगुणों को छोड़ देना चाहिए। ज्ञान वह है जो सर्वदा सत्य हो, और जिसके स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता और जो परब्रह्म की पहचान कराने में सहायक हो।

क्यों भली बुरी क्यों, क्यों कर जान अजान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।२०।।

किसी की भलाई क्यों करनी चाहिए और बुराई क्यों नहीं करनी चाहिए?सत्य को क्यों जानना चाहिए और किसे नहीं जानना चाहिए? इसके भेद श्री जी बतायेंगे और कुर्आन के रहस्यों को उद्घाटित करेंगें।

भावार्थ - यदि हम किसी की भलाई करते हैं तो हमारा भी भला होगा और यदि हम किसी का बूरा करते हैं तो हमारा अहित अवश्य होगा। सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं, सत्य ही परमात्मा का स्वरूप है, इसलिये सदा सत्य को जानना चाहिए। हमें कभी भी दुसरों के अवगुणों को जानने का प्रयास नहीं करना चाहिए।

कौन वैरी कौन सजन, क्यों कर सब समान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।२१।।

हमारा कौन शत्रु है और कौन सज्जन है? सभी मनुष्य किस प्रकार समान हैं? जब इमाम महदी श्री प्राणनाथ प्रकट होंगे तो इन प्रश्नों के उत्तर देंगे और कुर्आन के छिपे हुए रहस्यों को दर्शायेगें।

भावार्थ - जो हमें परब्रह्म की राह पर चलने में बाधायें खड़ी करे, वह हमारा शत्रु है। जो इस महान कार्य में हमारी सहायता करे, वही हमारा सच्चा मित्र या सज्जन है। सभी के अन्दर एक ही प्रकार की चेतना है, इसलिये आन्तरिक दृष्टि से सभी प्राणी समान है।

क्या हक क्या हराम, क्या नफा नुकसान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।२२।।

हमारा अधिकार कैसा होना चाहिए?पाप क्या है?लाभ क्या है और हानि क्या है? इन प्रश्नों के उत्तर श्री जी (इमाम महदी) देंगे और कुर्आन के छिपे हुए रहस्यों को उजागर करेंगे।

भावार्थ - निष्पक्ष न्याय के अनुकूल ही हमारा अधिकार होना चाहिये। पक्षपात पूर्ण तरीके से बलपूर्वक दूसरों का अधिकार छीनना हराम (पाप) है। परब्रह्म के प्रति प्रेम रखकर मानवता का कल्याण करना ही लाभ है और परब्रह्म को भूलकर भोग - विलास

में फंसे रहना हानि है।

क्यों आवन क्यों गवन, क्यों कर विरहा मिलान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।२३।।

इस संसार में क्यों आना पड़ता है और पुनः जाना भी पड़ता है?विरह क्या है तथा मिलन क्या हैं? श्री प्राणनाथ जी कुर्आन के गुह्य रहस्यों को स्पष्ट करते हुए इन प्रश्नों का उत्तर देंगे।

भावार्थ - इस संसार की लीला में भाग लेने के लिये प्रत्येक प्राणी को जन्म लेना (आना) पड़ता है तथा अपने शरीर की आयु पूरी करके उसे छोड़ना पडता है। प्रियतम परब्रह्म की प्रेममयी याद में तड़पना ही विरह है तथा उनका साक्षात्कार कर लेना मिलन है।

एक खेले दूजा देखहीं, थिर चर चारों खान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।२४।।

इस संसार में कुछ ऐसे लोग हैं जो माया के खेल में लगे हुए हैं। दूसरे ऐसे हैं जो मात्र द्रष्टा रूप में होकर इस खेल को देख रहे हैं। चर - अचर सभी प्राणियों में चार प्रकार के जो जीव हैं, वे कौन है? इनका उत्तर श्री जी ही बतायेंगे और कुर्आन के गुह्य रहस्यों को प्रकट करेंगे।

भावार्थ - मानव रूप में जो जीव सृष्टि है, वह माया के खेल में मग्न है। ईश्वरीय सृष्टि (खिलकत की) तथा ब्रह्मसृष्टि (मूल इप्तदाए की) द्रष्टा भाव से संसार के खेल को देख रही है। चर - अचर प्राणियों में चार प्रकार के जीव है - १. अण्डे से (पक्षी,सर्प आदि) २. गर्भ से (मनुष्य, गाय आदि पशु) ३. धरती से अंकुरित होने वाले - पेड़ पौधे ४. स्वेदज (पसीने) से उत्पन्न होने वाले - खटमल, जूं तथा अनेक प्रकार के कीटाणु।

ए किया जिन खातिर, आदम और हैवान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।२५।।

जिन्हें दिखाने के लिये मनुष्यों और पशुओं के खेल वाला यह ब्रह्माण्ड बनाया गया है, वे कौन है? कुर्आन के रहस्य बताते हुए श्री प्राणनाथ जी ही इसे स्पष्ट करेंगे।

भावार्थ - परब्रह्म के साक्षात् अंग कहे जाने वाले ब्रह्ममुनियों को दिखाने के लिये ही मायावी ब्रह्माण्ड का यह खेल बनाया गया है।

कौन आप और कौन पर, कौन सकल जहान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।२६।।

हम स्वयं कौन है?हमारे लिये पराया कौन है?इस सम्पूर्ण सृष्टि में कौन से लोग रहते हैं? इनके उत्तर देते हुए श्री प्राणनाथ जी कुर्आन के रहस्यों को स्पष्ट करेंगे।

भावार्थ - हम परमधाम की ब्रह्मात्मा (मोमिन) हैं। जो परमधाम से नहीं आया है, वह हमारे लिये पराया है। सृष्टि के सभी प्राणी जीव सृष्टि (आम खलक) है। भारत में किसी - किसी तन में इन जीवों के उपर बैठकर ब्रह्मसृष्टि तथा ईश्वरीय सृष्टि इस मायावी खेल को देख रही है।

क्यों बाहेर क्यों अंदर, क्यों अंतर के निसान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।२७।।

संसार को हमसे बाहर क्यों माना जाता है?पुनः हमारे अंदर भी उसे कहा जाता है?अन्दर और बाहर में भिन्नता के चिह्न क्यों है? कुर्आन में वर्णित इन भेदों को श्री प्राणनाथ जी स्पष्ट करेंगे?

भावार्थ - हमारे शरीर से बाहर यह संसार दिखायी दे रहा है किन्तु सूक्ष्म रूप में वह हमारे अन्दर भी है। बाह्य जगत के पांचो तत्वों से हमारा यह स्थूल शरीर हैं तो सूक्ष्म इन्द्रियों और अन्तः करण के रूप में सूक्ष्म जगत भी विद्यमान है। अनन्त ब्रह्माण्ड का ओर - छोर मानवीय बुद्धि के लिये अगम्य है किन्तु वह समस्त सृष्टि को ध्यान द्वारा अपने अन्दर देख सकता है। संसार प्रकृति का समष्टि (सामूहिक) रूप है और शरीर व्यष्टि (व्यक्तिगत) रूप।

कहां भिस्त कहां दोजख, क्यों जलसी कुफरान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।२८।।

कहाँ बहिश्तें बनेंगी और कहाँ दोजख (नर्क) होगा? काफिर लोग प्रायश्चित की आग में क्यों जलेंगे?कुर्आन के रहस्यों को स्पष्ट करते हुए इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी इन प्रश्नों का समाधान करेंगे।

भावार्थ - योगमाया के ब्रह्माण्ड (अव्याकृत से लेकर सत्स्वरूप तक) में कुल आठ बहिश्तें बनेंगी। न्याय के दिन काफिरों को प्रायश्चित की अग्नि में जलना पड़ेगा और वे अव्याकृत के स्थूल (प्रणव के निर्मल चैतन्य) में मुक्ति प्राप्त करेंगे। काफिरों को इसलिये

प्रायश्चित की आग में जलना पड़ेगा क्योंकि वे परब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथ जी की पहचान नहीं कर पाये।

क्यों आदम क्यों पैगंमर, क्यों फिरस्ते पेहेचान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।२६।।

मनुष्य, पैगम्बर और फरिश्ते (अजाजील) की पहचान क्यों आवश्यक है?इसके भेद श्री जी बातयेंगे और कुर्आन के रहस्यों को स्पष्ट करेंगे।

भावार्थ - सम्पूर्ण सृष्टि में कर्मफल - भोग तथा मुक्ति मानव तन में ही सम्पादित होती है। उनमें परब्रह्म के आदेश से पैगम्बरों द्वारा ज्ञान का संदेश आता है, जिससे मानव जाति अध्यात्म के पथ पर चलती है। सम्पूर्ण सृष्टि का कर्ता - धर्ता अजाजील फरिश्ता (आदि नारायण) है। इनकी पहचान हुए बिना कतेब पक्ष के सिद्धान्तों को नहीं समझा जा सकता।

कलमें दीन रसूल की, सुध मुस्लिम फुरमान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।३०।।

दीन का कलमा क्या है? रसूल मुहम्मद स. अ. व. मुस्लिम तथा कुर्आन की पहचान क्या हैं? श्री प्राणनाथ जी कुर्आन के गुह्य भेदों को उजागर करते हुए इनकी पहचान देंगे।

भावार्थ - इल्में लदुन्नी (तारमत ज्ञान) को ही दीन का कलमा कहते हैं। मुहम्मद स. अ. व. को अल्लाह तआला ने अपना संदेशवाहक (रसूल) बनाकर भेजा और साथ में कुर्आन का ज्ञान दिया जिससे अरब के लोगों में इन्सानियत का पाठ पढ़ाया जा सके। कियामत के समय जो ब्रह्मसृष्टियों परमधाम, परब्रह्म तथा मुहम्मद स. अ. व. पर अटूट विश्वास रखता है, वही मुस्लिम हैं।

रसूल आए किन वास्ते, किन पर ल्याए फुरमान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।३१।।

मुहम्मद सल्ल. (साहब) संसार में किनके लिये आये और किनके लिये कुर्आन लाये?कुर्आन के इन सभी भेदें को श्री जी ही बतायेंगे।

भावार्थ - मात्र ब्रह्मसृष्टियों को साक्षी देने के लिये मुहम्मद स. अ. व. कुर्आन पाक का ज्ञान लेकर संसार में आये।

क्यों हुकम क्यों कर हुआ, किन बिध लीजे मान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।३२।।

अरब के लोगो पर कुर्आन को मानने का आदेश क्यों हुआ? यह आदेश कैसे हुआ तथा उस आदेश को किस प्रकार मानना चाहिए?आखरूल इमाम मेहदी श्री प्राणनाथ जी कुर्आन के इन सभी भेदों को दर्शायेगे।

भावार्थ - अरब के लोगो को हैवानियत से हटाकर मानवता का पाठ पढ़ाने के लिये सबको कुर्आन के निर्देश पर चलने का आदेश हुआ। यह हुक्म शरीयत के पांच नियमों, कल्मा, रोजा, नमाज, हज और जकात के पालन के रूप में हुआ। तारतम ज्ञान (इल्में लदुन्नी) के प्रकाश में कुर्आन के गुह्य अर्थ लेकर (हकीकत और मारिफत की दृष्टि से) उसके निर्देशों का पालन करना चाहिए।

एकों क्यों कर मानिया, क्यों लिया न दूजे मान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।३३।।

बन्दगी के एक पक्ष शरीयत के आदेशों को लोगो नें क्यों मान लिया? दूसरे नियम (तरीकत) को क्यों नहीं माना?कुर्आन के इस छिपे हुए रहस्य को श्री प्राणनाथ जी ही बातयेंगे।

भावार्थ - शरीयत के पालन का निर्देश तो सबको था ही किन्तु तरीकत का ज्ञान केवल हजरत अली को ही था। उनके माध्यम से जिन्हें तरीकत का ज्ञान मिल गया केवल उन्होंने ही मार्ग का आन्तरिक रूप से अपनाया।

किन मान्या न मान्या किन, किन फेरया फुरमान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।३४।।

कुर्आन के निर्देशों को किसने माना, किसने नहीं माना और किसने पूर्णतया नकार (अस्वीकार) कर दिया? कुर्आन के इस रहस्य को श्री प्राणनाथ जी ही स्पष्ट करेगे।

भावार्थ - अटूट विश्वास रखने वाले मुस्लिमों ने कुर्आन के निर्देशों को स्वीकार किया। मुनाफिकों ने कुछ अंशों में माना और कुछ ने नकार दिया किन्तु काफिरों ने उसे पूर्ण रूप से ही नकार दिया।

प्रश्न - क्या वर्तमान समय में कुर्आन को न मानने वाले हिन्दू, बौद्ध, ईसाई आदि सभी काफिर हैं? भारत में तलवार के बल से मुहम्मद गोरी, महमूद गजनवी, बाबर, औरंगजेब, फिरोज तुगलक, अलाउदीन खिलजी आदि ने लाखों लोगों को बलपूर्वक इस्लाम स्वीकार कराया। क्या यह कार्य कुर्आन के अनुकूल था और क्या ऐसा

करने वाले या इसका समर्थन करने वाले सच्चे मुस्लिम कहलाने के अधिकारी है?

उत्तर - काफिर वह है, जो परमात्मा को नही माने। जो व्यक्ति किसी भी भाषा में उपासना की किसी भी पद्धति से एक परब्रह्म की भक्ति करता हो, उसे कदापि काफिर नही कहा जा सकता। कुर्आन का शाश्वत सत्य सिद्धान्त अद्वैतवाद है जो, वेदों, उपनिषदों और दर्शन शास्त्रों में भी है। इन्हें मानने वाला और पवित्र हृदय से एक अद्वितीय परब्रह्म के ध्यान में मग्न रहने वाला स्वप्न में भी काफिर नहीं कहला सकता।

बहावी विचारधारा वालों की यह संकीर्ण मान्यता है कि वे अरबी भाषा और शरीयत को सारे संसार पर थोपना चाहते हैं। उसे न मानने वाले को नास्तिक कहते हैं। उनकी दृष्टि में संस्कृत काफिरों की भाषा है। क्या परब्रह्म किसी विशेष भाषा के बन्धन मे है?इस अनन्त सृष्टि में सभी प्राणी और सभी भाषायें उसी की छत्रछाया में है। ऐसी स्थिति में जिस हिन्दू समाज में कई - कई दिन की समाधि लगाने वाले लाखों लोग हो चुके हैं, उन्हें काफिर कहना सत्य को झुठलाना है।

वेद में मूर्ति - पूजा का निषेध है। पौराणिक हिन्दू मूर्तिपूजा और देवपूजा करने के दोषी अवश्य हैं, किन्तु वेदानुयायी तो मूर्ति पूजा नहीं करते। उन्हें किस आधार पर काफिर कहा जाता है, और उनसे घृणा की जाती है? फकीरों की मजारों पर चादरें चढ़ाना, संगे असवद को चूमना और काबे की परिक्रमा करना भी एक प्रकार की मूर्तिपूजा ही है। वेदानुयायी कभी भी इस प्रकार की भूल नहीं करता। मुहम्मद स. अ. व. के जो निर्देश कुर्आन में है, वे ही निर्देश जब वेदों, उपनिषदों तथा दर्शन ग्रन्थों में है तो उन्हें मानने वाले को मुहम्मद स. अ. व. का विरोधी एवं काफिर कहकर वैर रखना मात्र धर्मान्धता है।

गोरी, गजनवी, तुगलक, तैमूल लंग, नादिरशाह आदि सभी धर्मान्ध थे। इन्हें धर्म के स्वरूप का कोई भी बोध नहीं था। कुर्आन की ओट में इन्होनें अपनी राज सत्ता चलायी है और निर्दोष जनता का रक्त बहाया है। इन्हें मुहम्मद स. अ. व. का सच्चा अनुयायी कभी नहीं कहा जा सकता। इसी प्रकार बाईबल को ढाल बनाकर ईसाईयों ने भी अपनी राज सत्ता चलायी और गोवा में हिन्दुओं पर भयंकर अत्याचार किया। धर्म का शाश्वत सिद्धान्त किसी को भी ऐसा करने की स्वीकृति नहीं देता। भले ही जैन और बौद्ध

अद्वैत परमात्मा की सत्ता को प्रत्यक्षतः नहीं मानते किन्तु उनका जीवन यदि पवित्र है, साधनामय है तो उनसे घृणा करने का कोई भी नैतिक आधार नहीं है। मानवता से घृणा करना, रक्त बहाना और बलपूर्वक मतान्तरण करना कुर्आन ''ला इकरा फिद्दीनि '' अर्थात् धर्म में दबाब अनुचित है, चाहे वह दैहिक, भौतिक , सामाजिक आर्थिक रूप में भी क्यों हो, सवर्था गलत है और कुरान पारः २ सूरः २ आयत २६५ के आदेशों की स्पष्ट अवहेलना है।

क्यों ए इंड खड़ा किया, क्यों करी सरत फना निदान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।३६।।

परब्रह्म ने अपने आदेश से यह ब्रह्माण्ड क्यों बनाया तथा ब्रह्मात्माओं की जागनी के बाद इसका प्रलय करने का भी वचन क्यों दिया?कुर्आन में वर्णित इन तथ्यों का भेद भी श्री प्राणनाथ जी ही स्पष्ट करेंगे।

भावार्थ - ब्रह्ममुनियों को माया का खेल दिखाने के लिये यह ब्रह्माण्ड बनाया गया है। जब ब्रह्ममुनि तथा ईश्वरीय सृष्टि (फरिश्ते) माया का यह खेल देखकर अपने धाम जायेंगे तो संसार के जीवों को अखण्ड मुक्ति देने के लिये इसका लय करना ही होगा।

क्यों बड़ी अकल आगे आवसी, क्यों आखिर के निसान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।३७।।

जागृत बुद्धि (इस्राफिल) क्यों तारतम ज्ञान के प्रसार में अग्रणी भूमिका निभायेंगी? कियामत के निशान क्यों प्रकट होगे?कुर्आन के इन सभी रहस्यों का स्पष्टीकरण श्री जी करेंगे।

भावार्थ - जागृत बुद्धि श्री महामति जी के धाम हृदय में प्रकट होकर परमधाम के ज्ञान को चारों और फैलायेगी। कियामत के निशानों सूर्य का पश्चिम में उगना, काने दज्जाल का गधे पर सवार होना, आजूज - माजूज, इस्राफिल , इमाम तथा रूहुल्ला का प्रकट होना कियामत के आने का स्पष्ट संकेत है।

बंदगी वजूद नफसानी, नासूत बीच सरियान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।३८।।

शरीर तथा इन्द्रियों से होने वाली भक्ति कर्मकाण्ड (शरीयत) की होती है। जो इस पृथ्वी लोक तक ही, रहती है। कुर्आन में वर्णित इस प्रसंग को इमाम महदी ही स्पष्ट

करेंगे।

भावार्थ - शरीर तथा इन्द्रियों से कर्म होते है। इसलिये इन साधनों से होने वाली भक्ति को कर्मकाण्ड (शरीयत) कहते है। नमाज में उठना - बैठना, बोलना तथा हज में परिक्रमा आदि करना कर्मकाण्ड के ही अन्तर्गत आता है। इसके परिणाम स्वरूप जीव इस मृत्युलोक से आगे नहीं जा पाता।

क्यों दिल की बंदगी तरीकत, मलकूत या ला–मकान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।३९।।

दिल से की जाने वाली तरीकत की बन्दगी (उपासना) कैसे की जाती है जो जीव को मलकूत (बैकुण्ठ) या निराकार तक ले जाती है? इसके भी भेद श्री जी साहब ही खोलेंगे।

भावार्थ - तरीकत की बन्दगी में चलना - फिरना, बोलना, या आंखें खोलना पूर्णतया वर्जित है। इस बन्दगी में एकान्त स्थान में शान्त बैठकर दिल के द्वारा परब्रह्म की आराधना की जाती है।

नासूत मलकूत जबरूत, लाहूत चौथा आसमान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।४०।।

नासूत (पृथ्वी लोक), मलकूत (बैकुण्ठ) जबरूत (योगमाया का ब्रह्माण्ड) और लाहूत (परमधाम) जिसे चौथा आकाश कहते है, क्या है? कुर्आन के छिपे हुए इन भेदों को इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी ही खोलेंगे।

भावार्थ - नासूत (मृत्युलोक) में जीव सृष्टि का वास होता है। उपासना करके देवत्व को प्राप्त होने वाले जीव मलकूत (बैकुण्ठ) में जाते हैं। ईश्वरीय सृष्टि बेहद (योगमाया के ब्रह्माण्ड) तथा ब्रह्मसृष्टि अपने मूल घर परमधाम को प्राप्त करेगी।

क्यों रूहें भेद छिपी हजूरी, बंदगी हादी संग आसान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।४१।।

ब्रह्मात्माओं की बन्दगी एकान्त में क्यों होती है और कैसे प्रियतम अक्षरातीत तक पहुंचती है? उनकी प्रेम लक्षणा भक्ति हादी (श्यामा जी) के साथ कैसे सरलता पूर्वक होती है? कुर्आन में वर्णित इस रहस्य को श्री जी स्पष्ट करेंगे।

भावार्थ - ब्रह्ममुनियों के द्वारा की जाने वाली बन्दगी आत्मिक धरातल पर होने के कारण संसार से छिपकर होती है। यह हकीकत और मारिफत की राह है जिसमें शरीर,

मन और जीव भाव से परे होकर आत्मा अपनी परात्म की शोभा के भाव से परब्रह्म से प्रेम करती है, इसलिये यह स्वीकार होती है (पहुंचती) है। सभी आत्मायें परब्रह्म की आह्लादिनी शक्ति श्यामा जी (रूहअल्लाह) की अंग रूपा है अतः स्वयं को उनके ही स्वरूप में मानकर (साथ में) ध्यान करने से लक्ष्य बहुत ही सरल हो जाता है।

मलकूत ऊपर जो जुलमत, नाम बुरका ला–मकान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।४२।।

बैकुण्ठ (मलकूत) के उपर जो माया के अन्धकार का आवरण है, उसे निराकार क्यों कहते हैं? कुर्आन के इस रहस्य को इमाम महदी ही स्पष्ट करेंगे।

भावार्थ – बैकुण्ठ के चारों ओर, अनन्त मोह सागर का आवरण है। यह प्रकृति का सूक्ष्मतम रूप है इसकी कोई आकृति न होने से इसे निराकार कहा जाता है। मोह सागर के अन्तर्गत असंख्यों चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड वाले बैकुण्ठ लोक हैं।

सरियत तरीकत हकीकत, मारफत हक पेहेचान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।४३।।

शरियत, तरीकत, हकीकत और मारिफत की बन्दगी क्या है जिससे परब्रह्म की पूर्ण पहचान होती है? कुर्आन में कथित इसके रहस्य को श्री जी साहब जी स्पश्ट करेंगे।

भावार्थ – शरीर तथा इन्द्रियों से होने वाली भक्ति कर्मकाण्ड (शरीयत) है। अन्तः करण से होने वाली भक्ति उपासना (तरीकत) है। जीव के शुद्ध स्वरूप या आत्मा द्वारा होने वाली भक्ति ज्ञान (हकीकत) है तथा परब्रह्म के स्वरूप में डूबकर स्वयं को भूला देना परम सत्य, विज्ञान (मारिफत) की बन्दगी है।

बेचून बेचगून बेसबी, कहे बेनिमून निदान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।४४।।

संसार के लोग परब्रह्म को बेचून, बेचगून, बेसबी, और बेनिमून क्यों कहते हैं? कुर्आन के भेदों को स्पष्ट करते ही श्री प्राणनाथ जी इसका आशय समझायेंगे।

भावार्थ – परब्रह्म के समान अलौकिक रूप वाला इस सृष्टि में कोई भी नहीं है, अतः वह बेचून (निरूपम) कहलाता है। उसके समान दिव्य गुणों वाला कोई नही है। इस दृष्टि से वह बेचगून (निर्गुण) है। उसकी शक्ल जैसी अन्य किसी की भी इस सृष्टि में

शक्ल नहीं है। इस प्रकार उसे बेसबी निराकार कहते है। उसके अनन्त सौन्दर्य की कोई उपमा नहीं है, इसलिये उसे बेनिमून (अद्वितीय, अनुपम) कहा जाता है।

निराकार निरंजन सुन्य की, ब्रह्म व्यापक मांहें जहान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।४५।।

निराकार, निरंजन तथा शून्य क्या है? संसार में ब्रह्म को व्यापक किस प्रकार कहा गया है? इसका रहस्य श्री जी बतायेंगे और कुर्आन के गुह्य भेदों को खोलेंगे।

भावार्थ - निराकार, निरंजन तथा शून्य एकार्थवाची है। प्रकृति का सूक्ष्मतम् रूप मोहसागर है, जिसे महाशून्य कहते हैं। आकृति से रहित होने के कारण यह निराकार तथा अवयव से रहित होने से यह निरंजन कहलाता है। ब्रह्म इस जगत मे मात्र अपनी सत्ता से व्यापक है, स्वरूप से नहीं।

पुरूख प्रकृती काल की, ईस्वर महाविष्णु उनमान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।४६।।

पुरूष क्या हैं, प्रकृति क्या है, काल क्या है, ईश्वर तथा महाविष्णु के सम्बन्ध में लोग अटकल से ही क्यों जानते थे? श्री प्राणनाथ जी इसका रहस्योद्घाटन करेंगे और कुर्आन के भेदों को दर्शायेगें

भावार्थ - अखण्ड पुरूष के रूप में अक्षर ब्रह्म का मन अव्याकृत है, जिसकी आह्लादिनी शक्ति को सुमंगला शक्ति कहते हैं। इसे ही अखण्ड प्रकृति या सद्रूप माया कहा जाता है। कालमाया के ब्रह्माण्ड में इन्हीं का प्रतिबिम्बित रूप पुरूष - प्रकृति के रूप में है जिसे आदि नारायण, महाविष्णु या ईश्वर और मोहसागर या काल के रूप में माना जाता है।

सदरतुल मुंतहा अर्स अजीम, नूर जमाल सूरत सुभान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।४७।।

अक्षर धाम और परमधाम कहां है। अक्षरातीत परब्रह्म की मनोहर शोभा कैसी है? कुर्आन के इस भेद को इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी स्पष्ट करेंगे।

भावार्थ - निराकार के परे बेहद है, जिससे परे अक्षर धाम है और उसके भी परे परमधाम है। सच्चिदानन्द परब्रह्म अति सुन्दर किशोर स्वरूप में है।

नूर पार नूर तजल्ला, पोहोंचे रसूल रूहअल्ला हजूर।
ए सब इमाम खोलसी, जो दोनों किया मजकूर।।४८।।

अक्षर धाम से भी परे वह परमधाम है, जहां विराजमान परब्रह्म के आनन्द अंग श्यामा जी का साक्षात्कार मुहम्मद स. अ. व. ने किया। प्रियतम परब्रह्म तथा मुहम्मद साहब में जो बातें हुई उसका रहस्य केवल इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी ही बातयेंगे।

भावार्थ - मुहम्मद स. अ. व. के अन्दर अक्षर ब्रह्म की आत्मा थी जिसे इश्क का स्वरूप देकर परब्रह्म ने परमधाम के मूल मिलावे में बुलाया। वहां मुहम्मद साहब ने आनन्द स्वरूप श्यामा जी का भी दर्शन किया। उनके तथा अन्य ब्रह्मात्माओं के उपर फरामोशी का आवरण था। अक्षरातीत से मुहम्मद साहब की ६०,००० हरूफ बातें हुई जिसमें ६० हजार हरूफ बातें कुर्आन में अवतरित हुई। शेष मारिफत की ३० हजार हरूफ बातें श्री कुल्जुम स्वरूप के परिक्रमा सागर और श्रृंगार ग्रन्थ में है।

कुर्आन के पा. १५ सूरः १७ बनी इस्राईल आ. १/७-६ में यह प्रसंग वर्णित है।

क्यों नूर क्यों नूर तजल्ला, क्यों कर वतन खसम।
खोलसी माएने इमाम, खातिर मोमिनों हम।।४९।।

आखरूल इमाम महम्मद महदी अ. त. फ. श. श्री प्राणनाथ हम ब्रह्ममुनियों के लिये ही यह भेद खोलेगे कि अक्षर ब्रह्म कौन है?अक्षरातीत परब्रह्म कौन है तथा मूल घर परमधाम कहां है और कैसा है?

चौदे तबक की बात जो, सो तो केहेसी सकल जहान।
पर लैलत कदर मेहेंदी बिना, क्यों खुले माएने कुरान।।५०।।

इस सृष्टि के ज्ञानी जन चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड की बात तो करते हैं किन्तु कुर्आन के तीसवें पारे में वर्णित लैल तुल कद्र के तीन तकरारों (व्रज, रास एवं जागनी) का वर्णन श्री प्राणनाथ जी के अतिरिक्त अन्य कोई भी नही कर सकता।

भावार्थ - लैल तुल कद्र के तीन तकरारें का वर्णन कुर्आन के पा. ३० सू. ९७ आ. १-५ ''इन्ना अन्जलनाहु फी लैलतुल कदरि लामुन हिय हत्ता मत लैल फज्रि'' अर्थात् ''हमने (कुरआन को) शव - ए - कद्र में नाजिल किया और तुम्हें क्या मालूम शब ए कद्र है? शबे कद्र हजार महीने से बेहतर है। इसमें फरिश्तें व रुह हर काम के लिये अपने परवरदिगार के हुक्म से उतरते है। यह (रात) सुबह होने तक सलामती है।

ए जो पूछे माएने, खोल दिए कदी सोए।
तो इनसे चौदे तबक में, क्यों कर कजा जो होए।।५१।।

उपरोक्त चौपाईयों में जो प्रश्न पूछे गये हैं, यदि इनका उत्तर उसी समय मुहम्मद स . अ. व. के द्वारा दे दिया जाता तो इस समय इस ब्रह्माण्ड में ज्ञान दृष्टि से जो न्याय की लीला श्री प्राणनाथ जी के द्वारा हुई है, वह कैसे होती?

लुगे लुगे के माएने, जो कोई निकसे बोल।
ए कजा तब होवहीं, जब दीजे माएने सब खोल।।५२।।

न्याय की इस लीला का होना तभी सम्भव था, जब उपरोक्त प्रश्नों के एक - एक शब्द का उत्तर सहित गुह्य आशय भी प्रकट कर दिया जाता।

ए नूर के पार के माएने, सो सारों को अगम।
एक लुगा बिना इमाम, निकसे ना मुख दम।।५३।।

अक्षर ब्रह्म से परे अक्षरातीत परब्रह्म के गुह्य रहस्यों को जान पाना संसार के जीवों के लिये असम्भव था। इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी के अतिरिक्त अन्य किसी में भी यह सामर्थ्य नहीं थी कि इन प्रश्नों के उत्तर में एक शब्द भी कह सके।

जब माएने खुले मुसाफ के, बैठे इमाम जाहेर होए।
तब ए दुनी जुदी जुदी, क्यों कर रहसी कोए।।५४।।

जब कुर्आन के गुह्य भेद उजागर हो गये हैं और आखरूल जमां इमाम मुहम्मद महदी के रूप में श्री प्राणनाथ जी प्रकट हो गये हैं तो भला यह संसार अलग - अलग मत पन्थों में क्यों बंटा रहेगा?

सो इमाम जाहेर हुए, ले माएने कुरान।
नूर सबों में पसरया, एक दीन हुई सब जहान।।५५।।

तारतम ज्ञान (इल्मे लदुन्नी) के रूप में कुर्आन के गुह्य अर्थो को लेकर अब स्वयं श्री प्राणनाथ जी (इमाम महदी) प्रकट हो गये हैं। तारतम ज्ञान का प्रकाश सारे मत - मतान्तरों में फैलने से अब सारा संसार एक ही सत्य धर्म को मानने वाला हो गया है।

भावार्थ - वस्तुतः सारा संसार योगमाया के ब्रह्माण्ड में ही एक रस हो पायेगा और एक परम सत्य को स्वीकार करेगा, इस जगत में नहीं क्योंकि यहां सबकी - बुद्धि अलग - अलग है। अपने अहंकार को छोड़कर कोई विरला ही होगा जो सत्य को

स्वीकार करने का साहस रखता हो। उपरोक्त चौपाई में सारे संसार में इस समय एक सत्य की स्थापना मात्र भावात्मक रूप में है, यथार्थ रूप में नहीं। यदि यह कहा जया कि सृष्टि के प्रारम्भिक काल में जब एक ही वैदिक धर्म सम्पूर्ण विश्व में था तो अब तारतम ज्ञान का प्रकाश क्यों नहीं हो सकता तो इसके समाधान मे यही कहा जा सकता है कि वेद का ज्ञान प्रकट होने पर सृश्टि के विकास के साथ ही फैलता गया। वैसी स्थिति अब विश्व युद्ध के पश्चात् ही हो सकेगी, जब सारा संसार दुःखी होगा और शान्ति की खोज में भटक रहा होगा। किन्तु पूर्ण रूप से एक रसता तो मात्र योगमाया के ब्रह्माण्ड में ही होगी।

ए तो करी इसारत, पर बोहोत बड़ी है बात।
नूर बड़ो इमाम को, सो या मुख कह्यो न जात।।५६।।

सारे संसार में एकमत होने की यह बात मैंने संकेतों में कही है किन्तु संसार के सभी लोगों के द्वारा एक परम सत्य को स्वीकार किया जाना बहुत बड़ी बात है। श्री प्राणनाथ जी के तारतम ज्ञान का प्रकाश इतना अधिक है कि उसका वर्णन इस मुख से हो पाना सम्भव नहीं है।

ए नूर खुद वतनी, सो क्यों कर सह्यो जाए।
नूर मत आगे तो करी, जाने जिन कोई गोते खाए।।५७।।

तारतम ज्ञान का प्रकाश स्पष्टतः परमधाम से आया है, इसलिये संसार के लोग इसे आत्मसात् नहीं कर पा रहे हैं। यही कारण है कि प्रियतम अक्षरातीत ने सबसे पहले तारतम ज्ञान का उजाला कर दिया जिससे सावचेत होकर ब्रह्मात्मायें माया के अन्धकार में भटकने न पायें।

इमाम आए तब जानिए, जब खुले माएने कुरान।
तब जानों आखिर हुई, सुख दिया सब जहान।।५८।।

जब कुर्आन के सभी भेद खुल जायें तो समझ लेना चाहिए कि अब संसार में आखरूल जमां इमाम मुहम्मद महदी श्री प्राणनाथ जी का प्रकटन हो चुका है। इसे ही वक्त ए आखिरत अर्थात् कियामत का समय मानना चाहिए जिसमें सारे ब्रह्माण्ड के जीवों को अखण्ड सुख का रसास्वादन कराने के लिये परमधाम का ज्ञान अवतरित हुआ है।

आद करके अबलों, परदा न खोल्या किन।
सो बरकत मेंहेदी महंमद, खुल जासी सब जन।।५६।।

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज दिन तक किसी ने भी धर्मग्रन्थों के गुह्य रहस्यों को खोलकर निराकार से परे बेहद एवं परमधाम का ज्ञान नहीं दिया था। अब श्री प्राणनाथ जी की कृपा से संसार के सभी लोगों के लिये श्री कुल्जुम स्वरूप के खिल्वत, परिक्रमा, सागर और श्रृंगार ग्रन्थ के रूप में परमधाम का ज्ञान प्राप्त हो जायेगा।

लोक जाने ज्यों और है, ए भी फुरमान तिन रीत।
पर दिल के अंधे न समझहीं, ए फुरमान सब्दातीत।।६०।।

संसार के लोग तो ऐसा समझते है कि यह कुर्आन भी अन्य धर्मग्रन्थों की ही तरह है। आत्मिक दृष्टि न होने के कारण इस जगत् के लोग यह नहीं समझ पा रहे हैं कि यह कुर्आन शब्दातीत परमधाम का ज्ञान देता है।

भावार्थ - कुर्आन के बनी इस्राईल व सूरा नज्म में १५ वें पारे सूरः १७ आ. १-७ में शब ए (मेयराज) में' राज का वर्णन है, जिससे यह स्पश्ट होता है कि मुहम्मद स. अ. व. की आत्मा ने मलकूत (बैकुण्ठ) ला मकान (निराकार) तथा जबरूत (बेहद) को पार करके परमधाम में विराजमान परब्रह्म का साक्षात्कार किया था। संसार के अन्य धर्मग्रन्थों में परमधाम का स्पष्ट ज्ञान नहीं है।

ए कागद नहीं फरेब का, और कागद सब छल।
अबहीं इमाम देखावहीं, रसूल किताब का बल।।६१।।

संसार के अन्य धर्मग्रन्थों की तरह यह कुर्आन मोह सागर से सम्बन्धित नहीं है, अपितु यह परमधाम का वर्णन करता है। मुहम्मद स. अ. व. के द्वारा लाये हुए कुर्आन ग्रन्थ के गुह्य रहस्यों को खोलकर श्री प्राणनाथ जी सभी को उसकी गरिमा का अनुभव करायेंगे।

भावार्थ - कुर्आन की हकीकत एवं मारिफत के रहस्यों का स्पष्टीकरण होने पर उसकी गरिमा का पता चलता है। पुराण संहिता एवं माहेश्वर तन्त्र में भगवान शिव के द्वारा परमधाम का जो वर्णन है, वह अधिकांशतः परमधाम के प्रतिबिम्ब स्वरूप केवल धाम का वर्णन है। कहीं कहीं परमधाम का वर्णन अवश्य है किन्तु वह समाधि अवस्था में

शिव जी के द्वारा ईश्वर से सुना हुआ है। ईश्वर ने सदाशिव से सुना और सदाशिव ने अक्षर ब्रह्म से। किन्तु जब अक्षर ब्रह्म की आत्मा अरब में आती है तो वह मेयराज में प्रत्यक्षतः परमधाम को देखती है, जिसका वर्णन परब्रह्म के जोश जिब्रील के द्वारा होता है। इस प्रकार कुर्आन की महान गरिमा है किन्तु कट्टर पन्थियों द्वारा इसके मनमाने और प्रसंग के विपरीत अर्थ कर देने से कुर्आन को ढाल बनाकर संसार में आतंकवाद और घृणा की विष बेल बढ़ायी जा रही है।

।।प्रकरण।।२०।।चौपाई।।५६५।।

सनंध-मुस्लिम की रेहेनी

एक परब्रह्म, मुहम्मद स. अ. व. एवं कुर्आन पर जिसका अटूट विश्वास है, वही मुस्लिम कहलाने का अधिकारी है। इस प्रकरण में यह दर्शाया गया है कि उसका आचरण कैसा होना चाहिए।

इस प्रकरण से आगे का २२वां प्रकरण अर्स अरवाहों के लक्षण से सम्बन्धित है। इससे यह स्पष्ट होता है कि इस २१ वें प्ररकण में ईश्वरीय सृष्टि को 'मुस्लिम' कहकर वर्णित किया गया है। 'ए जुदे नीके जानहीं, मोमिन मुस्लिम कुफरान २१/२४ से भी मुस्लिम का ईश्वरीय सृष्टि होना सिद्ध होता है।

स्वलीला अद्वैत परमधाम स्वयं में परिपूर्ण है। उसमें न तो रंच मात्र की कमी होती है और न वृद्धि। कालमाया के ब्रह्माण्ड का कोई भी जीव परमधाम में न तो प्रवेश का अधिकारी हो सकता है और न परमधाम में एक कण को भी निष्कासित किया जा सकता है। वैदिक ज्ञान एवं उसकी उपासना पद्धति का उपयोग करके जिस प्रकार अक्षर ब्रह्म की पंच वासनाओं (सनकादिक, कबीर जी, शिव जी, विष्णु भगवान एवं शुकदेव जी) ने मोह सागर को पार करके बेहद मण्डल में प्रवेश किया, उसी प्रकार यदि कोई कुर्आन की हकीकत एवं मारिफत के ज्ञान को ग्रहण करे तथा हकीकत की बन्दगी की राह अपनाये तो वह इस नश्वर जगत से परे बेहद मण्डल की अखण्ड बहिश्तों का सुख प्राप्त कर सकता है।

दुर्भाग्यवश मुस्लिम समाज शरीयत एवं तरीकत से आगे नहीं जा सका क्योंकि

कुर्आन में हकीकत एवं मारिफत की बन्दगी का वर्णन ही नहीं है। वह ज्ञान तो श्री कुल्जुम स्वरूप में निहित है। इस प्रकरण में उन्हीं मुसलमानों को मुस्लिम कहकर वर्णित किया गया है जो कुर्आन तथा मुहम्मद स.अ. व. के अतिरिक्त आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिब्बुजमां श्री प्राणनाथ जी एवं तारतम ज्ञान पर श्रद्धा रखते हैं, या रखने वाले हैं।

अटूट ईमान ईश्वरीय सृष्टि तथा ब्रह्मसृष्टि दोनों में होता है। मुस्लिम कहने का तात्पर्य ही अटूट विश्वास (ईमान) रखने वालों से हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि जो मुसलमान तारतम ज्ञान ग्रहण कर श्री प्राणनाथ जी की शरण में आते हैं, उनकी रहनी का इस प्रकरण में दिग्दर्शन कराया गया है –

सुनियो अब मोमिनों, ए केहेती हों सब तुम।
जब तोड़ी आइयां नहीं, इमाम कॅे कदम।।१।।

मेहमत साहिबुज्जमां स्वरूप श्री महामति जी की आत्मा कहती है कि हे ब्रह्ममुनियों! अब आप मेरी सुनिये। जब तक आप श्री प्राणनाथ जी की शरण में नहीं आ जाते तब तक मैं आप से कुछ बातें कहने जा रही हूं।

मैं चाहों मोमिन को, हम तुम एकै अंग।
मैं तबहीं सुख पाऊंगी, मेंहेदी महंमद मोमिन संग।।२।।

हे ब्रह्मात्माओं! मैं आपसे बहुत प्रेम करती हूं क्योंकि हम और आप एक ही परब्रह्म के अंग हैं। मुझे वास्तविक सुख तभी होगा जब आप सभी इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी की सानिध्यता में आ जायेंगे।

आए ईसा मेंहेदी महंमद, मोमिन आवसी कदम।
हनोज लों कबूं ना हुई, सो होसी नई रसम।।३।।

अब साक्षात् परब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथ जी आ गये हैं, जिनके धाम हृदय में तीनों सूरतें बशरी (मुहम्मद स. अ. व.) मल्की (श्री श्यामा जी रूहुल्लाह) तथा हकी (श्री महामति जी) विराजमान है। अब सभी ब्रह्मात्मायें श्री जी की शरण में आयेंगी। आज दिन तक जो जो सम्भव नहीं हो सकी थी, जागनी लीला की नयी उस परम्परा का प्रारम्भ होगा।

भावार्थ – अब तक की जागनी लीला में केवल हिन्दू समाज ही सक्रिय था किन्तु 'सनद' ग्रन्थ के अवतरण से अब कतेब पक्ष के भी लोग अपना सर्वस्व समर्पित कर श्री

प्राणनाथ जी की शरण में आयेंगे। अब जागनी का स्वर देश, सम्प्रदाय की सीमाओं को पार कर वैश्विक स्तर पर गूंजेंगा। यही नयी परम्परा है।

बड़ा मेला इत होएसी, आए खुद खसम।
बखत भला साहेब दिया, भाग बड़े हैं तुम।।४।।

श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में स्वयं परब्रह्म ही आयें हैं इसलिये ब्रह्ममुनियों का बहुत बड़ा समूह एकत्रित होगा। हे ब्रह्मात्माओं ! तुम बहुत भाग्यशाली हो क्योंकि जागनी लीला का सुख लेने के लिये परब्रह्म ने तुम्हें यह बहुत ही सुनहरा अवसर प्रदान किया है।

भावार्थ - इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी को परब्रह्म स्वरूप कहे जाने के सम्बन्ध में कुर्आन का यह कथन बहुत ही महत्वपूर्ण है। निसंदेह कियामत के दिन अपनी आखों से अल्लाह तआला का दीदार करोगे। पारः १८ सूरः २४ आ. ३५ ''अल्लाहु नूरूस्मावाति वल्अर्जि मसलु नुरिह कमिश्कातिन् फिहा मिस्बाहुन् अल्मिरूबाहु फी जुजाजतिन् अज्जुजाजतु कअन्नहा कौकबुन् दुर्रिय्युंय्यूकदु मिन् शजरतिम्-मुबारकतिन् जैतुनतिल्ला शर्किय्यतिव्व ला गर्बीय्यतिन् यकादु जैतुहा युजीअु व लौ लम् तम्ससूहु नारून नरून् अला नूरिन् यह्दिल्लाहु लिनूरिह मंय्यशाअु यज्रिबुल्लाहुल्-अम्साल लिन्नासि वल्लाहु बिकुल्लि शैअिन् अलीमुन्'' अर्थात् खुदा आसमानों और जमीन का नूर है। अल्लाह तआला ''नूर - अल - नूर'' है। अर्थात नूर पर नूर है, इसीलिये आखरूल इमाम मुहम्मद महदी अ. त. फ. श. को ही स्वरूप कहा गया है क्योंकि अल्लाह के नूर का जहूर ही दुनिया में आता है। खुदा का नूर दुनिया में नहीं आ सकता हैं।

नेक कहूं राह मुस्लिम की, जो देखाई रसूलें मेहेर कर।
भूले अवसर पछताइए, सो कहूं सुनो दिल धर।।५।।

श्री महामति जी कहते है कि मुहम्मद स. अ. व. ने अति कृपा कर यह बताया है कि परब्रह्म पर अटूट विश्वास रखने वाले को कैसा आचरण करना चाहिए? मैं उसमें से थोड़ा सा बता रहा हूं। इस जागनी लीला के स्वर्णिम अवसर पर जो भूल करेगा, उसे बहुत ही पश्चाताप करना पड़ेगा। इसलिये मेरी बात को सावधानी पूर्वक सुनिये और उसे अपने हृदय में बसाइयें।

पेहेले तो सब भूलियां, मैं तो कहूं तुमें हक।
देखो हाथ में नूर खुदाए का, फरेब में हुए गरक।।६।।

परब्रह्म पर अटूट विश्वास रखने वालों! मै आप से सत्य बात कह रहा हूं। अब तक आप सभी माया में स्वयं को तथा परब्रह्म को भूले हूए थे। आपके हाथ में कुर्आन के रूप में परब्रह्म की पहचान दी गयी थी फिर भी आप सांसारिकता में ही डूबे पड़े थे।

कहे फुरमान इनों हाथ में, मेहेर कर दिया रसूल।
जाहेर तुमको बताइया, सो भी गैयां तुम भूल।।७।।

कुर्आन का कथन है कि मुहम्मद स. अ. व. ने अति कृपा कर आपको कुर्आन का अलौकिक ज्ञान दिया था और आपको प्रत्यक्ष रूप में उसका रहस्य भी बताया था फिर भी आप उसे भूल गये।

जो जाहेर है तुम पे, माएने इन कुरान।
एते दिन न समझे, अब नेक देऊं पेहेचान।।८।।

आज दिन तक आपको कुर्आन का जो भी अर्थ मालूम रहा है, उससे आप यथार्थ सत्य को नहीं जान पाये है। अब मैं तारतम ज्ञान (इल्म ए लदुन्नी) के प्रकाश में थोड़ी सी पहचान दे रहा हूं।

फैलाव ऊपर का न करूं, नेक देऊं मगज बताए।
ज्यों वतन की सुध परे, सब पकड़ें इमाम के पाए।।९।।

मैं कुर्आन के कथनों की विस्तृत व्याख्या न करके उसके गुह्य रहस्यों को थोड़े ही शब्दों में इस प्रकार बताउंगा कि सबको अपने मूल घर परमधाम की पहचान हो जाय और श्री प्राणनाथ जी के चरणों में आ जाय।

ए जो तुमको रसूलें, दिए माएने खोल।
जाहेर किए न ले सके, कहूं सो दो एक बोल।।१०।।

मुहम्मद स. अ. व. ने कुर्आन के जिन रहस्यों को आपको समझाया था किन्तु आप उन्हें ग्रहण नहीं कर सके थे, तारतम ज्ञान के प्रकाश में उनमें से कुछ बातों को मैं प्रकट कर रहा हूं।

कहो कलमा हक कर, ल्यो माएने कुरान।
पाक दिल रूह पाक दम, या दीन मुसलमान।।११।।

जो कल्मे को सत्य मानकर कहा करे, कुर्आन के गुह्य भेदों को जाने तथा हृदय और आत्मा से पवित्र हो, वही सच्चा मुसलमान कहा जा सकता है।

भावार्थ - वर्तमान समय में शरीयत की राह पर चलने वाले मुसलमानों की संख्या लगभग १ अरब ७६ करोड़ है। प्रश्न यह है कि क्या ये सभी सच्चे मुसलमान होने की कसौटी पर खरा उतरते है। श्री कुल्जुम स्वरूप का ज्ञान अवतरित होने के पश्चात् जो शरीयत को छोड़कर हकीकत की राह पर चले, वही सच्चा मुसलमान कहलायेगा। इसका अभिप्राय यह है कि वह मन, वाणी एवं हृदय से पवित्र हो तथा तारतम ज्ञान को सत्य मानकर अध्यात्म के गुह्य रहस्यों को जानता हो।

पांच बखत सल्ली करे, दिल दरदा आन सुभान।
सुने ना कान कुफार की, या दीन मुसलमान।।१२।।

सच्चा मुसलमान वह है जो परब्रह्म के प्रति अपने हृदय में विरह - प्रेम लेकर एकान्त में ५ बार प्रार्थना - चिन्तन करे और अपने कानों से कभी भी नास्तिकता आदि की बातों को न सुने।

कसनी लेवे आप सिर, साफ रोजे रमजान।
रात दिन याही जोस में, या दीन मुसलमान।।१३।।

एक सच्चे मुसलमान को चाहिये कि वह परब्रह्म की सानिध्यता प्राप्त करने के लिये वर्ष मे एक मास अवश्य ही ध्यान साधना करे और उपवास के द्वारा अपने मन को वश में करने का प्रयास करे। दिन - रात परब्रह्म के प्रति एकनिष्ठ प्रेम के नशे में रहे।

भावार्थ - शरीयत के नियमों का पालन करने के नाम पर यदि कोई मुसलमान दिन को तो उपवास करे और रात्रि को गो मांस आदि तामसिक पदार्थो का सेवन करे तो कभी भी उसका हृदय पवित्र नहीं हो पायेगा। कबीर जी ने इसी बात की ओर संकेत करते हुए कहा है कि

दिन को रोजा रहत है, रात हनत है गाय।
यहां खून वै बन्दगी, क्यों कर खुशी खुदाय।।

वह कैसी साधना है, जिसमें रात को भर पेट भर मांस खाया जाय और दिखावे के लिये ५ बार नमाज पढ़ी जाय। जब तक आहार-विहार ही शुद्ध नहीं होगा और परमधाम तथा परब्रह्म का ध्यान न किया जाय तब तक मात्र शरीयत की दिखावे की बन्दगी से पवित्र होना सम्भव नहीं है।

माएने ले चीन्हें आपको, करे रसूल पेहेचान।
वतन सुध करे हक की, या दीन मुसलमान।।१४।।

एक सच्चा मुसलमान वही कहला सकता है जो कुर्आन के गुह्यार्थो को जान कर अपनी, मुहम्मद स. अ. व. की अपने मूल घर की, तथा सच्चिदानन्द परब्रह्म की पहचान करे।

रसूल आए किन ठौर से, किन वास्ते जिमी हैरान।
ए सुध सारी लेवहीं, या दीन मुसलमान।।१५।।

एक सच्चा मुसलमान आश्चर्य में डालने वाली इन सारी बातों की जानकारी रखता है कि मुहम्मद स. अ. व. इस नश्वर संसार में कहा से आये और किसके लिये आये?

किन भेज्या आया कौन, ल्याया हक फुरमान।
ए सहूर करके समझहीं, या दीन मुसलमान।।१६।।

एक मात्र वही सच्चा (धार्मिक) मुसलमान है जो इस बात का चिन्तन करके यह समझने का प्रयास करता है कि मुहम्मद स. अ. व. को इस संसार में किसने भेजा तथा कुर्आन के रूप में परब्रह्म का संदेश लेकर कौन आया?

सारे सबद रसूल के, सिर लेवे हक जान।
नूर नबी के मगन, या दीन मुसलमान।।१७।।

एक धार्मिक मुसलमान मुहम्मद साहब के कहे हुए सभी कथनों को पूर्णतया सत्य मानकर शिरोधार्य (स्वीकार) करता है और उनके दिव्य ज्ञान के आनन्द में मग्न रहता है।

द्रश्टव्य – गुह्य अर्थो के साथ केवल कुर्आन का ही कथन मानने योग्य है। मुहम्मद स. अ. व. के नाम से कई झूठी हदीसें भी बना दी गयी हैं, जो मान्य नहीं हो सकती।

कलाम अल्ला कुरान में, दिल दे करे प्रवान।
अंदर आकीन उजले, या दीन मुसलमान।।१८।।

कुर्आन में कहे हुए शब्द अल्लाह के ही हैं, इस बात को जो शुद्ध हृदय से स्वीकार करता है और उस पर पूर्णतया विश्वास करता है, वही सच्चा मुसलमान कहलाने का अधिकारी है।

प्रश्न – क्या कुर्आन के इन प्रसंगों से यह स्पष्ट नहीं होता है कि कुर्आन पाक अल्लाह का कहा हुआ कलाम नहीं है ?

१– जब तुम मोमिनो से यह कह रहे थे कि क्या यह काफी नही कि परवर दिगार तीन हजार फरिश्ते नाजिल कर के तुम्हें मदद दे। पा. ४ सू.३ आ.१२४

२- और जिस दिन आसमान फट जायेगा तो तुम और फरिश्ते नाजिल होगे जिन्होंने काफिरों का कहा माना उनसे इस कुरान के हुक्म के मुताबिक जोर से लड़े।

३- ऐ नबी! काफिरों और मुनाफिकों से लड़ो - और उन पर सख्ती करो।

4—और फरिश्ते उसके किनारे पर, उसके और तुम्हारे परवरदिगार के अर्श को उस दिन आठ फरिश्ते उठाये होंगे। मं. ६ सि. २९ सू. ६९ आ. १७

५- और मेवे जिस तरह के उनको पसन्द हों और परिंदों (पक्षियों) का गोश्त जिस किस्म का कि मन पसन्द करे। और बड़ी २ आखों वाली हूरें (अप्सराएं)।

उत्तर- उपरोक्त शंकाओं का समाधान इस प्रकार है-

(१) यहां व्रद्र की लड़ाई का प्रसंग है, जिसमें मुहम्मद साहब की फरिश्तों ने गैबी (गुप्त रुप से) मदद की थी।

(२-३) परब्रह्म को न मानने वाले अधर्मी लोगों से युद्ध करना न्याय संगत है। यहां काफिर का तात्पर्य गैर मुस्लिमों से नहीं, अपितु अरब के उन लोगों से है जो अद्वैत सिद्धान्त के विरोधी एवं अत्याचारी थे। धर्म रक्षार्थ युद्ध करने का उपदेश तो योगेश्वर श्रीकृष्ण जी ने भी गीता मे दिया है- ततो युद्धाय युजस्व नैव पापं अवाप्स्यसि। आकाश फटने का कथन आलंकारिक है, यथार्थ नहीं।

(४) उपरोक्त आयत का अर्थ सांकेतिक रुप में पाट घाट के प्रतिबिम्ब स्वरूप गुम्मट जी में श्री जी के सिहांसन में स्थित ८ पायों से है।

(५) वर्तमान समय में जो कुर्आन उपलब्ध है, वह खलीफा उस्मान के समय का है, जिसमें संशोधन के नाम पर व्याकरण के आधार पर अर्थ किया गया है। इस कुर्आन में उग्रपन्थी विचारों के आधार पर अर्थ किया गया है जो आतंकवाद और, विकृत मानसिकता को बढ़ावा देता है। उपरोक्त आयत में बहिश्त (परमधाम) का जो वर्णन हैं उसमें मनन ओर सल्वा शब्द है जिसका आशय मसूर (सुन्दर वानस्पतिक फल एवं शहद) से है, पक्षियों के मांस खाने का वर्णन विकृत मानसिकता से उपजा है और पक्षपात पूर्ण तरीके से अर्थ करने का परिणाम है।

शहद का आशय इल्म के सागर से है। बहिश्त में शराब का अभिप्राय 'प्रेम' से लेना चाहिए।'साकी पिलावे सराब' खिल्वत का कथन इसी सन्दर्भ में है। इसी प्रकार हूरों का

अभिप्राय ब्रह्मसृष्टियों से है। अपनी अल्पबुद्धि के कारण विकृत मानसिकता वाले लोग तारतम ज्ञान (इल्म ए लदुन्नी) के अभाव में उपरोक्त प्रकार का उल्टा अर्थ समझते हैं।

ए जो कुदरत गफलती, चौदे तबक की जहान।
ए फरेब नीके समझहीं, या दीन मुसलमान।।१६।।

चौदह लोकों का यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड माया के अन्धकार में भटका हुआ है। जो इस प्रपंचमयी जगत को अच्छी प्रकार से समझ लेता है, वही सच्चा मुसलमान है।

ए सब खेल खसम का, बनिआदम हैवान।
एकै नजरों देखहीं, या दीन मुसलमान।।२०।।

मनुष्य से लेकर पशु - पक्षियों का यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड परब्रह्म के आदेश से बना हुआ है। इसमें सभी प्राणियों को जो आध्यात्मिक दृष्टि से देखता है, वही वास्तव में सच्चा मुसलमान कहला सकता है।

भावार्थ - कुर्आन में 'रब्बिल आलमीन' का कथन इसी सन्दर्भ में है। स्वयं को मुसलमान कहलाने का दम्भ भरने वाले आतंकवादी यदि कुर्आन के इस कथन को समझ जाते तो निर्दोष स्त्रियों तथा बच्चों के खून से अपना हाथ नहीं रंगते और न मुस्लिम जगत में तैमूर लंग, बाबर, औरंगजेब और नादिर शाह जैसे रक्त पिपासु व्यक्ति पैदा होते।

न्यारा रहे सबन थें, ए जो बीच जिमी आसमान।
संग करे खुद दरदी का, या दीन मुसलमान।।२१।।

धरती और आकाश में स्थित १४ लोकों के ब्रह्माण्ड से जो स्वयं की दृष्टि को अलग रखता है, बेहद मण्डल और परमधाम से अपना सम्बन्ध रखता है, तथा स्वयं परब्रह्म के प्रति प्रेम रखने वालों की संगति में रहता है, वही सच्चा मुसलमान कहलाने के योग्य है।

भली बुरी किनकी नहीं, डरता रहे सुभान।
सोहोबत खूनी की ना करे, या दीन मुसलमान।।२२।।

एक सच्चा मुसलमान न तो किसी मानव की अनावश्यक महिमा गाता है और न किसी की निन्दा करता है। वह बूरे कर्म करने से डरता है, क्योंकि वह जानता है कि ऐसा करने से उसे अल्लाह का दण्ड भुगतना पड़ेगा। किसी का खून करना तो दूर की बात वह खून करने वाले किसी मनुष्य की संगति में भी रहना स्वीकार नहीं करता है।

भावार्थ - मनुष्य को यथार्थवादी होना चाहिए अर्थात् उसे सत्य को सत्य और झूठ

को झूठ कहना चाहिए। चक्रवर्ती सम्राट का भी कथन यदि सत्य के विपरीत हो तो शालीनता के साथ उसका विरोध अवश्य करना चाहिए। चाटुकारिता और निन्दा दोनों ही मनुष्य का दुर्गुण है।

यामें कोई ना बिराना अपना, ए देखे सब समान।
यासें न्यारे जाने मोमिन, या दीन मुसलमान।।२३।।

सच्चा मुसलमान संसार के सभी प्राणियों को एक समान देखता है। वह न तो किसी को पराया समझ कर द्वेष करता है और न अपना समझ कर मोह करता है। वह परमधाम के ब्रह्ममुनियों को संसारी मनुष्यों से पूर्णतया अलग समझता है।

ए जुदे नीके जानहीं, मोमिन मुस्लिम कुफरान।
पेहेचान जुदी सब रूहों की, या दीन मुसलमान।।२४।।

धर्म का निष्ठापूर्वक पालन करने वाला मुसलमान इस बात को अच्छी तरह से जानता है कि ब्रह्मसृष्टि (मोमिन), ईश्वरीय सृष्टि (फरिश्ते) तथा जीव सृष्टि तीनों भिन्न - भिन्न हैं। वह इन तीनों की अलग - अलग पहचान भी स्पष्ट रूप से जानता है।

मेहेर दिल मोमिन के, इस्क अंग रेहेमान।
दाग न देवे बैठने, या दीन मुसलमान।।२५।।

परमधाम के ब्रह्ममुनियों के हृदय में सबके प्रति स्नेह भरी कृपा का भाव होता है। उनके अंग - अंग में परब्रह्म के लिये प्रेम ही प्रेम भरा होता है। एक सच्चा मुसलमान वही है जो इनके पदचिन्हों पर चले और अपने हृदय में करूणा तथा प्रेम के विपरीत भाव को पैदा न होने दे अर्थात् अपने करूणा और प्रेम भरे हृदय पर दाग न लगने दे।

जो रूह होवे मुस्लिम, सो संग ना करे कुफरान।
आसिक खुद खसम की, या दीन मुसलमान।।२६।।

जिस मुस्लिम में ईश्वरीय सृष्टि की आत्मा होती है, वह नास्तिकों (काफिरों) की संगति नहीं करता है। एक सच्चा मुसलमान तो स्वयं को परब्रह्म के प्रेम में डूबो देता है।

भावार्थ - किसी नास्तिक की संगति में रहने से उसकी नास्तिकता के दोष स्वयं में आने का भय रहता है, इसलिये कुर्आन में नास्तिकों से दूरी रखने के लिये कहा गया है, क्योंकि उस समय अरब में धार्मिक शिक्षा की अच्छी व्यवस्था नहीं थी, किन्तु वर्तमान समय में दूसरे मतवालों को काफिर कहकर आन्तरिक रूप से उनसे घृणा करना और बूरे कर्मो में

लिप्त मुसलमानों से आत्मीयता रखना पक्षपात पूर्ण है और कुर्आन के मूल आशय के विपरीत है। इसी विकृत मानसिकता के कारण प्रायः अधिकतर मुसलमान न तो आतंकवादियों की खुलकर निन्दा करते हैं और न गोरी, गजनवी, बाबर, तैमूर लंग, औरंगजेब और फिरोजशाह तुगलक को अत्याचारी ही कहते हैं।

जो रूह भूली आप को, मुस्लिम कलमे पेहेचान।
तिनको वतन बतावहीं, या दीन मुसलमान।।२७।।

यदि कोई ईश्वरीय सृष्टि अपने स्वरूप को भूल गयी होती है तो एक सच्चे मुसलमान का कर्तव्य है कि उसको उसके अखण्ड घर की पहचान बताये।

भावार्थ - कुर्आन के बाह्य शाब्दिक ज्ञान को ही सर्वोपरि मानने वाले मुसलमान चार आकाश, सात आकाश या बहिश्तों की बातें तो करते हैं, किन्तु वे इनका आशय नहीं जानते। तारतम ज्ञान (इल्म ए लदुन्नी) से ही अखण्ड घर का ज्ञान हो सकता है। स्पष्ट है कि इस चौपाई का कथन उनके लिये है जिन्होनें श्री कुल्जुम स्वरूप का अनुशीलन किया है क्योंकि सामान्य मुसलमान तो बेहद या परमधाम के विषय में कुछ भी विशेष नहीं जानता। वह भी परब्रह्म को निराकार - निर्गुण और संसार के कण - कण में व्यापक मानता है।

साफ रखे सबों अंगों, ज्यों छींट ना लगे गुमान।
बांधे दिल गरीबी सों, या दीन मुसलमान।।२८।।

एक सच्चा मुसलमान अपने मन, चित्त तथा बुद्धि आदि को इतना निर्मल रखता है कि उसके उपर जरा सा भी अहंकार का प्रभाव नहीं पड़ता। वह अपने हृदय में हमेशा विनम्रता ही धारण किये रहता है।

रेहेवे निरगुन होए के, और निरगुन खान पान।
नजीक न जाए बदफैल के, या दीन मुसलमान।।२९।।

एक सच्चा मुसलमान साधारण वेशभूषा धारण करता है और अपना आहार पूर्णतया सात्विक रखता है, जो शाकाहारी होता है। वह बूरे कार्य करना तो दूर उसके निकट भी नहीं जाता है।

प्रश्न - कुर्आन में जब स्पष्ट रूप से मांस खाने का निर्देश है तो तारतम वाणी में एक मुस्लिम को मांस खाने से क्यों मना किया जा रहा है?

पा.२ सू. २ आ. १७३ ''इन्नमा हर्रम अलैकुमुल्मैतत वद्दम व लह्मल्खिन्जीरि व मा अुहिल्ल बिह लि गैरिल्लाहि फ मनिज्तुर्र गैर गागिव्व ला आदिन् फ ला इसम् अलैहि

इन्नल्लाह मफूरूर्रहीमुन्'' अर्थात् उसने तुम पर मरा हुआ (जानवर) और रक्त, और सूअर का गोस्त, और जिसको अल्लाह के सिवाय किसी और के लिए भेंट किया जाय तुम पर हराम किया है। फिर जो भूख से मजबूर हो परन्तु नाफर्मानी (अवज्ञा) करनेवाला और हद से बढ़ जानेवाला न हो तो उस पर पाप नहीं। बेशक अल्लाह बड़ा बख्शनेवाला बेहद मेहरबान हैं।

मा अय्युहन्नास कुलूमिम्मा.....इन्नहू लकुम अदुब्बुम्मुबीन'' और जो चीजे जमीन में हलाल पाक तैय्यब है, वे खाओ और शैतान के कदमों पर न चलो वो, तुम्हारा दुश्मन है।

''व म - सलुल्जी - न क - फरू क - म सल्लिजी ..... सुम्मम् बुक्मुन् अम्युन फहुम ला यअविलून ऐ ईमान वालों ! जो पाकीजा चीजें हमने तुमको आता फरमायी है, उनको खाओ और अगर खुदा के बंदे हो तो शुक्र भी अदा करो।

पा. १७ सू. २२ आ. ३० '' जालिक व मंय्युअजिज्म् हुरूमातिल्लाहि फहुव खैरूल्लहु इन्द रब्बिह व अुह्ल्लत् लकुमुल्-अन्आमु इल्ला मा युत्ला अलैकुम् फजतनिबुर्रिजस् मिनल्-औसानि वज्मनिबू कौलज्जूरि'' अर्थात् यह (हमारा हुक्म) सुन चुके! और जो आदमी अल्लाह की बांधी हुई अदब की हदों की इज्जत करे तो यह उसके परवरदिगार के यहाँ उसी के हक में अच्छा है। और सब चौपाये तुमको हलाल है सिवाय उनके जो तुमको (कुर्आन में) मना किये गये हैं और बुतों की गन्दगी से बचते रहो और झूठी बात से बचते रहो। अर्थात् यह और जो शख्स अदब की चीजों की और तुम्हारे लिऐ मवेशी हलाल कर दिये है तो बूतों की पलीदी से बचों, झूठी बात से बचो।

भावार्थ—पा.१७ सू.२२ आ.३७ ''लंय्यनालल्लाह लुहमुहा व ला दिमाअुहा वलाकिय्यानालुहुत् वा मिन्कुम कजालिक सख्खरहा लकुम् लितुकब्बिरूल्ला अला मा हदाकुम् व बश्शिरिल्-मुह्सनीन'' अर्थात् खुदा तक न उनका गोश्त पहुचता है और न खून, बल्कि उस तक तुम्हारी परहेजगारी पहुंचती है। इसी तरह खुदा ने उनको तुम्हारे ताबेऊ कर दिया है ताकि इस बात को बदले कि तुम को हिदायत बख्शी है। उसे बुजुर्गी से याद करो और नेकों को खुसखबरी सुना दो।

इस सम्बन्ध में कुर्आन के इस कथनों को भी ध्यान से देखना चाहिए-

जब रामायण का कथन है कि 'रामो द्वि न भाषते अर्थात् मर्यादा पुरूषोत्तम राम दो प्रकार की बातें नहीं कहते तो अक्षरातीत परब्रह्म (अल्लाहतआला) से यह कैसी अपेक्षा की

जा सकती है कि वह पा. १७ सू. २२ आ. ३० में तो सुअर को छोड़कर सभी चौपायों के मांस खाने का विधान करे और पा. १७ सू. २२ आ. ३६ में यह कहे कि मुझ तक पशुओं का मांस और रक्त नहीं पहुँचता केवल परहेजगारी ही पहूँचती है। ऐसी स्थिति में यही मानना चाहिए कि कुर्आन में जहां भी मांस खाने का प्रसंग है, वह प्रक्षिप्त है। कुर्बानी के सम्बन्ध में भी ऐसा ही समझना चाहिए।

प्यारा नाम खुदाए का, फेरे तसबी लगाए तान।
रात दिन लहे बंदगी, या दीन मुसलमान।।३०।।

एक सच्चा मुसलमान परब्रह्म के नाम को अति प्रिय मानकर एकाग्र मन से उसकी माला जपता है और दिन - रात उनकी बन्दगी में लगा रहता है।

दरदा ले द्वारे खड़ी, खसम की गलतान।
रूह लगी रसूलसों, या दीन मुसलमान।।३१।।

जिसकी आत्मा प्रियतम परब्रह्म के प्रेम में समर्पित हो जाती है, विरह की पीड़ा में अपने मूल घर को याद करती है और अपनी अन्तर्दृष्टि मुहम्मद स. अ. व. से जोड़े रखती है, उसे ही मुसलमान कहलाने का अधिकर है।

भावार्थः-'द्वार पर खड़े रहना' एक मुहविरा है, जिस का अर्थ होता है है परमधाम के ध्यान, चितवनी में डूबे रहना। उपरोक्त चौपाई में जो लक्षण बतायें गये हैं, वे या तो परमधाम के ब्रह्ममुनि सुन्दरसाथ में घटित हो सकते हैं, ये उच्च स्तर के सूफी फकीरों में। शरीयत की राह पर चलने वाले मुसलमान इस कसौटी पर खरे सिद्ध नहीं हो सकते।

हराम छोड़ हक लेवहीं, ए जो करी बयान।
आपा रखे आप वस, या दीन मुसलमान।।३२।।

एक सच्चा मुसलान सभी पाप कर्मो का त्याग करता है और उपरोक्त चौपाइयों में जिस सत्य धर्म का उल्लेख हुआ हैं, उसका पालन करता है। वह अपने मन को वश में करने का स्वाभिमान भी रखता है।

भावार्थ - कियामतनामा में कहा गया है कि 'जोलो कुछ आपा रखे, तोलों अखंड सुख ना चखे।' इस कथन में रूप, बुद्धि, धन और पद आदि का अहंकार रखने की बात कही गयी है जो अज्ञान रूप तमोगुण के कारण उत्पन्न होता है किन्तु सनद की उपरोक्त चौपाई में सात्विक भावनाओं के द्वारा ध्यान साधना के माध्यम से अपने मन को जीतने की बात कही है, जिसका स्वाभिमान होना चाहिए। इस प्रकार, एक ही 'आपा' शब्द का प्रसंगानुकूल दो प्रकार का अर्थ होता है। यह भी ध्यान देने योग्य तथ्य है कि स्वाभिमान

उन्नति का मूल है तथा अहंकार पतन का कारण ।

साफ दिल ईमान सों, करे बावन मसले अरकान।
ए बिने जाने इसलाम की, या दीन मुसलमान।।३३।।

एक सच्चा मुसलमान पवित्र हृदय और अटूट विश्वास से शरीयत के ५२ नियमों का पालन करता है। इन नियमों को वह इस्लाम की नींव मानता है।

भावार्थ - शरीयत के ५२ मसले इस प्रकार है -

१. कल्मा सच जानकर कहना २. कुरान (फरमान) के मायने लेना ३. रूह पाक करना ४. पांच वक्त की नमाज पढ़ना ५. दर्द खुदा के कहे को सच रखना ६. कुफ्र की बात न सुनना ७. करनी अपनी सिर ले के काम करना ८. आप की पहचान करना ९. रसूलल्लाह स० की पहचान करना १०. वतन की सुध लेना ११. रसूलल्लाह स० कहां से आए जानना १२. रसूल्लाह स० किस वास्ते आए १३ हमें खुदा ने भेजा है, ऐसा मानना १४. आया कौन इसको जानना १५. श ऊर करना १६. शब्द सच के लेना १७. सार वस्तु ओलखना १८. दिल पर मान न करना १९. कुदरत जानना २०. अन्दर यकीन रखना २१. दफे नजरों से देखना २२. सबसे न्यारा रहना २३. दर्दी का संग करना २४. भली - बूरी देखना नहीं २५. खुदा का डर रखना २६. खूनी की सोहबत न करना २७. बिराना बिगाना अपना जानना २८. सच का साथ २९. सच समान जानना ३०. मोमिनों को न्यारा जानना ३१.मोमिन मुस्लिम काफर जुदे जानना ३२. मेहर दिल रखना ३३. इश्क रखना ३४. दाग लगने न देना ३५. कुफर का संग न करना ३६. आशिकी खुदा की करना ३७. सब अंग साफ रखना ३८. गुमान न लाना ३९. गरीबी लेना ४०. निर्गुण रहना ४१. खान - पान निर्गुण रहना ४२. बदफैल न करना ४३. तस्बीह खुदा की फेरना ४४. रात - दिन बंदगी खुदा की करना ४५. दर्द रखना ४६. गलीत रखना ४७. रसूलल्लाह स० से रूह लगाना ४८. हराम छोड़ना ४९. हक हलाल लेना ५०. अपने आप को वश रखना ५१. दिल साफ रखना ५२. ईमान रखना।

मुस्लिम सारे केहेलावहीं, पर ना सुध हकीकत।
ना सुध रसूल ना खसम, ना सुध या गफलत।।३४।।

यद्यपि, शरियत पर चलने वाले सभी लोग स्वयं को मुसलमान कहलाने का दावा करते हैं, किन्तु उन्हें हकीकत (सत्य) मार्ग का बोध नहीं है। उन्हें न तो मुहम्मद स. अ. व. की ही वास्तविक पहचान है, न प्रियतम परब्रह्म की और न इस मायावी जगत की।

जो अंदर झूठी बंदगी, देखलावे बाहेर।
तिनको मुस्लिम जिन कहो, वह ख्वाबी दम जाहेर।।३५।।

जिनके मन में आन्तरिक भावनायें झूठी होती हैं और ऊपर से शरीयत की बन्दगी का दिखावा करते हैं उन्हें कभी भी मुसलमान नहीं कहना चाहिए। वह स्पष्ट रूप से माया का जीव (कुन्न की पैदाइश में से) है।

तो होए कबूल मुस्लिम, जो पोहोंचे मजल इन।
जोलों होए न हजूर बंदगी, खुले मुसाफ हकीकत बिन।।३६।।

जब तक किसी व्यक्ति को कुर्आन की हकीकत (सत्य ज्ञान) के रहस्य विदित नहीं होते तब तक वह इस स्तर पर नहीं पहुंच पाता कि वह हकीकत की बन्दगी कर सके, जो परब्रह्म (अल्लाह तआला) को स्वीकार होती है। ऐसा ही व्यक्ति मुस्लिम कहलाने का अधिकारी है।

भावार्थ - तरीकत की बन्दगी मात्र सूफी फकीर ही करते हैं जो रोजा, नमाज, हज, आदि से परे होकर रात्रि के अधिकांश भाग में परब्रह्म की भक्ति करते हैं। शेष सभी मुसलमान शरीयत की बन्दगी से ऊपर नहीं जा पाते। शरीयत और तरीकत में कितना अन्तर है, इसे शाह कलन्दर नामक सूफी फकीर के इस कथन से जाना जा सकता है -

न रख रोजा न मर भूखा, न सिजदा कर तूं मस्जिद में।
किताबें फेंक, तसवी तोड़, लगाकर इस्क के झाड़ू, हिरसे दिल को साफ कर'

स्पष्ट है कि इस चौपाई से लेकर आगे की चौपाईयों में जिन्हें मुस्लिम कहा गया है, उनका आशय उनसे है जो श्री प्राणनाथ जी की शरण में आकर तारतम ज्ञान के माध्यम से हकीकत और मारिफत के मार्ग पर चलना प्रारम्भ कर चुके हैं-

इसलाम बड़ा मरातबा, जो करे अपनी पेहेचान।
जुलमत नूर उलंघ के, पोहोंचे नूर बिलंद मकान।।३७।।

इस्लाम धर्म (श्री निजानन्द सम्प्रदाय) की महिमा बहुत अधिक है। इसमें निहित ज्ञान को आत्मसात् कर कोई भी व्यक्ति अपने आत्म-स्वरूप की पहचान कर सकता है तथा निराकार - बेहद को पार कर अक्षरातीत के परमधाम का दर्शन कर सकता है।

भावार्थ - खुदा के इस्लाम में जहाँ शान्ति का सन्देश है, वहीं कट्टरपन्थी मुल्लाओं के इस्लाम में हिंसा, आतंकवाद और शरीयत के बन्धन हैं। कुर्आन में तरीकत तक की बन्दगी का वर्णन है। श्री प्राणनाथ जी, की तारतम वाणी (श्री कुल्जुम) में कुर्आन की

हकीकत एवं मारिफत के ज्ञान के साथ - साथ इश्क बन्दगी का भी वर्णन है। इसके अतिरिक्त इसमें हिन्दू - धर्म ग्रन्थों के उन रहस्यों को उजागर किया गया है जिन्हें सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज दिन तक कोई भी जान नहीं सका था। श्री कुल्जुम स्वरूप में दर्शाये हुए मार्ग का अवलम्बन करके विश्व के प्रत्येक व्यक्ति का यह अधिकार है कि वह सच्चिदानन्द परब्रह्म तथा परमधाम का साक्षात्कार कर सकता है, भले ही वह किसी भी मत - पन्थ का मानने वाला क्यों न हो।

केहेलाए मुस्लिम पकड़े वजूद, पाँउ चले राह ऊपर।
क्यों न कटाए पुलसरातें, जो रसूलें देखाई जाहेर कर।।३८।।

जो लोग मात्र शरीयत का मार्ग अपनाकर मुस्लिम कहलाने का दावा करते है वे शरीर से होने वाली बन्दगी से उपर नहीं उठ पातें। यह मार्ग वैसा ही है जैसे कोई पैरों से आकाश में चलने का प्रयास करे। मुहम्मद साहब ने परमधाम के दर्शन के लिये इश्क और ईमान (प्रेम और अटूट विश्वास) का मार्ग दर्शाया है। इसके बिना शरीयत (पुलसिरात) के मार्ग पर चलने वालों के पांव ही कट जाते हैं अर्थात् वे चल नहीं पाते।

जिन दिल पर सैतान पातसाह, सो नापाक बड़ा पलीत।
खूंन करे खिन में कई, दिल पाक होए किन रीत।।३९।।

यह इब्लीश अर्थात् तमोगुण से ग्रसित अज्ञानमयी मन बहुत अपवित्र और नीच है। जिनके हृदय में इसका स्वामित्व होता है, वे परमधाम की राह पर नहीं चल सकते। जो मुसलमान एक क्षण में अनेक व्यक्तियों और प्राणियों की हत्या कर देते हैं, भला उनका दिल किस प्रकार से पवित्र हो सकता है?

भावार्थ - उपरोक्त चौपाई सम्पूर्ण मुस्लिम जगत को यह सन्देश दे रही है कि यदि आप निर्ममता पूर्वक निर्दोष प्राणियों की हत्या करते हैं और मात्र शरीयत का पालन कर लेने से अपने को मोमिन मान लेते हैं तो आप बहुत बड़े भ्रम के शिकार हैं। आप को परब्रह्म की कृपा से सर्वथा दूर ही रहना होगा।

दिल पाक जोलों होए नहीं, कहा होए वजूद ऊपर से धोए।
धोए वजूद पाक दिल, कबहूं ना हुआ कोए।।४०।।

जब तक परब्रह्म के प्रेम द्वारा हृदय पवित्र नहीं होता तब तक नमाज पढ़ने के लिये शरीर के अंगो को बार-बार धोने से कोई लाभ नहीं है। आज तक इस संसार में ऐसा कोई भी नहीं हुआ है, जिसने मात्र जल से शरीर धोकर अपने हृदय को पवित्र कर लिया हो।

भावार्थ - परब्रह्म की शोभा के ध्यान रूपी जल से स्नान करने पर ही हृदय पवित्र होता है। इस सम्बन्ध में तारतम वाणी का यह कथन बहुत ही महत्वपूर्ण है -

पाक न होइए इन पानिए, चाहिए अर्स का जल ।
नहाइयें हक के जमाल में, तब होइए निरमल ।। श्रृं. २४/६५

पाक हुआ दिल जिनका, तिन वजूद जामा पाक सब।
हिरस हवा सब इंद्रियां, तिन नहीं नापाकी कब।।४१।।

परब्रह्म के प्रेम से जिनका हृदय पवित्र हो जाता है, उनका वस्त्रों सहित सम्पूर्ण शरीर भी पवित्र हो जाता है। उनकी सभी इन्द्रियों तथा लौकिक इच्छाओं मे भी पवित्रता आ जाती है। उनमें कुछ भी अपवित्रता नहीं रह जाती।

भावार्थ - 'अद्भिः गात्राणि शुद्धयन्ति' मन के कथन के अनुसार जल से शरीर के बाह्य अंगो की शुद्धि होती है। जल आदि सात्विक पदार्थो के सेवन से मन - बुद्धि में कुछ देर के लिये शुद्धि आती है। परब्रह्म का प्रेममयी ध्यान ही वह साधन है, जिसमें हृदय सहित शरीर का रोम - रोम भी पवित्र हो जाता है।

हलाल हलाल सब कोई कहे, पूछो हादी सिरदार।
जिन दिल हुआ अर्स हक का, तिन दुनी करी मुरदार।।४२।।

संसार में प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्य को धर्मानुकूल ही कहता है किन्तु इसका निर्णय तो ब्रह्ममुनियों के प्रियतम श्री प्राणनाथ जी से कराना चाहिए। तारतम ज्ञान के उजाले में ब्रह्ममुनियों का हृदय ही परब्रह्म का धाम बन गया होता है और वे इस संसार के समस्त विषय सुखों को नश्वर समझ कर छोड़ दिये होते हैं।

दिल अर्स मोमिन कह्या, तित आए हक सुभान।
सो दिल पाक औरों करे, जाए देखो मगज कुरान।।४३।।

ब्रह्ममुनियों का हृदय ही परब्रह्म का धाम कहलाता है जिसमें परब्रह्म का स्वरूप विराजमान होता है। ऐसे हृदय की सानिध्यता में रहने वाला भी पवित्र हो जाता है। कुर्आन की यह गुह्य बात है, जिन्हें देखना हो वे कुर्आन पढ़ कर देख लें।

पांउ तो कोई ना भर सक्या, उमेद करी सबन।
सो महंमद मेंहेदी आए के, नीयत पोहोंचाई तिन।।४४।।

कुर्आन पाक में बतायी हुई मुस्लिम की इस रहनी को कोई भी मुसलमान पूर्ण रूप से आचरण में नहीं ला सका था। सभी आखरूल इमाम मुहम्मद महदी श्री प्राणनाथ जी के

आगमन की ही प्रतीक्षा में बैठे रहे। अतः अब श्री प्राणनाथ जी ने आकर उनकी इच्छा को पूर्ण किया और उन्हें बहिश्तें प्रदान की।

ए कलमा जिन कानो सुन्या, ताए भी देसी सुख।
तो मुस्लिम का क्या केहेना, जो हक कर केहेवे मुख।।४५।।

तारतम वाणी (श्री कुल्जुम स्वरूप) की मधुर ध्वनि जिसके कानों में पड़ जाती है, उसे भी आत्मिक सुख प्राप्त होता है। ऐसी स्थिति में परब्रह्म पर अटूट आस्था रखने वाले उन सुन्दरसाथ के सुख का वर्णन कैसे किया जा सकता है जो तारतम ज्ञान को परम सत्य मानकर अपने मुख से उच्चारित करते है?

भावार्थ – इस प्रकरण में इस चौपाई सहित आगे की सभी चौपाईयों में 'कल्मा' का अर्थ तारतम ही होगा। यद्यपि 'कल्मे' और गायत्री मन्त्र में एक अक्षरातीत की ही पहचान है, किन्तु वह स्पष्ट नहीं है। यही कारण है कि संसार 'कल्मे' और 'गायत्री मन्त्र' पर श्रद्धा रखकर कुर्आन तथा वेद का गहन चिन्तन करके भी उस लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सका जो आगे की चौपाईयों में दर्शाया गया है।

यह सर्वविदित है कि बाबर, गोरी, गजनवी तथा अहमद शाह अब्दाली नियमित रूप से नमाज पढ़ते थे। आज के आतंकवादी भी निष्ठापूर्वक नमाज पढ़ते हैं। इसी प्रकार रावण भी वेदों का पण्डित था। कंस, दुर्योधन आदि भी हवन आदि किया करते थे किन्तु इनमें कोई भी न तो परम तत्व (परब्रह्म) का ज्ञाता था और न किसी की अखण्ड मुक्ति हुई।

'धनी आए वेद कतेब छुडावने' खुलासा १३/६३ की इस उक्ति के अनुसार अब श्री कुल्जुम स्वरूप ही आखिरी वेद (स्वसं वेद) तथा हकीकत मारिफत का आखिरी कुर्आन है। वस्तुतः तारतम ही वह दिव्य ज्ञान है, जिससे परब्रह्म की प्रत्यक्ष पहचान होती है। परब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथ जी तथा ब्रह्ममुनियों के अवतरण के पश्चात् वेद और कुर्आन साक्षी ग्रन्थ अवश्य हैं, किन्तु इनके गुह्य रहस्य उस कुल्जुम स्वरूप में निहित है, जिससे सारे संसार को अखण्ड मुक्ति प्राप्त होनी है।

ए कलमा जिन जिमिऐं, किया होए पसार।
तिन जिमी के लोक को, जिन कोई कहो कुफार।।४६।।

तारतम ज्ञान का प्रकाश धरती के जिस भाग पर हो जाय, वहां के लोगों को कभी भी काफिर (कृतघ्न) नहीं कहना चाहिए।

भावार्थ – इस चौपाई में शरिअत का पालन करके स्वयं को सर्वोपरि समझने वाले

उन मुसलमानों के लिये यह स्पष्ट संदेश है कि वे कुर्आन में सांकेतिक रूप से दर्शाये हुए हकीकत - मारिफत के मार्ग पर चलने वाले हिन्दुओं (सुन्दरसाथ) को काफिर कहने का अपराध न करें। यदि वे ऐसा करते हैं तो परब्रह्म (अल्लाह तआला) की दृष्टि में बहुत बड़े अपराध (गुनाह) के भागी हैं।

बांग आवाज कानों सुनी, कुफर कहिए क्यों ताए।
सो रूह आखिर कजा समें, औरों भी लेसी बचाए।।४७।।

जिसके कानों में सन्ध्या आरती की भी मधुर ध्वनि गूंज जाती है, उसे भी काफिर नहीं कहा जा सकता। ऐसे व्यक्ति की संगति में रहने वाले दूसरे लोग भी न्याय के दिन दोजक (प्रायश्चित) की अग्नि में जलने से बच जायेंगे।

भावार्थ - अष्ट प्रहर की सेवा - पूजा में परमधाम की शोभा तथा लीला का जो वर्णन है, उसका थोड़ा सा भी प्रकाश किसी भी माध्यम से यदि किसी को प्राप्त हो जाता है तो वह अखण्ड मुक्ति का अधिकारी बन जायेगा।

इन कलमें के सब्द से, सब छूटेगा संसार।
तो कहा कहूं मैं तिनको, जिन पेहेचान कह्या नर नार।।४८।।

तारतम ज्ञान के प्रकाश को आत्मसात् कर यह सारा ब्रह्माण्ड अखण्ड मुक्ति को प्राप्त करेगा। किन्तु जो लोग श्री कुल्जुम स्वरूप का चिन्तन करके परब्रह्म की पहचान करेंगे और तारतम ग्रहण करेंगे (परब्रह्म के प्रति स्वयं को समर्पित करेंगे) उनके अखण्ड सुख का वर्णन मैं कैसे करूं?

ए कलमा इन दुनी का, सब दुख करसी दूर।
तिनको भी भिस्त होएसी, जिनके नहीं अंकूर।।४९।।

यह तारतम ज्ञान इस संसार के सभी दुःखों को दूर करेगा। जिन जीवों में ब्रह्मसृष्टि या ईश्वरीय सृष्टि की सूरत नहीं हैं, उन्हें भी बेहद मण्डल की अखण्ड बहिश्तों का सुख मिलेगा।

भावार्थ - संसार के सभी दुःखों का कारण विषय भोग की तृष्णा है और तृष्णा का कारण अज्ञान है। तारतम ज्ञान अज्ञानता के अन्धकार का नाश करता है और हृदय में परब्रह्म के प्रति अटूट प्रेम और विश्वास उत्पन्न करता है। जिसके हृदय में परब्रह्म की छवि विराजमान हो, उसे भला संसार के दुःख कैसे प्रभावित कर सकते है?

तबक चौदे जो कोई, रूह होसी सकल।
इन कलमें की बरकतें, तिन सुख होसी नेहेचल।।५०।।

चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में जो भी ब्रह्मसृष्टि या ईश्वरीय सृष्टि की आत्मा होगी, वह तारतम ज्ञान की कृपा से अपने अखण्ड घर के सुख का रसपान करेगी।

दीन होए के चलसी, दरदी रसूल रेहेमान।
बोहोत कह्या है रसूलें, ताकी नेक करी है बयान।।५१।।

परब्रह्म तथा मुहम्मद स. अ. व. के प्रेम में डूबा एक एक सच्चा मुसलमान बहुत विनम्र होकर अपना जीवन यापन करेगा। इस प्रकार सच्चे मुसलमान के सम्बन्ध में मुहम्मद स. अ. व. साहब ने बहुत कुछ कहा है। उसमें से मैनें थोड़े से ही अंश का वर्णन किया है।

ए तो जाहेर की कही, अब गुझ कहूंगी तुम।
जो बयान रसूलें ना किए, मोमिन वतन खसम।।५२।।

इस संसार में परब्रह्म के प्रति अटूट विश्वास एवं प्रेम रखने वालों का आचरण कैसा होना चाहिए इस सम्बन्ध में मैनें अब तक थोड़ा सा कहा है। अब मैं आपसे परब्रह्म परमधाम तथा ब्रह्ममुनियों के सम्बन्ध में कहूंगा जिसे मुहम्मद स. अ. व. ने छिपाये रखा और वर्णन नहीं किया।

गुझ माएने कौन लेवहीं, जो जाहेर लिए न जाए।
ए सब खोले रसूलें, जो मैं दिए बताए।।५३।।

जब संसार के जीव कुर्आन के बाह्य अर्थों को ही उचित रूप से नहीं समझ सके तो गुह्य अर्थों (हकीकत - मारिफत) को भला कैसे समझ सकते हैं? यद्यपि मुहम्मद स. अ. व. ने कुर्आन में सांकेतिक रूप से उन रहस्यों को प्रकट किया है, जो मैं अब स्पष्ट रूप से बता रहा हूं।

भावार्थ - कुरान पारः २ सयकूल, सूरः बक्र २ आयत २०९-२११''फ इन् जलल्तुम् मिम्बड़्दि मा जाअत्कुमुल्-बय्यिनातु फड़्लमू अन्नल्लाह अजीजुन् हकीमुन्''(२०९) '' सल् बनी इस्राइल कम् आतैनाहुम् मिन् आयतिम्-बय्यिनतिन् व मंय्युबद्दिल निड़्मतल्लाहि मिम्बड़्दि मा जाअत्ह फ इन्नल्लाह शदीदुल्-इकाबि''(२११)

अर्थात् फिर जब की तुम्हारे पास साफ हुक्म पहुँच चुके और इस पर भी डगमगा जाओ तो जान रखो कि अल्लाह बड़ा जबरदस्त और बड़ा हिकमतवाला है, (ऐ पैगम्बर!) याकूब की सन्तान से पूछो कि हमने उनको कितनी खुली हुई निशानियाँ दे रखी थीं। और जो कोई शख्स अल्लाह की निअमत को बाद उसके पहुँचने के बदल डाले, तो अल्लाह बेशक बड़ी सख्त सजा देनेवाला है।

कोई जाहेर ना ले सके, तो गुझ होसी किन पर।
हम जो लिए जाहेर, नेक ए भी सुनो खबर।।५४।।

जब कोई भी कुर्आन के बाह्य अर्थो को नहीं ले सका तो गुह्य अर्थ किनके लिये है? निश्चित ही ब्रह्ममुनियों के लिये है। हमने कुर्आन के बाह्य अर्थो को यथार्थतः ग्रहण किया है, जिसके विषय में आप थोड़ा सा सुनिए।

।।प्रकरण।।२१।।चौपाई।।६१६।।

सनंध–अर्स अरवाहों के लछन

इस प्रकरण में परमधाम के ब्रह्ममुनियों के लक्षणों का वर्णन किया गया है –

गुझ तो तुमको कहूंगी, सक न राखूं किन।
पर पेहेले कहूं नेक मोमिनों, जो हमारा चलन।।१।।

श्री महामति जी की आत्मा कहती है कि हे साथ जी! कुर्आन के गुह्य रहस्यों को तो मैं अवश्य कहूंगी जिससे आपके अन्दर किसी भी प्रकार का संशय न रह जाय, किन्तु इससे पहले मैं ब्रह्ममुनियों के लक्षणों या आचरण के सम्बन्ध में थोड़ा सा प्रकाश डालना चाहती हूं।

भावार्थ – 'श्री महामति जी कहते हैं या 'श्री महामति जी की आत्मा कहती है ' इन दोनों वाक्यों का आशय एक ही है, क्योंकि हिन्दी भाशा में आत्मा शब्द स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होता है और शरीर पुल्लिंग में मिहिरराज शरीर का नाम है, जिसमें विद्यमान परमधाम की श्री इन्द्रावती जी की आत्मा को 'महामति' नाम की शोभा मिली है।

बयान किए जो रसूलें, हम सोई लिए जाहेर।
लाख बेर कह्या रसूलें, जन जन सों लर लर।।२।।

मुहम्मद साहब ने कुर्आन में जो कुछ भी कहा है, हमने अभी तक उसके बाह्य अर्थ

को ही लिया है। इन बातों को उन्होंने एक - एक व्यक्ति से अनेकों बार समझा - समझाकर कहा है।

भावार्थ - लड़ - लड़कर कहने का अर्थ है - बार बार आग्रह पूर्वक समझाना। लाख बार कहने का भाव अतिश्योक्ति अलंकार की भाशा में है, जिसका तात्पर्य है - अनेकों बार।

कोट बेर जाहेर सबों, रसूलें फुरमाया जेह।
सो कलमा सिर लेए के, पांउ भरे हम एह।।३।।

मुहम्मद स. अ. व. ने लोगों से प्रत्यक्ष रूप में करोंड़ो (अनेकों) बार जिस कल्मे के विषय में कहा है, उसी कल्में को शिरोधार्य करके हमने इस संसार में अपना आचरण (रहनी) किया है।

भावार्थ - 'करोड़ों' बार का कथन अतिश्योक्ति अलंकार की भाषा है। इसी प्रकार पांव भरना एक मुहाविरा है जिसका अर्थ होता है - आगे बढ़ना या आचरण में लाना।

बड़ा जाहेर ए माएना, कहे हक पे ल्याया फुरमान।
इन कलमे की दोस्ती, कह्या मिलसी रेहेमान।।४।।

प्रत्यक्ष रूप से इस कल्मे का आशय बहुत बड़ा है। मुहम्मद स. अ. व. कहते है कि मैं परब्रह्म के यहां से यह आदेश पत्र कुर्आन लेकर आया हूं। जो इस कल्में के प्रति श्रद्धा (प्रेम) रखेगा, उसे परब्रह्म की प्राप्ति होगी।

भावार्थ - जिस प्रकार कुर्आन में शरीयत तथा तरीकत का ज्ञान है, और परब्रह्म की पहचान के लिये कल्मा है, उसी प्रकार इस सनद (सनन्ध) ग्रन्थ में कुर्आन की हकीकत (सत्य) का ज्ञान है तथा परब्रह्म की पहचान के लिये तारतम है।

लगभग वि. सं. १७३४ में मेड़ते में मुल्ला के द्वारा अजान (बांग) दिये जाने पर महमत रूहुल्लाह अ. त. फ. श. (श्री महामति) जी को तारतम और कल्मे में एकरूपता का बोध हुआ। कालान्तर में वि. सं. १७३६ में अनूपशहर में सनद ग्रन्थ के अवतरण के पश्चात् सब सुन्दरसाथ को यह पूर्ण विश्वास हो गया कि श्री प्राणनाथ जी ही आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जमां है और ये अज्ललाह तआला फर्जहुवल शरीफ साक्षात् परब्रह्म स्वरूप है। यद्यपि सूरत में भी भीम भाई के नेतृत्व में सब सुन्दरसाथ ने उनकी पहचान करके उनकी आरती भी की थी किन्तु सनद के अवतरण के पश्चात् होने वाली पहचान कुछ विशेष थी। उपरोक्त चौपाई के चौथे चरण का यही आशय है।

खातिर तुम अर्स मोमिन, मैं ल्याया हक फुरमान।
कौल करत हों तेहेकीक, इत ल्याऊं बुलाए सुभान।।५।।

हे परमधाम के ब्रह्ममुनियों! मै तुम्हारे लिये परब्रह्म का आदेश पत्र कुर्आन लेकर आया हूं। मैं आपको यह वचन देता हूं कि मैं निश्चित् रूप से इस संसार मे उस परब्रह्म को अपने साथ लेकर आउंगा।

जो किनहूं पाया नहीं, ना कछू सुनिया कान।
तिन का जामिन होए के, मैं इत मिलाऊं आन।।६।।

मैं इस बात की साक्षी देता हूं (जमानत लेता हूं) कि जिस सच्चिदानन्द परब्रह्म के विशय में आज तक किसी ने अपने कानों से न तो सुना है और न किसी ने प्रत्यक्ष दर्शन किया है, मैं उन्हे अपने साथ लाकर आपसे मिलाउंगा।

भावार्थ – यद्यपि धर्मग्रन्थों में अक्षरातीत की महिमा का वर्णन तो है किन्तु धाम और स्वरूप की पहचान न होने से उपरोक्त चौपाई में यह कहा गया है कि उसके विषय में आज तक किसी ने भी कुछ सुना नहीं है।

अब रूहें जो अर्स मोमिन, तिन कहा चाहियत है और।
रसूल कहे जानो हक, काजी कजा होसी इन ठौर।।७।।

अब जो परमधाम की ब्रह्मात्माएं हैं उन्हें और क्या चाहिए? कुर्आन में निहित मुहम्मद साहब का सन्देश यह स्पष्ट घोशणा कर रहा है कि ब्रह्ममुनियों! स्वयं परब्रह्म ही श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में न्यायाधीश बनकर इस संसार में न्याय करने के लिये आये हुए हैं। उनकी पहचान कर लो।

जाहेर हक देखाइया, हम लिए माएने ए।
एही कलमा रसूल का, हम सिर चढ़ाया ले।।८।।

मुहम्मद स. अ. व. के कल्मे से हमने यही आशय निकाला कि यह प्रत्यक्ष रूप से इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी की पहचान करा रहा है। हम सब ब्रह्मात्माओं ने अब कल्मे के कथन को शिरोधार्य कर लिया है।

जाहेर दुलहा छोड़के, ढूंढ़त माएने गुझ।
ए खोज तिनों की देख के, होत अचम्भा मुझ।।९।।

श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में आये हुए साक्षात् प्रियतम परब्रह्म को छोड़कर जो

अपनी लौकिक बुद्धि से कुर्आन के गुह्य अर्थ जानने का प्रयास कर रहे हैं, उनकी इस खोज को देखकर मुझे बहुत आश्चर्य हो रहा है।

भावार्थ - उपरोक्त चौपाई को पढ़ कर यह संशय होता है कि अब तक कुर्आन के गुह्य भेदों को श्री प्राणनाथ जी के द्वारा स्पष्ट किये जाने की बात की जा रही थी किन्तु इस चौपाई में अब किनके द्वारा गुह्य अर्थो को खोजने के प्रयास का प्रसंग है?

वस्तुतः इमाम महदी का एक हिन्दू तन में आना कट्टर पन्थियों को स्वीकार नहीं था, इसलिये वे अपनी लौकिक बुद्धि से कुर्आन का ऐसा अर्थ चाहते थे जिससे यह स्पष्ट हो कि वे ही कुर्आन के गुह्य अर्थो के मर्मज्ञ है और इमाम महदी मात्र मुसलमानों में ही आयेंगे। आगे की ११ वीं चौपाई से यह स्पष्ट हो जायेगा।

हम याही फुरमान के, लिए माएने जाहेर।
रूह बांधी रसूल सों, जिन हक की कही खबर।।१०।।

श्री महामति जी कहते है कि हमने तो कुर्आन के बाह्य अर्थों को ही अभी लिया है जिससे इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी की पहचान हो गयी है। किन्तु ऐसा इसलिये हुआ क्योंकि हमने आत्मिक दृश्टि से मुहम्मद स. अ. व. के स्वरूप की पहचान की और उन्होंने हमें श्री प्राणनाथ जी की पहचान दी।

हाथ पकड़ देखावहीं, आप आए दरम्यान।
ए छोड़ और जो ढूंढहीं, तिन दिल आंख न कान।।११।।

अब स्वयं मुहम्मद साहब मेरे धाम हृदय में आकर विराजमान हो गये हैं और सबका हाथ पकड़ कर अर्थात् स्पष्ट रूप से श्री प्राणनाथ जी की पहचान दे रहे हैं। इन्हें छोड़कर जो परब्रह्म को कहीं और ढूढ़ रहे है उनके लिये तो बस इतना ही कहा जा सकता है कि न तो उनके पास दिल है जिसमें वे उन्हें बसा सकें, न आखें हैं, जिससे वे श्री जी का दर्शन कर सके और न कान ही हैं, जिससे उनके मुख से निकले हुए अमृतमयी वचनों का श्रवण कर सकें।

भावार्थ - श्री महामति जी के धाम हृदय में तीनों सूरतें विराजमान है। अक्षर ब्रह्म की आत्मा ही अरब में बसरी सूरत के रूप में आयी थी। उपरोक्त चौपाई के दूसरे चरण का यही अभिप्राय है।

मोमिन थे सो समझे, ए तो सीधा कह्या महंमद।
ना मैं जिमी आसमान का, खबर जो ल्याया खुद।।१२।।

मुहम्मद स. अ. व. ने कुर्आन में सीधे और सरल शब्दों में कहा है कि न तो मैं इस धरती का हूं और न आकाश का अर्थात् मैं चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड या निराकार मण्डल का नहीं हूं। मैं स्वयं परमधाम से परब्रह्म का संदेश लेकर आया हूं। उनके इस कथन को मात्र ब्रह्मात्माओं ने ही समझा।

और माएने सो ढूंढ़हीं, ठौर ना जाको दिल।
रसूल रहीम मिलावहीं, और ढूंढ़े कहा बे अकल।।१३।।

जिनके हृदय मे मुहम्मद साहब के प्रति विश्वास नहीं है, वे ही इधर - उधर ढूढ़ रहे हैं। जब स्वयं रसूल साहब ही आखरूल इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी की पहचान करा रहे हैं तो ये बुद्धि हीन लोग कहां ढूढ़ रहे हैं?

हम तो एही हक किया, जाहेर रसूल बोल।
ए छोड़ और ना देखहीं, हम एही लिया सिर कौल।।१४।।

हमने तो मुहम्मद स. अ. व. के प्रत्यक्ष कथनों को ही सत्य माना और उसे शिरोधार्य किया। उनके वचनों को छोड़कर हमने और कहीं खोजने का प्रयास नहीं किया।

भावार्थ - सम्पूर्ण इस्लामिक जगत इमाम महदी अ. त. फ. श. के आने की राह देख रहा है। कुर्आन पाक के कथनों से ग्यारहवीं सदी में कियामत आने और इमाम मेंहदी का प्रकट होना सिद्ध होता है किन्तु कट्टरता और संकीर्णता उन्हें एक हिन्दुस्तानी तन में इमाम महदी साहिबुज्जमां की पहचान नहीं होने देती।

पा. १७ सू. २२ आ. ४७ "व यस्तऽजिलुनक बिल्अजाबि व लंय्युख्लिफल्लाहु वऽदहु व इन्न यौमन् इन्द रब्बिक कअल्फि सनतिम्मिम्मा तअुद्दुन" अर्थात् और (ऐ पैगम्बर!) तुमसे सजा की जल्दी मचा रहे हैं (कि कहाँ है तुम्हार खुदाई अजाब?) और अल्लाह तो कभी अपना वादा खिलाफ करने का नहीं। और कुछ शक नहीं कि तुम्हारे परवरदिगार के यहां का एक दिन तुम लोगों की गिनती के अनुसार हजार वर्ष के बराबर है।

पा.२२ सू.३४ आ.२९/३० "व यकूलून मता हाजल्वऽदु इन् कुन्तुम् सदिकीन"(२९) "कुल् लकुम् ल मीआदु यौमिल्ला तस्तअ्खिरून अनुहु साअतंव्व ला तस्तक्दिमून"(३०) अर्थात् और ये काफिर तुमसे पूछते हैं कि बताओ अगर तुम सच्चे हो

तो ये कियामत का वादा कब पूरा होगा। कह दो कि तुम्हारे साथ एक दिन का वादा नियत है। तुम न उसके एक घड़ी पीछे रह सकोगे और न आगे बढ़ सकोगे।

यथा - आप से एक दिन का वायदा है जो एक घड़ी कम या ज्यादा कियामत नहीं होगी, ईमान वाले खुदा से डरो कि उसने कल के लिये क्या भेजा है? खुदा तआला का एक दिन दुनिया के हजार वर्षों के बराबर है। अतः सर्वसिद्ध है कि एक हजार हिजरी में कियामत हजरत ईसारूहुल्लाह, इमाम मुहम्मद महदी साहबुज्जमां का जहूर इमाम महमत रूहुल्लाह अल्लाह तआला फर्जहु शरीफ के रूप में हो गया परन्तु गैब तुल सुगरा व कुबरा की वजह से संसार के व्यक्ति आसपास होते हुए भी उनके तन को पहचान नहीं सकें।

एही हमारा आकीन, हम लिया हक कर।
आकीन कह्या रसूल का, सब देखावे नजर।।१५।।

मुहम्मद स. अ. व. के कथनों पर हमारा अटूट विश्वास रहा है। हमने उनके कथनों को पूर्णतः सत्य माना और उन्हें शिरोधार्य किया। उनका सत्य कथन ही हमें यथार्थता की पहचान करा रहा है।

भावार्थ - कट्टरपन्थी लोग मात्र बाह्य रूप से ही कुर्आन तथा मुहम्मद स. अ. व. के प्रति अपना विश्वास दिखाते हैं। वे कुर्आन की व्याख्या अपने राजनैतिक एवं स्वार्थी हितों के लिये करते हैं। निष्पक्ष सत्य को स्वीकार कर पाना इनके लिये सम्भव नहीं होता।

देखाया रसूल ने, सो लीजो आप चेतन।
अंकूर अपना देखिए, ज्यों याद आवे वतन।।१६।।

हे ब्रह्ममुनियों (मोमिनों) ! मुहम्मद स. अ. व. ने जो सत्य मार्ग दिखाया है। उसे आप सावचेत होकर ग्रहण कीजिए। प्रियतम परब्रह्म से अपने मूल सम्बन्ध की पहचान कीजिए जिससे आपको अपने मूल घर परमधाम की याद आये।

जिन खातिर ए रसूल, ले आया फुरमान।
हम ले आकीन चले जिन बिध, नेक ए भी करूं बयान।।१७।।

ब्रह्मात्माओं को परमधाम, अक्षरातीत तथा उनके स्वरूप आदि की साक्षी देने के लिये मुहम्मद स. अ. व. कुर्आन लेकर आये। हमने भी उस पर विश्वास करके उनके जैसा आचरण किया है। थोड़ा सा उसके विशय में भी मैं वर्णन कर रहा हूँ।

अर्स अरवाहें मेरी बोहोत हैं, नेक तिनके कहूं लछन।
वतन हक आप भूलियां, तो भी मोमिन एही चलन।।१८।।

परमधाम की मेरी बहुत सी आत्मायें हैं, फिर भी उनकी पहचान के लिये मैं उनके कुछ लक्षणों का वर्णन करता हूँ। यद्यपि वे इस संसार में प्रियतम परब्रह्म को तथा स्वयं के स्वरूप को भूल गयी है फिर भी उनका व्यवहार वैसा ही होगा, जैसा मैं कह रहा हूं।

अर्स अजीम की जो रूहें, तिनकी ए पेहेचान।
जो कदी भूली वतन, तो भी नजर तहां निदान।।१९।।

निराकार-बेहद से परे परमधाम की जो आत्मायें हैं, उनकी मैं थोड़ी सी पहचान बताती हूँ। कदाचित् वह परमधाम को भूल भी गयी होती हैं, तो भी उसकी अन्तर्दृष्टि परमधाम की ओर ही केंद्रित होती है।

भावार्थ- आत्मा जब जीव पर बैठ कर खेल को देख रही होती है, तो जीव भाव को ग्रहण कर वह अपने मूल स्वरूप और मूल घर को भूल जाती है। वह अन्य जीवों की देखा-देखी देवी-देवताओं की भले ही पूजा करने लगती हो तथा स्वर्ग,बैकुण्ठ या निराकार को अपना घर मानने लगती हो परन्तु उसके हृदय से यह पुकार आती रहती कि न तो यह तुम्हारा घर है और न ये तुम्हारे प्रियतम हैं।

आसिक खुद खसम की, कोई प्रेम कहो विरहिन।
ताए कोई दरदन कहो, ए बिध अर्स रूहन।।२०।।

ब्रह्मसृश्टियां प्रियतम अक्षरातीत की प्यारी अंगनायें होती हैं। ये धाम धनी से प्रेम करती हैं। इन्हें प्रेमी या विरहिणी भी कहते हैं। इनके हृदय में हमेशा ही प्रियतम के प्रेम का मीठा दर्द (मधुर पीड़ा बनी रहती हैं) बना रहता है। परमधाम की ब्रह्मात्माओं के ये मुख्य लक्षण हैं।

रूह खसम की क्यों रहे, आप अपने अंग बिन।
पर हकें पकड़ी अंतर, ना तो रहे ना तन।।२१।।

अक्षरातीत की अंगनायें उनकी अंग रूपा हैं, इसलिये वे अपने प्राण वल्लभ के बिना कैसे रह सकती हैं?प्रियतम ने आन्तरिक रूप से उन्हें संभाला होता है, अन्यथा धनी की पहचान हो जाने पर वे उनके विरह में अपना तन ही छोड़ देती।

ऊपर काहूं ना देखावहीं, जो दम न ले सके खिन।
सो आसिक जाने मासूक की, एही मोमिन विरहिन।।२२।।

ये आत्मायें पल भर के लिये भी प्रियतम परब्रह्म का विरह सहन नहीं कर पाती हैं और अपने तन को छोड़ देने की इच्छा करती हैं किन्तु बाह्य रूप से कभी भी अपने विरह प्रेम का प्रदर्शन नहीं करतीं। उनके विरह - प्रेम को या तो वे स्वयं जानती है या उनके प्राणनाथ। अन्य किसी तीसरे व्यक्ति को उनके प्रेम की जरा भी जानकारी नहीं हो पाती। परब्रह्म के विरह में तड़पने वाली ब्रह्मात्माओं की यही पहचान है।

मोमिन आकीन ना छूटहीं, जो पड़े अनेक विघन।
आसिक मासूक वास्ते, जीव को ना करे जतन।।२३।।

इस मायावी जगत में भले ही कितने भी कष्ट क्यों न आ जायें किन्तु ब्रह्मसृश्टियों का अपने धाम धनी पर अटूट विश्वास बना ही रहता है। अपने प्रियतम के लिये ब्रह्मात्मायें अपने जीव के तन को त्यागने या किसी भी प्रकार का कष्ट सहने में कोई भी संकोच नहीं करती हैं।

रेहेवे निरगुन होए के, और आहार भी निरगुन।
साफ दिल रूह मोमिन, कबहूं न दुखावे किन।।२४।।

परमधाम की आत्मायें मोहित करने वाले लौकिक विषय सुखों (शब्द, स्पर्श, रूप, रस तथा गन्ध) के भोग से सर्वथा रहित होती हैं और उनका आहार भी अत्यन्त सात्विक होता है। उनका हृदय अत्यन्त निर्मल होता है तथा वे मन, वाणी एवं कर्म से किसी के भी हृदय को दुःखी नहीं करती हैं।

भावार्थ- त्रिगुणातीत प्रेम मार्ग का अनुसरण करने के लिए सात्विक स्वभाव का होना अनिवार्य है। इसके लिये भोजन भी सात्विक होना चाहिये, क्योंकि 'आहार शुद्धौ सत्व शुद्धिः'अर्थात् आहार के शुद्ध होने पर ही बुद्धि शुद्ध होती है। बुद्धि के अनुसार ही चित्त के संस्कार (सात्विक,राजस एवं तामस) उभरते हैं और उन्हीं के निर्देश पर मन अपना कार्य करता है। इस प्रकार यह सिद्ध है कि बिना आहार शुद्धि के अध्यात्म के पवित्र मार्ग पर नहीं चला जा सकता। राजसिक और तामसिक आहार का सेवन मनुष्य की बुद्धि को मलिन करके अपने अनुकूल बना लेता है जिससे जीव का उत्तरोत्तर पतन होने लगता है।

गीता अ. १६ श्लोक ७,८,१९ में सात्विक, राजसी एवं तामसी भोजन, का वर्णन किया गया है- आयु, सत्व, बल, आरोग्य, सुख तथा रसास्वादन की शक्ति बढ़ाने वाले, रस युक्त, चिकने, स्थिरता प्रदान करने वाले, हृदय को मधुर लगने वाले शक्ति वर्धक आहार सात्विक लोगों को प्रिय होते हैं। कड़वे, खट्टे, अत्यधिक नमकीन, बहुत गरम, तीक्ष्ण, रूखे

और जलन पैदा करने वाले आहार रजोगुणी लोगों को प्रिय होते हैं।

ये आहार दुःख शोक तथा रोग को देने वाले होते हैं। जो सारहीन, रसहीन, दुर्गन्धयुक्त, बासी , जूठा और अपवित्र भोजन है, वह तामसिक स्वभाव वालों को प्रिय लगता है। मात्रा से अधिक सात्विक भोजन भी राजसिक और तामसिक हो जाता है।

मोमिन खोजे आप को, और खोजे कहां है घर।
खोजे अपने खसम को, और खोजे दिन आखिर।।२५।।

वह चिन्तन, स्वाध्याय तथा प्रेममयी साधना के द्वारा अपने निज स्वरूप, अपने मूलघर एवं अपने प्राण वल्लभ की खोज में लगी ही रहती है। उसे इस बात की भी खोज रहती है कि वह मनोहर घड़ी कब आयेगी जब इस संसार का समापन (प्रलय) होगा तथा इसे छोड़कर वह अपने अखण्ड घर (परमधाम) जायेगी?

खोज मोमिन ना थके, जोलों पार के पारै पार।
नित खोजे चरनी चढ़ें, नए नए करे विचार।।२६।।

ब्रह्मसृष्टि जब तक निराकार के परे बेहद, अक्षर तथा उससे भी परे अपने प्रियतम अक्षरातीत की खोज नहीं कर लेती, तब तक वह अपने उद्देश्य की प्राप्ति में लगी ही रहती है और कभी थकती भी नहीं है। वह नित्य ही नये-नये विचारों के द्वारा चिन्तन करती है तथा खोज की एक-एक सीढ़ी चढ़ कर आगे बढ़ती ही जाती है।

खोज खोज और खोजही, आद के आद अनाद।
पल पल नूर बढ़ता, श्रवनों एही स्वाद।।२७।।

परमधाम की आत्मायें इस सृष्टि तथा इसको बनाने वाले आदिनारायण और इनसे परे बेहद, अक्षर एवं अक्षरातीत की खोज में निरंतर लगी रहती हैं। उनके हृदय में सत्य ज्ञान का पल-पल प्रकाश होता है और वे अपने कानों से सत्य ज्ञान को सुनकर आनन्दित होती हैं।

भावार्थ- इस चौपाई के दूसरे चरण में 'आदि के आद' का तात्पर्य इस सृष्टि और आदिनारायण से है, अक्षरब्रह्म से नहीं। क्योंकि वे अनादि तत्त्व है।

फुरमान हाथों ना छूटहीं, जोलों पाइए हक वतन।
मासूक वतन पाए बिना, दरद ना जाए निसदिन।।२८।।

परब्रह्म के आदेश से अवतरित ग्रन्थों (कुर्आन तथा श्रीमद्भागवत्) को लेकर वे तब तक चिन्तन - मनन में लगी रहती हैं, जब तक उन्हें अक्षरातीत तथा परमधाम की साक्षी नहीं मिल जाती। अपने प्राणेश्वर तथा परमधाम का जब तक वे साक्षात्कार नहीं कर लेतीं

तब तक उनके हृदय में विरह की पीड़ा निरन्तर बनी ही रहती है।

भावार्थ - संन्ध्या समय गायी जाने वाली 'गौरी समझ बुझि गुरू' कीजे में सद्गुरू के लक्षणों में कहा गया है कि- **"धीरजवन्त धर्म प्रतिपालक, वेद ले भेद बतावे'।**

दूजी साख कबीर की देवे' विध विध वाणी सुनावे"

इसी प्रकार माहेश्वर तन्त्रम् तथा पुराण संहिता में परब्रह्म एवं परमधाम से सम्बन्धित विस्तृत प्रमाण हैं।

मोमिन अंदर उजले, खिन खिन बढ़त उजास।
देह भरोसा ना करें, इमाम मिलन की आस।।२६।।

परात्म की सुरता (दृष्टि) होने के कारण आत्मा पहले से ही आंतरिक रूप से निर्मल होती है। प्रियतम के विरह में डूबे रहने से उसके हृदय से माया का अंधकार पल-पल हटता जाता है और ज्ञान का प्रकाश बढ़ता जाता है। उसे अपने प्राणवल्लभ से मिलने की इतनी तीव्र चाहत होती है कि वह अपने इस लक्ष्य की प्राप्ति में अपने शरीर के जर्जर होने आदि की भी चिन्ता नहीं करती।

ज्यों ज्यों माएने विचारहीं, त्यों बेधे सकल संधान।
रोम रोम ताए बेधहीं, सब्द रसूल के बान।।३०।।

ब्रह्मज्ञान के शब्द रूपी बाणों के सम्बन्ध में जब वह बार बार विचार करती है तो वे उसके सभी अंगों की सन्धियों में प्रवेश करके विरह की पीड़ा देते हैं। शब्द रूपी बाण उसके शरीर के रोम - रोम को बींध देते हैं अर्थात् वह ब्रह्मज्ञान के प्रत्येक अंश को अपने अन्दर आत्मसात् कर लेती है।

भावार्थ - उपरोक्त चौपाई के चौथे चरण का भाव श्री प्राणनाथ जी और उनकी ब्रह्मवाणी 'श्री कुल्जुम स्वरूप' से है।

मोमिन अंग कोमल, ताए बान निकसें फूट।
गलित गात सब भीगल, सब अंगों टूक टूक।।३१।।

ब्रह्ममुनियों का हृदय कोमल होता है। तारतम वाणी (श्री कुल्जुम स्वरूप) के अमृतमयी शब्दों को जब वे सुनते हैं तो परब्रह्म पर न्योछावर होने के लिये उनके अंग - अंग तत्पर हो जाते हैं। प्रियतम की वाणी के शब्द उनके अंग - अंग से फूटकर निकलने लगते हैं। वे भाव विह्वल होकर गलित गात हो जाते हैं और प्रेम के आंसुओं से उनका सम्पूर्ण शरीर भीग जाता है।

खिन खेलें खिन में हंसें, खिन में गावें गीत।
खिन रोवें सुध ना रहे, एही मोमिन की रीत।।३२।।

परमधाम की ब्रह्मात्माओं की यही पहचान है कि वह एक क्षण में खेलने लगती हैं तो दूसरे क्षण में हंसने लगती हैं और प्रियतम के प्रेम भरे गीत भी गाने लगती हैं। किन्तु अगले ही क्षण ऐसा भी देखने में आता है कि वह इतना रोती हैं कि उन्हें अपनी जरा भी सुधि नहीं रहती।

भावार्थ- प्रेम की गहन भावदशा में संसार, लोक परम्परा, मर्यादा एवं अपनी सुख-सुविधा का नाममात्र भी ध्यान नहीं रहता। उनका हंसना-रोना या गाना स्वाभाविक होता जाता है। उन्हें यह पता ही नहीं होता कि वे क्या कर रही हैं?

हक बातें खेलें हंसें, और गीत पिया के गाए।
रोवें उरझे पिउ की, और बातन सो मुरछाए।।३३।।

वे भावदशा में इतनी डूब जाती हैं कि प्रियतम की बातें सुनकर कभी खेलने लगती हैं और कभी उनके प्रेम भरे गीत गाकर हंसने लगती हैं। कभी प्रियतम के धाम स्वरूप एवं लीला सम्बन्धी बातें सुनकर रोने लग जाती हैं, तो कभी भाव विह्वल होकर मूर्च्छित भी हो जाती हैं।

विशेश :-ये लक्षण ब्रह्मात्माओं में उनके स्वाभाविक विरह - प्रेम से प्रकट होते हैं। इन लक्षणों का अभिनय करने मात्र से कोई व्यक्ति ब्रह्मसृष्टि नहीं बन सकता।

मोमिन दरदा ना सहे, जब जाहेर हुए पिउ।
मोमिन अंग पिउ का, पिउ मोमिन अंग जिउ।।३४।।

तारतम वाणी के प्रकाश में जब धाम धनी की पहचान हो जाती है तो ब्रह्मसृष्टियां उनका विरह नहीं सहन कर पाती है, क्योंकि वे प्रियतम की अंगरूपा हैं और प्रियतम ही उनके जीवन के आधार है।

जोलों सुध ना मासूक की, मोमिन अंग में पिउ।
जब मासूक जाहेर हुए, आसिक ले खड़ी अंग जिउ।।३५।।

जब प्रियतम की सुधि भी नहीं थी, तब भी वे सुहागिन (श्री इन्द्रावती जी) के अन्दर ही थे। जब प्रियतम की पहचान हो गयी, तब वह भी अपने जीव के साथ उनसे मिलने के लिये तत्पर हो गयी।

भावार्थ- वि. सं. १७१२ में सदगुरू धनी श्री देवचन्द्र जी के अन्तर्धान के पश्चात्

तत्क्षण युगल स्वरूप श्री इन्द्रावती जी के धाम हृदय में विराजमान हो गये थे किन्तु इस बात का उन्हें बोध नहीं था। वि. सं. १७१५ में ही उन्हें हब्शे में इसकी वास्तविकता का पता चला। परम सत्य (मारिफत) की दृश्टि से यदि देखा जाय तो धामधनी प्रत्येक आत्मा के धाम हृदय में अखण्ड रूप से सर्वदा ही विराजमान रहते हैं, किन्तु माया के आवरण के कारण वह उनकी पहचान नहीं कर पाती है।

जब श्यामा जी प्रियतम की खोज में थी, तब भी वे उनके अन्दर ही विराजमान थे, किन्तु उन्हें बोध नहीं था। लीला रूप में अवश्य श्री राजजी वि.सं. १६७८ में उनके धाम हृदय में विराजमान हुए किन्तु मारिफत की दृष्टि से उनके अन्दर भी पहले से विद्यमान थे। **'अर्स तुम्हारा मेरा दिल है, इत आए करो आराम।'** सा ७/१ तथा **'हक नजीक सेहेरग से, आड़ो पट न द्वार'** सिन्धी के कथन यही सिद्ध करते हैं।

यह कहना अत्यन्त हास्यास्पद है कि श्री राज जी परमधाम से श्यामा जी को दर्शन देने के लिये आते थे और दर्शन देकर पुनः परमधाम चले जाते थे। यदि ऐसा है तो तुम **'हम को खेल दिखावन काज, हमसों आगें आए श्री राज'** प्रकाश हि.।१७/५ तथा **'पाऊं पल साथ की जुदागी ना सहो''** का क्या अर्थ करेंगे? वे इस खेल में दर्शन देने से पूर्व कहां पर रह रहे थे? इतना अवश्य है कि जिस आत्मा (श्यामा जी, इन्द्रावती जी) को विशेष शोभा देनी होती है, धाम धनी उन्हें बाह्य रूप से प्रत्यक्ष दर्शन देकर उनके अन्दर लीला रूप में विराजमान होते हैं और यह बात प्रकट हो जाती है, अन्यथा उनकी शाश्वत विद्यमानता तो सभी आत्माओं के अन्दर होती ही है किन्तु माया के प्रभाव से वे स्वयं को अपने प्रियतम से दूर मानती हैं। इसका मूल कारण यह है कि वे नींद के प्रभाव में होती हैं और स्वयं को न देख कर जीव भाव में अपने जीव की ही लीला को देख रही होती हैं।

बोहोत निसानी और है, अर्स अरवा मोमिन ।
सो इन जुबां केते कहूं, मेरे वतनी के लछन।।३६।।

परमधाम के ब्रह्ममुनियों की इसी प्रकार और भी बहुत सी पहचान है। इस प्रकार निजधाम की ब्रह्मात्माओं के लक्षणों का मैं इस जिह्व से कितना वर्णन करूं?

जो होवे अर्स अजीम की, सो निरखो अपने निसान।
ए लछन मोमिन वतनी, सो देखो दिल में आन।।३७।।

परमधाम के जो भी ब्रह्ममुनि हैं, वे उपरोक्त चौपाईयों में वर्णित अपनी पहचान को

पढ़कर उनका चिन्तन करें। इन चौपाईयों में परब्रह्म की अंग रूपा ब्रह्मात्माओं के लक्षणों का वर्णन किया गया है। उन लक्षणों का अपने हृदय में विचार कीजिए कि हमारे अन्दर वे लक्षण कितने हैं?

मोमिन रूहें अर्स की, ए समझ लीजो तुम दिल।
ठौर ठौर से आए मोमिन, सुख लेसी सब मिल।।३८।।

हे परमधाम के ब्रह्ममुनियों! आप इस बात को अपने हृदय में अच्छी तरह से समझ लीजिए कि अलग - अलग स्थानों से सभी ब्रह्मात्मायें श्री प्राणनाथ जी के चरणों में आयेंगी और अपना आत्मिक सुख लेंगी।

ए केहेती हों मोमिन को, जिन अर्स बका में तन।
सो कैसे ढांपी रहें, सुन के एह वचन।।३९।।

मेरा यह कथन मात्र उन सुन्दरसाथ के लिये है, जिनके मूल तन परमधाम में हैं। मेरे इन वचनों को सुनकर भला वे संसार में कैसे छिपे रह सकते हैं?

ए सब्द सुन मोमिन, रेहे न सकें पल।
तामें मूल अंकूर को, रहे न पकरयो बल।।४०।।

मेरे इन वचनों को सुनकर परमधाम की आत्मायें पल भर के लिये भी अपने घरों में बैठी नहीं रह पायेंगी। उनका परमधाम से अखण्ड सम्बन्ध है, इसलिये उनके अन्दर प्रेम का आत्मिक बल इतना अधिक है कि उसे रोका नहीं जा सकता।

जब साहेब की सुध सुनी, तब जाए ना रह्यो रूहन।
ओ ख्वाबी दम भी ना रहें, तो क्यों रहें अर्स मोमिन।।४१।।

जब तारतम ज्ञान के प्रकाश में परमधाम की आत्माओं को अपने प्राणेश्वर अक्षरातीत की पहचान हो जाती है, तब वे किसी भी स्थिति में माया में नहीं रह सकती। परब्रह्म की पहचान होने पर जब स्वप्न के जीव भी संसार (माया) को छोड़ देते हैं तो भला परमधाम की आत्मायें मायावी प्रपंचों में फंसी हुई कैसे रह सकती हैं?

मोमिन पाए कदम हादी के, खोल द्वार लिए हजूर।
पट खोल दिया फुरमान का, पल पल बरसत नूर।।४२।।

अब ब्रह्ममुनि श्री प्राणनाथ जी के चरणों में आ गये हैं तो उन्होंने तारतम ज्ञान द्वारा निराकार बेहद से परे परमधाम का द्वार खोल दिया है, जिससे सभी को निजघर की पहचान हो गयी है। श्री जी के द्वारा कुर्आन तथा श्री मद्भागवत् के रहस्य भी स्पष्ट हो गये हैं जिससे अब प्रत्येक पल अखण्ड ज्ञान की वर्षा हो रही है।

खाना पीना दीदार, रोजा निमाज दीदार।
एक दोस्ती जानें हक की, दुनी सब करी मुरदार।।४३।।

अपने साथ परब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथ जी को पाकर ब्रह्ममुनि धन्य-धन्य हो गये हैं। उनका दर्शन ही उनके लिये भोजन करना और जल पीना है। उनके दर्शन में ही उपवास और प्रार्थना (रोजा और नमाज) का फल है। उन्होंने सारे संसार को नश्वर और सारहीन समझ कर छोड़ दिया है। एक मात्र प्रियतम परब्रह्म से प्रेम करना ही उनके जीवन का लक्ष्य बन गया है।

केतेक ठौर हैं मोमिन, तिन सब ठौरों है उजास।
पर इतथें नूर पसरया, तब ओ ले उठसी प्रकास।।४४।।

इस संसार में कुछ ही स्थानों पर परमधाम की आत्मायें आयी हुई है। उन सब स्थानों में उनके द्वारा तारतम ज्ञान का प्रकाश अवश्य फैलेगा। जब मेरे धाम हृदय से अवतरित होने वाली ब्रह्मवाणी का प्रकाश फैलेगा तो उन स्थानों में विद्यमान आत्मायें इसे आत्मसात् करेंगीं और चारों ओर फैलायेंगी।

कोई दिन हम छिपे रहे, सो भी मोमिनों के सुख काज।
जो होवें नेक जाहेर, तो रहे न पकरयो अवाज।।४५।।

श्री महामति जी के धाम हृदय में विराजमान श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि ब्रह्ममुनियों को सुख देने के लिये ही मैं अब तक संसार में छिपा रहा, प्रत्यक्ष रूप से प्रकट नहीं हो सका। यदि मेरे प्रकट होने की थोड़ी सी भी बात उजागर हो जाती तो मेरे तारतम ज्ञान की गूंज को पकड़ा नही जा सकता था अर्थात् वह चारों ओर फैल जाता।

भावार्थ - इस चौपाई के पहले चरण में कथित 'कोई दिन' का आशय है छठें दिन

की लीला के अन्तिम चरण के कुछ पहले तक। तीसरे चरण में सभी आत्माओं के जागृत होने का उल्लेख है। इससे यह सिद्ध होता है कि श्री महामति जी के तन द्वारा सभी आत्माओं की जागनी नहीं हो पायी। कलश गुजराती का अवतरण सूरत में वि. सं. १७२८ में हुआ था तथा कलश हिन्दुस्तानी का अवतरण वि. सं. १७३६ में अनूपशहर में हुआ। जब श्री प्राणनाथ जी पन्ना पहुंचे, उस समय उनके साथ ५००० सुन्दरसाथ की संख्या में मात्र ५०० ब्रह्मसृश्टियां थी। 'पांच सौ जुलजुलाटहू संग रसूल के इत' कियामतनमा का कथन यही सिद्ध करता है।

जागनी लीला के अन्तिम चरण में तारतम वाणी का प्रकाश तेजी से फैलेगा और सभी आत्मायें जागृत होंगी। आज संसार में भागवत, रामायण, कुरआन तथा बाईबिल आदि का अत्यधिक प्रचार है और तारतम वाणी का कम। इस को छिपाये रखने के निम्नलिखित कारण है - १. केवल ब्रह्मसृश्टियों, ईश्वरीय सृष्टियों एवं उत्तम जीवों को ही अखण्ड धाम का विशेष आनंद मिले। २. जीव सृष्टि की संख्या अधिक हो जाने से उनका वर्चस्व हो जायेगा। परिणाम स्वरूप वे कर्मकाण्ड (शरीयत) को ही बढ़ावा देंगी, क्योंकि उनसे ज्ञान - विज्ञान (हकीकत, मारिफत) की राह पर नहीं चला जाता। ३. छठे दिन की लीला में अलग - अलग ब्रह्मात्माओं को जागनी की विशेष शोभा देनी है और उनके प्रेम की परीक्षा लेनी है। ४. उन्हें माया का अधिक से अधिक खेल दिखाकर उनकी हंसी करनी है।

यही कारण है कि धाम धनी के द्वारा माया का खेल बढ़ाया गया है तथा तारतम वाणी का प्रकाश फैलने से रोका गया है।

मैं नूर अंग इमाम का, खासी रूह खसम।
सुख देऊं जगाए के, मोमिन रूहें तले कदम।।४६।।

श्री महामति जी की आत्मा कहती है कि मैं अक्षरातीत परब्रह्म की नूरी अंगना हूं। प्रियतम ने मुझे इस जागनी लीला में विशेष शोभा दी है। परमधाम में ब्रह्मात्माएं परब्रह्म के चरणों में बैठी हुई हैं और उनकी सूरता माया का खेल देखने के लिये इस संसार में आयी हुई है। मैं उन्हें जागृत करके परमधाम का सुख दूंगी।

रूहों को अर्स देखावने, उलसत मेरे अंग।
करने बात मासूक की, मावत नहीं उमंग।।४७।।

परमधाम के ब्रह्ममुनियों को उनका धाम दिखाने के लिये मेरे अंग - अंग में उल्लास भरा है। अपने प्राणेश्वर अक्षरातीत की बातें (धाम, स्वरूप एवं लीला के सम्बन्ध में चर्चा) करने के लिये मेरे हृदय में अथाह उमंग है।

भावार्थ - इस चौपाई से यही सिद्ध होता है कि परमधाम तथा युगल स्वरूप का

साक्षात्कार करना हमारे जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य होना चाहिए।

नए नए रंग रूह मोमिन, आवत हैं सिरदार।
बड़ो सुख होसी कयामत, नहीं इन सुख को पार।।४८।।

परमधाम की प्रमुख - प्रमुख ब्रह्मसृष्टियां नये - नये घटनाक्रमों से होकर धाम धनी के चरणों में आ रही हैं। अब जो जागनी लीला होनी वाली है, उसमें इतना अधिक सुख होगा कि कोई उसकी सीमा ही नहीं बता सकता।

भावार्थ - ठट्ठेनगर में चिन्तामणि जी तथा लालदास जी, मस्कत बन्दर तथा अब्बासी बन्दर में महाव जी भाई और भैरव सेठ की जागनी विभिन्न घटनाक्रमों में हुई। पद्मावती पुरी धाम में १० वर्षो की होने वाली जागनी लीला में परमधाम के सुखों की वर्षा हुई। उपरोक्त चौपाई में उसी की ओर संकेत है।

आसिक आवत मासूक की, ताको छिपो राखों उजास।
राह देखों और रूहन की, सब मिल होसी विलास।।४९।।

इस समय मेरे पास जो धाम धनी की अंगनायें आ रही हैं, उनसे अभी परमधाम का गुह्य (खिल्वत, परिक्रमा, सागर तथा श्रृंगार का) ज्ञान छिपाये रखूंगी। अभी मैं अन्य सखियों (शाकुण्डल) आदि की बाट देख रहीं हूं। जब वे मेरे पास आ जायेंगी, तो सबके साथ परमधाम की आनन्दमयी लीला होगी।

नूर इमाम इन भांत का, कबूं जो निकसी किरन।
तो पसरसी एक पलमें, चारों तरफों सब धरन।।५०।।

श्री प्राणनाथ जी के अनुपम तारतम ज्ञान का प्रकाश ऐसा है कि यदि उसकी एक किरण भी मेरे हृदय से संसार में प्रकट हो गयी, तो एक ही पल में सम्पूर्ण धरती पर चारों ओर फैल जायेगी।

भावार्थ - लगभग सभी मतों में परमधाम की किसी न किसी रूप में कल्पना अवश्य है, किन्तु तारतम ज्ञान के अभाव में किसी को उसकी स्पष्ट पहचान नहीं है। जब परमधाम के ज्ञान का संसार में प्रचार किया जायेगा तो संसार के लोग उसे बहुत तेजी से ग्रहण करेंगे। इसे ही आलंकारिक भाषा में एक पल में सारे संसार में फैल जाना कहते है। दूसरे शब्दों में - परमधाम का ज्ञान नारायण (विष्णु) को मिलते ही इस ब्रह्माण्ड के सभी प्राणियों को पल भर में प्राप्त हो जायेगा।

क्यों रहे प्रकास पकरयो, इमाम नूर अति जोर।
मैं राखत हों ले हुकम, ना तो गई रैन भयो भोर।।५१।।

तारतम ज्ञान का प्रकाश बहुत ही प्रचण्ड है। कोई भी इसके प्रकाश को फैलने से रोक नहीं सकता। मैंने परब्रह्म के आदेश से ही इसे पकड़ रखा है अन्यथा अब तक अज्ञानता की रात बीत गयी होती और ज्ञान से प्रातः काल का उजाला फैल गया होता।

नूर बड़ो इमाम को, सो क्यों ढ़ांपूं मैं अब।
सुख लेने को या बखत, पीछे दुनी मिलसी सब।।५२।।

अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी के अलौकिक ब्रह्मज्ञान का प्रकाश अत्यधिक (अनन्त) है। उसे अब मैं फैलने से क्यों रोकूं? ब्रह्ममुनियों के लिये यही उचित अवसर है कि वे ब्रह्मवाणी के प्रकाश में परमधाम का सुख लें। बाद में तो सम्पूर्ण जीव सृश्टि इस ज्ञान द्वारा बेहद का सुख प्राप्त कर ही लेगी।

भावार्थ - तारतम ज्ञान को आत्मसात् कर यदि जीव सृष्टि भी चितवनी की राह अपनाती है तो उसे भी संसार में परमधाम के कुछ सुखों का अनुभव हो सकता है। इस ब्रह्माण्ड के लय होने के पश्चात् योगमाया के ब्रह्माण्ड में उसे मुक्ति (बहिश्तों) का अखण्ड सुख अवश्य प्राप्त होगा।

मैं तुमको चेतन करूं, एही कसौटी तुम।
या बिध अर्स अरवांहों का, तसीहा लेवें खसम।।५३।।

हे साथ जी! मैं आप को माया के प्रति सावधान कर रहा हूं। आपके लिये यह परीक्षा (कसौटी) की घड़ी है कि आप अपने धाम धनी के प्रति अपने अटूट प्रेम एवं विश्वास को दर्शायें। प्रियतम अक्षरातीत इस मायावी जगत में आपके प्रेम एवं विश्वास की परीक्षा ले रहे हैं।

भावार्थ - यद्यपि, धाम धनी सर्वज्ञ हैं और उनसे कुछ भी छिपा नहीं रहता, किन्तु उपरोक्त चौपाई में ब्रह्मसृष्टियों की परीक्षा लेने का आशय उन्हें प्रेम एवं विश्वास के क्षेत्र में अपने हृदय की वास्तविकता को दर्शाना है।

सबद हमारे सुन के, उठी ना अंग मरोर।
आसिक मासूक सब देखहीं, तुम इस्क का जोर।।५४।।

जो तारतम ज्ञान के मेरे अमृतमय वचनों को सुनकर मायावी नींद को छोड़ने में

अपने आलस्य का परित्याग नहीं करेगी और जागृत नहीं होगी, उसकी हंसी होगी। हे साथ जी! आपके प्रेम की शक्ति को श्री राज जी एवं अन्य सुन्दरसाथ (एक दूसरे के प्रति) हंसी की भावना के साथ देख रहे हैं।

ए सुनके दौड़ी नहीं, तो हांसी है तिन पर।
जैसा इस्क जिनपें, सो अब होसी जाहेर।।५५।।

जो ब्रह्मात्मा प्रियतम अक्षरातीत की वाणी को सुनकर अपने प्राणवल्लभ को पाने के लिये प्रेम में दौड़ नहीं लगायेगी, उसकी बहुत अधिक हंसी होगी। अब तो यह बात प्रकट हो जायेगी कि किस सुन्दरसाथ के हृदय में अपने प्राणनाथ के लिये कितना प्रेम है?

जो इस्क ले मिलसी, सो लेसी सुख अपार।
दरद बिना दुख होएसी, सो जानो निरधार।।५६।।

हे साथ जी! आप इस तथ्य (बात) को अच्छी तरह से जान लीजिये कि जो भी ब्रह्मात्मा धनी का प्रेम लेकर उन्हें अपने धाम हृदय में बसायेगी, वह अपने प्राणेश्वर का अपार सुख लेगी। जिसके हृदय में प्रियतम को पाने के लिये विरह की पीड़ा ही नहीं होगी, उसे माया में दुःख भोगना पड़ेगा।

जो किने गफलत करी, जागी नहीं दिल दे।
सो इत दीन दुनी का, कछू ना लाहा ले।।५७।।

जो ब्रह्मसृष्टि माया की अज्ञानता में भटकती रही और प्रियतम परब्रह्म को अपना हृदय देकर अर्थात् उनसे भरपूर प्रेम करके जागृत नहीं हुई, उसे न तो संसार में सुन्दरसाथ की सेवा का सुख मिलेगा और न अपने प्राणेश्वर को अपने हृदय धाम में बसाकर उनके मधुर दर्शन का ही सुख मिलेगा।

लाहा तो ना लेवही, पर सामी हांसी होए।
ए हांसी अर्स के मोमिन, जिन कराओ कोए।।५८।।

ऐसी आत्माओं को परमधाम में किसी भी प्रकार का लाभ तो नहीं मिलेगा किन्तु सबके सामने माया में भूले रहने की हंसी होगी। इसलिये हे साथ जी! आप परमधाम की ब्रह्मसृष्टि हैं। अब आप इस खेल में ऐसा कुछ भी न कीजिए कि परमधाम में आपकी हंसी हो।

जिन उपजे मोमिन को, इन हांसी का भी दुख।
सो दुख बुरा रूहन को, जो याद आवे मिने सुख।।५६।।

मै यही चाहता हूं कि ब्रह्मसृश्टियों को परमधाम में हंसी का दुःख न झेलना पड़े। ब्रह्मात्माओं के लिये परमधाम के अखण्ड सुख में अपनी मायावी भूलों की याद दिलाने वाली हंसी बहुत ही दुःखदायी होगी, क्योंकि वह परमधाम में सबको ज्ञात हो जायेगी।

द्रश्टव्य – परमधाम में हंसी का दुःख लौकिक दुःख की तरह नहीं होगा अपितु लज्जा का दुःख होगा। स्वलीला अद्वैत परमधाम में लौकिक दुःख का अस्तित्व रह ही नहीं सकता।

ना तो जिन जुबां में दुख कहूं, सो ए करूं सत टूक।
तो एता रूहों खातिर, बिध बिध करत हों कूक।।६०।।

हे साथ जी! यदि मेरी जिह्वा से आपके लिये दुःख शब्द का भी उच्चारण हो जाय, तो उसे मैं १०० टुकड़े कर देना चाहूंगा। किन्तु कोयल की तरह तारतम की मधुर वाणी से मैं तुम्हे सावचेत कर रहा हूं कि तुमसे इस खेल में ऐसी कोई भूल होने ही नहीं पाये कि तुम्हें परमधाम में हंसी के कारण लज्जा का दुःख उठाना पड़े।

जब दुख मेरी रूहन को, तब सुख कैसा मोहे।
हम तुम अर्स अजीम के, अपने रूह नहीं दोए।।६१।।

मेरे सुन्दरसाथ जी! यदि आपको किसी भी कारण से दुःख होता है तो भला मैं कैसे सुखी रह सकता हूं। हम और आप एक ही परमधाम के रहने वाले हैं। हम एक ही धनी के अंग हैं और हमारी आत्मा में किसी प्रकार का भेद (द्वैत) नहीं है।

पेहेले फरेब देखाइया, पीछे महंमद दीन।
कलमा जाहेर करके, देखाया आकीन।।६२।।

प्रियतम ने हमें पहले माया का झूठा खेल दिया। इसके पश्चात् तारतम ज्ञान का प्रकाश करके उन्होंने अपने प्रति अटूट विश्वास दिलाया और अन्ततोगत्वा निजानन्द की राह पर चलना सिखाया।

माएने जाहेर कुरान के, कही बात नेक सोए।
और गुझ भी करों जाहेर, अर्स वतनी जो कोए।।६३।।

श्री महामति जी कहते है कि अभी तक मैंने कुर्आन के बाह्य अर्थो के आधार पर कुछ बातों का ही वर्णन किया है। अब मैं परमधाम के ब्रह्ममुनियों के लिये कुर्आन की गुह्य (हकीकत की) बातों को प्रकट करता हूं।

।।प्रकरण।।२२।।चौपाई।।६८२।।

सनंध–दिल मोमिन अर्स सुभान की

इस प्रकरण में यह दर्शाया गया है कि ब्रह्ममुनियों का हृदय ही परब्रह्म का धाम होता है –

दिल हकीकी रूहें अर्स की, जामें आप आसिक हुआ सुलतान।
तो कही गिरो ए रबानी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।१।।

परमधाम की ब्रह्मात्माओं का हृदय पूर्णतया सत्य होता है जिसमें स्वयं परब्रह्म प्रियतम के रूप में विराजमान होते हैं, इसलिये इस सृष्टि को रब्बानी अर्थात् ब्रह्मसृष्टि कहते है। इस प्रकार इन आत्माओं का हृदय परब्रह्म का धाम (निवास) होता है।

भावार्थ – ब्रह्मसृष्टि के हृदय को हकीकी (सत्य) कहने का आशय यह है कि उसमें किसी प्रकार का विकार (काम, क्रोधादि) नहीं होता और वह स्वाप्निक नहीं होता है। समस्त विकार जीवों के हृदय में होते हैं, क्योंकि वे प्रकृति मण्डल में उत्पन्न हुए होते हैं।

जेता कोई दिल मजाजी, चढ़ सके न नूर मकान।
दिल हकीकी पोहोंचे नूर तजल्ला, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।२॥

जितने भी झूठे हृदय वाले (जीव) हैं, वे अक्षर धाम (बेहद) तक नहीं जा पाते। सच्चे हृदय वाले (ब्रह्ममुनि) ध्यान द्वारा परमधाम तक पहुँचते हैं। इनके ही हृदय को परब्रह्म का धाम कहा गया है।

भावार्थ – उपरोक्त प्रसंग में मात्र उन जीवों की बात की गयी है, जिनमें बेहद या परमधाम का कोई अंकूर नहीं है। यद्यपि, ब्रह्मसृष्टि या ईश्वरीय सृष्टि की सूरता जीवों के ऊपर ही बैठकर खेल को देख रही है, किन्तु तारतम ज्ञान के प्रकाश में उनके जीव का हृदय अटूट विश्वास, समर्पण एवं प्रेम की प्रतिमूर्ति बन जाता है जिससे उनका आचरण कोरे जीवों के हृदय से भिन्न हो जाता है।

रूहें उतरी लैलत कदर में, सो उमत रबानी जान।
इनको हिदायत हक की, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।३।।

परमधाम की आत्मायें माया का खेल देखने के लिये इस संसार में आयी हुई हैं। यह सृष्टि परब्रह्म की अंग स्वरूपा है। स्वयं परबह्म इस खेल में उनका निर्देशन करते हैं। इनका ही हृदय परब्रह्म का धाम कहा जाता है।

होवे फारग दुनी के सोर सें, ए दिल हकीकी निसान।
करें हजूर बातून बंदगी, ए दिल मोमन अर्स सुभान।।४।।

ब्रह्मसृष्टियों के हृदय के सत्य (स्वच्छता से परिपूर्ण) होने की पहचान यह है कि वे संसार के प्रपंचों से अलग हो जाती हैं और ध्यान (चितवनी) के रूप में छिपी भक्ति (बन्दगी) करती हैं जो परब्रह्म को स्वीकार होती है। इनके ही हृदय को परब्रह्म का धाम कहा गया है।

भावार्थ - शरीयत (कर्मकाण्ड) तथा तरीकत (उपासना) के विशय में दूसरे लोगों को पता चल जाता है कि अमुक व्यक्ति ऐसा कर रहा है। इस प्रकार की भक्ति का परिणाम नासूत - मलकूत ला मकान (पृथ्वी लोक, बैकुण्ठ तथा निराकार) से आगे नहीं जा पाता। इसके द्वारा परमधाम का साक्षात्कार नहीं हो सकता। इसलिये इन्हें जाहिरी बन्दगी कहते हैं। हकीकत - मारिफत की बन्दगी आत्मिक धरातल पर प्रेममयी ध्यान द्वारा होती है। इसमें बेहद तथा परमधाम का प्रत्यक्ष साक्षात्कार होता है, अतः इसे बातिनी बन्दगी कहते हैं। ऐसा करने वाले को कोई जान नहीं पाता, क्योंकि यह बन्दगी एकान्त में होती है।

हकें कौल किया जिन रूहन सों, सोई वारस हैं फुरकान।
जिन वास्ते आए हक मासूक, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।५।।

परमधाम मे परबह्म ने जिन आत्माओं से कियामत के समय संसार में आने का वचन दिया था, कुर्आन के गुह्य रहस्यों को समझने का अधिकार उन्हीं को है (श्री कुल्जुम स्वरूप का ज्ञान उन्ही के लिये है)। जिनके लिये स्वयं परब्रह्म इस संसार में आये, उनका ही हृदय श्री राज जी का धाम है।

याही वास्ते इमाम रूह अल्ला, आए उतर चौथे आसमान।
कौल किया लाहूत में इनों से, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।६।।

इन ब्रह्मात्माओं के लिये ही चौथे आकाश परमधाम से श्री राज जी का आवेश स्वरूप सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी (श्यामा जी) एवं श्री प्राणनाथ जी (इमाम मेंहदी) के रूप मे इस संसार में प्रकट हुआ क्योंकि इनसे ही परब्रह्म ने आने का वचन दिया था। इनका हृदय ही प्रियतम परब्रह्म के धाम के रूप में शोभायमान होता है।

भावार्थ - आकाश का तात्पर्य भौतिक आकाश नहीं अपितु मण्डल विशेश है। ये इस प्रकार है - १. नासूत (पृथ्वी लोक) २. मलकूत (बैकुण्ठ लोक) ३. जबरूत (अक्षर धाम) ४. लाहूत (परमधाम)।

ए गिरो कई बेर बचाई तोफान से, और डुबाई कुफरान।
एही उमत खास महंमदी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।७।।

इन ब्रह्मसृष्टियों को प्रियतम परब्रह्म ने व्रज लीला के समय कई बार प्रलय से बचाया और शेष संसार के जीवों को डूबो दिया। ये ब्रह्मसृष्टियां परब्रह्म की आनन्द स्वरूपा श्यामा जी की अंग रूपा हैं। इनके ही हृदय को प्राणेश्वर अक्षरातीत ने अपना धाम बनाया है।

भावार्थ - व्रज लीला में इन्द्र कोप के कारण व्रज-मण्डल के अतिरिक्त सारा संसार डूब गया था। इसे हूद - तूफान कहते हैं। व्रज से रास में जाते समय सारे ब्रह्माण्ड का प्रलय हो गया था, किन्तु परब्रह्म ने अपनी आत्माओं को योगमाया के ब्रह्माण्ड (नित्य वृन्दावन) में पहुँचा दिया था।

एही नाजी फिरका तेहत्तरमा, जिनमें लुदंनी पेहेचान।
खोलें हक इसारतें रमूजें, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।८।।

ब्रह्ममुनियों के इस समूह को ही ७३वां फिरका कहा जाता है जो अखण्ड सुख का अधिकारी माना जाता है। इसी समूह में तारतम ज्ञान (इल्म - ए - लदुन्नी) का प्रकाश है और कुर्आन में परब्रह्म की संकेतों में कही हुई गुह्यतम बातों के रहस्यों को स्पष्ट करने का

अधिकार भी इन्हीं को है। इनका हृदय ही प्रियतम का धाम कहलाता है।

हरफ मुकता इनों वास्ते, रखे बातून मांहें फुरमान।
सो खासे करसी जाहेर, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।६।।

कुर्आन में वर्णित हरूफ ए मुक्तेआत् भी इन्हीं के लिये ही छिपा कर रखे गये हैं। इनके भेद भी ये ब्रह्ममुनि ही प्रकट करेंगे। इनके हृदय को सच्चिदानन्द परब्रह्म का धाम कहते है।

भावार्थ - कुर्आन में कुल १४ हरूफ ए मुक्तेआत है, जिनके भेद मात्र तारतम ज्ञान से ही खुलते हैं। ये इस प्रकार हैं।

१.अलिफ-महबूब, प्रेम पात्र या मुहम्मद-पहला अक्षर

२. लाम-अहमद या रूहल्लाह

३. मीम, मुहम्मद या महदी । ये तीनों अक्षर तीन सूरतों के प्रतीक है १. बशरी २. मल्की ३. हकी। दूसरे शब्दों में इन्हें सत्, आनन्द और चिद्घन भी कहते हैं।

४. ऐन- (अद्वैत)

५. गैन-मुहम्मद स. अ. व. का जो स्वरूप संसार में प्रकट होता है, वह गैन कहलाता है। किन्तु यहां से जाकर जब पुनः परब्रह्म के स्वलीला अद्वैत स्वरूप में मिल जाता है, तो ऐन कहलाता है।

६ (रिझाना) साद - प्रियतम परब्रह्म को आत्मिक दृष्टि से अनन्य (निर्मल) प्रेम द्वारा रिझाना ही साद कहलाता है।

७ नून (साथी) परमधाम की ब्रह्मसृष्टियों को हौज कौसर के प्रेम रूपी जल में तैरने वाली अर्थात् उसकी शोभा को अपने हृदय में बसाये रखने वाली मछली। कहा गया है।

८. रा (लिये) - परब्रह्म के प्रति (परब्रह्म के लिये) स्वयं को पूर्णतया समर्पित करना

९. काफ - कुन्न से पैदा हुआ जगत, जिसमें परमधाम की आत्मायें आयी है।

१०.हा - सावधान / बहुवचन परमधाम अनादि काल से है और अनन्त काल तक रहेगा।

११. या - अय्यू हल्लर्जी या रसूलूल्लाह या मुहम्मद ऐ संबोधन या यह सम्बोधन ब्रह्मसृष्टियों के द्वारा श्री राज जी के लिये इश्क - रब्द के समय किया गया है।

१२. ता तक, निराकार से पाताल तक क्षर मण्डल (द्वैत) की भूमिका है। निराकार से परे अव्याकृत से लेकर सत्स्वरूप तक अक्षर मण्डल (अद्वैत)० की भूमिका है तथा सत्स्वरूप से आगे सर्वरस सागर से लेकर दधि सागर तक परमधाम (स्वलीला अद्वैत) की भूमिका है।

१३. सीन – परमधाम में भले ही कोई अनन्त या करोड़ों कोस दूर क्यों न हो, किन्तु स्वलीला अद्वैत होने के कारण वह अत्यन्त निकट ही प्रतीत होता है।

१४. यासीन – सैय्यद (मुहम्मद साहब के लिये)

श्री कुल्जम स्वरूप में इनका स्पष्टीकरण इस प्रकार किया गया है। १.२.३

अल्लफ कहया मुहम्मद को, रूहअल्लाह ईसा लाम ।
मीम मेहदी पाक से, ऐ तीनों एक कहे अल्ला कलाम ।। खु.

४.५ हुकुम लेकर आइया, तब नाम धराया गैन ।
हुकम बजाए पीछा फिरया, तब सोई ऐन का ऐन ।। सनंध ।

६ मैं लिख्या है तुमको, जो एक करो मोहे साद ।
तो दस बार मैं जी जी करूं, कर कर तुमको याद ।। श्रृं. २६ /२३

७ मोमिन अर्स बका बिना, रेहे ना सके एक पल ।
जो हौज कोसर की मछली, तिन हैयाती वह जल ।। श्रृं.

८ मैं तो तुम्हारी कीयल, अव्वल बीच और हाल ।
तुम बिना जो कछु देखत, सो सबमें आग की झाल ।। खि. ३/६

६,१०है को नाहीं कीजिए, सो तो कबूं न होए ।
नाहीं को है कीजिए, सो कर न सके कोए ।। श्रृं. २६/७६

११ ए देखाओ अपनी साहेबी, और कैसा इस्क है तुम ।
राजी करो देखाए के, हम बैठें पकड़ कदम ।। खि. ६/३६

१२ ला हवा से तेहतसरा लग, ए सब खेल में पातसाह एक ।
कहे या बिन और कोई नहीं, एही है एक नेक ।। सनंध ३७/२२

१३ कोई दूर बसत है, जो दूर दूर से दूर ।
सो भी जानों कदमों तले, इन मन बल ऐसा जहूर ।। परि. २८/३८

१४ पेहेले चल्या सैयद अकेला, तब तो थी सरीयत ।
अब अकेले क्यों छोड़िये, गिरो पोहोंची दिन मारफत ।। छो.क. १/२३

हकें सिफत लिखी नामें पैगंमरों, बीच हदीसों कुरान ।
सो कही सिफत सब महंमद की, ए जाने दिल अर्स सुभान ।।१०।।

कुर्आन तथा हदीसों में अनेकों पैगम्बरों की महिमा लिखी है किन्तु गुह्य (बातिनी) अर्थ यह है कि वे सारी महिमा एकमात्र श्री प्राणनाथ जी की है जो जागनी ब्रह्माण्ड में घटित

होनी है। इस रहस्य को मात्र वे ब्रह्ममुनि ही जानते हैं, जिनका हृदय प्रियतम का धाम बन गया होता है।

एही भांत महंमद उमत की, कही सिफत रसूल समान।
धरे बोहोत नाम उमत के, ए जाने दिल मोमिन अर्स सुभान।।११।।

इसी प्रकार, श्यामा जी की अंगरूपा ब्रह्मात्माओं की महिमा मुहम्मद स. अ. व. या श्री प्राणनाथ जी के समान कही गयी है। कुर्आन में ब्रह्मसृष्टियों को मोमिन, अरवाह, रूह आदि अनेक नामों से सम्बोधित किया गया है। इस रहस्य को ब्रह्ममुनि ही जानते हैं।

भावार्थ - कुर्आन में ब्रह्मसृष्टियों को अंगूर तथा ईश्वरीय सृश्टि को खजूर कहा गया है। ब्रह्मसृष्टि कही वेद ने, ब्रह्म जैसी तदोगत। से उपरोक्त चौपाई का कथन सार्थक होता है। रसूल शब्द का गुह्य अर्थ श्री प्राणनाथ जी के प्रति होगा।

जबराईल असराफील, हक नजीकी निदान।
सो भी आए उमत वास्ते, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।१२।।

जिब्रील तथा इस्राफिल (जागृत बुद्धि) जिन्हें परब्रह्म का निकटस्थ माना जाता है, वे भी उन ब्रह्मात्माओं के लिये इस संसार में आये हैं जिनका हृदय परब्रह्म का धाम होता है।

भावार्थ - जिब्रील को वेद पक्ष में परब्रह्म का जोश या अक्षर ब्रह्म का आवेश कहा जाता है। इसी के द्वारा शुकदेव जी ने महारास के वर्णन का प्रयास किया था तथा गीता एवं बीजक के विशिष्ट अंशों के अवतरण में इसी की भूमिका थी। अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि ही कतेब पक्ष में इस्राफील है। इन दोनों फरिश्तों (दिव्य शक्तियों) का निवास बेहद मण्डल में है। इसी कारण इन्हें परब्रह्म का निकटस्थ कहा जाता है।

ए सब किया महंमद वास्ते, चौदे तबक की जहान।
सो महंमद आए उमत वास्ते, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।१३।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड का यह सम्पूर्ण खेल श्यामा जी के लिये बनाया गया है। श्यामा जी (रूहुल्लाहु) की आत्मा उन ब्रह्मसृष्टियों के लिये इस खेल में आयी हैं जिनके हृदय में अक्षरातीत का धाम (निवास) होता है।

निसान लिखे कयामत के, फुरमान हदीसों दरम्यान।
सो भी खोले एही उमत, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।१४।।

कुर्आन तथा हदीसों में कियामत (ज्ञान दृष्टि से जागनी) के सातों निशानों (चिह्नों) का वर्णन किया गया है। उनके रहस्यों को ये ब्रह्ममुनि ही खोलेंगे जिनके हृदय में प्रियतम का वास होता है।

उठाई गिरो एक अदल से, कयामत बखत रेहेमान।
देसी महंमद की साहेदी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।१५।।

छोटी कियामत के अन्त समय में दया के सागर परब्रह्म अपनी ब्रह्मसृष्टियों को योगमाया में होने वाली न्याय की लीला से पहले परमधाम लेकर चले जायेंगे। परमधाम में जागृत होने पर ये आत्मायें जागनी लीला में श्री प्राणनाथ जी के प्रति अपनी श्रद्धा, सर्मपण, प्रेम एवं उनके वचनों का पालन करने की साक्षी देंगी। इनके ही हृदय को प्रियतम ने अपना धाम बनाया है।

भावार्थ - कजा दो प्रकार की है। १. जागनी लीला में ज्ञान दृश्टि से न्याय २. योगमाया के ब्रह्माण्ड में संसार के समस्त जीवों का न्याय। इसी प्रकार कियामत भी दो प्रकार की है। जागनी लीला में सबको अखण्ड मुक्ति देने वाले तारतम ज्ञान का अवतरण और प्रसार पहली कियामत है तथा सभी जीवों का योगमाया के ब्रह्माण्ड में अखण्ड हो जाना दूसरी (बड़ी) कियामत है। इस सम्बन्ध में सनन्ध ग्रन्थ की यह चौपाई देखने योग्य है -

कजा कजा करके, ले उठसी रूह मोमिन।
पेहेले ए कयामत होएसी, पीछे अरवाहें सबन।। सनंध /

कहूं बेवरा मोमिन दुनी का, जो फुरमाया फुरमान।
सक सुभे इनमें नहीं, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।१६।।

अब मैं ब्रह्मसृष्टि तथा जीव सृष्टि में भेद बताता हूं जो कुर्आन तथा भागवत में दर्शाया गया है। इन ब्रह्मात्माओं में परब्रह्म के प्रति नाम मात्र भी संशय नहीं होता है। इनके ही हृदय में वे स्वयं विराजमान होते है।

दिल मजाजी दुनी सरियत, सो सके ना पुल हद भान।
याको तोड़ उलंघे ले हकीकत, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।१७।।

संसार के लोगों (जीवों) का हृदय झूठा होता है। वे शरीयत (कर्मकाण्ड) के मार्ग पर चलते है, इसलिये वे बैकुण्ठ - निराकार की सीमा को छोड़कर परमधाम के प्रेम मार्ग पर नहीं चल पाते हैं। मात्र ब्रह्मसृष्टियाँ ही तारतम ज्ञान के प्रकाश में हकीकत (सत्य) के मार्ग का अनुसरण करती हैं और निराकार को पार करके परमधाम पहुंचती हैं। इनके ही हृदय को परब्रह्म का धाम कहा गया है।

दिल मुरदा मजाजी जुलमत से, पैदा कुंन केहेते कुफरान।
क्यों होए सरभर मोमिनों, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।१८।।

निराकार से उत्पन्न होने वाले जीवों का हृदय झूठा और प्रेम से रहित (मरा हुआ) होता है। इनकी उत्पत्ति कुन्न से हुई होती है। भला ये जीव उन ब्रह्मात्माओं की बराबरी कैसे कर सकते हैं जिनके हृदय को प्रियतम परब्रह्म ने अपना धाम बनाया होता है।

भावार्थ - प्रेम से रहित हृदय निर्जीव कहलाता है। कुर्आन में 'कुन्न' का कथन अल्लाह तआला का कहा हुआ माना गया है जबकि उपनिषदों (ऐतरेय) में अक्षर ब्रह्म तथा पौराणिक ग्रन्थों (श्रीमद्भागवत आदि) में आदि नारायण के द्वारा 'एकोऽम बहुस्याम' का कहा हुआ माना जाता है। सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर इनमें कोई विरोध नहीं है। कुर्आन अद्वैत परब्रह्म का वर्णन करता है और उनके आदेश से सम्पूर्ण सृष्टि की रचना मानता है, इसलिये उसमें कुन्न का कथन अक्षरातीत (अल्लाह तआला) का माना गया है।

उपनिषदों का प्रतिपाद्य विषय अक्षर ब्रह्म है, इसलिये उसमें अक्षर ब्रह्म का कथन माना गया है। अक्षर-अक्षरातीत का स्वरूप एक होने से दोनों के कथनों में विरोधाभास नहीं माना जा सकता। अक्षर ब्रह्म के मन का स्वाप्निक स्वरूप ही आदि नारायण है जिनके कथन एकोऽम् बहुस्याम को श्री मद्भागवत आदि पौराणिक ग्रन्थों में चित्रित किया गया है। इस सम्बन्ध में तारतम वाणी का यह कथन ध्यान देने योग्य है - 'अर्स से आवे हुकम, तिन हुकमे चले कई हुकम'।

ए जो कही गिरो मलकूती, पैदा जुलमत से दुनी फान।
रूहें फिरस्ते उतरे अर्स से, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।१९।।

बैकुण्ठ को अपना धाम मानने वाली जीव सृष्टि निराकार (मोह सागर) से उत्पन्न

हुई है। वह प्रलय में लय को प्राप्त हो जाती है। ब्रह्मसृष्टि परमधाम से तथा ईश्वरीय सृष्टि अक्षर धाम (सत्स्वरूप) से आयी है। इन ब्रह्मात्माओं के हृदय को ही परब्रह्म ने अपना धाम बनाया है।

भावार्थ - व्रज, रास एवं जागनी लीला का आनन्द लेने के लिये अक्षर ब्रह्म ने २४००० सुरतायें (ईश्वरीय सृष्टियाँ) धारण की हैं। स्वलीला अद्वैत परमधाम में नया कुछ भी नहीं हो सकता, अतः अक्षर ब्रह्म के अहम् के स्वरूप सत्स्वरूप के द्वारा ईश्वरीय सृष्टि को धारण करना माना जायेगा।

दिल मजाजी गोस्त टुकड़ा, किया रसूलें मुख बयान।
सो क्यों उलंघे जुलमत को, बिना दिल मोमिन अर्स सुभान।।२०।।

मुहम्मद स. अ. व. ने अपने श्री मुख से कहा है कि जीव सृष्टि का हृदय झूठा होता है। वह मात्र मांस का टुकड़ा भर होता है अर्थात् उसमें प्रेम, विरह, एवं समर्पण की भावना नहीं होती है। भला ऐसे हृदय वाला जीव निराकार मण्डल को कैसे पार कर सकता हैं? यह शोभा तो उन ब्रह्मसृष्टियों की है, जिनका हृदय ही परब्रह्म का धाम होता है।

जो उतरे होवें अर्स से, रूहें तौहीद के दरम्यान।
सो लेसी अर्स अजीम को, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।२१।।

स्वलीला अद्वैत परमधाम से जो आत्मायें इस नश्वर जगत में आयी हुई है, वे तारतम ज्ञान के प्रकाश में प्रियतम का प्रेम लेकर परमधाम जाएगी। इनके ही हृदय को प्रियतम का धाम कहा गया है।

जो मुरदार करी दुनी मोमिनों, सो दिल मजाजी खान पान।
नूर बिलंद पोहोंचे पाक होए के, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।२२।।

जिस मिथ्या जगत को ब्रह्ममुनियों ने नश्वर और सारहीन समझकर छोड़ दिया, झूठे दिल वाले जीव उसी संसार के क्षणिक विषय भोगों में लिप्त हैं। परमधाम की आत्मायें प्रियतम के प्रेम में पवित्र होकर, पुनः परमधाम जाएँगी। धाम धनी ने इनके ही हृदय को अपना धाम बनाया है।

कह्या पर जले जबराईल, चढ़ सक्या न चौथे आसमान।
रूहें बसें तिन लाहूत में, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।२३।।

आत्माएं उस चौथे आकाश परमधाम में रहती है, जिसमें जोश का फरिस्ता जिब्रील

भी नहीं जा सका। सत्स्वरूप से आगे बढ़ने के प्रयास में उसके पर जलने लगें। इन ब्रह्मात्माओं के हृदय को ही प्रियतम का धाम कहा जाता है।

भावार्थ - स्वलीला अद्वैत स्वयं में परिपूर्ण है, न तो वहां से किसी को निश्कासित किया जा सकता है, और न हद बेहद से किसी नये को प्रवेश मिलता है। जिब्रील का मूल निवास सत्स्वरूप है, इसलिए स्वलीला अद्वैत परमधाम के एकत्व में उसका प्रवेश करना संभव नहीं है।

मुरग अंदर बैठा खाक ले चोंच में, ना जबराईल तिन समान।
ए माएने मेयराज रूहें जानहीं, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।२४।।

जब मुहम्मद स. अ. व. को मेयराज हुआ तो उन्होंने देखा कि यमुना जी के किनारे एक वृक्ष है जिसके उपर मुर्ग अपनी चोंच में मिट्टी लेकर बैठा है और कह रहा है कि यदि मैं इस खाक (मिट्टी) को छोड़ दूं तो अंधेरा हो जाएगा। जिब्रील तो इस मुर्ग के समान भी नहीं है। परमधाम की आत्मायें ही इस मेयराज के रहस्य को जानती हैं, क्योंकि इन्हीं का दिल प्रियतम परब्रह्म का धाम होता है।

भावार्थ - परब्रह्म के आदेश से यह माया का खेल बना है, जिसमें श्यामा जी की आत्मा ने श्री देवचन्द्र जी के पंचभौतिक तन को धारण किया है। यदि उनकी सुरता इस संसार को छोड़कर परमधाम चली जाए तो, संसार का यह खेल समाप्त हो जाएगा। उपरोक्त कथानक में श्यामा जी की सुरता को मुर्ग कहा गया है। चोंच में रखी खाक (मिट्टी) उनके पंचभौतिक तन के लिये है। जो सुदरसाथ परब्रह्म के जोश जिब्रील को ही आवेश मानते है और उसे परब्रह्म का स्वरूप मानते हैं, उन्हें यह आत्ममंथन करना चाहिए कि इस चौपाई में तो जिब्रील से भी श्रेष्ठ श्री देवचन्द्र जी के पंचभौतिक तन को माना गया है। श्री देवचन्द्र जी को दर्शन देने वाले आवेश स्वरूप श्री राज जी से श्री देवचन्द्र जी या अन्य कोई भी श्रेष्ठ नहीं है। ऐसी स्थिति में जोश और आवेश को स्वरूप की दृष्टि से एक नहीं माना जा सकता। साहित्य की दृष्टि से भले ही मान लें।

पोहोंचे महंमद मेयराज में, दो गोसे फरक कमान।
इत रूहें रहें दरगाह मिने, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।२५।।

जब मुहम्मद स. अ. व. को परब्रह्म (श्री राज जी) का दर्शन हुआ, और वे मूलमिलावे में श्री राज जी के सम्मुख पहुंचे, तो उनके और श्री राज जी के बीच में धनुष के

दो कोनों के बराबर दूरी रह गई थी। ब्रह्मसृश्टियाँ इसी परमधाम की रहने वाली है, और उनके ही हृदय को परब्रह्म का धाम कहते है।

भावार्थ - मुहम्मद साहब परमधाम में शरीर से नहीं पहुँचे थे, बल्कि आत्मिक दृष्टि से पहुचे थे। उनके अंदर अक्षर ब्रह्म की आत्मा थी, जिसे अपना इश्क देकर श्री राज जी ने अपने ही स्वरूप जैसा बना लिया था, तभी दर्शन संभव हो सका।

नब्बे हजार हरफ कहे नबी को, तामें कछू गुझ रखाए रेहेमान।
सो माएने जाहेर किए, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।२६।।

परब्रह्म ने मुहम्मद स. अ. व. से ६०,००० शब्दों में बात की। उसमें हकीकत एवं मारिफत की बातों को छिपा दिया। उन रहस्यों को जागनी लीला में परमधाम की आत्माओं ने उजागर किया जिनके हृदय को अक्षरातीत का धाम कहा जाता है।

किए आपस में रूहें गवाही, हकें अपनी जुबान।
याको जाने दिल हकीकी, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।२७।।

परमधाम में इश्क रब्द के समय श्री राज जी ने अपने श्री मुख से कहा था आत्माओं! तुम आपस में इस बात की साक्षी रहना कि तुमने मुझसे माया का खेल देखने की इच्छा की थी और माया में जाकर तुम मुझे भूल नहीं जाना। इस रहस्य को सच्चे हृदय वाले ब्रह्ममुनि ही जानते हैं, जिनके हृदय को अपना धाम बनाकर स्वयं परब्रह्म बैठे होते हैं।

दिया जवाब रूहों हक को, ए सुकन दिल बीच आन।
ए रूहें रहें हक हजूर, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।२८।।

श्री राज जी के इन वचनों को अपने दिल में लेकर ब्रह्मसृष्टियों ने अपने प्राणेश्वर को उत्तर दिया था कि आप सौ बार भी परीक्षा लेकर देखिए तो भी हम आपको भूलेंगी नहीं। ये ब्रह्मसृष्टियां परमधाम में हर पल परब्रह्म के सम्मुख रहने वाली हैं, और इनके ही हृदय को अक्षरातीत अपना धाम बनाकर विराजमान हैं।

कह्या मोतिन के मोंहों कुलफ, ए माएने तोड़त पढ़ों गुमान।
ए अर्स तन रूहें जानहीं, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।२९।।

मेयराज नामे में कहा गया है कि मोमियों के मुख पर ताला लगा है अर्थात् जब मु. स. अ. व. को परब्रह्म का दर्शन हुआ तो उन्होंने परब्रह्म के चारो ओर ब्रह्मसृष्टियों को

फरामोशी में बैठे हुए देखा। कुर्आन पढ़ने वाले मुसलमान इसके रहस्य को न जानने के कारण उल्टे अर्थ करते हैं। इसके रहस्य को तो वे आत्माएं ही जानती हैं, जिनके मूल तन मूलमिलावे में विराजमान हैं और जिनके हृदय को परब्रह्म का साक्षात् धाम कहा है।

भावार्थ - शरीयत की राह पर चलने वाले मुसलमान इस प्रसंग का अश्लील अर्थ करते हैं। वे ऐसा मानते है कि हमें जन्नत में सुन्दर आखों वाली हूरें मिलेंगी। उन्हें ये भी पता नहीं कि अर्शे अजीम और बहिश्त अलग - अलग है। अर्शे अजीम में तो संसार की कोई चीज जा ही नहीं सकती।

पोहोंच्या मेयराज में गुनाह मोमिनों, ए सुन उरझे मुसलमान।
ठौर गुन्हे न पोहोंच्या जबराईल, ए जाने दिल मोमिन अर्स सुभान।।३०।।

मुहम्मद स. अ. व. ने जिस मूल मिलावे मे जाकर परब्रह्म का दर्शन किया, उसमें ब्रह्मसृश्टियों के उपर गुनाह लगने की बात सुनकर शरीयत के मुसलमान उलझ जाते हैं। स्वयं जिब्रील फरिश्ता भी जिस मूल मिलावे में नहीं जा सकता उसके विषय में यथार्थ रूप से वे ब्रह्ममुनि ही जानते हैं, जिनका हृदय प्रियतम परब्रह्म का धाम होता है।

भावार्थ - जब मुहम्मद स. अ. व. की आत्मा मूल मिलावे में पहुंची तो उसने ब्रह्मसृष्टियों को फरामोशी में देखा। इसका कारण पूछने पर श्री राज जी ने उत्तर दिया कि इन्होंने माया का खेल देखने की इच्छा की है,, जिसके कारण इनके उपर फरामोशी है। मुहम्मद साहब की आत्मा के द्वारा यह पूछने पर कि यह कब हटेगी तो उत्तर मिला कि 'इनकी किल्ली तेरा दिल, ए खुले जब आओ मिल' अर्थात् तुम्हारे साथ जब सभी आत्मायें जागृत होकर परमधाम आयेंगी तभी यह फरामोशी हटेगी।

हकें हाथ हिसाब लिया मोमिनों, तोड़या गुमान दे नुकसान।
तित बैठे अपना अर्स कर, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।३१।।

ब्रह्मसृष्टियों की इच्छा पूरी करने के लिये श्री राज जी ने उन्हें माया के खेल में भेज दिया। परमधाम छोड़कर माया में आने से उन्हें अपना अखण्ड सुख खोने की हानि उठानी पड़ी तथा उनका यह अहम् भी टूट गया कि उनका प्रेम बड़ा है। सच्चे न्यायाधीश के रूप में प्रियतम् ने अपना न्याय करते हुए इस संसार में भी उनके हृदय को अपना धाम बनाया है और उसमें विराजमान हो गये हैं।

पोहोंची तकसीर रूहें अर्स में, हके फुरमाया फुरमान।
तित दूजा कोई न पोहोंचिया, बिना दिल मोमिन अर्स सुभान।।३२।।

इस खेल में ब्रह्मसृष्टियों के तनों से होने वाली भूलें गुनाह (अपराध) के रूप में उस मूल मिलावे में पहुँच रही है, जहां उनके मूल तन विद्यमान हैं। यह बात परब्रह्म ने कुर्आन में पहले से कह रखी है। जिनके हृदय को अपना धाम बनाकर स्वयं परब्रह्म विराजमान है, उन ब्रह्ममुनियों के अतिरिक्त अन्य कोई भी आज दिन तक परमधाम नहीं जा सका है।

भावार्थ - परमधाम में खेल मांगने का अपराध (गुनाह) लगा और इस खेल में होने वाली भूलें अखण्ड अपराध के रूप में अनन्त काल तक हंसी का कारण बनी रहेंगी। परमधाम में श्री राज जी ने अपने स्वरूप की पहचान देने के लिये उनके हृदय में खेल देखने की इच्छा पैदा की थी, अतः वह गुनाह तो क्षम्य है किन्तु इस जागनी ब्रह्माण्ड में तारतम ज्ञान का प्रकाश पा जाने के पश्चात् भी यदि हम से अपराध होता है तो वह अमिट होगा क्योंकि ये गुनाह श्री राज जी की प्रेरणा से नहीं हो रहे हैं अपितु हमारे जीव की भूल हमारी आत्मा को अनन्त काल तक की हंसी का पात्र बना रही है। इस प्रकार दोनों गुनाहों में सूक्ष्म सा अन्तर है।

आसिक नाचे अर्स अजीम में, दूजा नाच न सके इन तान।
और राहे में जलें आवते, बिना दिल मोमिन अर्स सुभान।।३३।।

ब्रह्ममुनि परब्रह्म के सच्चे प्रेमी होते हैं। वे परमधाम की शोभा में डूबकर आनन्द मग्न रहते हैं (नाचते हैं)। उनकी तरह अन्य कोई भी परमधाम के प्रेम मार्ग पर नहीं चल सकता। परब्रह्म का धाम कहलाने वाले इन ब्रह्ममुनियों के अतिरिक्त यदि संसार का कोई अन्य जीव इस अद्वैत - प्रेम मार्ग पर चलने का प्रयास भी करता है तो वह असफल हो जाता है (जल जाता है।)

भावार्थ - नाचने का कथन मुहाविरे के रूप में है। आनन्द में विभोर हो जाना ही नाचना है। जीव सृष्टि के पास अटूट श्रद्धा, समर्पण और विरह का अभाव होता है, जिसके कारण वह प्रेम मार्ग पर नहीं चल पाती है।

जो गिरो भाई कहे महंमद के, ताको इस्कै में गुजरान।
वाको एही फैल एही बंदगी, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।३४।।

इन ब्रह्मसृश्टियों को मुहम्मद स. अ. व. ने अपना भाई कहा है। इनका प्रत्येक पल

परब्रह्म के प्रेम में ही व्यतीत होता है। अनन्य प्रेम ही उनका आचरण है और प्रेम ही उनकी भक्ति है। यही कारण है कि इनका हृदय सच्चिदानन्द परब्रह्म का धाम कहलाता है।

एही खासलखास गिरो महंमदी, जाकी बंदगी इस्क ईमान।
इनों फैल ऊपर का ना रहे, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।३५।।

ये ब्रह्मसृश्टियां परब्रह्म की आह्लादिनी शक्ति श्यामा जी की अंगरूपा हैं। अपने प्राणेश्वर अक्षरातीत से अटूट प्रेम और अटूट विश्वास ही इनकी भक्ति है। भक्ति के नाम पर ये किसी प्रकार का बाह्य आडम्बर या दिखावा नहीं करतीं। इनके ही हृदय को प्रियतम ने अपना धाम बनाया है।

द्रश्टव्य - अपने आत्म कल्याण के लिये प्रत्येक सुन्दरसाथ को श्रृंगार के इस कथन 'चितवनी युगल स्वरूप की, देत कदम नूरजमाल' को आत्मसात् करना चाहिए। समाज को चितवनी के स्वर्णिम मार्ग से हटाकर केवल तिलक, माला, कण्ठी, जप तथा पूजा - पाठ में ही उलझाये रखना मात्र दिखावा करना है।

दूजा जले इन राह में, ए वाहेदत का मैदान।
तीन सूरत महंमद या रूहें, ए एकै दिल मोमिन अर्स सुभान।।३६।।

परमधाम स्वलीला अद्वैत एकत्व (वहदत) की भूमिका है। इसके प्रेम-मार्ग पर या तो मुहम्मद की तीनों सूरतें अक्षर ब्रह्म की आत्मा, श्यामा जी या श्री महामति जी की आत्मा ही चल सकती हैं या परमधाम की ब्रह्मसृष्टियां। संसार का कोई भी जीव यदि इस पर चलने का प्रयास करता है तो वह जल जाता है। वस्तुतः परमधाम में श्री राज जी, श्यामा जी, अक्षर ब्रह्म, महालक्ष्मी और ब्रह्मसृष्टियाँ एक ही एकत्व (वहदत) के स्वरूप हैं अर्थात् इन सभी का एक ही हृदय (दिल) है। इन्हीं ब्रह्मात्माओं के हृदय को धाम कहलाने की शोभा प्राप्त है।

प्रश्न - मीराबाई, रसखान और सूरदास तो जीव सृष्टि के थे। क्या ये प्रेम मार्ग पर नहीं चले?

उत्तर - तारतम ज्ञान से रहित होने के कारण इन्हें परब्रह्म के धाम, स्वरूप और लीला का बोध नहीं था। यद्यपि इन्होंने प्रेम मार्ग पर चलने का प्रयास तो किया किन्तु परमधाम से मूल सम्बन्ध तथा वहां का ज्ञान न होने के कारण ये मूल लक्ष्य से भटक गये। इनके हृदय की निर्मलता, श्रद्धा तथा समर्पण प्रशंसनीय है, तथापि परमहंस महाराज श्री

गोपाल मणि जी, बाबा दयाराम जी, युगलदास जी एवं परमहंस महाराज श्री रामरतन जी की प्रेम साधना इनसे श्रेष्ठ स्तर की थी।

महंमद क्यों ल्याए खासी उमत, इन बीच जिमी हैवान।
ए उमत जाने इन स्वाल को, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।३७।।

इस मायावी जगत में पशुओं जैसे क्रूर स्वभाव वाले मनुश्य रहते हैं। इनके बीच श्यामा जी के द्वारा परमधाम की ब्रह्मसृष्टियों को क्यों लाया गया, इसका उत्तर वे आत्मायें ही स्पष्ट रूप से जानती है। इनके ही हृदय को प्रियतम ने अपना धाम बनाया है।

गलित गात अंग भीगल, ए दिल हकीकी गलतान।
ए वाहेदत हक हादी रूहें, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।३८।।

परमधाम में परब्रह्म श्री राज जी, श्यामा जी एवं ब्रह्मसृष्टियों में वहदत अर्थात् एक दिली की लीला है। ये सभी एक दूसरे के प्रेम में गलित गात रहने वाले हैं। इनके नूरी अंग प्रेम में डूबे रहते हैं। इनका हृदय पूर्ण रूप से सत्य और दूसरे के प्रेम में समर्पित होता है। इन्हीं ब्रह्मांग्नाओं के हृदय को परब्रह्म ने अपना धाम कहा है।

भावार्थ - जिस प्रकार जल में मिश्री का टुकड़ा गलकर अपनी दृश्यता का अस्तित्व खो देता है उसी प्रकार परब्रह्म के प्रेम रूपी जल में हृदय का इतना डूब जाना कि उसे अपने शरीर के अस्तित्व का आभास ही न हो, गलित गात होना कहलाता है। कुर्आन में परब्रह्म का धाम होने के सम्बन्ध में एक बहुत अच्छा कथन है -

कलूब ए मोमनीन अर्श ए मनस्त। इस प्रकार की भावना वैदिक ऋषियों ने भी की है- 'यो आत्मनि तिष्ठति अन्तरो यमात्मा न वेद यस्यात्मा शरीरम्' अर्थात् जो आत्मा के अन्दर अन्तर्यामी रूप से विद्यमान है, किन्तु आत्मा को उसका बोध नहीं है।

बका तरफ कोई न जानत, पढ़े ढूंढ ढूंढ हुए हैरान।
सो बका हदें सब बेवरा किया, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।३९।।

आज तक इस सृष्टि में किसी को भी अखण्ड परमधाम के विषय में यथार्थ ज्ञान नहीं था। वेद - कतेब के विद्वान सांकेतिक भाषा में परमधाम के विषय में पढ़ते तो अवश्य थे, किन्तु उसकी खोज में मिली असफलता ने उन्हें निराश कर दिया। अब उन ब्रह्ममुनियों ने तारतम ज्ञान के प्रकाश में यह स्पष्ट कर दिया कि निराकार के परे बेहद मण्डल कहां तक है और बेहद से भी परे परमधाम कहां है? इन्हीं ब्रह्ममुनियों के हृदय को प्रियतम ने

अपना धाम बनाया है।

भावार्थ - वेद में वर्णित पुरूष सूक्त के कथन 'त्रिपादुर्ध्व उदैत्पुरूषः' अथर्ववेद के केन सूक्त में वर्णित ब्रह्मपुरी एवं मु. उ. के कथन 'दिव्य ब्रह्मपुरे ह्येषः व्योम्नि आत्मा प्रतिष्ठितः' में परमधाम का प्रमाण मिलता है। इसी प्रकार कुर्आन के १५ वें पारे में वर्णित मेयराज के प्रसंग से भी परमधाम का बोध होता है किन्तु बिना तारतम ज्ञान के इसकी स्पष्ट विवेचना नहीं हो पाती थी।

अर्स बका के बयान की, हुती न काहूं सुध सान।
सो जरे जरा जाहेर करी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।४०।।

स्वलीला अद्वैत परमधाम के विषय में वर्णन करने की सुधि किसी में भी नहीं थी। सभी मन - वाणी से परे कहकर मौन हो जाते थे। अब ब्रह्मसृष्टियों ने तारतम वाणी के द्वारा परमधाम के सभी पक्षों का विशंद वर्णन प्रस्तुत कर दिया है। इन्हीं ब्रह्मांगनाओं के हृदय में प्रियतम परब्रह्म विराजमान रहते हैं।

लिखी हकें इसारतें रमूजें, सो किन खोली न फिरस्ते इंसान।
सो दुनी सब बेसक हुई, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।४१।।

कुर्आन में परब्रह्म ने संकेतों में आध्यात्मिक ज्ञान की गुह्य बातें लिखी है, जिनके रहस्यों को आज दिन तक किसी भी मनुष्य या फरिश्ते ने स्पष्ट रूप से उजागर नहीं किया था। अब ब्रह्ममुनियों की कृपा से संसार उन रहस्यों से अवगत होकर संशय रहित हो गया है। इन्ही आत्माओं के हृदय को अक्षरातीत ने अपना धाम कहा है।

रूह अल्ला की किल्ली से, खुले बका द्वार देहेलान।
ए तीन सूरत कही महंमद की, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।४२।।

श्यामा जी (सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी) के लाये हुए तारतम ज्ञान (इल्म-ए-लदुनी) से अखण्ड परमधाम की शोभा को जानने तथा ध्यान द्वारा उसे प्रत्यक्ष देखने का मार्ग प्रशस्त हो गया है। ब्रह्मसृष्टियों के लिये यह कार्य मुहम्मद की शोभा प्राप्त तीन सूरतों (मुहम्मद स. अ. व., सद्गुरू धन श्री देवचन्द्र जी तथा श्री प्राणनाथ जी) ने किया है। इन ब्रह्मात्माओं के हृदय में परब्रह्म का निवास है।

भावार्थ - इस चौपाई के दूसरे चरण में कथित 'द्वार देहलान' का तात्पर्य परमधाम के २५ पक्षों की शोभा से है।

तो हुई दुनी सब हैयाती, जो उड़ाए दिया उनमान।
पट खोले महंमद भिस्त के, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।४३।।

श्री प्राणनाथ जी ने तारतम ज्ञान के द्वारा अनुमान से पोषित ज्ञान को समाप्त कर दिया और सारे संसार के लिये अखण्ड मुक्ति का द्वार खोल दिया। उन्होंने सभी जीवों के लिये अखण्ड बहिश्तें (मुक्ति स्थान) प्रदान की। ऐसा इसलिये हो सका, क्योंकि इस ब्रह्माण्ड में ब्रह्ममुनियों के चरण कमल पड़े हैं। इन्हीं ब्रह्ममुनियों के हृदय को प्रियतम परब्रह्म ने अपना धाम बनाया है।

भावार्थ - मोहे ऐसा दिल में आइया, ए जो खेल देख्या ब्रह्माण्ड ।
तो क्या देखी हम दुनिया, जो इनको न करे अखण्ड ।।

तथा 'मुक्त देसी ब्रह्माण्ड को, आए ब्रह्म आतम सत' के कथन यही सिद्ध करते हैं कि यदि इस संसार में ब्रह्मसृष्टियाँ नहीं आतीं तो परब्रह्म भी श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में अपने आवेश स्वरूप से नहीं आते और संसार को भी बेहद मण्डल की अखण्ड मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती थी।

सब जिमी पर सिजदा, किया फिरस्ते घस पेसान।
पर होए न हकीकीं दिल बिना, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।४४।।

अजाजील फरिश्ते ने सम्पूर्ण घरती पर अपना सिर रखकर प्रणाम (सिज्दा) किया किन्तु जब तक उसका हृदय पूर्णतया सत्य (पवित्र) न हो तब तक वह उन ब्रह्मसृष्टियों के समान अखण्ड सुख कैसे प्राप्त कर सकता है जिनके हृदय को अपना धाम बनाकर स्वयं परब्रह्म ही विराजमान रहते है।

भावार्थ - संसार के मनुष्य आदि सभी जीव आदिनारायण (अजाजील) की चेतना के सांकल्पिक प्रतिबिम्ब स्वरूप हैं। इन सभी मनुष्यों द्वारा परब्रह्म को अनेक प्रकार की भक्ति से प्रणाम करना कतेब पक्ष में सिज्दा करना कहा गया है। संसार के जीव कर्मकाण्ड तथा उपासना के मार्ग पर कितना भी क्यों न चलें, वे ब्रह्मात्माओं के समान प्रेम से परिपूर्ण पवित्र हृदय वाले नहीं हो सकते।

कलमा निमाज रोजा दिल से, दे जगात आप कुरबान।
करे हज बका हमेसगी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।४५।।

ब्रह्मसृष्टियों के लिये तारतम वाणी का चिन्तन ही मुख से कलमा कहना है। इन्द्रियों को विषयों से दूर रखकर चितवनी में डूबना ही उनका रोजा और नमाज है। स्वयं को परब्रह्म के प्रति पूर्णतया समर्पित कर देना ही जकात है। इसी प्रकार चितवनी द्वारा परमधाम के २५ पक्षों एवं युगल स्वरूप का दीदार करना ही उनके लिये हज करना है।

भवार्थ- शरिअत की बन्दगी में जो कल्मा, रोजा, नमाज, हज और जकात की प्रक्रिया होती है, वह तरीकत में कुछ अलग होती है। सच्चे सूफी फकीर ५ बार नमाज पढ़ने की अपेक्षा रात में चिन्तन द्वारा बन्दगी करते हैं। जैसे शरीयत के अनुसार अपनी आय का ४० वां भाग दान में देना चाहिए, किन्तु तरीकत के अनुसार ३९ भाग दान में देकर १/४० वें भाग से ही अपना गुजारा करना चाहिए। ब्रह्मसृष्टियों के लिये हकीकत और मारिफत का मार्ग है, जिसमें स्वयं को ही परब्रह्म के प्रति समर्पित किया जाता है। दुर्भाग्य वश, आज भी सुन्दरसाथ शरीयत एवं तरीकत (पूजा, पाठ, मन्त्र जाप, परिक्रमा) को ही सर्वोपरि माने बैठा है। जिस हकीकत एवं मारिफत के मार्ग से परमधाम तथा युगल स्वरूप का साक्षात्कार होता है, वह वाणी चिन्तन, चितवनी, सर्वस्व समर्पण, विरह-प्रेम आदि का मार्ग प्रचारित ही नहीं किया जाता।

जिन चांद नूर देख्या महंमदी, सोई जाने रोजे रमजान।
न जाने दिल मुरदा मजाजी, ए जाने दिल मोमिन अर्स सुभान।।४६।।

जो सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी के लाये हुए तारतम ज्ञान का प्रकाश पा गये है, एकमात्र वे ही जानते हैं कि वास्तविक रोजा और रमजान क्या है? इनके ही हृदय को प्रियतम ने अपना धाम कहा है। शरीयत में बंधे हुए झूठे दिल वाले जीव सृष्टि के मुस्लिम लोग रोजा और नमाज को यथार्थ रूप में नहीं जानते।

भावार्थ - उपरोक्त चौपाई में तारतम से तात्पर्य सम्पूर्ण कुल्जुम स्वरूप के ज्ञान से है, मात्र छः चौपाइयों को याद करने से नहीं।

सुध ना रोजे रमजान की, ना चांद सूरज पेहेचान।
करें सरीकी गिरो रबानी, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।४७।।

शरीयत पर चलने वालों को न तो यह पता है कि रमजान के महिने में रोजा रखने का आशय क्या है? न उन्हें पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान शोभायमान श्री देवचन्द्र और सूर्य के समान तारतम ज्ञान का उजाला करने वाले श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की ही पहचान है। फिर भी ये जीव उन ब्रह्मसृष्टियों की बराबरी करने का प्रयास करते हैं, जिनके धाम हृदय में स्वयं अक्षरातीत विराजमान होते हैं।

भावार्थ - शरीयत के अनुसार रमजान मास में उपवास रखकर अल्लाह तआला की बन्दगी करने का नियम है किन्तु यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो दिन के समय पानी भी न पीना तथा रात्रि में और प्रातः चार बजे मांस आदि के साथ भरपेट भोजन करने से

आत्मिक कल्याण नहीं हो सकता। हकीकत (सत्य) का मार्ग यही कहता है कि मनुष्य को जीवन भर सादा, सात्विक अल्पाहार करते हुए प्रेमा-भक्ति में लीन रहना चाहिए।

जब ले उठसी रूहें लुदंनी, तब होसी सब पेहेचान।
दई हैयाती सबन को, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।४८।।

जब तारतम ज्ञान का प्रकाश लेकर ब्रह्मसृष्टियां जागृत होंगी, तब सबको ही वास्तविक सत्य का बोध होगा। इन ब्रह्मसृष्टियों की कृपा से ही संसार के सभी जीवों को अखण्ड मुक्ति प्राप्त होगी। इन्हीं के हृदय को प्रियतम परब्रह्म ने अपना धाम कहा है।

ईसे आब हैयाती पिलाइया, काढ़या कुफर जिमी आसमान।
दीन एक किया सब इसलाम, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।४९।।

सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी ने परमधाम का तारतम ज्ञान रूपी जल पिलाकर इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की अज्ञानता को नष्ट कर दिया। उन्होंने संसार के सभी लोगों को श्री निजानन्द के शाश्वत सत्य मार्ग पर चलने का आहवान किया। सभी ब्रह्ममुनि इन्हीं के अंगरूप हैं जिनके हृदय को श्रीराज जी ने अपना धाम कहा है।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में 'दीन ए इस्लाम' का तात्पर्य कट्टरपन्थी मुल्ला लोगों द्वारा अरबी भाषा और शरियत पर आधारित इस्लाम को थोपने से नहीं, अपितु संसार के सभी प्राणियों को एक परिवार मानते हुए वेशभूषा, भाषा, सम्प्रदाय, क्षेत्र और वर्गवाद के भेदभाव की परिधि से बाहर करके एकात्म मानववाद के आधार पर सबको प्रेम और शान्ति का संदेश देने वाले से है। ऐसा मात्र तारतम ज्ञान के प्रकाश से ही सम्भव हो सकता है। यही 'निजानन्द' का मार्ग है।

सेहेरग से हक नजीक, कह्या खासल खास मकान।
इत हिसाब इत कयामत, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।५०।।

सच्चिदानन्द परब्रह्म को इन ब्रह्ममुनियों की प्राणनली से भी निकट उनके धाम हृदय में विराजमान होना कहा गया है। ये परब्रह्म को अतिप्रिय हैं और हद-बेहद से परे परमधाम के रहने वाले हैं। ये ही सबको उनके कर्मों के अनुसार फल देकर अखण्ड मुक्ति प्रदान करेंगे।

कहे महंमद सिफत उमत की, करें अपने मुख मेहेरबान।
सोई जाने जामें हक इलम, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।५१।।

हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि इन ब्रह्मसृष्टियों की महिमा का वर्णन तो स्वयं कृपा के सागर अक्षरातीत करते हैं, किन्तु इस रहस्य को एकमात्र वही जानता है जिसके हृदय में तारतम ज्ञान का प्रकाश हो चुका है। इन ब्रह्मांगनाओं के हृदय में प्रियतम परब्रह्म का धाम है।

भावार्थ- 'बड़ी बड़ाई इनकी जाकी सिफत करे सुभान। किरंतन।' का कथन इसी सन्दर्भ में है। अक्षरातीत तथा ब्रह्मसृष्टि में अद्वैत सम्बन्ध होता है।

।।प्रकरण।।२३।।चौपाई।।७३३।।

सनंध–रसूल साहेब की पेहेचान बातूनी (बातिनी)

इस प्रकरण में मुहम्मद स.अ.व. की यथार्थ (सूक्ष्म) पहचान बतायी गयी है।

केहेती हों मोमिन को, सुनसी सब जहान।
माएने गुझ या जाहेर, कोई ले न सक्या फुरमान।।१।।

श्री महामति जी कहते हैं कि यद्यपि मेरा यह कथन ब्रह्मसृष्टियों के लिये हैं किन्तु उसे सारा संसार सुनेगा। कुर्आन के बाह्य या गुह्यार्थों को यथार्थ रूप में आज दिन तक कोई भी नहीं ले सका है।

जाहेर माएने कलमें के, रसूलें कहे समझाए।
सो भी कोई न ले सक्या, तो क्यों देऊं बातून बताए।।२।।

मुहम्मद स.अ.व. ने कल्मे के बाह्य अर्थ को अच्छी प्रकार से समझाकर बताया फिर भी उसे कोई ग्रहण नहीं कर सका। ऐसी स्थिति में यदि मैं उसके गुह्य अर्थ को प्रकाशित करूं तो उससे क्या लाभ होग?

नेक तो भी कहूं जाहेर, मेरे मोमिनो के कारन।
अंतर मैं ना कर सकों, अर्स रूहें मेरे तन।।३।।

फिर भी अपने ब्रह्ममुनियों के लिये थोड़ा गुह्यार्थ तो प्रकट करना ही पड़ेगा। परमधाम के ये ब्रह्ममुनि मेरे प्राणेश्वर के ही तन हैं, इसलिये मैं उनसे किसी भी प्रकार का भेद (छिपाव) नहीं कर सकता।

भावार्थ- श्री महामति जी के धाम हृदय में स्वयं अक्षरातीत श्री राज जी ही यह वाणी कह रहे हैं, अतः इस चौपाई के चौथे चरण में उन्होंने परमधाम की आत्माओं को अपना तन कहा है।

जाहेर कह्या सो देखाइया, बातून जाहेर कर देऊं तुम।
आगूं अर्स रूहें मेले मिने, देखाऊं बका वतन खसम।।४।।

मैंने पहले कुर्आन के बाह्य अर्थो को ही उजागर किया था, अब गुह्यार्थ को भी तुमसे बता रहा हूँ। भविष्य में जब परमधाम की आत्मायें एकत्रित हो जायेंगी तो अखण्ड परमधाम तथा परब्रह्म की भी पहचान कराऊंगा।

विशेश- उपरोक्त चौपाई में श्री पन्ना जी में ५००० सुन्दरसाथ के एकत्रित होने के सम्बन्ध में संकेत किया गया है। यह स्मरणीय है कि श्री पन्ना जी में ही परमधाम की चार किताबें खिल्वत, परिक्रमा, सागर तथा श्रृंगार का अवतरण हुआ था जिसमें परमधाम और युगल स्वरूप की पूर्ण पहचान (बाह्य एवं आन्तरिक) दी गयी है।

जिन जानो बिना कारने, खेल जो रचिया एह।
ए माएने गुझ फुरमान के, समझ लीजो दिल दे।।५।।

हे साथ जी! आप ऐसा मत समझिये कि बिना किसी कारण के ही माया का यह खेल बनाया गया है। कुर्आन तथा श्रीमद् भागवत् के गुह्यार्थों में इसका रहस्य छिपा है कि यह ब्रह्माण्ड क्यों बना? आप दिल देकर अर्थात एकाग्र मन से इसे समझिये।

नूर पार थें रसूल आवहीं, ए देखो हकीकत।
हक भेजे अपना फुरमान, आगे आलम तो गफलत।।६।।

आप इस वास्तविकता को समझिए कि जब सारा संसार अज्ञानता की नींद में सो रहा था तो उस समय बेहद के परे परमधाम से मुहम्मद स.अ.व. इस संसार में सन्देशवाहक (रसूल) बनकर आते हैं और परब्रह्म श्री राजजी उनके हाथ अपना कुर्आन भिजवाते हैं।

दूसरा तो कोई है नहीं, ए ख्वाबी दम सब जहान।
तो रसूल आया किन वास्ते, हक पे ले फुरमान।।७।।

जब स्वलीला अद्वैत परमधाम में श्रीराज जी के अतिरिक्त अन्य दूसरा कोई है ही नहीं तथा इस संसार के सभी प्राणी स्वाप्निक (कुन्न से) हैं तो मुहम्मद स.अ.व. कुर्आन के रूप में परब्रह्म का सन्देश किसके लिये लेकर आये?

ए न आवे ख्वाबी दम पर, अपना नूरी जेह।
देखो आंखें दिल खोल के, कोई मतलब बड़ा है एह।।८।।

हे साथ जी! आप अपने हृदय की (अन्तरात्मा की) आंखें खोलकर देखिए। अपना यह नूरी रसूल संसार के मायावी जीवों के लिये नहीं आ सकता। इनके इस संसार में आने का कोई विशेश प्रयोजन है।

दुनियां कहे ए हम पर, ल्याया है किताब।
ऐसे रसूल को तो कहें, जो बोलत मिने ख्वाब।।९।।

संसार के जीव कहते हैं कि मुहम्मद स.अ.व. कुर्आन का ज्ञान हमारे लिये लेकर आये हैं। ये बेचारे स्वप्न की बुद्धि से स्वप्न के ब्रह्माण्ड में बोल रहे हैं। यही कारण है कि ये मुहम्मद स.अ.व. को अपने लिये आया हुआ कहते हैं।

क्यों मुख ऐसा बोलहीं, जो समझे होंए कागद।
ना सुध रसूल ना फुरमान, तो यों कहें सब्द।।१०।।

यदि ये लोग कुर्आन के आन्तरिक अर्थों को समझ गये होते तो अपने मुख से इस तरह की बातें नहीं करते। इन्हें न तो मुहम्मद स.अ.व. की ही वास्तविक पहचान है और न कुर्आन की, इसलिये ये इस प्रकार की भ्रान्तिमूलक बातें कहते हैं।

आसमान जिमी के लोक को, अर्स बका नाहीं खबर।
तो तिनका कासिद महंमद, होए अर्स से आवे क्यों कर।।११।।

पृथ्वी से लेकर बैकुण्ठ तक के जीवों को अखण्ड परमधाम का कोई भी ज्ञान नहीं है। ऐसी स्थिति में यह सम्भव ही नहीं है कि मुहम्मद स.अ.व. उनके लिये संदेश वाहक बनकर परमधाम से आयें।

भावार्थ- यद्यपि कुर्आन में अरब के लोगों के लिये मानवीय शिक्षायें भी हैं, किन्तु वे गौण रूप में। इस प्रकार की शिक्षायें तो तौरेत, इन्जील तथा जंबूर में भी थी। कुर्आन के अवतरण का मुख्य उद्देश्य ब्रह्ममुनियों के लिये परमधाम तथा परब्रह्म की साक्षी देना था।

बेसहूर ऐसी दुनियां, माहें अबलीस आदम नसल।
तो कहे महंमद को कासिद, जो लानत ऊपर अकल।।१२।।

संसार के लोग इतने नासमझ हैं कि वे मुहम्मद साहब को अपने लिये एक संदेश वाहक के रूप में देखते हैं। उनकी इस प्रकार की बुद्धि को धिक्कार है। इस सृष्टि में रज और तम से ग्रसित मनुष्यों के दिल में अज्ञान रूपी शैतान का साम्राज्य है।

सो घर कह्या दुनी का, जो फुरमाने कह्या मुरदार।
तो आदम काढ़्या भिस्त से, ए दादा आदमियों सिरदार।।१३।।

कुर्आन में जिस निराकार को नश्वर और जड़ कहा गया है। वह संसार के जीवों का मूलघर (धाम) है। यही कारण है कि बाबा आदम को बहिश्त से निष्कासित किया गया। यही बाबा आदम सृष्टि के प्रारम्भिक पुरूष हैं।

मोर सांप जिद ले निकस्या, और भिस्त सेंती सैतान।
हिरस हवा साथ आदम, लोक ताए कहें मुसलमान।।१४।।

आदम को बहिश्त से निकलवाने की जिद में अड़ा हुआ शैतान अपने लक्ष्य में सफल हो गया। उसका सहायक बनने के कारण मोर और सर्प को भी आदम, हव्वा और हिर्स के साथ बहिश्त से निष्कासित किया गया। संसार के लोग इसी आदम को परब्रह्म पर अटूट विश्वास रखने वाले सच्चा मुसलमाान कहते हैं।

भावार्थ- उपरोक्त कथानक में मोर और सर्प रजोगुण तथा तमोगुण के प्रतीक हैं। शैतान ने पहले बहिश्त में जाने के लिये मोर से सहायता मांगी। उसके मना करने पर वह सर्प के माध्यम से बहिश्त में प्रवेश कर गया और आदम को उसकी पत्नी हव्वा की सहायता से बहकाने में सफल हो गया जिसके परिणाम स्वरूप उन्होंने वर्जित भोज्यपदार्थ (गेहूं) खा लिया। इसके दण्ड स्वरूप आदम, हव्वा, हिर्स (इच्छा) मोर, सांप तथा इब्लीश सभी को बहिश्त से निकाल कर संसार में भेजा गया।

इस कथानक का भाव यह है कि तमोगुण से मनुष्य का मन अज्ञान से ग्रसित हो जाता है जिससे वह विषय सुख की इच्छा (गेहूं का फल खाने की कामना) करता है और बहिश्त (अखण्ड सुख) का अधिकारी नहीं रहता। हिर्स, तृष्णा अर्थात् सांसारिक सुखों की इच्छा है। और हव्वा आदम की पत्नी (आनन्द अंग) है, जिसके दबाब से वह अज्ञान रूप (इब्लीश) के बहकावे में वर्जित फल खा लेता है। सृष्टि प्रसंग में हव्वा को निराकार भी कहा गया है।

इन आदम की औलाद, मारी अजाजीलें लानत ले।
तिन सब दिलों पातसाह, हुआ अजाजील ए।।१५।।

सम्पूर्ण मानव सृष्टि आदम से पैदा हुई है। आदम को सिज्दा न करने के कारण अजाजील को फटकार लगी जिसके परिणाम स्वरूप उसने सम्पूर्ण मानव जाति को परब्रह्म

के मार्ग से भटका दिया। सभी जीवों के हृदय पर आदि नारायण का ही स्वामित्व है।

भावार्थ- आदि नारायण के संकल्प (एकोऽहम् बहुःस्याम) से ही सृष्टि रचना का प्रारम्भ होता है। उसके मन से सभी प्राणियों के मन (अन्तःकरण) की रचना होती है। जब आदि नारायण के मन में सृष्टि रचना के कारण अखण्ड का ज्ञान नहीं हैं तो भला सांसारिक जीव अखण्ड धाम और अक्षरातीत के विषय में कैसे जान सकते हैं? वे कर्मकाण्डों और अज्ञानता में फँसकर जन्म-दर-जन्म रजोगुण एवं तमोगुण से और अधिक ग्रसित होते जाते हैं तथा परब्रह्म से दूर होते जाते हैं। इसी को आलंकारिक भाषा में कतेब पक्ष में कहा गया है कि आदि नारायण का मन (इब्लीश) सभी मनुष्यों को भटका कर उसे परब्रह्म से दूर कर देता है। सभी जीव आदि नारायण की चेतना के सांकल्पिक प्रतिबिम्बित चेतन हैं, इसलिये उन्हें सभी जीवों के हृदय का स्वामी कहा गया है।

मोमिन उतरे नूर बिलंद से, जो कहे भाई महंमद के।
महंमद आया इनों पर, खेल किया इनों वास्ते।।१६।।

ब्रह्ममुनि परमधाम से आये हैं। इन्हें मुहम्मद स.अ.व. ने अपना भाई कहा है। इन ब्रह्मसृष्टियों के लिये ही यह माया का खेल बनाया गया है और इनके लिये ही मुहम्मद साहब संसार में संदेश वाहक बनकर आये हैं।

भावार्थ- अक्षर ब्रह्म (मुहम्मद) तथा ब्रह्ममुनि (ब्रह्मात्मायें) सभी एक ही अक्षरातीत के अंग हैं, इसलिये मुहम्मद स.अ.व. ने इस संसार की लोक रीति के अनुसार उन्हें अपना भाई कहा है।

महंमद कहे मैं उनों से, ओ मुझ से जानो तुम।
मुरदार करी जिनों दुनियां, करे बंदगी हजूर कदम।।१७।।

हे संसार के लोगो! मुहम्मद स.अ.व. कहते हैं कि मैं उन्हीं की तरह परब्रह्म का (सत्) अंग हूँ और वे भी मेरी तरह ही परब्रह्म के (आनन्द) अंग हैं। इस जागनी लीला में इन ब्रह्ममुनियों ने संसार को नश्वर एंव मिथ्या समझ कर छोड़ दिया है तथा आत्मिक दृष्टि से परब्रह्म के स्वरूप में प्रत्यक्ष ध्यान लगाते हैं।

भावार्थ- यद्यदि मुहम्मद स.अ.व. के समय परमधाम के ब्रह्ममुनि नहीं आये थे, किन्तु उपरोक्त कथन कुर्आन के शब्दों के द्वारा व्यक्त हो रहा है, इसलिये उसे वर्तमान काल में दर्शाया गया है।

महंमद आया वास्ते मोमिन, ले हक पे फुरमान।
सब दुनियां करी एक दीन, भिस्त दई सब जहान।।१८।।

मुहम्मद स.अ.व. इन ब्रह्ममुनियों को साक्षी देने के लिये ही परब्रह्म का दिया (भेजा) हुआ कुर्आन लेकर आये हैं। इसके हकीकत और मारिफत के भेद श्री प्राणनाथ जी की वाणी श्री कुल्जुम स्वरूप में है, जिससे सारा संसार अपने मतभेदों को छोड़कर एक परब्रह्म से प्रेम करेगा और बेहद मण्डल में अखण्ड मुक्ति को प्राप्त करेगा।

भावार्थ- बशरी सूरत मुहम्मद साहब के द्वारा लाये हुए कुर्आन के वास्तविक आशय को न समझने के कारण आज सारा संसार आतंकवाद से ग्रसित है। कट्टरपन्थी लोग हिंसा का मार्ग अपना कर कुर्आन की शरीयत और अरबी भाषा को सारे संसार पर थोपना चाहते हैं। ऐसी स्थिति में सारे संसार का एक हो पाना असम्भव है। कुर्आन का विकृत अर्थ लेकर कट्टरपन्थ को बढ़ावा दिया जा रहा है। संसार के द्वारा एक परम सत्य को स्वीकार किया जाना ही सबका एक दीन होना है। यह कार्य आखिरी मुहम्मद अर्थात् हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी के श्री कुल्जुम स्वरूप के द्वारा होना है जिसमें वेद -कतेब का एकीकरण है और समस्त संसार को शरीयत(कर्म काण्ड) से हटाकर हकीकत(ज्ञान) तथा मारिफत(विज्ञान) के मार्ग पर चलने का निर्देश दिया गया है।

ए जो खेल कबूतर, कहे अर्स से आया रसूल।
सो कहे हमारा रसूल, दोजख में जले इन भूल।।१९।।

माया के ये स्वाप्निक जीव(खेल के कबूतर) कहते हैं कि मुहम्मद स.अ.व. परमधाम से हमारे लिये सन्देशवाहक बनकर आये हैं। अपने इस मिथ्या कथन के कारण उन्हें प्रायश्चित(दोजक) की अग्नि में जलने के लिये विवश होना पड़ेगा।

पढ़े कलाम अल्लाह को, ले माएने अपनी अकल।
जो कही मुसाफें मुरदार, ताए छोड़े न दुनी एक पल।।२०।।

संसार के ये लोग कुर्आन को पढ़ते तो अवश्य हैं किन्तु अपनी स्वाप्निक बुद्धि से उसके भ्रमित अर्थ करते हैं। कुर्आन में जिस संसार को मिथ्या एवं सारहीन कहा गया है, उसे जगत के ये जीव एक पल के लिये भी छोड़ने के लिये तैयार नहीं हैं।

किस्सा लिख्या अजाजील का, किया सिजदा सब जिमी पर।
तिन मारी राह सब दुनी की, इन ए फल पाया क्यों कर।।२१।।

कुर्आन में अजाजील से सम्बन्धित एक प्रसंग(कथानक) है। उसने सम्पूर्ण पृथ्वी पर (दो अगुंल भी छोड़े बिना) खड़े होकर परब्रह्म के नाम का सिज्दा किया(मत्था टेक कर प्रणाम किया) । इसके परिणाम स्वरूप वह संसार के सभी मनुश्यों को परब्रह्म की राह से भटकाने लगा। यहां प्रश्न होता है कि इतनी बड़ी बन्दगी का इतना बुरा फल क्यों मिला ?

कोई केहेसी ए फल गया गुमाने, पर सो दोजख जले गुमान।
फल एता बड़ा बंदगी का, खोवे नहीं मेहेरबान।।२२।।

कोई ऐसा भी कह सकता है कि अंहकार के कारण उसने परब्रह्म का आदेश ठुकराया और आदम को प्रणाम नहीं किया, जिसके दण्ड स्वरूप उसे अपनी बन्दगी का फल खोना पड़ा। किन्तु अंहकार के कारण तो उसे दोजक (प्रायश्चित) की अग्नि में जलना चाहिये था। परब्रह्म तो कृपा के सागर हैं। अजाजील की इतनी बड़ी बन्दगी का ऐसा दण्ड रुप फल तो वे नहीं ही दे सकते।

दो अंगुल जिमी छोड़ी नहीं, इन सकसे सिजदे बिगर।
एती एके बंदगी क्यों होवहीं, तुम क्यों ना देखो दिल धर।।२३।।

अजाजील ने दो अंगुल भी धरती ऐसी नहीं छोड़ी जहाँ पर उसने परब्रह्म को सिज्दा न किया हो। आप अपने हृदय में इस बात का विचार क्यों नहीं करते कि एक ही व्यक्ति इतनी अधिक बन्दगी कैसे कर सकता है?

ए बंदगी ना होए कई करोरों, ऐसी हक पर करी बेसुमार।
तिन बंदगी बदला ए पाया, राह देत सबों की मार।।२४।।

अजाजील ने परब्रह्म की इतनी अधिक बन्दगी की है कि करोड़ों लोग मिल कर भी ऐसी बन्दगी नहीं कर सकते। उस बन्दगी के बदले में उसने यह फल पाया कि संसार के सभी मनुष्यों को परब्रह्म की राह से भटका देता है।

ऐसी बंदगी खोए के, हक क्यों दे फल नुकसान।
ए माएने जाहेर तो कहे, जो अजाजीलसों नहीं पेहेचान।।२५।।

प्रश्न यह होता है कि इतनी ऊँची बन्दगी के बदले में परब्रह्म ने उसे हानि पहुँचाने वाला दण्ड क्यों दिया? संसार के लोग अजाजील को यथार्थ रूप से नहीं जानते हैं, इसलिये

उन्होंने इस कथानक का केवल बाह्य अर्थ ही लिया है।

ना पेहेचानें आपको, ना पेहेचानें हादी हक।
ना देखें अजाजील दिल पर, जो डालसी बीच दोजक।।२६।।

संसार के लोगों का न तो अपने स्वरूप की पहचान है और न आवेश स्वरूप श्री प्राणनाथ जी एवं परमधाम में विराजमान परब्रह्म श्री राज जी की। वे यह भी नहीं जानते हैं कि उनके हृदय पर अजाजील का स्वामित्व है जो उन्हें दोजक में ले जायेगा।

अजाजील जीव दुनी का, ए जो कह्या माहें सब।
किया भूल पत्थर पर सिजदा, कहे हम किया ऊपर रब।।२७।।

सभी प्राणियों के हृदय में विद्यमान अजाजील संसार का जीव है। संसार के लोग भ्रमवश पत्थर पर सिज्दा करते है और भ्रमवश कहते हैं कि हमने परब्रह्म पर सिज्दा किया है।

भावर्थ- इस नश्वर जगत में उत्पन्न होने वाला प्रत्येक चेतन जीव ही कहा जायेगा, भले ही वह आदि नारायण ही क्यों न हो। माहेश्वर तन्त्र में आदि नारायण को 'आदि जीवो महाजीवों', कहकर सम्बोधित किया गया है। हिन्दू लोग जहां शालिग्राम और शिवलिंग की पूजा करते हैं, वही मुस्लिम संगे असवद को चूमते हैं। किसी न किसी रूप में दोनों ही जड़ की पूजा में लगे हैं।

बाहेर देखावें अबलीस, वह कह्या बैठा दिल पर।
कहे दोजख जलसी अबलीस, आप पाक होत यों कर।।२८।।

संसार के लोग कहते हैं कि शैतान (इब्लीश) बाहर बैठा है किन्तु वास्तविकता तो यह है कि वह अज्ञान रूपी कलियुग दिल के ऊपर अपना स्वामित्व बना कर बैठा है। संसार के जीव इब्लीश को दोजक में जलने वाला मान कर स्वयं को पवित्र मानने का बहाना ढूंढ़ लेते हैं।

भावार्थ- इस प्रकरण की २६ वीं चौपाई में अजाजील को जीवों के हृदय पर स्वामित्व करने वाला कहा गया है तथा २८ वीं चौपाई में इब्लीश को । इसका रहस्य यह है कि अजाजील (आदिनारायण) के ही सांकल्पिक प्रतिबिम्बित चेतन के रुप में सभी जीव हैं। अन्तःकरण (हृदय) जीव के ही अधीन होता है, इसलिये सभी जीवों के हृदय पर अजाजील का स्वामित्व कहा गया है। यही कारण है कि भारतीय दर्शनों में भी परम गति पाने के लिये कारण शरीर (मन, चित्त, बुद्धि एवं अंहकार अर्थात् हृदय) से स्वयं को परे करना पड़ता है। इसी प्रकार इब्लीश आदि नारायण (अजाजील) के मन की शक्ति है, जिस के द्वारा

परमाणुओं में क्षोभ होकर सृष्टि कार्य प्रारम्भ होता है। महत्तत्व से ही कारण शरीर (अन्तःकरण) का निर्माण होता है। त्रिगुणात्मक कारण शरीर रज एवं तम से ग्रसित होकर अज्ञान के वशीभूत हो जाता है और जीव को परब्रह्म से दूर कर देता है। कुर्आन में इसी तथ्य को उपरोक्त कथानक के रुप में प्रस्तुत गया है।

अब सुध होसी सबन को, खुली बातून हकीकत।
इमाम रूहों पे लंदुनी, अर्स हक मारफत।।२६।।

अब तारतम ज्ञान के प्रकाश में सबको वास्तविक सत्य का बोध हो जायेगा क्योंकि अब छिपा हुआ यथार्थ ज्ञान प्रकट हो गया है। श्री प्राणनाथ जी तथा ब्रह्ममुनियों के पास तारतम ज्ञान है जिसमें सच्चिदानन्द परब्रह्म तथा परमधाम की पूर्ण पहचान है।

दिल अर्स न होए बिना मोमिन, जो पढ़े चौदे किताब।
सब जिमीऐं करे सिजदा, दिल पावें ना अर्स खिताब।।३०।।

चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड के सभी जीव चाहे कितना ही ईश्वरीय धर्म ग्रथों को पढ़ें और सम्पूर्ण धरती पर सज्दा करें तो भी उनका हृदय परमधाम के ब्रह्ममुनियों की तरह धाम कहलाने की शोभा नहीं पा सकता।

हक हादी ना चीन्ह सके, ना कछू चीन्हे मोमिन।
भूले मोमिन का सिजदा, तो हुई दस बिध दोजख तिन।।३१।।

संसार के मुसलमानों को न तो ब्रह्ममुनियों (मोमिनों) की पहचान है और न इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी की। वे परमधाम में विराजमान परब्रह्म को भी यथार्थ रुप से नहीं जानते। यहां तक कि इस संसार में ब्रह्ममुनियों को प्रणाम करने का भी उनका स्वभाव नहीं है। इस प्रकार इस अपराध से उन्हें दस प्रकार की दोजक का दण्ड मिलेगा।

भावार्थ- बड़ा कि. २२/२३-२८ में दस प्रकार की दोजक का वर्णन दिया गया है-१- जिन्होंने तारतम वाणी के वचनों को न तो सुना और न परब्रह्म पर विश्वास किया, उनकी सूरत बन्दर की हो जायेगी। २-हराम का भोजन करने वालों का मुख सुअर का हो जायेगा। ३-जिनका आचरण बूरा होगा वे गधे की शक्ल वाले हो जायेंगे। ४-ब्याज लेने वाले अंधे होगें। ५-जिन्होंने न तो परब्रह्म को प्रणाम किया और न तारतम वाणी सुनी, वे बहरे हो जायेंगे। ६-दूसरों पर अत्याचार करने वाले गूंगे हो जायेंगे। ७-कुर्आन पढ़कर आचरण में न आने वालों की जिह्वा काट दी जायेगी अर्थात् अत्यधिक लज्जा के कारण उन्हें मौन रहना पड़ेगा। ८-झूठा व्यवहार करने वालों के मुख से अपना अपराध स्वयं कहा जायेगा। ९-दूसरों को कष्ट पहुँचाने वाले सूली पर लटकाये जायेंगे जिसके नीचे आग जल रही

होगी। १०-चुगली करने वालों के हाथ-पांव काटे जायेंगे।

फैल हाल न देखें अपने, कहें अजाजीलें फेरया फुरमान।
अपनी दोजख देवें औरों को, पर हक पे सब पेहेचान।।३२।।

शरीयत पर चलने वाले ये मुसलमान अपनी करनी तथा रहनी को नहीं देखते हैं। वे केवल इस बात का ढिंढोरा पीटते हैं कि अजाजील ने अल्लाह तआला का आदेश नहीं माना। वे अपनी दोजक का दाग दूसरों (अजाजील) पर लगा देते हैं,किन्तु परब्रह्म को तो सबकी पहचान है कि कौन कैसा है?

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई से यह संकेत मिलता है कि अजाजील का प्रसंग मात्र एक कथानक है, जिसे न समझने वाले मुसलमान उसे ढाल बना लेते हैं और अपने अपराधों पर आवरण (पर्दा) डाल देते हैं।

ज्यों फरेब देवें दुनी को, त्यों हक को देने चाहें।
पर हक की आग जो दोजख, फैल माफक चुन ले ताए।।३३।।

जैसे ये संसार के लोगों को धोखा देते हैं, उसी प्रकार ये अपनी बुद्धि से परब्रह्म को भी धोखा देनें का प्रयास करते है। वे नहीं जानते कि परब्रह्म के न्याय में दोजक की आग उनकी प्रतीक्षा कर रही है और उनकी करनी के अनुसार उनको दण्ड अवश्य मिलेगा।

कहें हक को सूरत नहीं, तो फुरमान भेज्या किन।
दुनी सुध नहीं भेज्या किन पर, करसी कौन रोसन।।३४।।

ये मुस्लिम लोग ऐसा मानते हैं कि परब्रह्म का स्वरूप ही नहीं है, वह निराकार है। ऐसी स्थिति में प्रश्न यह होता है कि कुर्आन को भेजने वाला कौन है? संसार के लोगों को तो यह भी पता नहीं है कि यह कुर्आन किनके लिये भेजा गया है तथा इसके गुह्य रहस्यों को कौन प्रकाशित करेगा?

एती सुध ना हमको, खोलसी कौन हकीकत।
कौन करसी कयामत जाहेर, कौन केहेसी हक मारफत।।३५।।

ये इस बात पर जरा भी विचार नहीं करते कि जब हमें इतनी भी जानकारी नहीं है तो कुर्आन के वास्तविक आशय को कौन दर्शायेगा? कियामत के आने का समय कौन स्पष्ट करेगा तथा सच्चिदानन्द परब्रह्म की पूर्ण पहचान भी कौन करायेगा?

भावार्थ- उपरोक्त सारे कार्य तो इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी ही करेंगे। कुर्आन के बाह्य अर्थों में ही उलझे रहने वाले ये मुसलमान जब भेद दृष्टि के कारण एक हिन्दू तन में

आये हुए इमाम महदी की पहचान नहीं कर सकते तो कुर्आन की हकीकत एवं मारिफत से उन्हें दूर ही रहना पड़ेगा।

माएने न पावें सब्द के, बड़े सब्द रसूल।
पर दम ना समझें ख्वाब के, जाको जुलमत मूल।।३६।।

कुर्आन में मुहम्मद स.अ.व. के कहे हुए शब्द बहुत ही गहरे भाव वाले हैं। निराकार (कुन्न) से उत्पन्न होने वाले जीव सृष्टि के ये मुसलमान उन शब्दों का न तो बाह्य अर्थ समझते हैं और न अभ्यान्तर।

ए माएने सो लेवे सब्द के, जो रूह अर्स की होए।
एक रसूल आया नूर पार से, और ख्वाब दुनी सब कोए।।३७।।

कुर्आन के शब्दों का वास्तविक आशय तो मात्र परमधाम से आने वाले ब्रह्ममुनि ही जानते हैं। यह विचारणीय तथ्य है कि अक्षर से भी परे परमधाम से एक संदेश वाहक इस संसार में आता है जबकि इस संसार की सारी सृष्टि तो स्वप्नमयी है।

क्यों कर आवे झूठ पर, जो अर्स बका का होए।
ए गुझ माएने मोमिन बिना, क्यों लेवे हवा दम सोए।।३८।।

जो परमधाम का है, वह संसार के स्वाप्निक जीवों के लिये संदेश वाहक बन कर क्यों आयेगा? इस गुह्य रहस्य को केवल परमधाम के ब्रह्ममुनि ही समझते हैं। निराकार से उत्पन्न होने वाले जीव भला इसे कैसे जान सकते हैं?

दुनियां कही सब ख्वाब की, सो नाहीं झूठ सब्द।
तबक चौदे हद के, हक बका पार बेहद।।३९।।

इस कथन में कोई संशय नहीं है कि यह सारा संसार स्वप्नवत् है। चौदह लोकों का यह ब्रह्माण्ड महाप्रलय में लय हो जाता है। इसके परे बेहद मण्डल है और उसके भी परे अक्षरातीत का परमधाम है।

चौदे तबक कहे फरेब के, काहूं न किसी की गम।
ना गम रसूल फुरमान, कहां हक कौन हम।।४०।।

चौदह लोकों का यह ब्रह्माण्ड नश्वर कहा गया है। इसमें कहीं भी किसी को न तो अखण्ड धाम का ज्ञान है और न मुहम्मद स.अ.व. और उनके कुर्आन का। इस संसार में कोई भी यह नहीं जानता है कि परब्रह्म कहाँ है और हम कौन हैं?

पैगंबर यों पुकारिया, मैं अल्ला का रसूल।
संग मेरे सो चले, जो चीन्हे सब्द घर मूल।।४१।।

मुहम्मद स.अ.व. ने पुकार करके कहा है कि मैं परब्रह्म का संदेश वाहक हूँ। मेरे साथ वही चल सकता है जो परमधाम के शब्दों को पहचानता है अर्थात् मात्र ब्रह्मसृष्टियां ही मेरे कथनों को यथार्थ रूप में आत्मसात् कर सकती हैं।

मेरा वतन नूर के पार है, हवा से ख्वाबी दम।
इनों को मेरी खातिर, देसी भिस्त खसम।।४२।।

मेरा घर अक्षर से परे परमधाम है। संसार के सभी जीव निराकार से उत्पन्न हुए हैं। परब्रह्म इन स्वाप्निक जीवों को भी मेरे कारण बेहद की अखण्ड बहिश्तों में मुक्ति देंगे।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में नूर का तात्पर्य सत्स्वरूप से लिया जाना उचित होगा क्योंकि सत्स्वरूप से परे वह परमधाम है, जिसके अन्दर अक्षर तथा अक्षरातीत का रंगमहल है। यह सर्वमान्य तथ्य है कि मुहम्मद स.अ.व. में अक्षर ब्रह्म की आत्मा थी।

ए छल मोहोरे झूठ के, तिन पर क्यों आवे नूर जात।
ए दिल के फूटे यों तो कहें, जो पाई न नबी की बात।।४३।।

इस नश्वर जगत के ज्ञानियों के लिये भला परमधाम से नूरी रसूल क्यों आयेगा? अन्तर्दृष्टि से रहित शरीयत की राह पर चलने वाले मुसलमान इस तरह की मिथ्या बातें इसलिये करते हैं क्योंकि इन्होंने मुहम्मद साहब के लाये हुए कुर्आन के वचनों को समझा ही नहीं है।

नूरी हक का तिन पर भेजिए, जो कोई नूरी हक का होए।
पर झूठे ख्वाबी दम पर, नूर पार थें न आवे कोए।।४४।।

जब इस संसार में परब्रह्म की नूरी आत्मायें होती, तब तो परब्रह्म के नूरी रसूल का आना ठीक होता। मात्र स्वाप्निक जीवों को संदेश देने के लिये परमधाम से कोई भी संदेशवाहक नहीं आ सकता।

ए न आवे ख्वाबी बुत पर, जाको नहीं हक सों अंतर।
पर जिन आंख कान न अकल, सोए समझे क्यों कर।।४५।।

मुहम्मद स.अ.व. और अल्लाह तआला में कोई अन्तर नहीं है, इसलिये वे माया के जीवों के लिये नहीं आ सकते। किन्तु शरीयत के मार्ग पर चलने वाले जिन मुसलमानों के

पास न तो हृदय की आंखें हैं, न कान हैं और न बुद्धि ही हैं, भला वे इस रहस्य को कैसे समझ सकते हैं?

भावार्थ- स्वलीला अद्वैत परमधाम में अक्षर और अक्षरातीत का एक ही स्वरूप है। मुहम्मद स.अ.व. में अक्षर ब्रह्म की आत्मा होने से उन्हें और परब्रह्म को एक ही स्वरूप वाला कहा गया है। ऐन और गैन का कथन इसी सन्दर्भ में है।

ऐसा हलका कहे रसूल को, सो सुन होत मोहे ताब।
पर दोस देऊं मैं किनको, आगे तो दुनियां ख्वाब।।४६।।

जब ये संसारी जीव मुहम्मद स.अ.व. के लिये ऐसी हल्की भाषा का प्रयोग करते हैं तो उसे सुनकर मुझे क्रोध आता है। किन्तु जब यह सारा संसार ही स्वप्नमयी है तो मैं किसको दोष दूं?

और जो टेढ़ा कहे रसूल को, मैं तिनका निकालूं बल।
पर गुस्सा करूं मैं किन पर, आगे तो सब मृग जल।।४७।।

और जो लोग मुहम्मद स.अ.व. के लिये कटु शब्दों का प्रयोग करते हैं, उनकी शक्ति को नष्ट कर देने की इच्छा होती है। किन्तु मैं क्रोध भी करूँ तो किन पर करूँ? यह तो सारा संसार ही मृगतृष्णा के जल के समान मिथ्या है, अर्थात् बेचारे ये जीव तो स्वप्न के समान हैं।

भावार्थ- किसी का बल निकालने का तात्पर्य है- उसे शक्तिहीन कर देना या नष्ट कर देना। सर्वशक्तिमान परब्रह्म भला उन अज्ञानी-जीवों को क्या दण्ड दें जिनका अस्तित्व ही स्वप्नवत् है अर्थात् महाप्रलय तक ही जिनका अस्तित्व है।

ए अपना नूरी तहां भेजिए, जो होवे अर्स मोमिन।
सो ए रूहें हम मोमिन, हक मासूक के तन।।४८।।

जहां अपने परमधाम के ब्रह्ममुनि हों, मात्र उनके लिये ही अपना नूरी रसूल भेजा जा सकता है। परमधाम के हम ब्रह्ममुनि ही परब्रह्म के साक्षात् तन है, जो इस संसार में आये हुए हैं।

सो भी इत जाहेर कह्या, पैगंमर पुकार।
रूहें अर्स से उतरी, रस इस्क लिए सिरदार।।४९।।

मुहम्मद स.अ.व. ने संसार में प्रत्यक्ष रूप से पुकार-पुकार करके कहा कि कियामत के समय परमधाम के ब्रह्ममुनियों का अवतरण होना है। उनके हृदय में प्रेम का रस भरा होगा और वे सभी का मार्गदर्शन करेंगे।

ए माएने सो समझहीं, जो नूरजमाल से होए।
ए वतनी रूहें मोमिन, और ख्वाबी दम सब कोए।।५०।।

रसूल साहब के इन कथनों का अभिप्राय मात्र वही समझ सकता है जो अक्षरातीत परब्रह्म का अंग हो। ब्रह्ममुनि तो परमधाम की आत्मा रूप हैं, जबकि इस संसार के सभी जीव स्वाप्निक हैं।

मोमिन उतरे नूर बिलंद से, जाको एतो बड़ो मरातब।
करसी पाक सब जिमी को, ताकी सरभर न होए किन कब।।५१।।

ये ब्रह्ममुनि उस स्वलीला अद्वैत परमधाम से आये हैं। इनकी महिमा अपार (बहुत बड़ी) हैं। इनकी चरण-रज से यह सम्पूर्ण धरती पवित्र हो जायेगी। संसार में कोई भी (देवी-देवता) कभी भी इनकी बराबरी नहीं कर सकता।

दुनी दिल कह्या सैतान, दिल मोमिन अर्स हक।
सो सरभर क्यों इनकी करे, जाए आगे पीछे दोजक।।५२।।

संसार के जीवों के हृदय में शैतान (अज्ञान) का निवास होता है, जबकि ब्रह्ममुनियों के हृदय में परब्रह्म का स्वरूप विराजमान होता है। ऐसी स्थिति में भला ये जीव इन ब्रह्ममुनियों से समानता कैसे कर सकते हैं? इन जीवों को तो किसी न किसी प्रकार से दोजक का दण्ड भोगना ही है।

बड़ी बड़ाई मोमिनों, जाके बड़े अंकूर।
तो इन पर रसूल भेजिया, अपना अंगी नूर।।५३।।

इन ब्रह्ममुनियों की महान महिमा है। अक्षरातीत परब्रह्म से इनका अनादि काल से अनन्त काल तक का अखण्ड सम्बन्ध है अर्थात् ये उन्हीं के अंगरुप हैं। यही कारण है कि परब्रह्म ने इन ब्रह्ममुनियों के लिये अपने अंगरुप मुहम्मद स.अ.व. (अक्षरब्रह्म की आत्मा) को अपना संदेश वाहक बनाकर भेजा।

सो आए अब रूह मोमिन, जाको अर्स वतन।
ए फुरमान आया इनका, क्यों खुले माएने या बिन।।५४।।

इस प्रकार अब वे ब्रह्ममुनि अवतरित हुए हैं जो परमधाम के रहने वाले हैं। कुर्आन के रूप में इनके लिये ही संदेश है। इनके अतिरिक्त अन्य किसी में भी कुर्आन के वास्तविक अर्थ को स्पष्ट करने की सामर्थ्य नहीं है।

खेल किया जिन खातिर, सो आइयां देखन अब।
ए खेल अर्स रूहें देखही, और खेल है सब।।५५।।

यह मायावी जगत जिन ब्रह्ममुनियों को दिखाने के लिये बनाया गया है, वे अब देखने के लिये आ गये हैं। परमधाम की ब्रह्मात्मायें द्रष्टाभाव से इस खेल को देखेंगी जबकि जीव सृष्टि स्वयं खेल बनकर अपना खेल दिखायेगी।

कोई केहेसी खेल कदीम का, सो अब आइयां क्यों कर।
ए माएने गुझ वतन के, सो भी सब देऊं खबर।।५६।।

यदि कोई ऐसा कहता है कि माया का यह खेल तो अनादि काल से है किन्तु ब्रह्मसृष्टियां अभी क्यों आयी है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि परमधाम की यह गुह्य बात है किन्तु मैं इसके भी विषय में बताता हूँ।

खेल रचे खिन ना हुई, सो भी कहूं तुमें समझाए।
ए वतन के पाव पल में, कई पैदा फना हो जाए।।५७।।

यद्यपि इस मायावी जगत को बने हुए बहुत सा (१३.६ अरब वर्ष का) समय हो गया है किन्तु परमधाम में अभी एक पल भी नहीं बीता है। फिर भी मैं आपको यह रहस्य समझाकर बता रहा हूँ। परमधाम के एक पल के चौथाई भाग में ही इस ब्रह्माण्ड जैसे अनेकों ब्रह्माण्ड उत्पन्न होकर लय हो जाते हैं।

करी बाजी चौदे तबकों, रूहों देखलावने खसम।
सो रूहें तब ना हुती, पेहेले तो न हुआ हुकम।।५८।।

प्रियतम परब्रह्म ने ब्रह्मसृश्टियों को माया का खेल दिखाने के लिये अपने आदेश से यह ब्रह्माण्ड बनाया। इस ब्रह्माण्ड से पूर्व के ब्रह्माण्ड़ों में न तो ब्रह्मसृष्टियां ही आयी थीं और न उन्हें खेल दिखाने के लिये इस ब्रह्माण्ड को बनाने का आदेश ही मिला था।

भावार्थ- सृष्टि बनाने और लय करने की इच्छा अक्षर ब्रह्म में होती है। किन्तु ब्रह्मसृष्टियों को माया की लीला दिखाने के लिये श्री राजजी ने अक्षर ब्रह्म को आदेश दिया। अक्षर ब्रह्म की इच्छा चतुष्पाद विभूति में आती है, जिससे ब्रह्माण्ड की रचना होती है।

कोई केहेसी रसूलें ना खोले, बिना हुकम माएने कुरान।
सो तो आप नबी खुद हुकम, याकी हम रूहों पें पेहेचान।।५९।।

कोई कह सकता है कि मुहम्मद स. अ. व. को कुर्आन के गुह्य अर्थों को खोलने का

आदेश नहीं था, इसलिये उन्होंने उसे स्पष्ट नहीं किया, किन्तु महत्वपूर्ण बात तो यह है कि मुहम्मद साहब स्वयं ही परब्रह्म के आदेश (हुक्म) स्वरूप थे। उनकी यथार्थ पहचान तो केवल हम ही जानते हैं।

जिन कोई कहे रसूल को, परदा खुद दरम्यान।
आसिक ए मासूक कह्या, सो बिन देखे मिले क्यों तान।।६०।।

किसी को ऐसा भी नहीं कहना चाहिए कि मुहम्मद स.अ.व. और परब्रह्म के बीच पर्दा था। प्रियतम (आसिक) परब्रह्म ने मुहम्मद स.अ.व. को अपना माशूक कहा है। यदि पर्दे के कारण परब्रह्म का दर्शन नहीं हुआ तो दोनों के कथनों में एकरूपता क्यों है?

भावार्थ- वन्नज्मि अिजा हवा (१) मा जल्ल साहिबुकुम् व मा गवा (२) व मा यन्निकु अनिल्हवा (३) अिन् हुव अिल्ला वह्युंय्यूहा (४) अल्लमहू शहीदुल्कुवा (५) जू मिर्रतिन् फस्तवा (६) व हुव बिल् अुफुकिल् अऽला (७) सुम्म दना फतदल्ला (८) फकान काब कौसैनि औ अद्ना (९) फऔहा अिला अब्दिह मा औह्रा (१०) मा कजबल्-फुआदु मा रआ (११) अफतुमारूनहु अला मा यरा (१२) व लकद् रआहु नजलतन् अुखरा (१३) अिन्दद सिदरिल् - मुन्तहा (१४) अिन्दहा जन्नतुल - मअ्वा (१५) अिज् यग्शस् - सिद्रत्र मा तगा (१७) लकद् रआ मिन् आयाति रब्बिहिल् - कुब्रा।

तारे (नक्षत्र) की कसम! जब यह नीचे आये, (१) तुम्हारा साथी (यह मुहम्मद स. रास्ते से) न तो बहका और न बेराह चला। (२) और वह अपनी मनमानी बातें नहीं कहता। (३) यह तो हुक्म है जो उसे (अल्लाह की ओर से वह्य होती यानी) भेजा जाता है, (४) निहायत ताकतवर (फिरिश्तः जिब्रील अ.) ने उसे सिखलाया है, (५) (यानी) बड़े जोर वाले ने, फिर वह (रसूल स. को) प्रत्यक्ष (भी) नजर आये, (६) और वह आसमान के ऊँचे किनारे पर था। (७) फिर वह नजदीक हुआ और करीब बढ़ा, (८)फिर दो कमान के बराबर या उससे भी कम फर्क रह गया। (९) फिर अल्लाह ने अपने बन्दे (मुहम्मद स.) पर हुक्म जो वह्य (सन्देश) भेजना था सो भेजा। (१०) (पैगम्बर के) दिल ने देखी हुई चीज में कोई गलती नहीं की। (११) अब क्या तुम उससे इस पर झगड़ते हो जो उसने देखा। (१२) और (हालांकि यह कोई झगड़ने की चीज नहीं है। रसूल स. ने जिब्रील अ० को इस मौके पर ही नहीं) उन्होंने उनको दूसरी बार भी उतरते हुए देखा,। (१३) अन्तिम हद की बेरी के पास। (१४) उस बेरी के पास (हमेशा) रहने की जगह बहिश्त है। (१५) जब छा रहा था, उस बेरी पर जो छा रहा था (यानी नूर - इलाही) , (१६) (रसूल स. की) निगाह न बहकी

न हद से बढ़ी। (१७) बेशक उन्होंने अपने परवरदिगार की (कुदरत की) कितनी ही बड़ी निशानियाँ देखीं।

इन कुरान के माएने, जो खोलत रसूल तब।
तो इत आखिर इमाम, काहे को आवत अब।।६१।।

यदि कुर्आन के गुह्य अर्थों को मुहम्मद स.अ.व. उसी समय स्पष्ट कर देते तो कियामत के समय इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी के आने की आवश्वकता ही क्या थीं?

जो खोलत रसूल माएने, तो खेल रेहेत क्यों कर।
जो अर्स अजीम करते जाहेर, तो तबहीं होती आखिर।।६२।।

यदि मुहम्मद साहब उस समय कुर्आन के सारे भेद उजागर कर देते और परमधाम का ज्ञान प्रकट कर देते तो तभी कियामत का समय आ जाता और यह ब्रह्माण्ड भी लय हो जाता।

ताथें गुझ नबी न राखहीं, पर सुनने वाला न कोए।
तिन बखत ना रूहें बका की, तो गुझ अर्स जाहेर क्यों होए।।६३।।

यद्यदि रसूल साहब कुर्आन की गुह्य बातें छिपा नहीं सकते थे, किन्तु उसे सुनकर समझने की योग्यता रखने वाला अरब में कोई भी नहीं था। उस समय परमधाम की आत्मायें अवतरित ही नहीं हुई थीं तो परमधाम की गुह्यतम बातों (हकीकत-मारिफत) को कैसे प्रकट किया जा सकता था?

एता भी रसूलें कह्या, रूहें मेरे ना कोई संग।
एक हुकम अली बिना, ना मोमिन वतनी अंग।।६४।।

मुहम्मद साहब ने प्रत्यक्ष रुप में यह बात कही कि मेरे साथ परमधाम की कोई भी आत्मा नहीं है। मेरे हुक्म(आदेश) के स्वरूप हजरत अली के अतिरिक्त अखण्ड धाम का कोई भी नहीं है। ऐसी स्थिति में परमधाम का कोई भी ब्रह्ममुनि मेरे साथ कैसे हो सकता है?

तो मोहोलत कर पीछे फिरे, हम आवेंगे आखिर।
महंमद मेंहेदी रूह अल्ला, इन मोमिनों की खातिर।।६५।।

इसलिये मुहम्मद स.अ.व. कुछ समय बाद कियामत के समय आने का वचन देकर परमधाम वापस चले गये। उन्होंने स्पष्ट कहा कि उस समय ब्रह्मात्माओं के लिये आखरुल इमाम मुहम्मद महदी तथा रुहुल्लाह(श्री श्यामा जी) के साथ मैं भी रहूंगा।

तो ए माएने ना खुले, रसूल मुख फुरमान।
चौदे तबक की दुनियां, सो इत हुई हैरान।।६६।।

यही कारण है कि मुहम्मद स.अ.व. ने उस समय अपने मुख से कुर्आन के गुह्य भेदों को नहीं खोला। उनके इस कार्य से चौदह लोकों के इस जगत में यह आश्चर्य बना रहा कि मुहम्मद साहब ने कुर्आन के भेदों को प्रकट क्यों नहीं किया?

नूर पार अर्स मोमिन, हुते ना तिन बखत।
तो महंमद मेंहेदी मोमिन, आए अर्स से आखिरत।।६७।।

अक्षर से परे परमधाम में रहने वाले ब्रह्ममुनि उस समय संसार में नहीं आये थे इसलिये कियामत के समय में निजधाम से ब्रह्मात्माओं के साथ श्यामा जी (सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी) एवं श्री प्राणनाथ जी का अवतरण हुआ।

बात बड़ी मोमिन की, जिनके अर्स में तन।
ए रूहें दरगाह की, जिनको अर्स वतन।।६८।।

परमधाम में जिन ब्रह्मात्माओं के अखण्ड नूरी तन (परात्म) हैं, उनकी अपार महिमा है। इन ब्रह्मांगनाओं का मूल घर परमधाम है, जहां उनकी लीला है।

अर्स खावंद एक मासूक, दूसरा नाहीं कोए।
और खेल सब नूरियों किया, यामें भी विध दोए।।६९।।

स्वलीला अद्वैत परमधाम में एकमात्र अक्षरातीत परब्रह्म ही है, अन्य कोई दूसरा नहीं। माया का यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड नूरी फरिश्तों की देन है। इस संसार में दो प्रकार के जीव हैं।

भावार्थ- परमधाम में श्यामा जी, ब्रह्मात्मायें, अक्षर ब्रह्म और उनकी आहलादिनी शक्ति सभी अक्षरातीत परब्रह्म के अंग हैं। इस प्रकार वहां स्वलीला अद्वैत की भूमिका है अर्थात् स्वयं अक्षरातीत ही श्यामा जी, ब्रह्मात्माओं, अक्षर ब्रह्म और उनकी आह्लादिनी शक्ति के रुप में लीला करते हैं। ये पांच होते हुए भी आन्तरिक रुप से एक हैं।

यामें अजाजील रूह असलू, दूजी रूह कुफरान।
तीसरा दम देखन का, ना कछूए हैवान।।७०।।

इनमें वास्तविक जीव आदि नारायण हैं, जिनके सांकल्पिक प्रतिबिम्बित चेतन के रुप में संसार के अन्य प्राणी (मनुष्य) हैं जो काफिर हैं अर्थात् अक्षरातीत के स्थान पर

देवी-देवताओं या जड़ पदार्थों की भक्ति करने वाले हैं। तीसरे प्रकार के वे प्राणी हैं, जो मात्र संसार में बने रहते हैं। इनका अस्तित्व नहीं के बराबर है। ये पशु-पक्षी हैं।

हैवान ना कछू तो कहे, जो उनको ना कछु बुध।
जो जाने ना वेद कतेब को, सो उसी दाखिल बेसुध।।७१।।

पशु-पक्षियों का अस्तित्व नहीं के बराबर इसलिये कहा गया है क्योंकि इनमें परमात्मा या स्वयं को जानने की कुछ भी बुद्धि नहीं होती है। जो मनुष्य तन लेकर भी वेद-कतेब को नहीं जानते अर्थात् धार्मिक ज्ञान नहीं रखते, वे भी उन्हीं अज्ञानी पशु-पक्षियों की श्रेणी में सम्मिलित् हैं।

भावार्थ-आज मानव-समाज का अधिकतर भाग धर्म गन्थों के ज्ञान से पूर्णतया रहित हैं। धर्म के अग्रगण्य लोगों का यह नैतिक उत्तरदायित्व है कि वे मन्दिरों को राजमहलों की तरह सजाने की अपेक्षा धार्मिक शिक्षा में धन को खर्च करें।

जो रूह अर्स अजीम की, सो मिले नहीं कुफरान।
ए बेवरा इमाम बिना, करे सो कौन बयान।।७२।।

परमधाम की जो भी आत्मा होगी, उसके लक्षण काफिरों से मेल नहीं खाते। जीवों तथा ब्रह्मसृष्टियों में भेद का उपरोक्त विवरण श्री प्राणनाथ जी के अतिरिक्त भला और कौन कर सकता है?

भावार्थ- शारीरिक आकृति की दृष्टि से ब्रह्मसृष्टियों और जीवों में कोई भेद नहीं दिखता। वास्तविक भेद तो ज्ञान, परब्रह्म पर अटूट विश्वास, सर्वस्व समर्पण और अखण्ड प्रेम की दृष्टि से होता है। जीवों में ये लक्षण नहीं पाये जाते। अवश्य वे अपने में इन गुणों का दिखावा करते हैं और उसका अहंकार रखते हैं।

सांचे सुख मोमिन के, अजाजील और सुख।
पर जो सुख मोमिन के, सो कहे न जाए या मुख।।७३।।

ब्रह्मात्माओं को परमधाम का अखण्ड सुख प्राप्त होता है। इसी प्रकार आदि नारायण को निराकार मण्डल का सुख प्राप्त होता है। स्वलीला अद्वैत परमधाम में ब्रह्मात्माओं को जो सुख प्राप्त है, उसका वर्णन इस मुख से नहीं हो सकता।

अजाजील और काफर, तिनों भी सुख नेहेचल।
बरकत इन मोमिन की, साफ किए सब दिल।।७४।।

आदि नारायण तथा सभी जीवों को इन ब्रह्ममुनियों की कृपा से बेहद मण्डल का

अखण्ड सुख प्राप्त होगा। ये सभी जीव तारतम ज्ञान से परब्रह्म की पहचान करके निर्मल हो जायेंगे।

भावार्थ-योगमाया में जागृति बुद्धि मिलने पर ही सभी जीव परब्रह्म की पहचान करेंगे। संसार में कुछ ही जीव परब्रह्म के चरणों में आयेंगे।

करके साफ सबन को, भिस्त देसी सबन।
पर रूहों सुख हमेसगी, जहां मौला महंमद मोमिन।।७५।।

श्री प्राणनाथ जी की छत्रछाया में संसार के सभी जीव परब्रह्म की पहचान करके अपने अपराधों का प्रायश्चित करेंगे तत्पश्चात् उन्हें योगमाया की बहिश्तों (मुक्ति स्थानों) में अखण्ड किया जायेगा। ब्रह्मात्माओं का सुख तो अनन्त और शाश्वत है। वह उस परमधाम का सुख है जहां परब्रह्म श्री राजजी, श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओं का अखण्ड निवास है।

नूर सरूपें रसूल, हक आगे खड़ा हुकम।
मूल मेला महंमद रूहों का, सब बैठियां तले कदम।।७६।।

परब्रह्म के आदेश स्वरूप बनकर मुहम्मद स.अ.व. जिनके अन्दर अक्षर ब्रह्म की आत्मा थी, संदेश वाहक के रूप में इस संसार में आये। जब वे मेयराज में परब्रह्म के सम्मुख उपस्थित हुए तो उन्होंने देखा कि यहां मूल मिलावे में श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओं का समूह फरामोशी में है। सभी ब्रह्मात्मायें खेल देखने की इच्छा से परब्रह्म के चरणों में बैठी हुई हैं।

भावार्थ- आगे खड़ा होना एक मुहाविरा है जिसका अर्थ होता है- उपस्थित होना। उपरोक्त चौपाई का प्रसंग मेयराज से सम्बन्धित है। 'हुकम नूरजमाल का, जो है नूर जलाल' बी. सा. के इस कथन से भी स्पष्ट है कि मुहम्मद स.अ.व. के रूप में अक्षरब्रह्म की ही आत्मा थी।

नूर के एक पल में, इत इंड चले कई जाए।
ए भी मोमिनों खेल देखाए के, देसी सबे उड़ाए।।७७।।

अक्षर ब्रह्म के एक पल में इस कालमाया के करोंड़ों (अनेकों) ब्रह्माण्ड उत्पन्न होकर लय हो जाते हैं। ब्रह्मसृष्टियों को भी इस ब्रह्माण्ड का खेल दिखाकर इस योगमाया में अखण्ड कर दिया जायेगा तथा शेष अन्य ब्रह्माण्डों का प्रलय हो जायेगा।

रूहें फरिस्ते वास्ते, खेल किया चौदे तबक।
दुनी सक लिए खेलत, किन तरफ न पाई बका हक।।७८।।

ब्रह्मसृष्टियों तथा ईश्वरीय सृष्टि को माया का खेल दिखाने के लिये यह ब्रह्माण्ड बनाया गया। संसार के जीव हमेशा संशयग्रस्त होकर ही संसार में अपना जीवन यापन करते हैं। उन्हें अखण्ड परमधाम तथा अक्षरातीत परब्रह्म का किसी भी प्रकार से ज्ञान नहीं हो पाता।

सो सक भानी सब दुनी की, महंमद मेंहेंदी ईसा आए।
अर्स कायम सूर हुआ रोसन, दिया काफरों कुफर उड़ाए।।७६।।

सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी तथा श्री प्राणनाथ जी ने इस संसार में आकर तारतम ज्ञान के द्वारा सारे संसार का संशय दूर कर दिया। उन्होंने अखण्ड परमधाम के ज्ञान रूपी सूर्य के रूप में तारतम ज्ञान का प्रकाश फैलाकर संसारी जीवों की अज्ञानता के अन्धकर को नष्ट कर दिया।

भावार्थ-उपरोक्त कथन भावात्मक रूप से अतिश्योक्ति अलंकार की भाषा में है क्योंकि वर्तमान समय में चारों ओर अज्ञानता का अंधकार दिखायी दे रहा है। कहीं कहीं पर ही तारतम का प्रकाश है। वस्तुतः योगमाया के ब्रह्माण्ड में ही सम्पूर्ण संसार की अज्ञानता नष्ट होगी।

काफर रूह भी पाक होएसी, अंदर आग जलाए।
मोमिनों मुस्लिम खातिर, भिस्त जो देसी ताए।।८०।।

योगमाया के ब्रह्माण्ड में होने वाले न्याय की लीला के दिन संसार के समस्त जीव प्रायश्चित की अग्नि में जलकर पवित्र हो जायेगें। ब्रह्मसृष्टियों तथा ईश्वरीय सृष्टि के इस संसार में आने के कारण जीवों को भी अखण्ड मुक्ति का सुख प्राप्त होगा।

बड़े नसीब रूहें अर्स की, जिन जावें खेल में भूल।
मोमिन वास्ते अर्स से, आए इमाम ईसा रसूल।।८१।।

परमधाम के ब्रह्ममुनि बहुत ही भाग्यशाली है क्योंकि इन्हीं के लिये परब्रह्म की तीनों सूरतों (स्वरूप) मुहम्मद स.अ.व., सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी तथा श्री प्राणनाथ जी का स्वरूप संसार में प्रकट हुआ। ऐसी स्थिति में ब्रह्ममुनियों को चाहिये कि वे अपने प्राणेश्वर अक्षरातीत को न भूलें।

ए सब हुआ मोमिनों खातिर, पेहेले भेज्या कागद।
ए तमासा देखाए के, उड़ाए देसी ज्यों गरद।।८२।।

यह सारा खेल ब्रह्ममुनियों के लिये ही हुआ। उन्हें साक्षी देकर विश्वास दिलाने के

लिये ११०० वर्ष पहले ही प्रियतम परब्रह्म ने कुर्आन भेज दिया। ब्रह्मात्माओं को माया का खेल दिखाकर मिट्टी के खिलौने की तरह इस ब्रह्माण्ड का लय कर दिया जायेगा।

जैसा खेल अव्वल का, ए जो रूहों देख्या ब्रह्मांड।
बरकत इन मोमिन की, सब दुनियां करी अखंड।।८३।।

ब्रह्मसृष्टियों ने इस ब्रह्माण्ड में माया का खेल वैसे ही देखा हैं जैसे व्रज में देखा था। इस ब्रह्मांगनाओं की कृपा से ही यह सारा संसार अखण्ड मुक्ति को प्राप्त होगा।

इन जुबां मैं क्यों कहूं, मोमिन अर्स अंकूर।
आया इमाम सबन का, किया जो परदा दूर।।८४।।

ब्रह्मसृष्टियों का परमधाम से जो अनादि काल से अखण्ड सम्बन्ध है, उसकी महिमा का वर्णन मैं इस जिह्व से कैसे करूँ? जो सबके प्राणवल्लभ अक्षरातीत है वे अब इस संसार में श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में आ गये हैं। उन्होंने तारतम ज्ञान द्वारा सबकी अज्ञानता के आवरण को दूर कर दिया है।

ए जो नसीब मोमिन का, सो लिख्या मिने फुरमान।
पर जहान में गुझ जाहेर हुई, अब मोमिनों की पेहेचान।।८५।।

ब्रह्ममुनियों को जो अनुपम महिमा का सौभाग्य प्राप्त है, वह कुर्आन में पहले से वर्णित है किन्तु तारतम ज्ञान के प्रकाश में ही अब उनकी वास्तविक पहचान उजागर हुई है जो अब तक गोपनीय थी।

गिरो मोमिन नाम अनेक हैं, जुदे जुदे कहे नाम।
बोहोत नामों बुजरकियां, लिखी मांहें अल्ला कलाम।।८६।।

धर्मग्रन्थों में ब्रह्मसृष्टियों के अनेकों प्रकार के अलग-अलग नामों का वर्णन है। कुर्आन में इनके नामों की अपार महिमा का वर्णन किया गया है।

भावार्थ- हिन्दू धर्म ग्रन्थों में जहां ब्रह्मात्माओं को परमहंस, ब्रह्ममुनि, ब्रह्मांगना आदि नामों से सम्बोधित किया गया है वहीं कुर्आन में इन्हें मोमिन, रूहें, अरवाह आदि कहकर वर्णित किया गया है।

तारीफ ईसा मेहेंदी की, सो इन जुबां कही न जाए।
पेहेचान रसूल खुदाए की, अर्स वतन दिया बताए।।८७।।

सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी तथा श्री प्राणनाथ जी की महिमा का वर्णन इस जिहवा से नहीं हो सकता। उन्होंने मुहम्मद स.अ.व. सच्चिदानन्द परब्रह्म तथा अखण्ड परमधाम

की वास्तविक पहचान को संसार में प्रकट किया है।

तारीफ काजी कजाए की, क्यों कहूं या मुख।
नाबूद को कायम किए, दिए रूहों कायम सुख।।८८।।

सबका न्याय करने वाले श्री प्राणनाथ जी की महिमा को मैं इस मुख से कैसे व्यक्त करूँ? उन्होंने इस नश्वर ब्रह्माण्ड को भी बेहद में अखण्ड करने का निर्णय किया और ब्रह्माआत्माओं को इस संसार में परमधाम के अखण्ड सुखों का अनुभव कराया।

माएनें इन कुरान के, गुझ रही थी बात।
सो अर्स रूहें जाहेर हुई, सब जन में फैलात।।८९।।

कुर्आन में संकेतों में कहे हुए रहस्य अब तक छिपे पड़े थे। परमधाम के ब्रह्ममुनियों के इस संसार में प्रकट हो जाने के बाद कुर्आन के गुह्यतम भेद अब जन-जन को विदित हो जायेंगे।

नाहीं तुम बराबरी, सो इन जुबां कही न जाए।
पर मुझे सुख तब होएसी, जब देऊं नैनों सब देखाए।।९०।।

हे साथ जी! आप अनुपम हैं। आपकी कोई समानता नहीं कर सकता है। आपकी महिमा का वर्णन इस जिह्व से नहीं हो सकता, किन्तु मुझे तो वास्तविक सुख तब होगा जब मैं आपकी महिमा को इस संसार के लोगों को उनकी आंखों से प्रत्यक्ष दिखा दूं।

भावार्थ- औरंगजेब के दरबार में उससे बहस करके कोई भी व्यक्ति जीवित नहीं लौटा था किन्तु श्री प्राणनाथ जी की छत्रछाया में सुरक्षित रहने वाले सुन्दरसाथ ने उसके दरबारियों के समक्ष उसे कठोर शब्दों में कहा भी और सुरक्षित लौट भी आये। उदयपुर में राणा राज सिंह ने ब्रह्ममुनियों का तेज देखा तथा औरंगाबाद में भावसिंह ने और रामनगर में शेख खिज्र ने। श्री पद्मावतीपुरी धाम में महाराजा छत्रशाल जी के सम्पूर्ण राजघराने और प्रजा को विश्वास हो गया कि ये परमधाम के ब्रह्ममुनि हैं।

ए किया तुम खातिर, समझ लीजो दिल माहें।
रूहें मोमिन कदम तले, तित दूजा कोई नाहें।।९१।।

आप इस बात को अपने हृदय में बसा लीजिए कि माया का यह सम्पूर्ण खेल आप के लिये ही बनाया गया है। आप परमधाम के मूल में अक्षरातीत युगल स्वरूप के चरणों में बैठे है। वहां आपके अतिरिक्त अन्य कोई भी नहीं है।

।।प्रकरण।।२४।।चौपाई।।८२४।।

सनंध–नबी नारायण की

इस प्रकरण में मुहम्मद स.अ.व. और आदि नारायण के स्वरूप की समीक्षा की गयी है–

कही कजा जो रसूलें, सो नेक सुनाई हम।
पर कहे कोई ना समझया, अब कर देखाऊं तुम।।१।।

मुहम्मद साहब ने न्याय की जिस लीला के सम्बन्ध में कहा था, उसका मैंने थोड़ा सा वर्णन किया है। किन्तु कहने मात्र से कोई समझ नहीं पाता है, इसलिये अब मैं प्रत्यक्षतः ज्ञान दृष्टि से न्याय करके ही आपको बताता हूँ।

महंमद दीन देखाइया, और देखाया छल।
भी देखाऊं जाहेर, ज्यों छूट जाए सब बल।।२।।

मुहम्मद स.अ.व. ने कुर्आन द्वारा धर्म का मार्ग दर्शाया और इस मायावी जगत के विषय में बताया। अब मैं धर्म और संसार के विषय में स्पष्ट रूप से अपना निर्णय बता रहा हूँ जिससे आपके सभी संशय मिट जायेंगे।

अब छल को बल क्या करे, जब देखाऊं बका वतन।
निकाल देऊं जड़ पेड़ से, ल्याए नूर अर्स रोसन।।३।।

जब मैं सबको परमधाम का ज्ञान दे दूंगा तो माया की शक्ति किसी का भी क्या अनिष्ट करेगी? मैं सबके हृदय में परमधाम के तारतम ज्ञान का प्रकाश कर दूंगा जिससे उनके हृदय से माया का प्रभाव जड़-मूल से ही नष्ट हो जायेगा।

भावार्थ- माया के प्रपञ्चों से दूर रहने का सबसे सरल एवं उपयुक्त साधन है- परमधाम तथा युगल स्वरूप का ध्यान करना।

फरेब की तो तुम सुनी, थिर चर चौदे तबक।
खेल खावंद जो त्रैगुन, सब सब्द बान पुस्तक।।४।।

हे साथ जी! अब तक आपने इस मायावी जगत के इस चौदह लोकों वाले ब्रह्माण्ड में चर-अचर सभी प्राणियों के विषय में सुना। आपने इस खेल को नियन्त्रित करने वाले ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव एवं सभी धर्मग्रन्थों के सैद्धान्तिक कथनों को भी सुना।

भावार्थ- मात्र पौराणिक मान्यता में ही ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव को इस सृष्टि का कर्ता-धर्ता और हर्ता माना गया है। वैदिक दृष्टि से वे मात्र विशिष्ट महापुरूष हैं। वेदानुसार अक्षर ब्रह्म के स्वाप्निक स्वरूप आदि नारायण ही इस जगत के कर्ता-धर्ता और हर्ता है।

बैकुंठ से पाताल लों, बनि आदम हैवान।
इन बीच की सब कही, ब्रह्मा रूद्र नारायन।।५।।

बैकुण्ठ से पाताल तक जितने भी मनुष्य, आदि प्राणी हैं या ब्रह्मा, शिव और नारायण आदि देवता हैं, उन सबका मैंने यथावत् वर्णन किया है।

अब सुनियो तुम मोमिनों, ए खेल तो कछुएं नांहें।
पर कछुक तो देखत हो, जिन रहे संसे दिल मांहें।।६।।

हे साथ जी! अब आप मेरी यह बात सुनिये। यद्यपि माया का यह खेल कुछ भी नहीं है किन्तु आप इसे किसी न किसी रूप में देख तो रहे ही हैं। मैं तारतम ज्ञान से आपके मन के संषयों को निकाल देता हूँ।

जब जाग अर्स हक देखिए, ए नहीं खेल कछू तब।
पर जोलों हुकमें है खड़ा, तोलों क्यों होए झूठा अब।।७।।

जब जागृत होकर तारतम ज्ञान के प्रकाश में प्रियतम परब्रह्म और परमधाम को देखते हैं तो यह खेल रूपी ब्रह्माण्ड कुछ भी नहीं होता है। किन्तु परब्रह्म के आदेश से जब तक इसका अस्तित्व है,तब तक इसे झूठा कैसे कह सकते हैं?

ए खेल झूठा जो देखहीं, सो तो सांचे हैं साबित।
तो कहा बड़ो की बुजरकी, जो झूठ न करहीं सत।।८।।

इस मिथ्या खेल को जो ब्रह्ममुनि देख रहे हैं, निश्चित ही वे सत्य के स्वरूप हैं। यदि वे ब्रह्ममुनि इस मिथ्या ब्रह्माण्ड को अखण्ड नहीं करते हैं तो उन महान ब्रह्मात्माओं की महान गरिमा से क्या लाभ है?

जो सांचे सांचा देवहीं, तो कहा बड़ाई बुजरक।
पर खाकी बुत सत होवहीं, तो जानियों महंमद बरहक।।९।।

जो अनादिकाल से परमधाम में रहने वाले हैं, उन्हें पुनः अखण्ड परमधाम में पहुँचाना कोई विशेष गरिमा वाली बात नहीं है। श्री प्राणनाथ जी की वास्तविक महिमा तो इस बात पर निर्भर करती है कि नश्वर तनों को धारण करने वाले ये जीव भी उनकी कृपा से अखण्ड हो जायें।

महंमद आया नूर पार से, याही खेल के मांहें।
पर इन खेल में का नहीं, सो भी सक राखों नांहें।।१०।।

मुहम्मद स.अ.व. इस नश्वर जगत् में अक्षर से भी परे अक्षरातीत के धाम (रंगमहल) से आये। यह तो निश्चित है कि वे इस संसार के नहीं हैं। इस सम्बन्ध में यदि

किसी को कोई संशय है तो मैं उसका निराकरण कर दूंगा।

नबी और नारायन की, कछुक कहूं पटंतर।
रसूल कहे नूरजमाल की, नहीं नारायन गम अछर।।११।।

मुहम्मद साहब और आदि नारायण में कुछ अन्तर है, जिसे मैं बता रहा हूँ। मुहम्मद स.अ.व. अक्षरातीत के धाम और स्वरूप का वर्णन करते हैं, जबकि आदि नारायण को अक्षर ब्रह्म की भी पहचान नहीं हैं।

सो तेता ही बोलिया, जो गया जहां लों चल।
अपने अपने मुख से, जाहेर करें मजल।।१२।।

आध्यात्मिक जगत में जिस स्तर तक जिसकी पहुँच हो सकी है, उसने वहीं तक का वर्णन किया है। सबने अपने-अपने मुख से अपनी-अपनी आध्यात्मिक अनुभूति (मंजिल) का वर्णन किया है।

सो सब्द लिखे हैं कागदों, आपे अपनी साख।
जो किन पाई दमड़ी, या किन लाखों लाख।।१३।।

उनकी अनुभूति (प्राप्त होने वाले लक्ष्य) का वर्णन धर्मग्रन्थों में हुआ है। ये वर्णन उनकी अनुभूति की साक्षी देते हैं। किसी ने आध्यात्मिक स्तर पर मात्र एक छदाम अर्थात् एक पैसे का आठवां भाग पाया तो किसी ने लाखों रूपये पाये।

भावार्थ- एक पैसे का आठवां भाग ही पाने का अर्थ है, आध्यात्मिक अनुभव से रहित होना। इसी प्रकार लाखों रूपयें पाने का तात्पर्य है-परब्रह्म के प्रेम, आनन्द और दर्शन की उपलब्धि करना।

मैं ना किसी की कम कहूं, ना किसी की कहूं बढ़ाए।
जो जैसा तैसा तिन, दोऊ कहूं दृढ़ाए।।१४।।

मैं न तो किसी की आध्यात्मिक उपलब्धि को कम करके बताऊंगा और न किसी की बढ़ाकर ही कुछ कहूंगा। जो जैसा है अर्थात् जिसने जितनी उपलब्धि की है, उसे उतना ही कहना मुझे अभीष्ट है।

एते दिन ढांपे हते, सब्द सत असत।
सो अब जाहेर हुए, आई सबों की सरत।।१५।।

आज दिन तक माया और परब्रह्म की पहचान देने वाले ज्ञान के शब्द छिपे पड़े थे। तारतम ज्ञान के प्रकाश में अब सत्य और असत्य के पूर्ण रूप से उजागर होने का समय आ गया है।

हकीकत हिंदुअन की, सो देखो चित ल्याए।
और जो मुस्लिम की, सो भी देऊं बताए।।१६।।

हे साथ जी! आप हिन्दुओं की वास्तविकता को एकाग्र चित्त से ग्रहण कीजिए। इसके अतिरिक्त मैं मुसलमानों की भी यथार्थता को दर्शाऊगा। उसे भी समझिए।

हिंदू जोरू जब करें, ले देवें मन के बंध।
जिन कोई छोड़े किनको, यों पड़ें गफलत फंद।।१७।।

जब हिन्दू विवाह करते हैं तो एक दूसरे के मन से बंध जाते हैं। वे आपस में यह संकल्प करते हैं कि कोई भी एक दूसरे को न छोड़े। इस प्रकार वे माया के बन्धन में पड़े रहते हैं।

मुस्लिम जोरू जब करें, मिल पेहेले बांधे सरत।
जिन कोई किनसों दिल बांधे, यों न्यारे रहें गफलत।।१८।।

किन्तु, जब मुसलमान विवाह करते हैं तो पहले ही 'मेहर' के रूप में धन की कुछ शर्त बांध लेते हैं। वे परब्रह्म को प्राथमिकता में रखकर यह निश्चय करते हैं कि दोनों (पति-पत्नी) एक दूसरे से अपना दिल न बांधे। इस प्रकार मोह के बन्धन से वे अलग रहते हैं।

भावार्थ-वैवाहिक जीवन में प्रेम की पवित्रता होनी अत्यावश्यक है। सीता और राम ने अपने लौकिक प्रेम को निष्कलंक रखते हुए परमात्मा के प्रेम को सर्वोपरि माना। लंका में बन्धन में रहने पर भी सीता ने किसी भी दिन संध्या (ध्यान) का परित्याग नहीं किया। इसी प्रकार मर्यादा पुरूषोत्तम राम ने सीता के देह त्याग के पश्चात् ऋषिकेश में भाइयों सहित तप करते हुए परब्रह्म की आराधना में अपने शरीर का त्याग किया था।

यही वैदिक मर्यादा है किन्तु पौराणिक मान्यताओं में पति को पत्नी के लिये भगवान या परमात्मा के समान बताया गया, जो उचित नहीं है। पति देवता तो हो सकता है किन्तु परमात्मा का पद कोई भी नहीं ले सकता। पति की मृत्यु के पश्चात् उसे बलपूर्वक आग में जला देना अधर्म है। यह हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि लौकिक पति से आत्मा का पति सर्वोपरि है। वह अनादि है, अनन्त है, सच्चिदानन्द है। उसके समकक्ष किसी भी लौकिक सम्बन्ध को नहीं रखा जा सकता।

जो लोग पवित्र दाम्पत्य जीवन नहीं बिता सकते वे आध्यात्मिक क्षेत्र में भी सफल नहीं हो सकते। विषय-लम्पटों और वेष्याओं के लिये परमात्मा के प्रेम मार्ग पर चल पाना

सम्भव नहीं है। मुसलमानों का अल्लाह के प्रति सर्वोपरि निष्ठा रखना अच्छी बात है किन्तु नारी को मात्र एक खिलौना समझते हुए तीन बार तलाक-तलाक-तलाक कह कर छोड़ देना और ४-४ विवाह करना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं कहा जा सकता। अकबर बादशाह के हरम में अनैतिक तरीके से लाकर रखी हुई ५००० स्त्रियां थीं तो वाजिद अलीशाह के हरम में ३६५। इस्माइल कुली खाँ १२०० स्त्रियां रखता था।

इस प्रकार, यह मानवता का अपमान है तथा कुर्आन के वास्तविक सिद्धान्तों के विपरीत है। भारतीय संस्कृत में जहां 'यत्र नार्यास्तु पुज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' कहा जाता है, वहीं अधिकतर मुस्लिम लोगों के लिये नारी विषय-तृप्ति के साधन के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं है।

भी हिंदू मुस्लिम की, कहूं तफावत तुम।
हिंदू हिसाब जमपुरी, मुस्लिम हाथ खसम।।१६।।

हिन्दुओं तथा मुसलमानों में एक और भेद को आपसे बताता हूँ। हिन्दुओं के कर्मों का न्याय यमपुरी में होता है और मुसलमानों का न्याय परब्रह्म के हाथ होता है।

भावार्थ- यमराज के द्वारा कर्मों का फल देने का कथन मात्र झूठे पौराणिकों का है, वेद का नहीं। गरूड़ पुराण में यमराज से सम्बन्धित बहुत सी मिथ्या बातें हैं। वैदिक सिद्वान्त यही है कि सर्वशक्तिमान परमात्मा के अटल विधान से जीव के कर्मों के अनुसार स्वतः ही एक योनि से दूसरी योनि में स्थानान्तरण होता रहता है जिससे वह मानव तन पाकर मोक्ष प्राप्त कर सके।

'यमेन वायुना' यजु १०/६ के कथनानुसार यम नाम आकाशस्थ वायु का है जिसमें देहत्याग के पश्चात् सूक्ष्म जीव तब तक रहते हैं जब तक उनका पुनर्जन्म न हो जाय। 'यमः एव एषवृणुते' कठोपनिषद्। के इस कथन में यम का अर्थ सब पर शासन करने वाला परमात्मा है। इस प्रकार वेदों के कथन में कहीं भी काल्पनिक यमराज का वर्णन नहीं हैं। वैदिक ज्ञान का प्रसार बन्द होने से हिन्दू समाज में मिथ्या पुराणों की रचना हुई जिन्होंने जड़ पूजा, बहुदेव पूजा का विनाशकारी रोग सनातन धर्म कहे जाने वाले मत में फैला दिया। यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि 'यो अन्यां देवतामुपासते स न वेद यथा पशुभिः एव देवानाम्। जो एक परमात्मा को छोड़कर अन्य किसी भी देवता की उपासना करता है, वह विद्वानों में पशु के समान हैं।

हिंदुओं ए दृढ़ कर लिया, इत जो करसी करम।
सो जाए आपे अपना, दें हिसाब आगे राए धरम।।२०।।

हिन्दुओ के मन में यह दृढ़ता है कि हम यहां जो भी अच्छा बूरा कार्य करेंगे, शरीर त्याग के बाद धर्मराज के यहां जाकर अपने कर्मों का विवरण देना होगा, वही न्याय होगा।

भावार्थ-जिस प्रकार कुर्आन में अल्लाह तआला के रहमान, रहीम, मालिक कुद्दस आदि ९९ नामों का वर्णन है, उसी प्रकार वेद में अग्नि, आदित्य, वायु, इन्द्र, मित्र, वरूण, यम, शिव, विष्णु, आदि सैकड़ों नामों का वर्णन है। अथर्ववेद में स्पष्ट कहा गया है कि 'एक सद् बहुधा विप्रा वदन्ति'। ९/१५/२८ अष्टाध्यायी, महाभाष्य, निघण्टु तथा निरूक्त के ज्ञान से रहित पौराणिको ने इन नामों का वास्तविक आशय न समझने के कारण अलग-अलग देवता बना दिया। धर्मानुकूल सत्य एवं निष्पक्ष न्याय करने वाले परमात्मा को ही धर्मराज कहते हैं। यह कोई देवता नहीं है, जैसा कि पौराणिक माना करते हैं।

सो हिसाब दिए पीछे, देह धरें चौरासी लाख।
मन वाचा करम बांध के, कहें हम होत हलाक।।२१।।

इस प्रकार अपने कर्मों का हिसाब देकर हिन्दू लोग ८४ लाख योनियों में तन धारण करते हैं। वे मन, वाणी तथा कर्म के बन्धन में बंधकर कहते हैं कि हम बार-बार शरीर धारण करते हैं और मरते हैं।

भावार्थ- पुनर्जन्म एक ध्रुव सत्य है। चैतन्य जीव को कब्र के अन्दर मानना उचित नहीं है क्योंकि वह इलेक्टोनों, प्रोटिनों, न्यूट्रिनो तथा हिंग्स बोसोन्स से भी अधिक सूक्ष्म है। यदि यह कहा जाय कि 'कुन्न' कहने से सभी जीव उत्पन्न हुए हैं तो वर्तमान समय में तो प्रतिदिन लाखों की संख्या में लोग पैदा हो रहे है, वे कहां से आ रहे हैं?क्या आजकल भी प्रतिदिन कुन्न कहा जा रहा है?यदि नहीं तो पहले वाले जीवों का दुबारा जन्म लेना ही तो पुनर्जन्म है। यदि मनुष्य को एक ही बार जन्म मिलना है तो रूप, गुण, धन, ऐश्वर्य आदि से सभी समान होने चाहिए तभी अल्लाह तआला की न्याय व्यवस्था सही मानी जायेगी।

पशु-पक्षियों में भी जब जीव का अस्तित्व माना जाता है तो प्रश्न यह होता है कि परमात्मा ने पक्षपातपूर्ण तरीके से किसी को मनुष्य तो किसी को पशु-पक्षी क्यों बनाया? यदि पशु-पक्षियों और कीट-पतंगों से मनुष्य योनि में स्थानान्तरण होता है तो इससे पुनर्जन्म सिद्ध हो ही जाता है। पुनर्जन्म के सम्बन्ध में कुर्आन पा. २१ सू. ३० आ. ११ के कथन देखने योग्य हैं- ''अल्लाहु यब्दअुल्खल्क सुम्म युअीदुह सुम्म अिलैहि तुर्जअून।'' क्या इन लोगों ने नहीं देखा कि अल्लाह पहली बार कैसे पैदा करता है और फिर उसकी

पुनरावृत्ति करता है? पुनः उसी की ओर लौटकर जाना है।

हिंदू मुए जलावहीं, खाक भी देवें उड़ाए।
जो डंड जम का छूटहीं, तो भी दिल सुन्य को चाहे।।२२।।

जब हिन्दुओं में कोई मर जाता है तो उसे अग्नि में जला देते हैं तथा उसकी राख भी उड़ा देते हैं। यदि वे अपने पुण्य कर्मों तथा साधनाओं से यमराज के दण्ड से मुक्त भी हो जाते हैं तो भी वे निराकार में ही भटकने की इच्छा करते हैं अर्थात् ब्रह्म को निराकार मानने वाले हिन्दू निराकार की उपलब्धि को ही अपना सर्वोपरि लक्ष्य मान लेते हैं।

हिसाब मुस्लिम कहावहीं, ए किया दृढ़ दिल।
खुद काजी हस्तक नबी, हम देसी सब मिल।।२३।।

मरने के बाद न्याय के सम्बन्ध में मुसलमानों के हृदय में यह धारणा दृढ़ होती है कि स्वयं अल्लाह ताला उनका न्याय करेंगे जिसमें मुहम्मद स.अ.व. उनके लिये सिफारिश या मध्यस्थता करेंगे। हम मुसलमान स्वयं के न्याय का उत्तरदायित्व मुहम्मद साहब के प्रति सौंप देंगे।

भावार्थ- वैदिक दृष्टि में न तो परब्रह्म के अतिरिक्त अन्य कोई उपास्य है और न शुभ-अशुभ कर्मों के अनुसार न्याय करने वाला। पौराणिकता ने वैदिक एकेश्वर वाद को हटाकर बहुदेव वाद का राग अलापना प्रारम्भ किया जिसके परिणाम स्वरूप एक काल्पनिक देवता यमराज के हाथों न्याय की कहानी गढ़ी गयी। चाहे कोई हिन्दू हो या मुसलमान, तारतम ज्ञान से रहित होने पर दोनों ही परमात्मा को निराकार मानते है।

दूजा देह धरन का, रसूलें किया नहीं हुकम।
ताए दूजा देह क्यों होवही, जाको हिसाब हाथ खसम।।२४।।

मुहम्मद स.अ.व. ने मुसलमानों के लिये दूसरा शरीर धारण करने के बात नहीं की है। जिसका न्याय स्वयं परब्रह्म के हाथों होना है, भला उसे दूसरा तन क्यों धारण करना पड़ेगा।

भावार्थ-केवल पौराणिक ग्रंथों में ही स्वर्ग या नर्क की बात लिखी है। गीता ८/१३ में स्पष्ट कहा गया है कि जो मनुष्य अविनाशी ब्रह्म का ध्यान करते हुए अपने शरीर का परित्याग करता है, वह परम कल्याण को प्राप्त होता है।

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन ।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम्।।

मनुष्य का स्थूल शरीर परब्रह्म प्राप्ति का साधन है। यदि एक मानव तन में परब्रह्म का साक्षात्कार नहीं हुआ था दुर्भाग्यवश वह उस तन में बुरे ही कार्य करता रहा तो नया तन धारण कर अपनी भूलों को सुधारने तथा परब्रह्म का साक्षात्कार करने के लिये पुनः मानव तन का मिल जाना तो एक स्वर्णिम अवसर है। यदि मनुष्य प्रत्येक जन्म में शुभ कार्य करता रहे और मात्र परब्रह्म का ही ध्यान करते हुए अपने शरीर का त्याग करें तो उसका प्रत्येक जन्म मनुष्य योनि में ही होना सम्भव है। बूरे कर्मो के कारण ही पशु-पक्षियों की योनि में जाना पड़ता है।

यदि मान लिया जाय कि अब से १००० वर्ष पूर्व किसी मुस्लिम ने अपना तन छोड़ा तो अल्लाह तआला से मिलन की चाहत में वह १० बार मानव तन धारण कर दिन-रात बन्दगी कर सकता है और लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। पुनर्जन्म का सिद्धान्त न मानने पर या तो उसे अपनी कब्र में चुपचाप बैठे रहना पड़ेगा या असहाय अवस्था में इधर-उधर घूमते हुए अपना समय व्यतीत करना पड़ेगा। उस समय दूसरों को बन्दगी करते हुए देखकर उसे भी तरसना पड़ेगा कि काश! यदि मेरा भी स्थूल शरीर होता, मैं भी जी भर कर अल्लाह की इबादत करता।

उपरोक्त चौपाई में यह नहीं लिखा है कि पुनर्जन्म होता ही नहीं है। चौपाई में केवल यह कहा गया कि मुहम्मद स.अ.व. ने दूसरा तन धारण करने के विषय में कुछ कहा नहीं है। उनका यही आशय था कि मुसलमान एक ही जन्म में इतनी इबादत करे कि उसे दूसरा तन धारण करने की आवश्यकता ही न पड़े और वह प्रसन्न मन से न्याय के उस दिन की प्रतीक्षा करे जिस दिन न्यायाधीश के रूप में उसे साक्षात् परब्रह्म का दीदार हो।

किन्तु, बूरे कर्म करने वालों के लिये तो केवल एक जन्म में ही अवसर मिलना बहुत ही दुःखदायी होगा। वस्तुतः कतेब परम्परा में सर्वत्र ही पुनर्जन्म को न मानने की मानसिकता है। ईसामसीह से भी पहले मिस्र में मृत्यु के बाद शवों को पिरामिडों में रसायनों के प्रयोग से सुरक्षित रखा जाता रहा है, जो आज भी वैसे ही है। इसका मूल कारण यह है यूरोप, अमेरिका एवं अरब देशों में विरोचन के अनुयायियों का साम्राज्य था जिन्हें शरीर से भिन्न चेतन जीव (आत्मा) के स्वरूप का बोध नहीं था, इस लिये इन देशों में शवों को गाड़ने की परम्परा प्रचलित हुई। किन्तु जिन्होनें कठो. ६ १/२/१८ तथा गीता के २/२० अजो नित्यं शाश्वतोऽयं पुराणः, न हन्यते हन्यमाने शरीरे' यह जीव उत्पन्न न होने वाला,

नित्य और सनातन है तथा शरीर के नष्ट होने पर भी नष्ट नहीं होता है तथा 'इदम् शरीरं भस्मान्तं' यजुर्वेद ४० वें अध्याय मन्त्र १७ के कथन को अंगीकार किया उन्होंने शरीर का दाह संस्कार ही करना उचित समझा जिससे उस शरीर का मोह न रह जाय तथा जीव पुनः नया शरीर धारण कर परब्रह्म के साक्षात्कार के लिये पुरूषार्थ करे।

मुस्लिम मुए गाड़हीं, बांध उमेद खसम।
तेहेकीक हक उठावहीं, यों सोवें पकड़ कदम।।२५।।

मुस्लिम मरने के बाद शव को जमीन में इस आशा से गाड़ते हैं कि निश्चित रूप से कियामत के समय परब्रह्म आयेंगे और हमें उठायेंगे। इस प्रकार वे अल्लाह के कदम पकड़ने का भाव लेकर सो जाते हैं।

भावार्थ-कब्र में गाड़ने के कुछ माह के पश्चात् ही शरीर नष्ट हो जाता है। ऐसी अवस्था में शरीर से मोह तो समाप्त हो जायेगा और पुनर्जन्म होने की सम्भावना रहेगी। साधना-भक्ति तो मात्र स्थूल शरीर में ही हो सकती है, सूक्ष्म शरीर से नहीं। कब्रों से मुर्दों के उठने का तात्पर्य है जीवित स्थूल शरीर में विद्यमान जीव का इल्म ए लदुन्नी (तारतम ज्ञान) पाकर परब्रह्म की पहचान कर लेना (जागृत हो जाना)। कब्र में पड़ा जीव या अज्ञान दशा में सूक्ष्म शरीर से भटकने वाला न तो ब्रह्मज्ञान पाने का अधिकारी होता है और न परब्रह्म के दर्शन का। उपरोक्त चौपाई का आशय केवल यह दर्शाना है कि बूरे कर्म करने वाला मुसलमान भी एक परब्रह्म (अल्लाह तआला) की ही याद में अपना शरीर छोड़ता है और उसे विश्वास रहता है कि वे ही उसका कल्याण करेंगे जबकि शालिग्राम, शिवलिंग और तरह-तरह के काल्पनिक देवी-देवताओं की पूजा करने वाला पौराणिक हिन्दू वेद-उपनिषद् में वर्णित अक्षरातीत परब्रह्म के विषय में सोच भी नहीं पाता और किस की शरणागत होऊँ, इस विषय में भी निर्णय नहीं कर पाता।

मन के हारे हारिए, मन के जीते जीत।
मनहीं देवे सत साहेबी, मनहीं करे फजीत।।२६।।

जो अपने मन से हार जाता है, वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हारता ही रहता है, किन्तु जो अपने मन को जीत लेता है वह लौकिक तथा पारलौकिक दोनों ही क्षेत्रों में सर्वदा विजय पाता है। मन ही जीव को परमात्मा से मिलाकर अखण्ड शोभा दिलाता है, और

विषयों में भटकने वाला मन जीव को हर जगह अपमानित करवाता है।

भावार्थ- इस चौपाई के तीसरे चरण में कथित 'सत साहेबी' का अर्थ है 'अखण्ड स्वामित्व' या शोभा। यह अवस्था परब्रह्म के साक्षात्कार से ही मिलती है। इस संसार में विद्या, रुप, पद, और धन से मानव समाज में जो वर्चस्व(साहेबी) प्राप्त होता है, वह नश्वर होता है।

चल देखाया बड़कों, सब चले जाएं तिन लार।
अब सो क्यों ए ना छूटहीं, जो बांध दई कतार।।२७।।

संसार में महापुरुष जिस मार्ग का अवलम्बन करते हैं, सम्पूर्ण मानव समाज उसका अनुकरण करता है। बहुसंख्यक समाज जिस मार्ग पर चल पड़ता है, भला अन्य लोग उसका परित्याग कैसे कर सकते हैं? उन्हें भी विवश होकर उस पर चलना ही पड़ता है।

भावार्थ- कतार बांध देना अर्थात् पंक्तिबद्ध करना एक मुहाविरा है, जिसका अभिप्राय है झुण्ड के झुण्ड लोगों का उस मार्ग पर अनुगामी होना अर्थात् किसी परम्परा या सिद्धान्त का बहुसंख्यक लोगों द्वारा अनुसरण किया जाना।

कोई हिंदू जो बैकुंठ जावहीं, सो भी खेल के मांहें।
ए फना आखिर कहावहीं, पर कायम भिस्त तो नांहें।।२८।।

भले ही कोई हिन्दू अपनी तपस्या-भक्ति से बैकुण्ठ प्राप्त भी कर ले किन्तु वह भी तो इस मायावी ब्रह्माण्ड के अन्दर ही है जो महाप्रलय में नष्ट हो जाने वाले हैं। यह उपलब्धि बेहद की अखण्ड बहिश्त के समान तो नहीं है।

भावार्थ-परमात्मा की न्याय-दृष्टि में सभी समान होते हैं, चाहें वे हिन्दू हो, मुसलमान हों या यहूदी-इसाई। यह मानना उचित नहीं है कि महान योगी -तपस्वी हिन्दू बहिश्त में नहीं जा सकता और पापी से पापी मुसलमान के लिये बहिश्तों का द्वार खुला है क्योंकि उसके पास कल्मा है और वह अल्लाह तआला को मानता है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि सृष्टि के प्रारम्भ से अर्थात् १ अरब ९६ करोड़ ८ लाख ५३ हजार १२० वर्शों से हिन्दू गायत्री मन्त्र का चिन्तन करते हुए ध्यान करते आ रहे हैं। कल्में में जिस प्रकार अल्लाहतआला (अक्षरातीत) की प्रार्थना है, उसी प्रकार गायत्री मंत्र में भी अक्षरातीत की ही प्रार्थना है। वेदानुयायी तो ब्रह्मपुरी या परमधाम के सम्बन्ध में कुछ जानते भी हैं कि वह चतुष्पाद विभूति (बेहद) से परे हैं। पुराण संहिता तथा माहेश्वर तन्त्र में परमधाम का विस्तृत वर्णन है ही। इल्मे-लदुन्नी से अनभिज्ञ मुसलमान यह निर्णय ही नहीं कर पाते हैं

कि मुहम्मद स.अ.व. परब्रह्म का दीदार करने के लिये चौथे आसमान में गये या सातवें आसमान में।

यदि मुहम्मद गोरी, तैमूर लंग, बाबर, नादिर शाह आदि को बहिश्त मिल सकती है और हिमालय में कई-कई दिन की अखण्ड समाधि लगाने वालों को क्षर मण्डल में भटकना पड़ता है तो यह न्यायोचित नहीं कहा जा सकता।

अक्षर की पंचवासनायें (कबीर, शुकदेव, सनकादिक, शिव और विष्णु भगवान) भी तो भारतीय संस्कृति में अवतरित हुई। कबीर जी अब से मात्र ५०० वर्ष पहले हुए हैं जिन्होंने बेहद मण्डल में सत्स्वरुप तक अपनी पहुँच बनायी। मुहम्मद स.अ.व. के परदे में होने के बाद मुस्लिम समाज शरीयत और तरीकत से आगे बढ़ ही नहीं सका। ऐसी अवस्था में बेहद का साक्षात्कार कर पाना तो असम्भव ही लगता है।

श्री प्राणनाथ (आखिरी मुहम्मद, इमाम महदी) का अवतरण भी एक हिन्दू तन में हुआ है। इससे बड़ा हिन्दू समाज का सौभाग्य और क्या होगा? इस सम्बन्ध में तारतम वाणी के ये कथन देखने योग्य हैं-

सब पैगंमर जहूद खिलके, विचार देखो दीदे दिल के।
ओ तो आए हिंदूओं दरम्यान, जिनको तुम कहते कुफरान।।
तुम ढूंढ़ो अपने खिलके माहें, तामें तो साहेब आया नाहें।
जिनको तुम केहेते काफर जात, सो सबकी करसी सिफात।।
रब्ब ना रखे किसी का गुमान, ओ तो गरीबों पर मेहेरबान।
परदा लिख्या हजरत के रुए पर, तिनकी क्या तुमको नहीं खबर।।
परदा लिख्या वास्ते आवने हिंदुओं माहें, ए पढ़े इसारत समझत नांहें।
जो देखत हैं जेर जबर, सो हकीकत पावें क्यों कर।।
ऐसी हिंदुओं की कही सिफत, आखिर हिंदुओं में मुलक नबुवत।
और आप हजरत रिसालत पनाह, जहूद फकीरों में पातसाह।।
ब्रह्माण्ड को भान्यो खिलाफ, सब जहान को कियो मिलाप।
ग्वाही खुदा की खुदा देवे, करे बयान हुकम सिर लेवे।।

ब. क.१/२०-२४,३३

और लिख्या सिपारे पांच में, सो नीके कर देखो तुमें।
कृपा भई हिन्दुओं पर घनी, जित आखर को आए धनी।। ब. क.७/७

सनद की उपरोक्त चौपाई का सार यह है कि मुहम्मद की बशरी सूरत ने मुसलमानों को यह निर्देश दिया कि यदि तुम अल्लाह तआला की पाक दिल से बन्दगी करोगे तो न्याय के दिन तुम्हें अपने बूरे कर्मो का प्रायश्चित (दोजक की अग्नि में जलना) करने के पश्चात् बहिश्तों का अखण्ड सुख मिलेगा। चाहे बाबर, हुमायूं, सिकन्दर, लोदी, अकबर और नादिर शाह ने भले ही पांच बार प्रतिदिन नमाज पढ़ी हो, उन्हें भी अपने बूरे कर्मो के परिणाम स्वरुप दोजक की अग्नि में जलना ही पड़ेगा। इसके पश्चात् ही उन्हें बहिश्त का सुख मिलेगा।

अब मुहम्मद की हक्की सूरत श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में हिन्दू तन में आयी है। उनके लिये हिन्दू, मुस्लिम, क्रिश्चियन सभी बराबर हैं और वे सारे ब्रह्माण्ड को अखण्ड मुक्ति देंगे किन्तु विशिष्ट बात यह है कि ब्रह्मात्मायें प्रायः हिन्दू तनों में ही आयी है, इसलिये इस समय भारतवर्ष और हिन्दू धर्म धन्य-धन्य है।

बैकुंठ मिने नारायन जी, जिन मुख स्वांसा वेद।
ए खावंद है खेल का, सो भी कहूं नेक भेद।।२६।।

बैकुण्ठ में नारायण जी रहते हैं, जिनके मुख से चारों वेदों का ज्ञान उतनी ही सरलता से प्रकट हुआ, जितनी सरलता से कोई सांस लेता है। ये इस खेल के स्वामी हैं। इस विषय में मैं थोड़ा सा बताता हूँ।

भावार्थ-आदि नारायण का प्रकटन प्रकृति के सूक्ष्मतम् रूप महाकारण में होता है, जबकि चौदह लोकों का यह ब्रह्माण्ड स्थूल प्रकृति में है। यद्यपि बैकुण्ठ लोक एक सूक्ष्म लोक है, फिर भी इसे स्थूल प्रकृति के अन्दर माना गया है। इस बैकुण्ठ जैसे असंख्यों बैकुण्ठ लोक मोह सागर में विलीन हो जाते हैं। इस सम्बन्ध में बेहद वाणी के ये कथन विशेष रूप से देखने योग्य है-

फेर पूछे सिव विस्नु को, कहे ब्रह्मांड और ।
और ब्रह्मांड की वारता, क्यों पाइए इन ठौर ।। बे. वा. चौ. ७

तारतम वाणी में बैकुण्ठनाथ का अर्थ कहीं विष्णु भगवान है तो कहीं अक्षर ब्रह्म।

१. अब ए विचार तुम देखो साथ, ना वली जुबां बैकुंठनाथ ।। प्र. हि. ३०/६१

२. ना तो वैकुण्ठनाथ को कैसी खबर, विना तारतम क्या जाने मूलघर।। प्र.हि. ३०/६२

३. बैकुण्ठनाथें सुनें वचन, हंस होए आए ततछिन ।। प्र. हि. ४३/६

किन्तु प्रकटवाणी की चौपाई ३ में कथित 'नित्य वैकुण्ठ मिने अछर' का तात्पर्य अक्षर धाम में विराजमान अक्षर ब्रह्म से है। इसी प्रकार, या समें श्री बैकुण्ठनाथ, इच्छा दरसन करने साथ' में बैकुण्ठनाथ का अर्थ अक्षर ब्रह्म होगा।

अक्षर ब्रह्म के मन का स्वरूप जब अव्याकृत (सुमंगला-पुरूष) मोह सागर में प्रतिबिम्बित होता है तो वह आदि नारायण कहलाता है। इसी आदि नारायण से समस्त सृष्टि के सभी चौदह लोकों में चारों वेदों का प्रकटन होता है। इस आधार पर मोह सागर में स्थित आदि नारायण के स्थान को भी 'बैकुण्ठ' कहा जाना चाहिए। श्रीमद्भागवत् के दशम स्कन्ध में इसी धाम का तथा इसके मूल सुमंगला-पुरूष का वर्णन है, जिसे बीतक साहेब में ८४ लाख योजन हीरे का महल कहकर दर्शाया गया है।

लछमी नारायन जुदे ना अंग, सो तो भेले विष्नु के संग।। प्र. हि. ३४/१४ से यह स्पष्ट है कि चौदह लोकों वाले विष्णु भगवान मोह सागर में स्थित आदि नारायण के ही अंगरूप हैं। फिर भी वेदों का कर्ता अदि नारायण को ही माना जायेगा, क्योंकि वे ही अव्याकृत के सांकल्पिक प्रतिबिम्ब (स्वाप्निक, स्वरूप) हैं। 'हिरदे आद नारायन के, वेद जिनको स्वांस।' बेहद वाणी चौ. २३ से यह प्रमाणित होता है। विशेष तथ्य यह है कि अक्षर ब्रह्म के मन स्वरूप अव्याकृत में ही वेदों का अखण्ड स्वरूप है, जो शाश्वत है।

नारायन कहावें निगम, कहें मोहे खबर नहीं खुद।
नबी हक रसूल कहावहीं, कहे मैं ल्याया कागद।।३०।।

आदि नारायण ने वेदों का ज्ञान प्रकट किया है किन्तु वे स्वयं कहते हैं कि मुझे परब्रह्म के स्वरूप का बोध नहीं है। मुहम्मद स.अ.व. परब्रह्म के सन्देश वाहक कहलाते हैं। वे कहते हैं कि मैं परब्रह्म का भेजा हुआ कुर्आन लेकर आया हूँ।

भावार्थ- इस सृष्टि का अस्तित्व ही आदि नारायण के स्वप्न पर टिका हुआ है। आदि नारायण को जिस क्षण अपने मूल स्वरूप (अव्याकृत, सुमंगला-पुरूष) का बोध होगा, उसी क्षण महाप्रलय हो जायेगा।

'दो भुजा सरूप जो स्याम, आतम अछर जोस धनी धाम' प्रकट वाणी तथा

'तहां रास लीला खेल के, आए बरारब स्याम।
त्रिसठ बरस तहाँ रहे, वायदा किया इस ठाम।। बी. सा.

से यह स्पष्ट है कि मुहम्मद स. अ. व. में अक्षर ब्रह्म की ही आत्मा थी। उसी

अक्षर ब्रह्म के मन के स्वाप्निक स्वरूप आदि नारायण है, जिनके स्वप्न में इस सृष्टि का अस्तित्व हैं। अतः अक्षर ब्रह्म और आदि नारायण को हिन्दू-मुस्लिम की संकुचित दृश्टि से नहीं देखना चाहिए। हिन्दुओं को यह आत्म मन्थन करना चाहिए कि जब उनका मूल धर्म ग्रन्थ वेद है तो वेद में उपास्य के रूप में मात्र अक्षर और अक्षरातीत का ही वर्णन हैं, आदि नारायण का नहीं। ऐसी स्थिति में उन्हें अपनी पौराणिक मान्यताओं का त्याग कर वेद-पथ पर चलने का प्रयास करना चाहिये।

ए नबिऐं जाहेर कह्या, मैं हक पे आया रसूल।
दीन मुस्लिम जो होएसी, सो लेसी सब्द घर मूल।।३१।।

मुहम्मद स. अ. व. ने स्पष्ट रूप से कहा है कि मैं परब्रह्म का भेजा हुआ सन्देश वाहक हूँ। जो लोग धर्म पर अटूट विश्वास रखने वाले होंगे वे अखण्ड धाम के सम्बन्ध में कहे हुए मेरे कथनों को ग्रहण करेंगे।

मेरा घर नूर के पार है, और हवा से ख्वाबी दम।
याको मेरी खातिर, भिस्त देसी खसम।।३२।।

मेरा घर बेहद से परे परमधाम है और संसार के जीव निराकार से उत्पन्न हुए हैं। इनके बीच में मेरे आने के कारण प्रियतम परब्रह्म इन्हें अखण्ड मुक्ति का सुख देंगे।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में नूर का तात्पर्य बेहद मण्डल होगा, अक्षर धाम या अक्षर ब्रह्म नहीं क्योंकि मुहम्मद साहब के अन्दर अक्षर ब्रह्म की आत्मा थी। सत्स्वरूप से आगे परमधाम है, जिसमें अक्षर ब्रह्म का रंगमहल अक्षर धाम कहलाता है। आगे अक्षरातीत का रंगमहल है।

कलाम अल्ला ल्याया रसूल, इन मुस्लिम में आकीन।
हुकम सिर चढ़ाइया, जो सबसे बड़ा दीन।।३३।।

मुहम्मद स. अ. व. परमधाम से परब्रह्म के वचन रूप कुर्आन को लेकर संसार में आये। जिन मुसलमानों ने उस पर अटूट विश्वास करके उसके निर्देशों का पालन किया, वही सबसे बड़ा धर्म पालन कहा गया।

रसूलें खुद को देख के, हुकम लिया दृढ़ाए।
जिन खुद को ना देखिया, तिन सिर करम चढ़ाए।।३४।।

पैगम्बर साहब ने अपनी आत्मिक दृष्टि से परमधाम जाकर परब्रह्म का दर्शन किया और उनके आदेश को दृढ़तापूर्वक स्वीकार किया। संसार के जिन लोगों ने परब्रह्म का साक्षात्कार नहीं किया, उन्होंने कर्मफल को सर्वोपरि मान लिया।

हिंदू और मुस्लिम के, बीच पड़्यो है भरम।
रसूल कहे सब हुकमें, और निगमें दृढ़ाए करम।।३५।।

परब्रह्म के सम्बन्ध में हिन्दुओं तथा मुसलमानों में बहुत अधिक भ्रान्ति है। मुहम्मद साहब कहते हैं कि सब कुछ परब्रह्म के ही हुक्म से होता हैं किन्तु वैदिक व्याख्यान ग्रन्थों का कथन है कि कर्म के अनुसार ही सब कुछ होता है।

रसूल हक हुकम बिना, और न काढ़े बोल।
करम दृढ़ाए निगमें दिए, हिंदुओं सिर डमडोल।।३६।।

मुहम्मद साहब परब्रह्म के 'हुक्म' के अतिरिक्त अन्य कोई बात नहीं कहते अर्थात् उनका अभिप्राय यह है कि परब्रह्म के आदेश से ही सब कुछ होता है। वैदिक ज्ञान ने कर्म फल पर सबको दृढ़ता दिलायी है, इस लिये उनके विचारों में स्थिरता नहीं रहती है।

भावार्थ- सच्चिदानन्द परब्रह्म अनन्त ज्ञान, प्रेम, सौन्दर्य और शक्ति आदि गुणों के अनन्तानन्त सागर है। वे पूर्णतया निर्विकार हैं और पूर्णकाम हैं। वे अपने गुणों के विपरीत कोई भी हुक्म या लीला नहीं कर सकते। जीव अज्ञानता के कारण विकारों तथा वासनाओं से जूझता रहता है तथा शुभ-अशुभ कार्य करता रहता है जिसका शुभ-अशुभ फल उसे अवश्य ही भोगना पड़ता है। क्या अधिक मात्रा में चीनी खाने से मुसलमानों को शुगर का रोग नहीं होगा? क्या वे 'इंशाल्लाह' कहकर डकैती डालेंगे तो कोई उन्हें पकड़ नहीं पायेगा?

परब्रह्म के हुक्म की ओट में किसी को भी बूरे कार्य करने का अधिकार नहीं है। यदि वह करता है, तो उसका परिणाम उसे अवश्य ही भोगना पड़ेगा। मुसलमानों ने मुहम्मद स.अ.व. के 'हुक्म' सम्बन्धी कथन का उल्टा अर्थ निकाला और उसका दुरूपयोग किया। उन्होंने बूरे कार्यों के करने के सम्बन्ध में भी 'इंशाल्लाह' अर्थात् 'यदि अल्लाह तआला ने चाहा तो' कहने की परम्परा डाल ली।

यदि कोई कट्टरपन्थी आतंकवादी यह कहता है कि इन्शाअल्लाह हम हिन्दुस्तान को नेस्तनाबूद कर देंगे और सभी काफिरों को मार कर 'दारूल इस्लाम' बनायेंगे तो क्या अल्लाह तआला उनकी इस विनाशक प्रार्थना को स्वीकार लेंगे? क्या अल्लाह तआला केवल मुसलमानों के ही हैं, हिन्दुओं के नहीं? क्या एक क्रूर आतंकी की इच्छा मात्र से हिन्दुस्तान को मिटाने के लिये अल्लाह तआला का हुक्म हो सकता है? यदि हो सकता है तो वह कुर्आन की किस आयत में लिखा है?

वैदिक साहित्य में कर्म और समर्पण में अद्भूत सामञ्जस्य है। आहुति देते समय

'स्वाहा' के कथन का अभिप्राय ही है कि मैं परमात्मा के प्रति पूर्णरूप से समर्पित हूँ। ऋ. ७/३१/५ में कहा गया है कि 'त्वे अपि क्रतुः मम्' अर्थात् हे परब्रह्म! मेरे सभी कार्य केवल आपके प्रति समर्पित हैं। आपकी आज्ञा पूर्ण हो।

यदङ्ग दाशुशे त्वमग्ने भद्रं करिश्यसि।
तवेत्तत् सत्यमङ्गिरः।। ऋ९ १/१/६

मेरे प्रियतम्! मेरे जीवन सार! मेरे हृदय में ज्ञान का प्रकाश करने वाले परब्रह्म! आपका यह अटल नियम है कि आप आत्म-समर्पण करने वाले का सर्वदा ही कल्याण करते हैं।

इन्द्रें कामं जरितारों वसुयवों रथे न पादमा दधुः। ऋ. ७/३२/२ सा.उ. ८/२/६/२ भीष्म फल की इच्छा करने वाले उपासक अपनी कामनाओं को परमात्मा के प्रति वैसे ही समर्पित कर देते हैं, जैसे रथ में पैर रखकर बैठा जाता है। परब्रह्म के आदेश (हुक्म) को सर्वोपरि मानना ही वैदिक साहित्य में ईश्वर प्रणिधान (सर्वस्व समर्पण) है, जिसके बिना परब्रह्म के साक्षात्कार की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इसी के केन्द्र में सम्पूर्ण गीता है-

सर्व कर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मद्व्यपाश्रयः।
मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम्।।
तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात्परां शान्ति स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम् ।। गीता १८/५६,६२

गीता के उपरोक्त श्लोकों में सभी कार्यो को अनासक्त भाव से करते हुए अनन्य भाव से परमात्मा के शरणागत होने की बात कही गयी है। इस प्रकार के गीता में अनेकों कथन हैं।

हुए जो ग्यानी अगुए, जिन लिए माएने वेद।
सो ग्यान हिंदुओं आड़ा पड़या, हुआ बड़ा छल भेद।।३७।।

वेदों का अर्थ करने वाले हिन्दुओं में जो महान विद्वान हुये हैं, उन्होंने कर्म फल के सिद्धान्त को माना। समर्पण की अपेक्षा अपने कर्म रूप पुरूषार्थ को श्रेष्ठ मानने वाले हिन्दुओं के लिये उनका ज्ञान उनके और परब्रह्म के बीच बाधक बन गया। वेदों के यथार्थ कथन को न समझने के कारण उनके साथ बहुत बड़ा छल हो गया।

तिन अगुओं बांधी दुनियां, किया जोर जब्द।
वैर लगाया या विध, कोई सुने न काहू को सब्द।।३८।।

उन वैदिक विद्वानों ने सारे संसार को अपने बौद्धिक ज्ञान के बन्धन में बांधा तथा अपनी युक्तियों एवं तर्कों से अपनी विचारधारा को थोपने का प्रयास किया जिससे विवाद की स्थिति बनी। इसका परिणाम यह हुआ कि सबमें वैचारिक मतभेद होने से वैर भाव पैदा हो गया। अब तो ऐसी स्थिति है कि कोई भी किसी की बात सुनने के लिये तैयार ही नहीं है।

भावार्थ- सत्य का स्वरुप सर्वदा एक ही रहता है। यदि सृष्टि के प्रारम्भ में वेद के रुप में ईश्वरीय ज्ञान अवतरित हुआ तो उसमें न तो भ्रान्तियां होनी चाहिए और न कतेब की अपेक्षा अपूर्णता। तारतम वाणी में स्पष्ट कहा गया है कि -'सत वाणी छे वेद तणी,जो कोई जुए विचारों'। कि. 'कोई दोष मा देजो रे वेद ने, ए तो बोले छे सत' कि.। जो कुछ कह्या कतेब ने, सोई कहया वेद'। खु.।

ऐसी स्थिति में यह कैसे कह सकते हैं कि वेद पक्ष में बहुत सी त्रुटियाँ हैं। यह अवश्य है कि वेद के वास्तविक आशय को जानने के लिये समाधिस्थ प्रज्ञा चाहिए। सामान्य बुद्धि से वास्तविक वेदार्थ नहीं हो सकता। मात्र कुछ आधुनिक मीमांसावादियों के द्वारा कर्म को महिमा मण्डित किये जाने का अर्थ यह नहीं है कि वैदिक साहित्य में केवल पुरूषार्थ का ही विवरण है, परब्रह्म पर न्योछावर (समर्पित) होने का निर्देश नहीं है। परब्रह्म की आज्ञा को मानने की अपेक्षा अपने अन्तः करण को उनके ऊपर पूर्णतया समर्पित करके प्रेम में अपने अस्तित्व को समाप्त कर देना अधिक श्रेष्ठ है। ऋग्वेद ८/४४/२३ का यह मंत्र यह सत्य दर्शा रहा है-

यदग्ने स्याम अहं त्वं त्वं वा घा स्यामहम् ।
सत्याः स्युः ते इहाशिषः ।।

हे परब्रह्म! तेरी कृपा सत्य हो ! जो मैं हूँ, वह तूं हो जाय और जो तूं है, वह मैं हो जाऊँ ।

उपरोक्त कथन अध्यात्म जगत की सर्वोच्च विज्ञानमय (मारिफत) अवस्था का है। औरगंजेब के युग में वेद का पठन-पाठन लुप्तप्राय था। विगत दस शताब्दियों में विदेशी, तुर्क, मुगल और अफगान आक्रान्ताओं ने भारतीय शिक्षा केन्द्रों को नष्ट कर दिया था।

फलतः सम्पूर्ण हिन्दू समाज अन्धकार में भटक रहा था। ऐसी स्थिति में उस समय की धार्मिक क्षेत्र की बूराईयों को वेद-सम्मत नहीं माना जा सकता।

तो सत सब्द के माएने, ले न सक्या कोए।
डूबे हिंदू स्यानपें, सो गए प्यारी उमर खोए।।३६।।

इस प्रकार मध्य काल में हिन्दुओं में जो ज्ञानी लोग हुए वे समाधिजन्य ऋतम्भरा प्रज्ञा (बुद्धि) से रहित होने के कारण वेद में वर्णित शब्दों के वास्तविक आशय को न जान सके। उन्होंने अपनी बौद्धिक चतुराई से वेदार्थ को समझने का प्रयास किया, जिसमें वे असफल रहे और अपनी प्यारी उम्र को निरर्थक ही गंवा बैठे।

भावार्थ- महाभारत काल के भयंकर नरसंहार के पश्चात् ऋषियों का युग समाप्त सा हो गया। लोगों में आलस्य एवं प्रमाद की अधिकता के कारण वास्तविक वेदार्थ को ग्रहण करने की क्षमता न रही परिणाम स्वरुप उन्होने वेद मंत्रों के विकृत अर्थ किये और समाज को अज्ञानता के अन्धकार में भटका दिया।

जिन सुध ख्वाब न पार की, सो क्यों समझे ए बात।
और सबों को अटकल, रसूलें देखी हक जात।।४०।।

जिन विद्वानों को न तो इस स्वप्नमयी संसार की पहचान थी और न इसके परे अखण्ड धाम की, भला वे इन बातों को क्या समझ सकते थे?विद्वान तो अनुमान से ही कुछ कहते हैं, जबकि मुहम्मद स.अ.व. कहते है कि मैने परमधाम जाकर अपनी आत्मिक दृष्टि से परबह्म की अंगरुपा ब्रह्मात्माओं को प्रत्यक्षतः देखा है।

तारी अरवाहें सबन की, चौद तबक की सृष्ट।
अवतार तीर्थंकर हो गए, किन तारे ना गछ इष्ट।।४१।।

श्री प्राणनाथ ने अपने कुल्जुम स्वरूप के ज्ञान से चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड के सभी जीवों को अखण्ड मुक्ति दी है। यद्यपि, आज तक हिन्दुओं में २४ अवतार और जैनियों में २४ तीर्थंकर हो चुके हैं किन्तु किसी ने भी अपने शिष्यों तथा पूज्य पुरूषों को भी बेहद मण्डल की अखण्ड मुक्ति नहीं दी।

भावार्थ- रसूल साहब को मुहम्मद की बशरी सूरत कहा जाता है। उपरोक्त चौपाई में श्री प्राणनाथ जी का प्रसंग है क्योंकि वे मुहम्मद की हक्की सूरत है। यदि कुर्आन के शरीयत के ज्ञान से सारे संसार को मुक्ति मिल सकती थी तो आखरूल जमां इमाम मुहम्मद

महदी तथा इल्में लदुन्नी (कुल्जुम) के अवतरण की आवश्यकता ही नहीं थी। खुलासा में स्पष्ट रूप से कहा गया है- 'धनी आए वेद कतेब छुड़ावने'।

कोई ऐसा न हुआ इन जहान में, जो तारे अपनी आतम।
यों सब सास्त्र बोलहीं, कहे पुकार निगम।।४२।।

अक्षर ब्रह्म की पंचवासनाओं के अतिरिक्त आज तक इस संसार में ऐसा कोई भी नहीं हुआ है जिसने अपनी आत्मा को इस भवसागर से पार निकाला हो। सभी शास्त्रों तथा वेदों का उच्च घोश के साथ यह कथन है।

सो वैराट चौदे तबकों, थावर और जंगम।
सब तारे सचराचर, प्रकास रसूल नूर हुकम।।४३।।

चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में चर-अचर जितने भी प्राणी हैं, सभी को श्री प्राणनाथ जी ने तारतम ज्ञान के प्रकाश में परब्रह्म के आदेश से बेहद मण्डल की अखण्ड मुक्ति प्रदान की।

खेल रसूल हुकमें हुआ, बीच ल्याए रसूल फुरमान।
आखिर भी रसूल आए के, भिस्त दई सब जहान।।४४।।

माया का यह ब्रह्माण्ड परब्रह्म के सत अंग अक्षर ब्रह्म के आदेश से हुआ है। इसमें मुहम्मद साहब कुर्आन का ज्ञान लेकर अवतरित हुए। अन्ततोगत्वा श्री प्राणनाथ जी ने इस जागनी ब्रह्माण्ड में आकर संसार के सभी जीवों को अखण्ड मुक्ति प्रदान की।

भावार्थ- 'हुकम नूरजमाल का, जो है नूरजलाल' बीतक के इस कथन से यह सिद्ध होता है कि अक्षर ब्रह्म श्री राजजी के आदेश (हुक्म) स्वरूप हैं, जिनके द्वारा इस मायावी ब्रह्माण्ड की रचना हुई। इस चौपाई के तीसरे चरण में कथित 'रसूल' शब्द का तात्पर्य श्री प्राणनाथ जी से है। इस प्रकार इस चौपाई में यमक अलंकार का सौन्दर्य दिखायी देता है।

भिस्त चौदे तबक, देसी दुनियां दीन।
देसी ब्रह्मा रूद्र नारायन को, आखिर दे आकीन।।४५।।

श्री प्राणनाथ जी अन्ततोगत्वा ब्रह्मा, विणु तथा शिवजी सहित चौदह लोकों के सभी प्राणियों को एक अक्षरातीत के धाम, स्वरूप तथा लीला के सम्बन्ध में विश्वास दिलायेंगे तथा सभी को अखण्ड मुक्ति प्रदान करेंगे।

ए अव्वल का हुकम, आखिर होसी जाहेर।
करसी साफ सबन को, अंतर मांहें बाहेर।।४६।।

संसार को एक परब्रह्म की पहचान देने का जो आदेश मुहम्मद स.अ.व. के द्वारा सबसे पहले आया, वह आखिर में श्री प्राणनाथ जी के द्वारा उजागर होगा। श्री प्राणनाथ जी के तारतम ज्ञान के प्रकाश में संसार के सभी प्राणी इस संसार (मांहे), निराकार (बाहर) तथा इनसे भिन्न बेहद एवं परमधाम के सम्बन्ध में संशय रहित होकर निर्मल हो जायेंगे और अखण्ड मुक्ति को प्राप्त करेंगे।

।।प्रकरण।।२५।।चौपाई।।८७०।।

सनंध–दोजख की

इस प्रकरण में दोजक की वास्तविकता को दर्शाया गया है। यद्यपि स्थूल अर्थ में ऐसा माना जाता हैं। दोजक (नरक) वह स्थान हैं, जहां पापियों को तरह-तरह की पीड़ा भोगनी पड़ती है। पुराणों में भी ऐसी ही मान्यता है। वैदिक सिद्धान्त के अनुसार सभी योनियां नरक के समान दुःखदायी हैं। इनमें जीव अपने बूरे कर्मों का दण्ड पाने के बाद परमात्मा की प्राप्ति के लिये मानव तन पाता है। तारतम वाणी के अनुसार-जब योगमाया के ब्रह्माण्ड में न्याय की लीला होगी, उस समय श्री मिहिरराज जी का जीव श्री राज जी (परब्रह्म) का स्वरूप धारण कर न्याय करेंगे। उस समय सारे ब्रह्माण्ड के जीवों को अक्षरातीत की पहचान हो जायेगी क्योंकि सभी को जागृत बुद्धि प्राप्त होगी। संसार के सभी जीव उस समय प्रायश्चित की अग्नि में जलेंगे कि परब्रह्म हमारी दुनिया में आये थे, किन्तु हमने उनकी पहचान नहीं की। इसे ही दोजक की अग्नि में जलना कहा गया है।

नेक कहूं दोजख की, ए जलसी ज्यों कुफरान।
ए जो सब्द रसूल के, अंदर दिल में आन।।१।।

अब मैं दोजक के सम्बन्ध में आपको थोड़ा सा बताता हूँ। परब्रह्म को न मानने वाले नास्तिक लोगों को दोजक की अग्नि में जलना पड़ेगा। हे साथ जी! इस सम्बन्ध में मुहम्मद स.अ.व. ने जो कुछ कहा है, उसे अपने हृदय में धारण कीजिए।

कुफर चौदे तबक का, इन सब्दों होसी नास।
पर कहा कहूं तिन अगुओं, जिन किए घात विस्वास।।२।।

तारतम ज्ञान (इल्मे लदुन्नी) के प्रकाश में चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड की अज्ञानता का नाश हो सकता है किन्तु धर्म के उन अग्रगण्य लोगों के विषय में मैं क्या कहूँ जो जन सामान्य के साथ विश्वासघात करते हैं और उन्हें धर्म तथा परब्रह्म के वास्तविक स्वरूप का बोध नहीं होने देते।

कुफर सारा काढ़सी, एक पलक में धोए।
खारे जल पछाड़सी, याको धूप जो देसी दोए।।३।।

जिस दिन योगमाया के ब्रह्माण्ड में न्याय की लीला होगी, उस दिन सभी प्राणियों को जागृत बुद्धि का प्रकाश मिलेगा, जिससे एक पल में ही सबकी अज्ञानता नष्ट हो जायेगीं। सभी के हृदय रूपी वस्त्र को तारतम ज्ञान के जल से धोकर निर्मल कर दिया जायेगा तथा प्रेम एवं समर्पण रूपी धूप में सुखाकर ब्रह्मानन्द पाने के योग्य बना दिया जायेगा।

याही दोजख अगनी जलें, और जले दुनी के दम।
आप जलें अपनी मिने, कहें हाए हाए भूले हम।।४।।

उस समय संसार के जीव प्रायाश्चित की अग्नि में जल रहे होंगे। वे अपने अपराधों के प्रायश्चित स्वरूप दुःख की इस अग्नि में जल रहे होंगे कि हाय! हाय! हम संसार में परब्रह्म को क्यों भूले रहे?

खुदा न देवे दुख किन को, पर मारत है तकसीर।
पटक पटक सिर पीटहीं, रोसी राने राए फकीर।।५।।

दया के सागर परब्रह्म किसी को भी दुःख नहीं देते किन्तु सभी लोग अपने बुरे कर्मों से ही दुःखी होते हैं। उस समय चाहे कोई राणा हो, राजा हो या फकीर (महात्मा) ही क्यों न हो, सभी अपने अपराधों को याद कर फूट-फूट कर रोयेंगे, बार-बार धरती पर अपना सिर पटकेंगे और अपनी छाती पीटेंगे।

खुद काजी कजाए का, रसूलें किया अति सोर।
सो सोर याद जो आवहीं, हाए हाए झालें बढ़े त्यों जोर।।६।।

मुहम्मद साहब ने कुर्आन में इस बात को बार-बार पुकार करके कहा कि स्वयं परब्रह्म ही न्यायाधीश बनकर सबका न्याय करेंगे। उनकी वह बात जितनी ही अधिक संसार के जीवों को याद आयेगी। हाय! हाय! उन के प्रायश्चित की अग्नि की लपटें और तेज होती

जायेंगी अर्थात् वे और अधिक दुःखी होगें कि हमने संसार में परब्रह्म श्री प्राणनाथ जी को क्यों नहीं पहचाना?

जलसी खुद देखे पीछे, ऐसा बड़ा खसम।
कलमा रसूल का सुन के, हाए हाए पकड़े नहीं कदम।।७।।

अपने सामने न्यायाधीश के रूप में परब्रह्म को विराजमान देखकर वे प्रायश्चित की अग्नि में जलेंगे कि इतने महान परब्रह्म से हमने मुख क्यों मोड़ा था?हाय! हाय! हमने श्री प्राणनाथ जी की वाणी को सुनकर उनके चरण क्यों नहीं पकड़ लिये?

भावार्थ- इस प्रकरण में अधिकतर चौपाईयों में आलंकारिक भाषा में कुर्आन तथा मुहम्मद स.अ.व का वर्णन है किन्तु आशय श्री कुल्जम स्वरूप (तारतम वाणी) तथा श्री प्राणनाथ जी (आखरूल इमाम मुहम्मदी महदी) से है।

ज्यों ज्यों दुलहा देखहीं, त्यों त्यों उपजे दुख।
ऐसे मौले मेहेबूबसों, हाए हाए हुए नहीं सनमुख।।८।।

उन्हें जितनी ही अधिक श्री प्राणनाथ जी की पहचान होगी वे उतने ही अधिक दुःखी होंगे कि ऐसे प्रियतम परब्रह्म हमारे नश्वर जगत में आये थे किन्तु हाय! हाय! यह हमारा दुर्भाग्य है कि हम उनका दर्शन भी न कर सके।

खुद की सुध दई रसूलें, पर आया नहीं आकीन।
अंग मरोर जिमी परे, हाए हाए जिन रसूल को न चीन।।९।।

श्री जी ने तारतम ज्ञान से अपनी पहचान दी किन्तु संसार के जिन लोगों को उनके कथनों पर विश्वास नही हुआ और उन्होंने श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में आये हुए अक्षरतीत की पहचान नहीं की। हाय! हाय! वे न्याय के दिन दुःख से अपने अंगों को मरोड़कर धरती पर गिर जायेंगे।

एता मासूक पुकारिया, पर तो भी न छूटा फंद।
दंत बीच जुबां काटहीं, हाए हाए हुए बड़े अंध।।१०।।

श्री प्राणनाथ जी (इमाम महदी) ने कुल्जम स्वरूप के द्वारा पुकार-पुकार कर अपनी पहचान दी किन्तु कर्मकाण्ड (शरीयत) और अज्ञानता के बन्धनों में बंधे हुए लोगों ने उसे अनसुना कर दिया। ऐसे लोग न्याय के दिन यह कहते हुए अपने दांतों से अपनी जिह्वा काटेंगे कि हाय! हाय! हम तो अपनी मूर्खता के कारण अन्धे हो गये थे जो अपने मध्य आये हुए प्रियतम अक्षरातीत की पहचान नहीं कर सके।

भावार्थ- यद्यपि 'माशूक' शब्द मुहम्मद साहब के लिये प्रयुक्त होता है किन्तु सूक्ष्म

अर्थ में यहां माशूक से तात्पर्य श्री जी से हैं। अक्षरातीत को आशिक और माशूक दोनों शब्दों से सम्बोधित किया जाता है।

जाए जाए समसेर लेवहीं, अब कीजे आप घात।
दिल दे कबहूं ना सुनी, हाय हाए पैगंमर की बात।।११।।

संसार के लोग दौड़कर इस भावना से तलवार उठायेंगे कि अब स्वयं ही अपने हाथों से अपनी आत्महत्या कर लें। हाय! हाय! यह कितने दुःख की बात है कि हमने श्री प्राणनाथ जी की वाणी में वर्णित परमधाम सम्बन्धी बातों को सच्चे हृदय से कभी भी क्यों नहीं आत्मसात किया?

भावार्थ- इस प्रकरण में आये हुए रसूल, पैगम्बर, नबी आदि सभी शब्द मुहम्मद स.अ.व. के लिये है किन्तु इनका सूक्ष्म अभिप्राय श्री प्राणनाथ जी (इमाम महदी) के लिये है। आज लगभग सम्पूर्ण इस्लामिक जगत कुर्आन को पढ़ता है, मुहम्मद साहब पर अपार श्रद्धा भी रखता हैं, कियामत को भी मानता है किन्तु उसे कियामत के समय आने वाले इमाम महदी स्वरूप श्री जी की ही पहचान नहीं है। वह कुल्जम स्वरूप के कथनों को भी नकारता है। ऐसी स्थिति में उनके साथ संसार के अन्य सभी लोगों के लिये यह सम्बोधन है।

ले ले छुरी पेट डारहीं, आकीन न आया अंग।
कही बात नबिऐं खुद की, हाए हाए लग्या न तासों रंग।।१२।।

वे लोग भावनात्मक रूप से छुरी (कटार) लेकर प्रायश्चित स्वरूप अपना पेट फाड़ने की इच्छा करेंगे कि हाय! हाय! स्वयं परब्रह्म स्वरूप श्री जी (इमाम महदी) ने अपनी पहचान दी किन्तु हमारे हृदय में उनके लिये विश्वास ही नहीं हुआ और उनसे हम प्रेम भी नहीं कर सके।

भावार्थ- योगमाया में प्रायश्चित करने के लिये न तो तलवार होगी और न कटारी। इस प्रकार के भाव जब मानसिक रूप से उत्पन्न होते हैं तो मनोजगत में तलवार या छूरी की उपस्थिति दर्शायी जाती है।

बात न सुनी रसूल की, तिन सीखां लगियां कान।
इस्क हक का छोड़ के, हाए हाए डूबे जाए ग्यान।।१३।।

जिन्होंने श्री प्राणनाथ जी के तारतम ज्ञान को सुनने से ही अस्वीकार कर दिया, उन्हें ऐसा अनुभव होगा कि जैसे किसी ने उनके कानों में लोहे की तप्त लाल सलाखें डाल दी हों। उन्हें इस बात का बहुत अधिक पश्चाताप रहेगा कि हाय! हाय! हम परब्रह्म से प्रेम करना छोड़कर केवल शुष्क शब्द ज्ञान में ही क्यों उलझे रहे?

बातां सुनियां दूर से, पर लई न जाए के सुध।
सो गुन अंग इंद्री जलो, हाए हाए जलो सो बुध।।१४।।

जो लोग दूर खड़े होकर अर्थात् उपेक्षापूर्वक श्री कुल्जुम स्वरूप की बातें तो सुनते रहे, किन्तु पास आकर (श्रद्धा पूर्वक) वास्तविकता को ग्रहण नही किये, उनके शरीर के तीनों गुणों, अन्तःकरण तथा इन्द्रियों को धिक्कार है। उन्हें तो जलकर समाप्त हो जाना चाहिए। हाय! हाय! उन्हें इस प्रकार के कुत्सित (बूरें कार्य) के लिये प्रेरित करने वाली बुद्धि भी प्रायश्चित की अग्नि में जल कर नष्ट हो जाय।

आकीन जिन आया नहीं, सुनके महंमद बैन।
और विचार सबे जलो, हाए हाए जलो सो चातुरी चैन।।१५।।

जिन लोगों को श्री जी साहब जी के कुल्जुम स्वरूप के अमृतमय वचनों को सुनकर भी विश्वास नहीं हुआ, उनके सभी नकारात्मक विचारों को जल कर समाप्त हो जाना चाहिए। हाय! हाय! मायावी सुखों में भटकाये रखने वाली उनकी चातुर्यता भरी बुद्धि भी जल कर भस्म हो जाय!

विशेश- 'जल जाना' एक मुहाविरा है। इसका प्रयोग धिक्कारने के सम्बन्ध में किया जाता है।

धिक धिक ग्याता ग्यान को, जिन उलटी फिराई मत।
सो अगुए जलो आग में, हाए हाए करी बड़ी हरकत।।१६।।

उन शुष्क हृदय वाले कर्मकाण्डी ज्ञानियों को भी धिक्कार है, जिन्होंने सबकी बुद्धि को उल्टा करके श्री प्राणनाथ जी से विमुख कर दिया। धर्म के ऐसे अग्रगण्य लोगों को तो प्रायश्चित (दोजक) की आग में जलना ही होगा। हाय! हाय! इन्होंने तो भयंकर अपराध किया है।

बिना आकीने इस्क, कबहूं न उपज्या किन।
स्यानों ग्यान विचारिया, हाए हाए करी खराबी तिन।।१७।।

आज तक संसार में बिना दृढ़ विश्वास के कहीं भी किसी में प्रेम उत्पन्न नहीं हुआ है। बुद्धिमान लोग केवल ज्ञान के ही चिन्तन में लगे रहे, जिसका परिणाम यह हुआ कि वे लक्ष्य से भटक गये। हाय! हाय! इस भूल ने बहुत बड़ा अनर्थ कर डाला।

भावार्थ- ज्ञान के द्वारा विश्वास दृढ़ होता है, तभी प्रेम उत्पन्न होता है। अकेला ज्ञान वैसे ही एकांगी और निष्फल होता है जैसे पक्षी का एक पंख या तराजू का एक पलड़ा अथवा मनुष्य का एक पैर। ज्ञान का प्राण प्रेम है तथा प्रेम का प्राण ज्ञान है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। प्रेम से दूर रहकर केवल शाब्दिक ज्ञान में उलझे रहने से हृदय शुष्क और विकार ग्रस्त हो जाता है। ऐसा हृदय आध्यात्मिक क्षेत्र में कभी भी प्रियतम परब्रह्म के

साक्षात्कार का आनन्द नहीं ले सकता।

मैलाई ना छूटी मन की, ऊपर भए उज्जल।
ना आया आकीन रसूल पर, हाए हाए छेतरे छल।।१८।।

शुष्क हृदय वाले ऐसे वाचक ज्ञानी ऊपर से तो उज्ज्वल दिखायी देते हैं। अपने मुख से भक्ति, वैराग्य, साधना, निर्विकारिता आदि विषयों पर धारा प्रवाह प्रवचन देते हैं, किन्तु स्वयं इनके मन के विकार इन से दूर नहीं हुए होते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि इनमें श्री प्राणनाथ जी पर आस्था नहीं होती। हाय! हाय! छलभरी माया इन्हें शाब्दिक ज्ञान से ठग लेती है।

हराम न छूट्या दिल से, छल दृष्ट हुई बाहेर।
राह भूले मुस्लिम की, हाए हाए बुरी हुई जाहेर।।१९।।

ऐसे विद्वानों के हृदय से पाप नहीं जाता। इनकी बहिर्मुखी दृष्टि में केवल माया ही भरी होती है। इस प्रकार ये सत्य के मार्ग को छोड़ देते हैं। हाय! हाय! उनके साथ प्रत्यक्ष रूप में यह बहुत पीड़ादायक बात होती है।

भावार्थ- यदि कोई अज्ञानी व्यक्ति बुराईयों में फंस जाता है तो वह क्षम्य भी है किन्तु यदि धार्मिक क्षेत्र का विद्वान व्यक्ति अपने आचरण से पतित होता है, परब्रह्म पर अटूट विश्वास नहीं रखता तो यह बहुत बड़ा अनर्थ होता है। भक्ति से रहित ज्ञान जीवन के लक्ष्य को प्राप्त नहीं करा सकता।

ख्वाब के सुख कारने, किया आपसों छल।
सब्द ना सुने रसूल के, हाए हाए खांए गोते बिना जल।।२०।।

माया का सुख पाने की चाहत में ऐसे ही वाचक ज्ञानियों ने प्रेम-भक्ति से रहित होकर स्वयं अपने साथ छल किया और अहंकार से ग्रसित होकर इन्होंने श्री प्राणनाथ जी के तारतम के वचनों को नहीं सुना (अंगीकार नहीं किया)। हाय! हाय! ऐसे लोग बिना जल के भवसागर में डूबतें रहते हैं।

भावार्थ- दिल्ली में काजी सहित औरंगजेब के अधिकारी तथा हरिद्वार के कुम्भ में एकत्रित हिन्दू समाज के अधिकतर आचार्य इसी श्रेणी में आते हैं।

सब्द जो अगुओं सुन के, भूले मुस्लिम की राह।
इन दीन कलमें आखिर, आवसी इत खुदाए।।२१।।

इन वाचक ज्ञानियों के बहकाने वाले वचनों को सुनकर अधिकतर लोग सत्य की राह से भटक गये। यद्यपि कुर्आन के वचनों में यह स्पष्ट लिखा था कि कियामत के समय स्वयं परब्रह्म आकर सबका न्याय करेंगे।

भावार्थ- ग्यारहवीं सदी में कियामत के आने और इमाम महदी के प्रकट होने का वर्णन कुर्आन में इस प्रकार है- पा. ३० सू. ८६ आ. १-४'' हल् अताक हदीसुल्-गाशियति'' (१) ''तस्ला नारत् हामियतन्'' (४) शुरू अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला बेहद मेहरबान है। भला तुझको उस छिपा रखनेवाली कियामत की कुछ बाते पहुँची। अन्यत्र भी कहा गया है-

प. १७ सू. २२ आ. ४७

प. २२ सू. ३४ आ. २८-३०

प. २८ सू. ५६ आ. १-८

प. ३० सू. ६५ आ. १-५

कुरान जिनों न विचारिया, जलो सो तिनकी मत।
जो न जागी रसूल हुकमें, हाए हाए आग परो गफलत।।२२।।

जिन्होंने मुहम्मद स.अ.व. के आदेशानुसार कुर्आन के सूक्ष्म अर्थ का चिन्तन नहीं किया और इमाम महदी की पहचान करके उनकी छत्रछाया में स्वयं को जागृत नहीं किया, उनकी बुद्धि को धिक्कार है। हाय! हाय! उनकी लापरवाही भस्मी भूत हो जाय।

भावार्थ- जिन्होंने श्री कुल्जम स्वरूप की वाणी का चिन्तन कर यथार्थ सत्य को ग्रहण नहीं किया, उनकी बुद्धि को धिक्कार है। जिसने श्री प्राणनाथ जी की छत्रछाया में रहकर अपनी आत्मा को जागृत नहीं किया, हाय! हाय! उसकी लापरवाही भस्मी भूत हो जाय।

द्रष्टव्य- उपरोक्त चौपाई में कुर्आन का आशय श्री प्राणनाथ जी के तारतम ज्ञान से है।

बैठे उठे न पर सके, सके न रोए विकल।
आखिर जाहेर हुए पीछे, आग हुए जल बल।।२३।।

योगमाया के ब्रह्माण्ड में न्याय के दिन परब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथ जी को जब समस्त ब्रह्माण्ड के जीव पहचान लेंगें तो वे इस संसार में उन्हें न पहचान पाने के दुःख की अग्नि में जलेंगे। उस समय अत्यधिक दुःख के कारण वे न तो बैठ सकेंगे, न लेट सकेंगे और न रोकर अपनी व्याकुलता को ही मिटा सकेंगे।

जिमी सकल जहान जो, हिंदू या मुसल्मीन।
हाथ काट पेट कूटहीं, हाए हाए जिन रसूल को न चीन।।२४।।

हाय! हाय! इस सम्पूर्ण संसार में जिन्होंने श्री प्राणनाथ जी की पहचान नहीं की, चाहे वे हिन्दू हों या मुसलमान न्याय के दिन की लीला में पश्चाताप की अग्नि में वे अपने

हाथों को काट डालेंगे तथा पेट को अपने घूसों (मुक्कों) से कूटेंगे।

भावार्थ- हाथ काटना एक मुहाविरा है, जिसका अर्थ होता है- दुःख से शक्तिहीन हो जाना। इसी प्रकार 'पेट कूटना' भी एक मुहाविरा ही है। जब मनुष्य पागलपन की अवस्था में होता है तो अपने पेट पर मुक्के मारने (कूटने) लगता है। अत्यधिक दुःख की स्थिति में यह अवस्था हो जाती है।

सुध सीधी रसूलें दई, पर समझे नहीं चंडाल।
तिन अंग आग जो धखहीं, हाए हाए झंपे न क्यों ए झाल।।२५।।

मुहम्मद साहब ने संसार के लोगों को कियामत के समय इमाम महदी (श्री प्राणनाथ जी) की पहचान करके उनके बताये हुए परमधाम के सरल मार्ग पर चलने का निर्देश दिया था, किन्तु मूर्ख लोग उनके कथनों को समझ ही नहीं पाये। अब न्याय के दिन उनके हृदय में श्री जी के स्वरूप की पहचान न कर पाने की प्रायश्चित की अग्नि जल रही होगी। हाय! हाय! उस अग्नि की लपटें इतनी अधिक भयंकर होगी कि बुझाने पर भी किसी प्रकार से नहीं बुझेगी अर्थात वह दुःख किसी भी प्रकार से हल्का नहीं हो सकेगा।

खसम के आगे अब, क्यों उठावें सिर।
सब अंग आग जो हो रही, हाए हाए झालें उठें फेर फेर।।२६।।

ऐसे जीव अपने सामने विराजमान प्रियतम प्राणनाथ जी के सामने अपना सिर कैसे उठा पायेंगें? हाय! हाय! उस समय उनके प्रत्येक अंग से प्रायश्चित की अग्नि जल रही होगी, जिसकी लपटें बार-बार उपर उठती हुई दिखायी दे रहीं होंगी।

भावार्थ- आलंकारिक भाषा में प्रायश्चित रूपी अग्नि में जलने का प्रसंग है। यहां नश्वर जगत की पंचभौतिक अग्नि नहीं समझना चाहिए।

देह काफर जले जो आग में, सो तो अचरज कछुए नाहें।
पर जो जले जान बूझ के, हाए हाए तिन आग लगी दिल माहें।।२७।।

यदि नास्तिक या अज्ञानी लोगों को प्रायश्चित की अग्नि में जलना पड़े तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है किन्तु सबसे अधिक आश्चर्य की बात तो यह है कि उस अग्नि में जलने वाले ऐसे भी लोग होंगे जो धर्मग्रन्थों के विद्वान थे। उनके कानों में तारतम ज्ञान की मधुर ध्वनि भी सुनाई पड़ी किन्तु उन्होंने अहंकार वश जान बूझकर उसे अनुसुना कर दिया। हाय! हाय! ऐसे दुर्भाग्य वालों के हृदय में प्रायश्चित की अग्नि जल रहीं होगी कि हमने जान बूझकर कितना बड़ा अनर्थ कर दिया था।

कुरान को पढ़ पढ़ गए, पर पाई न हकीकत किन।
तो मासूक प्यारा न लग्या, हाए हाए जिमी हुई अगिन।।२८।।

कुर्आन को बार-बार पढ़ने वाले करोड़ों लोग हो चुके हैं किन्तु उनमें से किसी को भी हकीकत (ज्ञान) का मार्ग नहीं मिला। शरीयत (कर्मकाण्ड) में ही उलझे रहने से वे प्रियतम परब्रह्म की न तो कियामत के समय पहचान कर सके और न उनसे प्रेम कर सके। हाय! हाय! उनके लिये न्याय के दिन सारी धरती अग्नि के समान धधकती हुई कष्टदायी लगेगी।

कई महंमद के कहावहीं, पर पूरे न लगे दिल दे।
तो मुसाफ न पाया मगज, हाए हाए जान बूझ जले ए।।२९।।

बहुत से लोग स्वयं को मुहम्मद स.अ.व. का अनुयायी तो कहते हैं किन्तु अपना सम्पूर्ण हृदय उनको समर्पित नहीं करते। इसके फलस्वरूप वे कुर्आन की गुझ बातें जैसे कियामत एवं आखरूल इमाम मुहम्मद महदी (श्री प्राणनाथ जी) की पहचान से दूर रहते हैं। हाय! हाय! ऐसे लोग जान बुझकर प्रायश्चित की अग्नि में जलने के लिये विवश होगें।

विशेष- तारतम ज्ञान पाकर मात्र थोड़े समय के लिये भी मूल मिलावे में विराजमान परब्रह्म की शोभा का ध्यान करने वाला तथा श्री प्राणनाथ जी के प्रति श्रद्धा रखने वाला प्रायश्चित की अग्नि में नहीं जलेगा। भले ही किसी को कुल्जम स्वरूप का गुह्य ज्ञान नहीं है, फिर भी यदि वह किसी ब्रह्ममुनि की सानिध्यता में है तथा श्रद्धा पूर्वक सेवा-पूजा, मेहेर सागर एवं मूल मिलावे का केवल पाठ भी करता है तो भी वह प्रायश्चित की अग्नि से बच जायेगा, क्योंकि तारतम ज्ञान सामान्य सुन्दरसाथ को भी परब्रह्म की पहचान दिला देता है।

बांग आवाज कानों सुनी, कुफर कहिए क्यों ताए ।
सो रूह आखिर कजा में, औरों भी लेसी बचाए ।।सनंध २१/४७
जाको मेंहर करे मोमिन, ताए सुपने नहीं होए दोजक से यह सिद्ध हैं।

कलाम अल्ला आया हाथ में, पर मारफत न पाई किन।
सो भी आग छोड़े नहीं, हाए हाए तांबा जिमी हुई तिन।।३०।।

यद्यपि संसार को कुर्आन के रूप में ब्राह्मी ज्ञान मिल चुका था, किन्तु इल्मे लदुन्नी न पाने से किसी को भी मारिफत का ज्ञान नहीं प्राप्त हो सका। सभी लोग शरीयत में ही उलझे रहे तथा कुल्जुम स्वरूप के ज्ञान से वंचित रह गये। हाय! हाय! इन लोगों के लिये न्याय के दिन सम्पूर्ण धरती तांबे के समान तपती हुई प्रतीत होगी अर्थात् इन्हें ऐसा अनुभव होगा कि

इस अक्षम्य अपराध का बोझ लेकर हम कहाँ जायें?इस प्रकार प्रायश्चित की अग्नि में उन्हें भी जलना ही पड़ेगा?

जान बूझ के जो भूले, चले न फुरमाए पर।
सो लटके सूली आग की, हाए हाए जो हुए बेडर।।३१।।

जो धर्मग्रन्थों के निर्देशानुसार कियातम के समय प्रकट होने वाले श्री प्राणनाथ जी को जान बूझकर भूले रहेंगे (पीठ दिये रहेंगे) और न्याय के दिन होने वाली लीला का भी डर नहीं रखेंगे। उन्हें प्रायश्चित की अग्नि रूपी सूली पर लटकाया जायेगा।

भावार्थ- जानबूझकर श्री जी से पीठ देने वालों को प्रायश्चित का ऐसा कष्ट होगा, जैसा सूली पर लटकाने से होता है।

दुस्मन बैठा दिल पर, सो तो जलाया चाहे।
सो जाहेर फरेब देत है, हाए हाए कोई न चीन्हे ताए।।३२।।

संसार के जीवों के हृदय में अज्ञान (शैतान) का निवास होता है जिसके वशीभूत होकर जीव अपराध करता है और प्रायश्चित की अग्नि में जलने के लिये विवश होता है। वह प्रत्यक्ष रूप में सबको पाप के मार्ग पर ले जाता है किन्तु हाय! हाय! आश्चर्य है कि कोई भी उसकी पहचान नहीं कर पा रहा है।

पीछे पछतावा क्या करे, जब लगी दोजख आए।
इसी वास्ते पुकारे रसूल, मेहेर दिल में ल्याए।।३३।।

न्याय के दिन जब प्रायश्चित की अग्नि में जलना पड़ेगा तो उस समय पछताने से क्या लाभ होगा? यही कारण है कि स्वयं कृपा के सागर परब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथ जी सभी को श्री कुल्जुम स्वरूप के निर्देशों पर चलने के लिये कह रहे हैं।

यों आखिर आए सबन को, प्रगट भई पेहेचान।
तब कहें ए सुध सुनी हती, पर आया नहीं ईमान।।३४।।

इस प्रकार, अन्त में न्याय के दिन योगमाया के ब्रह्माण्ड में जब सबको जागृत बुद्धि मिलेगी तो सभी को श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की पहचान हो जायेगी। उस समय ये सभी जीव एक स्वर से कहेंगे कि हमने श्री जी का दिया हुआ तारतम ज्ञान सुना तो था किन्तु हमें विश्वास ही नहीं हुआ था।

सत असत इन खेल में, रहे थे दोऊ मिल।
सो दोऊ जाहेर किए, सांचा दीन झूठा छल।।३५।।

तारतम ज्ञान के अवतरण से पहले लोगों को यह नहीं मालूम था कि धर्म का सत्य स्वरूप क्या है तथा धर्म के नाम पर प्रचलित मिथ्या प्रपञ्चमयी व्यवहार क्या है?दोनों एक ही प्रतीत होते थे। अब श्री प्राणनाथ जी ने प्रकट होकर ब्रह्मज्ञान के प्रकाश में इन दोनों को अलग-अलग करके दर्शा दिया है।

।।प्रकरण।।२६।।चौपाई।६०५।।

सनंध–अगुओं ग्यानी की

इस प्रकरण में यह दर्शाया गया है कि किस प्रकार धार्मिक क्षेत्र एवं समाज के मार्गदर्शक होने का उत्तरदायित्व वहन करने वाले तथा-कथित विद्वान लोगों ने अपने स्वार्थ एवं अहंकार के कारण मानव समाज के एक बहुत बड़े वर्ग को श्री प्राणनाथ जी की पहचान नहीं होने दी। इसके परिणाम स्वरूप जब बेहद मण्डल में न्याय की लीला होगी, उस समय ये भटके हुए जीव इन पथ प्रदर्शकों को दोषी बनायेंगे और ये मार्गदर्शक विद्वान भी अपनी भूल मान कर लज्जित होंगे तथा पश्चाताप की अग्नि में जलेंगे।

अब नींद उड़ी सबन की, आई जो हिरदे बुध।
समझे सब कुरान को, भई रसूल की सुध।।१।।

अब जागृति बुद्धि के तारतम ज्ञान (इल्म ए लदुन्नी) का प्रकाश प्राप्त हो जाने से सबके हृदय से अज्ञानता की नींद समाप्त हो गयी है। सभी लोग कुर्आन की वास्तविकता को समझने लगे हैं तथा उन्हें मुहम्मद स.अ.व. के भी स्वरुप की पहचान हो गयी है।

भावार्थ-उपरोक्त चौपाई का कथन अतिश्योक्ति (किसी तथ्य को विस्तृत रुप में दर्शाना) अलंकार की भाषा में है। आगे की दोनों चौपाईयों में भी यही भाव है-

अब नबी प्यारा लग्या, लगे प्यारे सब्द रसूल।
इमाम हुए जाहेर, कदमों सब सनकूल।।२।।

अब सभी को मुहम्मद स.अ.व. अतिशय प्यारे लगने लगे हैं तथा कुर्आन में उनके कहे हुए शब्द भी प्रिय लगने लगे हैं। अब आखरुल इमाम मुहम्मद महदी श्री प्राणनाथ जी के प्रकट हो जाने के पश्चात् उनकी छत्रछाया में सभी अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं।

अब रसूल की सुध परी, और सुध परी फुरमान।
ए सबे सुध तब परी, जब आए बैठे सुलतान।।३।।

अब सभी को मुहम्मद साहब तथा कुर्आन की वास्तविक पहचान हो गयी है किन्तु

यह तभी सम्भव हो सका है, जब स्वयं परब्रह्म श्री प्राणनाथ जी (इमाम महदी) के स्वरुप में संसार में प्रकट हुए।

बलिहारी महंमद की, बलिहारी मुसाफ।
बलि बलि जाऊं काजी की, जिन आए किया इंसाफ।।४।।

श्री महामति जी कहते हैं कि मैं मुहम्मद स.अ.व. तथा कुर्आन पर न्योछावर हूँ। सबके न्यायाधीश के रुप में प्रकट होने वाले श्री प्राणनाथ जी पर मैं बार-बार बलिहारी होता हूँ जिन्होंने आकर सच्चा न्याय किया है।

ताथें इन बीच अगुओं, जिन करी बड़ी हरकत।
ए जुलम किन विध कहूं, जिन या विध फेरी मत।।५।।

मुहम्मद स.अ.व. से लेकर श्री प्राणनाथ जी के बीच के लगभग १०६० वर्षों में धर्म के अग्रगण्य कहे जाने वाले लोगों ने निन्दनीय व्यवहार किया। इन्होंने धार्मिक समाज की बुद्धि को जिस प्रकार उल्टी दिशा में मोड़ कर भयंकर अपराध किया, उसका वर्णन मैं कैसे करुँ?

भावार्थ-कुर्आन की आयतों के उल्टे अर्थ करके मौलवियों एवं मुल्लाओं ने जहां गैर मुस्लिमों (हिन्दू, बौद्ध, क्रिश्चियन तथा यहूदी) पर भयानक अत्याचार किया और रक्त की नदियां बहायी वहीं पौराणिक पण्डितों ने शूद्रों तथा स्त्रियों को शिक्षा से वंचित कर उन्हें घृणा का पात्र बना दिया। इसके अतिरिक्त मूर्ति पूजा को बढ़ावा देकर समाज को अशिक्षा, छूतछात एवं आलस्य-प्रमाद के मुंह में ढकेल दिया। बौद्धों में भी ध्यान साधना के स्थान पर जड़ पूजा एवं तान्त्रिक क्रियाओं की प्रवृत्ति बढ़ी। पादरियों ने भी ईसा-मसीह के मूल सिद्धान्तों के विपरीत मान्यताओं का प्रचार किया।

पढ़ों पढ़ाई दुनियां, अगुओं उलटी गत।
ए होसी सब जरदरू, अबहीं इन आखिरत।।६।।

धर्मग्रन्थों के अग्रगण्य विद्वानों ने संसार को उल्टी दिशा में शिक्षा दी। जिस दिन बेहद मण्डल में न्याय की लीला होगी, उस दिन संसार को भटकाने वाले ये अग्रगण्य अपने अपराध बोध से अत्यधिक लज्जित होंगे।

भावार्थ- इस संसार में श्री जी (इमाम महदी) ने ज्ञान दृष्टि से न्याय किया है, किन्तु स्वप्न की बुद्धि होने के कारण कुछ ही लोग उसे स्वीकार करेंगे। कुछ लोग सुनते हुए भी अनसुना कर देंगे तथा कुछ लोग अंहकार वश सुनेंगे ही नहीं। बेहद में होने वाले न्याय के

दिन सबके पास जागृत बुद्धि होने से सभी को अपनी भूल का अनुभव होगा और वे प्रायश्चित रुपी अग्नि में जल कर निर्मल होंगे।

जब काफर देखे अगुओं, तब जाने काले नाग।
करी दुनी को जरदरूं, इनहूं लगाई आग।।७।।

न्याय के दिन सद्बुद्धि आ जाने से काफिरों(नास्तिकों) में भी विवेक आ जायेगा। जब वे अपने बीच धर्म के अग्रगण्य लोगों को देखेंगे तो उन्हें ऐसा लगेगा, जैसे ये धार्मिक पथ प्रदर्शक नहीं, अपितु काले नाग हैं। इन्होंने ही सारे संसार में घृणा, अज्ञानता और अलगाव की आग लगायी थी। इन्हीं के बहकावे में आने के कारण आज हमें लज्जित होना पड़ रहा है।

दुनियां अगुओं देखहीं, तब जाने जैसे जेहेर।
यों दुनियां बीच अगुओं, बड़ा जो पड़सी वैर।।८।।

जब संसार के लोग अपने सामने अपने पथ प्रदर्शकों को देखेंगे तो उन्हें ऐसा प्रतीत होगा कि ये लोग विष के मूर्तिमान स्वरुप हैं। इस प्रकार संसार के लोगों में धार्मिक पथ प्रदर्शकों के प्रति बैर भाव पैदा हो जायेगा।

भावार्थ-उपरोक्त चौपाई में इस नश्वर जगत का प्रसंग नहीं हैं। इस संसार में तारतम ज्ञान का प्रकाश पाने पर किसी किसी व्यक्ति में ही सत्य-असत्य को समझने का विवेक पैदा होगा। शेष सारा संसार चींटी हार ऊँट कतार की तरह पथ- प्रदर्शकों के ही निर्देश पर चलता रहेगा। न्याय के दिन जब संसार के लोगों में विवेक-शक्ति जागृत होगी तो उन्हें भटकाने वालों के प्रति इसलिये मानसिक रुप से वैर पैदा होगा कि यदि हम इनके कहने पर नहीं चलते तो संसार में अति सरलता से परब्रह्म के चरणों की शीतल छाया का आनन्द ले लेते।

ज्यों घायल सांप को चींटियां, लगियां बिना हिसाब।
त्यों अगुओं को दुनियां, मिल कर देसी ताब।।९।।

जिस प्रकार घायल सांप को बहुत सी चीटीयां काटती रहती है, उसी प्रकार भटकाने वाले धार्मिक नेताओं को संसार के सभी जीव घृणा की दृष्टि से देखेंगे कि इन्होंने ही हमें भटकाकर सच्चिदानन्द परब्रह्म से दूर किये रखा।

आग दुनी को एक है, अगुओं को आग दोए।
एक आग दुनी की, दूजे अपने दुख को रोए।।१०।।

संसार के जीवों को तो मात्र यही दुःख रहेगा कि उन्होंने भटकाव के कारण संसार में परब्रह्म के आने का लाभ नहीं लिया, जिस के कारण आज उन्हें सबके सामने लज्जित होना पड़ रहा है। किन्तु, धार्मिक नेताओं को दो प्रकार से दुःख की अग्नि में जलना पड़ेगा। एक तो संसार के जीवों की आंखों की घृणा झेलनी होगी, दूसरे स्वयं भटक कर पश्चाताप की अग्नि में जलने की पीड़ा भी उन्हें सहनी पड़ेगी।

भावार्थ- यद्यपि, संसार के सभी धर्म नेता बूरे नहीं होते और नहीं उनका यह उद्देश्य होता है कि वे जानबूझकर सबको भटकायें, किन्तु पद, वैभव, प्रतिष्ठा की चाहत तथा अहंकार के कारण उनके विवेक चक्षुओं पर आवरण आ जाता है और वे सत्य को न तो जानना चाहते हैं और न दूसरों को जानने देना चाहते हैं। यह भी होता है कि वे अपने अहंकार के कारण जानते हुए भी अन्जान बने रहते हैं।

और आग सब सोहेली, पर ए आग सही न जाए।
अब देखोगे आपहीं, रेहेसी सब तलफाए।।११।।

अन्य कष्टों की अग्नि को तो सहा जा सकता है किन्तु न्याय के दिन संसार के अपराधी जीवों को पश्चाताप की जैसी अग्नि में जलना पड़ेगा, उसे सहन करना बहुत कठिन है (असह्य है)। हे साथ जी! अब आप स्वयं देखेगें कि उस समय किस प्रकार सभी तड़प रहे होंगे।

भावार्थ- न्याय के दिन ब्रह्मात्माओं की सुरतायें तो अपनी परात्म में जागृत हो जायेंगी किन्तु उनके जीव ब्रह्मात्माओं का स्वरूप धारण कर सत्स्वरूप की पहली बहिश्त में विद्यमान होंगे और यह दृश्य देखेंगे। यह सम्बोधन उन्हीं के लिये हैं। ईश्वरीय सृष्टि भी दूसरी बहिश्त से यह लीला देखेंगी।

आग सबों को विरह को, देकर करसी साफ।
जिन जैसी तैसी तिनों, आखिर ए इंसाफ।।१२।।

उस समय सभी जीवों को प्रियतम परब्रह्म के विरह में तड़पाकर निर्मल किया जायेगा। कालमाया के ब्रह्माण्ड में जिसकी जैसी भावना रही होगी, उसको उसके अनुसार बहिश्त (मुक्ति स्थान) की प्राप्ति होगी। यही परब्रह्म का इस ब्रह्माण्ड के जीवों के लिये अन्तिम समय का न्याय है।

भावार्थ- इस चौपाई के तीसरे चरण का आशय यह है कि इस संसार में जो लोग परब्रह्म को निराकार मानकर उपासना करते होंगे वे अव्याकृत के सूक्ष्म में निराकार की

सातवीं बहिश्त प्राप्त करेंगे। जो ब्रज लीला के स्वरूप से प्रेम करते होगें उन्हें सबलिक के कारण में व्रज की पाचवीं बहिश्त मिलेंगी। मुहम्मद साहब पर अटूट निष्ठा रख कर सूफी मान्यता के अनुसार जिन्होंने बन्दगी की होगी उन्हें सबलिक में तीसरी बहिश्त प्राप्त होगी। शेष संसार के अन्य जीवों को अव्याकृत के स्थूल में ८वीं बहिश्त की मुक्ति प्राप्त होगी।

विकार सारे अंग के, काम क्रोध दिमाक।
सो बिना विरहा ना जलें, होए नहीं दिल पाक।।१३।।

जीव के हृदय में ही काम, क्रोध और अहंकार आदि सभी विकार उत्पन्न होते हैं। परब्रह्म के विरह में तड़पे बिना ये विकार कभी नष्ट नहीं होते और न हृदय पवित्र होता है।

आखिर भी इस्क बिना, हुआ न काहूं सुख।
सो इस्क क्यों छोड़िए, जो रसूलें कह्या आप मुख।।१४।।

अन्ततोगत्वा न्याय के दिन भी बिना परब्रह्म के प्रेम के किसी को कोई सुख मिलने वाला नहीं है। हे साथ जी! जिस अनन्य प्रेम (इश्क) के विषय में मुहम्मद साहब ने इतना अधिक कहा है, उसे आप किसी भी स्थिति में न छोडें।

अव्वल जो रसूलें कह्या, आखिर सोई प्रवान।
इस्क सांचा हक का, और आग सब जान।।१५।।

प्रारम्भ में जिस प्रकार मुहम्मद साहब ने प्रेम की महिमा गायी है, वैसी ही बात जागनी की लीला में श्री प्राणनाथ जी ने कही है। हे साथ जी! एक मात्र प्रियतम परब्रह्म के ही प्रेम को सत्य जानिए। उनके अतिरिक्त इस संसार के समस्त वैभव, पद, प्रतिष्ठा सभी दहकती हुई अग्नि के समान कष्टकारी हैं।

जब खसम काजी हुआ, तब नाहीं दुखिया कोए।
महंमद मेहेर करावहीं, सब पाक हुए दिल धोए।।१६।।

जब श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में स्वयं परब्रह्म ही सबके न्यायाधीश बनकर आये हैं तो भला संसार का कोई भी जीव कैसे दुःखी रह सकता है?श्री प्राणनाथ जी अपनी कृपा दृष्टि से सबके हृदय में विरह-प्रेम भरकर निर्मल बनायेंगे और उन्हें अखण्ड मुक्ति देंगे।

रसूल बड़ा सबन में, जिन हक की दई खबर।
कह्या मासूक का सब हुआ, आई कजा आखिर।।१७।।

मुहम्मद साहब की महिमा सभी पैगम्बरों में सर्वोपरि है क्योंकि उन्होंने अक्षरातीत परब्रह्म की पहचान दी है। मुहम्मद स.अ.व. ने कियामत तथा न्याय के सम्बन्ध में जो कुछ

कहा था, वह सब कुछ सत्य हुआ और वह समय आ गया है।

तारीफ रसूल की तो करूं, जो इन जिमी का होए।
या ठौर बात जो नूर पार की, कबहूं ना बोल्या कोए।।१८।।

मुहम्मद स.अ.व. यदि इस संसार के रहने वाले होते तो उनकी महिमा को शब्दों में वर्णित किया जा सकता था। उनकी प्रशस्ति (गरिमा) तो शब्दातीत है। आज तक इस संसार में किसी ने भी अक्षर से परे अक्षरातीत के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं कहा है, जो मुहम्मद साहब ने कहा है।

भावार्थ-मुहम्मद शब्द का अर्थ ही 'महिमा वान' होता है। अनन्त महिमा वाले तीन स्वरूपों को ही मुहम्मद की तीन सूरतें कहा जाता है, जो इस प्रकार है-१-मुहम्मद साहब २-सदगुरू धनी श्री देवचन्द्र जी ३- प्राणनाथ जी। यद्यपि माहेश्वर तन्त्र तथा पुराण संहिता में अक्षर-अक्षरातीत का वर्णन अवश्य है किन्तु वह वर्णन भगवान शिव द्वारा ईश्वर से समाधि में सुनकर पार्वती जी एवं व्यास जी को सुनाया गया है, प्रत्यक्ष देखकर नहीं। मुहम्मद साहब ने जो प्रत्यक्ष देखा है वही कुर्आन में वर्णित है।

या सुध पार के पार की, किन मुख ना निकसे दम।
बुजरकी महंमद की, करत जाहेर खसम।।१९।।

निराकार से परे बेहद मण्डल है, जिसके परे अक्षर और अक्षरातीत का धाम है, जिसके वर्णन की सामर्थ्य इस सृष्टि के किसी भी प्राणी में नहीं है। यह तो मुहम्मद स. अ. व. की अपार महिमा है जो उन्होंने प्रियतम अक्षरातीत की पहचान संसार को दी है।

महंमद दीन की पेहेचान, काहूं हुती न एते दिन।
न पेहेचान कुरान की, नातो देख थके कई जन।।२०।।

यद्यपि, कुर्आन का अध्ययन करते -करते थक जाने वाले करोड़ों लोग हो चुके हैं, किन्तु तारतम ज्ञान (इल्म ए लदुन्नी) न होने से आज दिन तक किसी को भी मुहम्मद स. अ. व. की, सच्चे इस्लाम की तथा कुर्आन की वास्तविक पहचान किसी को भी नहीं थी।

पेहेलें ए सस्ती हती, मुस्लिम दीन कुरान।
पीछे अति पछताएसी, पर क्या जाने कुफरान।।२१।।

अभी तक तारतम ज्ञान के न आने से काफिर लोग कुर्आन तथा इस्लाम धर्म की गरिमा को बहुत ही हल्के में लेते थे। अब तारतम ज्ञान के प्रकट होने से कुर्आन की हकीकत तथा मारिफत के रहस्य भी उजागर होने लगे हैं, जिससे अब उन लोगों को बहुत अधिक पश्चाताप करना पड़ेगा।

सो पेहेचान अब होएसी, करसी साफ दुनी दिल।
किताब याही रसूल की, सुख लेसी सब मिल।।२२।।

अब इस सनद ग्रन्थ के अवतरण से मुहम्मद स.अ.व. के लाये हुए कुर्आन के छिपे हुए रहस्य प्रकट हो जायेंगे, जिससे संसार के लोगों में एक दूसरे के प्रति (हिन्दू-मुस्लिम तथा क्रिश्चियन आदि में) जो संशय और घृणा की भावना थी, वह समाप्त हो जायेगी। इसके परिणाम स्वरुप सबके हृदय निर्मल हो जायेंगे और वे वास्तविक सत्य को जानकर आध्यात्मिकता का सच्चा आनन्द लेंगे।

सब्द रसूल के पसरसी, तिन फिरसी वैराट।
अकस सबों का भान के, सब चलसी एक बाट।।२३।।

श्री प्राणनाथ जी के द्वारा कहा हुआ श्री कुज्जुम स्वरूप ग्रन्थ जिसमें वेद के साथ-साथ कुर्आन के गुह्य रहस्यों का स्पष्टीकरण है, जब संसार में फैलेगा तो इसकी अवस्था ही कुछ और हो जायेगी। श्री जी के अलौकिक ब्रह्म ज्ञान से सब का विरोध समाप्त हो जायेगा और सभी एक परब्रह्म तथा परमधाम के प्रेम मार्ग पर चलने लगेंगे।

छोड़ गुमान सब मिलसी, ए जो देखत हो जहान।
जात पांत ना भांत कोई, एक खान पान एक गान।।२४।।

आपको घृणा से भरा हुआ यह जो संसार दिखायी दे रहा है, यदि इसमें तारतम ज्ञान सर्वत्र फैल जाता है तो सभी लोग अपना अहंकार छोड़कर आपस में प्रेम-पूर्वक रहने लगेंगे। उस समय जाति-पाति या वर्ग के नाम पर कोई भी भेद भाव नहीं होगा। सबका खान-पान एक समान (सात्विक) हो जायेगा तथा सभी एक ही अक्षरातीत परब्रह्म की महिमा का गायन करेंगे।

एही सब्द सुन जागसी, बड़ी बुध होसी विचार।
याही सदी आखिर की, हक सुख देसी पार।।२५।।

मेरे इन शब्दों को सुनकर संसार अपनी अज्ञानमयी निद्रा का परित्याग करेगा और जागृत होगा। सभी लोग जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान का विचार करेंगे। यह ग्याहरहवीं सदी है, जिसमें कियामत आनी है अर्थात् उस अलौकिक ज्ञान का अवतरण होना है, जिसको आत्मसात् करके संसार के जीव अखण्ड मुक्ति पायेंगे। ऐसे जीवों को परब्रह्म की कृपा से शाश्वत ब्रह्मानन्द प्राप्त होगा।

भावार्थ- वि.स. १७३५ में हिजरी सन्१०६० था अर्थात् ग्यारहवीं सदी चल रही थी। हरिद्वार से आने के पश्चात् श्री जी कुछ समय दिल्ली रहे। तत्पश्चात् अनूपशहर में

वि.स.१७३६ में सनद ग्रन्थ का अवतरण हुआ। १७४०-१७४८में श्री पन्ना धाम में खिल्वत, परिक्रमा, सागर और श्रृगांर ग्रन्थ का अवतरण हुआ। यह अलौकिक ज्ञान यदि संसार को प्राप्त हो जाय, तो उसके लिये अखण्ड मुक्ति का द्वार खुल जायेगा। उपरोक्त चौपाई में यही तथ्य दर्शाया गया है। कारैं सदी में कयामत, लिखी मंझ कुरान।। सनन्ध ३५/२८ का भी यही आशय है।

नूर सबों में पसरया, सो कहूं सब सनंध।
याही सब्दों बीच का, उड़ जासी बंध फंद।।२६।।

तारतम ज्ञान का प्रकाश सारे संसार में फैलेगा। इसकी वास्तविकता को अब मैं बता रहा हूँ। इस अलौकिक ज्ञान के उजाले से सभी मत-पन्थों में जो अज्ञान के बन्धन हैं, वे समाप्त हो जायेंगे।

।।प्रकरण।।२७।।चौपाई।।६३१।।

सनंध–बिना एक महंमद

परब्रह्म के आदेश से इस संसार में तीन स्वरूप आए। इन तीनों स्वरूपों को मुहम्मद की तीन सूरतें कहा गया। पहली सूरत बशरी सूरत है जिसे-मुहम्मद रसूलल्लाह सल्ल. कहा जाता है। दूसरी सूरत मलायकी है जिसे मुहम्मद गिरोह (सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी) कहा जाता है और तीसरी हकीकी हक्की है जिसे मुहम्मद नूर कहा जाता है। इन्हें क्रमशः मुहम्मद (अलिफ) अहमद (लाम) तथा महदी (मीम) भी कहते हैं। मुहम्मद शब्द का अर्थ ही अनन्त महिमा वाला होता है। इन तीनों स्वरूपों के समान महिमावान इस संसार में न तो कोई हुआ है और न होगा। इस प्रकरण में इन्हीं तीनों स्वरूपों (सूरतों) की महिमा को दर्शाया गया है-

इत आए करी जो रसूलें, सो नेक कहूं प्रकास।
तबक चौदे उजाला, किया तिमर सब नास।।१।।

इस संसार में श्री प्राणनाथ जी (मुहम्मद नूर) ने आकर तारतम ज्ञान के द्वारा चौदह लोकों में ब्रह्मज्ञान का ऐसा प्रकाश कर दिया है कि माया का सारा अन्धकार नष्ट हो गया है। इस विषय में मैं थोड़ा सा कथन करता हूँ।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई का कथन अतिश्योक्ति अलंकार की भाषा में है। यद्यपि रसूल शब्द से आशय बशरी सूरत से लिया जाता है किन्तु यहां सूक्ष्म अर्थ में श्री प्राणनाथ जी से अभिप्राय है। बशरी सूरत का ज्ञान दूज के चन्द्रमा के समान, मल्की सूरत का ज्ञान पूर्णमासी के चन्द्रमा के समान तथा हक्की सूरत का ज्ञान दोपहर के सूर्य के समान है। इस प्रकार यहां श्री जी का ही प्रसंग होगा।

प्रताप बड़ा महंमद का, जिन दिया सबों को सुख।
चौदे तबक की दुनी के, दूर किए सब दुख।।२।।

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को बेहद का सुख देने वाले श्री प्राणनाथ जी की महिमा अनन्त है। उन्होंने तारतम ज्ञान के द्वारा चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड के जीवों को अखण्ड मुक्ति प्रदान की है, जिससे उनके सभी दुःख समाप्त हो गये हैं।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई का कथन भावात्मक रूप में है। यह पूर्ण रूप से योगमाया के ब्रह्माण्ड में ही चरितार्थ होगा। वर्तमान समय में केवल वे ही सुखी हैं, जिन्होंने अपने हृदय में परब्रह्म को बसा लिया है।

इमाम मोमिन इस्क, सब मुख एही सब्द।
सब्द ना कोई दूसरा, बिना एक महंमद।।३।।

वर्तमान समय में तारतम ज्ञान के प्रकाश में सभी लोग एकमात्र श्री प्राणनाथ जी, ब्रह्मसृष्टि और परमधाम के प्रेम की ही चर्चा कर रहे हैं। उनके मुख से हमेशा श्री प्राणनाथ जी के अतिरिक्त और कोई शब्द निकलता ही नहीं है।

आलम सब अल्लाह की, तामें छोड़ी ना काहूं हद।
दौड़ के कोई न पोहोंचिया, बिना एक महंमद।।४।।

इस समस्त सृष्टि में परब्रह्म की खोज में सभी लोग बैकुण्ठ-निराकार तक ही रह गये। मुहम्मद की तीनों सूरतों के अतिरिक्त अन्य कोई भी ऐसा नहीं हुआ है जिसने प्रेम के मार्ग पर दौड़ लगाकर परब्रह्म का साक्षात्कार किया हो।

भावार्थ- इस चौपाई के चौथे चरण में कथित एक महंमद से तात्पर्य तीनों स्वरूपों से है। इसका अभिप्राय यह है कि अब तक मात्र मुहम्मद साहब, श्री देवचन्द्र जी तथा श्री महामति जी ने ही अक्षरातीत का साक्षात्कार किया है। परब्रह्म की अंगरूपा होने से ब्रह्मसृष्टियों को इनसे भिन्न नहीं समझना चाहिए। इन्होंने भी परब्रह्म का साक्षात्कार किया है।

कई जातें दौड़ी जहान में, पर आया न काहूं दरद।
तो किनहूं न पाइया, बिना एक महंमद।।५।।

संसार में भिन्न-भिन्न वर्गों के लोगों ने परब्रह्म का साक्षात्कार करने का प्रयास किया है, किन्तु कोई भी विरह की पीड़ा का अनुभव नहीं कर सका। इस प्रकार इन तीनों स्वरूपों के अतिरिक्त अन्य कोई भी अक्षरातीत परब्रह्म का साक्षात्कार नहीं कर सका।

पंथ पैंडे दीन मजहब, कर कर गए रब्द।
पर हुआ न कोई काम का, बिना एक महंमद।।६।।

इस संसार में अनेकों मत-पंथ तथा उनकी शाखा-प्रशाखायें हैं। इनके अनुयायी अपने ही सिद्धान्तों को सत्य ठहराने के लिये लड़ते रहे हैं, किन्तु इनमें से कोई भी ऐसा नहीं हुआ जो श्री प्राणनाथ जी की तरह परम् सत्य को सभी के समक्ष दर्शा पाया हो।

बड़े बड़े ग्यानी गुनी मुनी, पर पाया न काहूं हारद।
कथ कथ सब खाली गए, बिना एक महंमद।।७।।

इस नश्वर जगत में बड़े-बड़े ज्ञानी, गुणवान तथा मुनिजन हो चुके हैं, किन्तु मुहम्मद की तीनों सूरतों के अतिरिक्त अन्य किसी को भी परब्रह्म की प्राप्ति नहीं हुई। अन्य सभी लोंग केवल शब्द ज्ञान को ही कहते हुए संसार से खाली हाथ चले गये।

कई पोथी पढ़ पढ़ पढ़हीं, पर न सुध हद बेहद।
मेहेनत सीधी न हुई, बिना एक महंमद।।८।।

बहुत से लोग धर्मग्रन्थों को दिन-रात पढ़ते रहे, किन्तु उन्हें क्षर तथा योगमाया की भी पहचान नहीं हुई। अक्षरातीत को पाने में एकमात्र मुहम्मद की तीनों सूरतों के अतिरिक्त अन्य किसी का भी पुरूषार्थ निरर्थक ही रहा।

कई जुदी जुदी जिनसों खोजिया, सबों आप अपने मद।
तिनसे कछुए न सरया, बिना एक महंमद।।९।।

अपने अंहकार के वशीभूत होकर अनेकों ने तरह-तरह की साधना पद्धतियों के द्वारा उस परब्रह्म का साक्षात्कार करना चाहा, किन्तु इन तीनों स्वरूपों के अतिरिक्त अन्य किसी से कुछ भी प्राप्त नहीं हो सका।

कई पढ़े किताबें सहीफे, पर हुआ न काहूं मकसद।
बका तरफ किन पाई नहीं, बिना एक महंमद।।१०।।

अनेकों धार्मिक ग्रन्थों का गहन अध्ययन करने के पश्चात् भी परब्रह्म को पाने की इच्छा पूरी न हो सकी। एक मात्र मुहम्मद के तीनों स्वरूपों के अतिरिक्त अन्य किसी को भी परमधाम के विषय में कुछ भी पता न चल सका।

कई बंदे एक हादी के, जुदे पड़े कर जिद।
पर हक किने न पाइया, बिना एक महंमद।।११।।

प्रायः सभी मतों में एक ही धर्मगुरू के अनेकों शिष्य हुए, जो अपनी अलग-अलग मान्यताओं को बलपूर्वक मनवाने के प्रयास में लड़ कर अलग-अलग हो गये। किन्तु एकमात्र तीनों सूरतों के अतिरिक्त अन्य किसी को भी अक्षरातीत का साक्षात्कार नहीं हो सका।

कई पेहेलवान कहावें दुनी में, ढूंढ ढूंढ हुए सरद।
सुन्य सुरिया पार न ले सके, बिना एक महंमद।।१२।।

संसार में ज्ञान एवं ध्यान के क्षेत्र में बड़े-बड़े वीर (अग्रणी) पुरूष हो चुके हैं किन्तु परब्रह्म की खोज में वे थक कर हार गये। इन तीनों स्वरूपों के अतिरिक्त संसार का कोई भी व्यक्ति निराकार तथा आदि नारायण (ज्योति स्वरूप) से आगे नहीं जा सका।

विशेश- अक्षर ब्रह्म की पंचवासनायें पुरूष-प्रकृति (आदि नारायण तथा मोह सागर) को पार करके अखण्ड में पहुँची। पुरूष प्रकृति उलंघ के गये, जाए अखण्ड सुख मांहे रहे। प्र. हि.

कई नाम इमाम धर धर गए, बोल बोल गए बेरद।
ठौर कायम किने न पाइया, बिना एक महंमद।।१३।।

इस संसार में कईयों ने अपने आपको इमाम कहा और ऊँचे भाव वाले वचन भी बोले किन्तु उनका प्रयास निरर्थक ही रहा। मुहम्मद स.अ.व. के अतिरिक्त अन्य कोई भी नहीं हुआ जिसने अखण्ड परमधाम का साक्षात्कार किया हो।

बड़े बड़े सुभट सूरमें, पर हुआ न कोई मरद।
जो सुध ल्यावे नूर पार की, बिना एक महंमद।।१४।।

यद्यपि, ज्ञान और भक्ति के क्षेत्र में बहुत से वीर-महारथी हुए हैं किन्तु एकमात्र इन तीनों स्वरूपों के अतिरिक्त संसार में अन्य कोई भी ऐसा ब्रह्मज्ञानी नहीं हुआ है जिससे अक्षर से भी परे अक्षरातीत परब्रह्म की पहचान दी हो।

केतेक पर सिर बांध के, कर कर गए जब्द।
सो सारे बेसुध गए, बिना एक महंमद।।१५।।

संसार में ऐसे बहुत से लोग हुए जिन्होंने अपने शिर पर ज्ञान, भक्ति, समर्पण और साधना आदि के पंख लगा कर अपनी श्रेष्ठता का दावा किया किन्तु मुहम्मद की तीनों सूरतों के अतिरिक्त इनमें से ऐसा कोई भी नहीं हुआ जिसे सच्चिदानन्द परब्रह्म की यथार्थ पहचान हुई हो।

अंग मार जार उड़ावहीं, जो हते जोर जलद।
पर ए सुध काहू ना परी, बिना एक महंमद।।१६।।

बहुत से हठयोगी साधकों ने अपनी कष्ट साध्य साधनाओं से अपने शरीर को

जर्जर कर दिया किन्तु इन तीनों स्वरूपों ने जो अलौकिक ब्रह्मज्ञान दिया, उसकी सुधि भी उन्हें नहीं हो सकी।

कई रोते फिरे रात दिन, पर हुआ न दीदार खुद।
कौन सुख देवे तिनको, बिना एक महंमद।।१७।।

कई भक्तजन और सूफी फकीर प्रियतम परब्रह्म की याद में दिन-रात रोते रहे, किन्तु उन्हें अक्षरातीत का साक्षात्कार नहीं हो सका। मुहम्मद के तीनों स्वरूपों के अतिरिक्त भला संसार में और कौन है जो प्रियतम परब्रह्म से मिलन का सुख दिला सके।

कई लालै लाल कहावते, सो हो गए सब जरद।
और लाल कोई ना हुआ, बिना एक महंमद।।१८।।

कई महापुरूषों को संसार ने आध्यात्मिक क्षेत्र का सर्वश्रेष्ठ वीर घोषित किया किन्तु परब्रह्म का साक्षात्कार न होने से उनकी उपाधि झूठी हो गयी और वे पीले पड़ गये। इन तीनों सूरतों के अतिरिक्त आध्यात्मिक क्षेत्र में कोई परमवीर हुआ ही नहीं।

ए खेल खावंद जो त्रैगुन, कहें हम ही हैं परमपद।
और खावंद कोई ना हुआ, बिना एक महंमद।।१९।।

पौराणिक दृष्टि से ब्रह्मा, विष्णु, तथा शिव को इस संसार का स्वामित्व प्राप्त है। वे स्वयं को ही सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। सत्य तो यह है कि श्री प्राणनाथ जी के अतिरिक्त अन्य किसी को भी परब्रह्म कहलाने की शोभा ही नहीं हैं।

कई वली पैगंमर आदम, ए कहावें सब मुरसद।
और मुरसद कोई न हुआ, बिना एक महंमद।।२०।।

आदि आदम से लेकर अब तक अनेकों (एक लाख बीस हजार) पैगम्बर और बहुत से ऊँचे स्तर के फकीर हो चुके हैं। ये सभी संसार में सद्गुरू कहलाते है किन्तु मुहम्मद स. अ.व. के अतिरिक्त और कोई सद्गुरू (कामिल मुर्सद) हुआ ही नहीं।

औलिए अंबिए फिरस्ते, जेता कोई पैद।
पर अलहा किनहूं न लह्या, बिना एक महंमद।।२१।।

कतेब परम्परा में जितने भी औलिये, अंबिए आदि फकीर और फरिश्ते हुए हैं, उनमें से किसी ने भी अक्षरातीत परब्रह्म (अल्लाह तआला) का साक्षात्कार नहीं किया है।

यह शोभा मात्र मुहम्मद स.अ.व. की है।

आद मध और अबलों, कोई न पोहोंच्या कद।
खुद खबर किन न दई, बिना एक महंमद।।२२।।

सृश्टि के प्रारम्भिक काल से लेकर मध्य काल और आज दिन तक किसी ने भी न तो परब्रह्म और परमधाम की पहचान दी है और न कोई मुहम्मद के तीनों स्वरूपों की गरिमा के समान शोभा को प्राप्त हुआ है।

चौदे तबक की दुनी के, मैं देखे सब कागद।
सो सारे ही बंद हुए, बिना एक महंमद।।२३।।

मैंने चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में सभी धर्मग्रन्थों को देखा। मुहम्मद के तीनों स्वरूपों के दिए हुए ज्ञान कुर्आन एवं कुल्जुम स्वरूप के अतिरिक्त संसार के किसी भी धर्मग्रन्थ में अक्षरातीत का यथार्थ ज्ञान नहीं था।

भावार्थ- वेदों का प्रतिपाद्य विशय अक्षर ब्रह्म है। कहीं-कहीं अक्षरातीत की भी विवेचना है किन्तु संक्षिप्त रूप में। अक्षर ब्रह्म ने परमधाम तथा अक्षरातीत परब्रह्म का जो ज्ञान सदाशिव को समाधि अवस्था में दिया उसे ईश्वर ने समाधि में सुना तथा उनसे समाधि अवस्था में भगवान शिव ने सुना। शिव जी ने उमा एवं वेद व्यास जी को वार्ता के रूप में सुनाया जो माहेश्वर तन्त्र और पुराण संहिता में वर्णित है।

यद्यपि इन दोनों ग्रन्थों में विस्तार पूर्वक परमधाम, अक्षरातीत तथा केवल ब्रह्म का विस्तृत रूप से वर्णन है किन्तु सुनकर कहा हुआ हैः प्रत्यक्ष देखकर नहीं। कुर्आन में एकमात्र अक्षरातीत (अल्लाह तआला) की ही प्रार्थना एवं महिमा है किन्तु मेयराज (परमधाम एवं परब्रह्म के दर्शन) सम्बन्धी प्रसंग संक्षिप्त रूप में हैं किन्तु यथार्थ हैं। मुहम्मद साहब के द्वारा इन्ना आतेना सूरत में हौजकोशर, यमुना जी तथा नूर वन आदि का भी देखकर किया हुआ यथार्थ वर्णन है। हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी के कुल्जम स्वरूप के परिक्रमा, सागर तथा श्रृंगार ग्रन्थ में परब्रह्म के धाम, स्वरूप और लीला का जो विशद वर्णन है, वह संसार में न तो कभी हुआ है और न कभी भविष्य में हो सकेगा।

ऊपर तले माहें बाहेर, ए उड़ जासी ज्यों गरद।
सो फेर कायम कौन करावहीं, बिना एक महंमद।।२४।।

इस ब्रह्माण्ड में ऊपर-नीचे, अन्दर-बाहर जो भी वस्तु विद्यमान है, प्रलय में वैसे ही लय हो जायेगी, जैसे धूल उड़ जाने के पश्चात् वह दिखायी नहीं पड़ती है। मुहम्मद की

हक्की सूरत श्री प्राणनाथ जी के बिना और कौन है जो इस ब्रह्माण्ड को बेहद में पुनः अखण्ड कर सके।

जो दुनियां खाकें रल गई, सबों कर डारी रद।
सो फेर कौन उठावहीं, बिना एक महंमद।।२५।।

मृत्यु के पश्चात् संसार के मानव तन को मिट्टी में दफना दिया जाता है जो कालान्तर में मिट्टी में ही मिल जाता है। सभी के तन ऐसे ही पंचभूतों में मिल जाया करते हैं। श्री प्राणनाथ जी के अतिरिक्त और कौन है जो अज्ञानता में भटकने वाले जीवों को तारतम ज्ञान का अमृत पिलाकर जागृत (जीवित) करेगा?

तबक चौदे ख्वाब के, ए खेल झूठा है सब।
सो बका कौन करावहीं, बिना एक महंमद।।२६।।

चौदह लोकों का यह सारा ब्रह्माण्ड स्वप्नमयी है, अनित्य है। इसे एकमात्र श्री प्राणनाथ जी ही बेहद मण्डल में अखण्ड करायेंगे। भला उनके अतिरिक्त यह शोभा किसी और की कैसे हो सकती है?

तत्व सबन को नास है, जाको मूल मोह मद।
सो नेहेचल कौन करावहीं, बिना एक महंमद।।२७।।

यह संसार जिन पांच तत्वों आकाश, वायु, अग्नि, जल तथा पृथ्वी से बना है, वे सभी नश्वर हैं। ये पाचों तत्व भी मोह-अहंकार से उत्पन्न हुए हैं। ऐसी स्थिति में श्री प्राणनाथ जी के अतिरिक्त और कौन है जो इसे बेहद मण्डल में अखण्ड कराये।

ऐसा हुआ न कोई होएसी, जो जावे छोड़ सरहद।
फुरमान ल्यावे नूर पार का, बिना एक महंमद।।२८।।

मुहम्मद स.अ.व. के अतिरिक्त अन्य कोई भी अब तक ऐसा नहीं हुआ है और न कोई होगा जो निराकार से परे होकर अक्षरातीत के धाम से संदेश के रूप में आदेश-पत्र (कुर्आन) लेकर आये।

पांच चीज जीव सब उड़ गए, मसी बका से ल्याए औखद।
सो खिलाए जिवाए कोई न सक्या, बिना एक महंमद।।२९।।

इस ब्रह्माण्ड के पांचों तत्व और सभी जीव महाप्रलय में लय हो जाने वाले हैं। सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी परमधाम से तारतम ज्ञान रूपी महौषधि लेकर आये किन्तु श्री प्राणनाथ जी के अतिरिक्त अन्य कोई भी ऐसा नहीं हुआ जो उसे खिलाकर जीवित कर सके (अखण्ड मुक्ति दे सके)।

सो रसूल तुम खातिर, होए आया कासद।
ए सब मासूक के हुकमें, हुआ जाहेर महंमद।।३०।।

हे साथ जी! आपके लिये ही मुहम्मद स.अ.व. संदेशवाहक बनकर परमधाम से आये। श्री प्राणनाथ जी का प्रकटन भी आपके लिये ही हुआ है। यह सारी लीला मूल स्वरूप श्री राज जी (प्रियतम अक्षरातीत) के आदेश से हुई है।

मोमिन तुम सूते क्या करो, ए कागद ए कासद।
काजी कजा पर आइया, दे मुबारकी महंमद।।३१।।

हे साथ जी! अब आप जागृत हो जाइए। इस समय आप सोकर क्या करेंगे? आपके लिये ही रसूल साहब प्रियतम का संदेश लेकर आये। स्वयं परब्रह्म मुहम्मद साहब को संदेश वाहक का विशिष्ट कार्य करने हेतु धन्यवाद देते हुए, सबका न्याय करने के लिये श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में न्यायाधीश बनकर आये हैं।

उठके आप खड़ी रहो, ल्यो अंग में आनंद।
इस्क देखाओ अपना, मासूक करो परसंद।।३२।।

अब आप माया की नींद छोड़कर जागृत होइए तथा प्रियतम परब्रह्म के प्रति अटूट विश्वास लेकर खड़े हो जाइए। प्राणेश्वर अक्षरातीत के संसार में आने से अपने हृदय में आनन्दित होइए। परब्रह्म (श्री जी) के प्रति अपना प्रेम दिखाइये और उन्हें रिझाइए (साद कीजिए)।

।।प्रकरण।।२८।।चौपाई।।६६३।।

सनंध–अब सो कहां है महंमद

इस प्रकरण में यह दर्शाया गया कि वर्तमान समय जो कियामत का चल रहा है, इसमें आखिरी मुहम्मद हक्की सूरत (श्री प्राणनाथ जी) कहाँ है?

अब सो कहां है महंमद, तुम उठ क्यों न देखो जाग।
कह्या कौल सो आए मिल्या, अब नहीं नींद को लाग।।१।।

हे साथ जी! आप तारतम ज्ञान के प्रकाश में जागृत होकर अटूट विश्वास के साथ इस बात पर विचार क्यों नहीं करते हैं कि अब हमारे प्रियतम प्राणनाथ (नूरी मुहम्मद) कहाँ हैं? मुहम्मद स.अ.व. ने कियामत के समय सबके न्यायाधीश इमाम महदी के रूप में

परब्रह्म के आने का जो वचन दिया था, वह समय अब आ चुका है। इस समय आप माया की नींद में सोते रहिए न अर्थात् अज्ञानता में न भटकिये।

तुम जो अरवाहें अर्स की, पर छलें किए हैरान।
बाहेर देखना छोड़ के, तुम अंतर करो पेहेचान।।२।।

आप परमधाम के ब्रह्ममुनि हैं किन्तु इस संसार में माया के आपको परेशान कर रखा है। अतः यह आवश्यक है कि आप अपनी बहिर्मुखी दृष्टि को छोड़कर अपनी अन्तर्दृष्टि से श्री जी साहब जी की पहचान करें।

हकें लिख्या फुरमान में, मेरा अर्स मोमिन कलूब।
क्यों न जागो देख ए सुकन, दिल में अपना मेहेबूब।।३।।

अक्षरातीत परब्रह्म ने धर्मग्रन्थों (कुर्आन, वेद, आदि) में यह लिखवाया है कि ब्रह्मात्मा का हृदय ही मेरा धाम है। इस बात को सुनकर भी आप जागृत क्यों नहीं होते हैं कि आपके प्राणेश्वर अक्षरातीत आपके हृदय धाम में विराजमान हैं ।

ए छल झूठा देख के, तुम लई जो तिनकी बुध।
तो नजर बाहेर पड़ गई, जो भूले अर्स की सुध।।४।।

हे साथ जी! आप के पास माया की स्वप्नमयी बुद्धि है। आप इस मिथ्या जगत को देख रहे हैं, इसलिये आपकी दृष्टि बहिर्मुखी हो गयी है। परिणाम स्वरूप आपको परमधाम की स्मृति ही नहीं है।

जात भेख ऊपर के, ए सब छल की जहान।
जो न्यारा मांहें बाहेर से, तुम तासों करो पेहेचान।।५।।

यह सारा जगत छल-प्रपंच से भरा हुआ है। इस मानव समाज में अनेक प्रकार की जातियां हैं जिनकी अलग-अलग वेश भूषा है। सच्चिदानन्द परब्रह्म तो हमारे मन में विद्यमान आन्तरिक जगत तथा आंखों से दिखायी देने वाले प्रपंच पूर्ण बाह्य जगत दोनों से अलग है। आप तारतम ज्ञान के प्रकाश में अपनी विवेक दृष्टि से उनकी पहचान कीजिए।

भावार्थ- यद्यपि पौराणिक हिन्दू-समाज में लगभग १२०० जातियां हैं किन्तु उपरोक्त चौपाई में मानव-जातियों का उल्लेख वैश्विक स्तर पर हुआ है जो भाषा, वेश-भूषा एवं रूप-रंग में अलग-अलग है- जैसे- भारतीय, मंगोल, जापानी, यहूदी, अरबी, अफ्रीकन, अंग्रेज इत्यादि।

काजी कजा जो करसी, तब कह्या रसूलें संग हम।
ए सोई दिन आइया, अब क्यों भूलें कदम।।६।।

मुहम्मद स.अ.व. ने कहा था कि कियामत के समय आखरूल इमाम मुहम्मद महदी (श्री प्राणनाथ जी) के रूप में स्वयं परब्रह्म न्यायाधीश बनकर सबका न्याय करेंगे। उस समय मैं भी उनके साथ रहूंगा। अब वही समय आ गया है। प्रियतम परब्रह्म भी श्री जी साहब के रूप में प्रकट हो गये है। ऐसी स्थिति में हम उनके चरणों को कैसे छोड़ सकते हैं?

कह्या रसूलें आवसी, आखिर ए मेहेरबान।
नजर जाहेरी क्यों देखोगे, जोलों बातून नहीं पेहेचान।।७।।

रसूल साहब ने कहा था कि कियामत (आखिरत) के समय कृपा के सागर स्वयं परब्रह्म इमाम महदी के रूप में आयेंगे। जब तक ज्ञान दृष्टि से उनकी आन्तरिक पहचान नहीं होगी तब तक मात्र बाह्य दृष्टि से उन्हें कैसे पहचान सकेंगे?

भावार्थ- मुसलमान लोग अपनी संकुचित सोच के कारण मात्र अपने समाज में ही इमाम महदी का आना मानते हैं। इस चौपाई में इसी तथ्य की ओर संकेत किया गया है।

पेहेले क्यों थे रसूल हक पें, क्यों ल्याए फुरमान।
अब कौन सरूपें आखिर, ए सब करो पेहेचान।।८।।

हे साथ जी! आप इन तथ्यों पर विचार कीजिए कि मुहम्मद स.अ.व. ने क्यों परमधाम जाकर परब्रह्म का दर्शन किया। वे इस संसार में परब्रह्म का आदेश पत्र कुर्आन लेकर क्यों आये?अब इस कियामत के समय में कौन सा स्वरूप प्रकट हुआ हैं?

वजूद आवे जो ख्वाब में, सो सब ख्वाब के जान।
ख्वाब देखे जो पार थें, तुम तासों करो पेहेचान।।९।।

इस स्वाप्निक संसार में जो तन धारण किये जाते हैं, वे स्वाप्निक होने से नश्वर होते हैं। परमधाम में परात्म का जो तन इस नश्वर जगत की लीला को देख रहा है, यदि आप उस तन की दृष्टि से इस खेल को देखें तो आप को वास्तविकता का बोध हो जायेगा।

जो हक सूरत देखिए इनमें, तो ख्वाब देवें सब भान।
ले माएने देखो बातून, ज्यों होवे सब पेहेचान।।१०।।

यदि आप श्री मिहिरराज जी के तन में परब्रह्म श्री राज जी को विराजमान हुआ देखें तो स्वाप्निक तन का पर्दा (आवरण) समाप्त हो जाता है। आप श्री मिहिरराज जी के

शरीर को न देखकर सूक्ष्म अन्तर्दृष्टि से देखिये तथा उपरोक्त कथन के आशय का चिन्तन कीजिए जिससे आपको सम्पूर्ण वास्तविक सत्य का ज्ञान हो जाय।

ए तो आगे थें कई उड़हीं, नूरै की नजर।
तो नूर–तजल्ला की नजरों, ए रेहेसी क्यों कर।।११।।

अक्षर ब्रह्म की दृष्टि मात्र से अनादि काल से स्वप्न के अनन्त ब्रह्माण्ड बनकर लय होते रहे हैं। ऐसी स्थिति में यह कैसे सम्भव है कि अक्षरातीत की दृष्टि के समक्ष यह स्वाप्निक ब्रह्माण्ड अपना अस्तित्व बनाये रख सकेगा?

हक नजर या पर पड़े, तो उड़े जिमी आसमान।
नूर आगे अंधेरी ना रहे, तुम दिल दे करो पेहेचान।।१२।।

यदि अक्षरातीत परब्रह्म की दृष्टि इस ब्रह्माण्ड पर पड़े तो धरती और आकाश सहित यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड समाप्त हो जायेगा। परब्रह्म के नूर के समक्ष भला यह अन्धकार से उत्पन्न हुआ जगत कैसे रह सकता है? यह सामान्य सी बात है कि प्रकाश के समक्ष अन्धकार का अस्तित्व हो ही नहीं सकता। यदि आप अपना हृदय प्रियतम को समर्पित करें तो उनके स्वरूप की पहचान हो जायेगी।

अब बताऊं या बिध, देखो दिल में आन।
जाहेर मैं देखाऊंगी, मेरे इमाम की पेहेचान।।१३।।

हे साथ जी! अपने प्रियतम प्राणनाथ (इमाम महदी) की पहचान करने के लिये मैं एक मार्ग (उपाय) बताता हूँ। आप अपने हृदय में इस बात का विचार कीजिए। मैं प्रत्यक्ष रूप से श्री जी साहब जी की पहचान बताऊंगा।

आवे अर्स से हुकम, तिन हुकमें चले हुकम।
फिरे सो मतलब करके, जाए मिले खसम।।१४।।

परमधाम से इस संसार में (किसी तन में) श्री राज जी का आदेश (हुक्म) आता है। उसके आदेश से लीला का सारा कार्य चलता है। अपनी लीला का कार्य करके वह हुक्म पुनः प्रियतम से जा मिलता है।

भावार्थ- चौपाई १४,,१५,१६,१७, और १८ में श्री महामति जी के धाम हृदय में विराजमान परब्रह्म की पांचों शक्तियों का वर्णन है। लीला करने के लिये अक्षरातीत के हृदय में जो भी इच्छा होती है, उसे इस संसार में हुक्म (आदेश) कहते है- हकें हुकम किया वतन में, सो उपजत अंग असल। सागर। वांधे आप हुकुम के, काजी हुए इत आए। सनंध। साहब के हुकमें, ए बानी गावत है महामत। किरंतन।

वस्तुतः इच्छा शक्ति (हुक्म या आदेश की शक्ति) ही आवेश स्वरूप में कार्य करती है। इस सृष्टि की रचना या प्रलय आदि से सम्बन्धित जो कार्य होता है, वह अक्षर ब्रह्म के द्वारा सम्पादित होता है-

हुकम नूरजमाल का, जो है नूर जलाल।। बीतक साहेब।

ब्रह्मात्माओं तथा अक्षर ब्रह्म से सम्बन्धित लीला में अक्षरातीत का आवेश स्वरूप (हुक्म) ही कार्य करता है। जिस प्रकार हाकिम और हुक्म एक ही होते हैं, उसी प्रकार श्री राज जी परमधाम में अपने नूरमयी स्वरूप से विराजमान है और व्रज, रास तथा जागनी में वे आवेश स्वरूप (हुक्म के स्वरूप) से लीला करते हैं।

भी तितथें रूह आवहीं, आवे नूर से जोस कूवत।
सो फुरमाया सब करे, पकड़ के सूरत।।१५।।

परमधाम से अक्षर ब्रह्म की आत्मा के साथ उनकी शक्ति का स्वरूप जिब्रील आता है। वह मानव तन (श्री मिहिरराजजी) में विद्यमान होकर आवेश स्वरूप के निर्देश पर सारा कार्य करता है।

नूर मकान से फरिस्ता, आवे असराफील।
सब उड़ावे सूर बजाए के, पलक न होवे ढील।।१६।।

अक्षर धाम (सत्स्वरूप) से जागृत बुद्धि (अस्राफील) का आगमन होता है। वह तारतम ज्ञान का सूर फूंकता है अर्थात् गुंजार करता है। उसमें एक पलक से भी कम समय में समस्त ब्रह्माण्ड का लय करने की सामर्थ्य है।

भी इत अर्स अजीम से, मसी ल्यावें कुंजी रोसन।
सो तोड़ कुफर आलम का, साफ करें सबन।।१७।।

परमधाम से परब्रह्म की आह्लादिनी शक्ति श्यामाजी (रूहुल्लाह) तारतम ज्ञान का प्रकाश लेकर संसार में आती हैं। उनके द्वारा सारे संसार की अज्ञानता का नाश कर सबके हृदय को निर्मल बनाया जाता है।

जब इमाम इत आइया, तब ए सारे संग।
सरूप मेंहेदी याही को, यामें देखोगे कई रंग।।१८।।

जब संसार में आखरूल जमां इमाम मुहम्मद महदी (श्री प्राणनाथ जी) का प्रकटन होता है तो ये सभी पांचों शक्तियां उनके अन्दर विराजमान होती है। इन्हीं को महदी भी कहते हैं। आप इस स्वरूप द्वारा जागनी की अनेक प्रकार की लीलाओं का रसास्वादन करेंगे।

भावार्थ-श्री मिहिरराज जी के तन में विद्यमान परमधाम की जो आत्मा (श्री इन्द्रावती) है, उन्हें 'महामति' की शोभा प्राप्त होती है। इन्हीं के धाम हृदय में परब्रह्म की पाँचों शक्तियों १-हुक्म(आवेश) २-अक्षर ब्रह्म की आत्मा ३-श्यामा जी की आत्मा ४-जिब्रील(जोश) तथा ५-जागृत बुद्धि(अस्राफील) का स्वरूप विद्यमान होता है। इस स्वरूप की महिमा सर्वोपरि कही गयी है। मुहम्मद की हक्की सूरत भी कहलाने की शोभा इन्हें ही है। मुहम्मद, महदी और महामति एकार्थवाची शब्द हैं। जिस प्रकार मुहम्मद का शाब्दिक अर्थ अनन्त प्रशस्तिमान या महिमावान होता है, उसी प्रकार हिन्दी में महामति का अर्थ अनन्त ज्ञानवान होता है। तुर्की भाशा में इसे मेहेमत भी कहते हैं। इस स्वरूप के समान ज्ञानवान अब तक इस सृश्टि में कोई भी नहीं हुआ है। इसलिये इन्हें दोपहर का सूरज भी कहते हैं। वह चांद ए सूरज आखिरी 'तमाम' ब. क. / का कथन यहीं सिद्ध करता है।

याही साथ मिलावा मोमिनों, सबों खास बंदों सोहोबत।
बंदगी जाहेर या बातून, सब बेवरा होसी इत।।१६।।

इनके साथ ही ब्रह्मात्माओं का मिलावा होगा। सभी ईश्वरीय सृष्टि भी इन्हीं श्री प्राणनाथ जी की ही सानिध्यता में रहेगी। इन्हीं की छत्रछाया में शरीयत (कर्मकाण्ड) की जाहिरी बन्दगी (बाह्य भक्ति) और बातिनी बन्दगी (आत्मिक भक्ति) का विस्तृत विवरण होगा।

औलिए अंबिए आसिक, जो खास बंदे सिरदार।
हक बिना कछू ना रखें, इनों दुनी करी मुरदार।।२०।।

परब्रह्म के सच्चे प्रेमी इन ब्रह्ममुनियों को कुर्आन में औलिया, अंबिया और आशिक कहा गया है। इन्होंने अपने हृदय में मात्र प्रियतम परब्रह्म को ही बसा रखा होता है और संसार को नश्वर मान कर त्याग दिया होता है।

ए माएने ले रसूलें, आए केता किया पुकार।
ए सो किन खातिर किया, रूहें अजूं न करें विचार।।२१।।

ब्रह्मात्माओं के लिये कुर्आन में वर्णित औलिया, अम्बिया तथा आशिक आदि शब्दों के गुह्यार्थ को लेकर ही मुहम्मद स.अ.व. ने संसार में बार-बार पुकारा। आश्चर्य है कि जिनके लिये इतनी पुकार की गयी हैं, वे आत्मायें अभी भी इस बात का विचार क्यों नहीं करती हैं कि इतनी पुकार किनके लिये की गयी है?

ए किन भेज्या कौन आइया, ए सो कौन कारन।
अब कहे कौन कासों कहे, तुम उठ देखो वतन।।२२।।

इमाम महदी (श्री प्राणनाथ जी) को इस संसार में किसने भेजा है? उनके स्वरूप में कौन आया है? किसलिये आया है? इल्म-ए लदुन्नी(तारतम) को कहने वाला कौन है तथा किससे कह रहा है?हे साथ जी! आप जागृत होकर इन बातों का विचार कीजिए और अपने मूल घर परमधाम की ओर अपनी अन्तर्दृष्टि कीजिए।

भावार्थ- चौपाई में कथित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर इस प्रकार हैं- मूल स्वरूप श्री राज जी ने इमाम महदी (श्री जी) को इस संसार में भेजा है। उनके स्वरूप में स्वयं श्रीराज जी (परब्रह्म) ही अपने आवेश स्वरूप से आये हैं। वे ब्रह्ममुनियों को जाग्रत करके पुनः परमधाम ले जाने के लिये आये हैं। स्वयं श्री राजजी ही अपनी ब्रह्मात्माओं से इल्म-ए लदुन्नी (कुल्जम स्वरूप) की विवेचना कर रहे हैं।

तुमें सूती कौन जगावहीं, केहे केहे मगज कुरान।
सुध देवे काजी कजाए की, ले माएने करो पेहेचान।।२३।।

परमधाम के ब्रह्ममुनियों! आप इस बात का विचार कीजिए कि इस समय जब आप माया में सो रहे हैं, फिर भी कुर्आन के गुह्य अर्थों को बताकर आप को कौन जगा रहा है? कियामत की इस घड़ी में न्यायाधीश के न्याय की सुधि देने वाला कौन है? इस लीला के अभिप्राय को समझकर उनकी वास्तविक पहचान करो।

पेहेले ओलखो आपको, पीछे करो मोसों पेहेचान।
देखो अपने अर्स को, याद करो निसान।।२४।।

हे साथ जी! तारतम ज्ञान के प्रकाश में आप अपनी पहचान कीजिए कि आप कौन हैं? इसके पश्चात् मेरी(श्रीजी की) पहचान कीजिए। अपने परमधाम को देखिये तथा उन पक्षों का चिन्तन कीजिए जिसमें आप क्रीड़ा किया करते थे।

यामें रूह कई भांत के, लेत लज्जत खान पान।
अंदर बैठा ताए देखहीं, तुम सब बिध करो पेहेचान।।२५।।

इस संसार में अनेक (तीन) प्रकार की सृष्टियां हैं जो सांसारिक सुखों के रसास्वादन में ही मग्न है। ब्रह्मसृष्टियों के हृदय में बैठा हुआ प्रियतम उनकी प्रत्येक लीला को देख रहा है। आप हर प्रकार से उसकी पहचान कीजिए।

भावार्थ-इस चौपाई में यह संशय होता है कि सबके कार्यों का द्रष्टा कौन है?सम्पूर्ण वाणी में जीव के अन्दर आदि नारायण का ही निवास बताया गया है, अक्षरातीत का नहीं। इस आधार पर क्या यह माना जाय कि जीव सृष्टि के अन्दर आदि नारायण बैठ कर उसके प्रत्येक कार्य को देख रहे हैं? ईश्वरीय सृष्टि के अन्दर अक्षर ब्रह्म तथा ब्रह्म सृष्टि के अन्दर अक्षरातीत विराजमान होकर उसकी सम्पूर्ण गति विधियों को देख रहे है?

वस्तुतः मन एंव इन्द्रियों के संयोग से प्रत्येक कार्य सम्पादित होता है। चित्त में उस कार्य का संस्कार अर्थात् कर्मबीज विद्यमान हो जाता है। जीव द्रष्टाभाव से इस प्रक्रिया को देखता है किन्तु उसको अपने द्रष्टाभाव का अनुभव तभी होता है, जब वह जागृत अवस्था में होता है, अन्यथा वह स्वंय ही को कर्ता-धर्ता मानता है क्योंकि अन्तःकरण एंव इन्द्रियां उसके ही कारण ,एंव सूक्ष्म शरीर के अंग रूप हैं।

यद्यपि तीनों सृश्टियों के हृदय में उनके आराध्य तीनों पुरूश (आदि नारायण, अक्षर ब्रह्म तथा अक्षरातीत) ही विराजमान रहते हैं किन्तु ब्रह्मसृष्टियों की लीला को मात्र अक्षरातीत ही जानते हैं। वे ईश्वरीय सृष्टि तथा जीव सृष्टि की भी लीला को जानते हैं क्योंकि वे सर्वज्ञ हैं और पूर्णात् पूर्ण हैं। अक्षर ब्रह्म तथा अक्षरातीत का एक ही स्वरूप है । इसी प्रकार आदि नारायण भी अक्षर ब्रह्म के मन(अव्याकृत) के स्वाप्निक स्वरूप है। इस आधार पर हम यह मान सकते हैं कि अक्षर ब्रह्म को ईश्वरीय सृष्टि तथा जीव सृष्टि दोनों का ही ज्ञान रहता है। ब्रह्मसृष्टि भी जिस पंच भौतिक तन में विद्यमान होती है, वह जीव का ही तन होता है। इस प्रकार उसमें भी आदि नारायण का निवास माना जाता है। यही स्थिति ईश्वरीय सृष्टि के भी सम्बन्ध में है।

कहां इनों की असल, दृढ़ करो सोई निसान।
पार अर्स जो कायम, तुम तासों करो पेहेचान।।२६।।

हे साथ जी! आप दृढ़तापूर्वक इस सत्य को जानिये कि इन तीनों सृष्टियों का मूल निवास कहाँ पर है? हद -बेहद से परे जो अखण्ड परमधाम है, आप उसकी पहचान कीजिये।

रूहें फरिस्ते पैगंमर, सुध होवे नूर मकान।
सो नूर छोड़ आगे चले, तब होवे पेहेचान।।२७।।

तारतम ज्ञान से यह विदित हो जाता है कि ब्रह्मसृष्टियां क्या हैं, ईश्वरीय सृष्टि क्या

है तथा पैगम्बर कौन है?अक्षर ब्रह्म का अक्षर धाम क्या है? तारतम ज्ञान के प्रकाश में जब अक्षर धाम से आगे बढ़ते हैं तब परमधाम के रंगमहल सहित पच्चीस पक्षों की पहचान होती है।

ए सुध सब बिध ल्याइया, रसूल हाथ फुरमान।
काजी कजा भिस्त पार की, ले माएने करो पेहेचान।।२८।।

उपरोक्त सारी पहचान मुहम्मद स. अ. व. ने कुर्आन में संकेतों में दी है। हे साथ जी ! आप कुर्आन के गुह्यार्थ जान कर यह पहचान कीजिए कि कियामत के समय सबका न्याय करने के लिये न्यायधीश के रूप में कौन आया है? निराकार से परे बेहद मण्डल में अखण्ड होने वाली आठ बहिश्तें कौन-कौन सी हैं?

बात रसूल की जो सुने, ताको तअजुब बड़ा होए।
हक बका सुध देवहीं, सो कहे न दूजा कोए।।२९।।

मुहम्मद स. अ. व. ने कुर्आन में जो कुछ भी कहा है, उन बातों की चर्चा जब कोई भी श्री प्राणनाथ जी के मुख से सुनता है तो उसे इस बात का बहुत ही आश्चर्य होता है कि एक हिन्दू तन में होकर भी ये कुर्आन से किस प्रकार अक्षरातीत तथा परमधाम की पहचान दे रहे हैं? ऐसा तो हमें आज दिन तक किसी ने भी नहीं बताया है।

एक पैंडे चले दुनियां, रसूल सामी बल।
नबी नजर देखे चलें, दुनियां चले अटकल।।३०।।

संसार के अन्य मत-पन्थों तथा मुहम्मद स. अ. व. की ज्ञान शक्ति में अन्तर है। संसार के अन्य पन्थों के अनुयायी अनुमान के आधार पर परब्रह्म के विषय में धारणायें बनाते हैं तथा उस पर चलने का प्रयास करते हैं, जबकि मुहम्मद साहब अपनी अन्तर्दृष्टि से प्रत्यक्ष देखकर कुछ कहते हैं और लोगों को उस पर चलने के लिये प्रेरित करते हैं।

दुनियां जो छाया मिने, सो करे अटकलें अनेक।
छाया सूर न देखहीं, पीछे कहे ताए रूप न रेख।।३१।।

संसार के प्राणी मोहसागर की छाया रूप अष्टावरण में रहते हैं। वे स्वाप्निक बुद्धि से युक्त होने के कारण परब्रह्म तथा परमधाम के सम्बन्ध में तरह -तरह के अनुमान करते हैं। छाया में रहने वाले जब सूर्य रूपी परब्रह्म को नहीं देख पाते तो यही कहते है कि परमात्मा का तो कोई स्वरूप या आकृति ही नहीं है।

क्यों सब्द आगे चले, तुम कर देखो विचार।
छाया पार किरना रहे, सूरज किरनों पार।।३२।।

हे साथ जी! आप इस बात का विचार करके देखिए कि संसार के जीवों के शब्द भला निराकार (मोहसागर) से आगे कैसे जा सकते हैं? जिस प्रकार छाया (अन्धकार) के परे सूर्य की किरणें होती हैं और किरणों से परे सूर्य होता है, उसी प्रकार निराकार से परे बेहद मण्डल है तथा बेहद से परे परमधाम में अक्षरातीत का स्वरूप है।

पैदास जुलमत काल की, सो तो है सब नास।
खेलें काल के मुख में, ताए अबहीं करेगो ग्रास।।३३।।

निराकार रूप काल से यह अनन्त सृष्टि उत्पन्न हुई है, जो महाप्रलय में लय हो जायेगी। यह सम्पूर्ण सृष्टि सर्वदा ही काल के मुख में क्रीड़ा कर रही है जो किसी भी क्षण निराकार में विलीन हों सकती है (निगली जा सकती है)।

हक सूरत नूर के पार है, तहां सब्द न पोहोंचे बुध।
चौदे तबक छाया मिने, इनें नहीं सूर की सुध।।३४।।

परब्रह्म का स्वरूप तो अक्षर ब्रह्म से भी परे परमधाम में हैं। वहां किसी भी शब्द या बुद्धि की पहुँच नहीं है। चौदह लोकों का यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड अष्टावरण (पंचभूत +मन +बुद्धि+अंहकार)रूप छाया के अन्तर्गत है। ऐसी स्थिति में ब्रह्माण्ड के जीव भला सूर्य रुपी परब्रह्म के विशय में यथार्थ रूप से कैसे जान सकते हैं?

कोई ना उलंघे काल को, निराकार हवा ला सुंन।
याको कोई ना उलंघ सके, ए ग्रासे सब उतपन।।३५।।

संसार का कोई भी जीव इस निराकार, शून्य रूप काल को पार नहीं कर पाता है। इसी से सभी उत्पन्न होते हैं और इसी में विलीन हो जाते हैं। इस प्रकार इसको उलंघ पाना किसी के लिये भी सम्भव नहीं होता है।

भावार्थ-निराकार, शून्य, काल, निर्गुण, मोह, अज्ञान, भ्रम आदि सभी शब्द एकार्थवाची हैं। इसे ही कतेब पक्ष में ''ला हवा'' कहते हैं।

बात बड़ी है काल की, ऐसे कई ब्रह्मांड उपाए।
काल भी आखिर ना रहे, पर ए पेहेले सब को खाए।।३६।।

इस निराकार रूप काल की अपार शक्ति है। हमारे इस ब्रह्माण्ड जैसे असंख्यों ब्रह्माण्ड इससे उत्पन्न होते हैं और इसी में लीन हो जाते हैं। यद्यपि महाप्रलय में अन्ततोगत्वा काल रूप निराकार भी नहीं रहता, किन्तु पहले यह सम्पूर्ण सृष्टि को अपने में

विलीन कर लेता है।

रसूल बिना इन काल को, किने न उलंघ्यो जाए।
ए सब्द काल के पार हैं, सो क्यों औरों समझाए।।३७।।

मुहम्मद स. अ. व. से पहले इस निराकार को पार करके कोई भी परमधाम नहीं जा सका था। उनके कहे हुए शब्द निराकार से परे के हैं, इसलिये संसार के लोग उसे कैसे समझ सकते हैं?

छाया की जो दुनियां, ताए अचरज होए सबन।
काल के पार जो पोहोंचहीं, सो क्यों कर रेहेवे तन।।३८।।

इस अंधेर रूप ब्रह्माण्ड में रहने वाले सभी जीवों को मुहम्मद स.अ.व. की परमधाम सम्बन्धी बातों पर बहुत ही आश्चर्य होता है। वे ऐसा सोचते हैं कि जो निराकार के परे चला जायेगा, वह भला जीवित कैसे रह सकता है?

हक की खबर जो ल्यावहीं, सो तेहेकीक न रहे आकार।
जो कदी रहे तो बेहोस, पर कर ना सके पुकार।।३९।।

यदि कोई परब्रह्म से मिलकर उनका संदेश संसार में लाता भी है तो यह निश्चित है कि वह शरीर से जीवित नहीं रहेगा। यदि जीवित रह भी जाता है तो मात्र बेहोशी की ही अवस्था में रहेगा। वह मुख से कुछ भी बोलने में असमर्थ होगा।

जिन कोई सक तुमे रहे, मैं सब विध देऊं समझाए।
माएने इन रसूल के, भांत भांत देऊं बताए।।४०।।

हे साथ जी! संसार के लोगों में ये जो उपरोक्त संशय होते हैं, वे आपके भी मन में न आ जायें, इसलिये मैं आपको हर प्रकार से समझा देता हूँ। मुहम्मद साहब की संदेशवाहक के रूप में जो वास्तविकता है, उसे अनेक प्रकार से आपको बता रहा हूँ।

सत छाया जीव पर पड़े, सो तबहीं मुरछाए।
ख्वाब न देखे सांच को, वह देखत ही मिट जाए।।४१।।

यदि अखण्ड परमधाम के नूर की छाया किसी जीव पर पड़ जाय तो वह उसी समय बेहोश हो जायेगा। स्वप्न का जीव अखण्ड परमधाम को प्रत्यक्षतः नहीं देख सकता है। वह देखते ही समाप्त हो जायेगा।

भावार्थ- जीव भी तारतम ज्ञान के प्रकाश में अंगना भाव लेकर प्रेम, विरह एंव समर्पण की भट्टी में कुन्दन बनकर चितवनी द्वारा परमधाम को देखने का अधिकार रखता है। यहां तक कि वह श्रीराज जी का भी दर्शन कर सकता है। यह तथ्य सागर में दिया गया

है - लेवें अपनी मेहेर में, तो नेक दीदार कबूं हकं। किन्तु अपनी शक्ति से बलपूर्वक देखने की उसमें सामर्थ्य नहीं है।

पर अंधे यों न समझहीं, जो इनका नाम रसूल।
सो तो पार से आया हक पे, याको जुलमत ना मूल।।४२।।

किन्तु, संसार के अज्ञानी लोग यह नहीं समझते हैं कि जिन्हें परब्रह्म का संदेशवाहक कहा गया है वे तो निराकार बेहद से परे परमधाम में विराजमान परब्रह्म के पास से ही आये हैं। ये मोह सागर में उत्पन्न होने वाले संसार के जीव नहीं हैं।

भावार्थ-अक्षर ब्रह्म की आत्मा को अपना संदेशवाहक बनाकर परब्रह्म ने संसार में भेजा था। अक्षर और अक्षरातीत का एक ही स्वरूप है। यही कारण है कि उपरोक्त चौपाई में ऐसा कहा गया है कि वे परमधाम से ही आये हैं।

बात मासूक की सो करे, आगे आसिक अरधंग।
कहे कुरान पुकार के, रसूल न छाया संग।।४३।।

परब्रह्म के प्रेम में डूबे रहने वाले ब्रह्ममुनियों के सामने अक्षरातीत की बातें वही कर सकता है जो परमधाम का रहने वाला है। कुर्आन में पुकार-पुकार कर यह बात कही गयी है कि मुहम्मद स.अ.व. संसार के जीव नहीं हैं।

सो बात करे मेहेबूब की, वाको अंग न कोई उरझाए।
ज्यों किरने सूरज देखहीं, त्यों त्यों जोत चढ़ाए।।४४।।

जिस प्रकार, सूर्य की किरण सूर्य की ओर जितना ही अधिक देखती है, उतना ही उसमें सूर्य का प्रकाश आता जाता है, उसी प्रकार परमधाम का कोई स्वरूप (अक्षर ब्रह्म, श्यामाजी या कोई ब्रह्म सृष्टि) यदि प्रियतम अक्षरतीत की कितनी भी अधिक बातें करें तो उसके हृदय में कभी भी उलझन नहीं होगी।

सो जाने सुध पार की, हक मिलिया जिन।
किरना सूरज ना अंतर, यों मासूक आसिक तन।।४५।।

जिन्हें परब्रह्म का मधुर दर्शन (शर्बत-ए दीदार) हो गया होता है, एकमात्र उन्हें ही बेहद से भी परे परमधाम का यथार्थ ज्ञान होता हैं। जिस प्रकार सूर्य और उसकी किरणों में स्वरुपतः कोई भेद नहीं होता, उसी प्रकार आशिक और माशूक एक ही होते हैं अर्थात् प्रियतम परब्रह्म और ब्रह्मात्माओं का एक ही स्वरूप होता है।

सीधे सब्द रसूल के, पर ए समझे कछू और।
जोलों सब्द ना चीनहीं, तोलों न पाइए ठौर।।४६।।

मुहम्मद स.अ.व. ने सीधे शब्दों में कुर्आन में अपनी बातें कही हैं किन्तु संसार के

लोग उसका दूसरा ही अर्थ समझते हैं। जब तक तारतम ज्ञान (इल्म ए लदुन्नी) के प्रकाश में उन कथनों का आशय नहीं समझेंगे तब तक अपने मूल घर या परमधाम की पहचान नहीं हो सकती।

।।प्रकरण।।२६।।चौपाई।।१००६।।

सनंध–इमाम रसूल की

इस प्रकरण में श्री प्राणनाथ जी (इमाम महदी) तथा मुहम्मद स.अ.व. की महिमा एवं पहचान पर प्रकाश डाला गया है।

खातिर प्यारी रूहें मोमिन, मैं कहूं अर्स सब्द।
बका सब्द कहे बिना, उड़े ना सरियत हद।।१।।

श्री महामति जी कहते हैं कि मैं अपने प्रिय ब्रह्ममुनियों के लिये परमधाम का ज्ञान लेकर आया हूँ। जब तक अखण्ड परमधाम के ज्ञान का प्रकाश नहीं होगा तब तक इस संसार से कर्मकाण्ड (शरीयत) को नहीं हटाया जा सकता है।

भावार्थ- परमधाम शब्दातीत है। वहां इस नश्वर जगत की भाशायें नहीं हैं। 'आगे तो नूर तजल्ला, तहां जुबां बोल है और' सनंध। से यह स्पश्ट होता है। इसी प्रकार उपरोक्त चौपाई के दूसरे एवं तीसरे चरण में कथित 'अर्स बका' शब्द से तात्पर्य अखण्ड परमधाम के ज्ञान से है। शब्द तो इस संसार की भाशाओं के ही रहेंगे।

सुध दुनी हद ना बेहद, कौन रसूल कौन हम।
कागद ल्याया किनका, कहां सो अर्स खसम।।२।।

संसार के जीवों को न तो इस नश्वर जगत की पहचान है और न योगमाया के ब्रह्माण्ड की। उन्हें यह भी पता नही है कि मुहम्मद साहब कौन हैं तथा हम कौन है? मुहम्मद स. अ. व. किनके लिये कुर्आन का संदेश लेकर आये हैं? वह परमधाम कहाँ है तथा अक्षरातीत परब्रह्म कहाँ पर हैं?

ए सुध किन पाई नहीं, जो लिखी माहें कागद।
ए सब खेलें ख्वाब में, कोई न छोड़े हद।।३।।

यद्यपि कुर्आन में उपरोक्त प्रश्नों का उत्तर लिखा हुआ है, किन्तु किसी को भी उसका ज्ञान नहीं हो सका हैं। संसार के जीव स्वाप्निक बुद्धि से इस संसार में ही भटक रहे हैं। कोई भी इसके परे नहीं जा पा रहा है।

हद की बांधी सब दुनियां, हक तरफ न करे नजर।
पीठ दे हद बेहद को, यों हादी हक देवें खबर।।४।।

संसार के ये प्राणी इस नश्वर जगत के हैं। वे अक्षरातीत परब्रह्म की ओर अपनी अन्तर्दृष्टि कर ही नहीं पाते हैं। अब हादी श्री प्राणनाथ जी सारे संसार के प्राणियों के लिये श्री कुल्जुम स्वरूप के द्वारा हद-बेहद से परे अक्षरातीत और परमधाम की पहचान दे रहे हैं।

हाए हाए किनें ना पेहेचानिया, ए जो रसूल रेहेमान।
कहे किताबें जाहेर, सब पर ए मेहेरबान।।५।।

कितने खेद की बात है कि दयालु मुहम्मद स.अ.व. को किसी ने भी नहीं पहचाना। कतेब पक्ष के धर्मग्रन्थों (कुर्आन-हदीसों) में स्पष्ट कहा गया है कि ये सब के ऊपर कृपा (मेहेर) करने वाले हैं।

सब्द रसूल क्यों चीनहीं, ए जो चाम के दाम।
ख्वाबी दम क्यों समझहीं, ए जो अल्ला के कलाम।।६।।

अपनी चर्मदृष्टि अर्थात् बाह्य भौतिक दृष्टि वाले ये जीव भला मुहम्मद स.अ.व. के कथनों का आशय कैसे समझ सकते हैं? कुर्आन में परब्रह्म के कहे हुए वचनों को समझने की शक्ति स्वप्न के जीवों में नहीं है।

जो दम होवें ख्वाब के, तिन क्यों उपजे विचार।
ए सब ढूढें ख्वाब में, माएने हवा नूर पार।।७।।

सपने के जीवों में निराकार से परे बेहद और परमधाम से सम्बन्धित विचार आते ही नहीं हैं। ये सभी परब्रह्म को इस स्वाप्निक जगत में खोजते हैं जबकि उनका स्वरूप निराकार-बेहद से परे परमधाम में है।

ए सांचा नूरी सांई का, इनके सब्द अगम।
फरिस्ते आदम जो मिलो, किन निकसे ना मुख दम।।८।।

मुहम्मद स.अ.व. परब्रह्म के सच्चे नूरी संदेशवाहक हैं। इनके कथन मन, वाणी से परे उस परमधाम से सम्बधित हैं जिसके सम्बन्ध में यदि सभी फरिश्ते और मनुश्य भी मिल जायें तथा कुछ कहना चाहे तो भी कुछ नहीं कह सकते।

आप रसूल नहीं हद का, इनों अर्स-अजीम असल।
दुनी सुरिया उलंघ ना सके, पूरी हद की भी नहीं अकल।।९।।

मुहम्मद साहब इस संसार के नहीं हैं। उनका मूल स्वरूप तो परमधाम में है। संसार के जीव तो ज्योति स्वरूप (आदि नारायण) को भी पार नहीं कर पाते। इनके पास तो सम्पूर्ण क्षर जगत को जानने की बुद्धि नहीं है।

ए सब्द पार बेहद के, ताके माएने करसी सोए।
सब्द महंमद जानें मेंहेदी, दूजा हद का न जाने कोए।।१०।।

मुहम्मद स. के द्वारा कुर्आन में कहे गये शब्द बेहद से परे परमधाम से सम्बन्धित है। उनके अभिप्राय को या तो स्वंय वे ही जानते हैं या श्री प्राणनाथ जी (मुहम्मद महदी)। इनके अतिरिक्त संसार का अन्य कोई भी व्यक्ति कुर्आन के गुह्य रहस्यों के आशय को नहीं जानता।

हद बेहद दोऊ जुदे, मेंहेदी महंमद बिना न होए।
अब देखो जाहेर हुए, रह्या सब्द न हद का कोए।।११।।

इस क्षर जगत (बैकुण्ठ-निराकार) से परे योगमाया का ब्रह्माण्ड है और उसके भी परे परमधाम किस प्रकार है, यह भेद श्री जी (मुहम्मद महदी) के बिना अन्य कोई भी नहीं बता सकता है। हे साथ जी! श्री प्राणनाथ जी के प्रकट हो जाने के पश्चात् तो इस नश्वर जगत में परब्रह्म का स्वरूप मानने की धारणा ही समाप्त हो गयी है।

एही किताब बोहोतन पे, पर माएने पाए किन।
अब देखो आलम में, इन किताब नूर रोसन।।१२।।

यद्यपि यह कुर्आन ग्रन्थ तो संसार में बहुत से करोड़ों लोगों के पास है, किन्तु आज तक इसका वास्तविक अर्थ किसी ने भी नहीं जाना था। अब देखिए! श्री प्राणनाथ जी के तारतम ज्ञान के द्वारा संसार में कुर्आन के गुह्य रहस्यों का प्रकाश फैलने लगा है।

जो दम होवें ख्वाब के, सो क्यों करसी पेहेचान।
चीन्ह्या नहीं रसूल को, किन हिंदू न मुसलमान।।१३।।

जो स्वप्न के जीव हैं, भला वे इमाम महदी (श्री जी साहब जी) की पहचान कैसे करेंगे?चाहे कोई हिन्दू हो या मुसलमान किसी ने भी मुहम्मद स.अ.व. की वास्तविक पहचान नहीं की।

केतेक संग रसूल के, रेहेते रात दिन मांहें।
नातो ओ बुजरक हुते, पर कछू अली बिन चीन्ह्या नाहें।।१४।।

मुहम्मद स.अ.व. के साथ उनके चार मित्र (अली, अबूबक्र, उमर और उस्मान) दिन-रात रहा करते थे। यद्यपि वे धर्म के क्षेत्र में अग्रगण्य थे। कालान्तर में वे खलीफा भी

बने किन्तु हजरत अली ही कुछ पहचान सके। अन्य किसी ने उन्हें कुछ भी नहीं पहचाना।

भावार्थ-कुर्आन में हजरत अली की प्रशस्ति में कहा गया है। यह आयत हुज्जुतुल विदा के मौके पर नाजिल हुई मैदान गदीर कुम में

पा. ६ सू. ५ आयत ६७ "या अय्युहरर्सूल बल्लिग मा अुन्जिल इलैक मिर्रब्बिक व इल्लम् फ मा बल्लगत् रिसालतहु वल्लाहु यऱ्सिमुक मिनन्नासि इन्नल्लाह ला यह्दिल्-कौमल्-काफिरनीन" अर्थात् हे पैगबंर जो इर्शाद खुदा की तरफ से तुम पर नाजिल हुए हैं, सब लोगों को पहुँचा दो और अगर ऐसा न किया तो तुम ने खुदा के पैगाम को पहुँचाने मे कोताही की और खुदा तुम को लोगों से बचाए रखेगा , बेशक खुदा मुनिकरो को हिदायत नहीं देता है।

तबक चौदे हद के, चौगिरद निराकार।
ए सब्द हदी क्यों समझहीं, जो निराकार के पार।।१५।।

चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड के चारों ओर अगाध निराकार का आवरण है। निराकार से परे परमधाम के सम्बन्ध में कहे गये कथनों को भला इस नश्वर जगत के जीव कैसे समझ सकते है?

भावार्थ- निराकार के अन्दर केवल एक नहीं अपितु असंख्यों चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड हैं। एक का कथन व्यष्टि (व्यक्तिगत) रूप में मात्र समझने के लिये हैं।

बेहद को सब्द न पोहोंचहीं, ए हद में करें विचार।
कोई इत बुजरक कहावहीं, सो केहेवे निराकार।।१६।।

बेहद मण्डल में इस संसार का कोई भी शब्द नहीं जा सकता। संसार के विद्वान इस नश्वर जगत में ही परब्रह्म को खोजते-फिरते हैं। जो इनमें अग्रगण्य होते हैं, वे परब्रह्म को निराकार कहकर मौन हो जाते हैं।

फेर इनों को पूछिए, क्या बेचून बेचगून।
क्या है सुन्य निरंजन, कछू खबर न दई इन।।१७।।

पुनः यदि इनसे पूछा जाय कि जब परब्रह्म निराकार है तो अनुपम, अद्वितीय, शून्य अथवा निरंजन किसे कहा गया है तो ये कुछ भी उत्तर नहीं देते हैं।

निराकार आकारों ना सुध, ना सुध आप खसम।
ना सुध छल ना वतन, ए बुजरकों बड़ी गम।।१८।।

स्वंय मानवीय आकृति धारण किये हुए इन महान विद्वानों का इतना ऊँचा ज्ञान है कि न तो इन्हें निराकार की पहचान है, न अपनी और न परब्रह्म की। इन्हें तो इस मायावी

जगत का भी यथार्थ ज्ञान नहीं है। ऐसी स्थिति में ये अपने मूल घर के विषय में क्या जानेंगे?

खासा नूरी खुदाए का, ए बोल्या सब्दातीत।
सब मिल सब्द विचारहीं, पर पावें ना वे रीत।।१६।।

मुहम्मद स.अ.व. परब्रह्म के विशेष नूरी संदेशवाहक हैं। उन्होंने शब्दातीत परमधाम की बात कही है। संसार के सभी विद्वान मिलकर उनके कहे हुए कथनों पर विचार तो करते हैं किन्तु वास्तविकता को नहीं जान पाते।

आदम मिलो कई औलिए, अंबिए बड़े आकीन।
नूरी कहावें फरिस्ते, पर किन रसूल को ना चीन।।२०।।

संसार के सभी विद्वान मनुष्य, परब्रह्म के प्रेम में डूबने का दावा करने वाले औलिए, अटूट विश्वास रखने वाले अंबिए तथा नूरी कहे जाने वाले फरिश्ते (ब्रह्मा, विष्णु और शिव आदि) भी मुहम्मद साहब को यथार्थ रूप से नहीं जान सके।

सिफत बड़ी रसूल की, निराकार के पार अखंड।
ऐसा कोई न हुआ, ना तो हुए कई ब्रह्मांड।।२१।।

मुहम्मद स.अ.व. की अपार महिमा हैं क्योंकि वे निराकार-बेहद के परे स्वलीला अद्वैत परमधाम के रहने वाले हैं तथा उन्होंने वहां का ज्ञान दिया है। अब तक असंख्यों ब्रह्माण्ड बनकर लय हो चुके हैं किन्तु उनमें कोई भी मुहम्मद साहब जैसा नहीं हुआ है।

दीन दरसन फिरके मजहब, और मिलो कई जात।
पढ़ पढ़ सिर बांधे पर, पर पाई ना नबी की बात।।२२।।

संसार के अनेक दार्शनिक मत-पन्थों तथा धर्मों के विद्वानों एंव अनेक वर्गों के लोगों ने धर्मग्रन्थों का गहन अध्ययन कर अनेक प्रकार की उपाधियां धारण की किन्तु वे मुहम्द स.अ.व. के कहे गये कथनों का मर्म नहीं जान सके।

चौदे तबक की रूह में, ऐसा ना कोई समर्थ।
सब्द महंमद मेंहेदी बिना, करे सो कौन अर्थ।।२३।।

चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में आखरूल जमां इमाम मुहम्मद महदी श्री प्राणनाथ जी के अतिरिक्त अन्य कोई भी ऐसा सामर्थ्यवान व्यक्ति नहीं है जो कुर्आन के गुह्य रहस्यों का अभिप्राय बता सके।

ए माएने इमाम बिना, कोई कर ना सके और।
अब देखोगो इन माएनों, सुख लेसी सब ठौर।।२४।।

कुर्आन की हकीकत से सम्बन्धित गुह्य भेदों का अर्थ श्री प्राणनाथ जी के अतिरिक्त अन्य कोई भी नहीं कर सकता है। अब आप यह प्रत्यक्ष रुप से देखेगे कि श्री जी के द्वारा कुर्आन के गुह्य रहस्यों का स्पष्टीकरण हो जाने से संसार के सभी स्थानों के लोग किस प्रकार सुख ले रहे हैं।

नूर बड़ा इन सब्द में, सो देख थके सब कोए।
इमाम बिना इन नूर को, रोसन क्यों कर होए।।२५।।

कुर्आन के शब्दों में अखण्ड ज्ञान का प्रकाश भरा है जिसे जानने का प्रयास करने वाले सभी लोग थक कर हार गये। इमाम महदी श्री जी के बिना अन्य कोई भी इस प्रकाश को उजागर कैसे कर सकता था?

भावार्थ-पारः ४ सूः ३ आयत १३८ ''हाजा बयानुल्लिन्नासि व हुदुंव्व मौइजतुल्-लिल्मुत्कीन'' अर्थात् यह कुर्आन लोगों को समझाने के लिए पूरा बनाया गया विवरण है और अल्लाह से डरनेवालों के लिए हिदायत और नसीहत हैं।

इन जुबां मैं क्यों कहूं, मुसाफ मगज नूर।
कुफर चौदे तबक का, किया इमामें दूर।।२६।।

कुर्आन के गुह्य भेदों के स्पष्टीकरण की महिमा को इस जिह्वा से मैं कैसे व्यक्त करुँ? इन भेदों को उजागर करके श्री प्राणनाथ जी (इमाम महदी) ने चौदह लोंको के इस ब्रह्माण्ड की अज्ञानता तथा नास्तिकता को दूर कर दिया है।

फुरमान नूर के पार का, सो क्यों कर इनों समझाए।
ए माएने रोसन तब होवहीं, जब बैठे इमाम इत आए।।२७।।

कुर्आन में अक्षर धाम (बेहद) से भी परे परमधाम का ज्ञान है। उसे भला संसार के जीव कैसे समझ सकते हैं?इसके रहस्य तो तभी प्रकाश में आ (प्रकट हो) सकते हैं जब संसार में श्री प्राणनाथ जी का प्रकटन हो।

ल्याए खजाना वतनी, करसी आए इंसाफ।
देसी सुख कायम, आवसी सो असराफ।।२८।।

कुर्आन में लिखा है कि कियामत के समय आखरूल इमाम मुहम्मद महदी (श्री प्राणनाथ जी) परमधाम का तारतम ज्ञान (इल्म ए लदुन्नी) रूपी अखण्ड धन की राशि लेकर आयेंगे। वे सर्वश्रेष्ठ न्यायाधीश होगें और सबका न्याय करके सभी को बहिश्तों का अखण्ड सुख देंगे।

भावार्थ-कुर्आन के पा. २ सू. २ आयत १६५/१६७''व मिन्नासि मय्यंत्तखिजु मिन् दुनिल्लाहि अन्दादुंय्युहिब्बुनहुम् क हुबिल्लाहि वल्लजीन आमनू अशद्दु व लौ यरल्लजीन जलमू इज् यरौनल्-अजाब अन्नल्कुव्वत तिल्लाहि जमीअन व अन्नल्लाह शदीदुल्-अजाबी''(१६५) ''व कालल्लजीनत्तबअू लौ अन्न लना कर्रतन् फ नतबर्रअ मिन्हुम् कमा तबर्रअू मिन्ना कजालिक युरीहिमुल्लाहु अऽमालहुम् हसरातिन् अलैहिम मा हुम् बिखारिजिन मिन्नारि''(१६७) अर्थात् और लोगों में कुछ ऐसे भी हैं, जो अल्लाह के सिवा औरों को भी बराबर समवर्ती पूज्य ठहराते हैं, कि जैसी मुहब्बत अल्लाह से रखनी चाहिए वैसे ही मुहब्बत उनसे रखते हैं। और ईमानवाले जो हैं, उनको तो सबसे बढ़कर अल्लाह ही से मुहब्बत होती हैं। और क्या ही अच्छा होता है कि इन अन्यायियों को सुझाई दे जाता जो उस समय सूझाई देगा जब अजाब उनके सामने होगा कि सारी ताकत अल्लाह के ही अधीन है और यह कि अल्लाह कड़ा अजाब देने वाला हैं। और कुछ लोग ऐसे हैं जो गैर खुदा को सरीक बनाते है। उस दिन पेशवा बेजारी जाहिर करेंगे। इस तरह खुदा उनके अमल उन्हें हजरत बनाकर दिखाएगा, और वे दोजक से नहीं निकाल सकेंगे।

ए रसूलें पेहेले कह्या, खोलसी माएने इमाम।
उमेदां मोमिन दुनी की, होसी जाहेर हुए कलाम।।२६।।

मुहम्द स.अ.व. ने ११०० वर्श पहले ही कह दिया था कि इमाम महदी ही कुर्आन के छिपे हुए भेदों को खोलेंगे कुल्जम स्वरूप के रूप में जब वह अलौकिक ज्ञान प्रकट होगा तो ब्रह्मसृष्टियों तथा संसार के लोगों की सभी आत्मिक इच्छायें पूर्ण हो जायेंगी।

भावार्थ- कुर्आन के पा. २ सु. २ आ १७४ ''इन्नल्लजीन यक्तुमून मा अन्जलल्लाहु मिनल्-किताबी व यश्तरून बिह समनन् कलीलन् अुलाअिक मा यअ्कुलून फी बुतुनिहिम् इल्लान्नार व ला युकल्लिमुहुमुल्लाहु यौमल-कियामति व ला युजक्कीहिम् व लहुम् अजाबुन्

अलीमुन्'' अर्थात् जो लोग उन हुक्म को, जो अल्लाह ने अपनी किताब तौरात में उतारें, छिपाते है और उसके बदले थोड़ा सा बदला लाभ हासिल करते हैं, वह बेशक और कुछ नहीं मगर अपने पेटों में अंगारे भरते हैं। और कियामत के दिन अल्लाह उनसे बात भी नहीं करेगा और न उनको पाक करेगा, और उनके लिए दुखदाई दण्ड हैं।

पा.३ सु. ३ आ. ७ हुवल्लजी अन्जल अलैकलकिताब मिन्हु आयातुम्-मुह्कमातुन् हुन्न अुम्मुल्-किताबी व अुखरू युतशाबिहातुन् फ अम्मल्लजीन फी कुल्बिहिम् जैगुन् फ यत्तबिअून मा तशबह मिन्हुब्तिगाअल्-फित्नति वब्तिगाहअ तअ्वीलिह व मा यज्यक्करू इल्ला अलुलू-अल्लबी'' अर्थात् ऐ पैगम्बर! वही है जिसने तुम पर यह किताब उतारी जिसमें से बाज आयते मुहकम अटल हैं और वही किताब का आधार हैं, और बाज आयतें मुतशाबिह अस्पष्ट हैं। तो जिन लोगों के दिलों में बड़ी कुटिलता है वह कुर्आन की उन्हीं मुतशाबिह आयतों के पीछे हो लेते हैं, ताकी उनके असली मतलब के खोज में पड़ें और इस तरह फसाद पैदा करें। हालाँकि अल्लाह के सिवाय उसका असली मतलब किसी को मालूम नहीं। और जो लोग इल्म में बड़ी पैठ रखते हैं वह तो इतना ही कहते हैं कि इन पर हम ईमान लाये, यह सब हमारे परवरदिगार की तरफ से हैं। और शिक्षा उन्हीं के पल्ले पड़ती है जिनको बुद्धि हैं।

मोमिन कारन आवसी, आखिर करी सरत।
हम भी फेर तब आवसी, सुख देसी कर सिफायत।।३०।।

मुहम्मद साहब ने यह वायदा किया है कि कियामत के समय जब ब्रह्ममुनियों के लिये इमाम महदी (श्री प्राणनाथ जी) आयेंगे तब मैं भी उनके साथ आऊंगा और परब्रह्म की राह पर चलने वालों की प्रशंसा (सिफ्त) करके उन्हें अखण्ड मुक्ति का सुख दिलाऊँगा।

भावार्थ-उपरोक्त कथन का आशय यह कदापि नहीं समझना चाहिए कि यदि कोई मुस्लिम कितना भी पाप करे तो वह बहिश्त की मुक्ति इसलिये प्राप्त करेगा क्योंकि मुहम्मद साहब उसकी सिफारिश करेंगे। मुहम्द साहब सभी के हैं। वे मात्र मुसलमानों की ही सिफारिश क्यों करेंगे? यदि परब्रह्म का न्याय भी सिफारिश के अनुसार चलता है तो वह न्याय कैसा?इसका सूक्ष्म आशय इस प्रकार है-

मुहम्मद स. अ. व. ने कुर्आन के द्वारा संसार के लोगों को बहुदेववाद तथा जड़-पूजा से हटाकर एक परब्रह्म का उपासक बनाया। यह मुसलमानों की विशेष सिफ्त है कि वे परब्रह्म के अतिरिक्त अन्य किसी को भी अपना आराध्य नहीं मानते। श्री महामति जी के धाम हृदय में अक्षर-ब्रह्म (मुहम्मद) अपने दोनों फरिश्तों जिब्रील तथा अस्राफील (जागृत बुद्धि) के साथ विराजमान हैं।

तारतम ज्ञान के प्रकाश में इन दोनों की विशेष भूमिका है। एक परब्रह्म पर अटूट निष्ठा रखने वाले मुस्लिम जब तारतम ज्ञान (इल्म ए लदुन्नी) के द्वारा कुर्आन के भेदों को जान जायेंगे तो वे भी शरीयत को छोड़कर हकीकत-मारिफत की राह अपना सकते हैं और सरलतापूर्वक बेहद की उच्च बहिश्तों का सुख प्राप्त कर सकते हैं। ज्ञान के द्वारा इस संसार में होने वाले न्याय (कजा) की लीला में होने वाला यह लाभ ही उनकी सिफ्त को बढ़ाता है। इसे ही सिफ्त करना कहा गया है। योगमाया के ब्रह्माण्ड में मुहम्मद साहब किसी की भी सिफारिश नहीं करेंगे। वहां तो अपने अशुभ कर्मों के कारण प्रायश्चित की अग्नि में सभी को जलना पड़ेगा। श्री कुल्जुम स्वरूप में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि-

तब कोई नहीं किसी के संग, दुख सुख भुगते अपने अंग।प्र.हि.

जो सुख देसी इमाम, सो या जुबां कह्यो न जाए।
उमेदां मोमिन की, पूरी ईसा इमामें आए।।३१।।

इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी इस संसार में आकर लोगों को जो आध्यात्मिक सुख देंगे, उसका वर्णन इस जिह्वा से नहीं हो सकता। सदगुरू धनी श्री देवचन्द्र (मल्की सूरत) तथा श्री प्राणनाथ जी (हक्की सूरत) ने आकर ब्रह्मसृष्टियों की सभी आत्मिक इच्छाओं को पूर्ण किया है।

नूर बड़ो इन माएनों, सो अब हुआ रोसन।
तबक चौदे गरजिया, बरस्या नूर वतन।।३२।।

इस प्रकार, तारतम ज्ञान के द्वारा कुर्आन के अति महत्वपूर्ण रहस्यों का स्पष्टीकरण हो गया। श्री प्राणनाथ जी के द्वारा प्रकट होने वाले परमधाम के ज्ञान रूपी बादलों की गर्जना चौदह लोकों में सुनायी पड़ी और उसकी घनघोर अमृत वर्षा भी हुई।

कह्या जो इमाम आवसी, सो सरत हुई सत।
आगे इन इमाम के, जाहेर होसी बड़ी मत।।३३।।

मुहम्मद साहब ने कियामत के समय इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी के प्रकट होने की जो भविष्यवाणी की थी, वह पूर्णतया सत्य सिद्ध हुई। उन्होंने यह भी कहा था कि श्री प्राणनाथ जी के द्वारा संसार में जागृति बुद्धि के ज्ञान (श्री कुल्जुम स्वरूप) का प्रकाश फैलेगा।

एक लुगा झूठ ना होवहीं, जो बोले हजरत।
आगे ही थें सब कह्या, पर क्यों समझे रूह गफलत।।३४।।

मुहम्मद स.अ.व. ने जो कुछ भी कहा है, उसका एक शब्द भी झूठ नहीं हो सकता। उन्होंने ११०० वर्ष पहले ही सब कुछ कह दिया था किन्तु माया की नींद में भटकने वाले जीव भला उस पर कैसे विश्वास कर सकते थे?

अब सो इमाम आइया, याही दिन आखिर।
सब्द रसूल के जाहेर, फिरवलसी सब पर।।३५।।

अब आखिरत अर्थात् कियामत के समय इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी का प्रकटन हो चुका है। अब मुहम्मद स.अ.व. के भविष्य सम्बन्धी कथन सत्य प्रमाणित हो चुके है। सभी लोग इस तथ्य को स्वीकार भी करेंगे।

पैंडा बताया रसूलें, पर कोई न समझया तब।
तिन राह सब चलसी, राजी हो हो अब।।३६।।

मुहम्मद साहब ने संसार के लोगों को एक परब्रह्म एंव परमधाम का सीधा मार्ग बताया था किन्तु उस समय कोई भी स्पष्ट रूप से समझ नहीं सका था। तारतम ज्ञान के प्रकाश में सारे रहस्यों के स्पष्ट होने के पश्चात् अब सभी लोग प्रसन्नता पूर्वक उस मार्ग पर चलेंगे।

भावार्थ- मुहम्मद स.अ.व. ने मात्र हजरत अली को ही तरीकत की बन्दगी का मार्ग बताया था। उनके अनुयायियों से सूफी मत प्रचलित हुआ जो कुछ परमधाम की ओर अपने कदम बढ़ाने का प्रयास करता है। कट्टर शरा-तोरा को मानने वाले मुसलमान परमधाम एंव परब्रह्म के दीदार के सम्बन्ध में सोच भी नहीं सकते। अब तारतम ज्ञान द्वारा हकीकत तथा मारिफत का मार्ग मिल जाने से सबके लिये परब्रह्म की अनुभूति का अवसर प्राप्त हो गया है।

धंन रसूल धंन फुरमान, धंन आया जिन खातिर।
धंन मेहेंदी महंमद रूहअल्ला, धंन धंन ए आखिर।।३७।।

मुहम्मद स.अ.व. धन्य हैं जिन्होंने संसार को परमधाम का ज्ञान दिया। वह कुर्आन धन्य है जिसमें एक परब्रह्म के प्रति निष्ठा दर्शायी गयी है। जिन ब्रह्मात्माओं के लिये कुर्आन

आया वे भी धन्य-धन्य हैं। तारतम ज्ञान के प्रकाश से संसार का कल्याण करने वाले सदगुरु धनी श्री देवचन्द्र जी और श्री प्राणनाथ जी धन्य-धन्य हैं। यह आखिरत (कियामत) का समय भी धन्य-धन्य है जिसमें परमधाम का ज्ञान अवतरित हुआ है।

अब सब में जाहेर हुए, बड़े रसूल के सब्द।
इमाम आए फजर हुई, उड़ गई अंधेरी हद।।३८।।

अब संसार में मुहम्मद स.अ.व. के कहे हुए गुह्य शब्दों के रहस्य स्पष्ट हो गये हैं। श्री प्राणनाथ जी के प्रकट होने से अज्ञानता की काली रात्रि समाप्त हो गयी है और परमधाम के ज्ञान का उजाला फैल गया है (प्रातः काल हो गया है)

एते दिन ढ़ापे हते, मगज माएने बातन।
आए इमाम बखत बदल्या, सैतान मारया सबन।।३९।।

आज दिन तक सभी धर्मग्रन्थों के गुह्य भेद छिपे पड़े थें। श्री जी के प्रकट होने पर अब वैसी स्थिति नहीं रह गयी है। तारतम ज्ञान के प्रकाश में सभी धर्मग्रन्थों के गुह्य रहस्य उजागर होने से वास्तविक सत्य प्रकट हो गया है। परिणाम स्वरूप सबके हृदय में विद्यमान अज्ञान रूपी शैतान का विनाश हो गया है।

जाहेर साहेब हुए पीछे, चले न दूजी बाट।
पंथ पैडे मजहब सब उड़ गए, सब हुआ एकै ठाट।।४०।।

अब श्री प्राणनाथ जी के प्रकटन के पश्चात् सभी लोग उन्हीं के दर्शायें हुए स्वर्णिम मार्ग पर चल रहे हैं। अन्य मार्गों (बहुदेववाद, जड़ पूजा आदि) का अब कोई स्थान ही नहीं रह गया है। तारतम ज्ञान द्वारा दर्शाये गये परमधाम के दिव्य-पथ के सामने संसार के अन्य मत-पन्थों तथा धार्मिक सिद्धान्तों का कोई भी अस्तित्व ही नहीं रह गया है।

भावार्थ- उपरोक्त कथन अतिश्योक्ति अलंकार की भाषा में है। संसार के जो लोग तारतम ज्ञान का प्रकाश पाने से वंचित रह गये हैं, वे अपने पूर्ववत् मार्ग का ही अनुसरण कर रहे हैं।

आया सबका खसम, सब सब्दों का उस्ताद।
महंमद मेहेंदी आए बिना, कौन मिटावे वाद।।४१।।

अब श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में सबके प्रियतम अक्षरतीत परब्रह्म ही (अपने आवेश स्वरूप से) आये हुए हैं। संसार के सभी धर्मग्रन्थों का ज्ञान उनमें निहित है। उनके अतिरिक्त ऐसा कोई भी नहीं है जो संसार के सभी मत-पन्थों के विवादों को सुलझा सके।

घर घर होसी सादियां, उड़ गई गफलत।
जो कह्या सो सब हुआ, आई ए आखिरत।।४२।

तारतम ज्ञान का प्रकाश फैल जाने से लोगों के हृदय की अज्ञानता नष्ट हो गयी है। अब प्रियतम परब्रह्म के प्रकट होने की घर-घर में खुशिंया मनायी जायेंगी। मुहम्मद स. ने जो कुछ भी आखिरत (कियामत) के सम्बन्ध में कहा था, वह पूर्णतया सत्य सिद्ध हुआ है। अब वही आखिरत (कियामत) का समय चल रहा है।

तारीफ महंमद मेहेंदी की, ऐसी सुनी न कोई क्यांहें।
कई हुए कई होएसी, पर किन ब्रह्मांडों नांहें।।४३।।

श्री प्राणनाथ जी (मुहम्मद महदी) की जो अनन्त महिमा है, वैसी महिमा आज दिन तक किसी भी ब्रह्माण्ड में किसी के भी सम्बन्ध में नहीं सुनी गयी है। यद्यपि अब तक अनन्त ब्रह्माण्ड बन कर लय हो चुके हैं और भविष्य में भी होगें।

भावार्थ- यद्यपि ब्रज, रास, अरब एंव श्री देवचन्द्र जी के स्वरूप को श्री राज जी (अक्षरातीत) ने ही धारण किया था किन्तु जो महिमा श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की है, वह अन्य किसी भी स्वरूप को प्राप्त नहीं हुई। उपरोक्त चारों स्वरूपों में लीला करने वाली शक्तियां श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में ही समाहित हैं। यह तथ्य सम्पर्ण कुल्जुम स्वरूप तथा परमहंस युगल दास जी के द्वारा लिखित पाती में विस्तृत रूप से दर्शाया गया है।

।।प्रकरण।।३०।।चौपाई।।१०५२।।

सनंध–दज्जाल की

इस प्रकरण में दज्जाल की वास्तविकता को दर्शाया गया है। दज्जाल कोई शरीर धारी व्यक्ति नहीं है, अपितु अज्ञान, कलियुग या जगत का मोह, आकर्षण आदि ही दज्जाल है जो मनुष्य को परब्रह्म की राह पर चलने नहीं देता। वस्तुतः जड़ प्रकृति (माया) का आकर्षण रूप बन्धन ही दज्जाल है।

जिन मोमिन के कारने, रचिया एह मंडल।
तिनकी उमेदां पूरने, मेंहेदी महंमद आए मिल।।१।।

जिन ब्रह्मात्माओं के लिये यह माया का खेल बनाया गया है, उनकी इच्छा को पूर्ण करने के लिये ही यहां मुहम्मद स.अ.व. तथा श्री प्राणनाथ जी आये हैं।

अब नेक कहूं आखिर की, जो होसी सब जाहेर।
बांधे दज्जालें मोमिन, अंतर मांहे बाहेर।।२।।

अब मैं कियामत के समय की कुछ बातें बताता हूँ जो संसार में चारों ओर फैल जायेंगी। दज्जाल रूप माया ने ब्रह्मात्माओं को आन्तरिक और बाह्य रुप से तथा निराकार रुप से अपने बन्धन में बांध रखा है।

भावार्थ-माया को ही कतेब पक्ष में पुल्लिंग रुप में दज्जाल कहते है। यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड पंच भूत, अंहकार तथा महत्तत्व से बना हुआ है। हमारा यह स्थूल शरीर भी पंचभूतात्मक है। हमारी इन्द्रियां (सूक्ष्म शरीर) अंहकार से बनी हैं तथा अन्तःकरण (कारण शरीर) महत्तत्व से बना है। इस प्रकार हमें यह मानना पड़ेगा कि मायावी ब्रह्माण्ड जो बाहर दिखायी दे रहा है, वह सूक्ष्म रुप से हमारे शरीर में भी विद्यमान है। ब्रह्माण्ड का मूल मोह तत्व है जिसे अज्ञान, काल या शून्य आदि कहते है। इसे ही उक्त चौपाई में अन्तर शब्द से सम्बोधित किया गया है अर्थात् जो पिण्ड और ब्रह्माण्ड से भी परे हो।

आया इमाम आलम का, तब कुफर रेहेवे कित।
पर कहूं मोमिन दज्जाल की, नेक हुई लड़ाई इत।।३।।

जब इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी के स्वरुप में सारे ब्रह्माण्ड के आराध्य आये हैं तो भला नास्तिकता या अज्ञानता का अन्धकार कैसे रह सकता है? किन्तु इस संसार में ब्रह्मात्माओं का दज्जाल से जो संघर्ष हुआ है, उसकी छोटी सी झलक मैं यहां प्रस्तुत कर रहा हूँ।

क्यों कहूं बल दज्जाल का, जाहेर बड़ा पलीत।
जोर न चले काहू का, लिए जो सारे जीत।।४।।

दज्जाल की शक्ति का मैं कैसे वर्णन करुँ? यह प्रत्यक्ष रुप से बहुत ही दुष्ट है। इसके ऊपर किसी का भी वश नहीं चलता। इसने सारे संसार को ही जीत रखा है।

अंग जो बांधे या बिध, पेहेले पेड़ से फिराई बुध।
उलटाए सबों या बिध, परी न काहूं सुध।।५।।

दज्जाल सृष्टि के प्रारम्भ से ही सबकी बुद्धि को उल्टी दिशा में कर रखा है। उसने सबके हृदय को बाधंकर (वशीभूत करके) लौकिक सुखों के भोग रुपी उल्टे मार्ग पर इस प्रकार चला रखा है कि किसी को भी इसके बन्धनों से निकलने का विवेक नहीं होता।

भावार्थ- पांचों इन्द्रियां बहिर्मुखी होने से अपने विषयों (शब्द, स्पर्श, रुप, रस और

गन्ध की ओर भागती हैं। अन्तःकरण में अज्ञानता का अन्धकार बने रहने से जीव विषय-भोग रुपी दलदल में और अधिक फंसता जाता है।

दज्जाल नजरों न आवहीं, सब में किया दखल।
जाने दोस्त को दुस्मन, कोई ऐसी फिराई कल।।६।।

दज्जाल प्रत्यक्ष रुप में किसी को भी दिखायी नहीं देता। वह सबके हृदय में बैठा रहता है। वह सबकी बुद्धि को उल्टी दिशा में इस प्रकार घूमा देता है कि ज्ञान, भक्ति और वैराग्य आदि गुण शत्रु की भांति प्रतीत होने लगते हैं।

भावार्थ- रजोगुण और तमोगुण के प्रभाव से जीव अज्ञानता और पाप के कीचड़ में पल-पल फंसता जाता है। 'आहार शुद्धौ सत्व शुद्धि' के सिद्धान्तानुसार मनुष्य को सर्वप्रथम सात्विक और अल्पाहार लेना चाहिए जिससे उसमें सात्विक भावों का उदय हो। इसके बिना ज्ञान, भक्ति, वैराग्य, श्रद्धा और समर्पण के मार्ग पर चला ही नहीं जा सकता। सामान्यतः यही देखा जाता है कि वेद का प्रकाण्ड विद्वान होते हुए भी रावण इसलिये राक्षस बना क्योंकि वह मांस एवं शराब का सेवन करता था। इसी प्रकार कुर्आन को रट लेने पर भी अत्यधिक मांसाहार के कारण कट्टरपन्थियों में एक से बढ़ कर एक क्रूर आंतकवादी तैयार होते हैं, जिनमें मानवता का लेश भी नहीं होता।

अंदर जो बांधे या बिध, कही न जाए करामत।
सत असत कर देखहीं, असत लग्या होए सत।।७।।

दज्जाल ने जीवों के हृदय पर इस प्रकार अपना अधिकार जमा रखा है कि उसके इस चमत्कारिक कौशल का वर्णन कैसे किया जाय? उसके बन्धन में फंसा हुआ जीव परब्रह्म को मिथ्या एंव सारहीन मानने लगता है। उसे ऐसा लगता है कि इस जगत के विशय जनित सुख एंव लौकिक सम्बन्ध ही सब कुछ है। इनसे परे कोई सार तत्व नहीं।

मन चित बुध अहंकार, काम क्रोध गफलत।
आउध ए दज्जाल के, स्यानप ग्यान असत।।८।।

दज्जाल सर्वप्रथम प्राणी के अन्तःकरण मन, चित्त, बुद्धि तथा अंहकार पर अधिकार कर लेता है जिससे ये उसके सशक्त अस्त्र के रुप में कार्य करने लगते हैं। तमोगुण तथा रजोगुण की वृद्धि होते ही हृदय में काम, क्रोध, भ्रम, छल भरी चतुराई, शुश्क बौद्धिक ज्ञान एंव मिथ्या व्यवहार आदि विकारों की उत्पत्ति होती है।

भावार्थ-स्वभावतः जीव अपने शुद्ध रुप में द्रष्टा होता है। वह अपने अन्तःकरण एंव इन्द्रियों के माध्यम से ही कार्य में प्रवृत्त होता है। गीता/में कहा गया है कि 'कामः एषः क्रोधः एषः रजोगुण समुदभवः' अर्थात् काम और क्रोध आदि विकारों की उत्पत्ति रजोगुण

से होती है किन्तु तमोगुण की अवस्था में जीव इतना अन्धा हो जाता है कि वह इन पर नियन्त्रण के सम्बन्ध में सोच भी नहीं पाता।

जिस प्रकार मोह तत्व प्रकृति का ही सूक्ष्मतम एंव मूल रुप है, उसी प्रकार कतेब पक्ष मे मोह तत्व का ही क्रियात्मक रुप दज्जाल कहा गया है। जैसे अज्ञान, भ्रम, कर्म, काल,शून्य, निराकार, निर्गुण आदि शब्द पुरूष वाचक शब्द है और मोह तत्व के ही पर्यायवाची शब्द हैं, वैसे ही कतेब पक्ष में प्रकृति को पुरूष वाचक शब्द के रुप में प्रयुक्त किया गया है।

यह ध्यान देने योग्य तथ्य है कि रास ग्रन्थ में माया के जो हथियार बताये गये हैं। वे इस प्रकरण में दज्जाल के भी बताये गये हैं। इस प्रकरण की ४३वीं चौपाई में तो स्पष्ट कहा गया है कि 'कुदरत रुप दज्जाल को , किनहूं न जान्या जाय'। इसी प्रकार खुलासा/में कहा गया है कि 'कुदरत को माया कही , गफलत मोह अंधेर'। इस प्रकार यह स्पश्ट है कि श्री कुल्जुम स्वरुप की भाषा में माया, कुदरत और दज्जाल एकार्थवाची शब्द हैं।

भी आउध अमृत रूप रस, छल बल वल अकल।
कोमल कुटिल अंग सीतल, चंचल चतुर चपल।।६।।

शब्द, स्पर्श, रुप, रस और गन्ध ये दज्जाल के ऐसे हथियार है जो जीव को अमृत के समान प्रिय लगते हैं। इनका छलरूप बल इतना टेढ़ा होता है कि वह जीव की बुद्धि को भ्रमित कर देता है। दज्जाल की शक्ति कुटिल हृदय वाली उस गणिका (वेश्या) के समान है जो अपने कोमल और शीतल (मधुर) अंगों तथा चंचल नेत्रों के चतुराई भरे हाव-भाव से पुरूष (जीव) को अपने मोह जाल में फंसा लेती है।

भावार्थ- संसार का प्रत्येक पदार्थ त्रिगुणात्मक पाँच तत्वों से ही बना होता है। इसलिये संसार के सभी सुखों को ५ भागों (शब्द, स्पर्श, रुप, रस और गन्ध) में बांटा गया है। इनके उपभोग की इच्छा ही जीव को जन्म-मरण के चक्र में फंसाये रखने का मूल कारण है। उपरोक्त चौपाई में दज्जाल की शक्ति को उस गणिका के रुप में दर्शाया है, जिसके हृदय में पुरूष (जीव) के आनन्द रूपी धन को लूटने के लिये कुटिलता भरी होती है। वह अपने अंगों के कोमल सौन्दर्य तथा नेत्रों के चपल कटाक्ष रूपी बाणों के चतुर प्रहारों से इतना मोहित कर देती है कि उसके सामने प्राणी असहाय हो जाता है और भव बन्धन से निकल नहीं पाता।

विषय सुख क्षणिक होता है, और अशान्ति को उत्पन्न करता है। यही कारण है कि उसकी उपमा चंचल नेत्रों से की गयी है। सुखों के भोग के विवेकहीन आकर्षण को 'चपल'

शब्द से सम्बोधित किया गया है, जबकि ज्ञान और वैराग्य के भावों में डूबी हुई तपस्विनी, योगिनी या साध्वी नारी के नेत्रों को अति शान्त और स्थिर रुप में दर्शाया जाता है।

जाकी अग्याएं अगनी चले, चले जिमी और जल।
वाउ भी हुकम पर खड़ा, ऐसा दज्जाल का बल।।१०।।

दज्जाल की शक्ति ऐसी है कि इसकी आज्ञा से अग्नि में क्रियाशीलता दिखायी देती है। धरती, जल और वायु भी निरन्तर अपनी क्रियाशीलता दिखाते हुए उसके आज्ञा पालन में तल्लीन रहते हैं।

भावार्थ- दज्जाल कोई चेतन प्राणी नहीं है जो वायु, जल, अग्नि और पृथ्वी तत्व को आदेश देगा। वस्तुतः प्रकृति के सभी कार्य ब्रह्म की उस सार्वभौम एंव सार्वकालिक सत्ता से स्वाभाविक रुप से निरन्तर होते रहते हैं। प्रकृति की सभी क्रियाओं में ब्राह्मी सत्ता द्वारा स्थापित की गयी एक नियम बद्धता है जिसका कभी भी उल्लघंन नहीं हो सकता। सूक्ष्म अणु परमाणु और हिग्स बोसोन्स से लेकर आकाश गंगाओं तक को एक शाश्वत नियम का पालन करना पड़ता है। उस नियम को भंग करने का परिणाम है प्रलय। काव्य की भाषा में यही छायावाद है। साहित्य की आलंकारिक भाषा में ब्रह्म के निर्देशों को सूक्ष्मतम् प्रकृति (दज्जाल) का निर्देश मानकर, यहां वर्णन किया गया है।

ए दज्जाल बड़ा जोरावर, मूल गफलत याके साथ।
मनसा वाचा करमना, ए सब इनके हाथ।।११।।

यह दज्जाल बड़ा ही शक्तिशाली है। सृष्टि के प्रारम्भ से ही संशय रुपी अस्त्र इसके साथ रहता है। मनुष्य स्वभावतः अपने मन, वाणी एंव कर्म से संशय के अधीन ही रहता है।

भावार्थ- मनुष्य को यथार्थ ज्ञान समाधि अवस्था में ही प्राप्त होता है, किन्तु उस अवस्था को प्राप्त करने वाले लाखों करोड़ों में कोई एक होता है। इसी प्रकार सत्य को ग्रहण करने वाली ऋतम्भरा प्रज्ञा भी सम्प्रज्ञात समाधि से ही प्राप्त होती है जिस तक हजारों लाखों में कोई एक ही पहुँचता है। संसार के शेष सभी मनुष्य चाहें वे कितने ही बड़े विद्वान क्यों न हो, किसी न किसी रुप में संशय से ग्रस्त रहते ही हैं। यह प्रकृति के बन्धन के कारण होता है।

जुध बड़ा दज्जाल का, लिए जो सारे जीत।
भागे भी ना छूटहीं, कोई ऐसा बड़ा पलीत।।१२।।

दज्जाल से युद्ध करना बड़ा ही कठिन कार्य है। इसने अपनी शक्ति से समस्त प्राणी-वर्ग को जीत लिया है। यह इतना नीच है कि यदि कोई भागना भी चाहता है तो भी

इसके बन्धनों से छूट नहीं पाता है।

भावार्थ-उपरोक्त चौपाई में सांकेतिक रुप से उन विरक्त साधु, महात्माओं तथा फकीरों का वर्णन किया गया है जो संसार के सुखों का मोह छोड़कर इसलिये वैराग्य धारण करते हैं कि वे बन्धन मुक्त होकर परमात्मा का भजन कर सकें। दुर्भाग्यवश दज्जाल का बन्धन विरक्त जीवन में भी नहीं छूटता।

सुर बड़े इन जहान में, जिन किए सामें बल।
ताबे अपने कर लिए, बाए गले सांकल।।१३।।

अध्यात्म जगत के बड़े-बड़े वीर कहे जाने वाले योगियों, ज्ञानियों तथा तपस्वियों ने दज्जाल को जीतने के लिये अपनी पूर्ण शक्ति लगायी। किन्तु दज्जाल ने उनके गले में फन्दा डालकर उन्हें अपने अधीन कर लिया।

भावार्थ- वायु, जल तथा पत्तों का सेवन करके कठोर तप करने वाले विश्वामित्र तथा पराशर भी माया के बन्धन में फंस गये। इसी प्रकार दधीचि, सौभरि एंव नीमि जैसे महर्षि भी माया के बन्धनों से बच नहीं पाये। हिमालय में कठोर साधना का संकल्प लेकर जाने वाले कितने महात्मा भी अपनी जटायें कटवाकर मोह वश गृहस्थ जीवन मे प्रवेश कर जाते हैं।

छीन लिए बल सबन के, जो सूरमें बड़े केहेलाए।
बांध्या जो कोई बल करे, तो बड़े जो गोते खाए।।१४।।

वैराग्य मूर्ति, तपोधन तथा योगिराज कहे जाने वालों की भी शक्ति को इस दज्जाल ने छीन लिया। इससे लड़ने के लिये जो अपनी शक्ति का प्रदर्शन करता है उसे दज्जाल अपने मोह पाश में बांध लेता है और संसार सागर में गोते खाने के लिये डूबो देता है।

भावार्थ- एक सत्य घटना इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय है। हिमालय के बर्फीले भाग में रहने वाले एक महान योगी थे। जब वे ध्यान में बैठते थे तो आग का अंगारा भी यदि उनकी जाघं पर रख दिया जाता था तो उन्हें पता नहीं चलता था। दुर्भाग्यवश, वे एक बार हिमाचल प्रदेश में भ्रमणार्थ गये। एक अति सुन्दर लड़की पर आसक्त होकर उन्होंने उससे विवाह कर लिया और अपनी साधना खो बैठे।

यह संशय होता है कि जब इतने बड़े-बड़े ऋषि-मुनि और योगी-तपस्वी माया से हार जाते हैं तो जन सामान्य क्या करे? क्या वह हारने के भय से भक्ति के मार्ग पर चलना ही बन्द कर दे?

संक्षेप में इतना ही कहा जा सकता है कि उपरोक्त दृष्टान्तों में माया से हारने में प्रमुख कारण है- प्ररब्रह्म के प्रति सर्वस्व समर्पण एंव माधुर्य भावना में कमी, स्वयं के पुरुषत्व भाव की प्रबलता एवं पूर्व जन्मों के भोग जन्य संस्कारों के उदित हो जाने पर प्रेमा-भक्ति द्वारा उसे दग्ध न कर पाना। हमेशा यह ध्यान रखना चाहिए कि एक पल के लिये भी की गयी परमात्मा की भक्ति व्यर्थ नहीं जाती है। उसमें निष्काम भाव से लगे रहना चाहिए।

जो बुजरक बड़े कहावहीं, तिन जुध किए मिल मिल।
सो फरिस्ते उलटाए के, ले डारे गफलत दिल।।१५।।

संसार में बड़े-बड़े योगियों, यतियों तथा विद्वानों ने मिलकर दज्जाल से युद्ध किया किन्तु फरिश्ते ने उनके हृदय में संशय उत्पन्न कर दिया और उन्हें मार्ग से विमुख कर माया में फंसा दिया।

भावार्थ- इस चौपाई में यह संशय होता है कि वह फरिश्ता कौन है?अब तक के निष्कर्श से तो यही सिद्ध हो रहा था कि दज्जाल जड़ प्रकृति का पुल्लिंग वाचक शब्द है। इसी प्रकरण की २८ वीं चौपाई से भी यह सिद्ध होता है कि अजाजील फरिश्ते का ही यहां प्रसंग है-

फरिश्ता चौदे तबको, फिरवल्या सब पर।
हुकम चलाया अपना, कोई रहया न तावे बिगर।।

यह सर्वमान्य सिद्धान्त है कि जड़ और चेतन दो अलग-अलग पदार्थ है। यदि प्रकृति का पुल्लिंग शब्द दज्जाल है तो यह नाम उस चेतन फरिश्ते का नहीं हो सकता, जिसे अस्राफील की तरह ही अक्षर ब्रह्म का फरिश्ता माना गया हो। अजाजील असराफील,इन दोउ की असल एक।

प्रश्न यह है कि अक्षर ब्रह्म का फरिश्ता दज्जाल कैसे हो सकता है?क्या अक्षर ब्रह्म स्वंय अपनी ही सृष्टि के मानवों को अपने फरिश्ते के द्वारा माया में भटकाते रहते है? यदि ऐसा है तो भक्ति ही क्यों करे? वास्तविकता को जानने के लिये दार्शनिक सिद्धान्तों की गहराई में जाना आवश्यक है-

सत्व, रज और तम ये प्रकृति के तीन पदार्थ है जिनकी साम्यावस्था में प्रलय का रुप होता है और विषमावस्था में सृष्टि के सृजन का। सत्व का गुण है ज्ञान। रज का गुण है कर्म

तथा तम का गुण है बल। सभी विकारों की जड़ तम ही है किन्तु यदि तम न रहे तो सृष्टि का अस्तित्व भी नहीं रहेगा। इस त्रिगुणात्मक सृष्टि में उत्पत्ति के साथ विनाश का होना अनिवार्य है, अन्यथा सृष्टि का व्यवहार ही रुक जायेगा।

मनोविकारों तथा अज्ञानता को हटाने के लिये तम को न्यूनतम स्तर पर तो ले जा सकते हैं किन्तु पूर्णतया समाप्त नहीं कर सकते क्योंकि तीनों पदार्थों (गुणों) के परमाणुओं की विषमावस्था ही सृष्टि प्रक्रिया को प्रारम्भ करती है। तमोगुण हटा देने पर न तो शरीर रहेगा और न सृष्टि।

समाधि में त्रिगुणातीत अवस्था होती है। उस समय अन्तःकरण निष्क्रियता जैसी स्थिति में होता है और जीव अपने शुद्ध स्वरुप में स्थित होकर ज्ञान, साक्षात्कार तथा आनन्द का रसपान करता है। समाधि टूटने के पश्चात् ही अन्तःकरण को उसकी अनुभूति हो पाती है। इस सम्बन्ध में उपनिशद् का यह कथन देखने योग्य है-

यदा पंचावयव तिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा सह ।

बुद्धिः न विचेष्टते आहुस्तमं परमां गतिम्।। कठो.।।

अर्थात् पांचों इन्द्रियां जब अपने विषयों के ज्ञान सहित मन में लीन हो जाती है तथा मन और बुद्धि में कोई भी क्रिया नहीं होती, वही परमगति है।

आदि नारायण (अजाजील) को दोषी बनाने का यही तर्क दिया जा सकता है कि उसने प्राणियों को विषयों एवं अज्ञानता में भटकाने के लिये रज एवं तम का निर्माण ही क्यों किया? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि उसने रज एवं तम के बन्धन से मुक्त होने के लिये सत्व की उपस्थिति भी तो की है। यदि वेदों या अन्य धर्म-ग्रन्थों में यह लिखा होता कि अक्षरातीत की भक्ति न करके मात्र मेरी भक्ति करो तो अजाजील को दोषी बना सकते थे कि वह किसी को भी परब्रह्म की राह पर नहीं जाने देता।

यह सृष्टि एक परीक्षा स्थली है जिसमें ज्ञान-अज्ञान, पाप-पुण्य, शुभ-अशुभ, धर्म-अधर्म दोनों कम या अधिक मात्रा में हमेशा से ही रहे हैं और हमेशा ही रहेंगे। इसमें से किसी को भी सदा के लिये नहीं हटाया जा सकता। किसी भी धर्मग्रन्थ में यह कहीं भी नहीं लिखा है कि मांस खाओ, हिंसा करो या विषय भोगों में लिप्त रहकर परमात्मा को भूल जाओ। यह मनुष्य के ऊपर है कि वह अपने विवेक से निर्णय ले कि वह धर्म या अधर्म अथवा सात्विकता या तामसिकता में से किसका चयन करेगा। ऐसी स्थिति में आदि नारायण को परब्रह्म की राह में बाधक मानना और दज्जाल कहना कदापि उचित नहीं।

उदाहरण के लिये किसी राज्य में एक अपरिचित व्यक्ति आता है, जिसके साथ उसके राज्य के दुष्ट जन क्रूरता का व्यवहार करते हैं। इस पर वह व्यथित स्वर में राजा का ही नाम लेकर खीज भरे शब्दों में कोसते हुए कहता है कि यह कैसा राजा है जिसके राज्य में आते ही मेरी यह दुर्दशा हो गयी? अतिश्योक्ति में वह राजा के प्रति और अधिक कटु शब्दों का प्रयोग करने लगता है।

ठीक, यही स्थिति कुर्आन, बाइबल आदि कतेब ग्रन्थों में आदि नारायण के सम्बन्ध में है। प्रकृति के पुरुष वाचक शब्द दज्जाल को दोषी कहते-कहते अजाजील के ही शिर पर ठीकरा फोड़ दिया जाता है, जो अनुचित है। आदि नारायण तो अक्षर ब्रह्म के स्वाप्निक स्वरुप हैं। वे चाहकर भी सत्व, रज और तम में से तम को हटा नहीं सकते क्योंकि उसी पर तो कार्य जगत का अस्तित्व टीका हुआ है। तमोगुण से ग्रसित मन को ही इब्लीश (शैतान) के वशीभूत होने वाला मन कहा जाता है जो मनुष्य को पाप कर्मों में फँसाता है। ऐसी स्थिति में अजाजील को दोषी नहीं कहा जा सकता। वह तो द्रष्टा बनकर कर्म-फल के अनुसार सृश्टि की व्यवस्था करता है।

इस प्रकरण की पन्द्रहवी चौपाई में जो कहा गया है कि अजाजील फरिश्ते ने महान् योगियों को भी संशयग्रस्त करके पुनः माया में फंसा दिया, तो यह कथन आलंकारिक भाषा में है और उसका आशय यह है कि सम्प्रज्ञात समाधि तक पहुँचने वाले योगी महाकारण प्रकृति (मोह सागर) में ब्रह्मानन्द की जो छाया पड़ती है, उसे ही ब्रह्मानन्द समझ बैठे और आगे बढ़ने की अपेक्षा संतोष धारण कर शान्त हो गये। इसमें आदि नारायण का क्या दोष है?

आदि नारायण का प्रकटन मोह सागर में है तो स्वाभाविक है कि उसमें अव्याकृत के सुख की छाया रहेगी। यदि महान योगी भी अपनी अस्मिता को समाप्त कर प्रेम की माधुर्यता एंव पुरुशार्थ के द्वारा निराकार मण्डल (मोह सागर) को पार नहीं कर पाते हैं, तो इसके लिये वे स्वंय दोषी है, आदि नारायण नहीं। योगियों की चूक एंव प्रकृति रुप बाधा को आदि नारायण (अजाजील) के नाम से दर्शाना काव्यमयी आलंकारिक भाषा है।

अत्र एष देवः स्वप्ने महिमानमनु भवति।। प्रश्न उपनिशद्।।४/५ में मन को देवता कहा गया है। रज और तम से आक्रान्त मन ही जीव को माया में भटका देता है। इसी को कतेब पक्ष में फरिश्ता कहा गया है

योगेश्वर श्री कृश्ण ने गीता ७/१४ में कहा है कि 'दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया' निश्चय ही मेरी त्रिगुणात्मिका माया को पार कर पाना बहुत कठिन है। आदि

नारायण की माया रुप दज्जाल के द्वारा प्राणियों को मोहित किये जाने से भी आदि नारायण को दोषी बनाने की प्रवृत्ति चल पड़ी है।

ए जुध करे सबनसों, आप नजर न आवे किन।
दज्जाल जोर करामात, सब किए आप से तन।।१६।।

यह दज्जाल सबसे युद्ध करता है किन्तु स्वंय किसी को भी दिखायी नहीं देता। दज्जाल की विशेष चमत्कारिक शक्ति यह है कि उसने सभी प्राणियों को अपने जैसा अर्थात् अज्ञान रुप भ्रम से ओत-प्रोत कर दिया है।

कोई न छोड़्या दज्जालें, जीत लिए सकल।
ऐसे अंधे कर लिए, कोई सके न काहूं चल।।१७।।

दज्जाल ने किसी भी प्राणी को नहीं छोड़ा। उसने सभी को जीत कर अपने वश में किया और मोह में इतना अन्धा बना दिया कि कोई भी परब्रह्म के प्रेम मार्ग पर चल ही नहीं पा रहा है।

सब अंग बाँधी दुनियां, सारे हुए बेअकल।
अबलों किन देख्या नहीं, कुफर करामात कल।।१८।।

दज्जाल ने सबके अन्तःकरण (हृदय) पर अपना इस प्रकार आधिपत्य जमा लिया है कि सभी लोग मूर्खों की भांति उसके अधीन होकर रहने के लिये विवश हैं। सबके हृदय में नास्तिकता के भाव भरने वाले दज्जाल की इस चमत्कारिक कला को कोई भी आज तक स्पश्ट रुप ने नहीं जान सका है।

भावार्थ- 'यस्मानन ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तंतू मे मनः शिव संकल्पमस्तु' यजु ३४/३ में कहा गया है कि जिस मन के बिना कोई भी कार्य नहीं किया जा सकता, मेरा वह मन कल्याण कारी संकल्प करने वाला हो। तमोगुण से ग्रसित मन भला परब्रह्म के प्रेम में कैसे समर्पित हो सकता है? तमोगुण का छोटा सा संस्कार गुप्त रुप से बढ़ते-बढ़ते किस प्रकार बड़े से बड़े योगी, तपस्वी को पथ भ्रष्ट कर देता है, यह उन्हें भी पता नहीं चल पाता। मात्र वायु, जल और पत्तों का आहार करने विश्वामित्र एंव पराशर जैसे ऋषि भी किस प्रकार माया के बन्धन में फंस गये, वे स्वंय भी उस समय नहीं जान पाये। उपरोक्त चौपाई में यही तथ्य दर्शाया गया है।

या बिध बांधी दुनियां, खोल ना सके कोई बंध।
राह हक की छुड़ाए के, ले डारे गफलत फंद।।१९।।

दज्जाल ने समस्त संसार को इस प्रकार अपने बन्धनों में बांध लिया है कि कोई भी उसे खोल नहीं पाता है। वह अज्ञान रुप होकर मानव हृदय में इस प्रकार बस जाता है कि परब्रह्म के प्रेम मार्ग से हटाकर मायावी बन्धनों में फंसा देता है।

दुनियां बाहेर देखहीं, अजूं आया नहीं दज्जाल।
बंदगी करते आवसी, तब लड़सी तिन नाल।।२०।।

संसार के लोग यही समझते हैं कि दज्जाल कहीं बाहर रहता है। जब हम भक्ति भाव में होंगे और उस समय वह आयेगा तो हम लड़ेगे। किन्तु आश्चर्य है कि आज तक किसी ने भी शरीरधारी दज्जाल को भक्ति के समय आते हुए नहीं देखा है।

भावार्थ- यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड त्रिगुणात्मक है तथा अन्तःकरण भी त्रिगुणात्मक है। मन के किसी भी कोने में छिपा हुआ तमोगुण का संस्कार जब उभरने लगता है तो भक्ति-भाव विकृत होने लगता है। इसे ही दज्जाल का आना कहते हैं। वह बाह्य आंखों से दिखायी नहीं पड़ता। सात्विक आहार की अल्प मात्रा का सेवन श्रद्धा, समर्पण, पुरुषार्थ, ज्ञान, वैराग्य आदि अस्त्रों से दज्जाल का सरलता पूर्वक सामना किया जा सकता है।

खाए गया सबन को, अजूं देखत नाहीं ताए।
तिनसे लड़ने बाहेर, बांध बांध कमरे जाए।।२१।।

दज्जाल रुप अज्ञान ने सभी को निगल लिया है अर्थात् अपने अधिकार में कर लिया है, फिर भी उसे कोई देख नहीं पा रहा है। लोग उससे लड़ने के लिये कमर में तलवार बांधकर बाहर खोजते-फिरते हैं।

भावार्थ- मक्के में हज के समय दज्जाल को पत्थर मारने की परम्परा है जो उचित नहीं। वह कोई स्थूल पदार्थ नहीं है जिसे पत्थरों से मारा जा सके। उसे मारने के लिये तो ज्ञान, भक्ति, वैराग्य, समर्पण एंव प्रेममयी ध्यान के अभ्यास रुपी पत्थर चाहिये।

जुध याको जाहेर कह्या, देसी बंदगी छुड़ाए।
आप अंदर से उठसी, जीत्यो न काहू जाए।।२२।।

दज्जाल से युद्ध का प्रत्यक्ष परिणाम यही कहा जाता है कि वह परब्रह्म की भक्ति से अलग कर देता है। वास्तविकता तो यह है कि वह मन के अन्दर से प्रकट होता है, इसलिये उसे कोई भी जीत नहीं पाता है।

जाहेर कहे जो माएने, ए तित भी रहे उरझाए।
लिखियां जो इसारतें, सो इनों क्यों समझाए।।२३।।

जब शरीयत से जुड़े हुए लोग दज्जाल से सम्बन्धित कथानकों का ही अभिप्राय समझ नहीं पाते तथा उनमें उलझ जाते हैं तो कुर्आन में परब्रह्म से सम्बन्धित जो बातें संकेतों में लिखी हुई हैं, उसका आशय ये कैसे जान सकते हैं?

तो कह्या नबिऐं इमन को, ला बारकला मुसल्मीन।
दई बारकला हिंद मुस्लिम, लिए सिर कलाम आकीन।।२४।।

मुहम्मद स.अ.व. ने यमन के लोगों से कहा कि यहां के मुसलमानों के लिये अल्लाह की ओर से कोई बरकत नहीं है। हिन्दुस्तान के मुसलमानों ने मेरे वचनों को सच्चे विश्वास के साथ ग्रहण किया है, इसलिये उन्हें ही बरकत है। मुझे वहां से ईमान की सुगन्धि आ रही है।

भावार्थ- हदीस-खात्मुलनबी में वर्णन है कि हजरत मुहम्मद मुस्तफा सलल्ल. पूर्व दिशा क ओर हाथ उठाकर रब से दुआ मांगते थे कि खैर तल्बो हिन्द मुस्लिम हिन्दुस्तान में रहने वाले लोगों को खैर (सौभाग्य) प्राप्त हो। जब उनके सहाबियों ने प्रश्न किया कि ए अल्लाह के रसूल सल्ल. आप हिन्दुस्तान के लिए क्यों दुआ कर रहें हैं? वह तो कुफ्रिस्थान हैं। तब आपने कहां कि मुझे वहां से ठण्डी हवाएं और ईमान की खुसबु आ रही है। इस प्रकार स्पष्ट हैं कि भारत में रहने वाले व्यक्ति काफिर नहीं हो सकते क्योंकि जिनके लिए पैगम्बर खुद दुआ करे तो कैसे काफिर हो सकता हैं (यह मोमिनों, इमाम महदी हुज्जतूत्ला और ईसा रूहल्लाह के प्रगट होने का प्रसंग हैं।)

कहा कहूं बल दज्जाल को, जोर बड़ा जालिम।
पेहेले पढ़े सब लिए, पीछे छोड़्या न कोई आलम।।२५।।

दज्जाल की शक्ति का मैं कितना वर्णन करुँ? यह बहुत ही अत्याचारी है। पहले तो इसने पढ़े लिखे विद्वानों को अपने अधीन किया, तत्पश्चात् संसार में किसी को भी नहीं छोड़ा।

नाम इमाम धरावहीं, पर फुरमान की ना सुध।
बरकत कलमें रसूल के, साफ होसी सब बिध।।२६।।

संसार में इमाम की उपाधि धारण करने वाले तो बहुत से लोग हैं किन्तु उन्हें कुर्आन की वास्तविकता का ज्ञान नहीं है। अब श्री प्राणनाथ जी के कुल्जुम स्वरूप से सभी को कुर्आन के रहस्य विदित हो जायेंगे जिससे उनके संशय समाप्त हो जायेंगे और वे निर्मल हो जायेंगे।

नजरों काहूं न आवहीं, करत गैब की मार।
कोई छूट्या मोमिन भाग के, और कर लिए सब कुफार।।२७।।

यह दज्जाल किसी को भी आंखों से दिखायी नहीं देता अपितु छिपकर मन के माध्यम से जीव को अपने वश में कर लेता है। केवल ब्रह्ममुनि ही भागकर इसके चंगुल से छूट पाते है। शेष जीवों को तो यह अपने अधीन कर लेता है और नास्तिक जैसा बना देता है।

भावार्थ- अपने प्रेम और अटूट विश्वास (इश्क तथा ईमान) के बल से ब्रह्ममुनि दज्जाल के बन्धनों से मुक्त हो जाते हैं। इसी प्रकार ईश्वरीय सृष्टि भी अपने अटूट विश्वास से दज्जाल के बन्धनों को काटने में सफल हो जाती हैं। जीव सृष्टि इश्क तथा ईमान से रहित होने के कारण प्रायः हमेशा ही इसके बन्धनों में फंसी रहती है।

फरिस्ता चौदे तबकों, फिरवल्या सब पर।
हुकम चलाया अपना, कोई रह्या न ताबे बिगर।।२८।।

चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में सर्वत्र ही आदि नारायण व्यापक है और सर्वत्र इसी का शासन है। इसके आदेश का उल्लंघन करने वाला कोई नहीं है।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में आदि नारायण (महाविष्णु) की सर्व व्यापकता को दर्शाया गया है। इसमें कहीं भी यह तो नहीं लिखा है कि वह दज्जाल या शैतान है। वस्तुतः दज्जाल तो जड़ प्रकृति का वह अज्ञान रुप अन्धकार है, जिसके आकर्षण में जीव फंसकर भवसागर से पार नहीं हो पाते। आदि नारायण तो मात्र इस मायावी जगत के शासन कर्ता हैं। प्रकृति के दोष को उसके शासक पर कैसे मढ़ा जा सकता है?

ओ जाने हम सीधा चलें, इन बिध राह मारत।
तो कही पुल–सरात, तरवार धार है इत।।२९।।

शरीयत(कर्मकाण्ड) के मार्ग पर चलने वाले सोचते हैं कि हम तो परमात्मा के सीधे और सच्चे मार्ग पर चल रहे हैं किन्तु वे यह नहीं जानते कि कर्मकाण्ड का मार्ग तलवार की धार पर चलने जैसा कष्टकारी है। इस प्रकार दज्जाल शरीयत की राह पर चलने वालों को परब्रह्म के प्रेम मार्ग से भटका देता है।

भावार्थ- शरीयत का मार्ग शरीर तथा इन्द्रियों से पूर्ण होता है। इससे हृदय की निर्मलता नहीं हो पाती हैं। यह दिखावे की ऐसी भक्ति है जिसमें भाग लेने वाला स्वंय को धन्य-धन्य तो समझता है किन्तु वह स्वंय नहीं जानता कि इस प्रकार की बहिर्मुखी भक्ति उसे परब्रह्म का साक्षात्कार नहीं करा सकती।

इस प्रकार की भक्ति वही लोग अधिक चाहते हैं जिन्हें अज्ञानता के अन्धकार ने ग्रसित कर रखा है और भक्ति के नाम पर प्रतिष्ठा पाना उनका विशेष लक्ष्य होता है। तरीकत, हकीकत तथा मारिफत की बन्दगी जहां शान्त चित्त से एकान्त में आराम पूर्वक बैठकर होती है, वहीं शरीयत की बन्दगी पूजा, पाठ, परिक्रमा, नमाज, हज (तीर्थयात्रा),

हवन, नदी-स्नान, आदि में शारीरिक कष्ट झेलना पड़ता है। इस प्रकार की बन्दगी में विषय-विकार रूपी शत्रु प्रबल वेग से आक्रमण करते रहते हैं। इसलिये इसे तलवार की धार पर चलने जैसा कष्टकारी कहा गया है।

ए आदम औलाद सब जानत, इन बदला मांग लिया हक पें।
क्यों छूटे बंध दुस्मन के, तो किन चल्या ना इनसें।।३०।।

सभी मनुष्य आदि आदम की ही सन्तान है। उन्हें यह अच्छी तरह से मालूम है कि अजाजील फरिश्ते ने अपनी बन्दगी के बदले परब्रह्म से सबको भटकाने का अधिकार मांग रखा है। ऐसी स्थिति में संसार के प्राणी इब्लीश (शैतान) के बन्धन से कैसे छूट सकते है?यही कारण है कि दज्जाल पर किसी भी मनुष्य का वश नहीं चलता है।

भावार्थ- यह कथानक आलंकारिक है। आदि नारायण के ही स्वप्न में इस सम्पूर्ण सृष्टि का कार्य चल रहा है। जिस क्षण अव्याकृत का स्वाप्निक मन आदि नारायण जागृत होगा अर्थात् उसे अपने मूल स्वरूप एंव धाम का पता चलेगा, उसी क्षण महाप्रलय हो जायेगा। जब तक आदि नारायण को निराकार से परे की सुधि नहीं होती तब तक उनके सांकल्पिक प्रतिबिम्ब रुप चेतन प्राणियों को निराकार से परे का ज्ञान कैसे होगा? यही आदि नारायण (अजाजील) के द्वारा संसार के सभी प्राणियों को निराकार से आगे जाने से रोकना है। दूसरे शब्दों में इसे परब्रह्म से विमुख रखना भी कह सकते हैं किन्तु इसमें आदि नारायण को दोषी नहीं माना जा सकता क्योंकि बिम्ब (आदि नारायण) जहां रहेगा, प्रतिबिम्ब (जीव) भी तो वहीं रहेगा। यह तो सैद्धान्तिक तथ्य है कि प्रतिबिम्ब कभी भी बिम्ब से आगे नहीं जा सकता। इसी दार्शनिक तथ्य को कथानक के रूप में कतेब ग्रन्थों में समझाया गया है, जिसे यथार्थ रूप में न समझने के कारण आदि नारायण को ही दज्जाल मानने की मिथ्या परम्परा चल पड़ी है।

क्यों करें जंग दज्जाल सें, काफर या मुसलमान।
औलाद आदम सब ताबीन, पातसाह दिलों सैतान।।३१।।

चाहे कोई नास्तिक हो या परब्रह्म पर अटूट विश्वास रखने वाला, कोई भी इस अज्ञान रूप दज्जाल से युद्ध कैसे कर सकता है?संसार के सभी मनुष्य तो आदि नारायण (अजाजील) के अधीन हैं और इनके हृदय में अज्ञान रूपी शैतान का आधिपत्य है।

तो क्या चले बंदन का, जिन दिल पर ए पातसाह।
सब जानें दुस्मन मारसी, हक तरफ चलते राह।।३२।।

ऐसी स्थिति में भला वे लोग कर भी क्या सकते है, जिनके हृदय में ही अज्ञान (मोह) रूपी कलियुग (दज्जाल) ने अपना निवास बना रखा है। वैसे तो यह बात सभी को

मालूम है कि यदि हम परब्रह्म की भक्ति के मार्ग पर चलेंगे तो यह दज्जाल हमें मार डालेगा अर्थात् भयंकर बाधायें खड़ी करेगा।

दिल मोमिन हक अर्स कह्या, तो इन दुनियां करी हराम।
पीठ दई मुरदार को, जिन दिलों अर्स आराम।।३३।।

ब्रह्मात्माओं के ही हृदय को परब्रह्म का धाम कहते हैं। इन्होंने सांसारिक सुखों के भोग को त्याज्य समझा है। इनके हृदय में परमधाम का अखण्ड सुख रहता है, इसलिये इन्होंने इस नश्वर संसार से मुख मोड़ लिया होता है।

जो दिल कह्या अर्स हक का, तिन तरफ जले काफर।
मार ना सके राह मोमिनों, सब बंधे इनों बिगर।।३४।।

ब्रह्ममुनियों के हृदय को परब्रह्म का धाम कहा गया है। उनके प्रेम मार्ग पर संसार के नास्तिक लोग नहीं चल सकते। शैतान ब्रह्मांगनाओं को अपने प्रेम मार्ग पर चलने से रोक नहीं सकता। इनके अतिरिक्त सभी जीव दज्जाल के बन्धनों में बंधे होते हैं।

मोमिन उतरे नूर बिलंद से, तो कह्या अर्स कलूब।
तिन तरफ क्यों आए सके, जिनका हक मेहेबूब।।३५।।

ब्रह्ममुनि परमधाम से आये हैं, अतः इनके हृदय को परब्रह्म का धाम कहा गया है। अक्षरातीत परब्रह्म जिनके प्रियतम हैं, ऐसे ब्रह्ममुनियों की तरफ आने (आंख उठाने) का भी साहस दज्जाल कैसे कर सकता है?।

सब साफ किए दिल मोमिन, जब इत आए इमाम।
जिन दिल पातसाह सैतान, किए पाक जलाए तमाम।।३६।।

जब श्री प्राणनाथ जी संसार में प्रकट हुए तो उन्होंने तारतम ज्ञान के द्वारा ब्रह्मात्माओं के हृदय को संशय रहित कर दिया। जिन जीवों के हृदय में शैतान का स्वात्मिव था, उन्हें भी प्रायश्चित की अग्नि में जलाकर पवित्र किया।

भावार्थ- संसार के सभी जीव तो योगमाया के ब्रह्माण्ड में ही प्रायश्चित की अग्नि में जलकर पवित्र होगें।उपरोक्त चौपाई में उन जीवों के पवित्र होने का वर्णन है जो श्री जी की शरण में आकर तारतम ज्ञान का प्रकाश पा गये।

खबर न पाई काहूं ने, जो दिल ऊपर सैतान।
साफ किए सबन को, जाहेर कर हुकम सुभान।।३७।।

आज तक कतेब पक्ष में किसी को भी यह ज्ञात नहीं था कि दज्जाल उनके हृदय में ही बैठा होता है। परब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथ जी ने अपने आदेश की छत्रछाया में सबके

(शरणागतों के) हृदय को निर्मल कर दिया।

भावार्थ- वैदिक मनीषियों को यह ज्ञात था कि माया से ग्रसित होकर मन (कलियुग , दज्जाल) जीव को भी अपने अधीन कर लेता है और उसे बूरे कार्यों को करने के लिये विवश करता है। इस सम्बन्ध में महाभारत का एक घटनाक्रम अति प्रसिद्ध है, जिसमें दुर्योधन कहता है कि -

जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिः जानामि अधर्मम् न च मे निवृत्तिः।

केनापि देवेन हृदि स्थितेन, यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि।। महाभारत अश्वमेध प. ५०/३६ मैं यह जानता हूँ कि धर्म क्या है, किन्तु उसमें मेरा मन नहीं लगता। मैं यह भी जानता हूँ कि अधर्म क्या है, किन्तु मेरा मन उससे हटता नहीं है। कोई ऐसा देव है जो मेरे हृदय में बैठकर मुझसे सब कुछ करवाता है। वह जैसा कहता है, मैं वैसा ही करता हूँ।

जाहेर काहूं ना हुआ, छिप कर लिए सब।
इमाम आए जाहेर हुआ, ए जो दज्जाल न देख्या किन कब।।३८।।

आज दिन तक कतेब पक्ष में दज्जाल का भेद स्पष्ट नहीं हुआ था। सभी यही मानते थे कि वह छिपकर रहता है तथा परमात्मा की भक्ति के समय आक्रमण कर देता है। श्री जी साहब जी के प्रकट होने पर उस दज्जाल की वह सम्पूर्ण वास्तविकता तारतम ज्ञान द्वारा उजागर हो गयी जिसे आज दिन किसी ने भी नहीं जाना था (देखा था)।

जब इमाम इत आए, तब क्यों रहे ढांप्या चोर।
मोमिन पेहेले छुड़ाए के, दिए दुनी के बंध तोर।।३९।।

अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी (इमाम महदी) के संसार में प्रकट हो जाने पर सबके विश्वास को चुरा लेने (खण्डित कर देने) वाला शैतान भला कैसे छिपा रह सकता था?श्री जी ने तारतम ज्ञान एवं अपने आदेश द्वारा सबसे पहले ब्रह्मात्माओं को इसके बन्धन से मुक्त किया, तत्पश्चात् संसार के जीवों को भी दज्जाल से मुक्त कर दिया।

भावार्थ-अटूट विश्वास और श्रद्धा की कमी के कारण जीव सृष्टि बाद में ही दज्जाल से मुक्त हो पाती है।

ए जो जीती दज्जालें दुनियां, कर लई थी निरबल।
सो बल सबको देय के, दिए सुख नेहेचल।।४०।।

शैतान ने संसार के सभी प्राणियों को जीतकर उन्हें आत्मबल की दृष्टि से निर्बल बना दिया था। श्री प्राणनाथ जी ने सबके हृदय में तारतम ज्ञान द्वारा युगल स्वरूप (श्री राज श्यामाजी) की छवि अंकित की, जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें अखण्ड सुख की प्राप्ति हुई।

लिख्या है फुरमान में, मेंहेदी आवेगा आखिर।
उड़ाए मारसी दज्जाल को, राह देसी सीधी कर।।४१।।

कुर्आन में यह बात स्पष्ट रूप से लिखी है कि कियामत (आखिरत) के समय इमाम महदी का प्रकटन होगा। वे अपने अलौकिक तारतम ज्ञान से दज्जाल की शक्ति को नष्ट कर देंगे और सभी को परमधाम का सीधा प्रेम- मार्ग बतायेंगे।

भावार्थ-कुर्आन के पा. २ सू २ आ. १६४ "इन्न फी खल्किस्समावाति वल्अर्जि वख्तिलाफिल्लैलि वन्नहारि वत्फुल्किल्ति तज्रि फिल्बह्रि बिमा यन्फअुन्नास व मा अन्जलल्लाहु मिनस्समाइ मिम्माइन् फ अह्या बिहिल्र्ज बऽ्द मौतिहा व बस्स फीहा मिन् कुल्लि दाब्बतिन् व तस्रीफिर्रियाहि वस्सह्राबिल्-मुसख्खरि बैनस्समाइ वल्अर्जि ल आयातिल्-लिकौमिय्यऽ्लून" अर्थात् बेशक आसमानों और जमीन के पैदा करने में, और रात और दिन के आने जाने में, और कस्तिओं में जो लोगों की फायदे की चीजे समुद्र में लेकर चलते हैं, और मेह में जिसको अल्लाह ने आकाश से बरसाया हैं, फिर उसके जरिए जमीन को उसके मरे उजड़े पीछ जिन्दः किया लहलहाया है, और उसमें हर किस्म के जानवर फैलाए, और हवाओं को फेरने मे, और बादल में जो अल्लाह के हुक्म से आकाश और धरती के बीच काम में लगे हैं-इन सब में उन लोगो के लिए जो समझ रखते हैं अल्लाह की कुदरत की निशानियां हैं।

अब हुए सब जाहेर, कुफर करामात कल।
महंमद मेंहेदी के प्रताप से, जासी बंध सब जल।।४२।।

अब दज्जाल के द्वारा फैलायी हुई नास्तिकता तथा मायावी शक्तियां उजागर हो गयी हैं। श्री प्राणनाथ जी की अलौकिक शक्ति से अब दज्जाल के सभी बन्धन जल जायेंगे (समाप्त हो जायेंगे)।

कुदरत रूप दज्जाल को, किनहूं न जान्या जाए।
तब सबों को सुध परी, जब ईसे दिया उड़ाए।।४३।।

यह दज्जाल माया का स्वरूप है। इस रहस्य को अब तक कोई भी जान नहीं पाया था। जब सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी ने तारतम ज्ञान द्वारा सबके हृदय से इसे निकाल (नश्ट कर) दिया तब सभी को इसकी वास्तविकता का ज्ञान हुआ।

भावार्थ-सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी के चरणों में आने वाले सुन्दरसाथ उनकी दिव्य चर्चा तथा आडीका लीला द्वारा परब्रह्म के प्रेम में डूब गये। ऐसी स्थिति में भला दज्जाल सुन्दरसाथ के हृदय में कैसे रह सकता था?

इमाम तो मारे इनको, जो ए आपे होए वजूद।
इमाम के आवाज से, होए गया नाबूद।।४४।।

यदि शैतान का कोई स्थूल रूप होता तो श्री जी (इमाम महदी) इसे मारते भी। वह तो उनकी तारतम वाणी की गूंज से ही नष्ट हो गया अर्थात् जिसके हृदय में ब्रह्मज्ञान का प्रकाश हो जायेगा वह माया के सभी बन्धनों को नष्ट कर देगा।

जब इमाम जाहेर हुए, तब क्यों रेहेवे अंधेर।
अपनी तरफ सबन के, लिए दुनी दिल फेर।।४५।।

अब श्री प्राणनाथ जी के प्रकट हो जाने के पश्चात् भी अज्ञानता का अन्धकार भला कैसे बना रह सकता है? श्री जी ने अपने परमधाम के दिव्य ज्ञान से सभी प्राणियों का ध्यान संसार से हटाकर अपनी ओर कर लिया है।

जो कबहूं प्रगटे होते, तो होत कुफर को नास।
जब इमाम जाहेर हुए, तब नूर हुआ उजास।।४६।।

अब श्री प्राणनाथ जी के प्रकट होने से तारतम ज्ञान का प्रकाश फैल गया है जिससे शैतान रूपी अज्ञानता का अन्धकार नष्ट हो गया है। यदि श्री जी साहब जी पहले ही प्रकट हो गये होते तो दज्जाल की शक्ति तभी समाप्त हो गयी होती।

मेंहेदी महंमद ढांपे ना रहें, जासों झूठ भी सांच होए।
ऐसा खसम जोरावर, यासें सुख पावे सब कोए।।४७।।

अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी के प्रकट होने से यह नश्वर संसार भी बेहद मण्डल में अखण्ड हो जायेगा। श्री जी की शक्ति अनन्त है। उनके चरणों की छत्रछाया में संसार के सभी प्राणी बेहद के अखण्ड सुख का रसपान करेंगे। परब्रह्म के ऐसे स्वरूप को भला माया का अन्धकार कैसे छिपाये रख सकता है?।

।।प्रकरण।।३१।।चौपाई।।१०६६।।

सनंध–इमाम के प्रताप की

इस प्रकरण में श्री प्राणनाथ जी की शक्ति की महिमा का वर्णन किया गया है।

प्रताप इमाम कहा कहूं, इन जुबां कह्यो न जाए।
तो भी नेक रोसन करूं, तुम लीजो चित ल्याए।।१।।

हे साथ जी! मैं आखरूल इमाम मुहम्मद महदी श्री प्राणनाथ जी के अनुपम प्रताप का वर्णन कैसे करूँ? वह इस जिह्वा से नहीं कहा जा सकता है, फिर भी मैं थोड़ा सा कहता हूँ। आप उसे एकाग्र चित्त से ग्रहण कीजिए।

ए नेक करूं इसारत, तुम सुनियो आखिर दिन।
पेहेले मिलसी रूह मोमिन, पीछे तो सब जन।।२।।

आप आखिरत के समय की बातें सुनिये। मैं थोड़े से संकेतों में कह रहा हूँ। सबसे पहले ब्रह्ममुनि ही श्री प्राणनाथ जी के चरणों में आयेंगे। इसके पश्चात् संसार के शेष लोग तारतम ज्ञान का प्रकाश पायेंगे।

ए सरत सोई जो आगे करी, हक इलम होसी जाहेर।
लिख्या है कुरान में, आया सो आखिर।।३।।

मुहम्मद स.अ.व. ने ११०० वर्ष पहले ही यह बात कही थी कि कियामत के समय परब्रह्म का दिया हुआ अलौकिक तारतम ज्ञान (इल्म ए लदुन्नी) प्रकट होगा। कुर्आन में लिखे हुए इस कथन के अनुसार अब वही कियामत (आखिरत) का समय आ गया है।

भावार्थ- कुर्आन पा. १७ सू. २२ अ. ४७ ''व यस्तऽजिलूनक बिल्अजाबि व लंय्युख्लिफल्लाहु बऽद व इन्न यौमन् इन्द रब्बिक कअल्फि सनतिम्मिम्मा तअुद्दुन'' अर्थात् और ऐ पैगम्बर! तुमसे सजा की जल्दी मचा रहे हैं कि कहां हैं तुम्हारा खुदाई अजाब?और अल्लाह तो कभी अपना वादा खिलाफी करने का नहीं। और कुछ शक नहीं कि तुम्हारे परवरदिगार के यहां का एक दिन तुम लोगों की गिनती के अनुसार हजार वर्ष के बराबर है। अजाब अपने नियत समय पर बरपा होकर रहेगा।

पारा २२ सूरत ३४ आयत २८-२९ ''व मा अर्सल्नाक इल्ला काफ्तल् लिन्नासि वशीरंव्व नजीरंव्व लाकिन्न अक्सरन्नासि ला यऽलमून'' (२८) ''व यकूलून मता हाजल्वऽदु इन कुन्तुम् सादिकीन्'' (२९)। और ये पैगम्बर हमने तुमको तमाम लोगों की तरफ भेजा है कि उनको अल्लाह की रहमत की खुशखबरी सुनाओ और अल्लाह के अजाब से डराओ मगर अक्सर लोग नहीं समझते(२८)। और ये काफिर तुमसे पूछते हैं कि बताओ अगर तुम सच्चे हो तो यह कियामत का वादा कब पूरा होगा? (२९)

पा.२८ सु ५९ आ १८ अय्युहल्लजीन आमनुत्तकुल्लाह वल्तन्जुर नप्सुम्मा कद्दमत् लिगदिन् वत्तकुल्लाह इन्नाल्लाह खबीरूम्-बिमा तऽतलून'' अर्थात् ऐ इमानवालों! अल्लाह से डरते रहों और हर आदमी को देखना चाहिए कि उसने कल यानी आखिरत के लिए बतौर आमाल क्या भेज रक्खा हैं। और अल्लाह से डरते रहो बेशक जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी खबर हैं।

सब्द गुझ पुकारहीं, सब में सचराचर।
सो सारे कदमों तले, जब आए इमाम आखिर।।४।।

कुर्आन के गुह्य रहस्यों के खुले हुए भेद पुकार-पुकार कर चर-अचर सम्पूर्ण जगत में यह घोषणा कर रहे हैं कि सबके आराध्य श्री प्राणनाथ जी आ गये हैं। अब संसार के सभी लोगों को कियामत के समय प्रकट होने वाले आखिरी इमाम श्री प्राणनाथ जी के चरणों में आना पड़ेगा।

भावार्थ-कियामत से पहले ग्यारह इमाम हो चुके हैं किन्तु किसी के भी आगे'महदी' शब्द का प्रयोग नहीं हुआ हैं। आखिरी इमाम के रूप में स्वंय परब्रह्म की आवेश शक्ति ही लीला करेंगी।

पारा १ सूरत २ आयत ६० "व इजिस्तस्का मुसा लि कौमिह फ कुल्नज़्रिब् बि असाकल्-हजर फन्फजरत् मिन् हुस्नता अश्रत अैनन् कद् अलिम कुल्लु अुनासिम-मश्रबहुम् कुलू वश्रबू मिर्रिज़्किल्लाहि व ला तऽसौ फिलफअजि मुफ्सिदीन" अर्थात् और यह घटना भी याद करो जब मूसा ने अपनी जाति के लिए पानी की प्रार्थना की तो हमने कहां कि ऐ मूसा! अपनी लाठी पत्थर पर मारो। लाठी मारने पर पत्थर से बारह चश्में फूट निकले। सब लोगों ने अपना घाट मालूम कर लिया। उस समय हिदायत हुई थी कि अल्लाह की दी हुई रोजी खाओ पीओ और जमीन में न फैलाते फिरो।

उपरोक्त चौपाई का कथन अतिश्योक्ति अलंकार की भाषा में है क्योंकि संसार के सभी लोगों तक अभी तारतम ज्ञान का प्रकाश नहीं पहुँचा है। यह लीला योगमाया के ब्रह्माण्ड में ही होगी।

खेल पाया इप्तदाए से, आप असल बका घर।
सब सुध हुई प्रताप तें, जब आए इमाम आखिर।।५।।

श्री प्राणनाथ जी के इस संसार में प्रकट होने के कारण उनकी कृपा दृष्टि से सभी को यह बोध हो गया कि यह माया का संसार क्यों बनाया गया है?हम कौन हैं तथा हमारा अखण्ड मूल घर परमधाम कहां है और कैसा है?

ए जो खेल था कुदरती, काहूं खोल न देखी नजर।
सो उडा़ए दई पेड़ जुलमत, जब आए इमाम आखिर।।६।।

आज तक कोई भी इस मायावी संसार को अपनी अन्तर्दृष्टि से पूर्ण रूपेण पहचान नहीं पाया था। जब श्री प्राणनाथ जी आये तो उन्होंने तारतम ज्ञान द्वारा जगत के मूल तत्व

मोह (अज्ञान, संशय) को ही जड़ से नष्ट कर दिया जो सबके हृदय में बैठा हुआ था।

त्रिगुन त्रैलोकी मोह की, कहां तें हुई किन पर।
सो संसे न रह्या किन का, जब आए इमाम आखिर।।७।।

जब श्री जी इस संसार में आये तो तारतम ज्ञान द्वारा इस सम्बन्ध में किसी के भी मन में कोई संशय नहीं रह गया कि तीनों गुणों सत्व, रज और तम, पृथ्वी, स्वर्ग और बैकुण्ठ से युक्त चौदह लोकों, और मोह तत्व की उत्पत्ति कहां से हुई और किनके लिये हुई?

निरंजन निराकार तें, खेल रच्यो नारी नर।
ए सुध हुई सबन को, जब आए इमाम आखिर।।८।।

जब प्रियतम अक्षरातीत के चरण कमल इस संसार में पड़े तो सभी को इस रहस्य का बोध हो गया कि निराकार निरंजन (मोह तत्व) रूपी प्रकृति तथा आदि नारायण रूप पुरूष से इस सृष्टि की रचना कैसे हुई?

ए जो फरिस्ते नूर से, खेल तिने किया पसर।
ए गुझ सारों ने पाइया, जब आए इमाम आखिर।।९।।

अक्षर ब्रह्म के फरिश्ते अजाजील (आदि नारायण) से ब्रह्माजी (मैकाईल) तथा शिवजी (अजराईल) की उत्पत्ति हुई । ये इस ब्रह्माण्ड का संचालन करते हैं। इस रहस्य का ज्ञान भी श्री प्राणनाथ जी की छत्रछाया में हुआ।

काल सुन्य जड़ चेतन, ए सब हुए जाहेर।
ए धोखा किन का ना रह्या, जब आए इमाम आखिर।।१०।।

श्री जी के प्रकटन से तारतम ज्ञान के प्रकाश में यह सब स्पष्ट हो गया कि काल रूप महाशून्य (निराकार) क्या है?जड़ तत्व क्या है तथा उससे भिन्न चेतन तत्व क्या है? इस सम्बन्ध में किसी के भी मन में संशय नहीं रह गया।

वेद कतेब के माएने, सब दृढ़ हुए दिल धर।
किए मगज माएने जाहेर, जब आए इमाम आखिर।।११।।

जब आखरूल इमाम श्री प्राणनाथ जी इस संसार में आये तो उन्होंने चारों वेदों तथा कतेब (तौरेत, इंजील, जंबूर एंव कुर्आन) के छिपे हुए गुह्य भेदों को प्रकट कर दिया जिसे सभी लोगों ने अति विश्वास पूर्वक हृदयंगम कर लिया।

इलम ले ले अपना, सब जुदे हुए झगर।
सो सारे एक दीन हुए, जब आए इमाम आखिर।।१२।।

श्री प्राणनाथ जी के प्रकटन से पूर्व सभी धर्मों के अनुयायी अपने-अपने ज्ञान को सर्वोपरि मानते थे तथा उसे ही सत्य सिद्ध करने में लड़ते रहते थे। इस प्रकार सभी लोग अलग-अलग मत-पन्थों में बंट गये थे। श्री जी के संसार में अवतरित होते ही तारतम ज्ञान के प्रकाश में सभी एक सत्य को मानने लगे।

भावार्थ-पौराणिक हिन्दू धर्म में लगभग १००० सम्प्रदाय हैं। इस्लाम की मान्यता के अनुसार संसार में ७२ फिरके हैं। इसी प्रकार जैनों, बौद्धों तथा क्रिश्चियनों में भी बहुत सी शाखायें हैं। तारतम ज्ञान के द्वारा इन सभी पन्थों को एक सत्य की माला में पिरोया जा सकता है।

गैबी मार दज्जाल का, सब में गया पसर।
सो साफ हुई सब दुनियां, जब आए इमाम आखिर।।१३।।

दज्जाल रूपी अज्ञान सबके हृदय में बैठकर गुप्त रूप से प्रहार कर रहा था अर्थात् विषय-भोगों में भटकाकर दुःखों की अग्नि में झोंक रहा था। किन्तु, अब श्री प्राणनाथ जी के प्रकट होते ही सारा संसार अब निर्मल हो चुका हैं क्योंकि अब सबके हृदय में दज्जाल के स्थान पर परब्रह्म की अखण्ड शोभा विराजमान है।

भावार्थ- उपरोक्त कथन अतिश्योक्ति अलंकार की भाषा में है।

आग बिना सब दुनियां, अगिन हुई जर बर।
सो सारे ठंढ़े किए, जब आए इमाम आखिर।।१४।।

पहले बिना अग्नि के ही सारा संसार विषय-भोगों की तृष्णा रूपी अग्नि में जलकर राख हो रहा था। प्रियतम श्री प्राणनाथ जी ने आकर तारतम ज्ञान की अमृतमयी शीतल धारा से उस अग्नि को बुझा दिया है।

दुनियां गोते खावहीं, बिन जल भवसागर।
सो सारे ही थिर किए, जब आए इमाम आखिर।।१५।।

अब तक सारा संसार बिना जल के ही भवसागर में गोते खा रहा था अर्थात् जन्म-मरण के चक्र में दुःखी हो रहा था। श्री प्राणनाथ ने आकर अपनी कृपा दृष्टि से सारे ब्रह्माण्ड को अखण्ड मुक्ति दी है।

क्यों पैदा क्यों होसी फना, ए ना काहू को खबर।
सो सारों को सुध हुई, जब आए इमाम आखिर।।१६।।

यह संसार क्यों बना है और क्यों लय हो जायेगा? इसका ज्ञान संसार में किसी को भी नहीं था। श्री प्राणनाथ जी के प्रकट होने पर तारतम ज्ञान के प्रकाश में सबको इसका उत्तर मिल गया।

छिपिया सांच सबन से, झूठ गया पसर।
सो सारे सत ले खड़े, जब आए इमाम आखिर।।१७।।

सबके हृदय में अज्ञानता के अन्धकार ने अपना इस प्रकार वर्चस्व स्थापित कर लिया था कि किसी को भी परब्रह्म के विषय में सत्य ज्ञान नहीं था। इमाम महदी श्री जी के तारतम ज्ञान के दिव्य प्रकाश में सभी ने परम सत्य को स्वीकार किया।

काम क्रोध दिमाग में, सब धखे निस वासर।
सो सारे ठंढ़े हुए, जब आए इमाम आखिर।।१८।।

सारा संसार काम, क्रोध, और अंहकार आदि षड् विकारों की अग्नि में दिन रात जल रहा था। प्राणेश्वर अक्षरातीत के द्वारा तारतम ज्ञान की अमृत वर्षा ने सभी को शीतल कर दिया अर्थात् उनके हृदय में विकार रूपी अग्नि के स्थान पर प्रेम की शीतल धारा प्रवाहित होने लगी।

सब्द न लागे काहू को, ऐसे हिरदे भए बजर।
सो गलित गात हुए निरमल, जब आए इमाम आखिर।।१९।।

संसार के लोगों के हृदय इतने शुष्क एंव कठोर हो गये थे कि उन पर धर्मग्रन्थों के ज्ञान का कोई प्रभाव ही नहीं पड़ता था। श्री जी साहब जी ने संसार में आकर तारतम ज्ञान की ऐसी सरिता प्रवाहित की जिसमें स्नान करके सभी निर्मल और प्रेम भरे हृदय वाले हो गये।

मुस्लिम को मुस्लिम की, हिंदुओं हिंदुओं की तर।
ए समझे सब अपनी मिने, जब आए इमाम आखिर।।२०।।

इमाम महदी (श्री प्राणनाथ जी) ने संसार में आकर मुसलमानों को कुर्आन, और हदीस आदि ग्रन्थों से तथा हिन्दुओं को वेद, दर्शन, उपनिषद्, पुराण एंव संतों के ग्रन्थों से परम सत्य को समझाया।

मने फिराई दुनियां, रेहे ना सक्या कोई थिर।
सो मन सारे थिर किए, जब आए इमाम आखिर।।२१।।

मन ने संसार के सभी प्राणियों को वशीभूत करके आवागमन के चक्र में घूमा रखा था। किसी का भी मन परब्रह्म के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित (स्थिर) नहीं था। जब श्री प्राणनाथ जी का इस संसार में पदार्पण हुआ तो उन्होंने तारतम ज्ञान के द्वारा सबके मन को परब्रह्म में लगा दिया।

अलख जो अगम कहावहीं, ताकी कर कर थके फिकर।
सो सक सुभे सब उड़ गई, जब आए इमाम आखिर।।२२।।

आज दिन तक विश्व के सभी मनीषी यही मानते रहे हैं कि सच्चिदानन्द परब्रह्म को न तो मन, बुद्धि और इन्द्रियों से जाना जा सकता है और न उसका साक्षात्कार ही किया जा सकता है। सभी उसका चिन्तन कर-कर थक चुके थे। अक्षरातीत श्री जी के इस संसार में आने के पश्चात् तारतम ज्ञान के प्रकाश में सबको परब्रह्म के धाम, स्वरूप और लीला का निर्भान्त सत्य ज्ञान प्राप्त हो गया जिससे अपनी आत्म दृष्टि से परब्रह्म को पाने के सम्बन्ध में कोई भी संशय नहीं रह गया।

सुध आतम परआतमा, सक्या ना कोई कर।
सो सारे धोखे मिटे, जब आए इमाम आखिर।।२३।।

अब तक किसी को भी यह पता नहीं था कि आत्मा क्या है तथा उसकी परात्म क्या है? श्री प्राणनाथ जी के चरण कमलों की कृपा से संसार की उन भ्रान्तियों का निराकरण हो गया जिसमें जीव को ही आत्मा माना जाता था और परात्म के सम्बन्ध में मौन धारण कर लिया जाता था।

हद बेहद के पार की, सब देख थके फेर फेर।
सो सारों ने देखिया, जब आए इमाम आखिर।।२४।।

हद-बेहद से परे परमधाम के सम्बन्ध में विद्वान और तत्ववेत्ता बारम्बार धर्मग्रन्थों में खोज-खोज कर थक चुके थे। किसी को भी परमधाम का बोध नहीं हो पाया था। अब आखिरी इमाम (श्री प्राणनाथ -ए-जमां) के तारतम ज्ञान के प्रकाश में सभी को स्वलीला अद्वैत परमधाम का यथार्थ ज्ञान प्राप्त हो गया है।

पार सुध किन ना हती, बाहेर अंदर अंतर।
सो सारे संसे गए, जब आए इमाम आखिर।।२५।।

संसार में बेहद से परे का ज्ञान किसी को भी नहीं था। परब्रह्म इस ब्रह्माण्ड के बाहर है या भीतर है अथवा इन दोनों से परे बेहद में है, इस सम्बन्ध में सबके मन में संशय बना ही हुआ था। श्री जी साहब जी के संसार में प्रकट होने पर सबके संशय समाप्त हो गये और सभी ने अति सरलता से यह जान लिया कि परब्रह्म का अखण्ड स्वरूप हद-बेहद से परे परमधाम में है।

ढूंढ़ ढूंढ़ के सब थके, ए जो लैलत–कदर।
ए दरवाजा खोलिया, जब आए इमाम आखिर।।२६।।

संसार के सभी मुसलमान लैल तुल कद्र की रात्रि को खोजते- खोजते थक गये किन्तु किसी को भी इसका ज्ञान नहीं हो सका था। आखरूल इमाम मुहम्मद महदी श्री जी के प्रकट होने पर इल्म ए लदुन्नी (तारतम ज्ञान) से इस रहस्य से पर्दा उठा और सबने जाना।

भावार्थ-लैल तुल कद्र की रात्रि के तीन तकरार (चरण) है- १-व्रज (हूद नबी के घर तूफान आना) २-रास (नूह नबी का प्रसंग) ३- जागनी ब्रह्माण्ड जिसमें रूहें और फरिश्ते अपने परवरदिगार के हुक्म से इस मायावी जगत का खेल देखने के लिये अवतरित हुए हैं। इस रात्रि के तीसरे तकरार को हजार महीने से बेहतर माना गया है। कुर्आन के तीसवें पारे में वर्णित है-(१) इन्ना अन्जुलना हुफी लैल तिल कदारिबमा अद्रा कमालैल तुल कदरि (२) लैलतुल-कदरि खैरुम-मिन अल्फि शहरवा (३) त-नज्जलुल- मलाइकतु वर्रूहु फीहा बिइज्नि रब्बिहिम् मिन् कुल्लि अम्रिन् (४) सलामुन हि- य हत्ता मत् लअिल् फज्रि (५)। अर्थात् १६३८ वि.स. से १७२२ वि.स. तक ८३ वर्ष और ४ माह होते हैं। इसके पश्चात् जागनी लीला का और तीव्र प्रभाव दिखायी देता है।

कहांतें नूर–तजल्ला की, जो नूर की भी नहीं खबर।
सो परदे उड़े सबन के, जब आए इमाम आखिर।।२७।।

जब कतेब पक्ष के लोगों को अक्षर ब्रह्म की भी पहचान नहीं थी, तो वे अक्षरातीत के बारे में क्या जान सकते थे? आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिब्बुजमां के आने पर अज्ञान के सभी आवरण (पर्दे) समाप्त हो गये और सभी को अल्लाह तआला (सुप्रीम ट्रूथ

गॉड) की पहचान हो गयी।

भावार्थ- यद्यपि कुर्आन में केवल अल्लाह तआला (परब्रह्म) का ही वर्णन है किन्तु बिना तारतम ज्ञान (इल्मे ए लदुन्नी) के कोई भी यह नहीं जान सकता कि वह कहाँ है और कैसा है? हिन्दू-मुस्लिम, क्रिश्चियन सभी की एक जैसी ही धारणा रही है वह इस सृष्टि के कण-कण में व्यापक है तथा निराकार है।

कहांतें अछरातीत की, जो सुध ना अछर छर।
सो सारे जाहेर हुए, जब आए इमाम आखिर।।२८।।

जब वेद के अनुयायियों को क्षर और अक्षर ब्रह्म की भी पूर्ण पहचान नहीं थी तो अक्षरातीत के बारे में क्या जान सकते थे? श्री प्राणनाथ जी के प्रकट होने पर तारतम ज्ञान के प्रकाश में ही सबको क्षर, अक्षर तथा अक्षरातीत की पहचान हुई।

भावार्थ- जब हरजी व्यास जैसे दिग्विजयी पण्डित भी अक्षर ब्रह्म से अनभिज्ञ थे तो शालिग्राम तथा शिवलिंग की पूजा करने वाले सामान्य हिन्दू अक्षर-अक्षरातीत के विषय में क्या जान सकते थे?इस सम्बन्ध में बी. स. १८/५३ के ये कथन देखने योग्य हैं-

एतो थका क्षर में , सुध नहीं अक्षर ।
अक्षरातीत की तिनको , ए क्या देवे उत्तर।।

इस्क खसम बतावहीं, उड़ाए दिया सब डर।
कायम सुख सब लेवहीं, जब आए इमाम आखिर।।२९।।

श्री प्राणनाथ जी ने इस संसार में आकर श्री कुल्जुम स्वरूप के द्वारा एक अक्षरातीत परब्रह्म से प्रेम करने का दिव्य मार्ग बताया है जिससे अब लोगों में जन्म-मरण का भय समाप्त हो गया है। अब सभी श्री जी के चरणों में आकर परमधाम के सुख का रसपान कर रहे हैं।

मोमिन पीछे ना रहें, ताए सके ना कोई पकर।
उमेदां पूरी सबन की, जब आए इमाम आखिर।।३०।।

अक्षरातीत की पहचान करके उन्हें अपनी श्रद्धा, समर्पण एंव प्रेम से रिझाने में ब्रह्ममुनि कभी भी पीछे नहीं रहेंगे। उन्हें संसार का कोई भी बन्धन रोक नहीं सकेगा। श्री जी ने संसार में आकर अखण्ड सुख की कामना करने वाले सभी लोगों की इच्छाओं को पूर्ण किया।

बड़े सुख मोमिन लेवहीं, रस इस्क पिएं भर भर।
औरों को भी पिलावहीं, जब आए इमाम आखिर।।३१।।

जब परब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथ जी इस संसार में आये तो उनकी सानिध्यता में ब्रह्मात्माओं ने परमधाम के प्रेम एंव आनन्द का भरपूर रसपान किया है तथा संसार के अन्य लोगों के लिये भी उसका द्वार खोल दिया है।

ए सुख कह्यो न जावहीं, रह्यो न कछू अंतर।
मोमिन रूहें जाहेर हुए, जब आए इमाम आखिर।।३२।।

स्वलीला अद्वैत परमधाम एंव अक्षरातीत का साक्षात्कार करने वाले ब्रह्ममुनियों तथा परब्रह्म में आत्मिक दृष्टि से कोई भेद नहीं रह गया है। इस सुख का वर्णन शब्दों में नहीं हो सकता। श्री प्राणनाथ जी के द्वारा होने वाली जागनी लीला ने ब्रह्मात्माओं को संसार में उजागर कर दिया है।

सुख आसिकों क्यों कहूं, जो लेवें मासूक अंदर।
सुन मोमिन टूक होवहीं, जब आए इमाम आखिर।।३३।।

अपने धाम हृदय में अपने हृदयेश्वर अक्षरातीत को बसाने वाले उन ब्रह्ममुनियों के सुखों का वर्णन मैं कैसे करूँ? श्री प्राणनाथ जी के प्रकटन की बात सुनकर ही ब्रह्ममुनि उन पर समर्पित हो जाते हैं।

पीछे जहान इन दुनी की, दौड़ी आवे एक दर।
तब तो सुख सागर हुआ, जब आए इमाम आखिर।।३४।।

इस संसार की जीव सृष्टि दौड़ते हुए श्री प्राणनाथ जी के चरणों में आ रही है। अब श्री जी साहब जी के प्रकट होने पर तो ऐसा लग रहा है कि जैसे आध्यात्मिक आनन्द का सागर ही लहराने लगा है।

चौदे तबक हुई कजा, एक जरा ना रह्यो कुफर।
सो साफ किए सबन को, जब आए इमाम आखिर।।३५।।

चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में आध्यात्मिक विवादों का सच्चा न्याय (समाधान) हो गया है जिससे झूठ या नास्तिकता का नामोनिशान भी नहीं रह गया है। आखरूल इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी ने संसार में आकर तारतम ज्ञान द्वारा सबके हृदय को निर्मल कर दिया है।

भावार्थ- श्री प्राणनाथ जी का आध्यात्मिक निर्णय श्री कुल्जुम स्वरूप में निहित है। जो इसका चिन्तन करेगा, वही उनके न्याय का लाभ ले सकेगा। जीवों के कर्मों का न्याय तो सातवें दिन (प्रसंग) की लीला में बेहद मण्डल में होगा।

ए जो काजी कजा करी, सो भी मोमिनों की खातिर।
औरों पाया मोमिन बरकतें, जब आए इमाम आखिर।।३६।।

श्री प्राणनाथ जी ने इस संसार में आकर आध्यात्मिक विवादों का जो सच्चा न्याय किया है, वह ब्रह्मात्माओं के लिये ही किया है, जिससे उन्हें वास्तविक सत्य का बोध हो जाय और वे निरर्थक इधर-उधर न भटकें। ब्रह्मसृष्टियों की कृपा से इस न्याय का लाभ ईश्वरीय सृष्टि तथा संसार के जीवों को भी मिला है।

बेचून बेचगून बेसबी, है बेनिमून क्यों कर।
सो जाहेर हुआ सबन को, जब आए इमाम आखिर।।३७।।

जब इमाम महदी (श्री प्राणनाथ जी) इस संसार में प्रकट हुए तो तारतम ज्ञान के प्रकाश में यह स्पष्ट हो गया कि सच्चिदानन्द परब्रह्म को पंचभौतिक रुप से रहित, अकल्पनीय, अनुपम और अकथनीय स्वरूप वाला क्यों कहते है?

सेहेरग से हक नजीक, ए खोली ना किन नजर।
सो पट उड़ाए जाहेर किए, जब आए इमाम आखिर।।३८।।

परब्रह्म हमारी प्राणनली शाहरग से भी अधिक हमारे निकट हैं, किन्तु अब तक किसी ने भी अपनी अन्तर्दृष्टि को खोलकर कर उसे देखा नहीं था। जब श्री प्राणनाथ जी संसार में आये तो उन्होंने अज्ञानता के अन्धकार को दूर करके यह बताया कि आत्मा (निस्बत के स्वरूप) से परब्रह्म पल भर के लिये भी दूर नहीं होते। उनका हृदय ही प्रियतम का धाम (निवास) होता है।

कई आलम पल में पैदा फना, करें हक कादर।
सो देखाए दुनी कायम करी, जब आए इमाम आखिर।।३९।।

अक्षर ब्रह्म इतने सामर्थ्यवान हैं कि वे मात्र एक पल में ही करोड़ों (अनेकों) ब्रह्माण्ड उत्पन्न करके लय कर देते हैं। जब श्री प्राणनाथ जी संसार में प्रकट हुये तो उन्होंने अक्षर ब्रह्म के बनाये हुए इस ब्रह्माण्ड का खेल ब्रह्ममुनियों को दिखाया और समस्त संसार को अखण्ड मुक्ति का सुख दिया।

थी उरझन चौदे तबकमें, सब जाते थे मर मर।
दई हैयाती सबन को, जब आए इमाम आखिर।।४०।।

चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में परब्रह्म की पहचान से सम्बन्धित तरह-तरह की उलझनें थीं। किसी को भी यथार्थ बोध नहीं था, इसलिये सभी आवागमन के चक्र में पड़े हुए थे।

जब श्री जी का इस संसार में प्रकटन हुआ तो उन्होंने सबको अखण्ड मुक्ति प्रदान की।

किन पाया ना मगज मुसाफ का, जो ल्याया आखिरी पैगंमर।
किया जाहेर यासों हक बका, जब आए इमाम आखिर।।४१।।

अन्तिम पैगम्बर मुहम्मद स.अ.व. कुर्आन का ज्ञान लेकर संसार में आये किन्तु उसके गुह्य रहस्यों का ज्ञान किसी को भी नहीं था। आखरूल इमाम मुहम्मद महदी (श्री जी) ने आकर कुर्आन के गुह्य रहस्यों को प्रकट कर अक्षरातीत परब्रह्म (अल्लाह तआला) तथा परमधाम (अर्शे- अजीम) की पहचान करायी।

लेवे खिताब इमाम का, बातून खुले ना इन बिगर।
सो खोलके भिस्त दई सबों, जब आए इमाम आखिर।।४२।।

यद्यपि इमाम कहलाने वाले अनेकों व्यक्ति हो चुके हैं किन्तु श्री प्राणनाथ जी के अतिरिक्त अन्य कोई भी कुर्आन के गुह्य रहस्यों को नहीं खोल सका था। इमाम महदी स्वरूप श्री प्राणनाथ जी ने कुर्आन के गुह्य रहस्यों को प्रकट किया और संसार के सभी जीवों को बेहद मण्डल में आठ बहिश्तों का सुख दिया।

भावार्थ- श्री प्राणनाथ जी के प्रकटन से पूर्व ११ इमाम हो चुके थे। किन्तु इनमें किसी के भी साथ महदी शब्द नहीं जुड़ा था। जो कि पन्ना जी में स्थित गुम्मट साहेब के पूर्व दिशा के द्वार पर उपर की मेहेराब पर फारसी भाषा में अंकित हैं। दरगाह ए मुकद्दस आखरूल इमाम हजरत मुहम्मद अल महदी साहिबुज्जमां। आपकी मोहर पर लिखा हैं कि फकीर सैय्यद मुहम्मद इब्न इस्लाम, ग्यारवहीं सदी, दूसरी मोहर पर अंकित हैं सिक्का ए जद बर.....। ११ इमामों के नाम इस प्रकार हैं।

१- इमाम अली बिन अबु तालिब
२- इमाम हसन बिन अली
३- इमाम हुसेन बिन अली
४- इमाम जेनुल आबदीन
५- इमाम बाकर
६- इमाम जाफर सादिक
७- इमाम मूसा काजिम
८- इमाम अली रजा
९- इमाम अली नकी
१०-इमाम अली तकी
११- इमाम हसन अस्करी

थी रात अंधेरी सबन में, बका दिन देखाए करी फजर।
मकसूद किया सबन का, जब आए इमाम आखिर।।४३।।

सबके हृदय में निराकार को ही परब्रह्म मानने की अज्ञानता रुपी रात्रि का अन्धकार था। श्री प्राणनाथ जी ने इस संसार में प्रकट होकर अखण्ड परमधाम की पहचान दी और

सबके हृदय में ज्ञान का उजाला कर दिया। इस प्रकार सबके मन में परमधाम के सुख की अनुभूति करने की जो इच्छा थी, उसे श्री जी ने पूर्ण कर दिया।

इलम लदुन्नी काहूं ना हुता, कर जाहेर मिटावे कुफर।
दिया सुख कायम सब को, जब आए इमाम आखिर।।४४।।

संसार में किसी के भी पास जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान नहीं था जिससे अज्ञानता या संशय का निवारण किया जा सके। इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी ने प्रकट होकर तारतम ज्ञान के द्वारा सबको परमधाम के अखण्ड सुख का अनुभव कराया।

भावार्थ- श्री कुल्जुम स्वरूप का चिन्तन करने से ज्ञान दृष्टि से अनुभव होगा तथा चितवनी करने से आत्मा को परब्रह्म तथा परमधाम का प्रत्यक्ष अनुभव होगा। जो चिन्तन और चितवनी से दूर रहेंगे, वे इस संसार में अखण्ड सुख से वंचित हो जायेंगे।

कोई बेसक दुनी में ना हता, गई दुनियां एती उमर।
सो दृढ़ कर दई हक सूरत, जब आए इमाम आखिर।।४५।।

पृथ्वी पर इस सृष्टि को चलते हुए १ अरब ९६ करोड़ ८ लाख ५३ हजार २० वर्ष व्यतीत हो चुके थे किन्तु अब तक संसार में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ था जो परब्रह्म के धाम एंव स्वरूप के सम्बन्ध में पूर्णतया संशय रहित हो किन्तु श्री प्राणनाथ जी ने संसार में प्रकट होकर तारतम ज्ञान के प्रकाश में सभी को परब्रह्म के स्वरूप के सम्बन्ध में पूर्ण रुप से दृढ़ता करा दी वह साकार-निराकार से परे अति सुन्दर किशोर (अमरद) स्वरूप है।

इमाम नूर है अति बड़ो, पर सो अब कह्यो न जाए।
मेला होसी जब मोमिनों, तब देऊंगी नीके बताए।।४६।।

इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी के ज्ञान, शक्ति एंव महिमा आदि का तेज अनन्त (बहुत अधिक) है किन्तु अभी उसे पूर्ण रुप से कहना उचित नहीं है। श्री महामति जी कहते हैं कि जब ब्रह्ममुनि (पदमावती पुरी धाम में) एकत्रित होंगे तब मैं अच्छी तरह से इस सम्बन्ध में बताऊंगा।

भावार्थ- जब श्री जी वि. स. १७३९-४० में पन्ना जी पधारे और वहां १० वर्ष तक जागनी लीला किये तो उस समयान्तराल में परमधाम के ४ ग्रन्थों खिल्वत, परिक्रमा, सागर, तथा श्रृंगार का अवतरण हुआ और सभी ने इन पंच भौतिक नेत्रों से श्री प्राणनाथ जी को परमधाम के युगल स्वरूप, व्रज-रास के श्रीकृष्ण अरब के मुहम्मद स.अ.व. तथा सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी के स्वरूप में देखा। सबने उन्हें पूर्ण ब्रह्म के स्वरूप में पहचान कर प्रेम

पूर्वक रिझाया। उपरोक्त चौपाई में इसी तथ्य की ओर संकेत किया गया है।

।।प्रकरण।।३२।।चौपाई।।११४५।।

सनंध–कजा की

इस प्रकरण में श्री प्राणनाथ जी की महिमा के साथ-साथ उनके द्वारा होने वाले न्याय का वर्णन है, जिसमें असत्य को हटाकर परम सत्य को दर्शाया गया है।

सुनियो दुनियां आखिरी, भाग बड़े हैं तुम।
जो कबूं कानों ना सुनी, सो करो दीदार खसम।।१।।

यह कियामत (आखिरत) का समय है। हे संसार के लोगों! मेरी बात सुनिये! आप बहुत अधिक भाग्य शाली हैं। आज दिन तक इस सृष्टि में किसी ने भी जिस अक्षरातीत के विषय में कुछ सुना नहीं था, अब वे श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में स्वयं प्रकट हुए हैं। आप उनका साक्षात् दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त कीजिए।

कई राए राने पातसाह, छत्रपति चक्रवर्त।
ताए हक सुपने नहीं, सो गए लिए गफलत।।२।।

इस संसार में बड़े-बड़े राजा, राणा, बादशाह, छत्रपति और चक्रवर्ती सम्राट की उपाधि धारण करने वाले हो चुके हैं किन्तु उन्हें स्वप्न में भी अक्षरातीत परब्रह्म का ज्ञान प्राप्त नहीं हो सका था। वे परब्रह्म के विशय में भ्रम लेकर ही इस संसार से चले गये अर्थात् देहावसान को प्राप्त हुए।

कई देव दानव हो गए, कई तीर्थंकर अवतार।
किन सुपने ना श्रवनों, सो इत मिल्या नर नार।।३।।

इस सृष्टि में महान शक्ति वाले बहुत से देवता और दानव हो गये हैं। अपनी सम्पूर्ण इच्छाओं को जीतकर वीतराग कहलाने वाले २४ तीर्थंकर भी हो गये। भगवान विष्णु के भी संसार में अनेकों अवतार हो गये हैं किन्तु इनमें से किसी को भी स्वप्न में भी अक्षरातीत परब्रह्म के विषय में सुनने के लिये कुछ नहीं मिला। अब वही सच्चिदानन्द अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में साक्षात् आये हुए हैं और सामान्य स्त्री-पुरूषों को भी प्रत्यक्ष दर्शन दे रहे हैं।

करी अनेकों बंदगी, इस्क लिया कई जन।
तिन काहूं ना नजीक, सो इत मिल्या सबन।।४।।

अक्षरातीत परब्रह्म को पाने के लिये अनेकों ने भक्ति मार्ग का आश्रय लिया। इसी प्रकार बहुत से लोग प्रेम-मार्ग पर भी चलें, किन्तु उनमें से कोई भी परब्रह्म की सानिध्यता को प्राप्त नहीं कर पाया। अब वही परब्रह्म श्री जी के स्वरूप में सबको अनायास ही प्राप्त हो गये हैं।

चौदे तबक के खावंद, कर कर गए उपाए।
तित परदा सबन पर, सो इत दिया उड़ाए।।५।।

चौदह लोकों वाले इस ब्रह्माण्ड के स्वामी ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी ने भी अनेकों प्रकार की साधनायें की, किन्तु परब्रह्म को पाने में वे असफल रहे। उनके ऊपर भी परमधाम का ज्ञान न होने का जो अज्ञान रुप आवरण था, उसे अब श्री प्राणनाथ जी ने समाप्त कर दिया है।

तुम जानते थे मलकूत को, हम सिर एही बुजरक।
तिनको न बका ख्वाब में, सो इत पाया सबों हक।।६।।

हे संसार के लोगों! आप लोग पहले यही समझते थे कि यह बैकुण्ठ ही हमारे लिये सबसे बड़ा धाम है, किन्तु बैकुण्ठ के स्वामी विष्णु भगवान को स्वप्न में भी परब्रह्म एंव परमधाम का दर्शन नहीं हुआ। अब सरलता से सबने परब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथ जी को पा लिया है।

मारता था राह दुनी की, सबका था दुस्मन।
जित हिदायत एक हादी की, तित भी मारे तिन।।७।।

यह अज्ञान रुपी दज्जाल (कलियुग) सारी मानव जाति का शत्रु था। यह सबको परब्रह्म की ओर उन्मुख होने में बाधक बना हुआ था। सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी ने सब सुन्दरसाथ को एक अक्षरातीत से प्रेम करने का निर्देश दिया था, किन्तु इसने उनको भी बहुत दुःखी किया।

भावार्थ- बिहारी जी के अन्दर अज्ञानरुपी दज्जाल विराजमान था, जिसने सुन्दरसाथ को एक अक्षरातीत से हटाकर गादी पूजा पर केन्द्रित कर दिया। इस सम्बन्ध में बड़े कियामतनामा के ये कथन देखने योग्य हैं।

एक मक्के का काला पत्थर, कुरान और खुदाए का घर।
और ठौर कह्या इभराम, और यार महंमद आराम।। ७/७४
हक ताला ने किया फुरमान, डांटत है कीने कुफरान।
अंजील तोरेत से जो फिरे, सोई काफर हुए खरे।।
काफर दिल में कीना आने, अंजील तौरेत पर मारे ताने।
जो खुदाय का पैगंबर, तिनसे फिरे सो हुए काफर।। १०/३, ४

एक राह थी अव्वल, तित भी दिए फिराए।
कई इलम देखाए जुदे डारे, बल सैतान कह्यो न जाए।।८।।

सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी ने सबको परमधाम का श्रेष्ठ मार्ग दर्शाया था, किन्तु शैतान ने सुन्दरसाथ को उस मार्ग से भटका दिया। अज्ञानरुपी दज्जाल की शक्ति इतनी अधिक है कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। उसने परमधाम के तारतम ज्ञान के समक्ष वल्लभाचार्य के गादीवाद का सिद्धांत प्रस्तुत कर दिया और सबको अक्षरतीत से हटाकर वंशानुगत गादीवाद का पूजक बना दिया।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई के तीसरे चरण में कथित 'कई इलम' का तात्पर्य वल्लभाचार्य आदि मतों में विद्यमान वंशानुगत गादीवाद के सिद्धांत से है। इस मान्यता के अनुसार गादी पर बैठा मनुष्य परमात्मा का स्वरुप होता है, इस भ्रान्त मूलक धारणा ने अनेकों सुन्दरसाथ को परब्रह्म की राह से भटका दिया। इस संबंध में प्रकाश गुजराती का यह कथन बहुत ही महत्वपूर्ण है

जन्म अंध अमें जे हता , तेतां तमें देखीतां करया ।
वांसो वछुटो हाथ थी , जमपुरी जातां वली कर ग्रह्या ।।

अर्थात् हे अक्षरातीत! जबसे हम इस संसार में आए, तब से हम अंधे थे, अर्थात् हमें आपके धाम, स्वरूप का कोई ज्ञान नहीं था। आपने तारतम ज्ञान की दिव्य दृष्टि देकर हमें अपनी और अपने घर की पहचान दे दी। परन्तु आपके ओझल होते ही, हम आपके दर्शाए हुए मार्ग पर नहीं चल सके और उस गादी पूजा में लग गए जो, जन्म मरण के चक्र में ले जाने वाला है, किन्तु आपने हमारे ऊपर पुनः कृपा की और श्री मिहिरराज जी के धाम हृदय में विराजमान होकर पूरे परमधाम का शुद्ध मार्ग दर्शा दिया।

बैठ दुनी के दिल पर, चलाया हुकम ।
हक राह छुड़ाए डारे उलटे, ए दुस्मने किया जुलम।।९।।

यह अज्ञान रूपी दज्जाल संसार के सभी प्राणियों में बैठकर अपना आदेश चला रहा है। यह सबका शत्रु बनकर ऐसा अत्याचार कर रहा है कि सबको परब्रह्म की राह से हटाकर माया में फँसाता जा रहा है।

ए दुस्मन देखाया रसूलें, पर इनसों चल्या न किन।
आप जैसा होए के, राह मारी सबन।।१०।।

मुहम्मद स. अ. व. ने सबके शत्रु इस अज्ञान रुपी दज्जाल की पहचान बतायी थी

किन्तु उनके अनुयायियों में से किसी का भी इस पर कोई वश न चला। यह दज्जाल सबके हृदय में बैठकर सबको परब्रह्म के सच्चे मार्ग से भटकाता रहा।

भावार्थ- मुहम्मद स. अ. व. के देहान्त के पश्चात् मुआविया तथा यजीद ने भयानक अत्याचार किया। कर्बला का रक्त रंजित इतिहास रोगंटे खड़े कर देने वाला है। अत्याचारियों ने मुहम्मद साहब की पुत्री फातिमा की हत्या करने में भी संकोच नहीं किया।

सो काफर उड़ाए दिया, जिन मारी थी सबकी राह।
सो जानिए हता नहीं, जब आया हक पातसाह।।११।।

जो दज्जाल अब तक सबको भटकाता रहा है, श्री प्राणनाथ जी ने तारतम ज्ञान के प्रकाश में उसे नष्ट कर दिया। परब्रह्म श्री प्राणनाथ जी के प्रकट हो जाने पर तो ऐसा लग रहा है कि जैसे पहले कभी दज्जाल था ही नहीं।

भावार्थ- सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी के समय कुल्जुम स्वरूप का अवतरण नहीं हुआ था, इसलिये सुन्दरसाथ सच्चे मार्ग से भटक गये। इसी प्रकार कुर्आन का वास्तविक अर्थ न होने से मुस्लिम समाज हिंसा और आतंक के रास्ते पर चल पड़ा। मानव समाज में आध्यात्मिक ज्ञान का प्रकाश ही सत्य मार्ग पर चलने का निर्देश देता है। यदि कुल्जुम स्वरूप के अवतरण के पश्चात् भी इसका प्रचार नहीं हुआ तो समाज का भटकाव अवश्यम्भावी है।

मैं बड़ भागी तुमें तो कहे, जो आए इन आखिर।
तो कहूं जो दूर होवहीं, अब देखोगे नजर।।१२।।

हे संसार के लोगों! मैं आपको बहुत भाग्यशाली इसलिये कह रहा हूँ क्योंकि आपको कियामत के इस स्वर्णिम अवसर पर जन्म मिला है। मैं यह महत्वपूर्ण बात आपसे इसलिये कह रहा हूँ कि जो परब्रह्म आज तक सब की पहुँच से दूर थे अर्थात् कोई भी उनका साक्षात्कार नहीं कर सका था, आप श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में उनका प्रत्यक्ष दर्शन करेंगे।

यामें बड़े रूह मोमिन, सो जुबां कह्यो न जाए।
अबहीं इमाम के कदमों, देखोगे सब आए।।१३।।

इस संसार में अवतरित होने वाले ब्रह्ममुनियों की महिमा इतनी अधिक है कि उसका वर्णन इस जिह्वा से नहीं हो सकता। यह मनोहर दृश्य आप अपनी आंखों से स्वंय देखेंगे कि सभी ब्रह्ममुनि किस प्रकार श्री जी साहब जी के चरणों में आ रहे हैं।

ए कह्या रसूलें अव्वल, ए जो चौदे तबक।
इनमें काजी आखिर दिनों, इत कजा जो करसी हक।।१४।।

मुहम्मद स. अ. व. ने पहले ही यह बात कह दी थी कि चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में स्वंय सच्चिदानन्द परब्रह्म कियामत के समय न्यायाधीश बन कर आयेंगे और ज्ञान दृष्टि से सबका न्याय करेंगे।

रसूलें इत आए के, पेहेलें किया पुकार।
आवसी रब आलम का, तब हूजो खबरदार।।१५।।

मुहम्मद साहब ने ११०० वर्ष पहले ही आकर संसार में पुकार-पुकार कर यह बात कही कि जब कियामत के समय स्वंय अक्षरातीत परब्रह्म इमाम महदी के रुप में आयें तो आप लोग सावधान रहना और उनके चरण पकड़ लेना (शरणागत हो जाना)।

भावार्थ- कुर्आन के पारा. २४ सु. ३९ आ. ६७ ६८ ६९ ''व मा कदरूल्लाह हक्क कद्रिह वल्अर्जु जमीअन् कब्जतुह् यौमल्कियामति वस्समावातु मत्तियात्युम्-बियमीनिह सुब्हानह व तआला अम्मा युश्रिकून'' (६७)

''व नुफिख फिस्सूरि फसइक मन् फिस्समावाति व मन् फिल्अर्जि इल्ला मन् अशल्लाहु सुम्म नुफिख फीहि अुख्रा फइजाहुम् कियामुंय्यन्जुरून'' (६८)

व अश्कतिल्-अरजु बिनूरि रब्बिहा व बुजिअल्-किताबु वजीअ बिन्नबिय्यन वश्शुहदाइ व कुजिय बैनहुम् बिल्हक्कि व हुम् ला युज्लमून'' (६९) अर्थात् और इन लोगों ने अल्लाह की जैसी कदर करनी चाहिए थी वैसी नहीं की।

और कियामत के दिन सारी जमीन उसकी मुट्ठी में होगी और सब आसमान लिपटे हुए उसके दाहिने हाथ में होंगे और वह इनके ठहराये हुए शरीकों से बिल्कुल पाक और बहुत ऊपर बेहद आलीशान है।

और कियामत आने पर जब सूर नरसिंहा फूंका जायगा तो जो आसमानों में और जमीन में हैं, बेहोश हो जायेंगे सिवाय वह जिनको अल्लाह बचाना चाहे। फिर दोबार नरसिंहा फूंका जायेगा, फिर वे अचानक जिन्दः खड़े हो जायेंगे और देखने लगेंगे।

और जमीन अपने परवरदिगार के नूर से जगमगा उठेगी और किताब आमालनामा खोलकर रख दिया जायेगा और पैगम्बर वह गवाह हाजिर कियें जायेंगे और उनमें इन्साफ के साथ फैसला किया जायगा और उन पर रत्ती भर भी जुल्म अन्याय न होगा।

लिख्या आगम कदीम का, सो आए मिल्या दिन।
याही सदी आखिर की, पुकार करे सब जन।।१६।।

पहले से ही भविष्य को दर्शाने वाले ग्रन्थों में परब्रह्म के प्रकटन से सम्बन्धित जो समय निर्धारित किया गया था, वही समय अब आ गया है। सभी लोग पुकार-पुकार कर यही बात कह रहे हैं कि यह ग्यारहवीं सदी ही कियामत की है, जिसमें परब्रह्म को प्रकट होना है।

भावार्थ-भविष्य दीपिका के कथनानुसार शालिवाहन शाका के १६०० वर्ष व्यतीत होने का जो समय है, वही समय भविष्योत्तर पुराण में कथित वि. स. १७३५ का है और वही समय कुर्आन के अनुसार हिजरी सन् १०६० का है।

नूर अकल ले लदुन्नी, हुकमें किया पसार।
महंमद मेंहेदी ईसा आवसी, आगे चेतावें नर नार।।१७।।

धर्मग्रन्थों की साक्षियों में पहले से ही समस्त मानव समाज को यह चेतावनी दे दी गयी थी कि इस समय श्री प्राणनाथ जी (इमाम महदी) तथा सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी (रूहुल्लाह) का प्रकटन होगा। अब परब्रह्म के आदेश से जागृत बुद्धि तारतम ज्ञान का सर्वत्र प्रकाश कर रही है (फैला रही है)।

आप इमाम अजूं गोप है, होत आगे रोसन नूर।
रात अंधेरी क्यों रहे, जब ऊग्या कायम सूर।।१८।।

यद्यपि श्री प्राणनाथ जी (इमाम महदी) अभी संसार के लोगों की दृष्टि में पूर्ण रुप से उजागर नहीं हुए हैं (छिपे हुए हैं) किन्तु इस समय तारतम ज्ञान का प्रकाश फैल रहा है। भला जब परमधाम के ज्ञान का सूर्य उग गया है तो अब अज्ञानता की रात्रि कैसे रह सकती है?

साँच झूठ तफावत, जैसे दिन और रात।
साँच सूर जब देखहीं, तब कुफर रात मिट जात।।१९।।

सत्य और झूठ में उतना ही भेद होता है जितना दिन और रात्रि में। संसार के लोग जब सत्य ज्ञान के सूर्य को देखेंगे अर्थात् श्री कुल्जुम स्वरूप का प्रकाश पा जायेंगे तो उनके हृदय में विद्यमान अज्ञानता की रात्रि कैसे रह पायेगी?

जो लों थे परदे मिने, दुनियां उरझी तब।
सो परदा अब खोलिया, दिया मन चाह्या सुख सब।।२०।।

जब तक प्राणेश्वर अक्षरातीत संसार में नहीं आये थे तब तक यह सम्पूर्ण जगत तरह-तरह के काल्पनिक सिद्धान्तों की उलझन में फंसा पड़ा था। सभी अटकलों को विराम देकर अब वे साक्षात् श्री जी के स्वरूप में प्रकट हो गये हैं और उन्होंने सभी को मनोवांछित आत्मिक सुख दिया है।

जो लों जाहेर हक ना हुए, तो लों मारे दिमाक।
हक प्रगटे कुफर मिट गया, सब दुनियां हुई पाक।।२१।।

जब तक सबके आराध्य परब्रह्म प्रकट नहीं हुए थे तब तक सभी लोग अपने-अपने ज्ञान की श्रेष्ठता के अंहकार में डूबे पड़े थे। धाम धनी के प्रकट होने पर सबके हृदय में जो अज्ञानता का अन्धकार था, वह नश्ट हो गया और तारतम ज्ञान का रसपान कर सारा संसार पवित्र हो गया।

जब कुफर कछू ना रह्या, तब दुनियां हुई एक दीन।
ए नूर कजा का झिल मिल्या, आया सबों आकीन।।२२।।

जब सबके हृदय की अज्ञानता समाप्त हो गयी तो सारे संसार में एक सत्य धर्म (निजानन्द) की स्थापना हुई। श्री प्राणनाथ जी के द्वारा सभी मत-पन्थों का होने वाले न्याय का प्रकाश जगमगाने लगा और सभी को तारतम ज्ञान के प्रकाश में एक सच्चिदानन्द परब्रह्म पर विश्वास हो गया।

भावार्थ- उपरोक्त कथन अतिश्योक्ति अलंकार की भाषा में है और यह तारतम ज्ञान के प्रकाश पाने वाले लोगों में ही घटित होता है।

दुनियां टेढ़ी मूल की, ताको गयो पेड़ से बल।
पाक किए सब इमामें, कुफर गया निकल।।२३।।

मोह तत्व से बनी हुई यह सृष्टि प्रारम्भ से ही संशयात्मक रही है। श्री प्राणनाथ जी ने इस मिथ्या जगत में आकर तारतम ज्ञान द्वारा सबके संशयों को समाप्त कर दिया जिससे उनके हृदय में एक परब्रह्म के प्रति अटूट विश्वास हो गया और वे पवित्र हो गये। इस प्रकार संसार की अज्ञानता मूल से ही नष्ट हो गयी।

भावार्थ- तमोगुण के प्रभाव से मनुष्य में अंहकार, संशय, अज्ञान आदि विकारों का प्रादुर्भाव होता है। जब तारतम ज्ञान से एक अक्षरातीत के प्रति अटूट विश्वास पैदा हो जाता

है तो हृदय में उनकी छवि अंकित हो जाती है और वह पवित्र हो जाता है।

पुकार कह्या वेद कतेबों, पर बस न किया काहूं दिल।
कर कर मेहेनत कई थके, पर हुआ न कोई निरमल।।२४।।

वेद-कतेब में सच्चिदानन्द परब्रह्म की महिमा का जोर-शोर से बखान तो किया गया है किन्तु धाम, स्वरूप एवम् लीला का यथार्थ और स्पष्ट वर्णन न होने से कोई अपने हृदय में उन्हें बसा नहीं सका और निर्मल नहीं हो सका। यद्यपि अनेकों महान पुरूषों ने कठोर साधनाओं द्वारा इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये प्रयास किया किन्तु वे असफल रहे और उनमें कोई भी निर्मल नहीं हो सका।

भावार्थ-योग दर्शन में वर्णित सबीज तथा निर्बीज समाधियों की सिद्धि से मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार आदि विकारों से पूर्णतया रहित तो हो जाता है किन्तु उपरोक्त चौपाईयों में जिस निर्मलता का कथन है वह, है अपने हृदय में परब्रह्म के स्वरूप को बसा लेना, किन्तु ऐसा होना बिना तारतम ज्ञान के सम्भव ही नहीं था।

ना तो कई बुजरक हुए, कैयों करियां नसीहत।
ओ मुरीद विचारे क्या करे, किनें पीर न पाई मारफत।।२५।।

अन्यथा इस संसार में बड़े-बड़े ज्ञानी तथा समाधिस्थ योगिराज हुए हैं जिन्होंने संसार को परब्रह्म के प्रेम में डूब कर निर्मल होने की शिक्षा दी है। किन्तु जब महान गुरूजनों को ही परब्रह्म के धाम, स्वरूप एंव लीला की यथार्थ पहचान नहीं हुई तो भला उनके अनुयायी अपनी शुष्क साधनाओं से अपने हृदय में कैसे परब्रह्म को बसाते और स्वंय को निर्मल करते?

सो इमामें इत किए, सब जन के मन बस।
होए ना किन इमाम को, इन जुबां ए जस।।२६।।

अब इमाम महदी (श्री प्राणनाथ जी) ने तारतम ज्ञान की दिव्य धारा में स्नान कराकर सबके मन में परब्रह्म के प्रति विश्वास एंव प्रेम भर दिया है जिससे वे लोग श्री जी पर पूर्णतया समर्पित हो गये (वशीभूत हो गये) हैं इस जिह्वा से सबके हृदयेश्वर श्री जी महिमा का वर्णन नहीं हो सकता है।

सो इमाम इत आइया, इन जिमी हिंदुस्तान।
सब तलबें याही दिसा, चौदे तबक की जहान।।२७।।

अब आखरूल इमाम मुहम्मद महदी अज्लअल्लाह वऊालाफर्जह अल शरीफ (श्री प्राणनाथ जी) भारतवर्ष की धरती पर प्रकट हुए हैं। चौदह लोकों का यह सारा ब्रह्माण्ड प्रियतम परब्रह्म की भारतवर्ष में प्रकट होने की बाट देख रहा था।

पर मुझे प्यारी बरारब, जिन जिमी आए रसूल।
मेहेर नजर महंमद की, पर काफर गए सब भूल।।२८।।

श्री महामति जी कहते हैं कि मुझे अरब की वह धरती प्यारी है, जहां मुहम्मद स. अ.व. प्रकट हुए थे। उन्होंने अपनी कृपा दृष्टि से वहां परमधाम का संक्षिप्त ज्ञान फैलाया किन्तु शरीयत में बंधे हुए काफिर लोगों ने उसे भूला दिया।

भावार्थ- वर्तमान समय में गैर मुस्लिमों को काफिर कहने की दुष्प्रवृत्ति चल पड़ी है, भले ही वह कितना भी त्यागी, तपस्वी एवं परमात्मा की भक्ति में लीन रहने वाला क्यों न हो। मुआविया और यजीद के नेतृत्व में जिस कट्टरपन्थी विचारधारा का उदय हुआ उसने अरब सहित सारे संसार में खून की नदियां बहायी है। इसी कट्टरपन्थी विचारधारा के लोगों को उपरोक्त चौपाई में काफिर कहा गया है।

पीछे केहेर नजर करी, सो भी वास्ते मेहेर।
पर काफर जो उलटे, सो देखे सब जेहेर।।२९।।

मुहम्मद स.अ.व. ने जब अरब से निजधाम के लिये प्रस्थान किया तो अरब के लोगों पर परब्रह्म की कोप दृष्टि हई, किन्तु इसमें भी अच्छे लोगों के लिये कृपा दृष्टि ही थी। शरीयत में फंसे हुए झूठे लोगों को उसमें भी बुराई ही दिखायी दी।

भावार्थ- यद्यपि परब्रह्म को क्रोध आदि विकारों से रहित कहा गया है किन्तु बुरे कर्मों के परिणाम स्वरूप जो दैवी आपदा या अजाब आता है। उसे ही उपरोक्त चौपाई में कोप दृष्टि (कहर की नजर) कह कर सम्बोधित किया गया है।

केहेर नजर देखाए के, फेर लिए मेहेर माहें।
मुस्लिम नाम धराए के, बैठे मुस्लिम की छांहें।।३०।।

श्री प्राणनाथ जी ने शरीयत के मुसलमानों पर कड़ी दृष्टि करके पुनः उन्हें अपनी कृपा की छत्रछाया में ले लिया। उन्होंने अपना मुस्लिम नाम फकीर हजरत 'सैय्यद मुहम्मद इब्न इस्लाम' भी रखा और मुसलमानों के शरा-तोरा के राज्य में दिल्ली में ही विराजमान रहे।

भावार्थ- श्री जी के द्वारा भेजे गये १२ सुन्दरसाथ को जब काजी शेख -उल-इस्लाम के निर्देश पर सिद्दीक फौलाद द्वारा यातना दी गयी तब से औरगंजेब के साम्राज्य का पतन होने लगा। प्रतिवर्ष उसके परिवार का कोई न कोई सदस्य मृत्यु को प्राप्त होने लगा। शाही खजाना दिन-प्रति दिन खाली होता गया। स्वंय बादशाह औरगंजेब भी तख्ते ताउस से नीचे गिर पड़ा। उसे तख्ते ताउस पर शेर बैठा हुआ दिखायी पड़ता था। श्री जी का अपमान मुगल साम्राज्य के पतन का मूल कारण बना। उदयपुर में उन्होंने अत्याचारी मुसलमानों के विनाश के लिये स्पष्ट कह दिया ।

तब श्री जी साहिब जी एं कह्या, अब ना छोड़ो इनें ।

और दज्जाल कर मारहों, जड़ उखाड़ों बुनियाद पनें ।। बीतक साहिब ४६/१३

यह तो कहर की नजर थी किन्तु सनद ग्रन्थ के अवतरण के कारण मुसलमानों को कुरान की वास्तविकता का बोध हो गया, जिसके फलस्वरूप शेख बादल, फतह मुहम्मद, लाल खान, मिहीन पठान, अव्वल खां, नूर मुहम्मद जैसे मुसलमानों ने उन्हें आखिरी इमाम मुहम्मद महदी के रूप में पहचाना और अपना घर द्वार सब कुछ छोड़कर श्री पन्ना जी में आये तथा श्री जी की सेवा करते-करते अपना तन छोड़ा। यद्यपि मुसलमानों पर कहर की नजर से पहले सनद ग्रन्थ अवतरित हो चुका था और उसमें भविष्य के लिये ऐसा संकेत था। सनंद ग्रन्थ में इस प्रकार भविष्य से सम्बन्धित कई प्रसंग हैं जैसे- मेला होसी जब मोमिनों, तब देऊंगी नीके बताय।। सनंद ३२/४६

अब तो लगे सब बंदगी, आया भला आकीन।
नर नारी हक कलमें, कायम खड़े हैं दीन।।३१।।

अब तो सभी स्त्री-पुरूषों को श्री कुल्जुम स्वरूप के ऊपर अटूट विश्वास हो गया है जिससे सबको एक सत्य मार्ग निजानन्द प्राप्त हो गया है। सभी लोग अक्षरातीत परबह्म की प्रेम लक्षणा भक्ति में लग गये हैं।

पेहेले बीतक रसूलसों, सो भी सुनो नेक बोल।
आरब समझें आरबी, दोए कहूँ लुगे दिल खोल।।३२।।

पहले मैं मुहम्मद स. अ. व. (साहब) के विषय में कुछ घटना क्रम बताता हूँ, उसे आप सुनिये। अरब के लोग अरबी भाषा ही समझते हैं इसलिये मैं उनके लिये प्रसन्नता

पूर्वक दो शब्द अरबी भाषा में कह रहा हूँ।

।।प्रकरण।।३३।।चौपाई।।११७७।।

सनंध आरबी की

इस प्रकरण में आरबी भाषा में अरब के मुसलमानों के लिये सम्बोधन है। श्रीजी कहते है-

सम्मे न कलीम कलामी, नास कुरब अना कसीर।
नेक मैं कहूँ बोली मेरी, आदमी कबीले मेरे बहुत है।
अना हाकी हकाइयां कलूब अना, लिसान इस्म कबीर।।
मैं कहूं बातें दिल मेरे की, साथ मेरे नाम बड़े हैं।।१।।

अब मैं आप से अपनी अरबी भाषा में कुछ थोड़ी सी बातें कह रहा हूँ। अरब में मेरे मुस्लिम अनुयायी परिवार बहुत हैं। मैं अपने हृदय की बातें कह रहा हूँ। मेरे कई विशाल महिमा वाले नाम हैं।

फआल नफस इस्म इमाम, बाद कलिम कुल्ल नास।
धरया अपना नाम इमाम, पीछे कहेंगे सब आदमी।
बला किन ला अरफ कुरान, अना मिन्हुम कुल्ल लिरास।।
ए पर नहीं समझे कुरान, मैं इनमें से सब लिए साथ सिरके।।२।।

संसार में अनेकों ने अपना नाम इमाम (मेंहदी) रखा है। बाद में सभी लोग मुझे (इमाम महमत रुहुल्लाह) इसी नाम से पुकारेंगे। यहां के लोंगों को कुर्आन पाक की वास्तविकता का ज्ञान नहीं हैं। इन्हें यह नहीं मालूम है कि मैं इन सभी के लिये ही आया हूँ।

अल्लजी हकाइयां कलूब अना, मा खफी मिन्कुम।
जो बातें दिल मेरे की हैं, ना छिपाऊँ तुम से।
कुम्यकून कुरब अना, अल्लजी रूह मुस्लिम।।
तुम हो कबीलें मेरे के, जो कोई रूहें मुस्लिम हैं।।३।।

मैं अपने हृदय की बातों को आपसे कभी भी नहीं छिपाऊंगां। धर्मनिष्ठ (मुस्लमीन) एक परब्रह्म पर अटूट विश्वास रखने वाले जो भी मुसलमान हैं, वे सभी मेरे साथी हैं।

लेस खबर मा कुम कमा, अल्लजी बरारब।
नहीं है खबर तुमको ऐसी, जैसी कछू जिमी अरब की।

हाजा मुस्लिम कुल्ल हुंम, फआल अली मिन्जरब।।
मुसलमान सारे जो हैं, किए अली ने मोहों मार के।।४।।

आपको यह ज्ञात नहीं है कि अरब की धरती की यथार्थता क्या है। यहां के मुसलमानों को हजरत अली मुतुर्जा अ. ने मार-मार कर सीधा किया हैं।

व ला लहुमा ऐयून, खारज व ला दखल।
और नहीं हैं इनको आंखें, बाहेर की और नहीं है अन्दर की।
व लहुम लेस इगनू, व लहुम लेस अकल।।
और इनोंके नहीं है कान, और इनोंको नही है अकल।।५।।

यहां के मुसलमानों की न तो बाहर की आंखे है और न आन्तरिक। इनके न तो कुर्आन की वास्तविकता को सुनने के लिये कान ही हैं और न उसे समझने के लिये बुद्धि ही हैं।

भावार्थ- अत्यधिक मांसाहार करने के कारण अरब के लोगों की प्रवृत्ति तमोगुणी होती है। भोग-विलास में निरन्तर लिप्त रहने के कारण ये हकीकत और मारिफत की राह पर चलने में असमर्थ हैं। परिणाम स्वरुप इनके अन्तः चक्षु बन्द होते हैं। अत्यधिक कट्टरता के कारण ये बाह्य चक्षुओं से भी न तो सत्य को देखना चाहतें हैं और न अपने कानों से सत्य को सुनना चाहते हैं। ऐसी अवस्था में इनकी बुद्धि कैसे सत्य का चिन्तन कर सकती हैं?

जरब अना वज्हे मिन्सेफ, फआल अना मुसलमीन।
मारे में मोहों समसेर के से, किए मैंने मुसलमान।
लाकिन जाहिल इमन, व ला ए जाआ यकीन।।
पर मूरख जो हैं इमनके, और नहीं इनोंको आया आकींन।।६।।

ऐसे मूर्ख लोगों को मैंने तलवार के बल से मुसलमान बनाया। किन्तु यमन के लोग मूर्ख बुद्धि के हैं। उन्हें मेरे ऊपर विश्वास नहीं हुआ।

लिहाजा कमा काल इमन, ला बारकला मुसलमीन।
इस वास्ते ऐसा कह्या इमनके, नहीं हैं बरकत इन मुसलमानोंको।
बारकला धन्य ला बारकला धृक

कुलू बारकला हिन्द मुस्लिम, खुजू रास कलाम यकीन।।
कही बरकत हिन्द के मुसलमानों को, लिए सिर कलाम आकीन करके।।७।।

इसलिए मैंने कहा कि यमन के मुसलमानों पर अल्लाह की बरकत (मेहर) नहीं है। हिन्दुस्तान के मुसलमानों ने कुर्आन के वचनों पर विश्वास किया है, इसलिये वहीं पर बरकत्त है।

भावार्थ- अरब के लोगों ने हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहि व आलेहि वसल्लम से अपने लिये दुआ की याचना (कामना) की, परन्तु आप ने कहा कि अरब के लोगों पर अल्लाह की मेहेर नहीं होगी क्योंकि दीन को ताजा करना इमाम तआला मेहदी अ.त.फ.श. का काम हैं। परन्तु अरब तो तौहीद(अद्वैत) के सूत्र में एकाकार हो गया। अतः भारत को ही तौहीद में लाकर अज्ञानता का विनाश करके ज्ञान का प्रकाश किया है।

हाजा फास खबर इन्द कुंम, यज्लिस हिन्द सुब्हान।
ए जाहेर खबर पास तुमारे है, बैठेंगे हिन्द में खावंद।
कमा अवल काल रसूल, अना हस्ना हिन्द मकान।।
ऐसा पहले कह्या रसूलने, मेरा नेक है हिंद स्थान।।८।।

कुर्आन के माध्यम से आपके पास यह स्पष्ट जानकारी है कि अल्लाह तआला इमाम महदी के रुप में हिन्दुस्तान में विराजमान होंगे। मुहम्मद स.अ.व. ने ११०० वर्ष पहले ही कह दिया था कि कियामत के समय मैं हिन्दुस्तान में ही आऊंगा।

भावार्थ-ग्यारवहीं सदी से तात्पर्य यह है कि प्रत्येक सौ(१००) साल (वर्ष) में एक मुजदिद होता है परन्तु हजार वर्ष में होने वाले को मुजदिद अलिफ सानी अर्थात दूसरा हजार (१००१) का द्वितीय सुधारक कहते हैं। तत्पश्चात् पुनः हजार वर्ष तक उनके उत्तराधिकारी होतें हैं। अतः देवचन्द्र जी हजार वर्ष के दूसरे सुधारक है एवं मिहिर राज जी उनके उत्तराधिकारी हैं।

व ला लेतनी मौलार दो, अल्लजी हाकीयतो महंमद।
और न कदी खावंद रद्द करे, जो कछू कह्या है महंमद ने।
लागिल मुस्लिम इमाम, जा आ हिंदल अर्ज।।
वास्ते इन मुसलमानोंके इमाम मेंहदी, आया हिन्द की जिमी।।९।।

मुहम्मद साहब ने जो कुछ भी कहा है, उसे परब्रह्म कभी भी मिथ्या नहीं होने देंगे।

हिन्दुस्तान के मुसलमानों को आध्यात्मिक सुख देने के लिये इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जँमा अ.त.फ.श. (श्री जी हिन्दुस्तान (भारत वर्ष) में प्रकट हुए।

कुंम अल्लजी मुस्लिम, रसूल कुल्लहो कलिम।
तुम जो कोई मुस्लिम हो, रसूलने सबको कहा हैं।
यजाआ यकीनल्कुम, खैर तल्बो हिन्द मुस्लिम।।
आवेगा यकीन तुमारे तांई, पनाह मांगो हिन्दके मुसलमानों से।।१०।।

संसार के सभी मुसलमानों के प्रति मुहम्मद स.अ.व.व. का कथन है कि तुम्हें तभी सच्चा विश्वास होगा जब तुम हिन्दुस्तान के मुसलमानों की शरण में जाओगे।

यव्सरो हाजा कलमा, दाखल कलूब कुम्म।
देखो एह वचन, बीच दिल तुमारे के।
सैयबो विलाद कुल्हुम, खैर तलबो हिन्द मुस्लिम।।
छोड़ो विलायत सबकी, बखसीस मांगो हिंद के मुसलमानों पें।।११।।

मेरे कहे हुए इन वचनों का अपने दिल में विचार कीजिए। संसार के सभी देशों के विषय में सोचना छोड़कर एकमात्र हिन्दुस्तान के मुसलमानों से बख्शीश (आशीर्वाद,शरण) मांगिए।

अल्लजी कलिमा रसूलना, खुजू मुहव्ब कलाम।
जिन किनों ने वचन रसूल मेरे के, लिए प्यार सों बोल।
लागिल हिन्द मुस्लिम, हुबहुम जाआ इमाम।।
वास्ते हिंद के मुसलमानों के, प्यार कर इनों पर आये इमाम मेंहदी।।१२।।

जो कोई व्यक्ति मेरे मुहम्मद स.अ.व.व. के कहे हुए वचनों को प्रेमपूर्वक ग्रहण करेगा, वही इस रहस्य को समझेगा। इसलिये हिन्दुस्तान के मुसलमानों से प्रेम करें। आखरुल इमाम महदी अल्लाह तआला फर्जहु अल शरीफ साहिबुज्जमाँ हिन्दुस्तान में आये हैं।

अल्लजी रसूल सैयबो, ऐया अना फआली हुम।
जो रसूल ने छोड़ दई, क्या मैं करूं उसको।
खला अना अर्ज आरब, जाआ अना इन्द कुम।।
छोड़ी हम जिमी अरब की, आए हम पास तुमारे।।१३।।

मुहम्मद सल्ल. (साहब) ने अरब की जिस धरती का परित्याग कर दिया उसका मैं क्या करुं?हे अरब के मुसलमानों! आप भी अरब की धरती छोड़कर हिन्दुस्तान आ जाइये

और इमाम महदी अ.त.फ.श. से कहिए कि हम आपकी शरण में आयें हैं।

भावार्थ-सूर्य का पश्चिम में उदय होना इमाम-ए-जमाँ का अरब में प्रादुर्भाव परन्तु प्रकटीकरण भारत में होना है। क्योंकि अरब तो अद्वैत के सिद्धान्त का पालन कर रहा है, परन्तु भारत में बहुदेववाद था अतः यहां से बहुदेववाद को तिलाजंलि दिलवाकर अद्वैतवाद फैलाना ही सूर्य का प्रकाश (ब्रह्मज्ञान) फैलाना हुआ।

इस्मयो हिन्द मुस्लिम, अनी कलिम सिदक।
सुनो हिंद के मुसलमानों, मेरे कहना है सांच।
यकीन कान इन्द कुम, व कायमुल्कलमे हक।।
अकीन है पास तुमारे, और कायम हो साथ कलमे हक के।।१४।।

परब्रह्म पर अटूट विश्वास रखने वाले हिन्दुस्तान के धर्मनिश्ठ लोगों! आप मेरी बात सुनिये। मैं आपसे सत्य बात कह रहा हूँ। आपके पास अल्लाह, कुर्आन और रसूल्लाह रुल्ल. (रसूल साहब) के प्रति अटूट विश्वास हैं।

भावार्थ-देवबंदी मुस्लिमों में व बरेलवी विचारधारा के व्यक्ति हजरत मुहम्मद साहब के विषय में विवादग्रस्त हैं। देवबंदियों को गैब का ज्ञान नही है। जबकि बरेलवी मुस्लिम परब्रह्म को आशिक-माशूक मानते हैं। अतः दोनों ही सम्प्रदाय परस्पर विरोध में लीन है और पैगबंर की वास्तविकता से अनभिज्ञ हैं।

अवल स्वाल रसूल ना, व लाए आरफ अहद।
पेहले बोल रसूल मेरेके, और नहीं समझया कोई आदमी।
दलहिन कुल्ल य आरिफो, जाआ कलिम महंमद।।
अब सब यह समझेंगें, आया वचन महम्मद साहेब का।।१५।।

पहले कोई भी व्यक्ति मेरे रसूल अल्लाह रुल्ल. (साहब) के वचनों को समझ नहीं पाता था। अब तारतम ज्ञान (इल्म ए लदुन्नी) के प्रकाश में यह बात सबको समझ में आ जायेगी कि आखरुल इमाम मुहम्मद महदी ही मुहम्मद साहब के वचनों की वास्तविकता हकीकत को दर्शा रहे हैं।

भावार्थ- तारतम ज्ञान के द्वारा ही ज्ञात होता है कि अर्श-ए-अज़ीम में वहदत (अद्वैत) है, अतः वहां पर मेयराज की घटना स्वयं सिद्ध है। अल्लाह और मुहम्मद दो नहीं एक ही हैं। यद्यपि मेराज में दो अल्लाह - हदीवल्लाह की धारणा है, परन्तु दोनों वास्तव में

एक ही है।

अल्लजी जाआ कुम मुस्लिम, हाजा लागिल कुम फआल सुगल।
जो आए हो तुम मुस्लिम, यह खातिर तुमारे किया है खेल।
इब्सर सुगल अना यरजा, अल्लजी मुस्लिम कुल्ल।।
देख खेल हम फिरेंगे, जो कोई है मुस्लिम सो सब।।१६।।

परब्रह्म पर पूर्ण विश्वास रखने वाले लोगों! आपकी इच्छा को पूर्ण करने के लिए ही माया का यह खेल बनाया गया है। माया का यह खेल देख कर परब्रह्म के सभी विश्वासी लोग अपने धाम जायेंगे।

अनी कुल्ल मुस्लिम वाहेद, अस्लू वाहिद मकानी।
हम सब मुस्लिम एक हैं, असल एक है ठौर हमारा।
कांन हक वाहिद अना, गैर मुस्लिम लेस सांनी।।
है खसम एक हमारा, बिना मुस्लिम नहीं कोई दूसरा।।१७।।

सच्चिदानन्द अक्षरातीत पर अतिशय श्रद्धा-विश्वास रखने वाले हम सभी आत्मिक दृष्टि से एक ही स्वरूप हैं। हमारा मूल घर (परमधाम) भी एक ही है। हमारे आराध्य प्रियतम परब्रह्म भी एक ही हैं। परमधाम में परब्रह्म और ब्रह्ममुनियों के अतिरिक्त अन्य कोई भी नहीं है अर्थात् वह स्वलीला अद्वैत है।

भावार्थ- यद्यपि सनन्ध ग्रन्थ में अधिकतर स्थानों में मुस्लिम का अभिप्राय ईश्वरीय सृष्टि से है किन्तु उपरोक्त चौपाइयों में मुस्लिम का अर्थ ब्रह्मसृष्टियों(ब्रह्ममुनियों) से है। जन्म के आधार पर कोई भी मुस्लिम नहीं हो सकता। परमधाम के मूल सम्बन्ध के बिना मात्र शरीयत पर चलनें वाला जाहिरी मुसलमान है । उसे जीव सृष्टि (कुन्न की पैदाइश) के अन्तर्गत ही समझना चाहिए।

अनी हबो कुल्ल मुस्लिम, लाकिन जायद सिंध।
हाल अना कलिमे सिंध मुस्लिम, बाद कलिम अना हिन्द।।
मेरे प्यारे तमाम मुस्लिम, लेकिन अधिक हैं सिन्ध के।
अब मैं कहत हूं सिंध के मुसलमानों को, पीछे कहूंगी मैं हिंद के मुसलमानों को।।१८।।

परब्रह्म के प्रति सच्चा विश्वास एवं प्रेम रखने वाले सभी धर्मनिष्ठ लोग मुझे बहुत ही प्रिय हैं। सिन्ध के धार्मिक लोग तो अधिक ही प्रिय हैं। अब मैं सिन्ध के धर्मनिष्ठों के लिये

सिन्धी भाषा में बोल रहा हूँ। इसके पश्चात् मेरी आत्मा हिन्दुस्तान के धर्मनिष्ठों के लिये उद्‌बोधन करेगी।

।।प्रकरण।।३४।।चौपाई।।११६५।।

सनंध–सिन्धी भाखा

इस प्रकरण में सिन्धी भाषा में सिन्ध के लोगों को प्रबोधित किया गया है।

कारण अरवा अर्सजी, चुआं सिन्ध गालाए।
जिन कलमें रसूल जे, सचो आकीन आए।।१।।

परमधाम की आत्माओं के लिए मैं सिन्धी भाषा में कह रहा हूँ जिससे तारतम ज्ञान के प्रकाश में मुहम्मद स.अ.व. के वचनों पर सबको विश्वास हो जाए।

मोमिन बलहा महंमद, जे सदाई जाण।
थियो सुहाग सभ केई, मेहेबूब अचो पाण।।२।।

ब्रह्ममुनियों को सर्वदा से ही परब्रह्म के स्वरुप श्री प्राणनाथ जी से अगाध प्रेम रहा हैं। अब सभी ब्रह्मात्माओं को अत्यधिक प्रसन्नता हुई है, क्योंकि उनके प्रियतम परब्रह्म श्री जी के स्वरुप में संसार में आयें हैं।

चुआं कुजाडो हिंद के, सांई वडो डिंन्यो सुहाग।
आयो रब आलम जो, सभनी उघड़यो भाग।।३।।

मैं हिन्दुस्तान के लोगों के सौभाग्य के विषय में क्या कहूँ? प्रियतम परब्रह्म ने इन्हें बहुत बड़ा सौभाग्य प्रदान किया है। अब सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के परब्रह्म (श्री प्राणनाथ) आयें है, जिससे सबके भाग्य खुल गयें हैं।

अदयूं रसूल पांहिजो, कोठे आयो इमाम।
आलम सभे उलट्यो, अची करे सलाम।।४।।

सभी आत्म सम्बन्धियों! अपने रसूल साहब और इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी हमें परमधाम ले जाने के लिए आयें हुए हैं। सारे संसार का इन पर विश्वास है और सभी इनके चरणों में आ- आकर प्रणाम कर रहें हैं।

भावार्थ- श्री प्राणनाथ जी के ही स्वरुप में तीनों सूरतें विद्यमान हैं। **'तीसरी खूबी**

तीन हादी वजूद, आखिर आए बीच जहूद' ब.क. से यह स्पष्ट होता है।

सिंधडी थियूं वधाइयूं, मीर पीर फकीर।
पुन्यूं उमेदूं सभनी, खिल्ली थेयां सभ खीर।।५।।

प्राणेश्वर अ़क्षरातीत को अपने धाम हृदय में बसाने वाली श्री इन्द्रावती जी की आत्मा ने जिस मिहिरराज नामक मानव तन को धारण किया है, वह सिन्ध प्रान्त से ही जन्मा हैं। जीव, ईश्वरीय तथा ब्रह्मसृष्टि के लोग आ-आकर इस स्वरुप को बधाइयां दे रहें हैं। श्री प्राणनाथ जी के प्रकट होने से सबकी मनोकामनायें पूर्ण हो गयी हैं और सभी प्रसन्नता पूर्वक हंसते रहते हैं।

भावार्थ-सन्त वाणी के कथनानुसार हद को जानने वाला मीर है। बेहद को जानने वाला पीर है तथा हद- बेहद दोनों से परे परमधाम को जानने वाला फकीर कहलाता है। इस प्रकार इस चौपाई में मीर,पीर और फकीर का तात्पर्य जीव, ईश्वरीय सृष्टि तथा ब्रह्मसृष्टि से है।

अची विठो हिंद में, त्रूठो चोडे तबक।
थेयूं सुहाग सिंधडी, जिन कलमें यकीन हक।।६।।

प्रियतम अक्षरातीत भारतवर्ष में इमाम महदी के स्वरुप में आकर विराजमान हो गयें हैं। चौदह लोकों का यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड उनके प्रति समर्पित (फिदा) हो गया है। श्री महामति जी (श्री इन्द्रावती जी) के धाम हृदय में प्राणेश्वर विराजमान हैं। इनके तारतम ज्ञान से सभी के मन में परब्रह्म के प्रति अटूट विश्वास हो गया हैं।

द्रष्टव्य- परमधाम की इन्द्रावती आत्मा की ही शोभा का नाम महामति है जिसका अर्थ होता है- महानतम् (अनन्त) ज्ञान वाला स्वरुप। यह शोभा परब्रह्म की पांचों शक्तियों के उनके धाम हृदय में होने पर प्राप्त हुई। तुर्की भाषा में 'महामति' को ' महमत' शब्द से सम्बोधित किया जाता हैं। परमधाम की आत्मा का नाम 'इन्द्रावती ' भी यहाँ की भाषा के आधार पर किया गया है। 'आगे तो नूर तज्ल्ला, तहां जुबां बोल हैं और' सनद से यही सिद्ध होता हैं।

ईं अरब रसूलजी, बलही सिंध सुजाण।
यकीने पण अगरी, इस्क सिंधी खांण।।७।।

जिस प्रकार अरब के लोगों को मुहम्मद स.अ.व. से प्रेम है उसी प्रकार सिन्ध के

लोगों को श्री इन्द्रावती (महामति) से प्रेम हैं। यह स्वरुप अपने प्राणेश्वर पर अटूट विश्वास रखने वाला है तथा प्रेम का भण्डार हैं।

आऊं जोए इमाम जी, सिंधाणी सिरदार।
डिन्यो धणी सभ पांहिजो, मूंही हथ मुदार।।८।।

सिन्ध की प्रधान ब्रह्मात्मा श्री इन्द्रावती जी का कथन है कि मैं प्राणेश्वर अक्षरातीत की अर्धांगिनी हूँ। प्रियतम परब्रह्म ने ब्रह्मात्माओं की जागनी का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व मुझे सौंप दिया है।

आयो मिठडो मेहेबूब, आंऊं पण पिरन सांण।
अची बिठासी हिंद में, डिजां सिंधडी जांण।।९।।

मेरे मीठे प्रियतम इस संसार में आयें हैं। मैं भी उनके साथ हूँ अर्थात वे मेरे धाम हृदय में विराजमान हैं। जब वे पन्ना जी में जाकर लीला करेंगे तो मुझे अत्यधिक ज्ञान देंगे।

भावार्थ- श्री पद्मावती पुरी धाम में ही खुलासा, खिल्वत, परिक्रमा, सागर, श्रृंगार, सिन्धी, मारिफत सागर और छोटा क्यामत नामा तथा कुछ कीर्तन के प्रकरणों का अवतरण हुआ था। यही कारण है कि उपरोक्त चौपाई में श्री पन्ना में अधिक ज्ञान के अवतरण का प्रसंग हैं।

डिजां संडेहो सिंधडी, तूं घणूं बलही इमाम।
सिंध हिंद माधा थेई, पोरया जेदां रूम स्याम।।१०।।

श्री राजजी ने हब्शे में कहा था-

हे इन्द्रावती! तू प्राणेश्वर अक्षरातीत को बहुत प्यारी हैं। तुझे ही सारे संसार में तारतम ज्ञान का सन्देश देना हैं। जिस प्रकार रोम और साम (सीरिया) से ईसाइयत तथा इस्लाम का संदेश सारे विश्व में गया हैं। उसी प्रकार सिन्ध और हिन्द को तारतम ज्ञान के प्रसार के इस महान् कार्य में अग्रगण्य होना है।

भावार्थ- रोम की वेटिकन सिटी को केन्द्र बनाकर पोप ने ईसाईयत की कैथोलिक विचार धारा को सारे संसार में फैलाया। मुहम्मद स.अ.व.व. ने अपना उत्तराधिकारी हजरत अली मुर्तुजा को नियुक्त किया था किन्तु अपने षडयन्त्रों के बल पर अबूबक्र, उमर तथा उस्मान खलीफा बनें। इन तीनों की मृत्यु के पश्चात् हजरत अली को खलीफा बनाया गया।

उन्होंने बीबी आयशा के षडयन्त्रों से स्वंय को सुरक्षित रखने के लियें मक्का के स्थान पर बगदाद को अपना केन्द्र बनाया किन्तु दुर्भाग्यवश उनकी भी नमाज़ के समय हत्या कर दिये जाने के कारण मुआविया के पुत्र यजीद को अपना अत्याचार बढ़ाने का अवसर मिला। इमाम हसन और हुसैन की शहादत (बलिदान) के पश्चात् खलीफा का पद समाप्त कर दिया गया एवं सीरिया (शाम) में एकछत्र राज शाही शासन केन्द्रित हो गया। वहां से उन्होंने तलवार के बल पर इस्लाम को संसार में फैलाया।

उपरोक्त घटनाक्रम के समान ही तारतम ज्ञान के प्रसार में सिन्ध तथा हिन्द की विशेष भूमिका रही हैं। अब से लगभग दो सौ वर्ष पूर्व मूल्तान से लेकर कराची, जामनगर आदि सभी सिन्ध प्रान्त के अन्तर्गत माने जाते थे। पंजाब, दिल्ली, राजस्थान, मध्य- प्रदेश और बिहार आदि हिन्दी भाषी प्रदेशों को हिन्द के अन्तर्गत माना जाता था।

सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी के द्वारा वि० सं० १६७८-१७१२ तक अर्थात् लगभग ३४ वर्षों तक तारतम ज्ञान का प्रकाश किया गया। बिहारी जी के गादी पर विराजमान होने के पश्चात् जाम नगर में तारतम का प्रकाश बन्द हो गया। कालान्तर में यह लीला श्री महामति जी के द्वारा सम्पन्न हुई जिसमें उन्होंने राजस्थान, दिल्ली, उत्तर-प्रदेश, मध्य प्रदेश आदि में तारतम की ज्योति फैलायी। तत्पश्चात् श्री पन्ना जी में विराजमान होकर ब्रह्मलीला करते हुए खिल्वत, परिक्रमा, सागर और श्रृंगार के रुप में परमधाम का अखण्ड धन दिया। इस चौपाई में इसी तथ्य को दर्शाया गया हैं।

हांणे चुआं सचो सांईजी, जे अची बिठो हिंद।
ईसे मांधा अची करे, भगो दज्जाल जो कंध।।११।।

श्री महामति जी कहते हैं मैं आपको सच्चे प्रियतम परब्रह्म की पहचान कराता हूँ जो श्री प्राणनाथ जी (इमाम महमत रुहुल्लाह महदी) साहिबुज्जमां के स्वरुप में हिन्दुस्तान में विराजमान हैं उनके स्वरुप में परब्रह्म की आह्लादिनी शक्ति श्यामा जी (रुहुल्लाहु) भी पहले से विद्यमान हैं। सबके ऊपर शासन करनें वाला दज्जाल (अज्ञान) भाग गया है।

दीन कियाऊं हिकडो, भनी सभी कुफरान।
अर्स बका केयाऊं जाहेर, जित हक बिठो पांण।।१२।।

उन्होनें तारतम ज्ञान के प्रकाश में संसार के सभी मत पन्थों (धर्मों) को एक सत्य का उद्घोषक बना दिया हैं, और सबके संशयों को नष्ट कर दिया हैं। श्री प्राणनाथ जी ने उस अखण्ड परमधाम का ज्ञान दिया है जिसमें स्वयं परब्रह्म अपने नूरी स्वरुप से

विराजमान हैं।

द्रष्टव्य- परब्रह्म परमधाम में अपने नूरमयी स्वरुप से हैं। तथा इस संसार में श्री जी के स्वरुप में अपने आवेश स्वरुप से लीला कर रहें हैं। इस सम्बन्ध में श्रृगांर ग्रन्थ के ये कथन देखने योग्य है-

तुम ही उतर आये अर्स, इत तुम ही कियो मिलाप।
तुम ही दई सुध अर्स की, ज्यों अर्स मे हो आप।।

आसमान जिमी जे विचमें, व्यो कोए न चाए हक।
से हंद सभे उडी वेयां, जे सिजदा कंदी हुई खलक।।१३।।

अब तक चौदह लोंकों के इस ब्रह्माण्ड (धरती से आकाश तक) में किसी को भी सच्चिदानन्द अक्षरातीत की पहचान नहीं थी। सारा संसार जिन धर्मस्थानों के प्रति नतमस्तक था, उनका महत्व अब समाप्त हो गया है।

सचो सांई जडे आइयो, तडे व्यो पुजाए केर।
सुज कायम उगी थ्यो जाहेर, तडे उडी वेई सभे अंधेर।।१४।।

जब श्री प्राणनाथ जी के स्वरुप में सच्चे प्रियतम आ गये तो दूसरे झूठ स्वरुपों की पूजा कैसे हो सकती है ? जब प्रत्यक्ष रूप में अखण्ड परमधाम के ज्ञान का सूर्य उग आया है तो अज्ञानता के सारे अन्धकार को नष्ट होना ही है।

धणी जमाने जो आइयो, तडे छुटी वेई तांणों बांण।
तित मोमिन उथी ऊभा थेयां, दोजख थई कुफरान।।१५।।

आखरुल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जमा (श्री प्राणनाथ जी) के प्रकट होने पर सभी मत-पन्थों के विवाद समाप्त हो गये। तारतम ज्ञान के प्रकाश में ब्रह्ममुनि जागृत होकर खड़े हो गये तथा नास्तिकों को दोजक मिली अर्थात प्रायश्चित की अग्नि में जलने का दण्ड मिला।

हित के के बुजरक आइया, जे नजीकी हक जा।
ए वडा दीन दुनी में, रूहें चाईन पातसा।।१६।।

संसार में कोई-कोई आत्मा बड़ी गरिमा को धारण करने वाली हैं। परब्रह्म की लीला में इनकी विशेष भूमिका हैं। ये दोनों आत्मायें शाकुण्डल और सकुमार धर्म एवं लौकिक दृष्टि से सर्वोपरि हैं तथा बादशाह कहलाती हैं।

भावार्थ- स्वलीला अद्वैत परमधाम के एकतत्व (वहदत्त) में सभी परब्रह्म के अंग रुप हैं। किसी को परब्रह्म के नजदीकी कहने का आशय संसार में होने वाली जागनी लीला मे विशिष्ट भूमिका के निर्वहन से हैं।

सेर सरे मके मुलक, आई तेहां पुकार।
रह्या ईमान से सतजणां, व्या काफरे मार केयां कुफार।।१७।।

शरियत के मुख्य केन्द्र मक्के से वसीयतनामें के द्वारा यह सूचना आयी है कि परब्रह्म के ईमान (विश्वास) पर केवल सात ही व्यक्ति खड़े रहे हैं। शेष अन्य लोगों को दज्जाल ने मारकर नास्तिक बना दिया है।

सिंधमें अदियूं पांहिज्यूं, हे खबर डिजां तिन।
असां गाल सुणी दम ना रहे, जा हुंदी रूह मोमिन।।१८।।

परमधाम की आत्माओं! सिंध में अपनी एक ब्रह्मात्मा इन्द्रावती जी हैं। यह बात उन्होंने बातायी है। इसे सुनकर परमधाम की जो भी ब्रह्मात्मा होगी, वह प्रियतम परब्रह्म से मिले बिना एक पल के लिए भी दूर नहीं रह पायेगी।

भावार्थ-श्री महामति के द्वारा ही अपने नाम को प्रथम पुरूष में व्यक्त किया गया है। चौपाई में (खबर) का तात्पर्य श्री प्राणनाथ जी के संसार में प्रकट होने से है।

सुख बका अर्स हिन जिमी, हिए गिनणजी वेर।
पोए आलम जडे उलट्यो, तडे लखे पूछे चोए केर।।१९।।

इस संसार में अखण्ड परमधाम के सुखों का अनुभव करने के लिये यही सुनहरा अवसर हैं। बाद में (योगमाया के ब्रह्मण्ड में) तो जब सारा संसार ही परब्रह्म के चरणों में आ जायेगा, उस समय लाखों लोगों में यह कौन पूछने वाला होगा कि हमारा परब्रह्म के प्रति कितना विश्वास और प्रेम हैं। वहाँ कोई हमें यह भी कहने वाला नहीं होगा कि हम परब्रह्म का साक्षात्कार पाने के लिए क्या करते हैं।

निसबती अची गडवी, पण ही सुख फजर कित।
सुख बका अर्स केर गिंनी सगे, जे नूर जमाल बुठडो हित।।२०।।

औरंगजेब के रुप में सकुमार की आत्मा तो मिल गयी है किन्तु उसे तारतम ज्ञान के उजाले का सुख नहीं मिल पाया हैं। शरियत के बन्धनों में फंसी होने के कारण जो संसार में अक्षरातीत के प्रत्यक्ष स्वरुप श्री प्राणनाथ जी को नहीं पहचान पा रही है, भला वह

परमधाम के अखण्ड सुखों का अनुभव कैसे अनुभव कर सकती हैं।

हे सुख मोमिन हमेसगी, अर्समें सभे गिनन।
पण जे सुख अर्सजा हिन जिमी, से व्यो रे न्हाए रूहन।।२१।।

परमधाम में तो ब्रह्मात्माओं को सभी सुख अखण्ड रुप से सदा प्राप्त ही हैं किन्तु उन सुखों का अनुभव इस संसार में लेने के लिये पुनः दूसरा अवसर नही मिलेगा।

हकें डिंना सुख आलम में, त्रभेरका पांणके।
से सुख गिडां रात निद्रमें, के भत चुआं सुख ए।।२२।।

हे साथ जी! प्रियतम परब्रह्म ने संसार में हमे तीन बार सुख दिया है। उन सुखों को हमने व्रज, रास में रात्रि की नींद की भांति (पहचान से रहित होकर) लिया हैं। उन अनुपम सुखों का वर्णन कैसे किया जा सकता हैं।

भावार्थ- यद्यपि, योगमाया के ब्रह्माण्ड को संसार नहीं कह सकते हैं। किन्तु परमधाम से अलग होने तथा कुछ नींद के कारण संसार कह दिया गया है।

जीं सुख सोणेंमें गिंनजे, तीं सुख गिडां रात।
डींहें सुख गिनजे जागंदे, ही आए रेहेमानी दात।।२३।।

जिस प्रकार स्वप्न में सुख लिये जाते हैं, उसी प्रकार हमने व्रज-रास में स्वनावस्था जैसा सुख लिया। अब तारतम ज्ञान के द्वारा दिन का उजाला हो गया है जिसमे जागृत होकर प्रियतम परब्रह्म का सुख लीजिए। कृपा के सागर स्वयं परब्रह्म श्री प्राणनाथ जी परमधाम के सुख का भण्डार लेकर आयें हैं।

भावार्थ-व्रज का सुख पूर्णतया नींद का था। उसमें न तो परमधाम की पहचान थी और न अक्षरातीत की। रास में कुछ नींद और कुछ जागृति थी अर्थात प्रियतम परब्रह्म की तो पहचान थी किन्तु अपने मूलघर की पहचान नही थी। तारतम ज्ञान के प्रकाश में जागनी लीला में घर की भी पहचान हैं तथा मूल सम्बन्ध की भी। ऐसी लीला का सुख विलक्षण ही हैं।

जे सुख डिंना हकें रातजा, तेजी पण हित लज्जत।
अर्सजा पण सुख हिंनमें, गिडां कई कोडी भत।।२४।।

प्राणेश्वर अक्षरातीत ने व्रज-रास में हमें जो सुख दिया हैं उस का इस जागनी ब्रह्माण्ड में रसास्वादन (लज्जत) तो है किन्तु इस संसार में हमने परमधाम के सुखों का करोड़ों प्रकार से अनुभव किया हैं।

ए सिफत न जिभ चई सगे, सोई जांणे गिडां जिन।
सुख कीं चुआं हिन भूंअ जा, सुख डिंना महें बका वतन।।२५।।

इस सुख को जिह्वा से व्यक्त नहीं किया जा सकता है। इसे तो मात्र वे ही जानते हैं जिन्होंने इसकी अनुभूति की हैं। इस संसार में प्रियतम परब्रह्म के जिन सुखों का अनुभव हो रहा है, वे परमधाम में जो अनन्त सुख देंगे, उसे व्यक्त नही किया जा सकता।

भावार्थ-इस जागनी ब्रह्माण्ड में परमधाम के सुखों का बुद्धि द्वारा अनुभव ज्ञान से एवं प्रत्यक्ष अनुभव चितवनी द्वारा होता है किन्तु परमधाम में पूर्ण जागृति होने से यहां के अनुभूत सुखों की स्मृति ही विशेष आनन्ददायी होगी।

बरकत हिन रूहनजी, सुख गिडां सभनी मुलक।
सिफत न थिए हिन सुखजी, हे जा पेराई सभे खलक।।२६।।

इन ब्रह्मात्माओं की कृपा से संसार के सभी देशों के लोगों को बेहद मण्डल में अखण्ड मुक्ति का सुख मिलेगा (मिला)। सम्पूर्ण मानव जाति जिस अलौकिक सुख की प्राप्ति करेगी, उसकी महिमा का वर्णन शब्दों में नहीं हो सकता।

कागर केयां सभ पधरो, खोल्या हकजा गंज।
सुख हिंनांऊ सभ बका, जिंनी रात डींहे हुआ डुख रंज।।२७।।

श्री प्राणनाथ जी ने कुर्आन के सभी गुह्य भेदों को खोल कर सच्चिदानन्द परब्रह्म की पहचान करायी हैं। इस संसार के जो प्राणी दिन-रात दुःख के सागर में डूबे रहते थे, उन्हें बेहद का अखण्ड सुख प्रदान किया हैं।

कारैं सदीमें कयामत, लिखी मंझ कुरान।
से सभी केयांऊं पधरा, जे गुझ हुंदा निसान।।२८।।

कुर्आन में लिखा है कि हिजरी ग्यारहवीं सदी में कियामत आयेंगी अर्थात् सबको अखण्ड मुक्ति देने वाला परमधाम का तारतम ज्ञान प्रकट होगा। श्री जी साहेब जी ने कियामत के सभी सात निशानों का रहस्य खोला।

भावार्थ- जब हिजरी के सन् ९९० वर्ष और ९ माह व्यतीत हो चुके थे, उस समय दसवीं सदी अर्थात् वि०सं० १६३८ में श्री देवचन्द्र जी का जन्म हुआ। इसी प्रकार वि०सं०

१७३५ अर्थात् हिजरी सन् १०६० में श्री महामति जी को हरिद्वार में सभी आचार्यों ने श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरुप में स्वीकार किया। इसके एक वर्ष के पश्चात् दिल्ली में काजी सेख इस्लाम सहित कुर्आन के अन्य विशेषज्ञों ने उन्हें आखरुल जमा इमाम मुहम्मद महदी के रुप में स्वीकार किया तथा यह भी माना कि कियामत आ चुकी हैं।

सदी बारैं बी खलक, जिमी या आसमान।
आखिर थेई सभनी, समझे जा सुजान।।२६।।

बारहवीं सदी में ईश्वरीय सृष्टि की जागनी होगी तथा धरती से आकाश तक अर्थात् चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में मानव जाति (जीव सृष्टि) में तारतम ज्ञान का प्रकाश फैल जायेगा। इस रहस्य को कोई विवेक शील व्यक्ति ही समझेगा।

भावार्थ-बडा क्यामतनामा में लिखा गया है-

दसंवी ईसा ग्यारही इमाम, बारहीं सदी फजर तमाम ।
ए लिख्या बीच सिपारे आम, तीसवां सिपारा जाको नाम ।।

कुर्आन के सि. ३० सू. फजरि ८६ आयत १-२''वल्फजरि वलयालिन अश्खि'' फज्र की कस्म सौगंध और दस रातो की। कुरान पाराः ३० अस्म सूरः कदरि आयत-३-४-५

''लैल तुल कदरि खैरुम्- मिन अल्फि शहर तन्जुल मलाइकतु व रुहु फीहा बिइज्नि रब्बिहिम मिन-कुल्लि अस्मिन्'' अर्थात् शब ए- कद्र हजार महीने से बेहतर है। इसमें रुहें व फरिश्ते अपने रब के हुक्म से उतरते हैं। सलातुन हिन्म हन्ता मत लैल फज्रि अर्थात् यह सुबह होने तक सलामती है।

वि.स. १७४५ में ग्यारहीं सदी सम्पूर्ण हो जाती है ''व यस्तऊ जिल्-न-क बिल अजाबि व लम्युखलिफल्लाहु व अदह व इनन यौमन अिन-द अल्फि सनतिम्मिम्मा तअददुन'' अर्थात् तुम से अजाब के लिए जल्दी कर रहे और खुदा वायदा हर्गिज खिलाफ नहीं करेगा और बेशक तुम्हारे परवरदिगार के नजदीक एक दिन तुम्हारे हिसाब से हजार वर्ष के बराबर है और वि.स. १८४५ में बाहरवीं सदी पूर्ण होती है। वि.स. १७५१ में श्री जी की अन्तर्धान लीला के पश्चात् ईश्वरीय सृष्टि की जागनी लीला के ३० वर्ष और जीव सृष्टि के जागनी लीला के ७० वर्ष पूरे होते है। इस सम्बन्ध में कीर्तन ग्रन्थ में कहा गया है- तीसे सृष्ट विष्णु सौ बरसे , प्रेमे पीवेगा शब्दों का सार।

अर्थात् वि.स. १८४५ तक ईश्वरीय सृष्टि तथा जीव सृष्टि की जागनी का समय

होगा। इस समय तारतम ज्ञान का प्रकाश चारों ओर फैल जाने से जीव सृष्टि को भी अक्षरातीत एवं परमधाम का ज्ञान हो जायेगा। वह कर्मकाण्ड का पालन करते हुए भी श्री प्राणनाथ जी के विरह का अनुभव करेगी।

कायम सदी तेरहीं, उथींदा निरवाण।
महामत जोए इमामजी, जाहेर क्याऊं फुरमान।।३०।।

तेरहीं सदी में संसार के सभी जीव तारतम ज्ञान के प्रकाश मे जागृत होंगे और अखण्ड मुक्ति को प्राप्त होगें। श्री महामति जी की आत्मा कहती है कि मैं प्राणेश्वर अक्षरातीत की अंगना हूँ और उनके आदेश से तारतम ज्ञान के प्रकाश में मैनें कुरान के इन गुह्य रहस्यों को उजागर किया है।

भावार्थ-वस्तुतः अखण्ड मुक्ति तो प्रलय के पश्चात् ही होगी। तब तक सभी जागृत जीव, ईश्वरीय सृष्टि एवं ब्रह्मसृष्टि श्री जी की छत्रछाया में श्री पन्ना जी में रहेंगे। तेरहवीं सदी अर्थात् वि.स. १९४५ तक तारतम का प्रकाश फैलने से ब्रह्माण्ड को अखण्ड मुक्ति का वरदान प्राप्त हो जायेगा।

माया का यह खेल कब तक चलेगा?यह केवल मूल स्वरूप श्री राज जी ही जानते हैं। 'ए दिन किने ना किया मुकरए, ताए पेहेचानों जिन दई खबर' ब.क. २३/४ से यह सिद्ध होता है। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि चौदहवीं सदीं तक का ही कुर्आन में वर्णन है, पन्द्रहवीं सदीं का नहीं। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि पन्द्रहवीं सदीं के १-१०० वर्षों के बीच कभी भी प्रलय का समय आ सकता है, किन्तु वास्तविक सत्य केवल श्री राज जी ही जानते हैं।

।।प्रकरण।।३५।।चौपाई।।१२२५।।

सनंध-ईसा इमाम के कजा की

इस प्रकरण में सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी एवं श्री प्राणनाथ जी के तारतम ज्ञान के द्वारा धार्मिक विवादों के समाधान एवं उससे प्राप्त होने वाले सुख का वर्णन है।

इत ईसा मसी आए के, पेहेले किया सरंजाम।
काटे आउध दज्जाल के, पीछे आए रसूल इमाम।।१।।

सबसे पहले संसार में श्यामा जी(रूहुल्लाहु) का प्रकटन हुआ, जिन्होंने परमधाम से

तारतम ज्ञान लाकर जागनी की सारी व्यवस्था कर दी। तारतम के प्रकाश में उन्होने अज्ञान रूपी दज्जाल की शक्तियों को नष्ट कर दिया। इसके पश्चात् उनके दूसरे तन (महामति जी) के धाम हृदय में बसरी सूरत मुहम्मद स.अ.व तथा हकी सुरत श्री प्राणनाथ जी(इमाम महदी) का प्रकटन हुआ।

भावार्थ-उपरोक्त चौपाई के पहले चरण में कथित 'ईसा मसी' शब्द से कुछ सुन्दरसाथ बेतलहम में पैदा होने वाले ईसा मसीह(क्राइस्ट) से आशय लेते है और यह धारणा बना लेते है कि श्यामा जी की आत्मा ही ईसा मसीह के अंदर आयी थी। यदि ऐसा माना जाये तो निम्नलिखित प्रश्न खड़े होते है,

१.यदि श्यामा जी की आत्मा ईसा मसीह के अंदर थी तो परमधाम की आत्मायें उस समय कहाँ थी ?

२. उस समय अक्षरातीत का आवेश ईसा मसीह के अन्दर आया था या नहीं ?

३.कुर्आन के ६ दिनों के प्रसंगों १-(हूद नबी के घर तूफान का आना) २-रास (नूह नबी के घर तुफान आना) ३-(अरब) ४ - रूहुल्लाहु (श्री देवचन्द्र जी) तथा ५-इमाम महदी (श्री प्राणनाथ जी) ६-मोमिनों(ब्रह्मात्माओं) द्वारा जागनी में कहीं भी ईसा मसीह का वर्णन नहीं है। कुर्आन में ईसा मसीह को मात्र एक पैगम्बर माना गया है। उसमें परब्रह्म की आह्लादिनी शक्ति के विराजमान होने का कोई भी उल्लेख नहीं है।

४. जिस तन में श्यामा जी की आत्मा हो उसे क्रूस पर कैसे चढ़ाया जा सकता है?

५. ईसा मसीह को श्यामा जी का स्वरूप मानने पर कुर्आन के ६ दिनों का प्रसंग सात दिनों का हो जायेगा। इसमें योगमाया के न्याय के दिन की लीला जोड़ने पर ८ दिन का प्रसंग होगा, जो कुर्आन के पूर्णतया विपरीत होगा।

६.'द विंची कोड' नामक पुस्तक में लिखा है कि ईसा मसीह को क्रुस पर चढ़ाये जाने के समय वे किसी प्रकार बचकर कश्मीर आ गये थे। वहीं पर एक लड़की के साथ उनका विवाह हुआ और उनकी सन्तानें भी हुई। आज भी उनकी मजार (समाधि) कश्मीर में हैं। इस नाम से एक फिल्म भी बनायी गयी है।

७.कुछ लोगों का ऐसा मत है कि जब जीसस को क्रूस पर चढ़ाया गया था तो भारत स्थित उनके गुरूदेव ने अपने योगबल से उन्हे बचा लिया था तथा उन्हे भारत आने के लिये प्रेरित किया था। यह सर्वविदित है कि ईसा मसीह ने अपने जीवन के १२ वर्ष भारत में ज्ञान की खोज में बिताये थे।

ईसा मसीह का मूल नाम जीसस या यीशु है। कुर्आन के मरियम सू. में ईसा मसीह

को अल्लाह की रूह कहने का आशय भी श्यामा जी (रूहल्लाह) से नहीं है। अरबी भाशा में आत्मा एवं जीव दोनों के लिये 'रूह' शब्द का ही प्रयोग होता है, मेयराज के प्रसंग में भी ईसा मसीह को सात आकाशों के अर्न्तगत ही माना गया है। ऐसी स्थिति में उनका सम्बन्ध परमधाम मूल मिलावे से कैसे माना जा सकता है? ऐसी मान्यता है कि उन्होने एक मरे हुये व्यक्ति को जीवित कर दिया था। इसी कारण उन्हे मसीह कहा गया, जिसका अर्थ होता है- मुर्दों को जीवित करने वाला।

सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी का तारतम ज्ञान शरीर रूपी कब्र में अज्ञानता की नींद में सो रहे(मरे हुए) जीव को जागृत करके खड़ा कर (परब्रह्म की ओर उन्मुख) कर देता है। कियामत के सातों निशानों में कब्रों से मुर्दों के उठने का भी एक निशान है। कब्रों से मुर्दों को उठाने की शोभा श्यामा जी के दूसरे तन (महामति में) होनी है जिन्हें इमाम महदी की शोभा प्राप्त है।

तारतम ज्ञान का अवतरण श्री श्यामा जी के पहले तन (श्री देवचन्द्र जी) से होता है और उसका प्रसार दूसरे तन (महामति) से होता है। इस प्रकार मुर्दों को जीवित करने वाला तारतम ज्ञान लाने के कारण उन्हे श्री कुल्जम स्वरूप में 'ईसा मसीह कहा गया है। यीशु या जीसस से श्यामा जी का कोई भी सम्बन्ध नहीं है। परब्रह्म के आनन्द अंग होने के कारण श्यामा जी को 'रूहुल्लाहु' अर्थात् अल्लाह तलाह की रुह (आनंद अंग) भी कहा गया है। इस तथ्य को बड़ा. क्या. १/२८-३१ से सरलता पूर्वक समझा जा सकता है।

ज्योतिष कहे विजिया अभिनन्द, सब कलिजुग को करसी निकंद।
अंजील कहे ईसा बुजरक, सो आए के करसी हक ।।
जूहद कहे मूसा बड़ा होए, ताके हाथ छूटे सब कोए ।
यों सारों ने रसम जुदी कर लई, सबे बुजरकी धनी की कही ।।
ओ उरझे नाम जुदे धर, रब्ब आलम का आया आखिर ।
अपनी अपनी में समझे सब, जुदा न रहया कोई अब ।।
सब किताबों ने दई साख जुदे नाम जुदे लिखी भाख ।
सत असत दोऊ जुदे किए, माया ब्रह्म चिन्हाए के दिए ।।

अब सब्दातीत की सब्द में, सोभा बरनी न जाए।
जो कछू कहूं सो सब्द में, बोलूं कौन जुबांए।।२।।

ऐसे प्राणेश्वर अक्षरातीत शब्दों से परे है। उनकी अनुपम शोभा का वर्णन इस संसार के शब्दों से नहीं हो सकता किन्तु मेरी विवशता है कि मुझे इसी संसार के शब्दों में

कहना पड़ रहा है। अब प्रश्न यह है कि मैं किस जिह्वा से उनकी शोभा का वर्णन करूँ ?

खूबी तखत ना केहे सकूं, इन जुबां के जोर।
जांनूं रात कुफर की मिट गई, हुआ दिन जाहेर भोर।।३।।

इस समय श्री प्राणनाथ जी न्याय के जिस सिंहासन पर विराजमान है,उसकी शोभा का वर्णन इस जिह्वा से नहीं हो सकता। अब तो ऐसा लग रहा है कि अज्ञानता के घोर अंधकार से भरी हुई रात्रि समाप्त हो गयी है और तारतम ज्ञान रूपी सूर्य के उगने से प्रातः काल का मनोरम दृश्य है।

भावार्थ-श्री प्राणनाथ जी के बैठने के लिये जिस सिंहासन (न्यायासन) का यहां वर्णन है, वह कोई स्थूल सिंहासन नहीं है,अपितु ज्ञान दृष्टि से होने वाले न्याय का भावात्मक है। इसी प्रकरण की छठीं चौपाई में वर्णित छत्र और चंवर आदि का वर्णन भी भावात्मक ही समझना चाहिए।

हिसाब नहीं उजास को, आगे ले खडा़ लदुन्नी नूर।
जाए ना बरन्यो इन जुबां, खड़ी अर्स अरवा हजूर।।४।।

श्री प्राणनाथ जी (इमाम महदी) के सिंहासन के आगे तारतम ज्ञान का इतना उज्ज्वल प्रकाश फैला हुआ है कि उसकी सीमा नहीं हो सकती। इस जिह्वा से उसके तेज का वर्णन हो पाना सम्भव नहीं हैं। श्री जी के सम्मुख जागृत होने वाली परमधाम की आत्मायें भी खड़ी हुई हैं।

आगे खडा़ असराफील, और जबराईल हुकम।
जोस सब रूहन पर, वतन बका खसम।।५।।

श्रीजी के सम्मुख जागृत बुद्धि का फरिश्ता अस्राफील तथा हुक्म (आदेश) का फरिश्ता जिब्रील भी खड़ा है। प्रत्येक ब्रह्मात्मा के हृदय में अपने प्राणवल्लभ अक्षरातीत तथा अखण्ड परमधाम के प्रेम एवं विश्वास का जोश विद्यमान है जो उनके मुखारविन्दों से प्रकट हो रहा है।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई के तीसरे चरण में जोश का तात्पर्य प्रेम, विश्वास आदि के उस मनोभाव से है जो अमूर्त होते हुए भी मूर्तिमान की भांति प्रतीत होता है 'हुक्म' शब्द का अलग-अलग प्रसंगों में अलग-अलग अर्थ होता है। कहीं अक्षर ब्रह्म तो कहीं अक्षरातीत का आवेश तो कही जिब्रील। लीला के प्रसंग के आधार पर अर्थ का निर्धारण किया जाता है।

यों बैठे तखत इमाम, सिर छत्र कई चवंर।
रसूल अली आए मिले, हुई बधाईयां घर घर।।६।।

इस प्रकार न्याय के सिंहासन पर इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी विराजमान हैं। उनके शिर पर यश रूपी छत्र शोभायमान हो रहा था। सुन्दरसाथ अपने समर्पण रूपी चंवर को फेर (हिला) रहे है। इसी समय मुहम्मद स.अ.व तथा महाराजा छत्रशाल जी उनसे आकर भेंट करते हैं। घर घर उनके मिलन की बधाई बज रही है।

द्रश्टव्य- यद्यपि सनद ग्रन्थ के अवतरण के पूर्व महाराजा छत्रशाल जी की जागनी नहीं हुई थी, किन्तु भविष्य के कथन को यहां उद्धृत किया गया है।

गुझ थे मोमिन अर्स के, ताकी जाहेर हुई खबर।
सो बैठे घेर इमाम को, हुई बधाइयां घर घर।।७।।

आज दिन तक परमधाम के ब्रह्ममुनियों को कोई जानता नहीं था। अब सभी को उनकी पहचान हो गयी है और वे सभी अपने प्राणेश्वर अक्षरातीत को घेर कर बैठे हैं। इस जागनी लीला की घर-घर में खुशियां मनायी जा रही हैं।

कई औलिए कई अंबिए, कई फरिस्ते पैगंमर।
सो सब आगे आए खड़े, हुई बधाइयां घर घर।।८।।

श्री प्राणनाथ जी के सिंहासन के आगे बहुत से औलिए, अंबिए, फरिश्ते और पैगम्बर खड़ें है और अपनी श्रद्धा की भेंट चढ़ा रहे हैं। चारो ओर घर-घर में इस बात की बधाई मनायी जा रही है।

आइयां किताबें जिन पर, बुजरक जो मेहेत्तर।
मुसलमान आए संग, हुई बधाइयां घर घर।।९।।

तौरेत, इंजील और जंबूर का अवतरण मूसा, ईसा और दाऊद पैगम्बर के द्वारा हुआ। ये सभी पैगम्बर तथा उनके साथ परब्रह्म पर अटूट विश्वास रखने वाले धर्मनिष्ठ (मुस्लिम) लोग भी श्रीजी की सानिध्यता में आये हैं। इस बात से घर-घर में प्रसन्नता छायी हुई है।

मुसलमान कई भेखसों, पीर मरद फकर।
पीछा कोई ना रेहेवहीं, हुई बधाइयां घर घर।।१०।।

अनेक प्रकार की वेशभूषा को धारण करने वाले मुसलमान, धर्मगुरू तथा उनके शिष्य एवं बहुत से फकीर भी श्रीजी के शरण में आये हैं। अब कोई भी आने में पीछा नहीं

रहना चाहता है। इस मनोहर लीला की घर-घर में बधाई हो रही है।

भावार्थ-उपरोक्त चौपाईयों में श्री प्राणनाथ जी के न्याय सिंहासन पर विराजमान होने पर जो शोभा हुई है, उसका भावात्मक एवं सूक्ष्म चित्रण किया गया है। जब योगमाया के ब्रह्माण्ड में जो कर्मफल की न्याय की लीला होगी, उसमें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड सम्मिलित होगा। इस ब्रह्माण्ड की न्याय लीला ज्ञान दृष्टि से हुई है जिसमें सभी धार्मिक विवादों को समाप्त कर एक परम सत्य को दर्शाया गया है।

जुदी जुदी जातें जहानमें, सब आवत हैं मिल कर।
होत दीदार सबन को, हुई बधाइयां घर घर।।११।।

संसार में अलग-अलग जातियों के लोग रहते हैं। प्रियतम परब्रह्म के दर्शन के लिये वे सभी मिलकर आ रहे हैं और दर्शन-लाभ प्राप्त करके स्वयं को धन्य-धन्य मान रहे हैं।इस बात की घर-घर में बधाई मनायी जा रही हैं।

दुनियां चारों खूंट की, सब आवत हैं एक दर।
मंगल गावें सब कोई, हुई बधाइयां घर घर।।१२।।

चारों दिशाओं से सारे संसार के लोग इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी का दर्शन करने के लिये उनके पास आ रहे हैं। सभी परब्रह्म के प्रकट होने के मंगल गीत गा रहे हैं। घर-घर में इस बात की प्रसन्नता छायी हुई है।

जो कबूं कानों ना सुनी, जात बरन भेख धर।
आवत सब उछरंग में, हुई बधाइयां घर घर।।१३।।

जिन्होंने अपने कानों से कभी भी अक्षरातीत परब्रह्म के विषय में सुना ही नही था, विभिन्न जातियों तथा वर्णों में उत्पन्न होने वाले वे लोग तरह-तरह की वेश भूषा धारण कर अत्यधिक उमंग में श्री प्राणनाथ जी के चरणों में आ रहे हैं। इस बात की घर-घर में बधाई हो रही है।

बिना हिसाबें आलम, वैराट सचराचर।
दौड़त सब दीदार को, हुई बधाइयां घर घर।।१४।।

इस चराचर जगत् में अनन्त प्राणियों का निवास है। सभी अपने प्राणेश्वर का दर्शन करने के लिये दौड़े हुए चले आ रहे हैं। प्रत्येक घर में श्री प्राणनाथ जी के प्रकटन से उल्लास का मोहक वातावरण बना हुआ है।

अरवा चौदे तबकों, जो कोई नारी नर।
इन तखत इमाम के कदमों, हुई सारों की नजर।।१५।।

चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में जितने भी स्त्री-पुरूष हैं, उन सबकी दृष्टि न्याय के सिंहासन पर विराजमान अखिलेश्वर प्राणनाथ जी के उन चरणों में लगी हुई हैं जो सबको अखण्ड मुक्ति देने वाले हैं।

जब आया रब आलमीन, तब आया सबों आकीन।
और मजहब सब उड़ गए, एक खड़ा महंमद दीन।।१६।।

जब अनन्त ब्रह्माण्डों के स्वामी आ गये तो सबको एक अक्षरातीत पर विश्वास हो गया है इस अवस्था में स्वाप्निक बुद्धि के ज्ञान पर आधारित संसार के सभी मत-पन्थ शोभा विहीन हो गये हैं। एक मात्र तारतम ज्ञान द्वारा निर्देशित निजानन्द मत ही अपनी गरिमा के साथ सबको प्रकाश दे रहा है।

जात एक खसम की, और न कोई जात।
एक खसम एक दुनियां, और उड़ गई दूजी बात।।१७।।

एकमात्र अक्षरातीत को ही अपना आराध्य मानने वालों की केवल एक मानव जाति रह गयी है। जन्म, रूप एवं स्थान के आधार पर अब कोई भी जाति नहीं रह गयी है।अब सबके मन में केवल एक ही बात है कि सारा विश्व ही हमारा परिवार है और सबके उपास्य केवल सच्चिदानन्द परब्रह्म हैं। इसके अतिरिक्त काल्पनिक देवी-देवताओं तथा तरह-तरह के दार्शनिक सिद्धान्तों की कोई बात ही नहीं करता है।

भावार्थ-कर्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था होती है किन्तु जाति की उत्पत्ति में स्थान,रूप और वंश परम्परा उत्तरदायी है। जैसे-अफ्रीका, मध्य एशिया, इंग्लैण्ड एवं चीन के निवासियों को नीग्रो ,मंगोल, अंग्रेज एवं चीनी कहते हैं। यूरोप के सभी लोग गोरे होते हैं किन्तु फ्रांस वालों को फ्रांसीसी, इग्लैण्ड वालों को अंग्रेज तथा पूर्तगाल वालों को पूर्तगाली कहते हैं। सैयद,शेख और पठान की सन्तान सैयद,शेख और पठान ही कहलाती है।

इसी प्रकार वन में रहने वाली सन्तान वनवासी ही कहलाती है। अगड़ी और पिछड़ी जातियों की सन्तान अगड़ी और पिछड़ी ही कहलाती है। यह विशेष ध्यान देने के योग्य तथ्य है कि सुन्दरबाई(श्यामा जी) के तारतम ज्ञान को ग्रहण करके उस पर आचरण करने वाला मात्र सुन्दरसाथ है। उसकी कोई भी लौकिक जाति नहीं है।

करने दीदार हक का, आए मिली सब जहान।
साफ हुए दिल सबन के, उड़ गई कुफरान।।१८।।

परब्रह्म श्री प्राणनाथ जी का दर्शन करने के लिये सारा संसार दौड़ा हुआ आ रहा है। सबके मन में विद्यमान संशयों के समाप्त हो जाने से अब सबके हृदय निर्मल हो गये हैं।

खाए पिऐं सब मिलके, बंदगी एक खसम।
नाम न्यारे सब टल गए, हुई नई एक रसम।।१९।।

संसार के सभी लोग एक साथ मिलकर खा-पी रहे हैं और एक अक्षरातीत की प्रेम-लक्षणा भक्ति में लीन हैं। नाम के आगे जो जातिगत उपाधियों (शर्मा,सिंह,गुप्ता आदि) के कारण जो सामाजिक अलगाव था, वह समाप्त हो गया है। अब सुन्दरसाथ कहलाने की एक ऐसी परम्परा चल गयी है जिसमें किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं रह गया है।

भावार्थ- पूर्व काल में मनुष्य की व्यक्तिगत पहचान उसके व्यक्तित्व के आधार पर नहीं अपितु उसकी जातिगत उपाधि के आधार पर होती थी। 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' का उद्घोष करने वाला यह देश छूतछात के भयानक रोग से इतना ग्रसित हो गया था कि पण्डित मदन मोहन मालवीय एवं पण्डित दीन दयाल भी आपस में एक दूसरे का छुआ हुआ नहीं खाते थे, जबकि वे दोनों जन्म से ब्राह्मण थे और सामाजिक दृष्टि से उनकी गणना महापुरूषों में की जाती है।

उस समय ऐसी स्थिति में किसी तथाकथित शुद्र के हाथ का भोजन करना कहाँ सम्भव था? श्री प्राणनाथ जी के तारतम ज्ञान से जिन्होंने अपने हृदय को प्रकाशित कर लिया है, वे स्वप्न में भी छूतछात की दुर्भावना से ग्रसित नहीं होते हैं।

मेला अति बड़ा हुआ, पसर गई पेहेचान।
सेहेदाने सबों घरों, चारों खूंटों बजे निसान।।२०।।

चारों ओर परमधाम तथा अक्षरातीत की पहचान फैल जाने के कारण सुन्दरसाथ का बहुत बड़ा समूह एकत्रित हो गया है। सबके घरों में मंगल वाद्य बजाये जो रहे हैं जिनकी गूंज चारों दिशाओं में फैली हुई है।

आए इमाम बाजे बजे, सो केते कहूं विचित्र।
बिना हिसाबें बाजहीं, हिसाब बिना बाजंत्र।।२१।।

इमाम महदी अ.त.फ.श श्री प्राणनाथ जी के संसार में प्रकट होकर ज्ञानमयी न्याय सिंहासन पर विराजमान होते ही विचित्र प्रकार की मधुर ध्वनि करने वाले इतने अधिक (अनंत) वाद्य वा यंत्र बजाये गये, जिसका वर्णन कर पाना असम्भव है।

भावार्थ-श्री जी के प्रकटन से सुन्दरसाथ में इतना अधिक उल्लास है कि उसे आलंकारिक रूप में प्रसन्नता के मंगलमयी वाद्य यंत्र बजाना कहा गया है।

कजा हुई तब जानिए, जब खुले माएने कुरान।
तब आगे तें उड़ गई, जाने हती नहीं कुफरान।।२२।।

कुर्आन पाक के सभी गुह्य रहस्यों के स्पष्टीकरण के पश्चात् ही यह माना जा सकता है कि श्री प्राणनाथ जी ने न्याय कर दिया है। इस अवस्था में तो अज्ञानता का अन्धकार ऐसे नष्ट हो जाना चाहिए जैसे कि कभी उसका अस्तित्व ही नहीं था।

मगज माएने किन ना खुले, अव्वल बीच और अब।
ए कजा तब होवहीं, जब खुले माएने सब।।२३।।

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर मध्यकाल एवं आज दिन तक धर्मग्रन्थों के गुह्य रहस्यों का स्पष्टीकरण नहीं हो सका था। श्री प्राणनाथ जी के न्याय की कसौटी यही है कि सभी धर्मग्रन्थों के छिपे हुए भेद खुल जायें।

भावार्थ-कुर्आन के सन्दर्भ में(अव्वल) का तात्पर्य मुहम्मद साहब के प्रकटन होने के समय से लिया जा सकता है किन्तु श्रीजी संसार के सभी धर्मग्रन्थों के भेद खोलने आये हैं। वेद-उपनिषद के गुह्यतम् रहस्य तारतम ज्ञान के प्रकाश में ही स्पष्ट होते हैं।

कछुक रखे रसूलें, माएने सब थें गुझ।
सो इमाम मुख खोलाए के, करत काजीकी सुझ।।२४।।

मुहम्मद स.अ.व ने कुर्आन के गुह्यतम् भेदों को हरूफ-ए-मुक्तेआत के रूप में छिपा रखा था, जिनकी संख्या १४ है। अब वे इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी के मुखारविन्द से उन रहस्यों को स्पष्ट करवा कर यह पहचान दे रहे हैं कि सबका न्याय करने के लिये परब्रह्म का स्वरूप आ चुका है।

गुझका गुझ और जो सुन्या, सो लिख्या न रसूले कुरान।
जांनें काजी जुबां केहेलाए के, कर देऊं काजीकी पेहेचान।।२५।।

मुहम्मद स.अ.व ने परमधाम की गुह्य से भी गुह्य मारिफत की जो बातें सुनी, उसे कुर्आन में नहीं लिखा (कहा)। उन्होंने ऐसा इसलिए किया जिससे न्यायाधीश इमाम महदी से उसके भेद खुलवाकर उनकी पहचान संसार को करायी जा सके।

भावार्थ-हरूफे मुक्तेआत में हकीकत की बातें है जो इसी ग्रन्थ की व्याख्या में दी गयी हैं। युगल स्वरूप का श्रृंगार ही वह मारिफत है, जिसे सुनने की योग्यता रखने वाला उस समय संसार में कोई भी नहीं था। अब ब्रह्मसृष्टियों के अवतरण के पश्चात् सागर और श्रृंगार ग्रन्थ के रूप में मारिफत का ज्ञान अवतरित हुआ है।

याही वास्ते गुझ रख्या, ए बात दिल में आन।
कसनी सेती परखिए, काजी कसौटी कुरान।।२६।।

यह बात अपने मन में लेकर उन्होने मारिफत की बातों को छिपाये रखा। अब कुर्आन से छिपाये गये मारिफत के शब्दों का स्पष्टीकरण ही वह कसौटी (परखने की प्रकिया) है, जिससे आखरूल इमाम मुहम्मद महदी की पहचान होनी है।

मोमिन सो असल का, महंमद सदा सनेह।
सो आखिर लों फुरमान, लिए खड़ा है एह।।२७।।

ब्रह्मात्माओं के प्रति मुहम्मद स.अ.व के मन में परमधाम से ही अनादि काल का स्नेह रहा है। इसलिये वे कुर्आन लेकर इस आखिरत (कियामत) के समय तक उनके लिये प्रस्तुत रहे हैं।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में यह संशय हो सकता है कि मुहम्मद (अक्षर ब्रह्म) तो अक्षरातीत के सत अंग हैं। परब्रह्म की आनन्द स्वरूपा आत्माओं से तो केवल उनके आनन्द अंग श्यामा जी से ही प्रेम हो सकता है। 'ए इलम ले रूह अल्ला आया, खोल मायने इमाम केहेलाया' से भी यही सिद्ध होता है कि उपरोक्त चौपाई में महालक्ष्मी का प्रसंग है, मुहम्मद साहब का नहीं।

इसका समाधान यह कि परमधाम स्वलीला अद्वैत है। लीला रूप में भले ही श्री राज जी, श्यामा जी, ब्रह्मात्माएं, अक्षर ब्रह्म एवं उनकी आनन्द शक्ति अलग-अलग दिख रहे हैं किन्तु सभी मूलतः एक ही स्वरूप हैं। अगली दोनों चौपाई (२८वीं, २९वीं) से भी यही निश्कर्श निकलता है। मारिफत सागर के छठें प्र. में भी यह प्रसंग है कि मुहम्मद साहब ने अरब के लोगों से कहा कि तुम मेरे दोस्त हो। रसूल कहे भाई और हैं, यार हमारे तुम।६/३६ मेरे भाई (ब्रह्ममुनि) कियामत के समय आने वाले हैं। 'कोट ब्रह्माण्ड जाके पल थे पैदा, सो चाहे हमारा दरसन' कि. का यह कथन भी यही सिद्ध करता है कि अक्षर ब्रह्म और ब्रह्मात्माओं में स्नेह सम्बन्ध है। परमधाम के सम्बन्धों को लौकिक दृष्टि से नहीं

देखना चाहिए।

महंमद बिना मेंहेदीय की, करदे कौन पेहेचान।
इन विध माएने तो लिखे, जो निसबत अव्वल की जान।।२८।।

मुहम्मद स.अ.व. के बिना और कौन है जो अ.त.फ.श इमाम महदी श्री प्राणनाथ (इमाम महदी) की पहचान कराये? इन दोनों में परमधाम का अनादि काल से अखण्ड सम्बन्ध है। यही कारण है कि उपरोक्त चौपाईयों में ये बाते लिखी हैं।

एही कलाम अल्लाह के, अपनी देत खबर।
काजी ईसा मेंहेदी महंमद, ए जुदे होंए क्यों कर।।२९।।

कुर्आन में कहे हुए शब्द परब्रह्म के हैं जो हमारी पहचान देते हैं। न्यायाधीश के स्वरूप में तीनों सूरतें बशरी मुहम्मद साहब, मलायकी-श्री देवचन्द्र जी तथा हकीकी श्री महामति जी विद्यमान हैं। इन तीनों स्वरूपों को एक दूसरे से अलग नही समझना चाहिए।

भावार्थ-'इमाम' का अर्थ 'धर्मनायक' होता है, जबकि महदी का अर्थ 'प्रशिक्षित'। इसे खु./ के इस कथन से समझा जा सकता है।

महम्मद आया ईसे मिने, तब अहमद हुआ स्याम।
अहमद मिल्या मेंहेदी मिने, ये तीनों मिल भए इमाम।।

केहेनी अकथ इमाम की, खसमें कथाई हम।
इन कुरान के माएने, ना होवे बिना खसम।।३०।।

यद्यपि श्री प्राणनाथ जी के तारतम ज्ञान में परमधाम की बातें शब्दातीत (अकथनीय) हैं किन्तु प्रियतम अक्षरातीत ने मेरे धाम हृदय में विराजमान होकर सब कहवाया है। परब्रह्म के अतिरिक्त संसार में कोई भी कुर्आन के गुह्य रहस्यों का अभिप्राय नहीं बता सकता है।

कलाम अल्ला के माएने, कबूं ना खोले किन।
एही कलाम यों केहेवहीं, ना खुले मेंहेदी बिन।।३१।।

आज तक संसार में ऐसा कोई भी नहीं हुआ है, जिसने कुर्आन के गुह्य भेदों को स्पष्ट किया हो। स्वयं कुर्आन के वचनों में ही ऐसा लिखा है कि इनके रहस्य केवल इमाम महदी (श्री प्राणनाथ जी) ही जानते हैं।

भावार्थ- कुर्आन सि. ३० सु. ८० आ. ११-१६ कल्ला अिन्नहा तज्किरतुन् (११) फुमान् शाअ जकरह् (१२) फी शुहुफिम् मुर्करतिन् (१३) म्मर्फूअतिम् मुतहूहरतिम (१४) विअेदी सफरतिन(१५) किरामिम-बररतिन (१६) तो जान लो कि यह कुर्आन तो सबके लिए नसीहत है। फिर (अमीर-गरीब अन्धा-आखों वाला) जो चाहे इसे याद रखें। और कादिले अदब बक्रों में लिखा हुआ है। जो उचें पर रक्खे यानी श्रेष्ठ और पाक हैं, ऐसे लिखनेवालों के हाथों में, जो बुजुर्ग और नेककार है।

पारः २७ सुरः ५६ सुरवाकिया आयत ७७-७९ अिन्नह् लकूर्आनुन् करीमुन् (७७) फी किताबिम्-मक्नुनीन (७८) ल्ला यमस्सुहु अिल्लल-मुतहहरून् (७९) कि यह बड़े रूतबे का कुर्आन है इसको वहीं हाथ लगातें हैं, जो पाक है, परवरदिगार की तरफ से उतरा गया है। हाथ लगाने का मतलब है बयान करना, इमाम के जरिए।

सो खसमें खोलाए मुझपे, यों कर किया हुकम।
कहे तूं आगे रूहें फरिस्ते, जिन प्यारे हक कदम।।३२।।

प्रियतम अक्षरातीत ने मेरे धाम हृदय में विराजमान होकर मुझसे कुर्आन के गुह्यतम अर्थों को उजागर करवाया तथा मुझे यह आदेश दिया कि मैं इन्हें उन ब्रह्मसृष्टियों तथा ईश्वरीय सृष्टियों को बताऊँ जिन्हें अक्षरातीत परब्रह्म के चरण-कमलों से प्रेम है।

हरफ हरफ के माएने, तामें गुझ मता अनेक।
खोल तूं आगे अर्स रूहें, जो प्यारी मुझे विसेक।।३3।।

कुर्आन के हरूफे मुक्तेआत जैसे शब्दो में अनेक प्रकार के गुह्य रहस्य भरे पड़े हैं। हे महामति! तूं तारतम ज्ञान के प्रकाश में उन रहस्यों को परमधाम की आत्माओं के समक्ष स्पष्ट कर, क्योंकि वे मुझे बहुत ही प्रिय हैं।

अब तुम सुनियों मोमिनों, सुनते होइयो श्रवन।
पीछे विचार होए विचारियो, तब मगज पाइए वचन।।३४।।

हे साथ जी! अब आप मेरी बात सुनिये। आप मेरी बातों को सुनकर श्रवण रूप हो जाइए तथा विचार रूप होकर उसका विचार (गहन चिन्तन) कीजिए। तब आपको मेरे कथनों का गुह्य रहस्य समझ में आयेगा।

भावार्थ- सामान्यतः संसार में सबको ही यह ज्ञात है कि कानों से सुना जाता है। अतः श्री कुल्जुम स्वरूप जैसे ग्रन्थ में यह कहना हास्यास्पद लगेगा कि आप अपने कानों से सुनिये।

उपरोक्त चौपाई में एक गहन रहस्य की ओर संकेत किया गया है। यहां श्रवण करते हुए स्वयं श्रवण रूप हो जाने का निर्देश है अर्थात् उस समय श्रवणेन्द्रिय के अतिरिक्त अन्य सभी इन्द्रियाँ निष्क्रिय जैसी अवस्था में रहें।

इसी प्रकार, विचार करते हुए विचार रूप हो जाने का आशय यह है कि ध्यानावस्था जैसी स्थिति में इस प्रकार पहुँच जाएं कि हम जिस विषय का चिन्तन करें, उससे भिन्न कोई अन्य विषय हमारे मस्तिष्क एवं अन्तः करण को प्रभावित न करे।

सनंधे सनंधे साखियां, तिन साखी साखी पाव।
तिन पाव पाव के हरफ का, तुम लीजो दिल दे भाव।।३५।।

संसार के समस्त धर्मग्रन्थों के रहस्य जिस कुल्जुम स्वरूप में समाहित हैं, उसके प्रत्येक लघु ग्रन्थ के प्रत्येक प्रकरण में चौपाईयों का संग्रह है। इसी प्रकार प्रत्येक चौपाई के चार-चार चरण हैं। आप एक-एक चरण के प्रत्येक शब्द के विषय में शुद्ध एवं एकाग्र मन से चिन्तन कीजिए तथा उसके अभिप्राय को ग्रहण कीजिए।

नूर हक के अंग का, होवे एकै ठौर।
इत थें दूजे पसरे, पर न होवे काहूं और।।३६।।

मूल स्वरूप अक्षरातीत के हृदय से प्रस्फूटित होने वाले तारतम ज्ञान का प्रकाश इस समय मात्र श्री महामति जी के ही हृदय में विद्यमान है। यहां से वह अन्य लोगों तक पहुँच रहा है किन्तु इस समय श्री प्राणनाथ जी के अतिरिक्त अन्य किसी भी स्वरूप (किसी ब्रह्मात्मा, ईश्वरीय सृष्टि अथवा कुर्आन के महान विद्वान या फकीर) के द्वारा श्री कुल्जुम स्वरूप के ज्ञान का अवतरण हो पाना सम्भव नहीं है।

भावार्थ- इस चौपाई में यह संकेत किया गया है कि पाँचवे दिन की लीला में मात्र महामति जी के ही तन से ब्रह्मवाणी का अवतरण हो सकता था, अन्य किसी के तन से नहीं।

यद्यपि छठें दिन की लीला में प्रत्येक ब्रह्मात्मा को यह अधिकार है कि वह अपने हृदय को धाम कहलाने की शोभा प्राप्त करने के लिये पुरूषार्थ करे तथा श्री कुल्जुम स्वरूप के गुह्य रहस्यों को आत्मसात् करके सारे संसार में फैलायें किन्तु स्वयं को श्री प्राणनाथ जी के समक्ष न माने (यद्यपि परमधाम में कोई भी भेद नहीं है)।

ईसा महंमद मेहेंदीय की, जो लों ना पेहेचान तुम।
तो लों तुममें कजाए का, क्योंकर चलसी हुकम।।३७।।

हे साथ जी! जब तक आपको परब्रह्म की तीनों सूरतों मुहम्मद स.अ.व., सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी और श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की पहचान नहीं होगी तब तक आप होने वाले निर्णय के आदेश को कैसे मानेंगे अर्थात् श्री जी के द्वारा धार्मिक विवादों को समाप्त कर जिस परम सत्य का मार्ग दर्शाया गया है, उसे आप कैसे स्वीकार करेगें ?

सुध नाहीं फरिस्तन की, ना पेहेचान रूहन।
ना पेहेचान मुतकी की, ना पेहेचान मोमिन।।३८।।

तारतम ज्ञान से रहित होने के कारण संसार के लोगों को आज दिन तक यह पता ही नहीं था कि अक्षर ब्रह्म के तीनों फरिश्ते अजाजील, अस्राफील, जिब्रील कौन है ? ब्रह्मसृष्टियां कौन हैं तथा ईश्वरीय सृष्टि कौन है ?

सुध ना उतरने पुल–सरात, ना सुध सरा तरीकत।
ना पेहेचान हकीकत की, ना पेहेचान हक मारफत।।३९।।

किसी को आज तक यह यथार्थ रूप से पता नहीं था कि पुलसिरात अर्थात् निराकार से कैसे पार हुआ जायेगा? उसे उपासना के नियमों, ज्ञान (सत्य) तथा उस विज्ञान (परमसत्य) की भी पहचान नहीं थी, जिसमें परब्रह्म को जानकर स्वयं को भूला दिया जाता है।

भावार्थ- जिस निराकार के अन्दर असंख्य ब्रह्माण्ड स्थित हैं, उसे पार कर पाना जीव सृष्टि के लिये असम्भव सा होता है। ब्रह्मसृष्टि तो अपने प्रेम और ज्ञान के बल पर बिजली की भांति उसे पार कर जाती है तथा ईश्वरीय सृष्टि भी घोड़े की भांति दौड़कर निराकार को पार कर जाती है किन्तु कर्मकाण्ड में फंसी रहने वाली जीव सृष्टि के पैर उस पर कट जाते है। वह उसे पार नहीं कर पाती।

पेहेचान आप ना नासूत की, ना पेहेचान मलकूत।
ना सुध बका जबरूत की, ना सुध अर्स लाहूत।।४०।।

तारतम विहीन संसार अन्धकार में इस प्रकार भटक रहा था कि किसी को भी न तो अपने स्वरूप का ज्ञान था और न इस मृत्युलोक का। न तो किसी को बैकुण्ठ या योगमाया के ब्रह्माण्ड का बोध था और न सर्वोपरि स्वलीला अद्वैत परमधाम का।

ए पेहेचान काहूं ना परी, क्या बेचून बेचगून।
ना पेहेचान ला मकान की, ना बेसबी बेनिमून।।४१।।

आज तक किसी को भी इस बात का ज्ञान नहीं हो सका था कि परब्रह्म का पंचभौतिक रूप से रहित त्रिगुणातीत स्वरूप क्या है? मन-बुद्धि की कल्पना से परे वह कैसा है? उसे अद्वितीय और अनुपम क्यों कहा जाता है ?किसी को निराकार मण्डल का भी शुद्ध बोध नहीं था।

ना पेहेचान हवाए की, जामें चौदे तबक झूलत।
जिन से आए काफर, ना सुध तिन जुलमत।।४२।।

संसार में तारतम ज्ञान न होने से किसी को भी यह यथार्थ रूप से पता नहीं था कि असीम कहा जाने वाला यह निराकार मण्डल क्या है जिसमें चौदह लोको जैसे असंख्य चौदह लोक झूलें की भांति झूलते रहते हैं अर्थात् आकर्षण शक्ति से आकाश में स्थित होकर गतिमान रहते है। यह भी ज्ञान नहीं था कि इसी मोह तत्व (निराकार) में आदि नारायण का प्रकटन हुआ है जिनके संकल्प से जीवों की उत्पति हुई है।

ना सुध खासी गिरोह की, जो कहावत है बुजरक।
जिन को हिदायत हक की,तिन सोहोबतें पाइए हक।।४३।।

अब तक कोई भी परब्रह्म की अंग स्वरूपा कही जाने वाली उन ब्रह्मसृष्टियों के विषय में नहीं जानता था, जिनकी अपार महिमा कही जाती है, जिन्हें पल-पल प्रियतम अक्षरातीत का निर्देशन एवं साहचर्य प्राप्त रहता है तथा जिनकी सानिध्यता से प्राणेश्वर अक्षरातीत का साक्षात्कार होता है।

ना सुध निराकार की, ना सुध निरगुन सुंन।
ना सुध ब्रह्म क्यों व्यापक, कैसी सूरत निरंजन।।४४।।

किसी को यह अभी तक ज्ञान नहीं था कि वह शून्य निराकार कैसा पदार्थ है जिसमें पंचभूतों के गुणों (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, और गन्ध) का अस्तित्व नहीं होता। किसी को न तो यह बोध था कि ब्रह्म को सर्व व्यापक क्यों कहा जाता है तथा जब उसे निरंजन अर्थात् अवयव से रहित कहा जाता है तो उसका स्वरूप कैसा है?

भावार्थ- ब्रह्म अपने धाम में स्वरूप से व्यापक है तथा इस प्राकृतिक जगत में सत्ता से व्यापक है। पंच भौतिक जगत के कण-कण में ब्रह्म का तेजोमय स्वरूप मानना अनुचित है। साकार एवं निराकार की कल्पना मात्र त्रिगुणात्मक जगत में की जाती है। त्रिगुणातीत पदार्थ को साकार एवं निराकार से परे माना जाता है। यही कारण है कि अनन्त सौन्दर्य वाले अनुपम किशोर स्वरूप ब्रह्म को इस संसार में अवयव अर्थात् बिना अंगों का वर्णन किया जाता है।

ना सुध ब्रह्मसृश्ट की, सुध सृश्ट ना ईस्वरी।
हिंदु जो जीव सृश्ट के, तिन ए सुध ना परी।।४५।।

तारतम ज्ञान से रहित होने के कारण जीव सृष्टि के हिन्दुओं को भी यह ज्ञात नहीं था कि ब्रह्मसृष्टि कौन है तथा ईश्वरीय सृष्टि कौन है?

विजिया अभिनंदन बुधजी, और निहकलंक अवतार।
वेदों कह्या आखिर जमाने, एही है सिरदार।।४६।।

हिन्दू धर्मग्रन्थों में लिखा है कि कलियुग का प्रथम चरण ही उसका अन्तिम चरण होगा। इसके पश्चात् इस ब्रह्माण्ड का लय हो जायेगा। ऐसे समय में श्री विजयाभिनन्द बुद्ध की शोभा को धारण करने वाले सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी तथा विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार कहे जाने वाले श्री प्राणनाथ जी का प्रकटन होगा। इन दोनों स्वरूपों का ही संसार पर आध्यात्मिक स्वामित्व होगा।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में वेद से तात्पर्य हिन्दू धर्मग्रन्थों-पुराण संहिता, बुद्ध गीता, माहेश्वर तंत्र, भविष्य दीपिका तथा भविष्योत्तरपुराण आदि से है, चारों वेदों से नहीं। विजयाभिनन्द का अर्थ होता है-विजय सर्वदा ही जिसका अभिनन्दन करे। श्री प्राणनाथ जी को निष्कलंक अवतार कहे जाने का मूल कारण यह है कि उन्होनें तारतम ज्ञान के प्रकाश में वेद-कतेब के गुह्यतम रह्स्यों को प्रकट किया जिससे आध्यात्मिक ज्ञान के क्षेत्र में किसी भी प्रकार की न्यूनता नहीं रह गयी।

इनमें लिखी आखिर, सो सुध ना परी काहू जन।
पढ़ पढ़ गए कई वेद को, पर उनों पाया न कयामत दिन।।४७।।

इन धर्मग्रन्थों में इस ब्रह्माण्ड के प्रलय का समय लिखा हुआ है किन्तु कोई भी जान नहीं पाया। यद्यपि इन ग्रन्थों का अध्ययन करने वाले तो बहुत से विद्वान हो गये है किन्तु उनको यह पता नहीं चल पाया कि सबको अखण्ड मुक्ति देने वाला परमधाम का वह अलौकिक ज्ञान कब अवतरित होगा ?

भावार्थ-पुराण संहिता ३१/३३ में लिखा है कि कलियुग का प्रथम चरण ही उसका अन्तिम समय (चरण) होगा।उसी समय ब्रह्मसृष्टियां अवतरित होकर संसार का दुख दुखेगी।

अष्टाविंशतिमे तस्य कलौ तच्चारणादिमे ।
मनोरथवशेषस्य भोगमाप्स्यन्ति दुःसहम ।।

इसी प्रकार पुराण संहिता ३२/२१० में कहा गया है-

स्वरूप स्थितो ब्रह्मन् भविष्यत्यक्षरस्तदा ।
ब्रह्माण्डविलयस्तात भविष्यति परो महान् ।।

हे व्यास जी! तब अक्षर ब्रह्म अपने मूल स्वरूप में स्थित हो जायेंगे और इस सर्वश्रेष्ठ ब्रह्माण्ड का लय हो जायेगा।

करनी कजा चौदे तबक, देना सबों आकीन।
कुरान माजजा नबी नबुवत, होए साबित हुए एक दीन।।४८।।

श्री प्राणनाथ जी का मुख्य कार्य यह है कि वे तारतम ज्ञान के प्रकाश में चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड के धार्मिक विवादों का न्याय करेंगें और सबको एक परब्रह्म पर विश्वास दिलायेंगे। इसी प्रकार कुर्आन का चमत्कार तथा नबी (मुहम्मद साहब) की नबुबत की सार्थकता तभी सिद्ध होगी जब सारा संसार एक परब्रह्म की उपासना के मार्ग पर चलने लगेगा।

कहां अर्स कहां हक बका, कहां है नूर मकान।
क्यों पावे महंमद तीन सूरत, जो लों ना ए पेहेचान।।४९।।

तारतम ज्ञान के द्वारा जब तक मुहम्मद स.अ.व. की तीनों सूरतों बशरी, मल्की तथा हक्की की पहचान नहीं होगी, तब तक संसार के लोगों को यह ज्ञान नहीं हो पायेगा कि अखण्ड परमधाम कहाँ है? अक्षरातीत परब्रह्म का दिव्य स्वरूप कहाँ है तथा अक्षरधाम कहाँ है?

पेहेले माएने हक कलमें के, सुध हक इमाम रसूल।
और कजा सब होएसी, पर बड़ी कजा ए मूल।।५०।।

समस्त संसार को आठ बहिश्तों (मुक्ति स्थानों) में अखण्ड मुक्ति देने का न्याय तो बाद में होगा किन्तु उससे भी बड़ा न्याय है, तारतम ज्ञान के उजाले में परब्रह्म के द्वारा कुर्आन में कहे गये वचनों का गुह्य अर्थ (बातिनी मायना) दर्शाकर अक्षरातीत परब्रह्म, श्री प्राणनाथ जी तथा मुहम्मद स.अ.व. की यथार्थ पहचान देना।

आसिक मासूक दो लिखे, दोऊ एक केहेलाए।
दो कहे कुफर होत है, अब काजी क्या फुरमाए।।५१।।

कुर्आन में लिखा है कि आशिक और मासूक (प्रियतम-प्रियतमा) दो हैं। दोनो को एक ही कहा जाता है।उन्हें दो कहना मिथ्यात्व है। इस सम्बन्ध में न्यायाधीश श्री प्राणनाथ जी क्या कहते हैं ?

भावार्थ-कुर्आन की व्याख्या तफ्सीर ए-हुसैनी में पा. १० सु. ८ आयत ६३/६४ व अल्लफ बैन कुलूबिहिम लौ अन्नफक्त वैन मा फिलर्आज जमीअम-मा अल्लफक्त वैन कुलूविहिम व लाकिन्नल्लाह अल्लफ बैनहुम अिन्नह् अज़ीजुन् हुकिमुन् (६३) या अय्युहन्नबिय्यु हस्कबुकल्लाह व मनित्तबअक मिनल्-मुअ्मिनीन (६४)

और उन ईमानवालों के दिलों में आपस में मुहब्बत पैदा कर दी। अगर तुम जमीन पर के सारे खजाने भी खर्च कर डालते तो भी उनके दिलों में मुहब्बत न पैदा कर सकते। मगर अल्लाह ने उन लोगों में मुहब्बत पैदा कर दी, वह जबरजस्त हिकमतवाला है। ऐ पैगम्बर! तुम्हारे लिए, और जितने तुम्हारे पास ईमानवाले हैं उनके लिए तो अल्लाह काफी है।

एक भी कहे ना बने, दो भी कहे न जाए।
ना भेले ना जुदे कहे, अब फुरमान क्या फुरमाए।।५२।।

दोनों को एक कहना भी उचित नहीं लगता। इन्हें दो भी नहीं कहा जा सकता। न तो साथ-साथ कहा जा सकता है और न अलग ही कहा जा सकता है। अब तारतम ज्ञान के प्रकाश में कुर्आन क्या कहता है?

भावार्थ-वस्तुतः वहदत (एकत्व) के अंग रूप होने से दोनों का हृदय एक ही होता है। ऐसी स्थिति में ये आन्तरिक रूप से (स्वरूपगत दृष्टि से) एक होते हैं किन्तु लीला की दृष्टि से बाह्य रूप में दो प्रतीत होते हैं। यद्यपि, दोनों के हृदय में प्रेम लीला का स्तर एक ही होता है।

सिरदार न होवे एकला, ज्यों हुकम हाकिम संग।
त्यों महंमद मेंहेदी हक से, ए दोऊ एकै अंग।।५३।।

स्वामी कभी अकेले नही होता। जिस प्रकार स्वामी (हाकिम) के साथ उसका आदेश (हुक्म) जुड़ा रहता है, उसी प्रकार मुहम्मद स.अ.व और इमाम महदी कभी भी परब्रह्म से अलग नहीं है।

जो कछु कहूं महंमद को, तामें अली जान।
हुकम छोड़ हाकिम फिरया, सो हाकिम हुकम सुभान।।५४।।

यदि मैं मुहम्मद स.अ.व की बात करूं तो उनके साथ हमेशा अली का स्वरूप जुड़ा हुआ है। इस संसार में मुहम्मद साहब परब्रह्म के हुक्म के स्वरूप बनकर आये थे और उनके हुक्म के स्वरूप हजरत अली थे। जब मुहम्मद साहब अपने हुक्म के स्वरूप

को छोड़कर परमधाम गये, तो वह परमधाम के अद्वैत स्वरूप को प्राप्त हो गये।

भावार्थ-इस चौपाई में मुहम्मद स.अ.व. और अली को एक ही कहा है, यथा अक्षरातीत एवं अक्षरब्रह्म दोनों एक ही हैं। मुहम्मद सल्ल. अ.व. के सानिध्य में अली इसी प्रकार थे जैसे कि महमत साहिबुज्जमां के साथ महाराजा छत्रसाल जी। यथा- मनकुन्तमौला फआजा अली उन मौला अर्थात् मुहम्मद स.अ.व. ने कहा जिसका मैं मालिक, उसका अली मालिक।

जाहेर कीजे माएने, काजी एह कजाए।
पेहेचान आसिक मासूक की, भी नीके देऊं बताए।।५५।।

हे साथ जी! न्यायाधीश श्री प्राणनाथ जी का यही न्याय है। आप इस सत्य को संसार में प्रकाशित कीजिए। अब मैं आशिक और माशूक की पहचान को स्पष्ट रूप में बता रहा हूँ।

जिन कोई कहे पट बीचमें, मासूक और आसिक।
कबूं आसिक परदा ना करे, यों कह्या मासूक हक।।५६।।

किसी को ऐसा नही कहना चाहिए कि आशिक और माशूक के बीच पर्दा हो जाये। माशूक श्री राज जी का कथन है- आशिक कभी भी माशूक से पर्दा (भेद) नहीं करता है।

परदा आड़ा मासूक, कबूं आसिक करे ना कोए।
आसिक मासूक तब कहिए, एक अंग जब होए।।५७।।

कोई भी सच्चा आशिक (प्रेमी) अपने माशूक (प्रियतमा) से किसी भी तरह का भेद रख ही नहीं सकता, क्योंकि उन्हें आशिक और माशूक तभी कह सकते हैं, जब उनका हृदय एक ही हो।

ना न्यारा आसिक मासूक, ए तो एकै किया प्रवान।
तो बीच कह्या क्यों फरिस्ता, जो जाए आवे दरम्यान।।५८।।

आशिक से माशूक का हृदय कभी अलग हो ही नहीं सकता। निश्चित रूप से दोनों का हृदय एक ही होता है। ऐसी स्थिति में यह प्रश्न होता है कि आशिक श्री राज जी और माशूक मुहम्मद स.अ.व. के बीच में जिब्रील को संदेश वाहक के रूप में आने जाने की क्या आवश्यकता पड़ती है ?

कह्या हक सेहेरग से नजीक, सब हैवान या खलक।
तो रसूल जुदागी क्यों हुई, जो बीच भेज्या जबराईल हक।।५६।।

कुर्आन में कहा है 'परब्रह्म मनुष्य या पशु-पक्षी आदि सभी प्राणियों की प्राणनली से भी निकट है।' ऐसी स्थिति में इस प्रश्न का उठना स्वाभाविक है कि परब्रह्म (आशिक) से मुहम्मद साहब (माशूक) की जुदायगी कैसे हो गई कि उन्हें संदेशवाहक के रूप में जिब्रील फरिश्ते को भेजना पड़ा।

जो लों ए सक ना मिटे, तो लों होए ना पेहेचान हक।
ए भी कीजे जाहेर, सब मोमिन करूं बेसक।।६०।।

जब तक इस संशय को मिटाया नहीं जायेगा। तब तक अक्षरातीत परब्रह्म की पहचान नही हो सकती। इसलिए हे साथ जी! आप सभी को संशय रहित करने के लिये मैं इस रहस्य को प्रकट करता हूँ। इसे आप संसार में प्रकट कीजिए।

एक सुरत दो बीच में, ए जो फिरे दरम्यान।
तिनको कहिए फरिस्ता, नूर जोस अंग का जान।।६१।।

परब्रह्म और मुहम्मद साहब के बीच में संदेश वाहक के रूप में जो स्वरूप आता जाता है, वह परब्रह्म के सत अंग अक्षर ब्रह्म के अंग(हृदय) का जोश है जिसको जिब्रील फरिश्ता कहते हैं।

भावार्थ-जिस प्रकार परब्रह्म के सत् अंग होने के कारण अक्षर ब्रह्म से केवल लीला भेद है स्वरूप भेद नहीं, उसी प्रकार अक्षर ब्रह्म के अंग जिब्रील को भी अक्षर ब्रह्म से अलग नही माना जा सकता। ५१वीं चौपाई में पशु-पक्षी आदि सभी की प्राणनली से भी निकट परब्रह्म को कहने का आशय विशेष कारणों से है। सम्पूर्ण कुल्जुम स्वरूप में कुर्आन या हिन्दू धर्मग्रन्थों के उदाहरण देकर, यही बताया गया है कि कुंन से उत्पन्न होने वाले सभी प्राणियों के अन्दर अजाजील (आदिनारायण) का वास होता है। जबकि ब्रह्म आत्माओं के हृदय में स्वयं परब्रह्म का वास होता है। प्रश्न यह होता है कि क्या श्री कुल्जुम स्वरूप के कथनों में ही विरोधाभास है ?

वस्तुतः परब्रह्म के कथनों में कोई भी विरोधाभास नहीं है। सभी कथनों में एकरूपता के लिए उचित सामन्जस्य की आवश्यकता होती है।

जिस प्रकार अक्षरब्रह्म अक्षरातीत के सत् अंग हैं, उसी प्रकार आदिनारायण भी अक्षरब्रह्म के मन के स्वाप्निक स्वरूप हैं। परब्रह्म का निवास तो आत्मा के हृदय में होता है। ब्रह्मात्मा जिस जीव को अपना अधिष्ठान बनाकर विराजमान होती है, उस जीव के भी हृदय में आदिनारायण का ही वास होता है। यही कारण है कि बिहारी जी तथा औरंगजेब का व्यक्तिगत (जीव का) व्यवहार सामान्य जीवों से भी निम्न स्तर का था।

जिस प्रकार किसी हीरे या स्वर्ण के टुकड़े को कीचड़ में लपेट देने पर वे कीचड़ जैसे प्रतीत होने लगते हैं तथा शीशे का टुकड़ा धूप में हीरे की भांति चमकने लगता है और घास के ऊपर ओस की बूंदें मोती की भांति चमकने लगती हैं उसी प्रकार ब्रह्मसृष्टि या ईश्वरीय सृष्टि भी ज्ञान, प्रेम, विश्वास आदि गुणों से रहित होने पर जीवों जैसा ही व्यवहार करने लगती है किन्तु यदि जीव को भी तारतम ज्ञान का प्रकाश मिल जाय तथा वह प्रेम और विरह की अग्नि में स्वयं को झोंक दे तो उसे अपने हृदय में परब्रह्म की शोभा को विराजमान करने तथा परमधाम का साक्षात्कार करने का अधिकार प्राप्त हो जाता है। यह तथ्य सागर ग्रन्थ के १४/२५ में स्पष्ट रूप से दिया हुआ है-

जो कोई हक के हुकम का, ताए जो इलम करे बेसक ।
लेवे अपनी मेहर में, तो नेक दीदार कबूं हक ।।

ऐसी स्थिति में जीव को भी यह कहने का अधिकार प्राप्त हो जाता है कि परब्रह्म मेरे हृदय में प्राणनली से भी निकट है। आत्मिक एकरूपता को दर्शाने के लिये ही ५९ वीं चौपाई में यह कहा गया है कि पशु - पक्षी आदि सभी प्राणियों की प्राणनली से भी अधिक निकट परब्रह्म उनके हृदय धाम में विराजमान हैं।

बेहद मण्डल एवं परमधाम त्रिगुणातीत धाम हैं। अतः वहां की सृष्टि में स्वभाविक रूप से निर्मलता एवं प्रेम की अधिकता होती है। मोह से उत्पन्न होने वाली सृष्टि रज और तम से ग्रसित होकर स्वभावतः विषय - विकारों की ओर उन्मुख होती है। सत्य ज्ञान और प्रेम के अभाव में वह कभी भी परब्रह्म के साक्षात्कार का अधिकार प्राप्त नहीं कर पाती। संशयात्मक ज्ञान और शुष्क साधनाओं से वह मात्र वैकुण्ठ या निराकार तक की ही उपलब्धि प्राप्त करके सन्तोष धारण कर लेती है। परिणाम स्वरूप हमेशा ही उसके धाम हृदय में आदि नारायण के निवास का कथन किया जाता है।

रसूल आया हुकमें, तब नाम धराया गैन।
हुकम बजाए पीछा फिर्‌या, तब सोई ऐन का ऐन।।६२।।

मुहम्मद स.अ.व. (अक्षर ब्रह्म) जब परब्रह्म के आदेश स्वरूप बनकर संसार में आये तो उन्होने स्वयं को गैन (पराया) कहा। जब वे हुक्म की लीला करके परमधाम वापस गये तो वे अपने उसी अद्वैत स्वरूप (ऐन) को प्राप्त हो गये।

भावार्थ- परमधाम में अक्षर और अक्षरातित का एक ही स्वरूप है। **'इत और न दूजा कोई, स्वरूप एक है लीला दोइ।'** के कथनों से यह स्पष्ट है।

वहा रास लीला खेल के, आए बरारब स्याम। बी. / का कथन यही दर्शाता है कि अरब में अक्षरब्रह्म की आत्मा मुहम्मद स.अ.व के स्वरूप में आयी थी।

सब सकें दूर कीजिए, साफ कीजे समझाए।
मासूक क्यों महंमद कह्‌या,क्यों होए आसिक अल्लाह।।६३।।

हे साथ जी! मुहम्मद साहब को माशूक तथा परब्रह्म को आशिक क्यों कहा गया है? आप तारतम ज्ञान के द्वारा इस सम्बन्ध में लोगो के जितने भी संशय हैं, उन्हे दूर कीजिए तथा सबको समझाकर उनके हृदय को निर्मल कीजिए।

तो कहया मासूक महंमद, आसिक अपना नाम।
बांध्या आप हुकम का, केहेवत यों कलाम।।६४।।

कुर्आन का कथन है कि मुहम्मद स.अ.व. जब हुक्म के स्वरूप बनकर इस मायावी जगत् में आये तो वे माशूक हैं और परब्रह्म आशिक।

भावार्थ- मुहम्मद साहब को मेयराज का सुख देना और संसार में उन्हें महिमा मंडित करना आशिक (परब्रह्म) का ही कार्य है।

वली पैगंमर फरिस्ते, आए मिले सब संग।
ज्यों गुन इंद्री जुदे जुदे, उठ खड़े सब अंग।।६५।।

जिस प्रकार शरीर में स्थित तीनों गुणों, अन्तःकरणों तथा सभी इन्द्रियों में अपने स्वामी जीव के निर्देश पर सक्रियता आ जाती है, उसी प्रकार संसार में परब्रह्म के स्वरूप श्री प्राणनाथ जी के प्रकट होने पर सभी वली, पैगम्बर तथा फरिश्ते उनके चरणों की सानिध्यता में आ गये।

भावार्थ- उठ खड़े होने का भाव है, किसी कार्य के लिये तत्पर हो जाना। आध्यात्मिकता की एक विशेष अवस्था में पहुँचा हुआ व्यक्ति वली कहलाता है।

जब ईसा मेंहेदी महंमद मिले, तब मिले सब आए।
फेर पीछा क्या देखहीं, परदा दिया उड़ाए।।६६।।

जब श्री महामति जी के तन में तीनों सूरतें आकर विराजमान हो गयी तो ब्रह्माण्ड की सभी आध्यात्मिक विभूतिया (पैगम्बर, फरिश्ते, ऊँचे स्तर के फकीर आदि) उनकी छत्रछाया में आ गयीं। इसके बाद जागनी में देरी कैसे सम्भव थी ? श्री प्राणनाथ जी ने तारतम ज्ञान के प्रकाश में अज्ञानता के अन्धकार को नष्ट कर दिया।

भावार्थ- पीछा देखना एक मुहाविरा है, जिसका अर्थ होता है, किसी के आने की प्रतीक्षा में कार्य की देरी करना।

हक जो नूर के पार है, तिन खुद खोले द्वार।
बका द्वार तब पाइया, जब खोल देखाया पार।।६७।।

अक्षरब्रह्म से परे जो अक्षरातीत परब्रह्म हैं उन्होनें स्वयं श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में आकर अखण्ड परमधाम का ज्ञान दिया हैं। संसार को परमधाम के विषय में तभी पता चला जब श्री जी ने निराकार से परे की सुधि दी।

पेहेचान मेंहेंदी महंमद, और ईसा अली मोमिन।
ए कजा दिल भीतर, निसां हुई हम सबन।।६८।।

श्री प्राणनाथ जी के द्वारा तारतम ज्ञान के प्रकाश में होने वाले न्याय से अब सभी को श्री प्राणनाथ जी, मुहम्मद साहब, श्यामा जी, हुक्म(आदेश) के स्वरूप तथा ब्रह्मसृष्टियों की स्पष्ट पहचान हो गयी है। इस प्रकार सर्वश्रेष्ठ न्याय मिलने से हम सभी आत्माओं के हृदय में सन्तुष्टि सी हो गयी है।

अब कहो क्यों फरिस्ते, क्यों फना आखिरत।
भिस्त क्यों कर होएसी, क्यों होसी कयामत।।६९।।

अब ब्रह्ममुनि मिलकर प्रश्न करते हैं कि हे प्राणेश्वर अक्षरातीत! आप हमें यह बताइये कि फरिश्तों की वास्तविकता क्या है ? आखिरत (कियामत) के समय इस ब्रह्माण्ड का लय क्यों होगा ? किस प्रकार आठ बहिश्तों में ब्रह्माण्ड के सभी प्राणियों को अखण्ड

मुक्ति मिलेगी ? कियामत (संसार में और योगमाया में) किस प्रकार होगी ?

ए सबे समझाए के, पाक करो हम दिल।
पीछे बात वतन की, हम पूछसी मोमिन मिल।।७०।।

इन सभी प्रश्नों का उत्तर देकर आप हमारे हृदय को संशयरहित करके पवित्र कीजिए। इसके पश्चात् हम सभी ब्रह्ममुनि मिलकर आपसे परमधाम की बातें पूछेंगे।

।।प्रकरण।।३६।।चौपाई।।१२९५।।

सनंध-फरिश्ते फना आखिरत भिस्त कयामत की

इस प्रकरण में पूर्व के प्रकरण की ६९ वीं चौपाई में पूछे गये प्रश्नों का उत्तर दिया गया है।

अब कहूं बिध नूरियों, जो जहां जिन ठौर।
ए माएने इमाम बिना, कोई करे जो होवे और।।१।।

प्रियतम अक्षरातीत श्री महामति जी के स्वरों में कहते है कि हे साथ जी! अब मैं आपको उन नूरी फरिश्तों का विवरण उनके स्थान सहित दे रहा हूँ। इमाम महदी भी प्राणनाथ जी के अतिरिक्त अन्य कोई भी संसार में ऐसा नहीं है, जो इस प्रश्न का समाधान कर सके।

भावार्थ- फरिश्ते का अभिप्राय दिव्य शक्तियों से है। फरिश्ते दो प्रकार के होते हैं- १- योगमाया के नूरी फरिश्ते, २ - क्षर ब्रह्माण्ड के फरिश्ते, जिन्हें देवता कहा जा सकता है। योगमाया के ब्रह्माण्ड के नूरी फरिश्तों को देवता नही कहा जा सकता, क्योंकि ये ब्रह्म की सानिध्यता में होते हैं, जैसे जिब्रील और अस्राफील।

पांच फरिस्ते नूर से, खड़े मिने हुकम।
पाव पल में पैदा करे, ऐसे कई इंड आलम।।२।।

अक्षर ब्रह्म के नूर से उत्पन्न होने वाले पांच फरिश्ते हैं जो उनके आदेश पर निरन्तर क्रियाशील रहते हैं। वे चौथाई पल में ही हमारे ब्रह्माण्ड जैसे अनेकों (असंख्यों) ब्रह्माण्ड उत्पन्न कर देते हैं।

शंका- वैदिक सि़द्धान्तों के अनुसार ब्रह्म सर्वशक्तिमान है। वह बिना किसी की सहायता के स्वतः अपना सारा कार्य करता है। परमात्मा के पांच फरिश्तों की बात वैसी ही लगती है जैसे कि किसी चक्रवर्ती सम्राट के अधीनस्थ कई मंत्री होते हैं। सबके अलग

विभाग होते हैं और वे अपना कार्य करते हैं। इस सिद्धान्त को मानने पर तो ब्रह्म की सर्वशक्तिमानता, सर्वतत्व और सर्वव्यापकत्व पर प्रश्न खड़ा हो जाता है।

समाधान- श्वेताश्वतरोपनिषद् ७६/८ में कहा गया है कि 'स्वाभाविकी ज्ञानंबल क्रिया च' अर्थात- ब्रह्म में ज्ञान, बल, और क्रिया स्वाभाविक रूप से है। मनीषियों का कथन है कि ब्रह्म की दो प्रमुख शक्तियां हैं-१ ज्ञान शक्ति २-क्रिया शक्ति। इसे ही कतेब परम्परा में अस्राफिल और जिब्रील कहते हैं । अक्षर ब्रह्म के मन के स्वाप्निक स्वरूप को ही अजाजील कहते है। अथर्ववेद १०/८/७ में कहा गया है कि- 'सहस्राक्षरम् वर्तते', अर्थात् ब्रह्म में अनन्त शक्तियां हैं। वह दिव्यातिदिव्य है। उसकी दिव्य शक्ति को ही फरिश्ता कहते हैं। ब्रह्म की अनन्त ज्ञान शक्ति, क्रिया शक्ति, दृष्टि शक्ति तथा सर्वव्यापकत्व को दर्शाने के लिए ही तो **'सहस्र शीर्षा पुरूषः स सहस्राक्षः सहस्र पाद'** यजुर्वेद ३१/१ तथा **'सहस्र बाहुः पुरूषः सहस्र अक्षः सहस्रपाद'** अथर्ववेद १९/६/१ कहा गया है।

जिस प्रकार किसी व्यक्ति के हाथ, पैर, नासिका, नेत्र आदि अनेकों अंग होते है किन्तु उन अंगों का कोई भी नाम नहीं होता। नाम सम्पूर्ण शरीर का ही होता है और जीव की चैतन्य शक्ति से सम्पूर्ण शरीर के अलग-अलग भागों में क्रियाशीलता होती है, इसी प्रकार ब्रह्म अनन्त शक्तियों का केन्द्र है। किसी एक शक्ति विशेष से किसी कार्य का सम्पादन होता है तो उस शक्ति विशेष को ब्रह्म नहीं कहते हैं, अपितु उसे शक्ति कहते हैं।

उदाहरणार्थ यदि किसी व्यक्ति का नाम 'राम' है तो उसके नेत्रों को राम नहीं कहते हैं, अपितु राम के नेत्र कहते हैं। राम तो सम्पूर्ण जीवित शरीर का नाम है। ब्रह्म का स्वरूप नूरमयी है, इसलिए फरिश्तों (ब्रह्म की शक्तियों) को भी नूरमयी ही कहा जाता है। इस प्रकरण से पूर्व की चौ.६१ में कहा गया है कि जिब्रील अक्षर ब्रह्म के अंग का जोश है, इसलिए उसे अक्षर ब्रह्म से अलग नही समझना चाहिए। किन्तु हमे यह भी ध्यान में रखना होगा कि जिब्रील अक्षर ब्रह्म वैसे ही नहीं है जैसे राम के नेत्र राम नहीं है। यदि शक्तिमान अपनी शक्ति से किसी कार्य का सम्पादन करता है तो उसे शक्तिमान का ही कार्य कहा जाता है, किन्तु शक्ति को शक्तिमान नहीं कहा जाता है, यद्यपि सूर्य और उसकी किरणों के समान उसका भी रूप वैसा ही होता है। इस प्रकार इस प्रकरण के कथनों का वैदिक सिद्धान्तों से विरोध नही है।

यामें एक रसूल संग, ए जो जबराईल।
सो नूर से आवत रूहन पर, हकें भेज्या रोसन वकील।।३।।

इनमें एक जिब्रील है जो मुहम्मद स.अ.व. के साथ मेयराज में सत्स्वरूप तक गया था। यह ब्रह्मसृष्टियों के लिए परब्रह्म का संदेश लेकर सत्स्वरूप (अक्षरधाम) से आता है, और उनके हृदय में ज्ञान का प्रकाश बनाये रखता है जिससे वे माया में न फंसे। इसके अतिरिक्त वह जागनी लीला में वकील की भांति ब्रह्मसृष्टियों का प्रतिनिधित्व भी करता है।

ए जो ले खड़े खेल को, और कहे जो चार।
ए असल कतरा नूर का, जिनको एह विस्तार।।४।।

इस ब्रह्माण्ड के अस्तित्व को बनाये रखने वाले शेष चार अन्य फरिश्ते हैं। अक्षर ब्रह्म के नूर के अंश (कतरे) से इन चारों की उत्पत्ति हुई है।

यामें एक फरिस्ता, तिन से उपजे सब।
सरत आखिर असराफील, नूर से आया अब।।५।।

इनमे एक फरिश्ता अजाजील है जिससे सम्पूर्ण ब्रह्मण्ड उत्पन्न हुआ है। इस कियामत के समय में अक्षरधाम (सत्स्वरूप) से आने वाला फरिश्ता अस्राफील है।

अजाजील असराफील, इन दोऊ की असल एक।
पैदा अजाजील से, सो भी कहूं विवेक।।६।।

अजाजील और अस्राफील दोनों का मूल एक ही योगमाया का ब्रह्माण्ड है। अजाजील का मूल स्थान सबलिक का स्थूल (अव्याकृत) का महाकारण है जबकि अस्राफील का स्थान सत्स्वरूप है। अजाजील से किस प्रकार यह ब्रह्माण्ड उत्पन्न होता हैं। उसे भी अच्छी तरह से बताता हूँ।

कतरे से पैदा हुआ, इन से उपजे दोए।
तामें एक सबों को पालहीं, एक करत कबज रूह सोए।।७।।

अक्षर ब्रहा के नूर के कतरे (अंश मात्र से) अजाजील (आदिनारायण) की उत्पत्ति हुई। इनसे दो और फरिश्तों की उत्पत्ति हुई जिसमें एक सबका पालन पोषण करता है और दूसरा प्राणियों की मृत्यु का कारण बनता है।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में आदिनारायण (महाविष्णु) से ब्रह्मा और शिव की उत्पत्ति तो दर्शाई गई है किन्तु भगवान विष्णु की उत्पत्ति का वर्णन नहीं है। वस्तुतः महाविष्णु के विष्णु विभूति रूप हैं। इसलिए उनका यहां वर्णन नहीं हो पाया। प्रकाश हिन्दुस्तानी में विष्णु और महाविष्णु को अलग-अलग करके बताया है।

जो नहीं विष्णु महाविष्णु को, बुध जी पहुचें तीत ।

इसी प्रकार बेहद वाणी की छठी चौपाई के कथन के अनुसार -

फेर पूछे शिव विष्णु को, कहे ब्रह्माण्ड और ।

और ब्रह्माण्ड की वारता, क्यों पाइए इन ठौर ।। प्र. २०/१५

अर्थात् इस सृष्टि में अनेक ब्रह्माण्ड हैं, जिनमें अनेक ब्रह्मा, विष्णु और शिव हैं। किन्तु, समस्त सृष्टि में महाविष्णु (आदिनारायण) एक ही हैं। यथार्थता यह है नारायण कतेब पक्ष में अजाजील को आदिनारायण कहा गया है। इसी प्रकार श्री कुल्जुम स्वरूप में भी महाविष्णु -विष्णु दोनों को ही अजाजील के ही नाम से सम्बोधित किया गया है।

ए दोऊ जो पैदा हुए, सो ले खड़े सब छल।
नूर की नजरों चढ़े, तिनों आया सबों बल।।८।।

अजाजील से उत्पन्न होने वाले वे दोनो फरिश्ते सारे ब्रह्माण्ड के संचालक बने हुए हैं। अक्षरब्रह्म की दृष्टि में होने के कारण इनमें बहुत शक्ति है।

यों चारों पैदा हुए, खड़े रहे जिन खातिर।
सोई काम सोई जाएगा, ए भी दोऊ देऊं खबर।।९।।

इस प्रकार के चारों फरिश्ते १.महाविष्णु (अजाजील), २.विष्णु, ३.ब्रह्मा तथा ४. शिव पैदा हुये। ये अपनी सृष्टि के कार्य संचालन में तत्पर रहते हैं। जिसका जो कार्य निर्धारित होता है, वही करते हैं। इनकी उत्पत्ति की साथ-साथ अब मैं इनके कार्य पर भी प्रकाश डाल रहा हूँ।

एक पैदा कर वजूद खेलावहीं, दूजा पाले तिन।
तीसरा किन किन लेवहीं, चौथा उड़ावे सबन।।१०।।

एक फरिश्ता (देवता) सभी प्राणियों को उत्पन्न कर उनको संसार चक्र में लगाता है। दूसरा उनका पालन पोषण करता है। तीसरा चुन-चुन कर मृत्यु का ग्रास बनाता है और चौथा इन तीनों फरिश्ते समेत समस्त सृष्टि का लय करता हैं।

भावार्थ- कतेब पक्ष तथा इस प्रकरण की चौपाई ७/१८-२१ की मान्यता के अनुसार मैकाईल (ब्रह्मा जी) सब का पालन पोषण करते हैं। अज्राईल (शिव जी) सभी प्राणियों की मृत्यु का कारण बनते हैं, और अस्राफिल फरिश्ता समस्त ब्रह्माण्ड सहित अन्य

फरिश्तों को भी लय कर देता है। यह कथन इस प्रकरण की २१वीं चौपाई में लिखा गया हैं। किन्तु इस १०वी चौपाई की पौराणिक मान्यताओं के अनुसार ब्रह्मा जी की सृष्टि को उत्पन्न करते हैं, विष्णु भगवान पालन-पोषण करते है और शिव जी सबका संहार करते हैं। ये सभी तीनों देव महाविष्णु मे विलीन हो जाते है, और महाविष्णु अपने मूल स्थान अव्याकृत के महाकारण (सबलिक के स्थूल) को प्राप्त हो जाते हैं। किन्तु वैदिक मान्यता के अनुसार मात्र आदि नारायण ही सृष्टि को उत्पन्न करते है, और लय भी करते है। ब्रह्मा विष्णु तथा शिव मात्र दिव्य महापुरूष हैं। इन्हें सृष्टि की रचना करने-पालने तथा संहार करने का अधिकार नही हैं।

उपरोक्त विसंगतियों का मूल कारण धर्मग्रन्थों की अलग-अलग मान्यताओं का होना है। यह विशेष तथ्य है कि वेद और कुर्आन दोनों में ही केवल आदिनारायण (अजाजील) का वर्णन है। ब्रह्मा, विष्णु और शिव जीव है जो अपने दिव्य गुणों से देवता कहे जाते है। पुराणों तथा कतेब पक्ष (कुर्आन को छोड़कर) की मान्यताओं में भेद हो सकता है, क्योंकि ये ईश्वरीय ग्रन्थ नहीं हैं। सनन्ध ग्रन्थ में जो उपरोक्त तथ्य हैं, वे ग्रन्थों के कथन हैं। उन्हे अक्षरातीत का कथन नहीं मानना चाहिए। इस विसंगति का समाधान इसी प्रकरण की १७वी चौपाई की व्याख्या में दिया गया है।

यों नूर नजर चारों पर, इन बिध हुई पैदास।
फेर कहूं बेवरा इन का, ए जो खेलें खेल लिबास।।११।।

इस प्रकार अक्षर ब्रह्म की नूरमयी दृष्टि (मानसिक संकल्प) से इन चारों फरिश्तों की उत्पति होती है। ये तन धारण कर जिस प्रकार से मिथ्या खेल रूपी सृष्टि का संचालन करतें हैं, मैं उनका विवरण देता हूँ।

या विध उपजे नूर से, इन से सब विस्तार।
थिर चर चौदे तबकों, हुआ खेल कुफार।।१२।।

इस प्रकार अक्षर ब्रह्म के नूर से ये सभी फरिश्ते (देव) उत्पन्न होते हैं और इनसे समस्त सृष्टि का विस्तार होता है। चर-अचर प्राणियों से युक्त चौदह लोकों वाले इस ब्रह्माण्ड का मिथ्या खेल इस तरह दृष्टिगोचर होता है।

अजाजील को गफलतें, हुकमें दिया उलटाए।
ले तखत बैठाया छल के, सब फरेब जुगत बनाए।।१३।।

संशय के कारण नूरी अजाजील आदम के स्वरूप को पहचान नहीं सका। जिसके

परिणाम स्वरूप परब्रह्म के आदेश से उसने मायावी सृष्टि की रचना की, जिसका उसे स्वामित्व प्रदान किया गया।

भावार्थ- इस चौपाई के कथानक मे आलंकारिक रूप से सृष्टि रचना के रहस्य को समझाया गया है। अक्षर ब्रह्म के मन स्वरूप अव्याकृत के महाकारण में महाविष्णु (अजाजील) का मूल निवास है। जब सुमंगला-पुरूष में सृष्टि रचना का भाव पैदा होता है तो मोहसागर की उत्पति होती है जिसमें अक्षर ब्रह्म का मन (अव्याकृत) प्रतिबिम्बित होकर स्वयं को देखने लगता है। यहीं नूरी अजाजील का संसार में अजाजील के रूप में आना है। हिन्दू ग्रन्थों में इसे ही आदि नारायण (महाविष्णु) कहा गया है।

अजाजील से फरिस्ते, उपजे बिना हिसाब।
सो दम सबों में इनका, ए जो खेलें मिने ख्वाब।।१४।।

अजाजील (आदिनारायण) से असंख्यों फरिश्तों की उत्पति हुई। इस स्वप्नमयी सृष्टि में जितने भी प्राणी हैं,सभी में इसी आदिनारायण की चेतना का अंश है।

परदा इन सिरदार पर, ए जो कही जुलमत।
पीछा हटाया हुकमें, ताए कुफर सेवें कर सत।।१५।।

इस महाविष्णु के चारों ओर मोहतत्व (निराकार) का आवरण है। परब्रह्म के आदेश से जिसे बहिश्त से हटना पड़ा था, उसी अजाजील (आदिनारायण) को संसार के जीव परमात्मा मानकर भक्ति करते हैं।

ले बैठा हुकमें साहेबी, जाकी असल कतरा नूर।
सो सरमाए के पीछा हट्या, अपना देख अंकूर।।१६।।

अक्षर ब्रह्म के नूर के अंश से उत्पन्न होने वाला अजाजील फरिश्ता परब्रह्म के आदेश से इस समस्त सृष्टि का स्वामी बना हुआ है। जब उसने अपनी वास्तविकता को जाना कि मैं तो नूर का अंश मात्र ही हूँ तो लज्जित होकर स्वामित्व का भाव छोड़ दिया (पीछे हट गया)।

इन सेती जो उपजे, तिन सिर दिया भार।
आप तिन से न्यारा रख्या, ए दोए भए सिरदार।।१७।।

अजाजील ने अपने स्वरूप से ब्रह्मा जी (मेकाईल) तथा शिवजी (अजराईल) को उत्पन्न कर उन्हे सृष्टि संचालन का समस्त भार सौंप दिया और अपने को उसके उत्तरदायित्व से मुक्त कर लिया। इस प्रकार ब्रह्मा तथा शिवजी ही इस सृष्टि के

कर्ता-धर्ता-हर्ता के रूप मे रह गये।

भावार्थ- संसार की अनित्यता को जानकर भगवान विष्णु ध्यानावास्था में चले जाते है जिसे पुराणों में उन्हें शयन करते हुए वर्णित किया गया है। यही कारण है कि इस प्रकरण की चौ. ७/१८ तथा २१ में ब्रह्मा जी को ही सृष्टि का पालन करने वाला कहा गया है, जबकि यह कार्य आदिनारायण की विभूति स्वरूप विष्णु भगवान का है। इस प्रकार १०वीं चौपाई में जो विसंगति प्रतीत हो रहीं थी, उसका यहां समाधान हो गया है।

एक दाना पानी घास सबको, मेकाईल बुध बल।
ठौर बैठा आप देवहीं, कर पसारा अकल।।१८।।

ब्रह्मा जी अपनी बुद्धि के बल से संसार के सभी प्राणियों के लिये भोजन, पानी आदि की व्यवस्था करते हैं। वे अपनी बुद्धि के द्वारा अपनी पुरी में बैठे-बैठे सभी प्राणियों में भोजन आदि की व्यवस्था करने की प्रेरणा देते है।

जोर जालिम अजराईल, बैठा छल में हुकम लें।
फिरत दोहाई इन की, तले काफर खेलत जे।।१९।।

अक्षर ब्रह्म के आदेश से शिवजी इस संसार में शक्ति के स्वरूप हैं और काल रूप में वे मरने वालों को अत्याचारी की भांति प्रतित होते हैं। इनके आदेश की छत्रछाया में रहने वाले तमोगुणी जीव इनकी ही महिमा की सर्वत्र घोषणा करते रहते हैं।

फरामोस सरूप अजराईल, मौत हुकम सिर सबन।
जिन वजूद धर्‌या खेल में, आए लेत कौल पर तिन।।२०।।

तमोगुण के प्रतीक रूप शिवजी मोह स्वरूप हैं। ईश्वरीय आदेश से ये सभी प्राणियों के शिर पर मंडराने वाले काल के रूप हैं, संसार में जिसने भी तन धारण किया है, मृत्यु का समय आने पर ये उसका प्राणहरण कर लेते हैं।

पाले मेकाईल इन को, रूह कबज करे अजराईल।
ए खेल समेत फरिस्ते, आखिर उड़ावे असराफील।।२१।।

ब्रह्मा जी सभी जीवों का पालन-पोषण करते हैं। शिवजी संसार के जीवों को मृत्यु के अधीन कर देते हैं। फरिश्तों समेत इस समस्त सृष्टि को अस्राफील फरिश्ता लय कर देता है।

भावार्थ-ब्रह्मवैर्वत पुराण आदि पौराणिक ग्रन्थों में महाविष्णु के द्वारा समस्त सृष्टि का लय बताया गया है किन्तु इस चौपाई में अस्राफील के द्वारा महाप्रलय किये जाने के वर्णन का कारण यह है कि वह जागृत बुद्धि के ज्ञान का फरिश्ता हैं। जब तक अक्षर ब्रह्म की प्रेरणा से जागृत बुद्धि (अस्राफील) के द्वारा आदि नारायण को उसके निज स्वरूप का बोध नहीं कराया जायेगा (उसका स्वप्न नहीं तोड़ा जायेगा) तब तक इस स्वप्नमयी जगत का प्रलय कैसे होगा? यही कारण है कि उपरोक्त चौपाई में अजाजील (आदिनारायण) का नाम न लेकर उसकी नींद को हटाने वाले अस्राफील का वर्णन किया गया है और उसे ही महाप्रलय करने वाला कहा गया है। इस नश्वर जगत का अजाजील (महाविष्णु) अपने मूल स्थान अव्याकृत को प्राप्त हो जाता है।

अक्षर ब्रह्म की पंचवासनाओं में भगवान शिव और विष्णु भगवान भी है। यह विशेश तथ्य है कि ईश्वरीय सृष्टि कभी भी लय को प्राप्त नहीं हो सकती। इस प्रकरण में विष्णु और शिव के लय होने का जो प्रसंग है, वह मात्र सैद्धान्तिक रूप में ही है। यह स्मरणीय बात है कि इस मायावी सृष्टि में अनन्त ब्रह्माण्ड हैं और अनन्त ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव हैं। इनमे जो बेहद (ब्रह्म धाम) का साक्षात्कार कर लेगा, वह अखण्ड मुक्ति को प्राप्त कर लेगा तथा उसका कभी लय नहीं होगा। शेष सभी जीवों को महाप्रलय में आदिनारायण में विलीन होना ही पड़ता है।

ला हवा से तेहेतसरा लग, ए सब खेल में पातसाह एक।
कहे या बिन और कोई नहीं, एही है एक नेक।।२२।।

निराकार से लेकर पाताल तक की सम्पूर्ण सृष्टि में एक ही स्वामी आदिनारायण हैं। संसार के ज्ञानीजन कहते है कि एक मात्र यही एक परमात्मा है। इसके अतिरिक्त अन्य कोई परमात्मा नहीं।

भावार्थ- हिन्दू धर्मग्रन्थों मे अक्षर ब्रह्म के मन अव्याकृत का वाचक नाम 'ओ३म्' है। इस प्रकार मोहसागर में उसके प्रतिबिम्बित स्वरूप आदिनारायण को भी 'ओ३म्' ही कहा जाता हैं। प्रणव की साधना करने वाले इस आदिनारायण का ही साक्षात्कार करके भ्रमवश अव्याकृत का वास्तविक स्वरूप समझ लेते हैं और ब्रह्म को निराकार, ज्योति स्वरूप कहने लिए विवश हो जाते हैं।

और जो इनके तले, ठकुराइयां, कहावत।
देखाए दुनी को साहेबी, अपने तले ल्यावत।।२३।।

आदिनारायण की आनन्द शक्ति महामाया की कलारूप देवियाँ कहलाती हैं। ये

संसार को अपनी शक्ति दिखाकर अपनी भक्ति में लगाए रखती हैं।

एक दूजे के गुमास्ते, वजीर वकील दिवान।
एक फरिस्ता सबका खावंद, यों खेल बन्या सब जहान।।२४।।

जिस प्रकार एक राजा के अधीनस्थ प्रधानमन्त्री, मन्त्री और वकील आदि होते हैं उसी प्रकार सारी सृष्टि के स्वामी आदिनारायण हैं। जिन के अधीन ब्रह्मा, विष्णु, शिव हैं और उनके भी अधीन स्वर्ग के देवी देवता हैं। इस प्रकार सारे संसार का खेल चल रहा हैं।

यामें बुजरक आलम आरफ, तिन करियां कई किताब।
इन सिर हक एक मलकूत, चौदे तबकों लेत हिसाब।।२५।।

इस संसार में अनेक ग्रन्थों की रचना करने में जो बड़े बड़े ज्ञानी और विद्वान जन हुये हैं। उनका यही कहना है कि हम सबको स्वामी बैकुण्ठ में निवास करने वाले भगवान विष्णु हैं, जो चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में सबका न्याय करते है।

ब्रह्मा सिव या देव जन, कई दुनियां तिन सेवक।
सो कहे ए सुख देवहीं, खैंचे अपनी तरफ खलक।।२६।।

ब्रह्मा, शिव और इन्द्रादि कई देवताओं की दुनिया के भक्तजन सेवा करते हैं। ये कहते हैं कि विश्णु भगवान (आदिनारायण) ही सबको सुख देने वाले हैं। इस प्रकार ये सारे संसार के लोगों को विष्णु भगवान की भक्ति की ओर आकर्षित करते हैं।

भावार्थ-उपरोक्त चौपाई का कथन मात्र पौराणिक ग्रन्थों में ही है। वैदिक साहित्य मे एक मात्र ब्रह्मा की ही उपासना का विधान है।

करे पातसाही खेल में, ऐसी कर बंदोबस्त।
देत काफरों दोजख, बंदों कदमों चार भिस्त।।२७।।

इस प्रकार की व्यवस्था करके आदिनारायण सम्पूर्ण सृष्टि में अपने स्वामित्व को बनाये रखते है। वे पापियों को नरक का दण्ड देते हैं तथा अपने भक्तों को चार प्रकार की मुक्ति (सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य) देते हैं।

जिन हक बका अर्स न पाइया, तिन खुदा हवा या मलकूत।
सो कटे पुलसरात में, जिन पकड़े वजूद नासूत।।२८।।

जो लोग अक्षरातीत परब्रह्म या अखण्ड परमधाम की प्राप्ति नहीं कर पाते वे निराकार या बैकुण्ठ के स्वामी विष्णु भगवान (आदिनारायण) को अपना आराध्य मानते हैं। जो लोग अपने शरीर और अपनी इन्द्रियों से कर्मकाण्ड की भक्ति में लगे रहते हैं, वे इस मृत्यु लोक में जन्म-मरण के चक्र में कष्ट पाते रहते हैं।

सो ले न सके भिस्त कदमों, तिन अरवाहों देत दोजख।
और हिसाब सुख दुख हैं कई, ए खेल कह्यो चौदे तबक।।२६।।

ऐसे लोग आदिनारायण की छत्रछाया में मुक्ति प्राप्त नहीं कर पाते और इन को नरक का कष्ट झेलना पड़ता है। इसके अतिरिक्त इन्हें अपने शुभ-अशुभ कर्मों के फल स्वरूप अनेक प्रकार के सुख-दुख भोगने पड़ते हैं। चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड की इस प्रकार की लीला है।

ए जो खेल पैदा की सब कही, इनों सिर अर्स मलकूत।
ला मकान जिमी तहेतसरा, ए सब फना तले जबरूत।।३०।।

यह सारा वर्णन मैने मायावी जगत की उत्पति के सम्बन्ध में किया है। इस संसार के लोगों के लिए बैकुण्ठ ही परमधाम है। निराकार से लेकर पृथ्वी लोक तथा पाताल तक का यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड नश्वर है और इसका अस्तित्व बेहद मंडल की छत्रछाया में ही है।

ए जो तले ला हवा के, जो खेल कह्या फना।
इनों सुध ना जबरूत लाहूत, ए बका वह सुपना।।३१।।

निराकार के नीचे (अर्न्तगत) जो ब्रह्माण्ड हैं, वे सभी नश्वर हैं। इन्हें योगमाया के ब्रह्माण्ड, (अक्षर धाम) तथा परमधाम का ज्ञान नहीं होता है। ये धाम अखण्ड हैं तथा हद का ब्रह्माण्ड स्वप्नमयी है।

लोक जिमी आसमान के, सुरिया ना उलंघत।
कह्या चौदे तबक का पलना, बीच हवा के झूलत।।३२।।

चौदह लोकों के जीव ज्योति स्वरूप (आदिनारायण) को पार नही कर पाते। चौदह लोकों का यह ब्रह्माण्ड अनन्त निराकार के मंडल में झूले की भांति झूलता रहता है।

द्रष्टव्य- निराकार मंडल में हमारे ब्रह्माण्ड जैसे अनन्त ब्रह्माण्डों का अस्तित्व है।

चार लाख कोंम आजूज माजूज, ए जो आवे जाए रात दिन।
गिनती कौल पूरा कर, आखिर एही काल सबन।।३३।।

आजूज-माजूज (दिन रात्रि) की संख्या चार लाख कही है। ये निरन्तर व्यतीत होते जा रहे हैं(आ-जा रहे हैं)। जब इनकी उम्र पूरी हो जाएगी तो ये समस्त ब्रह्माण्ड के लिए काल रूप हो जायेंगे।

भावार्थ- इस सृष्टि में प्रत्येक वस्तु की उम्र निश्चित है। दिन और रात्रि प्रत्येक प्राणी और वस्तु की उम्र को क्षय करते हैं। जब वह निश्चित अवधि पूरी हो जाती है तो

उस प्रत्येक प्राणी, वस्तु या ब्रह्माण्ड का लय हो जाता है। इस प्रकार का कथानक महाभारत आदि ग्रन्थों में भी है जिसमें संसार रूपी एक कूएं में वृक्ष स्थित है। उस वृक्ष पर एक मनुष्य बैठा हुआ होता है जो उस वृक्ष में लगे हुए शहद के छत्ते से बूंद-बूंद गिरते हुए मधु को चाटता रहता है और मोहवश पेड़ से छलांग लगाकर कुएं से बाहर निकल नहीं पाता। कुएं में एक विषधर सर्प रहता है। सफेद और काले दो चूहे वृक्ष के तने को निरन्तर काटते रहते हैं। जब वृक्ष का तना कट जाता है तो वृक्ष पर बैठा हुआ मनुष्य गिर जाता है और मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

उपरोक्त कथानक में वृक्ष संसार है। टपकता हुआ शहद लौकिक सुख तथा सगे सम्बन्धियों का मोह है। कुआं मृत्यु का निवास है और सर्प प्रत्यक्ष मृत्यु है। सफेद चूहा दिन है और काला चूहा रात्रि है। वृक्ष के तने का काटना ही संसार में उसके शरीर की आयु पूर्ण होना है।

उपरोक्त चौपाई में कियामत के आने के समय को सांकेतिक भाषा में व्यक्त किया गया है। ४ लाख में ३६५ से भाग देने पर १०९५ होता है जो ग्यारहवीं सदी में कियामत के आने तथा इमाम महदी के प्रकट होने का संकेत देता है। उनके अलौकिक ज्ञान को जब संसार आत्मसात कर लेगा तो ब्रह्माण्ड का प्रलय हो जायेगा।

जबरूत लाहूत अर्स कहे, देवें रूह अल्ला हकीकत।
ए बका मता दोऊ अर्सों का, सो महंमद पे मारफत।।३४।।

अक्षरधाम (बेहद) तथा परमधाम दोनों ही अखण्ड हैं। इनका ज्ञान सर्वप्रथम सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी ने दिया है। दोनों धामों की पूर्ण पहचान (शोभा, लीला आदि) श्री प्राणनाथ जी के कुल्जुम स्वरूप में निहित है।

रूहें अर्स अजीम की, फौज असराफील फरिस्तन।
दोऊ गिरो उतरी दोऊ अर्सों से, खेल फरिस्तों का देखन।।३५।।

ब्रह्मसृष्टियों का निवास परमधाम है। इसी प्रकार ईश्वरीय सृष्टि भी जागृत बुद्धि के फरिश्ते के साथ अक्षर धाम (सत्स्वरूप) से आयी है। दोनो धामों से संसार में अवतरित होने वालीं दोनों सृष्टियां ब्रह्मा, विष्णु, तथा शिव आदि की मायावी लीला को देखने के लिए आयी हुई हैं।

पेहेले कही सब खेल की, और कहे देखनहार।
रूहें फरिस्ते खेल देखहीं, पकड़ ख्वाब आकार।।३६।।

इसके पहले मैंने इस नश्वर जगत और इसे देखने वालों की यथार्थता का वर्णन किया है। ब्रह्मसृष्टियों तथा ईश्वरीय सृष्टियों ने भी संसार में आकर पंचभौतिक तन को धारण किया है। इस प्रकार वे माया का खेल देख रही हैं।

अजाजील खेल खावंद, ए भी न्यारा रह्या सबन।
ए खेल कुफार इन भांत का, तो ऐसा किया इन।।३७।।

आदि नारायण इस खेल के स्वामी हैं। माया का यह संसार इतने प्रपंचों से भरा हुआ है कि उन्होंने भी स्वयं को इससे अलग कर लिया है और परमात्म चिन्तन में तल्लीन हैं।

ऐसी छोड़ साहेबी अजाजील, पीठ दई आप बचाए।
ए खेल ऐसा कुफार का, बिना काजी कौन बताए।।३८।।

क्षर जगत अनन्त विस्तार वाला है किन्तु आदिनारायण इसके स्वामित्व को छोड़कर स्वयं कुटस्थ हैं और इससे मुख मोड़कर आत्म स्वरूप के चिन्तन में हैं। संशय एवं अज्ञानता से परिपूर्ण यह ऐसा संसार है जिसकी वास्तविकता न्यायाधीश श्री प्राणनाथ जी के अतिरिक्त कोई भी नहीं बता सकता है।

मोमिनों को देखलावने, किया खेल कुफार।
अब जो अर्स रूहें होवहीं, सो क्यों चलें इन लार।।३९।।

श्री राज जी ने ब्रह्मसृष्टियों को दिखाने के लिए ही यह मायावी खेल बनाया हैं। अब जो भी परमधाम की आत्मा होगी, वह भला माया के रास्ते पर क्यों चलेगी?

खेल कुफार इन भांत का, सब खेलें हक बका भूल।
इनमें फुरमान ल्याइया, मेरे मासूक का रसूल।।४०।।

माया का यह झूठा खेल ऐसा है, जिसमें सभी परमधाम और परब्रह्म को भूलकर संसार में मग्न हैं। इसमें प्रियतम अक्षरातीत के संदेशवाहक बनकर मुहम्मद स.अ.व कुर्आन लेकर आये।

आया रसूल पुकारता, राह सीधी बका वतन।
ए माएने कौन लेवहीं, बिना अर्स रूह मोमिन।।४१।।

मुहम्मद साहब ने संसार में आकर सबको परमधाम का सीधा मार्ग बताया, किन्तु परमधाम की ब्रह्मसृष्टियों के अतिरिक्त अन्य कोई भी कैसे कुर्आन के गुह्य अर्थों को जानकर उस मार्ग का अवलम्बन कर सकता है?

हम उतरे लैलत–कदर में, माहें उरझे खेल कुफार।
दसों दिस हम ढूंढ़िया, पर काहूं न पाइए पार।।४२।।

परमधाम के हम सभी ब्रह्ममुनि लैल-तुल-कद्र (व्रज, रास, जागनी) में माया का खेल देखने के लिए आये। किन्तु इसमें सभी उलझ कर रह गये। हमने दशों दिशाओं में अपने प्राणेश्वर को खोजने का प्रयास किया किन्तु हममें से किसी को भी न तो निजघर का पता चला और न इस ब्रह्माण्ड के ओर छोर (पार) का ही पता चला।

रसूलें हम वास्ते, मुनारे मुल्लां चढ़ाए।
जिन कोई मोमिन भूलहीं, ठौर ठौर पुकार कराए।।४३।।

मुहम्मद स.अ.व ने हमारे लिए ही नियम बनाया कि मस्जिद की मीनार पर चढ़ कर मुल्ला अजान दे। उन्होंने जगह-जगह मस्जिदों से कलमे की पुकार करायी जिससे ब्रह्मसृष्टियां अपने प्रियतम अक्षरातीत को भूलने न पायें।

कोई भूली राह बतावहीं, ताए बड़ा सवाब।
ढिंढोरा फिराइया, कर कर एह जवाब।।४४।।

उन्होंने जगह-जगह ढोल पीटकर इस बात की मुनादी (घोषणा) करा दी कि यदि कोई सत्य से भटके हुए व्यक्ति को सही मार्ग बताता है तो यह बहुत ही पुण्य का कार्य है।

हम ढूंढ़ ढूंढ कुफार में, गए जो तिनमें भूल।
ऐसे मिने खसम के, पाए दसखत हाथ रसूल।।४५।।

हम इस मायावी जगत् में परब्रह्म को खोजते-खोजते स्वयं को भी भूल गये थे। ऐसी अवस्था मे हमें प्रियतम के हस्ताक्षर से युक्त कुर्आन मिला, जिसे मुहम्मद स.अ.व. ने हमें दिया।

इन फुरमान में इसारतें, लिखियां जो खसम।
निसान अर्स अजीम के, पाए हमारे हम।।४६।।

इस कुर्आन में प्रियतम अक्षरातीत ने संकेतों में सारी बातें लिखी हैं। इसके अवलोकन से हमें परमधाम ही सारी साक्षियां मिल गयीं।

शंका- उपरोक्त ४५ वीं तथा ४६ वीं चौपाई को पढ़ने से यह निश्कर्ष निकलता है कि इन चौपाईयों के अवतरण से पहले श्रीजी ने कुर्आन का अवलोकन कर लिया था। इसी प्रकार बीतक के ३४ वें प्रकरण की चौपाई ३१ मे कहा गया है।

"इहां आई साकुमार को, पाती लिखी बनाय।
बाईस प्रश्न तिनमे, लिखे चित्त सो ल्याए।।"

यहाँ प्रश्न यह होता है कि श्रीजी ने कुरान पढ़े बिना कुरान के सम्बंध में २२ प्रश्नों की पाती कैसे लिखी?

हरिद्वार से लौटने के पश्चात् श्रीजी दिल्ली आते हैं। वहाँ गोर्वधन दास तथा लालदास जी के विवाद के पश्चात् अनूपशहर को प्रस्थान करते हैं, जहां सनद ग्रन्थ का अवतरण होता है इस सनद ग्रन्थ के अवतरण के पश्चात् श्रीजी जब दिल्ली आते है, तो दो महीने के पश्चात् कायमुल्ला के घर आते है। फारसी भाषा में शेख जी और मीरजी का संवाद लिखा जाता है, जिसमें कुरान के गुह्य रहस्यों को स्पष्ट किया गया हैं। जब श्री प्राणनाथ जी कायममुल्ला से तफसीर हुसैनी का श्रवण करते हैं और व्रज, रास, जागनी के प्रसंग के साथ तीसवें सिपारे में सूरा कौसर की आयत 'इन्ना आतेना' में जब हौज कौसर ताल तथा यमुना जी का वर्णन सुनते है तो प्रसन्नता के आवेग में तीन दिन तक बिस्तर से उठते ही नहीं है। उसके पश्चात् सब सुन्दरसाथ से कुर्आन में परमधाम के वर्णन होने की चर्चा करते हैं तथा उदयपुर सहित मुख्य स्थानों पर पत्र लिखते हैं।

सुनियो भीम मुकुन्द जी, उद्धव केसव श्याम।
हम पाती पढ़ी मुहम्मद की, सब पाई हकीकत धाम।। बी. सा. प्र. ३६ चौ.८३
अपने घर की इसारतें, और न समझे कोए।
और कोई तो समझे, जो कोई दूसरा होए।। बी. सा. प्र.३६ चौ.८४

किन्तु बीतक की ये दोनों चौपाईयाँ सनद ग्रन्थ के प्रकरण ४१ की २ और ३ चौपाई के रूप मे भी लिखी हैं।

यहां यह संशय होता है कि सनद ग्रन्थ तो बहुत पहले उतर चुका था। ऐसी स्थिति में सुन्दरसाथ को पत्र लिखते समय सनद की ये दोनों चौपाईयां उद्धृत की गयीं अथवा बीतक की उस घटना के पश्चात् बड़ी पत्री के रूप में यह ४१ वां प्रकरण उतरा है। बी. सा. ३६/२७ में भी कहा गया है कि **'तौरेत किताब में, उतरी सनंधे तीस'** यदि यह माना

जाय कि कुर्आन के तीस सिपारों की व्याख्या में तीस प्रकरण उतरते हैं तथा १२ प्रकरण हिन्दू पक्ष के क. हि. के हैं जो वेद कतेब के एकीकरण की दृष्टि से हैं तो यह ४१ वां प्रकरण बाद का मानना पड़ेगा।

यदि एक से तीस प्रकरण तक को अनूपशहर का अवतरित माना जाय तो शेष १२ प्रकरणों का अवतरण कहाँ माना जाय? क्या बड़ी पत्री और छोटी पत्री का अवतरण तफ्सीर हुसैनी के श्रवण के पश्चात् हुआ है? यदि नहीं हुआ है तो उन्होने सनद में सारा वर्णन परमधाम का कैसे कर दिया? इसी प्रकरण की ४६ वीं चौपाई से भी कुर्आन पढ़ने की ओर संकेत है। इसकी वास्तविकता क्या हैं?

समाधान- इस प्रकार की शंकाए तभी होती हैं, जब हम श्री प्राणनाथ जी को सामान्य मानवीय दृष्टिकोण से देखते हैं। जिस स्वरूप के अंदर कुर्आन को कहने वाले (श्री राज जी), सुननें वाले (अक्षर ब्रह्म), लाने वाले (जिब्रील), उसकी हकीकत का रहस्य खोलने वाले (अस्राफील) तथा मारिफत का रहस्य खोलने वाले (आनन्द अंग श्यामा जी) सभी विराजमान हों उन्हें कुर्आन की जानकारी के लिये किसी से कुर्आन पढ़ने की आवश्यकता नहीं है। यह बात खु.१५/५ मे स्पष्ट रूप से बतायी गयी है।

पढ़या नाही फारसी, ना कछु हरफ आरब ।
सुन्या न कान कुरान को, और खोलत मायने सब ।।

श्री प्राणनाथ जी के हृदय में तो कुर्आन का ज्ञान मेड़ते के ही अन्दर आ गया था। यह बीतक ३४/१ के इस कथन से स्पष्ट है- **'कलमा से हासिल किया, लिया मुहम्मद मता इत।।'**

ऐसे स्वरूप को २२ प्रश्नों की पाती लिखने के लिए किसी पुस्तक के अध्ययन या किसी मुल्ला से पूछने या सीखने की कोई आवश्यकता नहीं थी। सनन्ध के अवतरण के पश्चात् ही कायममुल्ला को बुलाया जाता है। किन्तु सनद में जिस प्रकार तीनो सूरतों, ऐन-गैन, दज्जाल, मेयराज का मुर्ग आदि गूढ़ रहस्यों का स्पष्टीकरण हुआ है वह तो तफ्सीर हुसैनी में भी नहीं है।

श्रीजी अपने स्वरूप की पहचान स्वयं न कह कर कायमुल्ला के मुख से करवाना चाहते थे। यही कारण है कि सामान्य मानवीय व्यवहार दिखाकर उन्होंने अपने स्वरूप के ऊपर लौकिक मर्यादा का आवरण डाल लिया, जिससे भविष्य में कोई भी चमत्कारिक लीलाओं के पीछे न भागे। सनंध में भविष्य की भी अनेक बातें दी गयी है।

बारहीं सदी पूरन, ब्रह्माण्ड ने पायो इनाम। सनंध ४२/२३

कायद सदी तेरही, उथींदा निरवाण। सनंध ३५/२०

इस प्रकार यदि हम अपनी अन्तर्दृष्टि से देखें तो यही निष्कर्ष निकलेगा कि सनंध के ४२ प्रकरण तक का अवतरण भी एक ही साथ हुआ है। श्रीजी सब कुछ जानते हुए भी अन्जान बने रहे, जिससे मर्यादा का भी लोप न हो और सभी उनको पहचान न पायें। यदि सभी सुन्दरसाथ उनकी पूर्ण पहचान उसी समय कर लेते तो सभी के धैर्य, समर्पण, श्रद्धा, एवं विश्वास की यथार्थ परीक्षा नहीं हो पाती, और इस कसौटी पर खरा सिद्ध हुए बिना जागनी का लक्ष्य अधूरा रह जाता।

हम ढूंढें हक वतन, और रसूल ढूंढें हम।
यों करते सब आए मिले, मोमिन रसूल खसम।।४७।।

हम अपने प्रियतम अक्षरातीत तथा परमधाम को खोज रहे थे तथा मुहम्मद साहब हमें। इस प्रकार खोज करते करते हम सभी का प्राणनाथ जी की सानिध्यता में मेड़ते में मिलन हो गया।

सुनो मोमिनों बेवरा, ए जो आपन देख्या खेल।
जो तीनों देखे आलम, उतर के मांहें लैल।।४८।।

हे साथ जी! हमने जो माया का खेल देखा है, उसका विवरण सुनिए। हमने रात्रि में तीनों ब्रह्माण्डों (व्रज, रास एवं जागनी) का खेल देखा है।

भावार्थ- रात्रि का तात्पर्य उस अवस्था विशेष से है जिसमें अपनी, प्रियतम की एवं परमधाम की सुधि नहीं होती। तारतम ज्ञान के प्रकाश में इनका बोध होना ही उजाला होना है। तारतम का तारतम अर्थात् खिल्वत, परिक्रमा, सागर और श्रृंगार के अवतरण के बाद की अवस्था को दोपहर के सूर्य के उगने से उपमा दी गयी है।

हकें बचाए कोहतूर तले, तोफान हूद महत्तर।
दूसरे तोफान नूह के, बचाए किस्ती पर।।४९।।

पहली बार हूद नबी के यहां तूफान आने पर परब्रह्म ने कोहतूर पर्वत के नीचे सबकी रक्षा की थी। दूसरी बार नूह नबी के यहां तूफान आने पर किश्ती (नाव) में बैठाकर सबकी रक्षा की।

भावार्थ- व्रज में इन्द्रकोप के समय गोवर्धन पर्वत के नीचे परब्रह्म स्वरूप कृष्ण ने

गोपियों समेत समस्त व्रजमंडल की रक्षा की। व्रज से गोपियों के रास में जाते समय अक्षरातीत ने ब्रह्मसृश्टियों को योगमाया के ब्रह्माण्ड में पहुंचाकर उन्हें बचाया।

साल हजार पीछे रसूल के, मांहें उतरे लैलत–कदर।
हुआ अर्स बका दिन जाहेर, सदी अग्यारहीं के फजर।।५०।।

मुहम्मद स. अ. व. के एक हजार वर्षों के बाद हम वि.स. १६३८ में लैल तुल कद्र (इस प्रकार की लम्बी रात्रि) के तीसरे चरण में उतरे। ग्यारहवीं सदी (वि.सं. १७३५) में अखण्ड परमधाम का ज्ञान प्रगट होने से ज्ञान का उजाला हो गया और रात्रि समाप्त हो गयी।

शंका- सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी भी तो परमधाम की लीला एवं युगल स्वरूप की शोभा का वर्णन किया करते थे किन्तु उनकी लीला के समय को रात्रि की संज्ञा क्यों दी जाती है?

समाधान-सुन्दरसाथ उस समय होने वाली आडीका लीला के सम्मोहन में इतना अधिक फंस गया था कि सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी के मुखारविन्द से सुने हुए ज्ञान को उसने अनसुना सा कर दिया। वह ज्ञान उनके हृदय में प्रविश्ट होकर फलित नहीं हुआ। इसी का परिणाम हुआ कि सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी के अन्तर्धान होने पर सबने या तो यह मान लिया कि हमारे धाम धनी परमधाम चले गये हैं या गादी में बैठे है।

श्री कुल्जुम स्वरूप के अवतरण के पश्चात् ही यह अन्धकार दूर हो सका। वि.सं. १७४०-१७४८ के मध्य परमधाम के चारों ग्रन्थों (खिल्वत, परिक्रमा, सागर और श्रृंगार) के अवतरण के पश्चात् ज्ञान का सूर्य मध्याह्न में चमकने लगा। वर्तमान समय में भी यदि तारतम ज्ञान का प्रचार नहीं होगा तो वैसे ही स्थिति बन सकती है। पिछले २५० वर्षों का इतिहास यही कहता है।

एही फरदा रोज कयामत, जो कही हजरत।
सो ए हुए सबे जाहेर, जिनको दुनी ढूंढ़त।।५१।।

मुहम्मद साहब ने इसे ही कल को होने वाली कियामत कहा है। सारा संसार जिस अक्षरातीत तथा परमधाम को खोजता रहा है, वे इस समय श्री कुल्जुम स्वरूप के द्वारा प्रकट हो गये।

भावार्थ- कुर्आन में संसार के हजार वर्षों को परब्रह्म का एक दिन तथा संसार के १०० वर्षो को एक रात्रि माना है। इस प्रकार ११०० वर्षो के बाद कियामत का आना सिद्ध होता है।

कुर्आन में यह प्रसंग सि. १७ सू. २२ आ. ४७ व यस्तऽजिलुनक बिल्आजाबि व लंय्युख्लिफल्लाहु वऽदहु व अिन्न यौमन अिन्द रब्बिक कअल्फि सनतिम्मिम्मा तअुद्दुन(४७) और ऐ पैगम्बर! तुमसे सजा की जल्दी मचा रहे हैं (कि कहां है तुम्हारा खुदाई अजाब?) और अल्लाह तो कभी अपाना वादा खिलाफ करने को नहीं। और कुछ शक नहीं कि तुम्हारे परवरदिगार के यहां का एक दिन तुम लोगों की गिनती के अनुसार हजार वर्षों के बराबर है (अजाब अपने नियत समय पर बरपा होकर रहेगा।)

सीधी राह वतन की, अब लों न पाई किन।
पैगंमर ना फरिस्ते, ना अहंमद मेंहेदी बिन।।५२।।

आज दिन तक संसार में किसी भी व्यक्ति को परमधाम के इस प्रकार के सीधे और सत्य मार्ग का पता नहीं हो सका था, भले ही कोई पैगम्बर या फरिश्ता ही क्यों न हो। यह शोभा मात्र सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी (अहमद) और श्री प्राणनाथ जी (इमाम महदी) को ही है।

विशेष- मुहम्मद स.अ.व को शेष अन्य दोनों सूरतों से अलग नहीं समझना चाहिए। उपरोक्त चौपाई में पैगम्बर शब्द से आशय मुहम्मद साहब से भिन्न अन्य १ लाख २० हजार पैगम्बरों से है शरीयत और तरीकत के द्वारा भी परमधाम की अनुभूति नहीं हो सकती है।

खेल फरिस्ते अर्स बका, हक मता पाया हम सब।
आखिर भिस्त कयामत, ए कजा कहिए अब।।५३।।

श्री प्राणनाथ जी के श्री कुल्जुम स्वरूप के प्रकाश में हम सब सुन्दरसाथ ने यह स्पष्ट रूप से जान लिया है कि यह मायावी जगत् क्या है, फरिश्ते कौन हैं, अखण्ड परमधाम कहाँ है और कैसा है, मूल स्वरूप श्री राजजी के हृदय में ज्ञान, प्रेम आदि के अनन्त सागर कैसे हैं? जागनी लीला के पश्चात् ब्रह्माण्ड के सभी जीवों को बेहद मंडल की आठ बहिश्तों में अखण्ड मुक्ति मिलेगी। इसे ही श्री प्राणनाथ जी का न्याय कहते हैं।

ए कहूं फना पेहेले जिन विध, होसी इन आखिरत।
ज्यों पावें सुख भिस्त में, उठ के रूह कयामत।।५४।।

जागनी लीला के पश्चात् (आखिरत में) इस ब्रह्माण्ड का किस प्रकार प्रलय होगा, पहले मैं यह बात बता रहा हूँ? उसके पश्चात् मैं यह बताऊंगा कि किस प्रकार संसार के सभी जीवों को आठ बहिश्तों में मुक्ति का अखण्ड सुख मिलेगा?

ए कजा हुई दुनियां मिने, खोले हकीकत मारफत।
तिन मता बका अर्स का, जाहेर करी न्यामत।।५५।।

ज्ञान के दृष्टि से होने वाली यह लीला इस संसार में हुई जिसमें श्री प्राणनाथ जी ने धर्मग्रन्थों में छिपे हुए ज्ञान (हकीकत) तथा विज्ञान (मारिफत) के रहस्यों को प्रकट किया। इस ज्ञान के माध्यम से अखण्ड परमधाम की शोभा तथा लीला की सम्पूर्ण निधि संसार में उजागर हो गयी।

बका सूरत पर बंदगी, करी इमामें इमामत।
दोऊ अर्स बताए दोऊ गिरोह को, करी महंमद सिफायत।।५६।।

श्री प्राणनाथ जी (इमाम महदी) ने ब्रह्मसृष्टि तथा ईश्वरीय सृष्टि की जागनी का नेतृत्व किया तथा उनसे परमधाम में विराजमान परब्रह्म के युगल स्वरूप (श्री राज श्यामा जी) का ध्यान (चितवनी) कराया। उन्होने दोनों सृष्टियों को अक्षर धाम तथा परमधाम का भी ज्ञान दिया। इन्ही की महिमा (सिफ्त) मुहम्मद साहब ने भी की है।

ए नूर कजा का या बिध, जिन टाली फेर अंधेर।
जो न राखूं ले हुकम, तो भोर होत केती बेर।।५७।।

स्वयं श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि ज्ञान दृष्टि से होने वाले न्याय का तेज ऐसा है कि इसने बारम्बार छा जाने वाले अज्ञानता के अन्धकार का नाश कर दिया है। मैंने परब्रह्म के आदेश से ही उसे रोक रखा है अन्यथा प्रातःकाल का उजाला होने में कितनी देर लगती है।

भावार्थ- यद्यपि तारतम ज्ञान का प्रकाश फैल चुका है फिर भी संसार के सभी प्राणी उसके उजाले में नहीं आ पाये है। इसी कारण इस ब्रह्माण्ड का अस्तित्व बना हुआ है।

कयामत काजी मोमिनों, पेहेले होसी जब।
फैलसी नूर आलम में, काजी कजा का सब।।५८।।

संसार में सबसे पहले ब्रह्मसृष्टियों को कियामत तथा न्यायाधीश श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की पहचान होगी। इसके पश्चात् न्यायाधीश के न्याय का प्रकाश सारे संसार में फैल जायेगा अर्थात् सारे संसार में सत्य ज्ञान का वर्चस्व स्थापित हो जायेगा।

ए किरने कौन पकरे, इन नूरै के आवाज।
करत ए सब खसम, अर्स अरवाहों काज।।५६।।

सारे संसार में तारतम ज्ञान की मधुर गुंजार सुनायी देगी। उसके प्रकाश की किरणें इतनी अधिक तेजोमयी होगी कि उन्हें कोई भी पकड़ नहीं सकेगा (आंकलन नहीं कर सकेगा)। परमधाम की आत्माओं को सुख देने के लिये ही श्री राज जी यह सारी लीला कर रहें है।

काजी कजा के नूर की, बजसी कई करनाल।
नूर अकल असराफील, बजाए स्वर रसाल।।६०।।

न्यायाधीश श्री प्राणनाथ जी के द्वारा मिथ्या सिद्धान्तों को हटा कर परमसत्य का मार्ग दर्शाये जाने के पश्चात् अनेकों तुरहियां बजेंगी अर्थात् उस अलौकिक ज्ञान को चारों ओर फैलाने वाले अनेकों मनीषी जन तत्पर हो जायेंगे। अक्षर ब्रह्म की जागृत् बुद्धि बहुत ही मधुर स्वर में तारतम ज्ञान को संसार में फैलायेगी (तुरही बजायेगी)।

द्रष्टव्य-तारतम ज्ञान के प्रकाश को तुरही बजाने की उपमा से वर्णित किया गया है।

कई करोर करनाइयां, कई करोर निसानों घोर।
यों गरज्या आलम में, सो कह्या न जाए सोर।। ६१।।

कालान्तर में करोड़ों लोग तारतम ज्ञान के उद्घोषक के रूप में खड़े हो जायेंगे। करोड़ों तुरहिया बजने लगेंगी, जिनकी गूंज के करोड़ों चिन्ह (संकेत) दिखाई देने लगेंगे। इस प्रकार सारे संसार में श्री कुल्जुम स्वरूप के ज्ञान की इस प्रकार की गर्जना होगी कि उसके कोलाहल का वर्णन नहीं हो पायेगा अर्थात् तारतम ज्ञान का ही सर्वत्र बोलबाला होगा।

याही सब्द के सोर से, पेहेले उड़सी इंड अंधेर।
कुदरत बुरका गफलत, उड़ाया फरिस्तों फेर।।६२।।

तारतम ज्ञान की गूंज से इस संसार की अज्ञानता का अन्धकार नष्ट हो जायेगा। माया के मोह का आवरण समाप्त हो जाने से फरिश्तों का भी संसार चक्र समाप्त हो जायेगा।

भावार्थ- मोह का आवरण ही निराकार मण्डल है, जिसे फरिश्ते (ब्रह्मा आदि

देवता) भी पार नहीं कर पाते हैं। तारतम ज्ञान के प्रकाश में सभी अखण्ड धाम की मुक्ति के अधिकारी बनेंगे।

आकास जिमी जड़ मूल से, पहाड़ आग जल वाए।
फिस्या कतरा नूर का, और दिया सब उड़ाए।।६३।।

जिसके हृदय में तारतम ज्ञान की एक बूंद भी प्रविष्ट हो जायेगी उसके लिये धरती, आकाश, पर्वत, अग्नि, जल तथा वायु से युक्त इस संसार का कोई भी मोह नहीं रह जायेगा। सम्पूर्ण पंचभौतिक जगत् उसके ज्ञान नेत्रों के समक्ष तुच्छ प्रतीत होने लगेगा।

इन घाव के पड़घाव से, उड़सी चौदे तबक।
और आवाज के नूर से, बैठे भिस्त में कर हक।।६४।।

तारतम ज्ञान की गूंज की प्रतिध्वनि से चौदह लोकों के प्राणियों में इस ब्रह्माण्ड के प्रति जो मोह रूप अज्ञान है, वह समाप्त हो जायेगा। जो मानव तारतम ज्ञान की मधुर ध्वनि को अपने हृदय में आत्मसात् करेगें वे बेहद मण्डल में अखण्ड मुक्ति के अधिकारी बनेंगे।

भावार्थ- तारतम ज्ञान का एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक हस्तान्तरित होना ही प्रतिध्वनित होना है। चौदह लोकों के उड़ जाने का अर्थ है- ब्रह्मज्ञान को आत्मसात् कर चौदह लोकों से परे हो जाना।

पेहेले दिए सब उड़ाए के, चौदे तबक दम जे।
काजी कजा के नूर से, भिस्त में बैठे नूर ले।।६५।।

सबसे पहले सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का प्रलय कर दिया जायेगा। इसके पश्चात् इस ब्रह्माण्ड के सभी प्राणी श्री प्राणनाथ जी के तारतम ज्ञान के प्रकाश में परब्रह्म के पहचान करके नूरमयी स्वरूप धारण करेंगे और योगमाया की बहिश्तों में अखण्ड मुक्ति को प्राप्त होंगे।

क्यों बरनों सुख भिस्त के, हो बैठे नूरी नेहेचल।
रेहेमत इन रेहेमान की, रच दिया और मंडल।।६६।।

बेहद के उन मुक्ति स्थानों (बहिश्तों) के सुखों का वर्णन मैं कैसे करूँ, जिनमें जीव अखण्ड नूरमयी तन धारण कर लीला में मग्न होगें? यह तो दया के सागर श्रीजी की अपार कृपा है, जिन्होंने माया के जीवों को भी अखण्ड मुक्ति का शाश्वत सुख प्रदान किया है।

अपने अपने ताएफें, अरवाहें मिली सब धाए।
महंमद मेंहेदी की मेहेर से, भिस्त में बैठे आए।।६७।।

अपने अपने समूह के साथ सभी अध्यात्मवादी, अग्रगण्य जीव श्री प्राणनाथ जी की शरण में दौड़कर आयेंगे और उनकी कृपा से बहिश्तों में अखण्ड मुक्ति का सुख भोगेंगे।

पेहेले सब फना कर, उठाए लिए ततखिन।
साफ किए सब नूर ने, यों भिस्त भई वतन।।६८।।

पहले सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का प्रलय कर दिया जायेगा। तत्पश्चात् सभी जीवों को तारतम ज्ञान के प्रकाश में निर्मल किया जायेगा। इस प्रकार उन्हें अखण्ड धाम की प्राप्ति होगी।

भावार्थ-योगमाया के ब्रह्माण्ड में जागृत बुद्धि की लीला है। उसमें प्रवेश करते ही संसार के सभी जीवों को परब्रह्म तथा परमधाम की पहचान हो जायेगी। इसे ही तारतम ज्ञान के प्रकाश में निर्मल करना कहा गया है।

निमख में नूर नजरों, उठे अंग उजास।
बरस्या नूर सबन में, कायम सुख में बास।।६९।।

अक्षर ब्रह्म की नूरी दृष्टि के समक्ष एक पल में ही सभी जीवों के अंग अंग से निर्मल प्रकाश प्रस्फुटित होने लगेगा। सभी नूरी ज्योति की वर्षा से अखण्ड आनन्द में ओत-प्रोत हो जायेंगे।

ए कायम नूर नजर की, सिफत या जुबां कही न जाए।
पाक हुए सब खेलहीं, जरा खतरा न पाइए ताए।।७०।।

जागृत अक्षर ब्रह्म की नूरी-दृष्टि की महिमा का वर्णन इस जिह्वा से नहीं हो सकता। ब्रह्माण्ड के सभी जीव पवित्र होकर अखण्ड लीला में आनन्दपूर्वक क्रीडा करेंगे। उन्हें कालमाया की तरह कभी भी लय होने का संकट नहीं रहेगा।

खाना पीना दिल चाहता, सब बिध का करार।
नूर सरूपें होए के, भिस्त में बसें नर नार।।७१।।

बहिश्तों में रहने वाले सभी स्त्री-पुरूषों का स्वरूप नूरमयी होगा। उन्हें अपने मन की इच्छानुसार खाना-पीना प्राप्त होगा। इस प्रकार वहां हर तरह से केवल आनन्द ही आनन्द होगा।

भावार्थ- बेहद मण्डल भूख-प्यास आदि द्वन्दों से रहित है। वहाँ खाने-पीने का प्रसंग मात्र लीला रूप में है। इस मायावी संसार की भांति वहाँ मल-मूत्र की समस्या नहीं होगी। सम्पूर्ण बेहद मण्डल अक्षर ब्रह्म की लीला का स्थान है, इसलिए वहां का कण-कण प्रेम,तेज, और आनन्द आदि ब्राह्मी गुणों से भरपूर है।

रूप रंग सब नूर के, गुन अंग इंद्री नूर।
वस्तर भूखन नूर सबे, नूरै दिए अंकूर।।७२।।

योगमाया के बहिश्तों में अखण्ड होने वाले जीवों के रूप, रंग, गुण, अंतः करण, इन्द्रियां, वस्त्र, आभूषण सभी नूरमयी होगें। नूर से ही उन्हें आत्माओं का प्रतिबिम्बित रूप प्राप्त होगा।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई के चौथे चरण में नूर द्वारा अंकूर प्राप्त होने का आशय यह है कि अब उन जीवों का बेहद भूमि में अखण्ड स्वरूप से अनन्त काल तक निवास होगा। वहाँ जन्म-मरण और वृद्धावस्था जैसी विकृतियाँ नहीं होगीं। सत्स्वरूप की दोनों बहिश्तों में अखण्ड होने वाले ब्रह्मसृष्टियों के जीवों तथा ईश्वरीय सृष्टि को ब्रह्मसृष्टियों की परात्म का प्रतिबिंबित रूप मिलेगा। इसे ही प्रकाश हिन्दुस्तानी में 'जीव टल होसी आतम' कहा गया। सबलिक की तीन बहिश्तों तथा अव्याकृत की तीन बहिश्तों में अखण्ड होने वाले जीवों को भी यथा योग्य नूरमयी तन मिलेंगे जिनसे वे शाश्वत् आनन्द का रस पान करेंगे।

मेवा मिठाई सेज सुख, सकल बिध भर पूर।
इस्क सबों में अति बड़ा, दिल हिरदे नूर हजूर।।७३।।

बहिश्तों में मेवा, मिठाई तथा शय्या आदि का अपार सुख है और प्रत्येक दृष्टि से परिपूर्ण है। सभी के अंदर बहुत अधिक प्रेम भरा होगा और उनके हृदय में प्रियतम की नूरी शोभा विराजमान होगी।

या भिस्त में इन सुख को, केतो कहूं विस्तार।
दिल चाह्या सब पावहीं, सब बिध सुख करार।।७४।।

इस प्रकार बहिश्तों में अनन्त सुख है, जिसका मै कहाँ तक वर्णन करूँ? सभी के अपने हृदय की इच्छानुसार हर प्रकार का सुख और आराम होगा।

लागी बरखा नूर की, चौदे तबक चौफेर।
अंतर माहें बाहेर, कहूं पैठ न सके अंधेर।।७५।।

बेहद में अखण्ड होने वाले चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में अक्षर ब्रह्म के नूर की वर्षा होगी। इस प्रकार वहां किसी के भी हृदय में या अथवा बाहर लीलारूप किसी भी वस्तु में माया का कोई भी विकार प्रवेश नहीं कर पायेगा।

चौदे तबक नूरने, फेर किया मंडल।
खेल चाल दिल चाहते, नूर अरवा नूर बल।।७६।।

अक्षरब्रह्म बेहद मण्डल में चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड को नूर का स्वरूप देकर अखण्ड करेंगे। इसमें अखण्ड होने वाले सभी प्राणियों के जीव नूरमयी होंगे तथा उनमें नूरी शक्ति होगी। वे अपने हृदय की इच्छानुसार तरह-तरह की लीलाएं करेंगे और प्रेम का आचरण करेंगे।

सुन्य चाही तिन सुन्य दई, भिस्त चाही तिन भिस्त।
नूर चाह्या तिन नूर दिया, यों पाई अपनी किस्त।।७७।।

शून्य-निराकार की उपासना करने वालों को बेहद मण्डल के अखण्ड शून्य निराकार की प्राप्ति हुई। बहिश्त चाहने वालों को बहिश्तें मिलीं तथा अक्षर ब्रह्म की चाहत रखने वाली ईश्वरीय सृष्टि को अक्षर धाम (सत्स्वरूप) की प्राप्ति हुई। इस प्रकार सबको न्याय के अनुसार फल मिला।

भावार्थ-योगमाया का शून्य कालमाया के शून्य के भांति अन्धकारमय नहीं है अपितु प्रकाशमय है। इतना अवश्य है कि वह अवयव रहित और सर्व व्यापक है।

मात हुई मात चाहते, बुध बाबा आलम।
मन चाह्या सबको दिया, अर्स रूहों के खसम।।७८।।

संसार में बौद्धिक दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ कहे जाने वाले जिन महापुरूशों ने अपने ज्ञान एवं साधना के बल से माया की हार चाही थी, बहिश्तों में अखण्ड होने के पश्चात् उन्होंने प्रत्यक्ष देखा कि अब माया उनसे हार गयी है और वे माया से परे त्रिगुणातीत धाम में है। इस प्रकार परमधाम की आत्माओं के प्रियतम श्री प्राणनाथ जी ने सभी को उनके मन की इच्छानुसार सुख दिया।

मोमिन रूहें कदमों लिए, फरिस्ते नूर समाए।
तीसरे सारे भिस्त में, सो बैठे नूर की छांए।।७६।।

इस खेल के समाप्ति के पश्चात् मूल मिलावे में प्रियतम अक्षरातीत के चरणों में बैठी हुई आत्मायें पुनः जागृत हो जायेंगी। ईश्वरीय सृष्टि अक्षरधाम (सत्स्वरूप) को प्राप्त होगी। जीव सृष्टि अक्षर ब्रह्म की छत्रछाया में अखण्ड बहिश्तों के शाश्वत् सुख का रसपान करेगी।

भिस्त भी बरकत मोमिनों, दई दुनियां को अविनास।
पर सुख बड़े मोमिन के, लिए कदमों अपने पास।।८०।।

ब्रह्मात्माओं की कृपा से संसार के सभी प्राणियों को बहिश्तों में अखण्ड मुक्ति का सुख मिलेगा किन्तु उन ब्रह्मसृष्टियों के सुख तो अनन्त हैं जिनके मूल तन मूलमिलावे में परब्रह्म के चरणों में बैठे हुए हैं।

भावार्थ-उपरोक्त चौपाई में वर्णित घटनाक्रम न्याय के अनुसार घटित हो चुका है। किन्तु व्यवाहरिक रूप में यह भविष्य में चरितार्थ होगा, जब माया का यह खेल समाप्त हो जायेगा।

पैदास कतरे नूर की, ए जो हुई चल विचल।
फेर समेत समानी नूर में, सो नूर सदा नेहेचल।।८१।।

अक्षर ब्रह्म की नूर के अंश मात्र से उत्पन्न होने वाली यह नश्वर दुनिया भी योगमाया में अखण्ड हो जायेगी। पुनः अंश रूप यह नूर ब्रह्माण्ड सहित उसी नूर (बेहद) में मिल जायेगा जो सर्वदा ही अखण्ड रहने वाला है।

भावार्थ-अक्षर ब्रह्म के नूर का अंश ही प्रतिबिम्बित होकर आदि नारायण के रूप में जगत् की रचना करता है। महाप्रलय के पश्चात् आदि नारायण अपने मूल स्थान सुमंगला-पुरूष को प्राप्त हो जाते हैं।

असराफील बुध नूर की, ए जो आई काजी हजूर।
सो नूर में जाए झिल मिली, ऐसी हुई कजा के नूर।।८२।।

अक्षर ब्रह्म के जागृत बुद्धि(अस्राफील) न्याय करने के लिये श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में आकर विराजमान हुई। न्याय के प्रकाश में उसकी ऐसी विचित्र शोभा हुई कि वह अक्षरधाम (सत्स्वरूप) में जाकर अपनी महिमा से जगमगाने लगी।

उड़ाया कतरा नूर का, सो जाए रह्या मिने नूर।
फेर नजर करी भिस्त पर, हुई रोसन भर पूर।।८३।।

इस ब्रह्माण्ड के प्रलय के पश्चात् अक्षरब्रह्म के नूर का अंशरूप अजाजील फरिश्ता पुनः अपने मूल स्थान अव्याकृत के महाकारण (सबलिक के स्थूल) को प्राप्त हो जायेगा। इसके पश्चात् जब अक्षरब्रह्म की नूरी दृष्टि आठों बहिश्तों पर पड़ेगी तो वे नूर से जगमगा उठेंगी।

कजा हुई सबन की, पर मोमिन बड़े अंकूर।
इन को खेल देखाए के, लिए कदमों अपने हजूर।।८४।।

श्री प्राणनाथ जी ने संसार के सभी प्राणियों का न्याय किया, परन्तु परमधाम से अखण्ड संबन्ध होने के कारण ब्रह्मसृष्टियों की अपार महिमा है। प्रियतम अक्षरातीत इन ब्रह्मात्माओं की सुरता को माया का खेल दिखाकर अपने चरणों में पुनः बुला लेंगे।

यों कजा करी सबन की, बांट दिए सब ठौर।
ए सुध इन काजी बिना, कोई देवे जो होवे और।।८५।।

इस प्रकार प्रियतम परब्रह्म ने श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में सबका न्याय किया और उन्हें आठ बहिश्तों में अखण्ड मुक्ति दी। न्यायाधीश श्री प्राणनाथ जी के बिना और कौन है जो इस गहन रहस्य का बोध कराये?

काजी कजा करके, ले उठसी रूह मोमिन।
पेहेले ए कयामत होएसी, पीछे अरवाहें सबन।।८६।।

श्रीजी साहब जी सबका न्याय करके परमधाम की आत्माओं को लेकर परमधाम जायेंगे। सबसे पहले परात्म में आत्मायें जागृत होंगी। इसके पश्चात् शेष ईश्वरी सृष्टि तथा जीव सृष्टि को बहिश्तों में मुक्ति मिलेगी।

माएने इन कुरान के, या जाहेर या बातन।
दई सबों को हैयाती, खोल के इलम रोसन।।८७।।

प्राणेश्वर अक्षरातीत ने कुर्आन के बाह्य तथा आन्तरिक अर्थों को स्पष्ट कर वास्तविक आशय को प्रकट किया। सभी को परम सत्य की पहचान करा कर बेहद में अखण्ड मुक्ति प्रदान की।

कुदरत की सारी कही, बुरका जो गफलत।
दोजख भिस्त फरिस्ते, आखिर कही कयामत।।८८।।

उन्होंने प्रकृति की यथार्थ पहचान बताने के साथ उस मोह रूप आवरण को भी दर्शाया जो बेहद और परमधाम की राह में बाधक है। दोजक (नरक), आठ बहिश्तों(मुक्ति स्थानों) तथा फरिश्तों की पहचान बताकर आखिरत के समय होने वाली कियामत का भी स्पष्टीकरण किया।

ए सब्द तो लों कहे, जो लों आए जुबांए।
सब्द न अब आगे चले, आवे नहीं कजाए।।८९।।

श्री महामति जी कहते हैं कि मेरे द्वारा ये कथन तभी तक व्यक्त किये जा रहे हैं, जब तक जिह्व पर शब्द आ रहे हैं। अब मेरे शब्दों की गति रूक गयी है,इसलिये न्याय का इससे अधिक वर्णन कर पाना सम्भव नहीं है।

आखिर हुई इन जिमी, इन जिमी आया कागद।
जिन कोई हिसबो खेल में, याको ना लगे सब्द।।९०।।

इस भारत वर्ष की धरती पर कियामत उजागर हुई और यहां ही इल्म-ए-लदुन्नी(तारतम ज्ञान) का प्रकटन हुआ। हे साथ जी! इस कुल्जुम स्वरूप की महिमा के लिये इस संसार में कोई शब्द नहीं है। यहां के शब्दों से उसका आंकलन न कीजिए।

इन जिमी में महंमद, होए आया कासद।
जिन कोई हिसबो खेल में, याको न लगे सब्द।।९१।।

इस संसार में परब्रह्म के संदेश वाहक बनकर मुहम्मद स.अ.व. आये। उनकी महिमा शब्दातीत है। यहां के शब्दों से उनकी महिमा की उपमा न दीजिए

ल्याए ल्याए रूहों पिलावहीं, इस्क प्याले मद।
जिन कोई हिसबो खेल में, याको न लगे सब्द।।९२।।

श्री प्राणनाथ जी परमधाम की आत्माओं को प्रेम एवं आनन्द का रसपान करा रहे हैं। इस नश्वर जगत के शब्दों से उनकी असीम महिमा का आंकलन करने की भूल न कीजिए।

करी कजा चौदे तबकों, उड़ाए दई सब हद।
जिन कोई हिसबो खेल में, याको ना लगे सब्द।।६३।।

श्री प्राणनाथ जी ने १४ लोकों के इस ब्रह्माण्ड का न्याय करके सभी प्राणियों को जन्म मरण के चक्र से छुड़ाया और उन्हें अखण्ड मुक्ति दी। इसलिए श्री प्राणनाथ जी की महिमा का मूल्यांकन इस संसार के शब्दों से न कीजिए। वे शब्दातीत हैं।

नूर अकल असराफील, ले पोहोंच्या पार बेहद।
जिन कोई हिसबो खेल में, याको न लगे सब्द।।६४।।

अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि ने परब्रह्म की पहचान कराकर संसार के सभी प्राणियों के लिए बेहद की अखण्ड मुक्ति का द्वार खोल दिया। इसलिए किसी को भी संसार के शब्दों से अस्राफील की शक्ति का मूल्यांकन नहीं करना चाहिए।

नूर इन आखिर का, और रोसन काजी सुभान।
क्योंकर इन जुबां कहूं, रसूल नूर फुरमान।।६५।।

कियामत के समय अवतरित होने वाले तारतम ज्ञान, न्यायधीश के रूप में प्रकट होने वाले परब्रह्म के साक्षात् स्वरूप श्री प्राणनाथ जी, कुर्आन तथा मुहम्मद स.अ.व. की महिमा का मैं इस जिह्वा से वर्णन कैसे करूँ?

काजी नूर सोहागनियों, इस्क प्याला ले।
क्यों बरनों मैं इन जुबां, ए जो भर भर सबको दे।।६६।।

न्यायाधीश के रूप में प्रकट होने वाले प्राणेश्वर अक्षरातीत परमधाम की सभी ब्रह्मात्माओं के हृदय में निजधाम के प्रेम का प्याला जिस प्रकार भर-भर कर उड़ेल रहे है, उसका वर्णन मैं इस जिह्वा से कैसे करूँ?

नूर इस्क इन मद का, ए जो चढ़सी सबन।
ताए लेसी असलू नूर में, क्यों करे जुबां बरनन।।६७।।

सभी ब्रह्मात्माओं को तारतम ज्ञान तथा प्रियतम परब्रह्म के जिस अनुपम आनन्द की अनुभूति हो रही है, खेल के समाप्त होने के पश्चात् उनका मूल तन भी उस असीम आनन्द का अनुभव करेगा। इस लीला का वर्णन इस जिह्वा से हो पाना सम्भव नहीं है।

अर्स रूहें मोमिन, ए सब रूहें सोहागिन।
क्यों बरनू मैं इस्क इन का, ए जो रूह अल्ला के तन।।९८।।

परमधाम की सभी ब्रह्मात्माएं सच्चिदानन्द परब्रह्म की प्राणेश्वरी हैं। श्यामा जी का तन कही जाने वाली इन आत्माओं के प्रेम का वर्णन मैं कैसे कर सकता हूँ?

ए झूठी जिमी जो ख्वाब की, खाकी बुत सब रद।
ताए भी मद ऐसा चढ़्या, जो लगे न काहू को सब्द।।९९।।

यह सारा संसार स्वप्नमयी(नश्वर) है। पंचभौतिक तन को धारण करने वाले ये सभी जीव महाप्रलय में लय हो जाने वाले हैं। तारतम ज्ञान के दिव्य प्रकाश में इन जीवों को भी परब्रह्म के प्रेम का ऐसा नशा चढ़ा हुआ है कि उसका वर्णन शब्दों में किसी के द्वारा भी हो पाना सम्भव नहीं है।

लिखे हरफ सारे कहे, ए जो लिखे हरफ नांहें।
अब सो ए करूं मैं जाहेर, जो रसूल के दिल मांहें।।१००।।

अब तक मैंने कुर्आन में लिखे हुए शरीयत,तरीकत तथा हकीकत के कुछ शब्दों का स्पष्टीकरण किया है। अब मैं मारिफत के उन शब्दों (तथ्यों) का वर्णन करने जा रहा हूँ, जो कुर्आन में तो नहीं लिखे हैं, किन्तु मुहम्मद स.अ.व. के हृदय घर अंकित हैं।

ए जो रसूलें कानों सुने, पर लिखे नहीं फुरमान।
सो गुझ मोमिनों को देऊंगी, अर्स अजीम के निसान।।१०१।।

मुहम्मद साहब ने जिन शब्दों को प्रियतम परब्रह्म के मुख से सुना किन्तु उसे कुर्आन में लिखा नहीं, उन गुह्य बातों को मैं सुन्दरसाथ को बताऊँगा। उन तथ्यों से परमधाम की पहचान होगी।

क्यों वतन क्यों खसम, कौन ठौर क्यों नूर।
ए सेहेरग से देखे नजीक, जो मोमिन सदा हजूर।।१०२।।

परमधाम कैसा है? प्रियतम की शोभा कैसी है। अक्षरब्रह्म कहां रहते हैं और उनकी शोभा कैसी है? जो ब्रह्मात्मायें हर पल अपने प्राणेश्वर की सानिध्यता में रहती हैं, वे अपने धाम धनी को अपने प्राणनली शाहरग से भी अधिक निकटस्थ रूप में देखती है।

दोऊ अर्स बका जाहेर किए, जबरूत नूर जलाल।
हादी रूहें लाहूत में, हक सूरत नूर जमाल।।१०३।।

मैंने दोनों अखण्ड धामों परमधाम तथा अक्षरधाम को प्रकाश में ला दिया है (उनका ज्ञान प्रकट कर दिया है)। अक्षरधाम में अक्षर ब्रह्म रहते हैं किन्तु उनकी लीला बेहद(योगमाया) मण्डल में होती है। परमधाम में अक्षरातीत परब्रह्म श्री राज जी, श्यामा जी तथा ब्रह्मात्माओं का निवास है।

अब कहूं हुकम की, जिन से सब उतपत।
खेल फरिस्ते हुकमें हुए, हुकमें हुई कयामत।।१०४।।

अब मैं परब्रह्म के हुक्म(आदेश) का वर्णन कर रहा हूँ, जिससे सब कुछ उत्पन्न होता है। माया का यह खेल परब्रह्म के हुक्म से हुआ है। इसी प्रकार फरिश्तों की उत्पति तथा अखण्ड मुक्ति देने वाले तारतम ज्ञान का अवतरण भी परब्रह्म के आदेश से ही हुआ है।

हुकमें झूठे सांच कर, ताए सुख दिए नेहेचल।
अब हुकम कजा में न आवहीं, पर तो भी कहूं नेक बल।।१०५।।

परब्रह्म के आदेश से ही लय हो जाने वाले जीवों को भी शाश्वत् मुक्ति मिली तथा उन्हें बेहद मण्डल का अखण्ड सुख मिला। यद्यपि परब्रह्म के आदेश स्वरूप को उनके न्याय की परिधि में नहीं लिया जा सकता फिर भी मैं उसके बल का थोड़ा सा वर्णन करता हूँ।

।।प्रकरण।।३७।।चौपाई।।१४००।।

सनंध– हुकम की

सच्चिदानन्द परब्रह्म के हृदय में उठने वाले भाव या इच्छा को ही इस संसार में हुक्म कहते हैं। उसका विस्तृत विवरण इस प्रकरण में दिया गया है।

हुकमें परदा उड़ाइया, कर देऊं सब पेहेचान।
तुमसों गोसे बैठके, देऊंगी सब निसान।।१।।

परब्रह्म के आदेश ने अज्ञानता के आवरण को समाप्त कर दिया है। अब मैं तारतम ज्ञान के प्रकाश में सम्पूर्ण यथार्थ सत्य को प्रकट कर रहा हूँ। हे साथ जी! मैं आप

सबको एकान्त स्थान में बैठकर परमधाम का सम्पूर्ण ज्ञान (शोभा एवं लीला सहित) दूंगा।

भावार्थ-उपरोक्त चौपाई में एकान्त का संकेत श्री ५ पद्मावती पुरी धाम पन्ना के लिये है जहां मारिफत का सम्पूर्ण ज्ञान खिल्वत, परिक्रमा, सागर तथा श्रृंगार ग्रन्थ के रूप में अवतरित हुआ।

हुकमें बात वतन की, जो है गुझ खसम।
गोसे तुमको कहूंगी, जो हुआ मुझे हुकम।।२।।

प्रियतम अक्षरातीत का मुझे यह आदेश हुआ है कि मैं एकान्त स्थान में (पन्ना जी) में चलकर आपको परमधाम की सम्पूर्ण शोभा, लीला तथा प्राणेश्वर के हृदय में अब तक की छिपी हुई गुह्यतम् बातों को प्रकट करूं।

निसान बका हक अर्स के, सो सब देऊंगी तुम।
पर पेहेले नेक ए कहूं, जो तुम वास्ते हुआ हुकम।।३।।

उस एकान्त स्थान में बैठकर मैं प्रियतम तथा अखण्ड परमधाम की सम्पूर्ण शोभा और लीला का वर्णन करूंगा, किन्तु उसके पहले मैं आपको वह बात बताने जा रहा हूँ, जिसे कहने के लिए धाम धनी का आदेश हुआ है

कहूं हुकम हक के, जो बैठे कदमों मोमिन।
सो हमेसा अर्स में, ताए मेहेर बड़ी बातन।।४।।

परमधाम में अनादि काल से रहने वाले ब्रह्ममुनि जो मूलमिलावे में प्रियतम् परब्रह्म के चरणों में बैठे हुए हैं। उन पर श्री राज जी की बड़ी ही गुह्य (आन्तरिक, बातिन) मेहेर है। यह बात मैं अपने सर्वस्व श्री राज जी के आदेश से ही कह रहा हूँ।

खसमें हमारे दिल पर, ऐसे किया हुकम।
तो यों दिल में उपज्या, मांगें खेल खसम।।५।।

हमारे आराध्य श्री राज जी ने अपने आदेश से हमारे हृदय में ऐसी लीला की कि हमारे मन में यह इच्छा हो गयी कि हम प्रियतम से माया का खेल मांगे।

भावार्थ- अपनी सम्पूर्ण पहचान (मारिफत का ज्ञान) देकर प्रेम के आनन्द में नवीन वृद्धि के लिये श्री राज जी ने जो भाव(संकल्प,इच्छा) लिया, वह ही हुक्म(आदेश) के रूप में परिणत हो गया जिसके फलस्वरूप ब्रह्मात्माओं के हृदय में माया का खेल देखने की इच्छा हुई और अक्षर ब्रह्म के अंदर परमधाम की लीला देखने की इच्छा हुई।

तब हम मोमिन मिल के, खेल मांग्या हादी हक पे।
तब हुकमें पेहेले पैदा किया, हमारी नजर हुई खेल में।।६।।

तब हम सभी ब्रह्मात्माओं ने मिलकर श्री राज श्यामा जी से माया का खेल देखने की इच्छा की। इसके पश्चात् श्री राज जी के आदेश से इस नश्वर जगत् की रचना हुई जिसमें हमारी दृष्टि आ गयी।

तब सरूप हुकम के, खेल किया मिने पल।
हाथ फुरमान ले आइया, रसूल हमारा चल।।७।।

तब परब्रह्म के आदेश स्वरूप नें एक पल में ही इस ब्रह्माण्ड की रचना कर दी। इस ब्रह्माण्ड में हमारे लिये मुहम्मद साहब संदेशवाहक के रूप में कुर्आन लेकर आये।

भावार्थ-उपरोक्त चौपाईयों में कहा गया है कि परब्रह्म के हुक्म स्वरूप ने ही इस खेल की रचना की है। वह स्वरूप ही मुहम्मद स.अ.व के रूप में आया। उसी स्वरूप ने आत्माओं के हृदय में खेल देखने की इच्छा की तथा उसी के आदेश से श्री महामति जी कह रहे हैं। उपरोक्त कथन का सार तत्व यही है कि हुक्म कोई व्यक्ति विशेष नहीं है, अपितु श्री राज जी के हृदय का भाव(इच्छा) है, जो सब कुछ करता है।

हम भी देखें खेल को, हुकमें मोमिन मिल।
ढूंढ़ें अपने खसम को, पेड़ हुकमें फिराई कल।।८।।

मूल स्वरूप श्री राज जी के आदेश से ही हम सभी सुन्दरसाथ मिलकर इस खेल को देख रहें है। हुक्म ने हमारी दृष्टि को पहले से ही प्रियतम से हटाकर माया में कर दिया है जिसके कारण हम इस स्वाप्निक संसार में उन्हे खोज रहे हैं।

ए खेल सब हुकमें हुआ, सब खेलें हुकम मांहें।
हुकमें सब होसी फना, हुकम बिना कछू नांहें।।९।।

श्री राज जी के आदेश से ही माया का खेल बना है। संसार के सभी प्राणी हुक्म से ही अपना कार्य कर रहे हैं। परब्रह्म के आदेश से ही यह ब्रह्माण्ड प्रलय को प्राप्त होगा। इससे यह स्पष्ट है कि हुक्म के बिना कुछ भी नहीं होता है।

एक हुकमें बुजरक, दूजे न खाक समान।
बेसुध कर सब हुकमें, खेलावत है जहान।।१०।।

हुक्म से ही कोई व्यक्ति महापुरूष कहा जाता है तो दूसरा धूल के बराबर भी नहीं बन पाता। हुक्म ने ही संसार के सभी प्राणियों को बेसुध(भ्रमित) कर संसार-चक्र में उलझाये रखा है।

शंका- इस चौपाई के कथन से ऐसा प्रतीत होता है कि यह आदि नारायण का हुक्म है जबकि इसके पूर्व की चौपाईयों में अक्षरातीत के हुक्म का प्रसंग था। सृष्टि रचना का प्रसंग अक्षर ब्रह्म के हुक्म से जुडा हुआ है। क्या हुक्म भी अलग-अलग है?

समाधान- निजानन्द दर्शन में तीन पुरूषों की मान्यता है- क्षर,अक्षर और अक्षरातीत। यह अवश्य है कि जब तक पूर्ण ज्ञान नहीं होता तब तक जीव सृष्टि क्षर पुरूष (आदि नारायण) को ही सच्चिदानन्द परब्रह्म मानती है, जबकि यथार्थता यह है कि किसी भी आर्ष ग्रन्थ में नारायण को परब्रह्म नहीं कहा गया है। वेद उपनिषद सभी का एक स्वर से कथन है कि 'एकमेवाद्वितीयम्' अर्थात् परब्रह्म मात्र एक ही है। उसके समान कोई भी दूसरा नहीं है। ठीक यही स्थिति हुक्म के सम्बन्ध में भी है। अक्षर ब्रह्म अक्षरातीत के ही सत् अंग है। इसलिए अक्षर ब्रह्म के हुक्म को अक्षरातीत का ही हुक्म मानना पड़ेगा। इसी प्रकार आदि नारायण भी अक्षरब्रह्म के मन के स्वाप्निक स्वरूप हैं। ऐसी स्थिति में आदि नारायण के भी आदेश को अक्षर-अक्षरातीत का ही आदेश मानना पड़ेगा। इतना अवश्य है कि आदि नारायण का आदेश केवल क्षर जगत् में जीवों के उपर चलेगा किन्तु अक्षर ब्रह्म का आदेश हद-बेहद दोनों में ही चलेगा। ''अर्स से आवे हुकम, तिन हुकमे चले कई हुकम'' का कथन इस सन्दर्भ में बहुत ही उचित होगा।

हुकमें जड़ चेतन करे, करे चेतन को जड़।
हुकमें सेती हारिए, हुकमें मारे पकड़।।११।।

हुक्म से ही जड़ चेतन हो जाता है अर्थात् गर्भ में चेतनता आती है। इसी प्रकार चेतन जड़ बन जाता है,अर्थात मृत्यु की अवस्था प्राप्त हो जाती है। हुक्म से ही हार होती है और हुक्म से मृत्यु आकर किसी को पकड़ लेती है।

एक चलाए पांउसों, एक उड़ाए पर।
पेटें हुकम चलावहीं, एक खड़े रखे जड़ कर।।१२।।

इस नश्वर जगत् में कोई जीव (मनुष्य) पैरों से चलता है तो कोई (पक्षी) पंखों से उड़ता है। सर्प आदि पेट के बल से सरक कर चलते हैं तो वृक्षादि स्थावर जीव जड़ की भांति एक ही स्थान पर खड़े रहते हैं। इन सबमें हुक्म की ही लीला कार्य कर रही है।

कई दीन फिरके मजहब, खेल फरिस्ते दम।
ए खेल किया हुकमें देखने, सब पर एक हुकम।।१३।।

माया का यह खेल ब्रह्मसृष्टियों को देखने के लिये बनाया गया है जिसमें धर्म के नाम पर अनेकों मत पन्थ प्रचलित हैं। इस संसार में देवताओं (फरिश्तों) तथा अन्य जीवों का अस्तित्व हुक्म से ही है। परब्रह्म का आदेश सब पर सर्वत्र है।

भेख भाखा जातें जुदियां, ना तो सोई दम सोई देह।
खैचां– खैंच कर हुकमें, खेल बनाया एह।।१४।।

यद्यपि इस संसार में हाथ,पैर,नेत्र,आदि की दृष्टि से सबके शरीर एक समान हैं तथा सबके अन्दर एक ही आदि नारायण का जीव है, फिर भी अलग-अलग वेश-भूषा है,भाषायें हैं तथा जातियां है। उनमे आपस में विरोध भी है। इस प्रकार परब्रह्म के आदेश से विचित्रता से भरा यह खेल बनाया गया है।

एकों को हुकम हुआ, तिन लई राह मुस्लिम।
पीछे जुदी जुदी जिनसों, ए सब खेलें खेल हुकम।।१५।।

कुछ विशिष्ट व्यक्तित्व वाले लोगों को मानवता का पथ प्रदर्शन करने के लिये परब्रह्म का आदेश होता है। वे विश्वास के साथ सत्य मार्ग का अनुसरण करते हैं, किन्तु कालान्तर में अलग-अलग मत-पंथों में समाज बँट जाता है। उनका यह सारा नाटक जैसा खेल हुक्म से ही चलता है।

हुकमें करहीं बंदगी, हुकमें इस्क ले।
हुकमें चोरी कर ल्यावहीं, हुकमें जाए सिर दे।।१६।।

हुक्म से ही लोग भक्ति के मार्ग पर चलते हैं। हुक्म से ही परब्रह्म के प्रति प्रेम पैदा होता है। हुक्म से ही चोर दूसरों के सामान की चोरी करता है और परब्रह्म के आदेश से ही कोई अपना शिर (जीवन) किसी को समर्पित करता है।

शंका- जब परब्रह्म निर्विकार, लौकिक इच्छाओं से रहित, समदर्शी और न्यायकारी है तो उसका आदेश चोरी के लिए कैसे हो सकता है? जब कोई धन देकर किसी अपराधी से किसी निर्दोश व्यक्ति की हत्या कराता है तो वास्तविक अपराधी वही माना जाता है जो हत्या कराने के लिए धन देता है। ऐसी स्थिति में यह कैसे सम्भव है कि परमात्मा ही किसी को चोरी आदि बूरे कर्मो के लिए आदेश दे सकता है?

समाधान- चेतन अपने गुण एवं स्वभाव के अनुसार ही कार्य करता है। जब परब्रह्म, अक्षर ब्रह्म या स्वयं आदि नारायण भी काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि विकारों से

रहित है तो वे चोरी का आदेश कैसे दे सकते हैं? वस्तुतः इस चौपाई में प्रकृति के उस शाश्वत् सिद्धान्त की ओर संकेत किया गया है जिसमें रज और तम से ग्रसित होकर जीव चोरी आदि पाप कर्मो में प्रवृत्त होता है।

बिना रजोगुण के न तो कोई क्रिया हो सकती है और न बिना तमोगुण के सृष्टि की स्थिति हो सकती है, किन्तु तामसिक आहार, अधिक निद्रा, अज्ञान तथा कुत्सित कर्मों के फलस्वरूप मनुष्य में रज एवं तम की अधिकता बढ़ती जाती है और वह बूरे कार्य करने में लग जाता है। ब्रह्म का इससे कुछ भी संबन्ध नहीं है। वह जीव के कर्म के प्रति कुटस्थ है किन्तु जीव अपने अच्छे या बूरे कर्म का फल भोगने के लिये परतन्त्र है।

यदि ब्रह्म के आदेश से ही बूरे कर्म होते है तो जीवों को नरक का दण्ड क्यों दिया जाता है? सृष्टि के शाश्वत् नियम परब्रह्म के द्वारा ही निर्देशित किये गये हैं। इसलिये इस चौपाई में नियमों का निर्देशक होने के कारण हुक्म से चोरी का कथन किया गया है। इतना अवश्य है कि यदि किसी ब्रह्मात्मा में चोरी के विषय में जानने की जिज्ञासा होगी तो हंसी की लीला के लिये उसे चोरी का अनुभव कराया जा सकता है।

चले रहे सब हुकमें, बैठे सोवे हुकम।
बिना हुकम रूह सबके, मुख ना निकसे दम।।१७।।

इस सृष्टि में सभी प्राणियों का चलना,फिरना,बैठना और सोना आदि भी परब्रह्म के हुक्म से ही है। बिना परब्रह्म के आदेश के तो किसी जीव के मुख से एक शब्द भी नहीं निकल सकता है।

भावार्थ-प्रकृति में सभी कार्य किसी शाश्वत सिद्धान्त या नियम के अनुकूल होते हैं। उनमें व्यवधान से सृष्टि का चक्र विकृत हो जाता है। परब्रह्म शाश्वत सत्य और नियमों के उद्घोषक है, इसलिये उन सिद्धान्तों तथा नियमों की छत्रछाया में जो कुछ भी हो रहा है, उसे परब्रह्म के आदेश से ही होने वाला कहा जाता है।

करम काल सब हुकमें, बांधे खोले हुकम।
भिस्त दोजख हुकमें, हुकमें देवे कदम।।१८।।

परब्रह्म के आदेश से ही मनुष्य कर्म करता है। सृष्टि के नियमों के अनुकूल हुक्म से ही उसे काल की सत्ता के अधीन रहना पड़ता है। परब्रह्म का आदेश ही उसे माया के

बंधन में बांधता है तथा खोलता भी है। बहिश्त का सुख या दोजक का कष्ट भी हुक्म से होता है। परब्रह्म के चरण कमलों की प्राप्ति भी उनके आदेश से ही होती है।

दाना दिवाना हुकमें, हुकमें दोस निरदोस।
दूर नजीक करे हुकमें, हुकमें अपना जोस।।१६।।

हुक्म से बंधा हुआ कोई मनुष्य बुद्धिमान बन जाता है तो कोई किसी के प्रेम में दीवाना(बेसुध) हो जाता है। किसी अपराध में फंसकर वह दोषी कहलाता है तो कभी निर्दोष भी सिद्ध हो जाता है। हुक्म से ही कोई परब्रह्म के चरणों से दूर रहता है तो कोई हुक्म का जोश(परब्रह्म की कृपा) प्राप्त कर परब्रह्म की सानिध्यता(निकटता) को प्राप्त कर लेता है।

हुकमें जोग जो लेवहीं, हुकमें देवे भोग।
हुकमें रोग जा आवहीं, हुकमें देवे सोग।।२०।।

परब्रह्म के आदेश रूपी कृपा की छत्रछाया में कोई मनुष्य योग साधना में लग जाता है। अज्ञानता का शिकार हो जाने वाला व्यक्ति परब्रह्म के आदेश रूप नियमों में बंधकर विषय भोगों में फंस जाता है, जिसमें वह रोगी हो जाता है और दुख भोगने के लिये विवश हो जाता है।

लेवे देवे सब हुकमें, नेकी बदी हुकम।
मरे मारे सब हुकमें, या चीजें या दम।।२१।।

परब्रह्म के आदेंश के अन्तर्गत् निर्धारित किये गये शाश्वत नियमों में बंधा हुआ मानव कभी किसी से कुछ लेता है तो कभी किसी को कुछ देता है। कभी वह अच्छे कार्य करता है तो कभी वह बूरे कार्य भी करता है। कभी वह मरता है तो कभी दूसरे किसी प्राणी को मारता भी है। इस प्रकार संसार की सभी वस्तुओं तथा जीवों का अस्तित्व हुक्म के ऊपर ही निर्भर है।

दुस्मन हुकमें सज्जन, सज्जन हुकमें वैर।
खूंनी मेहेर सीधा उलटा, हुकमें मीठा जेहेर।।२२।।

परब्रह्म के आदेश से शत्रु भी सज्जन बन जाते हैं तथा सज्जन भी वैरी हो जाते हैं। हत्यारा व्यक्ति कृपा करने वाला (दयालु) बन जाता है तथा सीधा काम भी उल्टा हो जाता है। इसी प्रकार आदेश से मीठी वस्तु भी विषैली हो जाती है।

जिमी हद न छोड़हीं, ना हद छोड़े जल।
रूत रंग सब हुकमें, होवे चल विचल।।२३ ।।

यह परब्रह्म के आदेश की ही शक्ति है कि धरती अपनी सीमा का उल्लंघन नहीं करती तथा सागर आदि का जल भी अपनी मर्यादा का उल्लंघन नहीं करता अन्यथा सृष्टि चक्र खतरे में पड़ सकता है। अलग-अलग ऋतुओं तथा वनस्पतियों आदि में रंगों का परिवर्तन सब हुक्म से ही होता है।

वाओ बादल बीज गाजहीं, जिमी जल न समाए।
पल में हुकम यों करे, पल में देवे उड़ाए।।२४।।

हुक्म की शक्ति से पल भर में तेज हवा बहने लगती है,बादल उमड़ने लगते हैं। बिजली गरजने लगती है तथा इतनी तेज वर्षा होती है कि जल पृथ्वी में समा नहीं पाता अर्थात् चारों ओर जल ही जल दिखायी पड़ता है। दूसरे ही पल सब कुछ इस प्रकार अदृश्य हो जाता है कि जैसे कुछ हुआ ही न हो।

जल को थल उलटावहीं, थल को उलटावे जल।
कायर सूरे खाली भरे, सब में हुकम बल।।२५।।

परब्रह्म के आदेश में ऐसी शक्ति है कि वह जल को स्थल में तथा स्थल को जल में परिवर्तित कर देता है। कायर व्यक्ति शूरवीर बन जाता है तथा खाली (निर्जन) स्थान प्राणियों से भरा पूरा दिखने लगता है।

पात ना रेहेवे ब न में, हुकमें फल फूल बास।
हुकमें उजाला अंधेर , हुकमें अंधेर उजास।।२६।।

हुक्म से ही कभी ऐसा भी होता है कि वन में एक पत्ता भी नहीं रहता तो कभी वही वन फलों एवं फूलों की सुगन्धि से भरा हुआ दिखायी देता है। परब्रह्म के आदेश से प्रकाश के स्थान पर अंधेरा दिखने लगता है तथा अंधेरे के स्थान पर प्रकाश दिखायी देने लगता है।

ताता सीरा फिरे हुकमें, ससि सूर नखत्र।
इन जुबां बल हुकम के, केते कहूं विचित्र।।२७।।

परब्रह्म के आदेश से ही ग्रीष्म तथा शरद ऋतुओं का परिवर्तन होता है और आकाश में सूर्य, चन्द्रमा और नक्षत्र (तारागण) भ्रमण करते है। हुक्म की शक्ति इतनी

विचित्र है कि मैं इस जिह्वा से उसका कितना वर्णन करूँ।

सब पर हुकम हक का, कहे पुकार रसूल।
जल थल चौदे तबकों, कोई जरा ना हुकमें भूल।।२८।।

मुहम्मद साहब ने पुकार-पुकार कर कहा है कि सम्पूर्ण सृष्टि में परब्रह्म का ही हुक्म है। चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में चाहे जल हो या स्थल, कहीं भी कोई भी रंच मात्र भी परब्रह्म के आदेश का उल्लंघन नहीं कर सकता।

कई कोट इंड ऐसे पल में, करके पैदा उड़ाए।
बल जरा इन हुकम का, इन जुबां कह्यो न जाए।।२९।।

अक्षर ब्रह्म एक पल में ही इस ब्रह्माण्ड जैसे करोड़ों ब्रह्माण्डों को उत्पन्न कर लय कर देते हैं। उनके हुक्म की इस अपार शक्ति का वर्णन इस जिह्वा से नहीं हो सकता है।

सरूप रसूल हुकम, आगे खड़ा खसम।
हुकमें देखाया रूहन को, बैठे देखें तले कदम।।३०।।

परब्रह्म के हुक्म से ही मुहम्मद स.अ.व मेयराज में उनके समक्ष उस मूल मिलावे में पहुचें जहाँ ब्रह्मसृष्टियां अपने प्राणेश्वर के चरणों में बैठी हुई हैं और उनके हुक्म से माया का खेल देख रही हैं।

इन हुकम की इसारते, कई फरिस्ते उपजत।
कई समावें सुन्य में, कई डारें ले गफलत।।३१।।

परब्रह्म के आदेश मात्र से असंख्यों देवी-देवता (फरिश्ते) उत्पन्न होते हैं, जिनमें कुछ तो महाशून्य में लीन हो जाते है, और कुछ भ्रमवश संसार चक्र में पड़े रहते हैं।

जिन कहो अजाजील को, इनने फेरया हुकम।
इन हुकम की इसारतें, हादी वास्ते करी खसम।।३२।।

ऐसा नही कहना चाहिए कि अजाजील ने परब्रह्म के आदेश का उल्लंघन किया। श्यामा जी तथा ब्रह्मात्माओं को माया का खेल दिखाने के लिये श्री राज जी के आदेश के संकेत मात्र से ही उसने ऐसा किया।

अजाजील भूल्या नहीं, पर हुकमें भुलाया ताए।
ओ तो सिर ले हुकम, खड़ा है एक पाए।।३३।।

अजाजील आदम के अंदर बैठे हुए स्वरूप(परब्रह्म की आत्मा) को भूला नहीं था

किन्तु परब्रह्म के आदेश से वह भ्रमित हो गया। वह तो निरन्तर ही परब्रह्म के आदेश को शिरोधार्य किये हुए हैं।

भावार्थ- एक पांव भर खड़े होना मुहाविरा है जिसका अर्थ होता है किसी कार्य में निरन्तर तल्लीन रहना।

तो पीछा फेरे हुकम, जो कोई दूसरा होए।
हुकम सबों समझावहीं, हुकमें न समझे कोए।।३४।।

अजाजील तो परब्रह्म के आदेश का उल्लंघन तभी कर सकता था जब वह अक्षर का फरिश्ता नहीं (कोई पराया व्यक्ति) होता। परब्रह्म के हुक्म से ही सबको सुध होती है और हुक्म से कोई भी भ्रम का शिकार बन जाता है।

भावार्थ- अज्ञानी (जीव सृष्टि का) व्यक्ति ही परब्रह्म के आदेश का उल्लंघन कर सकता है, कोई फरिश्ता नहीं। चौपाई के द्वितीय चरण में कथित 'दूसरा' शब्द का यही आशय है।

नूरी फरिस्ता हुकमें, ले डास्या उलटाए।
ए मोमिनों खातिर हुकम, कई विध खेल बनाए।।३५।।

परब्रह्म के आदेश ने नूरी फरिश्ते अजाजील की बुद्धि को भी उल्टा कर दिया जिससे वह भ्रमित हो गया। परब्रह्म के हुक्म ने ब्रह्मसृष्टियों के लिये ही अनेक प्रकार की विविधताओं से परिपूर्ण इस सृष्टि की रचना की है।

पाँउ ना उठे हुकम बिना, मुख ना निकसे दम।
दिल चितवन भी ना करे, फरिस्ता बिना हुकम।।३६।।

परब्रह्म के आदेश के बिना तो किसी का पैर भी नहीं उठ सकता है और न ही मुख से कुछ बोल सकता है। उसका हृदय परब्रह्म के ध्यान में भी नहीं लग सकता है। बिना हुक्म के फरिश्ता भी कुछ नहीं कर सकता।

तले खड़ा हुकम के, नाम जो नूरी जिन।
माएने जाहेर ना किए, हुकमें एते दिन।।३७।।

अजाजील अक्षर ब्रह्म का नूरी फरिश्ता है। वह परब्रह्म के आदेश की छत्रछाया में खड़ा है। उसने परब्रह्म के आदेश से ही धर्म ग्रन्थों के गुह्य रहस्यों को प्रकट नहीं होने दिया।

द्रश्टव्य- धर्मग्रन्थों के गुह्य रहस्यों को स्पश्ट करने की शोभा एक मात्र श्री प्राणनाथ जी और ब्रह्ममुनियों को है, इसलीये अजाजील (आदि नारायण) को आदेश देकर ये गुह्य भेद अब तक छिपाये रखे गये।

बुरका डाल अजाजील पर, हुकमें किया रद।
सिजदा कराया आदम पर, जित मेंहेदी मोमिन महंमद।।३८।।

परब्रह्म के हुक्म नें अजाजील के उपर भ्रम का आवरण डाल कर उसे आदम पर सिज्दा नहीं करने दिया किन्तु इस जागनी लीला में उसी हुक्म ने अजाजील से उन मानवीय तनों (श्री मिहिर राज जी एवं ब्रह्मात्माओं के तनों) के ऊपर सिज्दा करवाया जिनमें श्री प्राणनाथ जी (मुहम्मद महदी) तथा आत्मायें विराजमान है।

बेसुध हुकमें करके, खेल कराया छल।
ताए जो सिजदा करावहीं, पर हुकम बस अकल।।३९।।

परब्रह्म के आदेश ने अजाजील को बेसुध करके माया का यह नश्वर संसार बनवाया। किन्तु उसी अजाजील को संसार के जीव सिज्दा कर रहे हैं क्योंकि उनकी बुद्धि हुक्म के वशीभूत है।

फरिस्ता कतरे नूर से, लानत दीनी ताए।
सो मोमिन जाहेर करके, हुकमें सिजदा कराए।।४०।।

अजाजील फरिश्ता अक्षर ब्रह्म के नूर का अंश रूप है फिर भी उसे सिज्दा(प्रणाम) न करने के कारण धिक्कार मिली। अब इस जागनी लीला में हुक्म ने अजाजील को ब्रह्मात्माओं की पहचान करा दी है और उनके उपर सिज्दा कराया है अर्थात् अजाजील ने ब्रह्ममुनियों को प्रणाम किया है।

जिन आदम में महंमद, हुकमें आए मोमिन।
अजाजील अब हुकमें, पकड़ कदम हुआ रोसन।।४१।।

जिन मानवीय तनों में श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में स्वयं परब्रह्म का आवेश आया है तथा ब्रह्मात्मायें आयी हैं, परब्रह्म के आदेश से अजाजील उनके चरणों की छत्रछाया में जाकर शोभायमान हो गया है।

हुकमें आवे लदुन्नी, हुकमें आवे किताब।
सोई खोले हक हुकमें, जिन सिर दिया खिताब।।४२।।

परब्रह्म के आदेश से ही तारतम ज्ञान का अवतरण हुआ है तथा कुर्आन भी उतरा है। किन्तु परब्रह्म के आदेश से जिस स्वरूप (श्री जी साहब जी) को इसके भेद खोलने की शोभा है, एकमात्र वह ही इसे खोल सकता है।

नफा नुकसान सब हुकमें, हुकमें भिस्त दोजख।
झूठा सांच करे हुकमें, हुकम करे सबों हक।।४३।।

परब्रह्म के आदेश से ही संसार में कभी लाभ होता है, तो कभी हानि। किसी को बहिश्त का सुख मिलता है तो किसी को दोजक (नरक) का कष्ट। परब्रह्म के आदेश से ही स्वाप्निक जीव भी बेहद में अखण्ड स्वरूप वाले हो जायेंगे तथा ब्रह्मसृष्टियों के जीव सत्स्वरूप की पहली बहिश्त में परब्रह्म के समान पूजे जायेंगे।

हुकमें मोमिनों वास्ते, कई चीजें करी पैदाए।
अर्स अरवाहें पेहेचान, कई विध हुकम कराए।।४४।।

परब्रह्म के आदेश स्वरूप ने ब्रह्मसृष्टियों के लिये अनेक वस्तुओं की रचना की है। हुक्म अनेक प्रकार से संसार के लोगों को परमधाम की ब्रह्मसृष्टियों की पहचान करा रहा है।

भावार्थ- हुक्म ने इस संसार में हजारों मत-पन्थों, परमात्मा के नाम पर हजारों देवताओं तथा भक्ति के नाम पर शिवलिंग, शालिग्राम तथा मिट्टी आदि की मूर्तियों की रचना की है। इसके अतिरिक्त संसार में रोग, शोक, भय तथा विषय विकारों की प्रबलता है।

हुकमें मुसाफ इसारतें, करें मोमिनों पेहेचान।
खोले बातून मोमिन हुकमें, याद आवे अर्स निसान।।४५।।

परब्रह्म के आदेश से जब कुर्आन में संकेतो में कही हुई गुह्य बातों के रहस्य खुलेंगे तो संसार को यह पहचान होगी कि ब्रह्मात्माओं का अवतरण हो चुका है। जब ब्रह्ममुनि परब्रह्म के आदेश से गुह्य भेदों को खालेंगे तो उन्हें परमधाम की शोभा तथा लीला की याद आयेगी।

ए खेल किया हुकमें, हुकमें आए रसूल।
हुकमें मोमिन आए के, गए खेल में भूल।।४६।।

परब्रह्म के आदेश से ही माया का यह संसार बना है। जिसमें मुहम्मद स.अ.व.

अवतरित हुए। इस संसार में परब्रह्म के हुक्म से ही ब्रह्ममुनि आये और स्वयं को, निजघर को तथा प्राणेश्वर अक्षरातीत को भूल गये।

आप हुकम आया इत, चलाया हुकम।
हुकमें छलतें छोड़ाए के, जाहेर किए खोल इलम।।४७।।

परब्रह्म के हुक्म का स्वरुप (श्री जी के स्वरुप) में इस संसार में आया और अपने आदेश को क्रियान्वित किया। हुक्म ने ही धर्मग्रन्थों के भेद खोलकर ब्रह्मसृष्टियों को माया से छुड़ाया और उन्हें संसार में शोभायमान (जाहिर) किया।

रूहों को खेल देखाइया, विध विध हुम कर।
आप बांध्या हुकम का, होए रसूल आया आखिर।।४८।।

परब्रह्म के हुक्म ने ब्रह्मात्माओं को अनेक प्रकार से माया का खेल दिखाया है। स्वयं परब्रह्म अपने हुक्म से बंधकर हुक्म के स्वरुप में मुहम्मद स.अ.व. के रुप में आयें।

भावार्थ-चौ. ४७,४८,४९ में 'आप' शब्द का प्रयोग है जिसका आशय मूल स्वरुप श्री राज जी से है। परब्रह्म के हृदय की इच्छा ही हुक्म है जिससे बंधकर उन्हें कभी मुहम्मद साहब स.अ.व. के रुप में आना पड़ता है तो कभी सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी (अहमद) के रुप में और कभी श्री प्राणनाथ जी (इमाम महदी) के रुप में। भले ही इन तीनों स्वरुपों में उन्हें अलग-अलग आत्माओं (अक्षर ब्रह्म, श्यामा जी तथा महामति) के साथ अपना आवेश- जोश भेजना पड़े।

बांधे आप हुकम के, काजी हुए इत आए।
कौल किया मोमिनोंसों, सो पाल्या खेल देखाए।।४९।।

सच्चिदानन्द परब्रह्म अपने ही हुक्म से बंधकर सबके न्यायाधीश श्री प्राणनाथ जी के स्वरुप में संसार में आये। प्रेम- संवाद (इश्क-रबद) के समय उन्होंने ब्रह्मात्माओं को जो संसार में आने का वचन दिया था, उसे माया का खेल दिखाकर पूरा किया।

हुकमें सब जुदे जुदे, खेल किए विवेक।
मोमिनों को देखाए के, आखिर किया दीन एक।।५०।।

परब्रह्म के आदेश से ही संसार में बुद्धि के आधार पर अलग-अलग हजारों मत-पन्थों की उत्पति हुई। इन सम्प्रदायों की लीला का अनुभव कराकर हुक्म ने ही तारतम ज्ञान के सूत्र में सबको एक परम सत्य का मार्ग दिखाया।

भावार्थ- संसार के सभी मत-पन्थ बौद्धिक धरातल पर ही खड़े है-आत्मिक अनुभव के आधार पर नहीं। बुद्धि भेद के कारण ही सभी मतों में सैद्धान्तिक भेद भी है। इसी को दर्शाने के लिये इस चौपाई के दूसरे चरण में विवेक शब्द का प्रयोग किया गया है।

अबलों बेसुध हुकमें, खेली सकल जहान।
तिनों सुध हुई हुकमें, यों खुली इसारते फुरमान।।५१।।

अब तक यह सारा संसार परब्रह्म के आदेश से परम सत्य के प्रति बेसुध था। अब हुक्म द्वारा तारतम ज्ञान के प्रकाश में कुर्आन की गुह्य बातों का स्पटीकरण हो गया है जिससे संसार को सर्वोच्च आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति हो गयी है।

अजाजील दम सबन में, लगी लानत दम तिन।
लोक जाने लगी अजाजील को, वह तो हुकमें कही सबन।।५२।।

सभी प्राणियों में आदि नारायण की चेतना का ही प्रतिबिम्ब हैं। इन जीवों को ही धिक्कार मिली हैं। संसार के लोग सोचते हैं कि अजाजील को लानत लगी है। वस्तुतः हुक्म के द्वारा संसार के सभी प्राणियों को लानत लगी है।

पीछे हुकमें जाहेर करी, अबलीस सब दिलों पातसाह।
हुआ सबों का दुस्मन, ना करने देत सिजदाए।।५३।।

बाद में परब्रह्म के हुक्म ने तारतम ज्ञान के द्वारा इस रहस्य का उद्घाटन किया कि मन रूपी इब्लीश सबके हृदय पर स्वामित्व रखता है। वह शत्रु के समान भूमिका निभा रहा है। वह ही किसी को परब्रह्म के प्रति सिज्दा नहीं करने देता।

भावार्थ- उपरोक्त कथानक में एक आध्यात्मिक रहस्य को दर्शाया गया है। जिस प्रकार बहिश्त में भ्रमवश अजाजील आदम के स्वरूप को पहचान नहीं सका, उसी प्रकार इस संसार में अजाजील (आदि नारायण) के अंश रूप कहे जाने वाले जीव भी परब्रह्म को पहचान नहीं पा रहे हैं, क्योंकि उनके मन ने उन्हें भ्रमित कर रखा है। रज और तम के प्रभाव से मन (इब्लीश) स्वयं भ्रमित है और वह जीव को भी भ्रमित होने के लिये विवश कर देता है।

एही फौज दुनी अजाजील की, याही अकलें लगी लानत।
पेहेचान हुई सब हुकमें, पीछे छूटी बखत कयामत।।५४।।

संसार के सभी प्राणी अजाजील की सेना के समान है। रज और तम के प्रभाव से

इनकी बुद्धि और मन पर अज्ञानता छायी हुई है। कियामत के समय जब तारतम ज्ञान का प्रकाश हुआ तो परब्रह्म के आदेश से संसार के जीवों को भी अक्षरातीत की पहचान हो गयी और उनके उपर जो धिक्कार की चादर थी,वह भी हट गयी।

असल आदम रसूल, कह्या सिजदा इन पर।
चीन्ह्या न नबी को लानती, तो दुनी रही सिजदे बिगर।।५५।।

वास्तविक आदम तो मुहम्मद स.अ.व है जिनके ऊपर सिज्दा करने के लिये संसार को आदेश हुआ। उस समय संसार के जीव उनकी पहचान नहीं कर सके, क्योंकि वे इब्लीश के प्रभाव में थे। यही कारण है कि वे मुहम्मद साहब को सिज्दा करने से वंचित हो गये।

भावार्थ- परब्रह्म की वास्तविक पहचान कियामत के समय होनी थी,अतः उस समय परब्रह्म के आदेश से संसार के जीवों के उपर भ्रम का आवरण पड़ा रहा।

हुकमें चिन्हाया रसूल, तब आया सबों आकीन।
किया सबों ने सिजदा, जब हुकमें हुआ एक दीन।।५६।।

परब्रह्म के हुक्म ने जब तारतम ज्ञान के द्वारा संसार को श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में आये हुये अक्षरातीत की पहचान करा दी, तब सबको एक परब्रह्म पर विश्वास हो गया। जब हुक्म के द्वारा सारे संसार में एक सत्य की स्थापना हो गयी तो सभी प्राणियों ने श्री प्राणनाथ जी को सिज्दा किया।

द्रष्टव्य-यह लीला यथार्थ रूप से योगमाया के ब्रह्माण्ड में न्याय के दिन ही घटित होगी। संसार में श्री प्राणनाथ जी पर मात्र वे ही लोग आस्था रखेंगे, जिन तक तारतम ज्ञान का प्रकाश पहुँचेगा।

लानत उतरी अजाजील से, सब कायम हुए तले नूर।
हुई हैयाती सबों हुकमें, उग्या रोसन अर्स बका सूर।।५७।।

जब कियामत के समय 'श्री कुल्जुम स्वरूप' के रूप में अखण्ड परमधाम के ज्ञान का सूर्य उग गया तो परब्रह्म के आदेश से संसार के सभी जीवों को अक्षर ब्रह्म के बेहद मण्डल में अखण्ड मुक्ति मिली। इसके अतिरिक्त अजाजील से भी लानत हट गयी अर्थात् जीव सृष्टि के उपर परब्रह्म को न पहचानने का जो कलंक था, वह भी धूल गया।

हुकमें हम आए इत, ले हुकमें हक इलम।
मैं खासा मोहोल खसम का, कर हुकम केहेलाया तुम।।५८।।

श्री महामति जी कहते हैं कि हे साथ जी! प्रियतम परब्रह्म के आदेश से मैं श्री कुल्जुम स्वरूप लेकर इस संसार में आया हूँ। अपने प्राणेश्वर के आदेश से ही मैं यह बात आपसे कह रहा हूँ कि मैं प्रियतम के निवास का विशेष महल हूँ अर्थात् वे मेरी आत्मा के धाम हृदय में अपने आवेश स्वरूप से प्रत्यक्षतः विराजमान हैं।

जाहेर किया हुकमें, हुकमें किया हक।
हुकमें लीन्ही अंदर, जुबां रही इत थक।।५९।।

परब्रह्म के हुक्म ने ही मुझे परब्रह्म का स्वरूप बना दिया और संसार में उसी स्वरूप में मुझे जाहिर (प्रकट) भी कर दिया। प्रियतम ने मुझे अपने अन्दर ले लिया, अर्थात मेरी आत्मा परब्रह्म से एक स्वरूप (एकाकार) हो गयी। अब कुछ भी कहने में मैं असमर्थ हूँ,क्योंकि मेरी जिह्वा अब थक गयी है।

हुकम न आवे सब्द में, तो भी कह्या नेक सोए।
अब केहेनी जुबां बदले, सो मेंहेदी बिना न होए।।६०।।

परब्रह्म के हुक्म की महिमा का वर्णन शब्दों में नहीं हो सकता, फिर भी मैने थोड़ा सा कहा है। अब हिन्दुस्तानी भाषा में मारिफत का ज्ञान कहा जाना है जिसे मेरे धाम हृदय में विराजमान श्री प्राणनाथ जी के अतिरिक्त अन्य कोई भी नहीं कह सकता है।

अब लेने अर्स अजीम में, बोलसी जुबां इमाम।
सो तो अपने आप को, केहेने हैं कलाम।।६१।।

अब सुन्दरसाथ को परमधाम का ज्ञान देने के लिये स्वयं श्री राज जी (श्रीजी) ही बोलेंगे। अब उन्हें स्वयं ही अपनी बातें कहनी हैं।

भावार्थ- रास से क्यामतनामा तक का सम्पूर्ण कथन श्री राज जी ने ही कहा है। श्री महामति जी के नाम को तो मात्र शोभा दी गयी है। प्र.हि. में उन्होंने स्वयं कहा है कि 'मेरी बुधें लुगा न निकसे, धनी जाहेर करे अखण्ड घर सुख। प्र.हि के इस कथन की भांति ही सनंध ग्रन्थ की उपरोक्त चौपाई का भी भाव समझना चाहिये।

अब बातें अंदर की, पूछसी सब मोमिन।
जाहेर देऊं निसानियां, ज्यों देखो अर्स वतन।।६२।।

अब सब सुन्दरसाथ मुझसे परमधाम की शोभा एवं लीला की बातें पूछेगा। अब मैं सुन्दरसाथ को प्रत्यक्ष रूप में सब कुछ पहचान बताऊँगा जिससे वे अपने मूल घर के विषय में जान सकें (ध्यान द्वारा देख सकें)।

समझो एक इसारतें, ऐसा कर दें हम।
तब फेर इत का पूछना, रहे उमेदां तुम।।६३।।

हे साथ जी! यदि मैं ऐसा कर दूं कि आप मेरे एक संकेत से परमधाम के विषय में जान जायें तो आपके मन में मुझसे पुनः पूछने की चाहत बनी ही रहेगी। अतः मै विस्तृत रूप से बताऊँगा।

भावार्थ- मात्र संकेतों से अति संक्षिप्त रूप में बताने से न तो पूर्ण बोध होता है और न शंकाओं का समाधान होता है, इसलिये श्री महामति जी का कथन है कि आपको अगले प्रकरण में विस्तार पूर्वक बताया जायेगा। कालान्तर में अति विस्तृत रूप में खिल्वत,परिक्रमा,सागर और श्रृंगार ग्रन्थ के द्वारा बताया जायेगा।

जब समझे तब देखिया, याद जो आवे दिल।
बीच खिलवत बातें हकपे, जो मांग्या तुम मिल।।६४।।

जब आपको परमधाम का ज्ञान हो जायेगा तब आपके हृदय में जिस भी पक्ष की शोभा या जिस समय की लीला की याद आये, उसे आप चितवनी (ध्यान) के द्वारा प्रत्यक्ष देख सकते हैं। इस बात को याद रखिये कि आप सभी ने मूल मिलावे में अपने प्राणेश्वर से माया का खेल देखने की इच्छा की थी।

याद आए आंखां खुलें, तब तुमें रहे उमेद।
ज्यों मकसूद सब होवहीं, अब कहूं तिन भेद।।६५।।

जब आपको खेल मांगने की याद आयेगी तब आप जागृत होने के लिये सावचेत हो जायेंगे। इस अवस्था में आपके अन्दर परमधाम चलने की आशा भी बधेंगी। अब मैं आपको वह रहस्य बताने जा रहा हूँ जिससे आपकी परमधाम को देखने, जागृत होने एवं वहां चलने की इच्छा पूर्ण हो सके।

ए नेक रखी रात खैंच के, सो भी वास्ते तुम।
ना तो लेते अंदर, केती बेर है हम।।६६।।

माया का खेल देखने की आपकी इच्छा अभी पूर्ण नहीं हुई है, इसलिये मैंने अभी

खेल (रात्रि) का समय थोड़ा सा बढ़ा दिया है, अन्यथा इसे समाप्त कर आपको परमधाम ले जाने में मुझे कितनी देर लगेगी, कुछ भी नहीं।

भावार्थ- वि. सं. १७३५ के पश्चात् सनद ग्रन्थ का अवतरण होता है। उस समय से श्यामा जी के स्वामित्व के ४० वर्ष प्रारम्भ होते हैं। अभी शाकुण्डल की आत्मा भी जागृत नहीं हुई थी तथा छठें दिन की लीला में भिन्न-भिन्न ब्रह्मात्माओं से जागनी की जो लीला होनी थी, अभी उसका प्रारम्भ भी नहीं हुआ था। ऐसी स्थिति में उस समय खेल समाप्त नहीं हो सकता था। उपरोक्त चौपाई के दूसरे चरण का आशय यह है कि ब्रह्मसृष्टियों को जागनी का सुख देने के साथ ही उनकी खेल देखने की इच्छा को भी पूर्ण करना था।

।।प्रकरण।।३८।।चौपाई।।१४६६।।

सनंध–नूर नूर–तजल्ला की

इस प्रकरण में अक्षर ब्रह्म तथा अक्षरातीत की पहचान दी गयी है।

कह्या जाहेर रसूलें, मैं हरफ सुने हैं कान।
सो आए केहेसी इमाम, मैं लिखे नहीं फुरमान।।१।।

मुहम्मद स. अ. व. ने सबके सामने (प्रत्यक्ष रूप में) कहा है कि मैंने परब्रह्म के मुखारविन्द से मारिफत (परम सत्य) के वचनों को सुना है किन्तु उन्हें कुर्आन में नहीं लिखा गया है। कियामत के समय जब इमाम महदी (श्री प्राणनाथ जी) आयेंगे तो वे ही मारिफत के शब्दों पर प्रकाश डालेंगे।

जो हरफ जुबां चढ़े नहीं, सो क्यों चढ़े कुरान।
और जुबां ले आवसी, इमाम एही पेहेचान।।२।।

मारिफत के जो वचन मुहम्मद साहब के मुख से कहे ही नहीं गये, वे कुर्आन में कैसे लिखे जा सकते थे ?इमाम महदी की यही सबसे बड़ी पहचान होगी कि वे अरबी की अपेक्षा अन्य (हिन्दुस्तानी) भाषा में मारिफत के शब्दों को कहेंगे ।

<u>भावार्थ-</u> कस्सुल अंबिया में कहा गया है कि तीस हजार कलमात दीनी और दुनियावी उनको दीजिए और जो तीस हजार है, उन्हें किसी से भी नहीं कहना । बाकी जो तीस हजार हैं, उसे आप चाहें कहें या न कहें।

बोलें न मेंहेदी एक जुबां, जुबां बोलें कई लाख।
आगे बिन जुबां बोलसी, बिन अंगों बिन भाख।।३।।

इमाम महदी (श्री जी) केवल एक भाषा में नहीं अपितु अनेक (लाखों) भाषाओं में बोलेंगे। भविष्य में वे जिह्वा और शरीर के मुख, कण्ठ आदि अंगों से किसी भाषा में उच्चारित होने वाले शब्द के बिना ही बोलेंगे अर्थात् श्री कुल्जुम स्वरूप के माध्यम से बोलेंगे।

भावार्थ- लाखों भाषाओं में बोलने का कथन अतिश्योक्ति अलंकार की भाषा में है। श्री जी ने श्री कुल्जुम स्वरूप में गुजराती, जाटी, सिन्धी, अरबी, हिन्दी आदि भाषाओं का प्रयोग किया है। ऊर्दू, फारसी, संस्कृत आदि के शब्दों का प्रयोग भी श्री कुल्जुम स्वरूप में हुआ है। जुबां का अर्थ भाषा तथा जिह्वा दोनों होता है। उपरोक्त चौपाई में यमक अलंकार का प्रयोग है जिसमें जुबां के दोनों अर्थों का प्रयोग किया जायेगा।

उपरोक्त चौपाई के तीसरे चरण में बिना जिह्वा के बोलने का प्रसंग है, जिसका अभिप्राय यह है कि श्री कुल्जुम स्वरूप श्री प्राणनाथ जी का ही साक्षात् वागड्मय कलेवर है। उसे श्रद्धा भाव से पढ़ने पर ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे श्री प्राणनाथ जी ही साक्षात् बोल रहे हैं। यही बिना जिह्वा तथा बिना मुख आदि के श्री जी का बोलना है, जिसमें उन्हें किसी शब्द के उच्चारण की भी आवश्यकता नहीं पड़ती है, क्योंकि वह लिखा हुआ उपलब्ध रहता है तथा नेत्रों के माध्यम से हृदय (मन, बुद्धि) तक पहुँच जाता है।

खेल में मेंहेदी तोतला, जुबां कजा ए ठौर।
आगे तो नूर–तजल्ला, तहां जुबां बोल है और।।४।।

इस संसार में शब्द-ज्ञान के द्वारा होने वाले न्याय में श्री प्राणनाथ जी की भाषा जन सामान्य की (तोतली) भाषा होगी। उसमें साहित्यिक व्याकरण की शुष्कता नहीं होगी। इस संसार से परे परमधाम में तो शब्दातीत , अनुभवगम्य आत्मा की भाषा है, जिसे क्षर जगत की भाषाओं से अलग ही समझना चाहिए।

भावार्थ- श्री कुल्जुम स्वरूप में इश्क -रब्द तथा ब्रह्मात्माओं के नाम पढ़ कर हमें ऐसा लगता है जैसे परमधाम में हिन्दुस्तानी भाषा है तथा वहां पर ये नाम भी होगें। हमें इस कथन को हमेशा ही ध्यान में रखना चाहिए कि 'अर्स बका बरनन किया, ले मसाला इतका '।परि.

जिस प्रकार पशु-पक्षी हृदय की भाषा जानते हैं । उनकी भाषा का न तो कोई व्याकरण है और न किसी विश्वविद्यालय में वह पढ़ायी जाती है। जो आत्मा की भाषा जानता है, वह बिना किसी से सीखे संसार की समस्त भाषाओं को जान सकता है। परब्रह्म तथा ब्रह्मात्माओं के मध्य होने वाली वार्ता को शब्दातीत या आत्मिक भाषा कह सकते हैं। इससे अधिक कुछ भी कहना उचित नहीं। श्री कृष्ण जी, श्री देवचन्द्र जी , श्री मिहिरराज जी, मुहम्मद स. आदि शब्द इस नश्वर जगत के हैं। परमधाम को अरबी, फारसी, संस्कृत हिन्दी या गुजराती आदि भाषाओं के बन्धन में नहीं बांधा जा सकता है।

खातिर मोमिन रसूलें, कई निसान लिखे प्यार कर।
सो मैं ठौर ठौर हक बका, कर देऊं सब खबर।।५।।

ब्रह्मसृष्टियों को साक्षी देने के लिये मुहम्मद साहब ने बहुत प्रेम पूर्वक कुर्आन में परमधाम से सम्बन्धित कई संकेत लिखे हैं, उसकी जानकारी मैं आपको देता हूँ ।

भावार्थ- कुर्आन पा. २९ सु. ६९ आ. १७ ''वल्मलकु अला अर्जाइहा व यह्मिलु अर्श रब्बिक फौकहुम् यौमइजिन् समानियन्तुन्'' अर्थात् और फिरिश्ते उसके किनारों पर होंगे। और उस दिन तुम्हारे परवरदिगार के तख्त को आठ फिरिश्ते अपने ऊपर उठाये होंगे।

पा. ३ सु. २ आ. २६५ मसुलल्लुन्जीन युन्फिकून अम्वालहुमुबतिगाअ मर्हातिल्लाहि वाबिलुन् फ आतत् अुकुलहा जिड़फैनि फ अिल्लम् युसीब्हा वाबिलुन् फ तल्लुन वल्लाहु बिमा तड़मलुन बसीरून् यानि तुम से कोई यह चाहता है कि अंगूरों, खजूरों का बाग हो, जिसमें नहरे बह रहीं हो और उसके लिए हर किस्म के मेवे मौजूद हों, ताकि तुम सोचों वा समझों (यहां परमधाम के बाग, कुंज, निकुंज, पाट, घाट यमुना जी, रंगमहल आदि का वर्णन है।)

पा. १९ सु. २७ आ. ६ व इन्नक लतुलक्कल्-कुर्आन मिल्दुन् हकीमन् अलीमिन् (६) अर्थात् और तुमको कुर्आन हकीम व अलीम की तरफ से अता किया।

इमामें मोहे सब दियो, राख्यो न कछुए बीच।
गुन अंग सोभा देय के, आप हुए नेहेचित।।६।।

मेरे प्राणेश्वर अक्षरातीत ने मुझे सम्पूर्ण आध्यात्मिक सम्पदा दे दी । उन्होंने मेरे और अपने बीच में कोई भी अन्तर (भेद) नहीं रखा। मेरे गुणों और अन्तः करण में भी

अपनी अखण्ड शोभा बसा कर मेरे प्रति निश्चिन्त हो गये कि अब मेहमत रूहुल्लाह (महामति) मेरा ही स्वरूप हैं।

अब केहेनी आई असल की, नैन जुबां असल।
बातें करूं असलू, असल की अकल।।७।।

अब मुझे अपने आत्मिक नेत्रों से परमधाम को देखकर आत्मा की जिहवा से परमधाम की बातें कहनी हैं। परमधाम की निजबुद्धि से अब मैं निजघर की गुह्यतम् बातें करूंगा।

अब कहूं अर्स रूहन को, अर्स हक खिलवत बात।
गोसे अपनी रूहोंसों, बैठ करूं अपन्यात।।८।।

अब मैं परमधाम की आत्माओं से श्री राज जी तथा खिल्वत की ही बातें करूंगा। अपनी आत्माओं के साथ एकान्त में आमने-सामने बैठकर मूल घर के अपनत्व से अपनी सारी बातें कहूंगा।

भावार्थ- 'गोसे' का सूक्ष्म अर्थ यह भी है कि मूल आत्मिक विषय को छोड़ कर कोई अन्य बात न की जाय। स्थूल अर्थ में इसका अभिप्राय एकान्त से होता है।

हक बातें तो इत सुनसी, पर हम जो करत गुजरान।
पेहेले कहूं आगे नूर-तजल्ला, जो ले खड़ा हक फुरमान।।९।।

हे साथ जी ! मेरे द्वारा प्रियतम परब्रह्म के सम्बन्ध में कही गयी बातों को तो आप सुन लेंगे, किन्तु हम जिस प्रकार (नींद से ग्रस्त होकर) संसार में रह रहे हैं, उस पर भी हमें आत्म चिन्तन करना होगा कि अब हमें क्या करना है ?सबसे पहले मैं उस अक्षर ब्रह्म के विषय में बता रहा हूँ जो अक्षरातीत के हुक्म (आदेश) के स्वरूप में लीला करते हैं (आगे खड़े रहते हैं)।

भावार्थ - हुकम नूर जमाल का , जो है नूर जलाल। बी०। से यह स्पष्ट है कि अक्षर ब्रह्म श्री राज जी के आदेश स्वरूप हैं। खड़े होना का आन्तरिक अर्थ है- अपनी लीला (कार्य) में संलग्न रहना।

आगे नूर फुरमान के, खड़ा हक नूर का नूर।
जिन से पैदा मलायक, चुआ कतरा जिनों अंकूर।।१०।।

अक्षर ब्रह्म के आदेश स्वरूप में सत्स्वरूप है जो अक्षर ब्रह्म के नूर हैं। इसी सत्स्वरूप के नूर के अंश रूप (बूंद, कतरे) से ईश्वरीय सृष्टि की उत्पति होती है।

भावार्थ- परमधाम में रंगमहल के सामने अक्षर ब्रह्म का अक्षर धाम है किन्तु परमधाम में वे लीला नहीं करते । उनकी लीला बेहद मण्डल में होती है , जिसमें उनके अहम् का स्वरूप सत्स्वरूप उनका प्रतिनिधित्व करता है। यहां अहम् का तात्पर्य सांसारिक अहम् नहीं अपितु अन्तःकरण की सम्पूर्ण शक्तियों का व्यक्तित्व है। सत्स्वरूप की सृष्टि सम्बन्धी सम्पूर्ण लीला को अक्षर ब्रह्म की लीला माना जाता है। इसी से ईश्वरीय सृष्टि की भी उत्पति होती है। जिब्रील, अस्राफील आदि फरिश्ते भी ईश्वरीय सृष्टि के ही अन्तर्गत माने जायेंगे । अक्षरातीत के नूर और हुक्म के स्वरूप अक्षर ब्रह्म हैं तथा अक्षर ब्रह्म के नूर एवं हुक्म के स्वरूप सत्स्वरूप हैं ।

अब नेक कहूं इन नूर की, इन नूर से पैदा नूर।
पेहेले कहूं तिन नूर की, जित रूहें खेली मांहें जहूर।।११।।

अब मैं सत्स्वरूप के नूर का थोड़ा सा वर्णन करता हूँ। सत्स्वरूप के नूर से केवल ब्रह्म, सबलिक ब्रह्म तथा अव्याकृत् का नूर जगमगाता रहता है। सबसे पहले मैं केवल ब्रह्म की आनन्द योगमाया द्वारा निर्मित ' नित्य वृन्दावन ' के नूर की बातें बता रहा हूँ जिसमें परमधाम की आत्माओं ने अपने प्रियतम के साथ महारास की लीला की थी ।

भावार्थ- यद्यपि, अक्षर ब्रह्म के अन्तःकरण के चारों भाग (सत्स्वरूप, केवल, सबलिक तथा अव्याकृत) अक्षर ब्रह्म की तरह ही अनादि हैं। इनकी कभी उत्पत्ति नहीं हुई है। लीला रूप में बुद्धि ग्राह्य होने के लिये ही मात्र ऐसा कहा गया है कि उनके नूर से इनकी उत्पत्ति हुई है। यह कथन वैसे ही है, जैसे यह कहा जाय कि अक्षरातीत के नूर से अक्षर है। अक्षरातीत सच्चिदानन्द स्वरूप हैं तो अक्षर ब्रह्म सत् स्वरूप । अब अक्षर ब्रह्म के हृदय में चिद् और आनन्द का जो अंश है, वही सत्स्वरूप में सच्चिदानन्द के रूप में लीला करता है। इसी सत्स्वरूप का आनन्द अंश केवल ब्रह्म में, चिद् अंश सबलिक ब्रह्म में तथा सत् अंश अव्याकृत में लीला करता है।

अब कहूं रास जहूर की, इन खेल से न्यारा इंड।
सो नूर नजर ऐसा हुआ, नूर सारा ब्रह्मांड।।१२।।

अब मैं अखण्ड महारास का वर्णन कर रहा हूँ जो इस नश्वर जगत से परे योगमाया के ब्रह्माण्ड में सबलिक ब्रह्म के महाकारण में स्थित है। रास का यह सम्पूर्ण

ब्रह्माण्ड अक्षर ब्रह्म की नूरमयी दृष्टि के सम्मुख रहने से नूर ही नूर से जगमगाता रहता है।

इत खेलत स्याम गोपियां, ए जो किया अर्स रूहों विलास।
है ना कोई दूसरा, जो खेले मेहेबूब बिना रास।।१३।।

इस नित्य वृन्दावन में श्रीकृष्ण जी तथा गोपियां के अखण्ड तन अबाध रूप से निरन्तर क्रीड़ा कर रहे हैं। प्रियतम अक्षरातीत ने योगमाया के ब्रह्माण्ड में श्री कृष्ण जी का तन धारण कर आत्माओं के साथ महारास की लीला की थी। प्रियतम के अतिरिक्त भला और कौन है जो ब्रह्मसृष्टियों के साथ महारास की लीला कर सके।

ए हमारी अर्स न्यामतें, याके हमपे सहूर।
कह्या कतरा नूर का, चुआ है अंकूर।।१४।।

व्रज और रास की लीलायें हमारे परमधाम की निधियां है। इनका यथार्थ ज्ञान हमारे ही पास है क्योंकि इन दोनों में हमने ही अपने प्राणेश्वर के साथ लीला की है। अक्षर ब्रह्म के नूर का अंश ही इन लीला स्थानों में शोभायमान हो रहा है तथा परमधाम का मूल सम्बन्ध (अंकूर) इन में प्रतिबिम्बित हुआ है।

<u>भावार्थ-</u> महारास में जो असीम नूरमयी तेज दृष्टिगोचर होता है, वह भी अक्षर ब्रह्म के नूर का बूंद मात्र अंश कहा जाता है। सिन्धी में चुआ का अर्थ कहना होता है, जबकि हिन्दी में चुंआ का अर्थ गिरने या प्रतिबिम्बित (झलक) ओज से है। व्रज और रास की लीलाओं में श्री कृष्ण जी तथा गोपियों के तनों को देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे परब्रह्म अपनी आत्माओं के साथ क्रीड़ा कर रहे हैं। वर्तमान समय में न तो श्री कृष्ण जी के तन में अक्षरातीत का आवेश है और न गोपियों के तनों में परमधाम की सुरतायें हैं। अतः भावना के आधार पर मूल अंकूर की प्रतीति का आभास होने पर इन में मूल अंकूर के प्रतिबिम्बित होने (झलकने अथवा अंश रूप गिरने) की बात कही गयी है।

इत सब्द न पोहोंचे दुनी का, नेक इन की देऊं खबर।
कायम हुआ साइत में, जो आया नूर नजर।।१५।।

इस संसार के नश्वर शब्द उस बेहद मण्डल में नहीं जा सकते जहाँ महारास हुई थी, फिर भी मैं इस लीला की थोड़ी सी पहचान देता हूँ। अक्षर ब्रह्म की दृष्टि में आते ही रास तथा व्रज का ब्रह्माण्ड अखण्ड हो गया।

ए जो बात बका अर्स नूर की, सो केहेनी या जिमी मांहें।
क्यों सुनसी दुनी इन कानों, जो कबहूं ना सुनी क्यांहें।।१६।।

अखण्ड परमधाम के नूर की शोभा एवं लीला आदि बातों को मुझे इस स्वाप्निक जगत में बताना है। ऐसी स्थिति में प्रश्न यह है कि संसार के लोग मेरी बातों को कैसे सुनेंगे (विश्वास करेंगे)? क्योंकि उन्होंने तो कभी भी किसी के मुख से ऐसा सुना ही नहीं है।

कोट हिस्से एक हरफ के, हिसाब किया मिहीं कर।
एक हिस्सा न पोहोंच्या इन जिमी लग, ए मैं देख्या दिल धर।।१७।।

मैंने एक शब्द के करोड़ भाग किये तथा उसके द्वारा महारास की शोभा को इस नश्वर जगत में व्यक्त करने का आंकलन किया। मैंने अपने हृदय में यही निर्णय किया कि रास की शोभा का ज्ञान उस शब्द के करोड़वें भाग के बराबर भी इस संसार में नहीं पहुँचा है।

एक जरा इन जिमी का, ताके नूर आगे सूर कोट।
सो सूर न आवे नजरों, इन जिमी जरे की ओट।।१८।।

रास के ब्रह्माण्ड की धरती के एक कण में इतना नूर है कि उसके समक्ष यदि नश्वर जगत के करोड़ों सूर्य भी उपस्थित कर दिये जायें तो वहां की धरती के एक कण के सामने सभी सूर्य दिखायी नहीं देंगें अर्थात् उनका तेज एक कण के तेज में विलीन हो जायेगा।

सोने जवेर के बन कहूं, तो ए सब झूठी वस्त।
सोभा जो नूर बन की, सो कही न जाए मुख हस्त।।१९।।

यदि नित्य वृन्दावन के वृक्षों की शोभा को सोने और हीरे-मोती आदि जवाहरातों के वन की उपमा दी जाय तो यह भी पूर्णतया मिथ्या लगती है। वहाँ के नूरमयी वनों की शोभा को न तो मुख से शब्द रूप में कहा जा सकता है और न हाथ से लिखा जा सकता है।

जो कहूं रोसनी एक पात की, सो भी कही न जाए।
कोट चांद जो सूर कहूं, तो एक पातै तले ढंपाए।।२०।।

यदि मैं वहाँ के वृक्षों या लताओं के एक पत्ते की भी ज्योति का वर्णन करना चाहूँ तो उसे भी कह पाना सम्भव नहीं है। वहाँ के एक पत्ते में भी इतना तेज है कि उसके समक्ष

इस संसार के करोड़ों सूर्यों तथा चन्द्रमा का प्रकाश ढक जाता है (फीका पड़ जाता है)।

नूर ससि बन पसु पंखी, जिमी नूरै रेजा रेज।
थिर चर नूर सबों मिने, सब चीजें नूर तेज।।२१।।

रास मण्डल का चन्द्रमा, वृन्दावन तथा पशु-पक्षी सभी नूरमयी शोभा वाले हैं। वहाँ की धरती का एक-एक कण नूर से भरा हुआ है। स्थावर तथा जंगम सभी प्राणी नूरी शोभा वाले हैं। लीला रूप सभी सामग्री नूर के तेज से परिपूर्ण है।

वस्तर भूखन इन जिमी के, सो याही जिमी माफक।
जिन जिमी जरे की रोसनी, कही न जाए रंचक।।२२।।

नित्य वृन्दावन के वस्त्रों तथा आभूषणों को वहाँ की ही दृष्टि से समझना चाहिये। इस नश्वर जगत के वस्त्रों तथा आभूषणों से उपमा देने का प्रयास नहीं करना चाहिए। वहाँ की धरती के एक कण मात्र की भी ज्योति का नाम मात्र भी वर्णन नहीं हो सकता है।

सुख जो अर्स अरवाहों के, जो लिए जिमी इन।
सो तुम देखो सहूर कर, कहे न जाए मुख किन।।२३।।

हे साथ जी! उस नित्य वृन्दावन में परमधाम की आत्माओं ने अपने प्राणवल्लभ के साथ महारास की लीला कर जिस आनन्द की अनुभूति की, उसके विषय मे यदि आप विचार करके देखें तो किसी के भी मुख से उस का वर्णन हो पाना सम्भव नहीं है।

जिन जिमी की ए रोसनी, ऐसे बाग के दरखत।
तो इत सुख ऐसे ही चाहिए, अर्स बका की न्यामत।।२४।।

अखण्ड परमधाम की अनन्य प्रेममयी लीला जिस नित्य-वृन्दावन में खेली जाय, वहाँ की धरती तथा वृक्षों की नूरमयी शोभा ऐसी ही होनी चाहिए जैसा ऊपर वर्णित किया गया हैं। वहाँ का अलौकिक आनन्द भी पूर्वोक्त कथन के अनुसार ही होना चाहिए ।

ए जिमी बाग पांचों चीजें, ए जो पैदा किए नूर।
एक पल लेहेरें कायम किए, नूर का ऐसा जहूर।।२५।।

रास मण्डल की धरती, वन, तथा आकाश, वायु, अग्नि एवं जल आदि सभी अक्षर ब्रह्म के नूर से हैं। अक्षर ब्रह्म का नूर एक अनन्त सागर की भांति है, जिससे उठने वाली लहरों के समान नित्य वृन्दावन की शोभा है। अक्षर ब्रह्म ने एक पल में ही लहर समान नित्य वृन्दावन को अखण्ड कर दिया।

इत खेलत रूहें अर्स की, जो स्यामें उतारी किस्ती पर।
सो रूहें पोहोंची इन बाग में, और तोफाने डूबे काफर।।२६।।

इस नित्य वृन्दावन में परमधाम की वे आत्मायें क्रीड़ा करती हैं जिन्हें साम (श्री कृष्ण जी) ने योगमाया रूपी नौका के माध्यम से प्रलय से निकाला था। वे आत्मायें इसी नित्य वृन्दावन में पहुँची थी। ब्रह्माण्ड के शेष जीव प्रलय में आ गये।

भावार्थ- कुर्आन के सि. ११ सू.१२ आ. ७ "व हुवल्लजी खलक स्समवाति वल अरज़ फीसित्तति इन् हाजा इल्ला सिहरूम्मुबीन "

वही तो है जिसने जमीन-आसमान को छः दिन में बनाया और इसका अर्श पानी पर है। तुम लोग मरने के बाद उठाए जाओगे ।

पा. २९. सु. १७ आ. ७१ मुर्सिलिसमा-अ अलैकुम मिदाख अर्थात वह तुम पर आसमां से बारिश बरसाएगा। यह नूह के बाग का वर्णन है।

पा. २९ सु. ७१ आ. १५ अ-लम तरौ केफ खलकल्लाहु सब-अ समावातिन् तिवाका अर्थात् क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने सात आसमान कैसे ऊपर नीचें बनाये। यह योगमाया का वर्णन हैं।

ए नूह तोफान कह्या रसूलें, और गुझ रह्या रूहों रोसन।
किस्ती पार उतारी सबों सुनी, सुध ना परी पोहोंची बाग किन।।२७।।

इस प्रसंग को मुहम्मद स. अ. व. ने नूह के यहाँ तुफान आना कहा है। ब्रह्मात्माओं से सम्बन्धित गुह्य रहस्य अब तक छिपा रहा । किश्ती (नौका) से तूफान से पार निकालने की बात तो सबने सुनी थी, किन्तु किसी को भी यह ज्ञात नहीं हो सका था कि वे किस बाग में पहुँची।

बात बड़ी इन नूर की, ए तो नेक कह्यो प्रकास।
इत खेलें रूहें हकसों, बिध बिध के विलास।।२८।।

इस नित्य वृन्दावन की नूरमयी शोभा बहुत अधिक है। मैंने तो बहुत थोड़ा सा ही कहा है। यहाँ पर ब्रह्मात्माओं ने प्रियतम परब्रह्म के साथ तरह-तरह की प्रेम एवं आनन्द से भरपूर लीलायें कीं।

कह्या जाए ना नूर इन बाग जिमी, हुआ सब रोसन भरपूर।
जिन ऐसा रोसन किया पल में, सिफत क्यों कहूं असल नूर।।२९।।

नित्य वृन्दावन तथा वहाँ की धरती नूरी ज्योति से जगमगा रही है। वहां की अनुपम शोभा का वर्णन हो पाना सम्भव नहीं है। उस अक्षर ब्रह्म की महिमा को शब्दों में कैसे व्यक्त किया जा सकता है जिन्होंने एक पल में ही अनन्त नूरी शोभा वाले नित्य वृन्दावन की रचना कर दी।

हद सब्द दुनी में रह्या, पोहोंच्या नहीं नूर रास।
तो क्यों पोहोंचे असल नूर को, जिन की ए पैदास।।३०।।

इस नश्वर जगत के शब्द निराकार में ही विलीन हो जाते हैं। जब वे रास मण्डल तक नहीं पहुँच पाते हैं तो यह कैसे सम्भव है कि वे उस अक्षर ब्रह्म तक पहुँच सकें जिनके द्वारा इस नित्य वृन्दावन का निर्माण किया गया ।

बड़ी भिस्त भी याही से, जो कही कजा के मांहें।
तिन भिस्त के नूर की, बात बड़ी है तांहें।।३१।।

अक्षर ब्रह्म के सत्स्वरूप में जो पहली बहिश्त है, उसमें श्री प्राणनाथ जी के द्वारा न्याय की लीला होगी। उस बहिश्त की नूरमयी शोभा की तो बात ही कुछ विशेष है।

नूर रास भी बरन्यो ना गयो, तो भिस्त बरनन क्यों होए।
बोहोत बड़ी तफावत, रास भिस्त इन दोए।।३२।।

जब रास मण्डल की नूरी शोभा का वर्णन नहीं हो पाता है तो बहिश्त की शोभा का वर्णन कैसे हो सकता है? रास और सत्स्वरुप की बहिश्त में बहुत अधिक अन्तर है।

सोभा भिस्त जिमीय की, और सोभा भिस्त दरखत।
पुरों पुरों नूरी बसें, ए क्यों होए खूबी सिफत।।३३।।

सत्स्वरुप की बहिश्त की धरती तथा वहाँ के वृक्षों की नूरी शोभा अनुपम है। वहाँ स्थान-स्थान पर ब्रह्मात्माओं के स्वरूप का प्रतिबिम्बित रुप धारण किये हुए ब्रह्मसृष्टियों के जीव दृष्टिगोचर होते है (होंगे)। उनकी विशिष्टताओं की महिमा का वर्णन हो पाना सम्भव नहीं है।

<u>विशेष-</u> महाप्रलय के पश्चात् ही यह बहिश्त अखण्ड होगी। उपरोक्त चौपाई का कथन भविष्य के सन्दर्भ में है। शोभा का वर्णन होने के कारण भविष्य के प्रसंग को वर्तमान काल में दर्शाया गया है।

सोभा भिस्त मोहोल मंदिरों, और सोभा नूरियों अंग।
नूर असल अंग भेदिया, ए नाहीं नूर तरंग।।३४।।

सत्स्वरूप की इस बहिश्त के महलों, मन्दिरों तथा ब्रह्मात्माओं के प्रतिबिम्बित स्वरुपों की शोभा अक्षर ब्रह्म के भी हृदय का भेदन करने वाली है क्योंकि इसमें परमधाम की लीला का प्रतिबिम्ब आता है। इस बहिश्त को रास की भांति मात्र अक्षर ब्रह्म के नूर की तरंग से प्रकट होने वाली नहीं समझना चाहिये।

भावार्थ- इस बहिश्त की लीला को देखकर अक्षर ब्रह्म का हृदय प्रेम और आनन्द के अथाह सागर में डूब जाया करेगा कयोंकि इसमें परमधाम की लीला प्रतिबिम्बित हुआ करेगी।

इस चौपाई के तीसरे चरण में कथित 'भेदिया' शब्द का यही आशय है।

निबेरा भिस्त रास का, कहूं पावने रूहों हिसाब।
भिस्त को सुख है जागते, रास को सुख है ख्वाब।।३५।।

बहिश्त तथा रास का यह विवरण मैं ब्रह्मात्माओं को समझाने के लिये कह रहा हूँ। बहिश्त का सुख जागृत अवस्था का है जब कि रास का सुख स्वप्न जैसा है।

रास भिस्त या जो कछू, ए सब पैदा असल नूर।
तिन असल नूर की क्यों कहूं, जो द्वार आगूं हजूर।।३६।।

चाहे रास की बहिश्त हो या सत्स्वरुप की बहिश्त, योगमाया के ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी है, वह सब अक्षर ब्रह्म के नूर से है। ऐसी स्थिति में उस अक्षर ब्रह्म की नूर की शोभा का वर्णन कैसे किया जा सकता है जो चाँदनी चौक में रंगमहल के मुख्य द्वार के सम्मुख खड़े होकर अक्षरातीत श्री राज जी का दर्शन करते हैं?

ए जो नूर मकान आगूं अर्स के, नूर बका असल।
ए रूहें असलू कानो सुनियो, असल तनों के दिल।।३७।।

परमधाम में अक्षरातीत के रंगमहल के सामने अक्षरधाम आया है। ये दोनों धाम अखण्ड और त्रिगुणातीत हैं। हे साथ जी! आपके मूल तन मूल मिलावे में श्री राज जी के सम्मुख विराजमान हैं। उस तन का हृदय (दिल) ही इस संसार में आत्मा के रुप में माया का खेल देख रहा है। आप अपनी आत्मा के कानों से मेरी बातें सुनिये।

ए असल नूर मकान की, ए नूर सागर साबित।
देखे नूर के तरंग, रास भिस्त कही तित।।३८।।

अक्षरधाम में अक्षर ब्रह्म का जो मूल स्वरुप विराजमान है, उनका नूर ही नूर सागर के रुप में क्रीड़ा करता है। उस नूर सागर की तरंगे ही रास और सत्स्वरुप की बहिश्त के नूर के रुप में दिखायी देती हैं।

भावार्थ- अक्षर और अक्षरातीत का एक ही स्वरुप है। अक्षर ब्रह्म का नूर ही नूर सागर के रूप में शोभायमान है। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जाता है कि अक्षरातीत श्री राज जी के मुखारविन्द के नूर का अंश मात्र ही नूर सागर के रुप में शोभायमान हो रहा है। उस नूर सागर की लहर रुप शोभा बेहद मण्डल में दृष्टिगोचर होती है।

नूर लेहेरें दायम उठें, पाउ पल में बिना हिसाब।
कोई लेहेर कायम करे, कई उड़ावें कर ख्वाब।।३९।।

उस नूर सागर में मात्र चौथाई पल में ही अनन्त लहरें निरन्तर उठा करती हैं (लहराती हैं)। इसमें से किसी लहर को अक्षर ब्रह्म रास या बहिश्त के रूप में अखण्ड कर देते हैं, शेष सभी लहरें पुनः नूर सागर में अदृश्य हो जाती हैं।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई के कथन को कालमाया की इस लीला के समान नहीं समझना चाहिए कि-

कोट ब्रह्माण्ड नजरों में आवें, खिन में देख के पल में उड़ावें । परिक्रमा ३/९९

कालमाया के सभी ब्रह्माण्ड मोह सागर में लीन हो जाते हैं और अन्ततोगत्वा मोह सागर (महा शून्य) भी नहीं रहता है। किन्तु उपरोक्त प्रसंग इससे भिन्न अखण्ड लीला का है। अक्षर ब्रह्म ने अक्षरातीत के प्रेम को व्रज एव रास में देखा। उसे अपने हृदय में अखण्ड करने के भाव के साथ ही सम्पूर्ण व्रज एवं रास लीला का ब्रह्माण्ड बेहद मण्डल में अखण्ड हो गया। बेहद मण्डल ही उनका अन्तः करण है, जहां वे अपनी अभिन्न चैतन्य प्रकृति के साथ लीला करते हैं। उनके अन्तः करण के चारों घटकों सत्स्वरूप, केवल, सबलिक तथा अव्याकृत की प्रकृति (माया) को मूल प्रकृति या मूल माया, आनन्द योगमाया, चिद्रूप माया तथा सद्रूप माया कहते हैं।

सागर से उठने वाली लहर सागर के जल में अवश्य विलीन हो जाती है किन्तु उसका जल नष्ट नहीं होता, केवल लहर का रूप जो जल की सतह से उपर उठा होता है,

वह ही नष्ट होता है। लहरों की क्रीड़ा से सागर के जल की एक बूंद का भी ह्रास या विनाश नहीं होता। सागर के जल से प्रकट होने वाली लहर सागर में विलीन होकर यही दर्शाती है कि मैं सागर से अलग नहीं हूँ। लीला रूप में मैं अलग दिख रही थी। यदि आपको विश्वास नहीं है तो मैं पुनः प्रकट होकर आपको अपना स्वरूप दिखाती हूँ। ऐसा कहकर वह पुनः प्रकट होती है तथा पुनः जल में विलीन होती है। यह प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है।

जब कालमाया के नश्वर ब्रह्माण्ड में सागर की क्रीड़ा में नश्वरता की कल्पना नहीं है तो परमधाम के नूर सागर से उठने वाली नूरमयी लहरों को स्वप्न के समान समझने की भूल कैसे की जा सकती है ? परमधाम और बेहद मण्डल दोनों ही अखण्ड हैं। यहाँ का एक कण भी कभी नष्ट नहीं हो सकता है। उपरोक्त चौपाई के चौथे चरण का आशय यह है कि नूर सागर से उठने वाली नूरमयी लहरें कुछ समय तक लहराने के पश्चात् नूर सागर में मिलकर अदृश्य हो जाती हैं तथा क्रीड़ा रुप में पुनः प्रकट होकर पुनः अदृश्य हो जाती हैं। यह प्रक्रिया अनादि काल से चल रही है तथा अन्नत काल तक चलती रहेगी।

किसी लहर को अखण्ड करने का आशय यह है कि नूर की वह तरंग व्रज, रास या जागनी लीला को अखण्ड करने में दृष्टिगोचर होने लगती है। लहर की शोभा उस ब्रह्माण्ड की शोभा का रुप ले लेती हैं। वह पुनः अपने मूल नूर सागर में अदृश्य नहीं होती।

नूर मकान जिमी असल, असल बन चौफेर।
पसु पंखी असल, खेलत घेरों घेर।।४०।।

अक्षरधाम की धरती अखण्ड है। उसके चारों ओर आये हुए वनों की शोभा भी अनादि तथा अखण्ड है। उन वनों में क्रीड़ा करने वाले अनन्त पशु-पक्षी भी अखण्ड शोभा को धारण किये रहते हैं।

नूर जिमी बन नूर जल, आकास वाए सब नूर।
नूर पसु पंखी द्वारने, नूर सब ससि सूर।।४१।।

अक्षरधाम की धरती, वन, जल, आकाश तथा वायु आदि सभी नूरी शोभा वाले हैं। मुख्य द्वार पर क्रीड़ा करने वाले पशु-पक्षी भी नूरमयी हैं। आकाश में नूरमयी सूर्य और चन्द्रमा आदि लीला रुप पदार्थ अखण्ड रुप से शोभायमान रहते हैं।

एक पात ना खिरे बन का, ना गिरे पंखी का पर।
नया पुराना न होवहीं, जंगल या जानवर।।४२।।

अक्षरधाम के किसी भी वन का न तो कोई पत्ता गिरता है और न किसी पक्षी का पंख। इसी प्रकार किसी वृक्ष में नया पत्ता भी न तो निकलता है और न कोई पुराना ही होता है अपितु सभी की नित्य और अखण्ड शोभा है। वहाँ का कोई पशु भी न तो नया पैदा होता है और न पुराना (वयोवृद्ध) होता है। सबकी शोभा सर्वदा एक समान ही बनी रहती है।

दरबार मोहोल नूर सबे, सब नूरै नूर विस्तार।
ए नूर कहूं मैं कहां लग, कहूं याको वार न पार सुमार।।४३।।

अक्षरधाम के सभी महल नूरमयी हैं। चारों ओर नूर ही नूर की शोभा विद्यमान है। यहाँ के नूर की अनुपम शोभा का वर्णन मैं कहाँ तक करुँ? सम्पूर्ण शोभा अनन्तानन्त है।

ए सब नूर एक होए रह्या, रोसनी न काहूं पकराए।
बिना नूर कछू ना देखिए, रह्या बाहेर माहें भराए।।४४।।

लीला रुप सभी पदार्थो का नूर एक ही स्वरुप में दृष्टिगोचर हो रहा है। इतना तेजोमयी प्रकाश है कि कोई भी उस का आंकलन नहीं कर सकता है। लीला रुप सभी पदार्थो के अन्दर-बाहर केवल नूर ही नूर की शोभा छायी हुयी हुई है। दूसरे शब्दों में ऐसा कहा जा सकता है कि वहाँ नूर के अतिरिक्त अन्य कुछ दिखायी ही नहीं पड़ रहा है।

भावार्थ- 'नूर' अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ होता है- अलौकिक या दिव्य। परब्रह्म त्रिगुणातीत है। इस कार्य जगत में दिखायी देने वाली सभी ज्योतियां त्रिगुणात्मक तथा नश्वर हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि त्रिगुणातीत ज्योति या प्रकाश का अलग ही स्वरुप होगा। अरबी भाषा के शब्द 'नूर जलाल' का अर्थ है अलौकिक रुप से सामर्थ्यवान, इसी प्रकार नूर जमाल का अर्थ है- अलौकिक, दिव्य या त्रिगुणातीत शोभा, छटा, कान्ति और सौन्दर्य वाला इत्यादि ।

कुरान में सूरे नूर २४ पारः १८ आयत ३५ में स्पष्ट किया गया है कि नूर से अभिप्राय त्रिगुणात्मक प्रकाश या ज्योति से नहीं है।

इसी प्रकार वेद में नूर शब्द के लिऐ शुक्र शब्द का प्रयोग किया गया है-

शुक्र ज्योतिश्च चित्र ज्योतिश्च सत्य ज्योतिश्च ज्योतिश्माँश्च शुक्रंश्च ऋतपाश्चांत्यंहा च । यजुर्वेद १७/८०

इस मन्त्र में ब्रह्म का स्वरुप नूरी ज्योति वाला, अद्‌भुत ज्योति वाला, सत्य ज्योति वाला तथा त्रिगुणातीत ज्योति वाला कहा गया है। गायत्री मन्त्र में प्रयूक्त होने वाला भर्गः शब्द शुक्र(नूर) का ही एकार्थवाची है।

इसी भाव को उपनिषदों में 'तदेव शुक्रं तदं ब्रह्म तदेव अमृतं उच्यते' कहा गया है।

अब प्रश्न यह होता है कि श्रीमुखवाणी के शब्दों में नूर क्या है?

यह सर्वमान्य सिद्धान्त है कि जो हृदय में होता है, वही मुखारविन्द पर भी होता है। इस सम्बन्ध में श्री मुखवाणी का कथन है-

जो गुन हक के दिल में, सो मुख में देखाई देत ।
सो देखें अरवाहें अर्स की , जो इत हुई होए सावचेत ।। ३०/३४
मुख बोले पीछे पाइए , जो दिल अन्दर के गुन ।
पर मुख देखे पाया चाहे, जो अन्दर गुझ रोसन ।। २०/३५
जो गुन हिरदे अन्दर, सो मुख देखे जाने जाए ।
ऊपर सागरता पूरन, तार्थें दिल की सब देखाए ।। २०/३६

अक्षरातीत का हृदय मारिफत का सागर है। परमधाम के २५ पक्षों तथा श्यामाजी, सखियों, अक्षर ब्रह्म और महालक्ष्मी के रुप में जो कुछ भी दिखाई दे रहा है, वह हकीकत स्वरुप है,जो मारिफत से अनादि काल से प्रकट है। इसी प्रकार आठों सागरों में जो कुछ भी है, वह सब हकीकत का ही स्वरुप है और हकीकत के रुप में जो कुछ भी दिखाई दे रहा है, वह सभी कुछ नूर है। नूर की व्याख्या में कुछ इस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया जा सकता है- ''नूर ही शाश्वत- परम प्रेम है, आनन्द है, सौन्दर्य है और जीवन है। वह अक्षरातीत के हृदय का उल्लास है, प्रफुल्लता है, दयालुता है, नेत्रों का आकर्षण है, मुखारविन्द की कान्ति है, छटा है, आभा है, स्वच्छता है, चमक है और उजलापन है।''

यह मन में संशय होता है कि यदि नूर का अर्थ तेज, ज्योति या प्रकाश नहीं है तो श्री मुखवाणी में यह बार-बार क्यों कहा जाता है कि परमधाम के नूर के एक कण में करोड़ों सूर्यों का प्रकाश छिप जाता है। इसी प्रकार श्री राज श्यामा जी के नखों के सामनें करोड़ो सूर्यों का प्रकाश फीका पड़ जाने की बात कही जाती है। इसके समाधान में यही

कहा जा सकता है कि नूरमयी स्वरूप में तेज, ज्योति, प्रकाश, रोशनी सब कुछ है, किन्तु वह सत्य, चेतन, आनन्दमयी, सुगन्धिमयी, आत्ममयी और अति कोमल है। वह अपने अन्दर अनन्त सूर्यों के प्रकाश को यदि समाये हुए है, तो अनन्त चन्द्रमा की शीतलता भी उसमें है। वह पूर्णतया त्रिगुणातीत, अनादि, अखण्ड और साक्षात् ब्रह्मस्वरूप ही है, जबकि सूर्य, चन्द्र, विद्युत आदि का प्रकाश, तेज या ज्योति पूर्णतया नश्वर है, जड़ है, दाहकारक है, और त्रिगुणात्मक है। यही कारण है कि 'नूर' को प्रकृति के सभी रूपों से भिन्न सच्चिदानन्द परब्रह्म का स्वरूप माना गया है।

रास भिस्त लेहेरें कही, कही नूर मकान की बिध।
आगे तो नूर तजल्ला, सो ए देऊं नेक सुध।।४५।।

हे साथ जी ! पहले मैंने अक्षरधाम की यथार्थता दर्शाते हुए यह बताया है कि इसके नूर सागर की लहर मात्र ही रास और सत्स्वरूप की बहिश्त है। इस अक्षरधाम के आगे अक्षरातीत का रंगमहल है, जिसकी मैं थोड़ी सी पहचान दे रहा हूँ।

जहां पर जले जबराईल, इत थें आगे न सके चल।
दरगाह अर्स अजीम की, हक हादी रूहें असल।।४६।।

जिस परमधाम में प्रवेश करने पर तेज से जिब्रील के पंख जलने लगते हैं। वह अक्षरधाम (सत्स्वरूप) से आगे एक कदम भी नहीं चल सका। सर्वोपरि परमधाम के उस रंगमहल में श्री राज श्यामा जी तथा ब्रह्मात्माओं का वास्तविक अखण्ड स्वरूप है।

भावार्थ– जिब्रील के पंखों के जलने का वर्णन आलंकारिक है। इसका तात्पर्य शक्ति न होने से है। सर्वरस सागर से ही परमधाम की भूमिका प्रारम्भ हो जाती है। सभी आठों सागरों में अक्षरातीत की ब्रह्मात्माओं के साथ लीला होती है, जिसमें जिब्रील या अस्राफील अथवा किसी भी फरिश्ते या जीवसृष्टि का (तारतम ज्ञान और प्रेम के बिना) असम्भव है। ऐसी स्थिति में यह सम्भव नहीं है कि जिब्रील सर्व रस सागर, और अक्षर धाम को पारकर यमुना जी तक आ जाय। सत्स्वरूप ही जिब्रील का मूल निवास है। वह कालमाया के ब्रह्माण्ड से मुहम्मद स. अ. व. की सूरता को लेकर मात्र सत्स्वरूप तक ही

आ सकता है। इसके आगे स्वलीला अद्वैत के एकत्व (वहदत) में उसका प्रवेश असम्भव है। इस प्रकार अक्षरधाम अथवा यमुना जी तक जिब्रील के जाने के कथन को सत्स्वरूप तक जाना समझना चाहिए।

अब नूर कहूं अंदर का, नूर मोहोल मंदिरों नहीं पार।
एही भूल है अपनी, सोभा ल्याइए माहें सुमार।।४७।।

अब मैं परमधाम के अन्दर की शोभा का वर्णन करता हूँ। यहां नूरमयी महलों तथा मन्दिरों की शोभा की सीमा नही है। यदि हम वहां की अलौकिक और अनन्त छवि को किसी सीमा में बांधते हैं तो उसे अपनी सबसे बड़ी भूल समझनी चाहिए।

नूरजमाल अंग का नूर जो, बड़ी रूह रूहों सिरदार।
बड़ी रूह के अंग का नूर जो, रूहें बुजरक बारें हजार।।४८।।

अक्षरातीत के हृदय (अंग) का नूर श्यामा जी हैं जो सभी ब्रह्मात्माओं में प्रमुख हैं। इसी प्रकार श्यामा जी की अंग रूपा बारह हजार ब्रह्मात्मायें हैं, जिनकी अपार महिमा है।

भावार्थ- सामान्यतः श्री राज जी के अंग श्यामा जी को कहे जाने का बाह्य अर्थ यही किया जाता है कि श्री राज जी के बाह्य अंगों से इतना अधिक नूर निकलता है कि वही आनन्द अंग श्यामा जी के रूप में दृष्टिगोचर होने लगता है, किन्तु इसका आन्तरिक अर्थ यह है कि श्यामा जी अक्षरातीत के हृदय की आधार स्वरूपा है। उन्हे हृदयेश्वरी या प्राणेश्वरी कह सकते हैं। नूर का अर्थ जीवन का आधार भी होता है। इसी प्रकार सखियां श्यामा जी के हृदय की आधार स्वरूपा हैं। श्री राज जी, श्यामा जी तथा ब्रह्मात्माओं में एक-दूसरे के प्रति अनन्त प्रेम हैं। सभी एक-दूसरे के जीवन के आधार हैं।

सुख जो अर्स अजीम के, सो होए नहीं मजकूर।
ए अर्स तन से बोलत, मांहें खिलवत हक हजूर।।४९।।

परमधाम के अनन्त सुखों का वर्णन हो पाना सम्भव नहीं है। मैं जो कुछ भी कह रहा हूँ, वह परमधाम के तन से कह रहा हूँ जो मूल मिलावे में अक्षरातीत श्री राज जी के चरणों में बैठा हुआ है।

भावार्थ- परमधाम के तन से बोलने का आशय यह है कि परात्म की ही प्रतिबिम्ब स्वरूपा आत्मा है, जिसके धाम हृदय में विराजमान होकर श्री राज जी परमधाम का वर्णन

करते हैं।

सिफत ऐसी कही मोमिन की, जाके अक्स का दिल अर्स ।
हक सुपने में भी संग कहे, रूहें इन विध अरस-परस ।। श्रृंगार

जब तक अक्षरातीत का नख से शिख तक का श्रृंगार आत्मा के धाम हृदय में विराजमान नहीं होता तब तक उसे जागृत नहीं कहा जा सकता और तब तक उसका सम्बन्ध इस नश्वर तन से ही जोड़ा जाता है। नींद की अवस्था में किसी ब्रह्मात्मा के पंचभौतिक तन से कहा हुआ कथन उस पंचभौतिक तन का ही कथन माना जाता है जबकि जागृत अवस्था में उसके कथन को परात्म से जोड़कर कहा जाता है। इस सम्बन्ध में की. यह कथन बहुत ही महत्वपूर्ण है-

तुम देखत हो मोहे इन इण्ड में, मैं चौदे तबक से दूर ।
अंतरगत ब्रह्माण्ड थे, सदा साहेब के हजूर ।।

जो रूह होवे अर्स की, सो सुनियो अर्स तन कान।
अर्स अकलें विचारियो, मैं केहेती हों अर्स जुबान।।५०।।

जो भी परमधाम की आत्मा हो, वह मेरे कथनों को परमधाम के अपने मूल तन (परात्म) के कानों से सुने। मेरी आत्मा परमधाम की जिह्वा से कह रहीं है, अतः आप भी परमधाम की ही निज बुद्धि से मेरे कथनों का विचार कीजिए।

भावार्थ- इस चौपाई में यह संशय होता है कि परात्म के तन तो फरामोशी (नींद) में है। उनसे न तो देखा जा सकता है, न बोला जा सकता है और न सुना जा सकता है। क्योंकि खि.७/३,४ का कथन है-

बैठी अंग लगाए की, ऐसी करी अन्तराए ।
ना कछु नैनों देखत, ना कछु आप ओलखाए ।।
बैठी अंग लगाए के, ऐसी दई उलटाए ।
ना कछु दिल का कहे सकों, ना पिया सब्द सुनाए ।।

इसके समाधान में यही कहा जा सकता है कि वक्ता जिस भाव में कह रहा है, यदि श्रोता उस भाव में स्थित नहीं है तो वह सत्य को ग्रहण नहीं कर पायेगा। यदि श्री महामति जी अपनी आत्मा को परात्म की प्रतिबिम्ब स्वरूपा मानकर परात्म में स्थित होकर परमधाम की बात कह रहे हैं और सुनने वाले सुन्दरसाथ इस नश्वर शरीर तथा ब्रह्माण्ड में ही फंसे रहे, उनकी चित्तवृत्ति परात्म की ओर नाम मात्र भी न जाय तो वे

परमधाम की वहदत (एकत्व), खिल्वत, हकीकत एवं मारिफत के विषय में क्या जान पायेंगे, उपरोक्त चौपाई में यही तथ्य प्रकट किया गया है।

हम रूहें हमेसा बका मिने, रूह अल्ला के तन।
असल तन हमारे अर्स में, और कछू न जानें हक बिन।।५१।।

हम ब्रह्मात्मायें परमधाम में विराजमान श्यामा जी की तन स्वरूपा हैं अर्थात् हमारा और उनका तन एक ही है। दूसरे शब्दों मे 'हमारा तन उनका ही तन है'। हमारे मूल तन परात्म हैं जो परमधाम में मूलमिलावे में प्रियतम अक्षरातीत के चरणों में बैठे हैं। अक्षरातीत प्राणेश्वर के प्रेम में निरन्तर लीन रहने से हमें उनके अतिरिक्त और किसी का भी ज्ञान नहीं रहता है।

हम सब में इस्क हक का, ऊपर बरसे हक का नूर।
हम हमेसा हक खिलवतें, हम सब हक हजूर।।५२।।

हम सबके हृदय में प्राणेश्वर अक्षरातीत का प्रेम क्रीड़ा करता है तथा उनके प्रेम, सौन्दर्य, कान्ति, आनन्द आदि का रसपान हमारे द्वारा लीला में होता रहता है। पल-पल सदा हमारी सानिध्यता प्रियतम श्री राज जी से रहती है जिसमें अन्य किसी भी बाह्य व्यक्ति (अक्षर ब्रह्म, ईश्वरीय सृष्टि) का प्रवेश नही हो पाता।

पेहेले कह्या नूर मकान जो, सो नूर मांहें वाहेदत।
हक हादी रूहें खिलवत, ए वाहेदत सब निसबत।।५३।।

पहले मैने जिस अक्षरधाम का वर्णन किया है, उसमें विराजमान अक्षर ब्रह्म भी श्री राज जी की वहदत के अंग हैं। श्री राज जी श्यामा जी एवं ब्रह्मात्मायें खिल्वत के स्वरूप हैं। वहदत (एकत्व) के सभी स्वरूपों की श्री राज जी से अटूट एवं अनादि निस्बत (मूल सम्बन्ध) है।

भावार्थ- परमधाम में स्वलीला अद्वैत सच्चिदानन्द परब्रह्म के लीला रूप पांच स्वरूप हैं जो बाह्य रूप से पांच प्रतीत होते हैं किन्तु आन्तरिक रूप से एक ही अक्षरातीत श्री राज जी के स्वरूप हैं, अक्षरातीत के सत् अंग अक्षर ब्रह्म सत् की वहदत (एकत्व) में है। श्यामा जी तथा ब्रह्मात्मायें आनन्द की वहदत में हैं। वहदत की लीला खिलवत् में होती है जिसमें श्री राज जी, श्यामा जी तथा ब्रह्मात्माओं के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं होता। अक्षर ब्रह्म तथा महा लक्ष्मी, श्री श्यामा जी एवं ब्रह्मसृष्टियों का अक्षरातीत श्री राज जी से

अनादि काल से अनन्त काल तक के लिये अखण्ड मूल सम्बन्ध है, जिसे निस्बत कहा जाता है।

बाग जिमी जो अर्स की, और पसु जानवर।
कहा कहूं सुख साहेबी, जिन पर हक नजर।।५४।।

परमधाम की नूरमयी धरती तथा अनुपम शोभा वाले बागों में विचरण करने वाले पशु पक्षियों के सुखों तथा उनके स्वामित्व का मैं कैसे वर्णन करूँ, जिन पर प्राणेश्वर अक्षरातीत की पल-पल प्रेमभरी दृष्टि बनी रहती है।

भावार्थ- पशु और जानवर का एक ही आशय है। पशु शब्द हिन्दी, संस्कृत का है जबकि जानवर शब्द फारसी का है।

और जरा न हक बका बिना, खेल सदा होत नूर से।
एक पल में कई पैदा करे, इंड उड़ावे पल में।।५५।।

परमधाम में परब्रह्म श्री राज जी के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं है। श्यामा जी, ब्रह्मात्मायें, पशु-पक्षी तथा वन आदि सभी कुछ उन्हीं के स्वरूप हैं। कालमाया के ब्रह्माण्डों की रचना अक्षर ब्रह्म ही करते हैं। वे पल मात्र में अनेकों (करोड़ों) ब्रह्माण्डों का सृजन करते हैं तथा पल भर में ही उन्हें लय भी कर देते हैं।

हम रूहें खेल जानें नहीं, जो नूर से उपजत।
ओ खेले अरवा गफलत में, ऊपर भी गफलत।।५६।।

हम ब्रह्मात्माओं को अक्षर ब्रह्म से उत्पन्न होने वाले इस नश्वर जगत की लीला के विषय में कुछ भी पता नहीं था। इस संसार में उत्पन्न होने वाले जीव माया की नींद में होते हैं तथा उनके चौदह लोकों के ऊपर भी नींद (मोहसागर, महाशून्य) का आवरण होता है।

हम जानें इस्क बड़ा हमपे, बड़ी रूह और हक से।
बड़ी रूह जाने सब से, बड़ा इस्क है हम में।।५७।।

हम ब्रह्मसृष्टियों के मन में यह था कि हमारा प्रेम श्यामा जी तथा श्री राज जी के प्रेम से बड़ा है, किन्तु श्यामा जी का यह मानना था कि उनका प्रेम श्री राज जी और ब्रह्मात्माओं के प्रेम से बड़ा है।

हकें कह्या हादी रूहन से, तुम नहीं मेरे माफक।
तुम तेहेकीक मेरे मासूक, मैं तुमारा आसिक।।५८।।

अक्षरातीत श्री राज जी ने श्यामा जी और ब्रह्मात्माओं से कहा कि तुम्हारा प्रेम मेरे समान नहीं है। निश्चित् रूप से तुम मेरे माशूक हो और मैं तुम्हारा आशिक (प्रेमी) हूँ अर्थात् मेरा प्रेम तुम्हारे प्रेम से बड़ा है, क्योंकि एक प्रेमी के रूप में मैं ही तुमसे प्रेम करता हूँ।

होत हांसी हमेसा, सब बड़ा जाने अपना प्यार।
ए बेवरा वाहेदत में होए नहीं, जित नाहीं जुदागी लगार।।५९।।

परमधाम में श्री राज जी, श्यामा जी तथा ब्रह्मात्माओं में सदा ही प्रेम के प्रसंग में हंसी होती रहती थी, क्योंकि उनमें से प्रत्येक अपने प्रेम को बड़ा मानता था। वहदत (एकत्व) की भूमिका में सबका हृदय एक ही समान है। सबमें समान प्रेम है और पल भर के लिये भी वियोग नहीं है। ऐसी स्थिति में इसका कैसे निर्णय हो सकता था कि किसका प्रेम बड़ा है ?

तब हकें कह्या फरामोस का, खेल देखावें हम।
मैं जुदे भी तुमें ना करूं, देखाऊं तले कदम।।६०।।

तब श्री राज जी ने आत्माओं से कहा कि मैं तुम्हें माया का खेल दिखाता हूँ। मैं तुम्हें अपने चरणों में ही बैठाकर यह खेल दिखाऊंगा, जिससे तुम मुझसे अलग भी न हो सको।

हकें हुकम किया दिल पर, तब खेल मांग्या हम एह।
तब हमको खेल देखाइया, खेल हुआ नूर का जेह।।६१।।

श्री राज जी ने अपने हुक्म से हमारे हृदय में खेल देखने की इच्छा पैदा कर दी, जिसके वशीभूत होकर हमने अपने प्राणवल्लभ से माया का खेल देखने की इच्छा प्रकट की। तब धाम धनी ने हमें माया का यह खेल दिखाया, जिसे अक्षर ब्रह्म ने बनाया है।

तो खेल हम देखिया, ना तो कैसा खेल कौन हम।
क्यों उतरे रूहें अर्स से, छोड़ के एह कदम।।६२।।

इस प्रकार हमने माया का यह खेल देखा, अन्यथा कहाँ यह मिथ्या जगत् और कहाँ हम आत्मायें ?अक्षरातीत के चरणों को छोड़कर इस संसार में आ पाना हमारे लिये भला कैसे सम्भव था?

खेल हुआ हम वास्ते, हम पर हादी ल्याए फुरमान।
हम वास्ते कुंजी रूह अल्ला, दई इमाम हाथ पेहेचान।।६३।।

माया का यह संसार हमारे लिये बनाया गया। हमारे लिये ही मुहम्मद स.अ.व

कुर्आन लेकर आये। सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी हमारे लिये ही तारतम ज्ञान लेकर आये तथा उन्होंने वह ज्ञान इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी को दिया जिससे हमें परम सत्य की पहचान हो जाय।

द्रष्टव्य- माया के ब्रह्माण्ड तो अनादि काल से बनकर लय होते रहे हैं और अनन्त काल तक यह प्रक्रिया चलती रहेगी किन्तु यह ब्रह्माण्ड ब्रह्मसृष्टियों को दिखाने के लिये बना है।

ए तीनों सूरत हादीय की, आई जुदी जुदी हम कारन।
आखिर खेल देखाए के, सब समझाई रूहन।।६४।।

इन तीनों सूरतों बशरी, मल्की तथा हकी को श्री राज जी ने हमारे लिये ही धारण किया। ये तीनों सूरतें अलग-अलग समय पर हमारे लिये ही आयीं। कियामत (आखिरत) के समय माया का खेल दिखाकर उन्होंने ब्रह्मात्माओं को परमधाम तथा अक्षरातीत की यथार्थ पहचान दी।

अर्स हक की लज्जत, दई खेल में हम को।
हक साहेबी हक इस्क, हमारे लाड़ पाले कुंजीसों।।६५।।

श्री प्राणनाथ जी ने तारतम ज्ञान के द्वारा हमें परमधाम तथा निजघर का रसास्वादन इस संसार में रहते हुए ही करा दिया। इस संसार में हमने तारतम ज्ञान के द्वारा अपने प्राणेश्वर के स्वामित्व तथा उनके प्रेम को भी जाना। प्रियतम ने तारतम ज्ञान के ही माध्यम से हमारे साथ परमधाम का प्रेम सम्बन्ध भी निभाया है।

हम बैठे देख्या वतन में, हकें ऐसी करी हिकमत।
आए न गए हादी हम, ऐसा देख्या मांहें खिलवत।।६६।।

हमारे हृदयेश्वर श्री राज जी ने ऐसी विचित्र लीला की है कि हम अपने मूल तन से परमधाम में बैठे-बैठे ही सुरता (आत्मिक दृष्टि) के द्वारा इस खेल को देख रहे हैं। हमने मूल मिलावे में बैठे-बैठे इस खेल को इस प्रकार से देखा है कि हम अपने मूल तन से न तो इस संसार में आये हैं और न परमधाम से बाहर कहीं गये हैं।

विशेष- इस संसार में हमारी आत्मा (सुरता) ने माया का तन धारण किया है और वह जीव के ऊपर बैठकर माया का खेल देख रही है। हमारी आत्मा परात्म की प्रतिबिम्ब स्वरूपा है।

हक न्यामत मैं देत हों, जो होसी अर्स अरवाए।
ए सुनते निसानियां अर्स की, लगसी कलेजे घाए।।६७।।

हे साथ जी! मैं अक्षरातीत के तारतम ज्ञान की अखण्ड निधि आपको दे रहा हूँ। आपमें परमधाम की जो आत्मा होगी वह तारतम ज्ञान से परमधाम की पहचान करके अपने प्राणेश्वर से मिलने के लिये तड़प उठेगी (उसके हृदय में विरह की तीव्र चोट लगेगी)।

पेहेचान हक अर्स रूहन की, ए केहेते आवसी इस्क।
ए सुन रूहें ना सेहे सकें, बिछोहा अर्स हक।।६८।।

ब्रह्मसृष्टियों की यही मुख्य पहचान है कि वे परमधाम तथा परब्रह्म के विषय में ज्ञान होते ही प्रेम से भर जायेंगी। तारतम ज्ञान के प्रकाश में सुधि होने पर तो वे अपने प्राणेश्वर तथा परमधाम का वियोग सहन ही नहीं कर सकती हैं।

हम उतरें चढ़ें तो खेल में, जो जरा दूसरा होए।
ए देखो हक इलम से, अर्स अरवा न उरझे कोए।।६९।।

हमारे इस मायावी जगत् में आने तथा यहाँ से जाने के सम्बन्ध में बातें तो तब की जायें, जब इस संसार का कोई अस्तित्व होता। हे साथ जी! यदि आप तारतम ज्ञान की दृष्टि से देखें तो परमधाम के समक्ष यह स्वप्नवत् (अस्तित्व विहीन) है। ऐसी स्थिति में परमधाम की आत्माओं के इसमें उलझने (फंसने) की बात ही नहीं हो सकती।

भावार्थ- जब तक नींद रूपी अज्ञानता है, तब तक इस संसार का अस्तित्व तो है ही, किन्तु जिनकी आत्मिक दृष्टि खुल गयी और जो स्वयं को परात्म की दृष्टि से देखते हैं, उनके लिए तो ये संसार है ही नहीं। इस सम्बन्ध में कि. ९/४ का यह कथन देखने योग्य है- **लगी वाली और कछु न देखे, पिण्ड ब्रह्माण्ड वाको है री नाहीं।**

ओ खेलत प्रेमे पार पियासों, देखन को तन सागर माहीं।।

हकें दिया इलम अपना, तिनका तो हकै से काम।
और हम को क्या हक बिना, रात दिन लेना क्यों आराम।।७०।।

प्रियतम अक्षरातीत ने श्री कुल्जुम स्वरूप के रूप में हमें अपना दिव्य ज्ञान प्रदान किया है। अतः हमारा सम्बन्ध मात्र श्री राज जी से है। हमारा अपने हृदयेश्वर को छोड़कर

संसार में किसी से भी क्या सम्बन्ध ? उनसे मुख मोड़कर हम जीवों की भांति संसार के नश्वर सुखों में दिन-रात कैसे उलझे रह सकते हैं?

हम खेल देख्या लग मुद्दत, जेते रूहअल्ला के तन।
खेल देख पीछे फिरें, जानें बेर न लगी अधखिन।।७१।।

परब्रह्म की आहलादिनी शक्ति श्यामा जी की अंगस्वरूपा (तन स्वरूपा) कही जाने वाली ब्रह्मात्माओं को ऐसा लगता है कि उन्हें इस संसार में आये हुए बहुत लम्बा समय व्यतीत हो गया है। खेल की समाप्ति पर जब परमधाम में उनकी जागृति होगी तो उन्हें तब यह पता चलेगा कि अभी तो आधा क्षण भी नहीं बीता है।

ए देख्या बैठे वतन में, हक सुख लिए हम इत।
सो इन देह इन जिमिऐं, लिए सुख हक निसबत।।७२।।

हमने परमधाम में बैठे-बैठे माया का सारा खेल देखा है और सूरता द्वारा संसार में आकर प्रियतम के सुखों का अनुभव किया है। इस प्रकार इस संसार में तारतम ज्ञान के प्रकाश में चितवनी द्वारा अपने प्राणेश्वर को अपने धाम हृदय में बसाकर हमने इसी पंचभौतिक शरीर के माध्यम से प्रियतम से मूल सम्बन्ध का सम्पूर्ण सुख लिया है।

फेर फेर हक वाहेदत, फेर फेर हक खिलवत।
फेर फेर सुख निसबत के, फेर फेर ए लई न्यामत।।७३।।

चितवनी के माध्यम से हमने अपनी आत्मा को जागृत कर बार-बार इसी स्वाप्निक जगत में श्री राज जी के एकत्व (वहदत), उनकी खिल्वत और मूल सम्बन्ध के सुखों की अनुपम निधि का बार-बार प्रत्यक्ष अनुभव किया है।

भावार्थ- सांसारिक कष्टों से घबराकर निराशा के भंवर में डूबने-उतराने वाले सुन्दरसाथ को इस चौपाई से प्रेरणा लेनी चाहिए तथा बार-बार इस संसार में भेजने के लिये प्रियतम को कोसने एवं जल्दी से जल्दी महाप्रलय कर देने की अपनी निरर्थक मांग से बचने का प्रयास करना चाहिए।

अक्षरातीत के हृदय में विद्यमान प्रेम, आनन्द, ज्ञान आदि का अपने हृदय में भी प्रत्यक्ष अनुभव करना वहदत का अनुभव करना है। मूल मिलावे में स्वयं को उनके सम्मुख बैठे हुए देखना खिल्वत का सुख है तथा पल-पल युगल स्वरूप की सानिध्यता का अनुभव करना निस्बत का सुख है।

महामत कहें मोमिन की, मिट गई दुनियां चाल।
देखिए हक दिल अर्स में, तो अबहीं बदले हाल।।७४।।

श्री महामति जी कहते हैं कि तारतम ज्ञान तथा चितवनी के स्वर्णिम पथ पर चलने के कारण अब सुन्दरसाथ ने संसार के जीवों की भांति माया-मार्ग पर चलना छोड़ दिया है। हे साथ जी! आप का हृदय ही तो आपके प्राणेश्वर का धाम है। यदि आप चितवनी में डूबकर उन्हें अपने धाम हृदय में प्रत्यक्ष देख लेते हैं तो इसी क्षण आपकी आत्मिक स्थिति परमधाम जैसी हो जायेगी।

भावार्थ- अपने धाम हृदय में अपने हृदयेश्वर को प्रत्यक्ष देख लेने के पश्चात् हमारे इस ब्रह्माण्ड में आने का सर्वोपरि लक्ष्य पूर्ण हो जाता है। इस चौपाई को पढ़कर उन सुन्दरसाथ को यह आत्म चिन्तन करना चाहिए कि जीवन भर पानी पी-पीकर चितवनी को कोसते रहने (निरर्थक बताकर विरोध करने) तथा तिलक, कण्ठी, मंत्र एवं पूजा-पाठ के नाम पर कर्मकाण्ड का शिर पर बोझ लादे रहने से उन्हे अब तक क्या प्राप्त हुआ है? उन्हें अक्षरातीत का कथन महत्वपूर्ण लगता है या संसार का?

।।प्रकरण।।३६।।चौपाई।।१५४०।।

सनंध–खंडनी जाहेरियों की

तारतम ज्ञान के अभाव में वेद-कतेब दोनों ही पक्षों के लोग किस प्रकार वास्तविक सत्य से विमुख होकर अन्धकार में भटक रहे हैं, इस प्रकरण में उसका दिग्दर्शन कराया गया है। यह प्रकरण इस सनद ग्रन्थ की उपयोगिता पर भी प्रकाश डालता है और सभी को सत्य की खोज के लिये आत्म चिन्तन करने की प्रेरणा देता है।

लिख्या है कतेब में, पाया न किन ठौर।
ना फरिस्तों ना नबियों, तो क्यों पावे कोई और।।१।।

कतेब ग्रन्थों (तौरेत, इन्जील, जंबूर, तथा कुर्आन) में लिखा है कि आज तक जब किसी भी फरिश्ते (देवता) या नबी को परब्रह्म के धाम का पता ही नहीं चला है तो भला सामान्य लोग यह कैसे जान सकते हैं कि परब्रह्म कहाँ है?

लिख्या जो रसूल ने, तिन तो कह्या अगम।
तबक चौदे ख्वाब के, न्यारा रह्या खसम।।२।।

मुहम्मद साहब ने भी कुर्आन में कहा है कि परब्रह्म (अल्लाह तआला) मन, बुद्धि से परे हैं। चौदह लोकों का यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड स्वप्नमयी है और सच्चिदानन्द परमात्मा इससे सर्वथा परे है।

भावार्थ-सि. .२७ सू. ५३ आ. १४/१५ तथा १६ इन्द सिद्रतिल्-मुन्तहा (१४) इन्दहा अन्नतुल-मअ्वा (१५) यग्शस्-सिद्रत् मा यग्शा (१६) ''पर लो हद अक्षर तक, उसी के पास बहिश्त (परमधाम) जबकि अक्षरधाम हद से (संसार) पर छा रहा था। अर्थात् हद बेहद से भिन्न परमधाम है, जहां पर मुहम्मद साहब ने दर्शन (साक्षात्कार) किया।

खुद तो किन को ना मिल्या, अब काजी कजा चलाए।
कहें जो चाहे खुद को, हम मिलावें ताए।।३।।

आज तक कोई भी परब्रह्म का साक्षात् दर्शन नहीं कर सका है। अब सारे संसार का निर्णय करने के लिये श्री प्राणनाथ जी आये है और कह रहे हैं कि जो परब्रह्म से मिलना चाहता है, वह मेरे पास आयें। मैं उसे परब्रह्म का साक्षात्कार करा दूंगा।

पढ़े मुल्लाँ आगूं हुए, सो तो खाए गुमान।
लोकों को बतावहीं, कहें हम पढ़े कुरान।।४।।

कुर्आन को पढ़कर मुल्ला लोग अहंकार में डूबे जा रहे हैं। वे स्वयं को सबका पथ-प्रदर्शक घोषित कर देते हैं और यह ढिंढोरा पीटते फिरते हैं कि हमने कुर्आन पढ़ा है।

दुनी बदले दीन खोवहीं, चलें सो उलटी रीत।
सुपने के सुख कारने, लोभें किए फजीत।।५।।

ये स्वयं कुर्आन की शिक्षाओं से विपरीत मार्ग पर चलते हैं तथा संसार के नश्वर सुखों के लिये सच्चे धर्माचरण का मार्ग छोड़ देते हैं। मायावी सुखों के लोभ में इनकी प्रतिष्ठा रसातल में चली गई हैं अर्थात् ये गरिमा विहीन हैं।

राह बतावें दुनी को, कहें ए नबिएँ कहेल।
लिख्या और फुरमान में, ए खेलें औरै खेल।।६।।

ये मुल्ला लोग संसार को धर्म (दीन) का रास्ता बताते हैं और कहते हैं कि ऐसा मुहम्मद स.अ.व ने कुर्आन-हदीसों में कहा है। जबकि कुर्आन में कुछ दूसरा ही लिखा होता है, और इनका बताया हुआ कुछ अलग ही होता है।

भावार्थ-पा. ८ सू. ६ आ. ११६ व इन् तुतिऽ अक्सर मन् फिल्अजि युजिल्लूक अन् सबीलिल्लाहि अिय्यत्तबिअन् अिल्लज्जन्न व इन् हुम् अिल्ला यखरूसून अर्थात् और अक्सर लोग जो जमीन पर आबाद हों, अगर तुम उनका कहा मान लोगे तो वे तुम्हें सद्मार्ग भूला देगें। ये सिर्फ २० उल्टी चाल के पीछे चलते हैं और अटकल के तीर चलाते हैं।

पा. २ सू. २ आ. २७ यथा ला इक्राफिददीनी धर्म में दबाव अनुचित हैं।

ए जो मोहोरे खेल के, धरें भेख विवाद।
एक भान दूजा धरें, कहें हमें होत सवाब।।७।।

धार्मिक क्षेत्र में जो अग्रगण्य होते हैं, वे वेश भूषा के नाम पर विवाद खड़ा करते हैं। वे एक सम्प्रदाय की वेश भूषा को हटवाकर बल पूर्वक अपनी वेश भूषा थोपते हैं और कहते हैं कि हमें पुण्य होता है।

भावार्थ- तालिबानी मानसिकता वाले लोग दूसरों को जबरन दाढ़ी रखने के लिये विवश करते हैं। वैसा न करने पर वे हिंसा का मार्ग अपनाते हैं। इसी प्रकार मध्यकाल में मुहम्मद गोरी, गजनवी, कुतुबदीन ऐबक, बाबर, हुमायूँ, औरंगजेब, फिरोजशाह आदि के समय में लाखों हिन्दुओं की चोटी कटवाकर यज्ञोपवीत उतरवा दिया गया और मुस्लिम भेश-भूषा धारण करा दी गयी। क्या इसे ही धर्म कहते हैं ?तुर्क, तातार और मंगोल जब इस्लाम मत में दीक्षित हुए तो अपनी जन्मजात क्रूरता और निर्दयता को इस्लाम में ले आये। ''लाइकरा फिददीनि'' कुरान कहता है, धर्म में दबाव अनुचित हैं।

ओ राजी एक भेख में, ताए मार छुड़ावें दाब।
ओ रोवे सिर पीटहीं, ए कहें हमें होत सवाब।।८।।

साधारण व्यक्ति अपनी परम्परागत वेश-भूशा में प्रसन्न रहता है किन्तु ये शरा-तोरा के नाम पर हिंसा के द्वारा उसकी पूर्व की वेश भूशा हटवा देते हैं तथा अपनी मुस्लिम वेश-भूशा थोप देते हैं। अपनी वेश-भूशा छोड़ने से वह व्यक्ति बहुत दुखी होकर रोता है किन्तु ये मुल्ला लोग कहते हैं कि ऐसा करने से हमें पुण्य होता है।

एक खाई ग्रहतें काढ़के, ले डारें दूजी खाड़।
ज़ब्हे करें जोरावरी, कहें हमें होत सवाब।।९।।

मूर्तिपूजा और कर्मकाण्ड की खाई में गिरे हुए किसी हिन्दू को निकालकर वे शरीयत की दूसरी खाई में डाल देते हैं। शरीयत को स्वीकार न करने पर बलपूर्वक उसकी गर्दन काट देते हैं तथा कहते है कि ऐसा करने पर हमें पुण्य मिलता है।

भावार्थ- अल्लाह का इस्लाम तो कुर्आन में है किन्तु मुल्ला का इस्लाम मात्र शरातोरा में हैं जो उनका बनाया हुआ है। इस्लाम का नाम देकर इन लोगों ने निर्दोष लोगों के खून की नदियाँ बहायी हैं, जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

नादिरशाह के द्वारा दिल्ली में ढाई लाख लोगों की हत्या।

तैमूर लँग के द्वारा दिल्ली, मेरठ के पास एक लाख लोगों की हत्या।

तैमूर लँग के द्वारा भटनेर में दस हजार लोगों की हत्या।

अकबर द्वारा चितौड़ में ३० हजार स्त्री, बच्चों तथा वृद्धों की हत्या।

फर्रूखसिमियार द्वारा दिल्ली में ७९४ सिक्खों की हत्या।

गुलाम मोहम्मद इब्ने बख्तियार बिहार (नालन्दा) १२००० बौद्ध भिक्षुओं की हत्या।

जलालूदीन फिरोजशाह से रक्षा हेतु-२४००० हिन्दू स्त्रियों ने जौहर किया।

अलाउदीन खिलजी के द्वारा चितौड़ आक्रमण के समय १३००० हिन्दू स्त्रियों ने जौहर किया।

हिंदू मुए जलावहीं, और ए आए तिन गाड़।
मिल तिनकी जारत करें, कहें हमें होत सवाब।।१०।।

हिन्दू मरे हुए को जला देते हैं और मुसलमान उन्हें जमीन में दफना देते हैं। इसके पश्चात् मजार पर फातिहा पढ़ते है और कहते हैं कि ऐसा करने से हमें पुण्य मिलता है।

मार डार पछाड़हीं, ओ रोए पीट होवे ताब।
इन बिध जातां बदलें, कहें हमें होत सवाब।।११।।

ये लोग निर्दोष हिन्दुओं तथा दूसरे मतावलम्बियों को मार-मार कर हारने के लिए विवश कर देते हैं। वे रो-रोकर उनके अधीन हो जाते हैं। इस प्रकार ये उनका मत-परिवर्तित करते हैं, साथ-ही साथ उनकी जाति भी बदल देते हैं और कहते हैं कि हमें ऐसा करने में पुण्य मिलता है।

भावार्थ- हिन्दुओं में जिन ब्राह्मणों ने इस्लाम मत स्वीकार किया, वे सैय्यद और शेख कहलाये तथा क्षत्रिय पठान कहलाये। इसी प्रकार सामान्य वर्ग अन्सारी कहलाये।

जैसे मछ गलागल, ना किनकी मरजाद।
यों खैंच लेवें आप में, कहें हमें होत सवाब।।१२।।

जिस प्रकार मगरमच्छ दूसरे प्राणियों को निर्ममतापूर्वक निगलने में दया की कोई मर्यादा नहीं रखते, उसी प्रकार शरीयत की कट्टरता पर चलने वाले मुसलमान दूसरों को अपने मत में बल पूर्वक खींच लेते हैं, और ऐसा करने में पुण्य मानते हैं।

करें जुलम गरीब पर, कोई न काहूं फरियाद।
कर सुंनत गोस्त खिलावहीं, कहें हमें होत सवाब।।१३।।

ये कट्टर मुसलमान गरीबों पर अत्याचार करते हैं। कही पर भी कोई भी उन सताये गये लोगो की प्रार्थना (फरियाद) नही सुनता। वे बलपूर्वक हिन्दुओं की सुन्नत करके उन्हें गाय का मांस खिलाते हैं तथा कहते हैं कि ऐसा करने से हमें पुण्य मिलता है।

कोई जालिम जीव जनम का, खुराकी गोस्त सराब।
तिनको लेवें दीन में, कहें हमें होत सवाब।।१४।।

भले ही कोई व्यक्ति जन्म से ही कितना ही अत्याचारी, मांसाहारी और शराबी क्यों न हो, उसे कलमा पढ़ाकर अपने मत में सम्मिलित कर लेते हैं और कहते हैं कि हमने बहुत अधिक पुण्य का काम किया है।

सिरोपाव दे गज चढ़ावहीं, ओ जाने हुआ खराब।
ए बजाए बाजे कूदहीं, कहें हमें होत सवाब।।१५।।

जिसका बलपूर्वक धर्मान्तरण (मतान्तरण) करते हैं, उसे सुन्दर वस्त्र पहनाकर पुरस्कार रूप में हाथी पर चढ़ाते हैं किन्तु धर्म परिवर्तन से दुखी वह व्यक्ति तो सोचता है कि वह पतन की खाई में गिर चुका है। उस समय ये कट्टर पन्थी लोग बाजे बजाकर यह कहते हुए नाच कूद रहे होते हैं कि हमने बहुत ही पुण्य का कार्य किया है।

काफर को मुस्लिम करें, मिनें लेवें दीन हिसाब।
सिर मूढ़ दाढ़ी रखें, कहें हमें होत सवाब।।१६।।

जिन हिन्दुओं को काफिर कहते थे, उन्हें भय या लोभ से मुसलमान बनाकर अपनी संख्या में गिनने लगते हैं। उसके शिर के बालों को मुंड़वाकर दाढ़ी रखवा देते हैं और कहते हैं कि ऐसा करने से हमें पुण्य मिलता है।

खाना खिलावें आप में, देखलावें मसीत मेहेराब।
लेकर कलमा पढ़ावहीं, कहें हमें होत सवाब।।१७।।

अपने मत में शामिल किये हुए हिन्दुओं को ये दावतें देते हैं (भोजन कराते हैं)। इसके पश्चात् अपनी मस्जिदों की मेहराबों को यह कहकर दिखलाते हैं कि यह अल्लाह के मुख्य द्वार की तस्वीर है। पुनः वहाँ कल्मा पढ़ा देते हैं और कहते हैं कि आज हमने बहुत बड़ा पुण्य किया है।

चित दे एक चुनावहीं, हिंदू जो आद के आद।
सो जोरा करके ढ़हावहीं, कहे हमें होत सवाब।।१८।।

कई पीढ़ियों से धन एकत्रित करके हिन्दू लोग श्रद्धा पूर्वक जो मन्दिर बनाते हैं, उन्हें ये कट्टर पन्थी मुसलमान जबरन गिरा देते हैं और कहते हैं कि हमने पुण्य किया है।

हिन्दू मसीताँ ढ़हावहीं, मुसलमानसों वाद।
दे सोभा इष्ट दीन की, कहें हमें होत सवाब।।१९।।

इसी प्रकार हिन्दू भी मुसलमानों से झगड़े करके उनकी मस्जिदों को गिरा देते हैं। अपने इस कार्य को वे अपने आराध्य के प्रति श्रद्धा प्रकट करने एवं धर्म की वृद्धि का साधन समझते हैं और कहते है कि हमें पुण्य होता है।

भावार्थ- महाराजा छत्रसाल जी, छत्रपति शिवाजी एवं गुरू गोविन्द सिंह जी के औरंगजेब से बहुत से युद्ध हुए हैं किन्तु इन तीनों महापुरूषों ने किसी भी मस्जिद की एक ईट को भी क्षति नहीं पहुँचायी है, जबकि औरंगजेब ने अपने जीवन काल में सैकड़ों मन्दिरों को गिरवाकर वहां मस्जिदें बनवा दी हैं। उपरोक्त चौपाई में हिन्दुओं के द्वारा मस्जिदों को गिराने का जो प्रसंग है, वह छुट-पूट रूप से ही कहीं पर सामान्य जनता या जागीरदार द्वारा घटित हो गया होगा, जिसका यहां सांकेतिक रूप से उल्लेख है, किन्तु किसी भी महान राजा ने ऐसा नहीं किया है, जबकि मुहम्मद बिन कासिम, महमूद गजनवी, मुहम्मद गोरी, कुतुबदीन ऐबक, इल्तुतमिस, अलाऊदीन खिल्जी, मुहम्मद तुगलक, फिरोज तुगलक, बाबर, हुमायूं, अकबर, जहांगीर, शाहजहां से लेकर अब तक हजारों मन्दिरों को गिराकर मस्जिद बनाया जा चुका है, जिनमें काशी, मथुरा, सोमनाथ, धार आदि मुख्य हैं। यह हिन्दुओं की सहनशीलता और दूसरे मतों के प्रति सहिष्णुता का ही प्रभाव है कि केरल में भारत की सर्वप्रथम मस्जिद एक हिन्दू राजा ने स्वयं बनवायी।

सुध इट ना दीन की, मोह माते उनमाद।
ज्यों ज्यों वैर बढ़ावहीं, कहें हमें होत सवाब।।२०।।

इस प्रकार हिन्दू और मुस्लिम दोनों को ही न तो वास्तविक आराध्य अक्षरातीत की पहचान है और न धर्म के वास्तविक स्वरूप की। वे अपनी मान्यताओं को ही धर्म समझ बैठे हैं। दोनों ही अज्ञानता के नशे में डूबे हुए हैं। वे जितना ही एक दूसरे के प्रति वैर बढ़ाते हैं, उतना ही स्वयं को पुण्यवान मानते हैं।

गरक हुए मोह गुमानमें, जनम गमावत वाद ।
या विध खैंचें आप में, कहें हमें होत सवाब।।२१।।

कट्टर शरीयत की राह पर चलने वाले में मुस्लिम लोग मोह-अहंकार में डूबे हुए हैं। अपना सारा जीवन दूसरों से झगड़ा करने में ही बिता देते हैं। वे दूसरों को भय और लालच के द्वारा अपने मत में खींचते हैं और कहते हैं कि हम पुण्य का अर्जन कर रहे हैं।

यों पढ़े राह बतावहीं, खेलें मिने ख्वाब।
जाहेर जुलम होवहीं, कहें हमें होत सवाब।।२२।।

ये कुर्आन-हदीसों को पढ़कर सम्पूर्ण मुस्लिम जगत् का मार्ग-दर्शन करते हैं किन्तु यथार्थता से दूर स्वप्नलोक में जीते हैं अर्थात् सम्पूर्ण विश्व को अपनी शरीयत के ध्वज के नीचे लाना चाहते हैं। इस प्रकार ये प्रत्यक्ष अत्याचार करते हुए भी कहते हैं कि हमें ऐसा करने से पुण्य होता है।

पर सवाब तो तिन को होवहीं, छोटा बड़ा सब जिउ।
एकै नजरों देखहीं, सब का खावंद पिउ।।२३।।

किन्तु पुण्य तो उसे प्राप्त होगा जो संसार के छोटे-बड़े सभी प्राणियों को समान आत्मिक दृष्टि से देखे और यह माने कि सभी जीवों का परमात्मा एक ही है।

भावार्थ- कुछ कट्टरवादी मानसिकता वाले लोगों की यह मान्यता है कि 'अल्लाह' शब्द के उच्चारित करने अथवा बोलने का अधिकार मात्र मुस्लिमों को ही है, गैर मुस्लिमों को नहीं। यह एक प्रकार की विवेक हीन धारणा है। ऐसी ही धारणा उन पौराणिकों की भी रही है जो स्त्री तथा शूद्र को वेदाध्ययन का अधिकार नहीं देते।

जो दुख देवे किनको, सो नाहीं मुसलमान।
नबिऐं मुसलमान का, नाम धरया मेहेरबान।।२४।।

जो किसी भी प्राणी को शारीरिक या मानसिक रूप से पीड़ा देता है, उसे

मुसलमान कहलाने का अधिकार ही नहीं है। मुहम्मद साहब ने मुसलमान को मेहरबान अर्थात् दया से भरपूर कहा है। ''लाइकरा फिददीन्'' दीन में दबाब अनुचित हैं।

भावार्थ-पा. ८ सु. ६ आ. १५३ व अन्न हाजा सिराती मुस्तकीमन् फत्तबिअूहु व जा तत्तबिअुस्-सुबुल फतफरंक बिकुम् अन् सबीलिह जालिकुम् वस्साकुम् बिह तअल्लकुम् तत्कुन् (१५३) अर्थात् यदि कोई किसी को भौतिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक दृष्टि से पीड़ित करता है तो वह मुसलमान नहीं हो सकता।

कोई बूझे ना इसलाम को, ना लगें नबी के बान।
ना सुध सल्ली ना बंदगी, कहें हम मुसलमान।।२५।।

कट्टर शरीयत का झण्डा उठाने वाले इन लोगों में से कोई भी न तो इस्लाम के वास्तविक स्वरूप को समझता है और न मुहम्मद स.अ.व के कथनों का इनके हृदय पर कोई प्रभाव ही पड़ता है। इन्हे पवित्रता अथवा भक्ति के रहस्य का भी बोध नहीं है, फिर भी स्वयं को मुसलमान कहलाने का दावा करते हैं।

भावार्थ-पा. २५ सू. ४२ आ. १८ यस्तअ-जिलु बिहल्लजी-न लायुअमिनून् बिहा वल्लजीन् आमुनु मुस्फिकुन मिन्हा लायुअमिनुन व यअलममून अन्नहक्क आमुन अला इन्नलजी-न युमारू-न फिस्साअति लफी जलालिम-बअदी'' और जो लोग इस पर ईमान नहीं रखते वे इसके (कियामत) लिए जल्दी कर रहें है और जो मोमिन हों, वह इससे डरते है और वे जानते है कि वह कियामत) बरहक है। देखो जो लोग कियामत में और यह कि मेरा सीधा रास्ता यही है तो तुम उसी पर चलना और रास्तो पर न चलना (नहीं तो) खुदा के रास्ते से जुदा हो जाओगें। इन बातों का खुदा का हुक्म हो ताकि तुम परहेजगार बनों।

कौन दीन क्यों चलना, और क्यों रेहेनी फुरमान।
क्यों अंतर मांहें बाहेर, कहें हम मुसलमान।।२६।।

धर्म का वास्तविक स्वरूप क्या है? उसका आचरण करना क्यों आवश्यक है? कुर्आन के अनुसार हमारा बाह्य, (व्यवाहारिक) आन्तरिक (मानसिक) तथा आत्मिक आचरण कैसा होना चाहिए? इस विषय में ये पूर्णतया अनभिज्ञ हैं, फिर भी स्वयं को मुसलमान कहते हैं।

ना सुध उजू निमाज की, ना रोजे रमजान।
ना तसबी ना नाम की, कहें हम मुसलमान।।२७।।

न तो इन्हे नमाज के लिये पवित्रता कैसी लानी है, इसका ज्ञान है और न रमजान के महिने में उपवास के द्वारा अपने मन को शुद्ध करने के रहस्य का ही ज्ञान है। अल्लाह का नाम भी स्मरण कैसे करना है? ये नहीं जानते फिर भी स्वयं को मुसलमान कहते है?

सुध नहीं दिल साफ की, ना कछू सब्द पेहेचान।
ना सुध छल ना वतन, कहें हम मुसलमान।।२८।।

इन लोगों को यह भी पता नहीं है कि हृदय को निर्मल कैसे करना है?न ही मुहम्मद साहब के कथनों का ये आशय समझते हैं। न तो इन्हें इस मायावी जगत् की पहचान है और न अखण्ड निज घर की, फिर भी कैसी विडम्बना है कि ये अपने को मुसलमान कहते फिरते हैं?

मैं कौन आया किन ठौर से, कहा देखत हों जहान।
कौन नबी भेज्या किने, कहें हम मुसलमान।।२९।।

मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ? कैसे जगत् को देख रहा हूँ, मुहम्मद साहब कौन है? उन्हे किसने भेजा है? इन प्रश्नों का उत्तर इन के पास नहीं है फिर भी स्वयं को मुस्लिम कहलाने का दावा करते हैं।

हक को कबूं ना याद करें, हुए नहीं गलतान।
खुद कबूं ना सुपने, कहें हम मुसलमान।।३०।।

न तो अल्लाह तआला (परब्रह्म) को कभी प्रेम पूर्वक याद करते हैं न उनके प्रेम में डूबते हैं। स्वप्न में भी इन्हें अल्लाह का कोई अनुभव नहीं होता फिर भी ये अपने को मुसलमान कहते है।

ए तो आग है जलती, ताए लई सुख मान।
देखाए भी अंधे न देखहीं, कहें हम मुसलमान।।३१।।

सांसारिक विषय-भोग माया की वह धधकती हुई अग्नि है जिसमें जलने वाला निरन्तर दुःखी रहता है किन्तु इन्होंने तो उसे ही सुख मान लिया है। समझाने पर भी अंतः प्रज्ञा, विवेक से रहित ये लोग समझने के लिये तैयार नहीं हैं और जोर देकर कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

बाहेर के देखावहीं, अंदर आंख न कान।
सो कहा सुने कहा देखसी, कहे हम मुसलमान।।३२।।

शरीयत के बाह्य ज्ञान को ही सर्वोपरि मानकर ये स्वयं को धन्य-धन्य मान लेते हैं। यथार्थ को समझने के लिये न तो इनके पास अन्तर्दृष्टि है और न ही अन्तः श्रवण। ऐसी स्थिति में ये परमधाम का अलौकिक ज्ञान कैसे सुन सकते हैं और समझ सकते हैं? फिर भी ये अपने आप को मुसलमान मानते हैं।

विध भी देखावें बाहेर की, सुध नहीं वृध हान।
ना पेहेचान जो रूह की, कहें हम मुसलमान।।३३।।

इनकी बन्दगी भी मात्र शरीयत के नियमों के पालन तक ही सीमित है। इन्हें अपनी आध्यात्मिक हानि-लाभ का कोई ज्ञान नहीं है। ऐसी स्थिति में इन्हें अपनी आत्मा के स्वरूप की पहचान कैसे हो सकती है ?फिर भी इनका प्रबल दावा रहता है कि हम मुसलमान हैं।

गुन ना देखें काहू को, अवगुन लेवें सिरतान।
आप पड़े बस इंद्रियों, कहें हम मुसलमान।।३४।।

इन्हें किसी भी हिन्दू में कोई गुण नहीं दिखायी देता। दूसरों के अवगुण को बहुत बढ़ा चढ़ाकर देखते हैं। स्वयं तो इन्द्रियों के विषय भोगों में लिप्त रहते हैं और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

भावार्थ- अलाऊदीन खिलजी, बाबर, हुमायू, अकबर, जहांगीर, शाहजहां आदि बादशाह विषय भोग में इतने लीन थे कि इन्होंने हजारों स्त्रियों को अपने हरम में बलपूर्वक रखा था और उनका सतीत्व नष्ट किया था। इनसे अपनी रक्षा के लिए ही चित्तौड़, जैसलमेर तथा सिन्ध मे हजारों क्षत्राणियों ने जलती हुई चिता में कूद कर अपने प्राण त्याग दिये थे (जौहर कर लिया था)। मांस, शराब, हत्या तथा विषय भोग के अतिरिक्त आध्यात्मिकता का कुछ भी अंश इनके जीवन में नहीं था।

जुलम करें कई जालिम, मूंदी आँखें गुमान।
खून करते ना डरें, कहें हम मुसलमान।।३५।।

ये अत्याचारी लोग निर्दोष लोगों पर तरह-तरह के अत्याचार करते हैं। अत्यधिक अहंकार के कारण ये अपनी आंखे बन्द किये रहते हैं अर्थात् किसी की करूण पुकार सुनने के लिये इनके पास हृदय ही नहीं है। किसी का खून (हत्या) करने में इन्हें पाप का जरा भी डर नहीं लगता फिर भी ये अपने को मुसलमान कहकर गौरवान्वित होते हैं।

भावार्थ- शिवाजी के पुत्र संभा जी की दोनों आंखें निकालकर उनके शरीर के

टुकड़े-टुकड़े कर दिए गये। इसी प्रकार भाई मतिराम को जहां औरंगजेब के आदेश पर आरे से चिरवाया गया वही भाई सतीदास जी को खौलते हुए गर्म तेल में डाल दिया गया। बन्दा वैरागी जी के टुकड़े-टुकड़े कर दिये गये। उनके छः वर्षीय पुत्र की भी हत्या कर उसका मांस बन्दा वैरागी के मुंह में ठूँस दिया गया। इस प्रकार की क्रूरता के अनेकों उदाहरण मुहम्मद गोरी, बाबर, हुमाँयू, अकबर, सिकन्दर, लोदी, फिरोज, तुगलक आदि के शासन काल में घटित हुए।

नीयत ना नीकी कबहूं, जनम दगाई जान।
निस दिन चाहें छल को, कहें हम मुसलमान।।३६।।

इनकी मनोभावना कभी भी अच्छी नहीं होती। जन्म से ही इनमें दूसरों को धोखा देने की प्रवृत्ति होती है। दूसरों के साथ दिन-रात छल करते हैं फिर भी कहते हैं कि हम मुसलमान है।

मने उड़ाए तूल ज्यों, न पावें ठौर ठेहेरान।
सो सारे गफलतें फिरें, कहें हम मुसलमान।।३७।।

इनका मन रूई के फुए की भांति सांसारिक विषयों में उड़ता रहता है। उसे शान्ति के लिये कोई स्थान (ज्ञान, भक्ति का मार्ग) नहीं मिलता। इस प्रकार सभी कट्टर पन्थी अज्ञानता में भटकते फिरते है और दावा करते हैं कि हम मुसलमान हैं।

ले गरब खड़े होवहीं, जाने हम ही मेर समान।
ना सुध भारी हलके, कहें हम मुसलमान।।३८।।

पद, प्रतिष्ठा, धन और मजहब के अहंकार में उन्मत होकर ऐसा व्यवहार करते हैं, जैसे ये सुमेरू पर्वत के समान ऊचें हैं। इन्हें इतना भी पता नहीं होता कि कौन उससे छोटा (स्नेह का पात्र) है तथा कौन बड़ा (सम्मान का पात्र)। सबके साथ अपमान जनक व्यवहार करते हुए भी ये स्वयं को मुसलमान के रूप में घोषित करते है।

कहे अंग तो काम क्रोध के, गोस्त खान मद पान।
हक हराम न जानहीं, कहें हम मुसलमान।।३९।।

इनके हृदय में काम, क्रोध की ज्वाला धधकती रहती है। मांस खाने तथा शराब पीने में ही जीवन का सर्वोपरि सुख मानते हैं। इन्हें यह भी पता नहीं है कि ईमानदारी की कमाई क्या होती है तथा पाप की कमाई क्या होती है। इतनी विकृतियां होते हुए भी ये

स्वयं को मुसलमान मानते हैं।

सुपेत हुए स्याही गई, स्याही अंदर बढ़ती जान।
काट गला लोहू पीवहीं, कहें हम मुसलमान।।४०।।

दिन-प्रतिदिन इनके मन की कालिमा अधिकाधिक रूप से बढ़ती ही जाती है। पाप करते करते इनके काले बाल भी सफेद हो गये हैं अर्थात् युवावस्था से वृद्धावस्था तक इन्होंने पाप ही पाप किया है। दूसरों का गला काटकर उनका खून भी पी जाते हैं, फिर भी यह कहने में संकोच नहीं करते हैं कि हम मुसलमान हैं।

पा. २५ सू. ४२ आ. ४२ ''इन्नमस्सबीलु अलल्लजीन यज़्लिमुन्नास व यब्गून फिल्अर्जि विगैरिल्-ह्क्कि अुलाअिक जहुम् अजाबुत् अलीमुन् (४२) अर्थात् इल्जाम तो उन लोगों पर हैं जो लोगो पर जुल्म करते है। और मुल्क में नाहक फसाद फैलाते है। यहीं लोग है जिन को तक्लीफ देने वाला अजाब होगा।

पा. २६ सू. ४७ आ. ११ '' जालिक बिअन्नला-ह मोहल्जी-न आमुनू व अन्नल काफिरी-न ला मौला लहुम'' अर्थात् यह इसलीए कि जो मोमिन है उनका खुदा कारसाज है और काफिरो का कोई कारसाज नहीं है।

दुख ना देखें और को, ऐसे हिरदे निपट पाखान।
दुख देते ना सकुचें, कहें हम मुसलमान।।४१।।

इन कट्टर पन्थियों के हृदय पत्थर के समान इतने कठोर होते हैं कि ये पीड़ा से कराहते हुए लोगों की ओर आंख उठाकर देखना भी पसन्द नहीं करते। किसी को शारीरिक या मानसिक रूप से दुख पहुँचाने में इन्हें जरा भी संकोच नहीं होता है, फिर भी इनका दावा होता है कि हम मुसलमान हैं।

भावार्थ-उपरोक्त चौपाईयों के चौथे चरण में कथित 'कहे हम मुसलमान' का आशय यह है कि एक सच्चे मुसलमान को ये बूरे कर्म नहीं करना चाहिए। जो चौपाई में दर्शाये गये बूरे कर्मो को करता है, वह यथार्थ में मुहम्मद स.अ.व तथा कुर्आन के सिद्धान्तों के विपरीत आचरण करता है। उसे किसी भी स्थिति में मुसलमान कहलाने का कोई अधिकार नहीं है।

ब्राह्मण कहें हम उत्तम, मुसलमान कहें हम पाक।
दोऊ मुठी एक ठौर की, एक राख दूजी खाक।।४२।।

हिन्दुओं मे ब्राह्मण कहते है कि हम सर्वश्रेष्ठ हैं तो मुसलमानों का कहना है कि मात्र वे ही पवित्र हैं। सच तो यह है कि ये दोनों ही मोह सागर से उत्पन्न होने वाले जीव हैं। हिन्दू मरता है तो उसका शरीर जलकर राख हो जाता है तथा मुसलमान को मरने के पश्चात् धरती में दफना दिया जाता है जिससे उसका शरीर मिट्टी में मिलकर मिट्टी जैसा ही हो जाता है। अपने आत्मिक स्वरूप की पहचान दोनों में से किसी को भी नहीं है।

कुफर न काढ़ें आपको, और देखें सब कुफरान।
अपना अवगुण ना देखहीं, कहें हम मुसलमान।।४३।।

ये अपने मन के कुफ्र (परब्रह्म के प्रति अविश्वास, बेईमानी) को नहीं छोड़ते तथा दूसरों को काफिर कहते रहते है। इन्हें अपने अवगुण जरा भी दिखाई नहीं देते और स्वयं को मुसलमान होने का ढिंढ़ोरा पिटते फिरते हैं।

ज्यों सुपनें में मनुआ, आप भाव सब ठौर।
तरंग जैसा आप में, सोई देखे मिने और।।४४।।

जिस प्रकार कोई मनुष्य अपने मन के भावों के अनुसार ही सपना देखा करता है, उसी प्रकार इनके मन में जिस प्रकार के पापमयी विचारों की तरंगें प्रवाहित होती हैं, वैसे ही दूसरों के मन के प्रति इनकी सोच अपने जैसी ही होती है।

बदी न छोड़ें एक पल, डर न रखें सुभान।
फैल करें चित चाहते, कहें हम मुसलमान।।४५।।

एक पल के लिये भी ये बूरे कार्य करना बन्द नहीं करते। परब्रह्म से मिलने वाले दण्ड का इन्हें जरा भी भय नहीं होता। धर्म-अधर्म का विवेक किये बिना विकारों से भरे मन में जो इच्छा होती है वही करते हैं तथा कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

भार्वाथ-यजीद से लेकर मुहम्मद बिन कसिम, सिकन्दर लोदी, अलाउदीन खिलजी, नादिर शाह तथा वर्तमान समय में आई एस आई. एस. के आतंकवादियों से दया, धर्म की अपेक्षा नहीं की जा सकती है। इन्होंने इस्लाम की चादर ओढ़ कर हमेशा ही कुर्आन के सिद्धान्तों के विपरीत आचरण किया है।

ना परतीत जो और की, यों पढ़े काजी कुरान।
राह बतावें और को, कहें हम मुसलमान।।४६।।

दूसरे सामान्य लोगों में जितना विश्वास कुर्आन के प्रति है, उतना विश्वास इन काजियों को नहीं है, किन्तु ये कुर्आन पढ़कर दूसरों को उस पर चलने के लिए कहते हैं

और स्वयं को मुसलमान मानते हैं।

हिरदे फूटे ऐसे बेसुध, एता भी न रहे याद।
खुद काजी आखिर होएसी, तब देसी कहा जवाब।।४७।।

इनके हृदय के नेत्र फूटे हुए हैं अर्थात् ये विवेक से पूर्णतया रहित हैं। माया में डूबे रहने से कुर्आन की इतनी सी बात भी इन्हें याद नहीं है कि जब कियामत के समय परब्रह्म न्यायाधीश बनकर न्याय करेंगे तब ये उन्हें क्या उत्तर देंगे?

कलाम अल्ला काजी पढ़ें, पर होत नहीं आकीन।
कैसा डर कौन आवहीं, तो हलका किया दीन।।४८।।

काजी लोग कुर्आन को बाह्य रूप से पढ़ते भर ही हैं किन्तु उन्हे स्वयं उस पर विश्वास नहीं है। ऐसी स्थिति में उन्हें इस बात का कैसे डर हो सकता है कि इस कियामत के समय में कौन आने वाला है? इस प्रकार इन्होने धर्म-क्षेत्र को गरिमा हीन कर दिया है।

भावार्थ- धर्म शाश्वत और अनादि है। वह सत्य का स्वरूप है, इसलिये वह कभी नष्ट नहीं हो सकता। मनुष्य द्वारा प्रवर्तित मत (मजहब) की उपासना पद्धति, एवं अनुयायियों आदि की संख्या में ह्रास (पतन) हो जाता है, जिसे मजहब का नष्ट होना तो कह सकते हैं किन्तु धर्म का नष्ट होना नहीं कह सकते।

तिनों तो सस्ता किया, जिनों नहीं भरोसा निदान।
या विध आपे अपना, हलका करें कुरान।।४९।।

जिन कट्टर पन्थी लोगों को मुहम्मद स.अ.व के कथनों पर ही विश्वास नहीं है, उन्होंने आखरूल इमाम मुहम्मद महदी की पहचान नहीं की। इस प्रकार इन्होंने अपने रसूल साहब की बातों को गरिमाहीन बना दिया और अपनी तथा कुर्आन की भी महत्ता को कम कर दिया।

महामत केहेवे यों कर, ए पढ़े बड़े कुफर।
बातून नजर इन को नहीं, तो कजा की न हुई खबर।।५०।।

इन लोगों की इस स्थिति को देखकर श्री महामति जी कहते हैं कि कुर्आन के बाह्य अर्थ लेने वाले ये कट्टरवादी मुल्ला-काजी बड़े ही विश्वास हीन (काफिर) हैं। इनकी अन्तर्दृष्टि नहीं है, जिसके कारण ये जान ही नहीं पाये कि कियामत का समय आ गया हैं तथा न्यायधीश के रूप में इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी प्रकट हो चुके हैं।

।।प्रकरण।।४०।।चौपाई।।१५९०।।

सनंध–पत्री बड़ी

इस प्रकरण में श्री जी के द्वारा पत्री के माध्यम से सुन्दरसाथ को उद्‌बोधन है। इसके अवतरण के सम्बन्ध में पूर्व में समीक्षा की जा चुकी है।

तुमको देऊँ सुख जागनी, साथजी मेरे आधार।
भेख धरे जो वासना, छोटे बड़े नर नार।।१।।

श्री महामति जी कहते हैं कि हे साथ जी! आप मेरे जीवन के आधार हैं। मुझे आपको जागनी का सुख देना है। आपने इस संसार में कहीं स्त्री के रूप में तो कहीं पुरूश के रूप में ज्ञान, पद एवं धन आदि की दृष्टि से बड़े या छोटे कहे जाने वाले मानव तन को धारण किया है।

सुनियो भीम मकुंदजी, ऊद्धव केसा स्याम।
हम पाती पढ़ी महंमद की, सब पाई हकीकत धाम।।२।।

हे भीम भाई, मुकुन्द दास जी, उद्धव जी, केशव जी तथा श्याम भट्‌ट जी! मेरा यह कथन सुनिए। मैंने प्रियतम परब्रह्म के द्वारा मुहम्मद साहब के हाथ भेजी गयी उस पाती (कुर्आन) को पढ़ा है। उसमें परमधाम की सारी पहचान लिखी हुई है, जिसे मैंने प्राप्त किया है।

अपने घर की इसारतें, और न समझे कोए।
और कोई तो समझे, जो कोई दूसरा होए।।३।।

कुर्आन में परमधाम की बातें संकेतों में लिखी हुई हैं। जिन्हें हमारे अतिरिक्त अन्य कोई भी नहीं समझ सकता है। उसे तो मात्र वही समझ सकता है जो परमधाम का रहने वाला है।

वतन की बातें सबे, पाई हमारी हम।
सो ए रोसन करते हों, कहियो साथ को तुम।।४।।

मैंने कुर्आन में परमधाम की अपनी सभी महत्वपूर्ण बातों को पा लिया है। उन्हें मैं पत्र के माध्यम से लिख कर भिजवा रहा हूँ। आप अन्य सुन्दरसाथ को भी इसे अवश्य बताना।

किया बरनन श्री धाम का, कई विध लिखे निसान।
साथ को सुख उपजावने, ठौर ठौर किए बयान।।५।।

सुन्दरसाथ को आत्मिक सुख देने के लिये कुर्आन में स्थान-स्थान पर परमधाम का वर्णन किया गया है तथा अनेक प्रकार से संकेतों में परमधाम की पहचान दी गयी है।

जमुना जरी किनार पर, कई दयोहरियाँ तलाब।
भांत भांत रंग झलकत, यों कई जवेर जड़ाव।।६।।

यमुना जी के किनारे मोती जड़े हुए हैं। हौज कौसर ताल में कई द्योहरियां आयी है, जिनमें अनेक प्रकार के जवाहरात जड़े हुए हैं और अनेक रंगों की झलकार कर रहे हैं।

नीर उजले खीर से, खुसबोए जिमी रेत सेत।
पसु कई विध खेलहीं, यों कागद निसानी देत।।७।।

यमुना जी का जल दूध से अधिक उज्ज्वल है। वहां की धरती सुगन्धि से भरपूर है तथा रेत अत्यधिक श्वेत रंग की है। पशु-पक्षी अनेक प्रकार की क्रीड़ायें करते रहते हैं। कुर्आन में इस प्रकार का वर्णन किया गया है।

सबज बन कई रंग के, जवेर कई झलकत।
सैयां बरनन इसारतें, कई पंखी मिने घूमत।।८।।

परमधाम में अनेक-रंगों के हरे-भरे वन हैं, जिनमें तरह-तरह के जवाहरात झलकार करते हैं। इन वनों में अनेक प्रकार के पक्षी भ्रमण किया करते हैं। हे साथ जी! कुर्आन में इस प्रकार संकेतों में परमधाम का वर्णन किया गया है।

पा.८ सू.७ आ. ६४ फकज्जबहु फअन्जोनाहु वल्लजीन मअहु फिल्फुल्कि व अग्रक्नल्लजीन कज्जबू बिआयातिना इन्नहुम् कानू कौमन् अमीन'' अर्थात् इस पर भी उन्होंने उसे झुठलाया तो हमने नूह को और उन लोगों को जो उसके साथ किश्ती में सवार थे तूफान से बचा लिया, और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया था उसको डुबोकर नष्ट कर दिया। वह अपना भला-बूरा न देख पानेवाले अन्धे थे।

कह्या मैं तारतम तुमको, मूल वचन जिन पर।
सो सारे इनमें लिखे, निसान अपने घर।।९।।

हे साथ जी! मैंने तारतम ज्ञान से आपको परमधाम के जिन मूल वचनों की पहचान करायी थी, वे सारे वचन कुर्आन में भी लिखे हुए हैं। इसमें अपने परमधाम की

साक्षियां हैं।

भावार्थ- प्रकाश हिन्दुस्तानी की प्रकट वाणी की ८ वीं चौपाई का प्रारम्भ ही इन शब्दों से होता है कि 'अब सुन्यो मूल वचन प्रकार, जब नहीं उपज्यो मोह अहंकार' इसके पूर्व छठीं चौपाई में ब्रह्मात्माओं में अक्षर ब्रह्म की लीला तथा अक्षर ब्रह्म में परमधाम की लीला को देखने की इच्छा को इस जगत की उत्पति का कारण बताया गया है। कुर्आन की आयत 'अलस्तो बिरब्ब कुम्म' का अर्थ ही होता है 'क्या मैं तुम्हारा प्रियतम नहीं हूँ'। उतरते अरवाहो सों, हके कह्या अलस्तो बे रब्ब कुम्म' का कथन यही सिद्ध करता है कि 'मूल वचन' का तात्पर्य इश्क-रब्द (प्रेम-संवाद) के समय 'प्रियतम को संसार में न भूलने' के वचनों से है।

ऊपर से तले आए के, सब बैठियाँ खेल देखन।
भेली रूह भगवान की, हुकम हुआ सबन।।१०।।

तीसरी भूमिका से नीचे उतर कर परमधाम की आत्मायें माया का खेल देखने के लिये मूल मिलावें में बैठ गयी। साथ में अक्षर ब्रह्म की आत्मा भी खेल देखने के लिये अपने अक्षरधाम में तत्पर हो गयी। इस प्रकार इस मायावी जगत् का खेल और परमधाम की लीला देखने के लिये प्रियतम अक्षरातीत का आदेश हुआ।

हुई रात सबन को, तिन फेरे खेल में मन।
सोई रात सोई साइत, पर भूल गैयाँ वह दिन।।११।।

सभी को ऐसे लगा, जैसी रात्रि की नींद (फरामोशी) जैसी अवस्था हो गयी है। इस अवस्था में सबकी सुरता (मन) इस नश्वर जगत् में आ गयी। यद्यपि परमधाम में फरामोशी (नींद) हुए अभी वही पल, वही समय है किन्तु ब्रह्मात्मायें इस बात को संसार में भूल गयी हैं, कि परमधाम में अभी भी साढ़े चार बजे दिन का समय है।

तीन तकरार कहे रात के, तिन तीनों के बयान।
बृज रास और जागनी, ए कई विध लिखे निसान।।१२।।

निद्रा (रात्रि) के इस खेल के तीन भाग हैं- १-व्रज, २-रास, ३-जागनी। कुर्आन में इन तीनों भागों का वर्णन अनेक प्रकार से संकेतो में लिखा हुआ है।

भावार्थ- कुर्आन के पा. १ सू. ७ आयत १७२ " " में यह प्रसंग वर्णित है।

फुरमान उसी साइत का, पिया भेज्या हम पर।
सारी विध सोई लिखी, जो कही बाई सुन्दर।।१३।।

उसी समय प्रियतम ने हमारे लिये कुर्आन भेजा जिसमें इश्क रब्द से सम्बन्धित वे ही सारी बातें लिखी हैं, जो सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी ने सब सुन्दरसाथ को बतायी थी।

भावार्थ- व्रज, रास, में ब्रह्मात्माओं की माया देखने की इच्छा अभी पूर्ण नहीं हो सकी थी, इसलिये परात्म में जागृत होने के पश्चात् प्रियतम परब्रह्म से उन्होंने खेल देखने की इच्छा पुनः प्रकट कर दी। इसी समय परब्रह्म ने अक्षर ब्रह्म की आत्मा को मुहम्मद स. अ. व. के रूप में अपना संदेश वाहक बनाकर संसार में भेजा। जब मुहम्मद साहब को मेयराज हुआ और उनकी आत्मा मूल मिलावे में पहुँची तो देखा कि सभी ब्रह्मात्माओं के ऊपर फरामोशी थी, अर्थात् उनकी सूरता न तो अभी संसार मे आयी थी और न परमधाम में जागृत ही थी, अपितु उनकी सूरता पर फरामोशी का आवरण डाला ही गया था और उन्हें अपनी ओर देखने के लिये कहा था। मुहम्मद साहब और श्री राज जी में जो नब्बे हजार हरूफ वार्ता हुई, उसी के ६० हजार हरूफ कुर्आन में अवतरित हुए। उपरोक्त चौपाई के पहले चरण में कथित 'उसी साइत' का यही आशय है।

धाम रास और बृज की, कही सुन्दरबाईऐं जेह ।
ए तो कागद नेक देखिया,देत साख सब एह ।।१४।।

सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी ने परमधाम, रास, तथा व्रज लीला का जो वर्णन किया है, वह सारा वर्णन कुर्आन में भी लिखा हुआ है। इस साखी को मैंने कुर्आन में अच्छी प्रकार देखा है।

काल माया जोग माया, तीसरी लीला जागन।
सुन्दरबाईऐं ना कहे, ए आगम के वचन।।१५।।

कालमाया के ब्रह्माण्ड में ११ वर्ष, ५२ दिन तक व्रज की लीला हुई। इसके पश्चात् योगमाया के ब्रह्माण्ड (केवल ब्रह्म के अन्दर नित्य वृन्दावन) में महारास की लीला हुई। अब तीसरी लीला जागनी की है जो वर्तमान समय में कालमाया के इस ब्रह्माण्ड में हो रही है। सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी ने इस जागनी लीला के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा।

भावार्थ- यद्यपि सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी ने श्री मिहिरराज जी को शकुण्डल, सकुमार तथा उन्हें विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप में उजागर होने के सम्बन्ध में

संकेतों में बताया था, किन्तु जागनी लीला का सम्पूर्ण विस्तृत विवरण नहीं बताया था। उपरोक्त चौपाई का यही आशय है।

सुन्दरबाईऐं देखिया, दिल के दीदों मांहें।
बृज रास और धाम की, पर जागनी की सुध नांहें।।१६।।

सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी ने अपने आत्मिक नेत्रों से परमधाम तथा अखण्ड व्रज एवं रास को प्रत्यक्ष रूप से देखकर वर्णन किया किन्तु उन्हें जागनी की सुधि नहीं थी।

और सुख कई विध के, कई विध किए प्यार।
सुंदरबाई के संगतें, कई औरों पाए दीदार।।१७।।

आड़ीका लीला के माध्यम से उन्होंने सुन्दरसाथ को अनेक प्रकार के सुखों का अनुभव कराया तथा उन्हें बहुत प्यार भी दिया। सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी की सानिध्यता में बहुत से सुन्दरसाथ ने श्री राज जी का इन भौतिक नेत्रों से प्रत्यक्ष दर्शन भी प्राप्त किया।

भावार्थ- लीलबाई जी के देह त्याग के समय श्री राजजी ने उन्हें प्रत्यक्ष दर्शन दिया। उनके विशेष आग्रह के कारण वहाँ उपस्थित सभी सुन्दरसाथ ने श्री राज जी का प्रत्यक्ष दर्शन प्राप्त किया। आडीका लीला के माध्यम से भी श्री कृष्ण रूप में सुन्दरसाथ ने साक्षात्कार का लाभ प्राप्त किया।

अंतरगत आरोगते, तीन बेर पिया आऐं।
आप भी मेवे मिठाइयाँ, कई हम को आन खिलाऐं।।१८।।

गांगजी भाई के घर (चाकला मन्दिर) में प्रियतम परब्रह्म प्रतिदिन श्री कृष्ण रूप में तीन बार प्रकट होकर प्रत्यक्ष रूप से भोजन करते थे। उन्होंने मुझे भी कई बार मेवे मिठाईयां खिलायी हैं।

विध विध के सुख और कई, देत दायम अनेक।
पर लीला जो जागन की, कदी वचन न पाया एक।।१९।।

इस प्रकार श्री राज जी ने अनेक प्रकार से हमें प्रेममयी लीला का निरन्तर सुख दिया किन्तु जागनी लीला के सम्बन्ध में एक वचन भी उन्होंने सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी से नहीं कहा।

लरी सुंदरबाई पिउसों, इन आगम के कारन।
पर पाया नहीं पड़ उत्तर, एक आधा भी सुकन।।२०।।

सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी के अन्दर विराजमान श्यामा जी की आत्मा ने प्रियतम परब्रह्म से भविष्य में होने वाली जागनी लीला के सम्बन्ध में बताने के लिये बहुत आग्रह किया (विवाद किया)। किन्तु श्री राज जी से उन्हें किसी बात का आधा भी उत्तर नहीं मिला।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में तीव्र आग्रह को ही लड़ाई करना कहा गया है। इसे लौकिक विवाद की दृष्टि से नहीं देखना चाहिए।

इन पड उत्तर वास्ते, बाईजीऐं किए उपाए।
विलख विलख वचन लिखे, सो ले ले रूहें पोहोंचाए।।२१।।

जागनी के सम्बन्ध में उत्तर पाने के लिये श्री देवचन्द्र जी ने तरह-तरह के उपाय किये। उन्होंने रो-रोकर अपने तन से जागनी कराने के लिये पत्र लिखा और उसे भोजन के समय दर्शन लीला में प्रकट होने वाले श्री कृष्ण रूप धारी श्री राज जी से उत्तर देने के लिये सुन्दरसाथ के हाथ से दिलवाया।

यों उनहत्तर पातियां, लिखियां धाम धनी पर।
तब सैयां हम भी लिखी, पर नेक न दई खबर।।२२।।

इस प्रकार, सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी ने अपने तन से जागनी कराने के लिये प्रियतम अक्षरातीत को ६९ पत्र लिखे। इसके पश्चात् सद्गुरू महाराज के निर्देश पर मैंने भी पत्र लिखा किन्तु श्री राज जी ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया।

भावार्थ- जब श्री मिहिरराज प्रथम बार सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी के चरणों में आये और उन्हें प्रणाम किये तो वे सभी पत्र श्री मिहिरराज जी के वस्त्रों से गिर पड़े। जिन्हें स्वयं श्री देवचन्द्र ने लिखा था। यह देखकर श्री देवचन्द्र जी समझ गये कि जागनी की लीला श्री मिहिरराज जी के तन से होनी है, अतः उन्होंने श्री मिहिरराज जी के द्वारा धाम धनी को इस आशय से पत्र लिखवाया कि प्रियतम अक्षरातीत पहले श्री देवचन्द्र जी के तन से जागनी करवायें। फिर भी कोई उत्तर नहीं मिला।

सो सुध सारी ल्याइया, लीला आगूं से निसान।
जागनी की सुध सब लिखी, तुम लीजो साथ चित आन।।२३।।

जागनी लीला की सारी सुधि मुहम्मद स.अ.व कुर्आन के द्वारा लेकर आये हैं। कुर्आन में जागनी लीला से सम्बन्धित साक्षियाँ पहले से ही लिखी हैं। हे साथ जी! आप इस बात को अपने मन में बसा लीजिए।

भावार्थ- कुर्आन के पारा ३.सु. २ आ. २६ में स्पष्ट लिखा है कि सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी के तन से ३१३ आत्माओं की जागनी होगी। पा ३ सू ३ आ १३ ''कद् कान् लकुम् आयतुन् फी फिअतैनिल्तकता फिअतुन् तुकातिलु फी सबीलिल्लाहि व अुख्रा काफिरतुंय्यरौनहुम् मिस्लैहिम् रअ्यल्अैनि वल्लाहु युअय्यिदु बिनस्रिह मंय्यशाअु इन्न फी जालिक ल इब्रतल्लिअुलिल्'' अर्थात् अभी उन दो गिरोहों में तुम्हारे लिए खुदाई कुदरत की एक निशानी प्रमाणि हो चुकी है जो एक-दूसरे से बद्र के युद्ध में लड़े गये। एक गिरोह मुसलमानों का जो अल्लाह की राह पर चलता लड़ता था और दूसरा गिरोह काफिरों का था, जिनको अपनी आँखों से मुसलमानों का गिरोह अपने से दूना दिखलाई दे रहा था। और अल्लाह अपनी मदद से जिसको चाहता है, बल देता है। इसमें संदेह नहीं कि जो लोग सूझ रखते हैं, उनके लिए इन घटनाओं में नसीहत हैं।

अव्वल मध और आखिर, यामें तीनों की हकीकत।
पर ए पावें एक इमाम, जित हुकम नूर महामत।।२४।।

इस कुर्आन में परमधाम से लेकर व्रज, रास और तीसरी जागनी लीला का सम्पूर्ण वृतान्त संकेतों में वर्णित है किन्तु इसके रहस्य को मात्र आखरूल इमाम मुहम्मद महदी श्री प्राणनाथ जी ही जानते हैं जिनके पास तारतम ज्ञान का अखण्ड प्रकाश है और धर्मग्रन्थों के गुह्य रहस्यों को प्रकट करने के लिये परब्रह्म का आदेश है।

भावार्थ-कुर्आन के पा. ६ सू. ५ आ. ६७ ''या अय्युहर्रसूलु बल्लिग् मा अुन्जिल् इलैक मिर्रब्बिक व इल्लम् तफ्अल फ मा बल्ग्त रिसालतहु वल्लाहु यऽ्सिमुक मिनन्नासि इन्नल्लाह ला यह्दिल-कौमल्-काफिरीन'' अर्थात् ऐ पैगम्बर् जो तुम्हारे पालन कर्ता की तरफ से कुर्आन के जरिये पैगाम उतरा हैं उसे लोगों तक पहुँचा दो और अगर तुमने ऐसा न किया तो तुमने अल्लाह का पैगाम कुछ नहीं पहूँचाया और अल्लाह तुमको लोगों की शरारत से बचायेगा क्योंकि अल्लाह काफिरों की कौम को राह नहीं देता।

पा. ७ सु. ६ आ. ५० ''कुल् ला अक्लु लकुम् इन्दी खजाइनुल्लाहि व ला अऽलमुल्गैब व ला अकूलु लकुम् इन्नी मलकुन् इन् अत्तबिअु इल्ला मा यूहा इलय्य कुल् हल् यस्तविल्अऽमा वल्बसीरू अफल्ला ततफव'' ऐ पैगम्बर! कह दो कि मैं तुमसे नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के खजाने हैं, और न मैं गैब (अदृष्ट) का जानकार हूँ, और न मैं तुमसे यह कहता हूँ कि मैं फिरिश्तः हूँ, मैं तो बस उसी पर चलता हूँ जो मेरी तरफ से अल्लाह का हुक्म आता है। नबी! उनसे पूछो कि क्या अन्धा और जिसको सूझ पड़ता है, दोनों बराबर हो सकते हैं?क्या तुम विचार से काम नहीं लेते।

ज्यों आया नूर तारतम, श्री देवचंदजी के पास।
सो विध सब इनमें लिखी, ज्यों कर हुआ प्रकास।।२५।।

कुर्आन में इस प्रसंग का भी वर्णन है कि किस प्रकार सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी को परब्रह्म का साक्षात्कार हुआ और उनसे तारतम ज्ञान का अखण्ड प्रकाश प्राप्त हुआ।

भावार्थ- पा. ७ सु. ५ आ. १०६ ''यौम यज्मअुल्लाहुर्-रसुल फयकूलु माजा अुजिब्तुम् कालू ला इल्म लना इन्नक अन्त अल्लामुल्गुयूबि'' अर्थात् जबकि अल्लाह पैगम्बरों को आखिरत में जमा करके पूछेगा कि तुमको अपने समय के लोगों से क्या उत्तर मिला तो, वह कहेंगे कि हमको प्रकट छोड़कर उनके अमल कुछ मालूम नहीं, गैब (अदृष्ट) की बातें तो तू ही खूब जानता हैं।

पा. ७ सु. ५ आ. ११० '' इज् कालल्लाहु या इसब्न मर्यमज्कुर् निऽमती अलैक व अला वालिदतिक इज् अय्यत्तुक बिरूहिल्कुदुसि तुकल्लिमुन्नास फिल्महूदि व कह्लन् व इज् अल्लम्तुकल्-किताब वल्हिक्मत वत्तौरात वल्इन्जील व इज् तख्लुकु मिनत्तीनि कहैअतित्तैरि बिइज्नी फतन्फुखु फीहा फतकून तैरम्-बिइज्नी व तुब्रिअुल्-अक्मह वल् अब्रस बनी इस्राइल अन्क इज् जिअ्तहुम् बिल्बय्यिनाति फकालल्लजीन कफरू मिन्हुम् इन् अन् आमिनू बी व बिरसूली''

पा. १६ सु. १६ आ. १० ''काल रब्बिज्अल्ली आयतन् काल आयतुक अल्ला तुकल्लिमन्नास सलास लयालिन् सविय्यन्'' अर्थात् (जकरिया ने) निवेदन किया कि ऐ परवरदिगार! मेरे लिए कोई निशानी ठहरा दे। कहा कि तुम्हारी निशानी यही है कि तुम बराबर तीन रात (दिन) तक भले चंगे रहकर भी लोगों से बात नहीं कर सकोगे।

फुरमान ल्याए महंमद, सब लिखी हमारी बात।
जरा एक ना घट बढ़, सब अंग निसानी जात।।२६।।

मुहम्मद साहब कुर्आन लेकर आये हैं जिसमें हमारी सारी बातें लिखी हैं। वास्तविकता से रंचमात्र भी इधर-उधर नहीं है। कुर्आन के सभी पारों में ब्रह्मात्माओं की ही साक्षी है।

पा. २५ सु. ४३ आ. १-५ ''बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रह्मि हामीम''/''अफ नज़्रिबु अन्कुमुज्जिक्र सफ्हन अन् कुन्तुम् कौमम्-मुस्रिफिन'' अर्थात् हामीम् इस वाजेह स्पश्ट किताब की कसम हमने इस कुर्आन को अरबी जबान में रखा हैं ताकि अपनी मादरी जबान में सरलता से तूम समझ लो। और यह कुर्आन हमारे यहाँ किताब लौह मौहफूज में लिखी हुई और बड़े उचे दर्जे की और हिकमत (तत्वज्ञान) से भरी हैं। तो क्या इस वजह से कि तुम लोग हद से बाहर मर्यादा भ्रष्ट हो गये हो, हम नसीहत यानी कुर्आन की और तुमको मुखातिब करना छोड़ देगें

श्री देवचंदजी सों जुध किया, कुली दज्जाल जिन पर।
ईसा दो जामें पेहेरसी, सो लिखी सारी खबर।।२७।।

कुर्आन में यह बात भी लिखी है कि माया रूप कलियुग (दज्जाल) ने किस प्रकार सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी से युद्ध किया। श्री श्यामा जी की आत्मा दो तनों श्री देवचन्द्र जी और श्री मिहिरराज जी में किस प्रकार लीला करेंगी- यह प्रसंग भी वर्णित है।

भावार्थ- कुर्आन के पा. २८ सू. ६४ आ. ८ ''यकूलून अलिर्-रजऽ्ना इलल्लमदीनति लयुख्रिजन्नल्-अअज्जु मिन्हल्-अजल्ल व लिल्लाहिल्-इज्जतु व लिरसूरलिह व लिल्-मुअ्मिनीन व जाकिन्नल्-मुनाफिकीन ला यऽ्लमून'' अर्थात् कहते है अगर हम मदीने वापस गये तो जिनका जोर है यानी हम मदीने वाले वहाँ से उन जलील लोगों को यानी मक्कावालों को जरूर निकाल देंगे। और हालाँकि सच यह है कि जोर अल्लाह का उसके पैगम्बर का और ईमानवालों का है लेकिन मुनाफिक नहीं समझते।

श्री देवचंदजी सों हम मिले, मुझ अंग हुआ रोसन।
सो बातें सब इनमें लिखी, निसान नाम सोई दिन।।२८।।

जब मैं श्री देवचन्द्र जी के चरणों में आया तो मेरे हृदय में तारतम ज्ञान का प्रकाश हुआ। कुर्आन में ये सारी बातें लिखी हुई हैं। सांकेतिक भाषा में मेरा तथा सद्गुरू धनी श्री

देवचन्द्र जी का नाम एवं मिलन की तिथि भी लिखी है।

भावार्थ- पा. २८ सू. ६१ आ. ६ ''व इज् काल इसबून..... .हजा सिहरूम-मूबीनुन्'' और जब मरियम के बेटे ईसा ने कहा कि ऐ इसराईल के बेटो। मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का भेजा हुआ आया हूँ कि तौरात जो मुझसे पहिले उतरी किताब इलाही है, उसकी तसदिक पुष्टि करता हूँ और एक और खुसखबरी देता हूँ जो मेरे बाद आयेगा उसका नाम अहमद होगा फिर जब निशानियां लेकर उनके पास आया तो वह बोले कि यह तो साफ जादू हैं।

पा. ७ सु. ६ आ. ५६ ''व इन्दहू मफातिहुल्गैबि ला य़ड़लमुहा इल्ला हुव व यड़लमु मा फिल्बर्रि वल्बह्रि व मा तस्कुतु मिव्वरकतिन् इल्ला यड़नमुहा व ला हब्बतिन् फी जुलुमातिल्-अर्जि व ला रत्बिब्ब ला याबिसीन इल्ला फी किताबीन मुबीनिन्'' अर्थात् और उसी के पास गैब अदृश्ट की कुंजीयें। है जिनको उनके सिवाय कोई नहीं जानता। और जो भी जल, थल, जंगल और नदीं में हैं, वह सब जानता हैं और कोई पत्ता तक नहीं गिरता जो उसे मालूम नहीं औ जमीन के अंधेरे पर्दो में एक दाना नहीं पड़ता सूखी या हरी और कोई चीज ऐसी नहीं जो उसकी किताब लौह महफूज में न हो।

बोहोत बातें कई और हैं, सो केते लिखों निसान।
साथ हम तुम मिलके, हँस हँस करसी बयान।।२६।।

इसके अतिरिक्त और भी बहुत सी बातें कुर्आन में लिखी है जिनका मैं कितना वर्णन करूँ। हे साथ जी! जब हम और आप मिलेंगे तो हंसते हुए कुर्आन की इन साक्षियों पर चर्चा करेंगे।

विशेष- चौपाई के दूसरे चरण में लाखों का कथन अतिश्योक्ति अलंकार की भाषा है।

कई विध की निसानियाँ, जिन विध हुई जागन।
हँसते हरखे जागसी, सुख देसी सब सैयन।।३०।।

कुर्आन में ये सारी बातें संकेतो में लिखी है कि जागनी किस प्रकार होगी, हंसते हुए आनन्द पूर्वक सभी कैसे जागृत होंगे तथा सभी को जागनी का सुख कैसे मिलेगा।

भावार्थ- इस सम्बन्ध में कुर्आन के पा.२८ सू. ६१ आ. ६ एवं १० में कहा गया है कि वही है जिसने अपना पैगम्बर, हिदायत और दीन देकर भेजा ताकि उसको तमाम दीनों पर श्रेष्ठता दे और शिर्क करने वाले इन बहुदेवपूजकों को चाहे बूरा ही क्यों न लगे।

हे ईमान वालों! मैं तुम्हें ऐसा व्यापार बताऊँ जो तुमको खुदाई अजाब से बचा दे।

बाल लीला और किसोर, तीसरी बुढ़ापन।
तीन अवस्था तीन ब्रह्मांड, देखाए मिने एक खिन।।३१।।

प्रियतम अक्षरातीत ने हमें व्रज, रास एवं जागनी ब्रह्माण्ड की लीला को परमधाम के एक क्षण में ही दिखाया है। व्रज की लीला बाल्यावस्था की लीला है। महारास की लीला प्रेम के विलास (आनन्द) की लीला है तथा जागनी की लीला ज्ञानमय स्वरूप की लीला है।

बाबा बूढा होए खेलावसी, दे मन चाह्या सुख सब।
तीन अवस्था एक साइत में, देखाए के हँससी अब।।३२।।

इस जागनी लीला में श्री प्राणनाथ ज्ञान के तपते सूर्य की भांति (ज्ञान वृद्ध स्वरूप में) अज्ञानता के अन्धकार को दूर करके जागनी लीला करेंगे। वे सबको उनके मन की इच्छानुसार सुख देंगे। परब्रह्म एक ही पल में तीन अवस्था (बाल्य, युवा तथा ज्ञान वृद्ध) वाली तीनों लीलाओं को दिखाकर परात्म में जागृत करेंगे तथा हंसी की लीला करेंगे।

भावार्थ- वृद्धावस्था का तात्पर्य शरीर की वृद्धावस्था नहीं अपितु ज्ञान दृष्टि से है। इस स्वरूप के द्वारा परमधाम का जो अलौकिक ज्ञान प्रकट हुआ है, वैसा ज्ञान पहले किसी भी ब्रह्माण्ड में न तो अवतरित हुआ है और न कभी भविष्य में अवतरित होगा।

तीन ठौर लीला करी, देखाए तीन ब्रह्मांड।
सो तीनों एक पल में, देखाए के उड़ावसी इंड।।३३।।

प्राणेश्वर अक्षरातीत ने व्रज, रास और जागनी तीनो ब्रह्माण्डों में लीला की है। व्रज की लीला उन्होंने कालमाया के ब्रह्माण्ड में की, रास की लीला योगमाया के ब्रह्माण्ड (केवल ब्रह्म) में की तथा वर्तमान जागनी लीला कालमाया के इस ब्रह्माण्ड में हो रही है। तीनों लीलाओं को उन्होंने परमधाम के एक ही पल में दिखाया है और जागनी लीला के पूर्ण हो जाने के पश्चात् चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड का प्रलय कर दिया जायेगा।

भावार्थ- महारास की रात्रि के समय का आंकलन करना मानवीय बुद्धि से परे है फिर भी परमधाम की दृष्टि से वह एक पल में ही मानी जायेगी।

खेले एकै रात में, बृज रास जागन।
बेर साइत भी ना हुई, यों होसी सब सैयन।।३४।।

नींद (फरामोशी) रूपी एक ही रात्रि में व्रज, रास और जागनी ब्रह्माण्ड की तीनों लीलायें दिखायी गयी हैं किन्तु परमधाम में अभी एक पल भी नहीं बीता है। परात्म में जागृत् होने पर ब्रह्मसृष्टियों को प्रत्यक्ष रूप से इसका अनुभव होगा। अभी यह बात ज्ञान दृष्टि से कही गयी है।

भावार्थ- लैल तुल कद्र (इस प्रकार की लम्बी रात) को संसार की नियमित घटित होने वाली रात नहीं समझनी चाहिए अपितु यह वह समय है जिसमें परमधाम को छोड़कर ब्रह्मात्माओं की सूरता नींद के ब्रह्माण्ड (कालमाया) में आती है। तारतम ज्ञान से परमधाम की पहचान होने पर उसे प्रातःकाल की लीला से सम्बोधित किया गया है तथा तारतम के तारतम (खिल्वत परिक्रमा, सागर और श्रृंगार) में डूबकर मारिफत (परम सत्य) की अवस्था को प्राप्त करना दोपहर के तपते उजाले में परमधाम जैसी जागृत अवस्था को प्राप्त होना कहा गया है।

बीच ब्रह्मांड ना जुग कोई, बरस मास ना दिन।
खिन में सब देखाए के, दोए साखें करी जागन।।३५।।

हे साथ जी! परमधाम के एक पल में ही व्रज, रास तथा जागनी ब्रह्माण्ड की लीला को दिखाया गया है। इन तीनों ब्रह्माण्डों की लीला के समय में परमधाम की दृश्टि से न तो कोई युग बीता है, न वर्श, न महीने और न दिन। जागनी की यह लीला वेद-कतेब दोनों की साक्षियों से सम्पादित हो रही है।

भावार्थ- यद्यपि परमधाम की दृष्टि से व्रज, रास और जागनी लीला में एक पल भी नहीं बीता है किन्तु कालमाया की गणना की दृष्टि से व्रज की लीला ११ वर्ष और ५२ दिन की है तथा जागनी लीला को लगभग ४४० वर्ष से अधिक हो चुके हैं। रास की रात्रि के समय का आंकलन बेहद वाणी के इस कथन से किया जा सकता है।

रास रात बरनन करी, देखो मन विचार।
नारायण जी की रात को, कोईक पावे पार।।
पर पार नहीं रास रात को, ए तो बेहद कही।
तामें अखण्ड लीला रास की, पंच अध्यायी भई।।

देखो जाहेर याके मायने, चित्त ल्याए वचन।
रात ऐसी बड़ी तो कही, लीला बड़ी वृन्दावन ।। बेहद वाणी चौ. ६६, ६७, ६८

दाना एक खस खस का, तामें देखाए चौदे भवन।
सो दाना फेर होएसी, तुम देखोगे सब जन।।३६।।

चौदह लोकों के जिस ब्रह्माण्ड में आपको माया का खेल दिखाया जा रहा है, वह जागृत दृष्टि से देखने पर मात्र खसखस के दाने जैसा ही प्रतीत होता है। हे साथ जी! आप सभी जागृत होकर यह लीला देखेंगे कि किस प्रकार चौदह लोंकों का यह विस्तृत ब्रह्माण्ड खसखस कि दाने की भांति बेहद में अखण्ड हो जायेगा।

भावार्थ-उपरोक्त चौपाई में चौदह लोंकों के इस ब्रह्माण्ड की उपमा उस खसखस के दाने से की गयी है, जो बहुत ही लघु आकार वाला होता है। जिसकी लघुता यही दर्शाति है कि यदि हम जागृत हो जाते है तो चौदह लोकों का यह विस्तृत ब्रह्माण्ड भी हमारे लिये उस खसखस के दाने जैसा ही है।

पट कर बड़ा देखाइया, चौदे तबक बनाए।
तुम पर हाँसी करके, देसी पट उड़ाए।।३७।।

नींद रूपी निराकार के आवरण में चौदह लोकों का यह ब्रह्माण्ड बनाया गया है जो बहुत बड़ा दिख रहा है, किन्तु जागृत होने पर इस का अस्तित्व खसखस के दाने जैसा ही (अस्तित्व विहीन जैसा है)। आपको हंसी का यह खेल दिखा कर प्रियतम परब्रह्म माया की नींद को समाप्त कर देंगे।

भावार्थ- परात्म में जागृत होने पर तो हंसी की लीला होगी, किन्तु जागनी लीला का यह खेल भी हंसी का है- इस सम्बन्ध में सनद ग्रन्थ के प्र.१८ चौ. ४५ के ये कथन देखने योग्य है-

जो कोई रूहे निसबती, ए हांसी का है ठौर ।
खसम वतन आप भूल के, कहां देखत हो और ।।
मोमिनों तुम को उपज्या, खेल देखन का ख्याल।
जाको मूल नहीं बांधे तिन, ए तो हांसी का हवाल ।।

अज्ञान रूपी नींद के कारण ही इस ब्रह्माण्ड का इतना बड़ा अस्तित्व है अर्थात् जागृत दृष्टि से देखने पर यह मात्र खसखस के दाने से भी अधिक छोटा है (अस्तित्व

विहीन है)।

ज्यों ज्यों होसी जागनी, त्यों त्यों उड़सी एह।
देखोगे सब नजरों, पिया हाँसी करी है जेह ।।३८।।

हे साथ जी! जैसे-जैसे आत्मा की जागनी बढ़ती जायेगी वैसे- वैसे अज्ञान का आवरण (पर्दा) हटता जायेगा और आप अपनी आँखों से स्वयं देखेंगे कि प्रियतम ने हमारे साथ हंसी की लीला की है।

पियाजीएँ कई हाँसी करी, सो लिखी मिने किताब।
जब सैयां सबे मिली, तब होसी बिना हिसाब ।।३९।।

प्रियतम परब्रह्म ने हमारे साथ अनेक प्रकार की हंसी की लीला की है जो इस सनद ग्रन्थ में लिखी है। जब सभी ब्रह्मात्मायें परमधाम में जागृत होंगी तब इस संसार में होने वाली भूलों की अनन्त हंसी होगी।

भावार्थ- सनद ग्रन्थ का १८ वाँ प्रकरण हंसी का प्रकरण है, जिसमें यह दर्शाया गया है कि माया के आवरण के कारण अज्ञानता वश ब्रह्मात्मायें स्वयं को तथा धाम धनी एवं परमधाम को भूलकर सांसारिक जीवों जैसा व्यवहार करेगी, जो उनकी हंसी का कारण बनेगा। इसका सांकेतिक रूप से वर्णन कुर्आन में है जो विस्तृत रूप से कलश हिन्दुस्तानी तथा सनद ग्रन्थ में दिया गया है।

और भी कहूं सो सुनो, जाहेर महंमद बात।
और सबे उड़ाए के, एक रखी कदर की रात।।४०।।

हे साथ जी! मैं मुहम्मद स. अ. व. की प्रत्यक्ष रूप में कही हुई एक बात कह रहा हूँ, उसे सुनिए। लैल तुल कद्र अर्थात् माया की रात्रि में होने वाली व्रज, रास, एवं जागनी के ब्रह्माण्ड को छोड़कर प्रियतम अक्षरातीत ने अन्य सभी ब्रह्माण्डों का प्रलय कर दिया।

भावार्थ- व्रज लीला मथुरा तथा गोकुल, बरसाना, वृन्दावन आदि ८४ कोस के क्षेत्र में हुई। इस प्रकार ये क्षेत्र व्रज लीला के अन्तर्गत आने से अखण्ड हुए, शेष सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का प्रलय हो गया। इसी प्रकार जागनी लीला में चौदह लोकों का यह ब्रह्माण्ड अखण्ड तो हो जायेगा किन्तु अन्य ब्रह्माण्ड अखण्ड नहीं होंगे।

सब रोसनाई इनमें, सांची कहियत हैं जेह।
उतरी है पिया पास थें, रात नूर भरी है एह।।४१।।

परमधाम की ब्रह्मसृष्टियाँ प्राणेश्वर अक्षरातीत के पास से आयी हैं। इनका स्वरूप अखण्ड है और इनके हृदय में तारतम ज्ञान का दिव्य प्रकाश है, जिसमें सभी ज्ञान समाहित हो जाते हैं। इस प्रकार यह रात्रि तारतम ज्ञान की दिव्य आभा से भरपूर है।

वतन थें पिउ प्यारियां, आइयां सबे मिल।
इसी रात के बीच में, करने को सैल।।४२।।

परमधाम से आने वाली ये ब्रह्मसृष्टियां परब्रह्म की आनन्द स्वरूपा आत्मायें हैं। ये सभी मिलकर संसार का भ्रमण करने के लिये माया की इस रात्रि में आयी हैं।

पिया भेजे मलायक, रखोपे रूहों कारन।
सो संग अंदर रेहेवहीं, करत सदा रोसन।।४३।।

प्रियतम परब्रह्म ने माया से ब्रह्मसृष्टियों की रक्षा के लिये उनके साथ जिब्रील और अस्राफील जैसे फरिश्तों को भेजा है। ये दोनों उनके साथ-साथ हृदय में रहते हैं और उन्हें सर्वदा परब्रह्म की ओर अग्रसर किये रहते हैं।

भावार्थ- माया में लिप्त होना काले अन्धकार में भटकना है तथा परब्रह्म के ज्ञान, प्रेम, श्रद्धा, समर्पण और सेवा में लगे रहना अपने हृदय को दिव्यता से प्रकाशित (रोशन) किये रहना है। परब्रह्म के जोश या अक्षर ब्रह्म के आवेश स्वरूप जिब्रील एवं जागृत बुद्धि अस्राफील का मुख्य कार्य यही है कि ये दोनों ब्रह्मात्माओं को माया में लिप्त होने से बचाये रखते हैं।

तबक चौदे इन में, जिमी और आसमान।
रात बड़ी कदर की, कोई नाहीं इन समान।।४४।।

धरती से लेकर आकाश तक चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड का अस्तित्व है। माया की नींद रूपी यह रात्रि बहुत अधिक महिमा वाली है, क्योंकि इसमें परब्रह्म की ब्रह्मात्माओं एवं ईश्वरीय सृष्टि का अवतरण हुआ है। अन्य कोई भी रात्रि इसके समान महिमावान् नहीं है।

फिरत चिरागां इन में, एक चांद दूजा सूर।
ए तो सोर सेहेरन का, नहीं रोसन वतनी नूर।।४५।।

इस ब्रह्माण्ड में सूर्य और चन्द्रमा दो दीपकों की भांति प्रकाश देते हैं। भिन्न-भिन्न

पन्थों में आध्यात्मिक ज्ञान की जो चर्चा होती है, वह नगरों के निरर्थक कोलाहाल के समान है। इन पन्थों में किसी में भी परमधाम के ज्ञान का प्रकाश नहीं है।

भावार्थ- चन्द्रमा पृथ्वी का एक उपग्रह है। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के भी कई उपग्रह हैं जो चन्द्रमा के समान प्रकाश तो देते हैं किन्तु उनका प्रकाश मात्र उन्हीं ग्रहों पर पड़ता है, पृथ्वी पर नहीं। अतः उपरोक्त चौपाई में सूर्य और चन्द्रमा का विशेष सम्बन्ध पृथ्वी ग्रह से माना गया है। पृथ्वी के ऊपर ही सात पाताल लोक (अतल,वितल आदि) स्थित है। शेष भुवर्लोक, महर्लोक आदि सूक्ष्म लोक है।

रसूलें ए जाहेर कह्या, दिन रोसन पिया वतन।
और अंधेर सब दज्जाल, जो गोविंद भेड़ा फितन।।४६।।

मुहम्मद साहब ने स्पष्ट रूप से कहा है कि परमधाम दिन के समान स्वयं प्रकाश स्वरूप है। उसके विपरीत कालमाया का यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड गोविन्द भेड़ा के भूत मण्डल की भांति प्रत्यक्ष अज्ञान रूप अन्धकार से परिपूर्ण है।

भावार्थ- लोक कथा के अनुसार 'गोविन्द' नाम व्यक्ति अपने बूरे कर्मो के कारण प्रेत योनि का शिकार हो जाता है। अपने एकाकीपन को दूर करने के लिये वह अनेक लोगों को मोह जाल में फंसाकर एक प्रेत नगरी बसा लेता है। जो भी व्यक्ति उस सुन्दर नगरी से होकर गुजरता है, वह उसकी आकर्षक वस्तुओं को छूकर प्रेत बन जाता है।

इस लोक कथा के दृष्टान्त से यही समझाया गया है कि माया का यह ब्रह्माण्ड प्रेत नगरी है। इसमें गोविन्द प्रेत जैसे अज्ञानी जीवों का समूह रहता है जिनकी संगति से किसी न किसी रूप में धन, लौकिक सम्बन्ध तथा प्रतिष्ठा के मोह का नशा लग जाता हैं जो इस मायावी ब्रह्माण्ड (प्रेत नगरी) से मुक्त नहीं होने देता। इस तथ्य को कुर्आन में पा. २९ सू. ७२ आ. १ १-५ में दर्शाया गया है।

नींद को रात कदर कही, दुनी ढूंढ़ें खेल में रात।
कहे जो आजूज माजूज, ए तिन में गोते खात।।४७।।

माया की नींद को लैल तूल कद्र की रात कहा गया है, जिसमें ब्रह्मात्माओं का अवतरण हुआ है। आश्चर्य की बात यह है कि संसार के लोग इस रात्रि को ४ प्रहर अथवा ३२ घड़ी या १२ घण्टे वाली वह रात समझते हैं जिसका सम्बन्ध दिन के साथ जुड़ा होता है। ये इसी प्रकार अज्ञानता के अन्धकार में भटकते रहते हैं।

दरिया रूप अंधेरी, आदम रूप दज्जाल।
एही सरूप कुलीय का, वैर विखे लानती चाल।।४८।।

मोह सागर की अज्ञानता की अन्धकारमयी रात है। (दज्जाल) रूप अज्ञान का प्रत्यक्ष स्वरूप मनुष्य के रूप में दृष्टिगोचर हो रहा है। इस दज्जाल को ही कलियुग भी कहते हैं जो स्वाभाविक रूप से मानव समाज से बैर रखने के कारण उसे धिक्कार युक्त घृणित कार्यों में भटकाये रखता है।

आदम रूप वैराट, अनेक विध खेलत।
झूठ कुफर कुली पसरया, सब सचराचर पसु मत।।४९।।

जिन अज्ञान रूप मोहसागर से इस ब्रह्माण्ड की उत्पति हुई है, मनुश्य भी उसी अज्ञान रूप में होकर इस संसार में तरह-तरह की क्रीड़ा कर रहा है। चर-अचर सभी प्राणियों में झूठ, नास्तिकता तथा अज्ञानता का साम्राज्य फैला हुआ है।

भावार्थ- भ्रान्ति वश 'विराट' का अर्थ विष्णु या नारायण करके यह सिद्ध किया जाता है कि मनुष्य के रूप में नारायण ही अज्ञानता में भटक रहे हैं। यह सत्य है कि सभी प्राणियों की चेतना आदि नारायण का सांकल्पिक प्रतिबिम्ब रूप है, किन्तु श्री कुल्जुम स्वरूप में विराट का आशय सर्वत्र ब्रह्माण्ड में ही लिया गया है। संक्षेप में ये कथन देखने योग्य है-

बेरिज करी वैराट की, ए पढ़ियों चित्त दे। सनन्ध ४२/२६
सत वैराट में पसरया, काढ़या कुली जालिम। सनन्ध ४२/१९
वैराट चौदे तबक, करके नूर नजर। सनन्ध ४१/७४
अनेक किव इत उपजे, वैराट सचराचर। कि.
वैराट का फेर उलटा, मूल है आकाश। क. हि. १६/१
मूल बिना वैराट खड़ा, यों कहे सब संसार। क. हि. १६/५२
वेदें वलतां वाणी जे ओचरी, तें तां चढ़ी वैराट ने मुख। कि. ६८/२०
वैराट सारा गाएसी, नर नारी चित ल्याए। सनन्ध ४१/६१

सुंदरबाइऐं याको कह्या, गोविंद भेड़ा मंडल।
सोई कलजुग दज्जाल, व्याप रह्या सकल।।५०।।

सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी ने इस ब्रह्माण्ड को गोविन्द की प्रेत नगरी के समान मोह रूप अज्ञानता से परिपूर्ण कहा है। यही कलियुग या दज्जाल (अज्ञान, भ्रम) सारी सृटि

में व्याापक हो रहा है ।

खेल कह्या है नींद का, सब खेलें बीच अंधेर।
ए जो आइयां खेल देखने, ताए खैंच लिया दिल फेर।।५१।।

मायावी ब्रह्माण्ड रूपी यह सम्पूर्ण खेल नींद (अज्ञानता) का है। संसार के सभी प्राणी अज्ञानता की नींद में सोये हुए हैं। माया का खेल देखने के लिये जो ब्रह्मसृष्टियां इस संसार में आयी हैं, उनके हृदय (मन) को भी इस माया ने परमधाम से हटा कर अपनी ओर खींच (आकर्षित) कर लिया है।

जंग किया सैयां तिनसों, जो आगे कछुए नांहें।
ए भी कहें ओ ना कछू, पर उरझ रहियां तिन मांहें।।५२।।

ब्रह्मसृष्टियों ने उस कलियुग (दज्जाल) से युद्ध किया जो उनके समक्ष कुछ है ही नहीं। स्वयं ब्रह्मात्मायें भी यह कहा करती हैं कि यह मायावी संसार तो कुछ है ही नहीं, फिर भी उसी में उलझी हुई हैं।

लई लड़ाई सैयां तिनसों, जाए पड़ियां बंध।
ना रस्सी ना बांधे जिने, पर छूट ना सके कोई फंद।।५३।।

ब्रह्मात्माओं ने (दज्जाल) से युद्ध ले रखा है और उसके बन्धनों में फंस गयी हैं। ऐसी कोई भी स्थूल रस्सी नहीं है, जिससे उन्हे बांधा जा सके फिर भी दज्जाल के बन्धनों में इस प्रकार बंध गयी हैं कि कोई भी उसके फंदे (बन्धन) से निकल नहीं पा रही है।

भावार्थ- स्थूल रस्सी से स्थूल शरीर को ही बांधा जा सकता है किन्तु मोह रूप अज्ञानता का बन्धन सबसे बड़ा घातक बन्धन होता है जो आंखों से प्रत्यक्ष नहीं दिखायी देता। उसका विवेकयुक्त मन ही अनुभव कर पाता है। सामान्यतः जब किसी का हृदय अज्ञान के वशीभूत हो जाता है तो इन्द्रियों सहित सम्पूर्ण शरीर ही अधीन हो जाता है।

जुदी जातें भाँतें जुदी, खड़ियां जुदे भेख धर।
जानत नीके झूठ है, तो भी पकड़ रहियां सत कर।।५४।।

ब्रह्मसृष्टियां संसार में अलग-अलग रहन-सहन वाली अलग- अलग जातियों में आयी हुई हैं। उनकी वेश-भूषा भी अलग-अलग है। यद्यपि, वे जानती हैं कि जन्मना जाति-पाति तथा वेश-भूषा के बन्धन झूठे हैं तो भी उन्हें सत्य मानकर पकड़े रहने के लिये विवश हैं।

जुदे जुदे नाम खसम के, एक नारी दूजे नर।
खुद खसम को भूल के, खेल में बेठियां सत कर।।५५।।

इस मायावी जगत् में किसी ब्रह्मात्मा ने पुरूष का तन धारण किया है तो किसी ने स्त्री का। वे ऐसे संसार में आयी हैं जिसमें अलग-अलग भाषाओं में परब्रह्म के अलग-अलग नामों की कल्पना है। वे अपने प्राणेश्वर अक्षरातीत को भूल चुकी हैं तथा इस स्वाप्निक संसार को ही सत्य मान बैठी है।

भावार्थ- परमधाम में परब्रह्म नाम की परिधि से परे है, क्योंकि वह शब्दातीत है। किन्तु इस नश्वर जगत में प्रार्थना, उपासना के लिये परब्रह्म के नाम की आवश्यकता पड़ती है। इसलिये परब्रह्म के दिव्य, गुण, लीला एवं स्वभाव के आधार पर भाषा के अनुकूल अलग-अलग नामों की मान्यता है। जैसे वेदों में सैकड़ों नामों का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि 'एकं सद् बहुधा विप्रा वदन्ति' अर्थात् एक ही परब्रह्म को विद्वान अलग-अलग नामों से सम्बोधित करते हैं। हिंन्दू जिस प्रकार अक्षरातीत या सच्चिदानन्द, परब्रह्म आदि कहते हैं, उसी प्रकार मुस्लिम अल्लाह तलाह या खुदा कहते हैं, और क्रिश्चियन सुप्रीम ट्रूथ गॉड अथवा लार्ड कहते हैं। पौराणिक मान्यता में तो शिव, विष्णु, आदि नारायण आदि देवताओं को ही परब्रह्म के नामों से सम्बोधित किया जाता है और भाषा विज्ञान के आधार पर हजारों नामों की कल्पना कर ली जाती है। 'विष्णुसहस्रनाम' इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

पिया खजाना खरच के, आए बंध से लैयां छुड़ाए।
अब सो करे मेहेमांनियां, बस्तर भूखन पेहेराए।।५६।।

प्रियतम अक्षरातीत तारतम ज्ञान रूपी अपार धन लेकर आये हैं जिसके द्वारा उन्होंने ब्रह्मात्माओं को दज्जाल (कलियुग) के बन्धनों से छुड़ा लिया है। श्री राज जी ने सुन्दरसाथ को विरह, प्रेम, समर्पण, विश्वास आदि के वस्त्र आभूशणों को पहनाया है और प्रेम पूर्वक उनका स्वागत कर रहे हैं।

कई भोजन मेवे मिठाइयां, तकिए सेज जवेर।
सेवक सेवा दुनियां, करसी ब्याह सुंदर।।५७।।

सुन्दरसाथ के लिये मेवे मिठांइयों से युक्त अनेक प्रकार के भोजन हैं। उनके

आराम करने के लिये हीरे मोती आदि जवाहरातों से जड़ी हुई शय्या एवं तकियों की व्यवस्था है। सारा संसार सेवक के रूप में उनकी सेवा करने के लिये तैयार है। अब प्रियतम परब्रह्म का उन आत्माओं के साथ सुन्दर रीति से विवाह भी होगा।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई का कथन उपमा अलंकार में दर्शाया गया है। चितवनि आत्मिक आहार रूप भोजन है, विश्राम जिसमें समर्पण मेवा है एवं एकाग्रता मिठाई। चितवनी से मिलने वाला प्रेम एवं आनन्द ही वह शय्या का सुख है जो तरह-तरह की अनुभूति-अनुभव रूप मोती एवं हीरे आदि जवाहरातों से सुसज्जित है। चितवनी के परिणाम स्वरूप निकलने वाले प्रेमाश्रुओं की बूंदें ही एकत्रित होकर कोमल तकिये का रूप धारण कर लेती हैं। प्राणेश्वर अक्षरातीत का दर्शन ही उनसे सुन्दर रीति से विवाह होना है। तारतम ज्ञान एवं चितवनी की दिव्य सुगन्धि का रसास्वादन लेने के लिये आने वाला जन समूह ही जीवों का वह सेवक समूह है जो सेवा, तारतम ज्ञान एवं चितवनी की सुगन्धित हवा के झोंकों से अपनी अखण्ड मुक्ति की आसा लगाये बैठा है।

यामें कई विध हाँसियां, पियाजी लिखी चित ल्याए।
सो आप मिने बैठ के, हंससी साथ मिलाए।।५८।।

इस जागनी लीला में अनेक प्रकार की हंसी की लीलायें होंगी, जिनके विषय में प्रियतम ने बहुत ही प्रेम पूर्वक कुर्आन में साक्षियां लिखवा दी है। वे सुन्दरसाथ के मध्य बैठकर हास्य-प्रेम की लीलायें करेंगे।

भावार्थ- नवतनपुरी में बिहारी जी के द्वारा स्वयं को अक्षरातीत के रूप में प्रस्तुत करना हास्य लीला का एक अंग है। इसी प्रकार दिल्ली में लक्ष्मीदास जी के ऊपर जो हंसी की लीला हुई, वैसी बहुत सी लीलायें होंगी।

वैराट सब पुकारहीं, सो भी इनमें लिखे सब्द।
कई विध लीला जागनी, पर भली गाई महंमद।।५९।।

कुर्आन में यह भी लिखा है कि सारा ब्रह्माण्ड जागनी लीला की चर्चा करेगा। यद्यपि, जागनी की लीला अनेक प्रकार से होगी किन्तु मुहम्मद साहब ने कुर्आन में सांकेतिक रूप से इसके सम्बन्ध में बहुत अच्छा वर्णन किया है।

भावार्थ- जागनी लीला के कई प्रकार से होने का आशय यह है कि जागनी की कार्य शैली समय और परिस्थितियों के अनुसार बदलती रहेगी।। जिस प्रकार सुरत,

मस्कत, अब्बासी, मेड़ता, दिल्ली, हरिद्वार, उदयपुर, मन्दसौर, औरंगाबाद, रामनगर और पन्ना जी में अलग-अलग परिस्थितियों में अलग-अलग तरीकों से जागनी हुई किन्तु इसके मूल में तारतम ज्ञान (श्री कुल्जुम स्वरूप) की चर्चा और चितवनी ही थी। इसी प्रकार १७५१ से लेकर अब तक अलग-अलग परमहंसों के द्वारा अलग-अलग तरीकों से जागनी लीला सम्पादित की गयी है।

कुर्आन में सि. २६ सु. ४७ आ. ६ ''व युद्खिलुहुमुल्-जन्नत अर्रफहा लहुम्'' (६) पानि ऐ अहल-ए इमान अगर तुम खुदा की मद्द करोगे तो वह भी तुम्हारी मद्द करेगा ।

पा. ३६ सु. ४७ आ. १ ''वल्लजीन आमुन् व अमिलुरूसालिहाति व आमन् बिमा नुज्जिल अला मुहम्मदिव्य हुवल्हक्कु मिरब्बिहिम् कपफर अन्हुम् सय्यिआतिहिम् व अस्लह बालहुम्'' (१) यानी जो ईमान लाए, नेकअम्ल करते रहें और जो किताब मुहम्मद स. पर नाजिल हुई, उसे मानते रहें, वह उनके परवरदिगार की तरफ से बरहक है। उनसे उनके गुनाह दूर कर दिए गये और उनकी हालत संवार दी गयी।

याही लीला सब कोई, गावत गुझ अगम।
गरजसी वैराट में, हुए जाहेर सैयां हम।।६०।।

इस जागनी लीला के सम्बन्ध में सभी मत- पन्थों का कथन है कि यह इतनी गुह्य है कि इसे अत्यन्त रहस्यमयी तथा मन-वाणी से परे कहा गया है। सारे ब्रह्माण्ड में इस बात की गर्जना होगी कि प्रियतम अक्षरातीत अपनी आत्माओं के साथ इस मायावी जगत् में आये थे।

भावार्थ- पुराण संहिता, माहेश्वर तंत्र तथा बुद्ध गीता में जागनी लीला का स्पश्ट वर्णन है। इसी प्रकार बाईबल के न्यू टेस्टामेन्ट में भी सांकेतिक रूप से जागनी लीला को दर्शाया गया है।

वैराट सारा गाएसी, नर नारी चित ल्याए।
पर गावना सुन महंमद का, रेहेसी सबे अचंभाए।।६१।।

इस ब्रह्माण्ड के स्त्री पुरूष पूर्ण मन से जागनी लीला के विषय में गायेंगे (चर्चा करेंगे) किन्तु मुहम्मद स.अ.व ने ११०० वर्ष पहले ही जागनी लीला तथा परमधाम के विषय में इतना स्पष्ट लिखा है कि सबको आश्चर्य होगा।

भावार्थ- कुर्आन में सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी, श्री जी, महाराजा छत्रसाल जी, औरंगजेब, मन्दसौर तथा औरंगाबाद आदि की बीतक के सम्बन्ध में संक्षिप्त रूप से लिखा हुआ है।

कुर्आन में पा. २६ सू. ४७ आ. ३८ ''हा अन्तुम आलुलाअि तुद्औन लितुन्फिक् फी राबीलिल्लाहि फमिन्कुम् मय्यब्खलु व मंय्यब्खल् फअिन्नमा यब्खलु अन् नफ्सिह वल्लाहुल् गनिय्यु व अन्तुमुल् फुकराअु व अिन् ततवल्लौ यस्तब्दिल् कौमत् गैरकुम सुम्म ला यकुनू अमसालकुम्'' (३८) देखो तुम लोग हो कि खुदा की राह में खर्च करने के लिये बुलाए जाते हो तो तुममें ऐसे शख्स भी जो बुस्ल करने लगते हैं। जो बुस्ल करता है और अपने आप से बुस्ल करता है और खुदा बेनियाज है और तुम मुहताज और अगर मुँह फेरोगे तो वह तुम्हारी जगह और लोंगो को ले आयेगा और वे तुम्हारी तरह नहीं होंगे। यह प्रसंग जागनी लीला में औरंगजेब के स्थान पर छत्रसाल जी की लीला का है।

महंमद बातें बोहोत है, सो केती लिखूं तुम।
ए बातें तब होएसी, जब मिलसी हम तुम।।६२।।

मुहम्मद स.अ.व के द्वारा कुर्आन में बहुत सी साक्षियाँ लिखी हैं, जिनका मैं कहाँ तक वर्णन करूँ? हे साथ जी! जब आपसे मेरा प्रत्यक्ष मिलन होगा, तब उस के विषय में हमारी वार्ता होगी।

महंमद कहे मैं हुकमें, सब रूहें मुझ मांहें।
मैं चल्या अर्स मेयराज को, पर पोहोंच सक्या नाहें।।६३।।

मुहम्मद स.अ.व कहते हैं कि मैं परब्रह्म के आदेश से उनके दर्शन के लिये परमधाम मूलमिलावे में पहुँचा। यद्यपि, उस समय सभी आत्मायें एकत्व की दृष्टि से मेरे हृदय में थीं, किन्तु मैं मारिफत (परम सत्य) की अवस्था तक नहीं पहुँच सका।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई के रहस्य को समझने के लिये हमें ब.क. ६/१२/१३ के इस तथ्य को समझना होगा।

और कह्या दाहिनी तरफ, मोतिन के मुह पर कुलफ।
पूछा रसूलें कुलफ क्यों दिया, तेरी उमतें गुनाह कर लिया।।
इनकी किल्ली तेरा दिल, खुले कुलफ जब आओ मिल।
सब हकीकत बीच किताब, पर पावे सोई जिन पर होए खिताब।।

यद्यपि अक्षर ब्रह्म परब्रह्म के सत् अंग हैं किन्तु श्री राज जी ने उन्हें इश्क का स्वरूप देकर अपने जैसा ही बना लिया हैं। यही कारण हैं कि ब० क० की १२ वीं चौपाई में ब्रह्मसृष्टियों को अक्षरब्रह्म (मुहम्मद) की उम्मत कहा गया है। श्रृं० में कहा गया है कि 'हम हक में हक हममें, और हक बिना सब ख्वाब'। इसी सिद्वान्त के आधार पर मुहम्मद (अक्षरब्रह्म) ने कहा है, कि सभी ब्रह्मसृष्टियां मेरे अन्दर थी। अक्षर ब्रह्म सत् की वहदत (एकत्व) में पहले ही थे, अब मेयराज में आनन्द की वहदत में सम्मिलित होने के कारण वे कह रहे हैं कि सभी ब्रह्मात्मायें मेरे हृदय में थी।

ब्रह्मत्माओं के मुख पर विद्यमान फरामोशी रूपी ताला (कुफ्ल) तभी हट सकता हैं, जब सभी को 'मारिफत' का बोध हो जाये और वे जागृत हो जायें।

अक्षरातीत तथा अक्षर (मुहम्मद) की वार्ता में मारिफत के ३० हजार हरूफों का वर्णन अवश्य हुआ किन्तु खेल में आते ही अक्षर ब्रह्म की आत्मा उसे भूल गयी। हमें यह ध्यान रखना होगा कि अक्षरब्रह्म को मारिफत की उतनी ही बात बतायी गयी, जितनी श्यामा जी एवं ब्रह्मात्माओं को ज्ञात थी। इस संसार की दृष्टि से युगल स्वरूप की शोभा श्रृंगार मारिफत है और हकीकत बेहद मण्डल (अक्षर की लीला का ब्रह्माण्ड) हैं किन्तु परमधाम की दृष्टि से अक्षर ब्रह्म, श्यामा जी, एवं ब्रह्मात्मायें सभी हकीकत (सत्य) के ही स्वरूप है। वास्तविक मारिफत श्री राज जी का दिल हैं जिसका भेद अब तक परमधाम में किसी को मालूम नहीं था। उस भेद को बताना ही खेल का महाकारण है और अक्षरब्रह्म तथा ब्रह्मात्माओं का एक दूसरे की लीला देखने की इच्छा खेल का कारण है।

ब. क. प्र. ६ की १३ वीं चौपाई में 'इनकी किल्ली तेरा दिल' कहने का आशय ही यही है, कि जब तक तुम सभी (अक्षरब्रह्म, श्यामा जी एवं ब्रह्मात्माओं) को मेरे हृदय अर्थात् मारिफत की पूर्ण पहचान नहीं होगी, तब तक यह फरामोशी (कुलफ) नहीं हटेगी।

अक्षर ब्रह्म की यह फरामोशी इस जागनी ब्रह्माण्ड में श्री महामति जी के धाम हृदय में मिटती है, जब तारतम का तारतम अर्थात् खिल्वत, परिक्रमा, सागर एवं श्रृंगार ग्रन्थ का अवतरण होता है। इसी प्रकरण की ७० वीं चौपाई में इसका संकेत किया गया है।

काजी कजा ऐसी करी, रही ना किसी की हाम ।
हुआ महंमद खिताब मेहेदी, मिल्या मिने इमाम ।।

मुहम्मद स. अ. व की आत्मा तो मूल मिलावे में पहुँच ही चुकी थी, श्री राज जी का दर्शन एवं वार्ता भी कर चुकी थी फिर भी यदि कह रही है कि 'मैं पहुँच सक्या नाहीं, तो इसका यही अर्थ हैं कि वे श्री राज जी के दिल के मारिफत स्वरूप तक पहुँचने की बात कह रहे हैं।

यही स्थिति श्यामा जी की आत्मा की भी है। प्रियतम अक्षरातीत का तीन बार उन्हें दर्शन हो चुका हैं, परमधाम की चर्चा कर रहे हैं। उनके तन से आड़ीका लीला हो रही है फिर भी फरामोशी का प्रभाव है। तभी तो क. हि. में कहा गया है कि-

आवेश जाको मैं देखे पूरे, सो जोगमाया की नींद होए ।

योगमाया की नींद का तात्पर्य ही यही है कि उन्हें मात्र हकीकत की ही पहचान है मारिफत की नहीं। यदि उस स्वरूप को उस तन में मारिफत की पहचान हो गयी होती तो उनके द्वारा कभी भी श्री राज जी से यह मांग नहीं की जाती कि आप मेरे तन से जागनी कराइए। यही कारण हैं कि ब. क. में कहा गया है कि 'बरस निन्यानवे रो रही हुरम' अर्थात् १६३८ से १७३७ तक वे पर्दे में नींद में रहीं। इसका अभिप्राय भी यही है कि १७३७ के पश्चात् ही सागर-श्रृंगार ग्रन्थ का अवतरण हुआ जिसमें मारिफत के ज्ञान का दरवाजा खुला।

उपरोक्त विवेचना यही दर्शाती है कि बशरी सूरत तथा मल्की सूरत को पूर्ण दर्शन(मारिफत में प्रवेश) श्री महामति जी के धाम हृदय में ही होना है। आगे की चौपाईयां भी इसी रहस्य को प्रकट करती हैं।

मैं ल्याया धनीय की, इसारतें जिन खातिर।
सो ताला अजूं खुल्या नहीं, तो मैं पोहोंचों क्यों कर।।६४।।

मैं अक्षरातीत के द्वारा संकेतो में कही गयी हकीकत-मारिफत की जिन बातों को कुर्आन में लाया था, उनके रहस्य का जब तक स्पष्टीकरण नहीं होगा तब तक मेरे द्वारा पूर्ण दर्शन किया जाना कैसे माना जा सकता है? अर्थात् जब हृदय ही नहीं पहचाना तो बाह्य दर्शन अधूरा हैं।

भावार्थ- यद्यपि, कुर्आन में हकीकत की ही बातें लिखी है, मारिफत की नहीं क्योंकि मारिफत के शब्द मुहम्मद स. अ. व ने कहे ही नहीं। किन्तु यह विशेष तथ्य हैं

कि हकीकत में ही मारिफत छिपा हुआ है। जब कुर्आन में विद्यमान हकीकत की व्याख्या होगी तो उसके साथ मारिफत की भी व्याख्या हो जायेगी।

ताला द्वार कजाए का, आए खोलसी जब।
कयामत रोसन करके, मिल भेले चलसी सब।।६५।।

जब स्वयं परब्रह्म न्यायाधीश (काजी) के रूप में आकर ज्ञान दृष्टि से सबका न्याय करेंगे अर्थात् हकीकत के साथ मारिफत के भेदों को प्रकट करके कियामत का आना सिद्ध करेंगे तभी फरामोशी का ताला खुलेगा अर्थात् सबको श्री राज जी के हृदय (मारिफत) की पहचान होगी। इसके पश्चात् ही हम सभी (अक्षरब्रह्म एवं उनकी आनन्द शक्ति, श्यामा जी और ब्रह्मात्मायें) निजघर जायेंगे।

बाईजीएँ घर चलते, जाहेर कहे वचन।
आड़ी खड़ी इन्द्रावती, है इनके हाथ जागन।।६६।।

श्यामा जी की आत्मा ने श्री देवचन्द्र जी के देह त्याग के समय सब सुन्दरसाथ के समक्ष प्रत्यक्ष रूप से कहा था कि श्री इन्द्रावती जी की आत्मा धाम के द्वार पर खड़ी होकर व्यथित हो रही है। उन्हीं के तन से आगे जागनी की लीला होनी है।

भावार्थ- श्री इन्द्रावती जी (महामति जी) के धाम हृदय में ही विराजमान होकर श्यामा जी को जागनी लीला करनी है। श्री मिहिरराज जी का हृदय बिहारी जी के दुर्व्यवहार तथा सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी के द्वारा प्रणाम स्वीकार न किये जाने से व्यथित था, इसलिये उनकी आत्मा को धाम दरवाजे पर खड़ी होकर अर्थात् अपने हृदय ही में रूदन करते हुए दर्शाया गया है। सुन्दरसाथ के लिये यह संकेत था कि जिस मिहिर राजजी का हृदय व्यथित है, उसमें मैं कैसे विराजमान होऊँ?

जुदी हम से भगवान की, रूह फिरी एक सोए।
जब फिरे सुनसी हम को, तब घरों आवसी रोए।।६७।।

अक्षरब्रह्म की एक ईश्वरीय सृष्टि भी हमसे अलग है जो खेल की समाप्ति पर अपने घर सत्स्वरूप वापस आयेगी। जब वह संसार से हमारे परमधाम जाने की बात सुनेगी तो वह हमसे वियोग के दुख से दुखी होकर रोते हुए अपने घर आयेगी।

भावार्थ- इस चौपाई के दूसरे चरण में 'फिरी' शब्द के प्रयोग से यह सिद्ध है कि

यहां ईश्वरीय सृष्टि का प्रसंग है, जीव सृष्टि का नहीं, क्योंकि उसका प्रकटन सत्स्वरूप से हुआ है। एक 'शब्द' का प्रयोग अक्षर ब्रह्म के लिये नहीं अपितु ईश्वरीय सृष्टि के लिये है। यह कथन वैसे ही है जैसे कि. / में कहां गया है कि 'तीसे सृष्ट विष्णु सौ वरसों, प्रेमे पीवेगा शब्दों का सार' इसी प्रकार 'अजाजीलें विरहा आग जल, पीछे असराफीलें किए निरमल' ब. क. ६/४२ में विष्णु या अजाजील का तात्पर्य विष्णु भगवान से न होकर जीव सृष्टि से हैं। अक्षर ब्रह्म की आत्मा श्री महामति जी के धाम हृदय में मारिफत के सुख का रसपान कर चुकी है। ऐसी स्थिति में उनके लिये रोने का कथन उचित नहीं है।

ए जो भिस्त हमों करी, फेर एही भानसी दुख।
बुध असराफील पोहोंचहीं, तब ताए भी देसी सुख।।६८।।

सत्स्वरूप की पहली बहिश्त में ब्रह्मसृष्टियों के जीव ब्रह्मात्माओं के मूल तनों जैसा रूप धारण करके अखण्ड होंगे। इस बहिश्त में परमधाम की लीला प्रतिबिम्बित होगी, जिसे देखकर अक्षर ब्रह्म तथा दूसरी बहिश्त में विद्यमान ईश्वरीय सृष्टि आनन्दित होती रहेंगी। अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि भी सत्स्वरूप में पहुँच जायेगी और प्रतिबिम्बित ब्रह्म लीला का आनन्द लेगी।

रूहअल्ला ईसा मसी, नूर नाम तारतम।
मूल बुध असराफील, ए हमारी मिने हम।।६९।।

मेरे धाम हृदय में श्यामा जी की आत्मा, तारतम शक्ति तथा अक्षरब्रह्म की जागृत बुद्धि अस्राफील विद्यमान है। ये तीनों शक्तियां मुझसे एकरूप हो गयी हैं।

भावार्थ- बाईबल में कहा गया हैं कि ईसा मसीह अपनी चमत्कारिक योग शक्ति से मुर्दो को जीवित कर देते थे। तारतम ज्ञान रूपी अमृत से जीवों को जागृत कर अखण्ड सुख का रसपान कराने वाले सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी (श्यामा जी) ही यथार्थ में मृतकों को जीवित करने वाले ईसा मसीह हैं जो जन्म-मरण के चक्र से छुड़ाकर अखण्ड मुक्ति देने वाले हैं।

क. हि. में कहा गया है कि 'साक्षात् स्वरूप इन्द्रावती, तारतम को अवतार' अर्थात् श्री महामति जी के धाम हृदय में अक्षरातीत का आवेश स्वरूप विराजमान हैं। जिसके कारण उन्हें तारतम का अवतार कहा गया है। इससे यह स्पष्ट है कि यहां नूर का तात्पर्य परब्रह्म की आवेश शक्ति या तारतम शक्ति से है। उपरोक्त चौपाई के चौथे चरण

का सार तत्व यह है कि श्री महामति की आत्मा तीनों शक्तियों या स्वरूपों (आनन्द स्वरूप, आवेश स्वरूप, एवं ज्ञान स्वरूप) से एक रूप हो चुकी हैं।

काजी कजा ऐसी करी, रही ना किसी की हाम।
हुआ महंमद खिताब मेंहेदी, मिल्या मिने इमाम।।७०।।

श्री प्राणनाथ जी ने इस प्रकार अनुपम न्याय किया कि किसी की भी कोई चाहना शेश नहीं रही। बशरी सूरत मुहम्मद की ही श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में मिलकर जागनी लीला में महदी की शोभा हुई।

जबराईल पिया हुकमें, रूहों करत रखोपा आए।
सोई सूरत है अपनी, पिया हुकमें लेत मिलाए।।७१।।

जिब्रील परब्रह्म के जोश या अक्षर ब्रह्म के आवेश का स्वरूप हैं। यह श्री राज जी के आदेश से ब्रह्मसृष्टियों को मायावी विकारों एवं संकेतों से रक्षा करता है। यह भी अखण्ड धाम (सत्स्वरूप) का स्वरूप हैं। इसे भी प्रियतम अक्षरातीत ने अपने आदेश से संसार में अपने इमाम महदी (श्री प्राणनाथ) स्वरूप में मिला (एकाकार कर) लिया है।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई में चौथे चरण का आशय यह हैं कि जिब्रील भी श्री महामति जी के धाम हृदय में विद्यमान है।

जुदे जुदे नामें गावहीं, जुदे जुदे भेख अनेक।
जिन कोई झगड़ो आप में, धनी सबों का एक।।७२।।

संसार में अलग-अलग अनेक प्रकार की वेश-भूषा को धारण करने वाले लोग हैं जो अपनी अलग-अलग भाशाओं में अलग-अलग नामों से परब्रह्म को पुकारते हैं। किन्तु भ्रम वश वे इस बात को नहीं जानते कि इस समस्त सृष्टि का परमात्मा एक ही है। अतः हे संसार के लोगों! तुम अपने मत पन्थ, भाषा, वेशभूषा तथा कर्मकाण्ड के नाम पर आपस में न लड़ो।

अब सुनो प्यारे साथजी, पिया प्रगट होत सबन।
सारों को सुख देय के, उड़ावत एह सुपन।।७३।।

प्राण प्रिय सुन्दरसाथ जी! अब आप मेरा यह कथन सुनिये श्री जी के स्वरूप में हमारे प्राणेश्वर अक्षरातीत ही अपने आवेश स्वरूप से साक्षात् प्रकट हुए हैं। वे आप सभी को जागनी लीला का सुख देकर इस स्वाप्निक ब्रह्माण्ड का लय कर देंगे।

वैराट चौदे तबक, करके नूर नजर।
कायम दिए सुख मन बंछे, ब्रह्मांड सचराचर।।७४।।

प्रियतम अक्षरातीत चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड को अक्षर ब्रह्म की दृष्टि में बेहद मण्डल में अखण्ड कर देंगे। वे इस ब्रह्माण्ड के चर-अचर सभी प्राणियों को मन-वांछित अखण्ड सुख प्रदान करेंगे।

।।प्रकरण।।४१।।चौपाई।।१६६४।।

सनंध–पत्री छोटी

यद्यपि यह छोटी पत्री भी पूर्व की भांति भीम भाई तथा मुकुन्द दास आदि को सम्बोधित करके लिखी गयी है किन्तु इसका ज्ञान सबके लिये समान रूप से ग्राह्य हैं। वस्तुतः इसे सम्पूर्ण सनद ग्रन्थ का संक्षिप्त रूप कह सकते हैं।

प्रीतम मेरे प्रान के, आतम के आधार।
ए दिल भीतर देखियो, है अति बड़ो विस्तार।।१।।

श्री महामति जी कहते हैं कि हे साथ जी! आप मेरे प्राणों के प्रियतम हैं। मेरी आत्मा के आधार हैं। जागनी लीला के सम्बन्ध में मेरे इस कथन का अपने हृदय में गम्भीरता पूर्वक विचार कीजिए। इससे आपको विदित होगा कि इसका बहुत अधिक विस्तार हैं।

भावार्थ- प्राणों का प्रियतम और आत्मा का आधार कहने का आशय यही हैं कि आपके बिना मेरे जीवन का कोई भी अस्तित्व नहीं हैं। उपरोक्त कथन परमधाम के मूल सम्बन्ध से कहा गया हैं। इसका शतांश (१/१००) भी यदि सुन्दरसाथ अपने जीवन में आत्मसात् कर लें तो सम्भवतः ईर्ष्या, द्वेष और घृणा की विनाशकारी खाई से निकल सकते हैं और प्रेम के स्वर्णिम पथ पर चलकर अपने जीवन को सार्थक बना सकते हैं। याद रखिए, इस जागनी लीला में आपका एक-एक क्षण बहुमूल्य है। उसे ईष्या-द्वेष और घृणा की अग्नि में झोंककर आप सबसे अधिक अपना ही अहित कर रहे हैं।

सैयां सुन दौड़ियो, सई मेरी नाहीं बिलम कछू अब।
ऐसी खबर दई महंमदें, सैयां सुन दौड़ियो सब।।२।।

परमधाम की आत्माओं! हम तुम एक ही स्वरूप हैं। मेरी यह बात सुनकर अब बिना विलम्ब किये दौड़ते हुए मेरे पास शीध्र आ जाओ। मुहम्मद साहब ने मुझे ऐसी शुभ सूचना दी है कि इसे सुनते ही सभी दौड़ते हुए शीघ्राति शीघ्र मेरे पास आ जाओ।

कागद चौदे तबक के, मैं देखी हकीकत।
सब गावें लीला जागनी, पर बड़ी महंमद की मत।।३।।

इस ब्रह्माण्ड के सभी धर्मग्रन्थों की वास्तविकता को मैंने देखा हैं। सभी ग्रन्थ जागनी लीला के सम्बन्ध में कहते हैं किन्तु मुहम्मद स.अ.व का कहा हुआ ज्ञान बहुत ही विशेष हैं।

महंमद पाती के वचन, सुनियो भीम मकुंद।
आगम था पट बीच में, सो काढ़्या पट निकंद।।४।।

हे भीम भाई तथा मुकुन्द दास जी! मुहम्मद स.अ.व के कहे हुए वचनों को मैं आपसे कह रहा हूँ, उसे सुनिए। कुर्आन में भविष्य के सम्बन्ध में जो कुछ कहा गया है, वह अब तक छिपा रहा था किन्तु अब मैं इस उसे प्रकाश में ला रहा हूँ।

आगम निगम सब लिख्या, हुआ है होसी जेह।
ए बानी तो बोहोत है, पर नेक कहूं तुमें एह।।५।।

भविष्य का कथन करने वाले हिन्दू धर्म ग्रन्थों में यह सब कुछ लिखा हुआ हैं कि यह ब्रह्माण्ड कैसे बना है तथा भविष्य में क्या होने वाला है? भविष्य के विशय में तो धर्मग्रन्थों की बहुत सी बातें हैं, किन्तु मैं उसे कुर्आन से थोडी सी बात बता रहा हूँ।

भावार्थ- यद्यपि आगम-निगम का अर्थ वेद एवं उसकी व्याख्या में लिखे जाने वाले ग्रन्थों (शास्त्र आदि) से है किन्तु उपरोक्त चौपाई में आगम-निगम का भाव उन हिन्दू धर्म ग्रन्थों से हैं जो भविष्य का कथन करते हैं। वेदों की मूल संहिता, उसकी व्याख्या रूप शाखा ग्रन्थों, उपवेदों तथा छः दर्शन शास्त्रों में भविष्य की कोई बात नहीं लीखी हैं, क्योंकि ये सैद्धान्तिक ग्रन्थ हैं और इनका कथन सार्वकालिक है। पुराण संहिता, माहेश्वर तंत्र, बुद्ध गीता, वृहत्सदाशिव संहिता, भविष्य दीपिका आदि ग्रन्थों में व्रज-रास और जागनी लीला के पश्चात् ब्रह्माण्ड के प्रलय होने तथा सभी जीवों को अखण्ड मुक्ति प्राप्त होने का वर्णन हैं।

ए खेल है जो नींद का, तामें आधी दई उड़ाए।
बाकी उड़ाए देत हों, तुम साथ को लीजो बुलाए।।६।।

माया का यह ब्रह्माण्ड नींद का बना हुआ हैं। मैं तारतम ज्ञान के प्रकाश में अब

तक आपकी आधी नींद समाप्त कर चुका हूँ। अब मैं आपसे जो कुछ कहने जा रहा हूँ, उससे आपकी शेष आधी नींद भी समाप्त हो जायेगी। हे साथ जी! मेरा यह कथन सुनाने के लिए अन्य सुन्दरसाथ को बुलाकर लाइए।

भावार्थ- ज्ञान दृष्टि से माया की आधी नींद ही समाप्त हो पाती हैं किन्तु यदि शरीरांन्त और सृष्टि के लय होने का समय ज्ञात हो जाय तथा चितवनी में मन पूर्णतया लग जाय तो माया की नींद के समाप्त होने में देर नहीं लगती हैं, उपरोक्त चौपाई में यही भाव दर्शाया गया है।

तारीख तीन ब्रह्मांड की, केहेती हों कर हेत।
नींद एक आधी दूसरी, तीसरी में सावचेत।।७।।

हे साथ जी! मैं बहुत प्रेमपूर्वक आपको तीनों ब्रह्माण्डों की अवस्था को बता रहा हूँ। व्रजलीला में पूर्णतया निद्रा की अवस्था थी, इसमें ब्रह्मात्माओं को प्रियतम से न तो अपने मूल सम्बन्ध का पता था, न ही अपने मूलघर का। रास के ब्रह्माण्ड में आधी नींद और आधी जागृति थी, अर्थात् अक्षरातीत से मूल सम्बन्ध का तो पता चल गया था, किन्तु मूलघर का पता नहीं था। इस जागनी ब्रह्माण्ड में तारतम ज्ञान के प्रकाश में मूल सम्बन्ध और मूलधर का ज्ञान प्राप्त कर पूर्णतया जागृत होना है।

बरस पांच हजार पर, सात सै सैंतालीस।
होसी नेहेचल नूर नजरों, जित दिन हजार बरीस।।८।।

आदि आदम से इस सृष्टि को जब पांच हजार सात सौ सैतालिस (५७४७) वर्श व्यतीत हो जाएगें, तथा मुहम्मद साहब को अन्तर्धान हुए १००० वर्ष व्यतीत हो जायेंगे उसके पश्चात् यह ब्रह्माण्ड अक्षरब्रह्म की दृष्टि मे बेहद मण्डल में अखण्ड हो जायेगा।

भावार्थ- उपरोक्त कथन कुर्आन की साक्षी का है। वि. स. १६३८ में श्यामा जी के साथ ब्रह्मात्माओं का आना होता हैं, उस समय हिजरी सन् ९९० वर्ष और ९ माह व्यतीत हो चुके होते हैं। ३० वें पारे में कहा गया है कि ११ वी सदी में इमाम महदी का प्रकटन होगा। इस प्रकार तारतम अवतरण के द्वारा जागनी होने के बाद ब्रह्माण्ड का अखण्ड होना निश्चित होता है।

यामें नव सै छेहंतर जब हुए, तब हुआ नूह तोफान।
जल ऊपर तले से उमड़या, हो गया एक जिमी आसमान।।९।।

आदि आदम से ९७६ वर्षों के पश्चात् व्रज के ब्रह्माण्ड का प्रलय हुआ। धरती के ऊपर इतना अधिक जल उमड़ा कि धरती और आकाश में कोई अन्तर नहीं रहा अर्थात् धरती का अस्तित्व समाप्त हो गया।

भावार्थ- माहेश्वर तंत्र में व्रज लीला के पश्चात् प्राकृत प्रलय का वर्णन हैं तथा श्री कुल्जुम स्वरूप में महाप्रलय का। ''एक रंचक न रखी चौदे लोक की, महाप्रलय कह्यो ऐसो अन्त'' कि.१२/८ के इस कथन से यही स्पष्ट होता है। किन्तु उपरोक्त चौ. में जल के द्वारा जिस प्रलय का वर्णन किया गया है, उसे पंचभूतात्मक जल से होने वाला प्रलय नहीं समझना चाहिए। क्योंकि जल-प्रलय में ठोस पृथ्वी का अस्तित्व बना रहता है और वह मात्र जल में डूबी रहती है। धरती का आकाशवत् एक समान होने का आशय ही है कि स्थूल पृथ्वी का अस्तित्व समाप्त हो गया था। कुर्आन में पा. सू. आ. में योगमाया की नाव में ब्रह्मसृष्टियों को ले जाने का प्रसंग हैं। जब कि योगमाया कोई स्थूल नौका न होकर बेहद मण्डल है तो जल का अर्थ भी यहाँ मोह जल समझना चाहिए और इसे प्राकृत प्रलय या महाप्रलय मानना होगा।

पार हुई तहां से रूहें, और सब हुए गरक।
फेर तीसरा ए पैदा हुआ, यों देत साहेदी हक।।१०।।

परब्रह्म के वचन रूप कुर्आन में यह साक्षी है कि उस प्रलय काल में व्रज से ब्रह्मसृष्टियां योगमाया की किश्ती (नौका) द्वारा सुरक्षित रहीं और शेष समस्त ब्रह्माण्ड का लय हो गया। उसके पश्चात् जागनी लीला का यह तीसरा ब्रह्माण्ड बनाया गया।

आद आदम के छपन सै, बीते जब सैंतीस।
तबहीं दस सदी पर, होसी नब्बे बरीस।।११।।

इस प्रकार, आदि आदम से ५६३७ वर्ष जब व्यतीत हो गये तब हिजरी सन् १०९० था अर्थात् उस समय वि. सं. १७३५ का समय था।

विशेष- कतेब पक्ष के विद्वानों के समक्ष एक विचारणीय प्रश्न है कि जब वे आदम से ही मानवीय सृष्टि का अस्तित्व मानते हैं तो उनके कथनानुसार अब तक लगभग

५९८० वर्ष हो चुके हैं। इतने अल्पकाल में १ लाख २० हजार पैगम्बर कैसे पैदा हो सकते हैं? विज्ञान एवं भारतीय धर्मग्रन्थों की गणना के अनुसार पृथ्वी पर सृष्टि संवत् १ अरब ९६ करोड़ ८ लाख ५३ हजार १२० वर्ष है। इस आधार पर आदम को भी १४ मन्वन्तरों के १४ मनुओं की भांति कई मानना पड़ेगा तथा १ लाख २० हजार पैगम्बरों का भी सूक्ष्म अर्थ दर्शाना पड़ेगा अन्यथा उचित संगतिकरण नहीं हो सकेगा। यह हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि श्रद्धा और विश्वास का सिंहासन सत्य के धरातल पर ही स्थिर रह सकता हैं।

महंमद हुआ मेंहेदी, सैयद केहेलाया सही।
खिताब दिया जब खसमें, तब भेली इमाम भई।।१२।।

वि. सं. १७३५ का समय वह अति मंगलमय समय है, जब बशरी सूरत (अव्वल के मुहम्मद) को इस जागनी लीला में महदी (हकी सूरत अर्थात् आखिरी मुहम्मद) की शोभा मिली। उन्होंने दिल्ली में अपना नाम सैय्यद मुहम्मद इब्न ए इस्लाम अर्थात् 'इस्लाम का पुत्र' रखा। जब मुहम्मद स. अ. व. की बशरी सूरत, मल्की तथा हकी सूरत (महामति) से मिली तो इनकी सम्मिलित शोभा इमाम महमत साहिब्बुज्जँमा कहलायी। यह शोभा स्वयं प्रियतम परब्रह्म के द्वारा दी गयी है। इस सम्बन्ध में खुलासा का यह कथन देखने योग्य हैं-

महंमद आया ईसे मिने, तब अहमद हुआ स्याम।
अहमद मिल्या मेहदी मिने, ए तीनों मिल भए इमाम।।

रूह अल्ला ईसा रोसन, असराफील अकल।
सूरत साफ जबराईल, आए मेंहेदी में मिले सकल।।१३।।

श्री महामति जी (महदी) के धाम हृदय में अपने तारतम ज्ञान से सबके हृदय को प्रकाशित करने वाली श्यामा जी की आत्मा है, जागृत बुद्धि अस्राफील है तथा ब्रह्मात्माओं को सर्वदा माया से दूर करके निर्मल रखने वाले जिब्रील विद्यमान है।

हुआ हिंदुओं में जाहेर, हिंद से पाक मरद।
इस्क राह चलावसी, चालीस बरस लों हद।।१४।।

भारत वर्ष की धर्म धरा पर अति पवित्र स्वरूप वाले आखरूल इमाम मुहम्मद महदी साहिब्बुज्जमां श्री प्राणनाथ जी हिन्दू तन में प्रकट हुए हैं, वे चालीस वर्षों तक (वि. १७३५-१७७५) परमधाम के प्रेम मार्ग पर सबको ले चलेंगे।

काबिल हिंद के बीच में, होसी इमाम रोसन।
ए लीजो प्रगट इसारतें, दोए रूहों का मिलन।।१५।।

काबुल (अफगानिस्तान) तथा हिन्दुस्तान (पंजाब से लेकर मध्य प्रदेश के बीच के भाग) के मध्य श्री पन्ना जी में आखरूल इमाम मुहम्मद महदी प्रकट होंगे। वहीं पर दो आत्माओं (श्री इन्द्रावती तथा शकुण्डल) का मिलन होगा। कुर्आन में यह बात संकेतो में लिखी हैं। हे साथ जी! आप उसे ग्रहण कीजिए।

कोई दूजा मरद न कहावहीं, एक मेहेंदी पाक पूरन।
खेलसी रास मिल जागनी, छत्तीस हजार सैयन।।१६।।

इस जागनी लीला में परब्रह्म के अति पवित्र पूर्ण आवेश स्वरूप इमाम महदी श्री प्राणनाथ जी के अतिरिक्त अन्य कोई भी अक्षरातीत नहीं कहला सकेगा। वे १२ हजार ब्रह्मसृष्टियों तथा २४ हजार ईश्वरीय सृष्टियों के साथ जागनी रास की लीला करेंगे।

भावार्थ- इस चौपाई को पढ़कर उन सुन्दरसाथ को यह आत्ममन्थन करना चाहिए जो श्री जी को मात्र एक संत, महापुरूष, गुरू, आचार्य और कवि के रूप में दर्शाना ही अपना गौरव समझते हैं।

असलू जुथ रूहें चालीस, तिनमें बारे हजार।
बारे भेलियां रास में, इत चौबीस सहस्त्र कुमार।।१७।।

परमधाम में १२०० ब्रह्मसृष्टियों के ४० जुत्थ हैं। इन्हीं १२ हजार ब्रह्मात्माओं के द्वारा धारण किये गये रास के एक-एक तन में दो -दो ईश्वरीय सृष्टियों ने विद्यमान होकर रास का आनन्द लिया था। इस प्रकार सभी २४००० ईश्वरीय सृष्टियों ने महारास को प्रत्यक्ष देखा।

दस बरस लों खेलहीं, होसी विनोद कई हाँस।
सबके मनोरथ पूरने, करसी बड़ो विलास।।१८।।

जागनी लीला दस वर्षो तक १७४०-१७५० तक होगी। इस लीला में अनेक प्रकार की हंसी तथा आनन्द से भरपूर लीलायें होंगी। सबकी इच्छा को पूर्ण करने के लिये श्री राज जी अनेक प्रकार की आनन्दमयी लीलायें करेंगें।

भावार्थ- वि. सं. १७४० में श्री प्राणनाथ जी पन्ना जी पधारे। अन्तर्धान लीला वि. सं. १७५१ में सावन की तृतीया को होती है। इस प्रकार श्री प्राणनाथ जी के द्वारा पन्ना में

होने वाली लीला दस वर्ष की मानी जायेगी।

हास्य, विनोद की लीला को लौकिक हास्य विनोद नहीं समझना चाहिए। इसका आशय यह है कि समस्त सुन्दरसाथ श्री जी की सानिध्यता में चर्चा, चितवनी एवं सेवा में इतना मग्न रहते थे कि उन्हें संसार की कोई सुधि ही नहीं रहती थी। पल-पल अपने सामने अपने आराध्य को पाकर उनका हृदय इतना प्रफुल्लित रहता था कि उन्हें इस संसार में भी परमधाम का आभास होने लगा था। इसी को हास्य, विनोद तथा आनन्द की लीला कहा गया हैं।

सत वैराट में पसरया, काढ़्या कुली जालिम।
चौदे तबक सचराचर, नूर इस्क हमारा हम।।१६।।

अखण्ड परमधाम के ज्ञान का संसार में प्रसार हुआ, जिससे अज्ञान रूपी अत्याचारी राक्षस का नाश हुआ। चौदह लोकों वाले इस ब्रह्माण्ड के चर-अचर सभी प्राणियों को तारतम ज्ञान, हमारे प्रेम तथा हमारी सानिध्यता का लाभ मिला।

एक जरा जुलम न रेहेवहीं, सुबुध सबों में धरम।
बरत्यो सुख संसार में, विकार काटे सब करम।।२०।।

तारतम का प्रकाश फैल जाने पर संसार में नाम मात्र के लिये भी अत्याचार नहीं रहेगा। सभी को सद्बुद्धि प्राप्त होगी जिससे वे धर्म के मार्ग पर चलेंगे। मनोविकारों के कारण होने वाले बूरे कर्मो का दुष्प्रभाव समाप्त हो जायेगा, जिससे समस्त संसार में सुख ही सुख होगा।

भावार्थ- उपरोक्त चौपाई का कथन मात्र भावात्मक आधार पर ही है। यह तभी फलीभूत हो सकेगा जब संसार का प्रत्येक व्यक्ति तारतम ज्ञान एवं चितवनी (ध्यान) में डूबा हो किन्तु व्यवहारिक रूप में ऐसा हो पाना सम्भव नहीं दिखता। वस्तुतः यह योगमाया के ब्रह्माण्ड में ही पूर्ण रूप से चरितार्थ हो सकेगा। इस संसार में मात्र कुछ ही लोग उपरोक्त चौपाई के कथन की कसौटी पर खरा सिद्ध हो सकेंगे।

जब पूरन सदी अग्यारहीं, तब जागनी रास तमाम।
मन चाह्या सुख दे सबों, हँसते उठे घर धाम।।२१।।

वि. सं. १७४५ में जब ग्यारहवी सदी पूर्ण हुई तो जागनी रास भी पूर्ण हो गयी अर्थात् परमधाम की आत्माओं को जगाने के लिये मारिफत के अतिरिक्त शेष सम्पूर्ण श्री

कुल्जुम का अवतरण हो गया। तारतम ज्ञान एवं चितवनी में डूबकर सुन्दरसाथ मनोवंछित आत्मिक सुख लेने लगे एवं उन्हें ऐसा अनुभव होने लगा जैसे वे परमधाम के पच्चीस पक्षों में घूम रहें हों।

भावार्थ- इस चौपाई के चौथे चरण का आशय यह है कि इस संसार तथा बेहद से परे होकर परमधाम की शोभा में इस प्रकार डूब जाना कि केवल वहां के आनन्द प्रेम, एकत्व आदि का ही अनुभव हो। परात्म में जागृति सबकी एक साथ ही होगी। इस संसार में चितवनी के द्वारा अपनी करनी के अनुसार कोई आगे-पीछे अवश्य अपनी परात्म तथा युगल स्वरूप को देख सकता है।

पीछे सदी अग्यारहीं के, जब होसी तीस बरस।
बनी आदम पसु पंखी, नूर इस्क पिलाया रस।।२२।।

वि. सं. १७४५ के पश्चात् तीस वर्ष तक अर्थात् वि. सं. १७७५ तक मानव एवं पशु-पक्षियों वाले इस संसार में उत्तम जीवों को तारतम ज्ञान तथा परमधाम के प्रेम-रस को प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ (होगा)।

भावार्थ- सनद ग्रन्थ के इस अन्तिम प्रकरण में तेरहवीं सदी तक की भविष्य वाणी दर्शा दी गयी है, जबकि इस सनद ग्रन्थ का अवतरण ग्यारहवीं सदी में वि.सं.१७३६ में हुआ था। वर्तमान समय में अतीत काल के प्रसंगों को हम भूतकाल में कह सकते हैं किन्तु उस समय ये भविष्यत् काल के लिये थे।

उपरोक्त चौपाई के तीसरे चौथे चरण में पशु-पक्षियों को तारतम ज्ञान तथा प्रेम का रस पिलाने की जो बात कही गयी है, उसका आशय मानव समाज को उसका रसपान कराने से है। इतना अवश्य है कि एक कत्लखाने के आस-पास का आभा मण्डल हिंसात्मक विचारों की दुर्गन्धि से भरा होता हैं जबकि किसी परमहंस योगी की कुटिया के आसपास हिंसक पशु भी अपनी हिंसा वृत्ति छोड़ देते हैं। क्योंकि प्रेम भक्ति की सुगन्धि उनके मनोभावों को प्रभावित करती है। वि. सं. १७५१ में श्रीजी की अन्तर्धान लीला के पश्चात् ३० वर्ष तक ईश्वरीय सृष्टि ने ज्ञान तथा भक्ति का मार्ग अपनाया। उनके साथ रहने वाली जीव सृष्टि भी श्रीजी के विरह में १०० वर्षों तक ज्ञान तथा कर्मकाण्ड के पथ पर चलती रही। इसी तथ्य को उपरोक्त चौपाई में दर्शाया गया है।

रोसनाई नूर बुध की, रही न किसी की हाम।
बारहीं सदी संपूरन, ब्रह्मांड ने पायो इनाम।।२३।।

सौ वर्ष तक (वि. सं. १७४५-१८४५ तक) जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान का निरन्तर प्रकाश फैलता रहा, जिसके परिणाम स्वरूप सभी आध्यात्मिक इच्छायें परिपूर्ण हो गयीं (होंगी)। वि. सं. १८४५ में बारहवीं सदी के पूर्ण होने पर इस ब्रह्माण्ड को अखण्ड होने की कृपा रूप वरदान प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ (होगा)।

अछर के दोए चसमें, नहासी नूर नजर।
बीसा सौ बरसों कायम, होसी वैराट सचराचर।।२४।।

श्री महामति जी के धाम हृदय में विद्यमान रहकर अक्षर ब्रह्म के दोनों फरिश्तें जिब्रील एवं अस्राफील तारतम ज्ञान के रस में ओत प्रोत हो जायेंगे (हो गये)। जागनी लीला के १२० वर्ष (वि. सं. १६३८-१७५८ तक) पूर्ण होने के पश्चात् चर-अचर प्राणियों सहित यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड अखण्ड मुक्ति को प्राप्त होगा।

भावार्थ- चश्मा का अर्थ जल स्रोत, सरिता अथवा झरना होता है। अक्षर ब्रह्म के ये दोनों फरिश्ते जिब्रील और अस्राफिल हैं जो संसार में क्रियाशक्ति और ज्ञान शक्ति की भूमिका निभाते हैं।

अस्राफील फिरवल्या, अर्स अजीम के मांहे।
जबराईल जबरूत की , हद छोड़ सक्या नांहे ।। मा. सा.

मुहम्मद स.अ.व के साथ जाने वाला जो जिब्रील सत्स्वरूप (अक्षरधाम) से आगे नहीं जा सका था, वह महामति जी के धाम हृदय में विद्यमान रहकर खिल्वत्, परिक्रमा, सागर, तथा श्रृंगार का रसपान कर परमधाम का सम्पूर्ण आनन्द प्राप्त किया। इसे ही तारतम ज्ञान के रस में डूबना (नहाना) कहते हैं। यहाँ अक्षरब्रह्म की नूरी दृष्टि में सराबोर होने का प्रसंग नहीं हैं क्योंकि ये तो अनादि काल से अक्षरब्रह्म की ही सानिध्यता में ही रहते हैं।

बीसा सौ का तात्पर्य बीससौं अर्थात् २००० ईस्वी सन् कदापि नहीं समझना चाहिए, क्योंकि यहां सारी गणना हिजरी और वि. सं. में की गयी है। इसका आशय जागनी लीला के १२० वर्षो से हैं। इसके पश्चात् भी ब्रह्माण्ड के अस्तित्व का बना रहना

यही दर्शाता है कि खेल को अभी बढ़ा दिया गया है और इसके प्रलय का समय मूल स्वरूप की इच्छा पर निर्भर हैं।

ए तलबे तुम वास्ते, मैं नेक देखी किताब।
ए दिन दिलमें आन के, तुम साथ मिलाओ सिताब।।२५।।

हे साथ जी! ये दोनों फरिश्ते तो आपके इस संसार में आने की प्रतीक्षा कर रहे थे कि कब माया का खेल देखने के लिये आप यहां आयेंगे। मैने कुर्आन को अच्छी प्रकार से देखकर इस निश्कर्ष पर पहुँचा हूँ। इस कथन से आप अपनी गरिमा को पहचानिये तथा समस्त सुन्दरसाथ को माया से निकाल कर प्रियतम के चरणों में लाइये।

भावार्थ- 'धनी जी ध्यान तुम्हारे रे, बैठे बुध जी बरस सहस्र चार।
चार हजार छ सौ साठ समे बीता, दुनिया को न भयो आचार।।'

किरंतन के इस कथन से यह स्पष्ट हैं कि अक्षरब्रह्म की जागृत बुद्धि (अस्राफील) रास रात्रि के पश्चात् इस ब्रह्माण्ड की उत्पति होने से लेकर वि. सं. १७३५ तक ४६६० वर्षों तक यह प्रतीक्षा करती रही कि कब परमधाम का ज्ञान खिल्वत्, परिक्रमा, सागर, एवं श्रृंगार के रूप में अवतरित होगा, ऐसा ही जिब्रील के सम्बन्ध में भी समझना चाहिए।

बेरिज करी वैराट की, ए पढ़ियो चित दे।
खेलाए रास जागनी, झलकाओ नूर ए।।२६।।

अपनी इस छोटी पत्री में मैंने इस ब्रह्माण्ड का अखण्ड मुक्ति का सम्पूर्ण विवरण संक्षेप में दर्शा दिया हैं। आप इसे एकाग्र चित्त से पढ़िये । इस तारतम ज्ञान का प्रकाश फैलाकर समस्त ब्रह्माण्ड को अपनी जागनी रास में क्रीड़ा करने के लिये आवाहन कीजिए (खेलाइए)।

भावार्थ- श्री कुल्जम स्वरूप का ज्ञान मात्र किसी सम्प्रदाय विशेष के लिये ही नहीं हैं अपितु संसार के सभी प्राणियों के कल्याण के लिये है। पौराणिकों के पूजा-पाठ, मालाजप और परिक्रमा आदि की नकल उतारना ही हमारे जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य नहीं हैं अपितु तारतम ज्ञान का प्रकाश समस्त संसार में फैलाकर सभी प्राणियों को परब्रह्म की अनुभूति कराना ही हमारा लक्ष्य होना चाहिए। आगे की चौपाई में यह बात स्पष्ट रूप से कही गयी है।

मेंहेदी हदां कर दई, घर इमाम बताई राह।
पोहोंचे अर्स मेयराज को, हँस मिलियां रूहें खुदाए।।२७।।

प्राणेश्वर अक्षरातीत ने श्री महामति जी के धाम हृदय में विराजमान होकर हद तथा बेहद की सीमा निर्धारित करते हुए आत्मिक दृष्टि से परमधाम चलने (देखने) का मार्ग दर्शा दिया है। उनके द्वारा निर्देशित मार्ग (चितवनी) पर चलते हुए ब्रह्मात्माओं ने अपने धाम हृदय में विराजमान अपने प्रियतम अक्षरातीत का हंसते हुए साक्षात्कार (दर्शन, लाभ) प्राप्त किया है।

भावार्थ- हमें ऐसा यह कदापि नहीं समझना चाहिए कि परब्रह्म का साक्षात्कार (मेयराज) मात्र मुहम्मद साहब या अन्य दो सूरतों के लिये है। इन तीनों स्वरूपों ने दर्शन लाभ प्राप्त करके हमें भी उस लक्ष्य तक पहुँचने की प्रेरणा दी है। हमें खिल्वत के इस कथन ''क्यों रहे दीदार बिन प्राण'' का निरन्तर चिन्तन करते हुए इसे अपने जीवन का आदर्श वाक्य बनाना चाहिए तथा दृढ़ संकल्प के साथ इस लक्ष्य की पूर्ति के लिये अपना सर्वस्व न्योछावर कर देना चाहिए।

यदि संसार के समस्त लोग भी मिलकर उसे असम्भव बताते हुए हतोत्साहित करें तो उनकी बात अनसुना करते हुए अपने कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ते जाना चाहिए और अपने जीवन की अंतिम सांस के टूटने से पूर्व अपने लक्ष्य को अवश्य पूर्ण करना चाहिये, तभी हम वास्तविक सुन्दरसाथ कहलाने के अधिकारी हो सकते हैं। इस सनद ग्रन्थ का यही निर्देश है, अक्षरातीत का आदेश है।

।।प्रकरण।।४२।।चौपाई।।१६९१।।
प्रकरण तथा चौपाइयों का सम्पूर्ण संकलन
प्रकरण २१४, चौपाई ६३६०
।। सनंध सम्पूर्ण।।